

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला - ३०

नामलिङ्गानुशासनम्

# अमरकोशः

सटिप्पण 'मणिप्रभा' हिन्दीटीकोपेतः

श्री पं० हर्गोविन्दशास्त्री



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

३०



श्रीमदमरसिंहविरचितं

नामलिङ्गानुशासनम्

अर्थात्

**अमरकोषः**

सटिप्पण 'मणिप्रभा' हिन्दीटीकोषेतः

टीकाकारः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-मिश्रोपाह्व -

**श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री**

भागलपुरमण्डलान्तर्गतसुलतानगञ्जस्थराजकीय-

संस्कृतोच्चविद्यालयसाहित्याध्यापकः ।

**चौरवम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१**

१६६८

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी  
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी  
संस्करण : षष्ठम्, वि.सं. २०५५

ISBN : 81-7080-019-6

© चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन

गोलघर (मैदागिन) के पास

पो. बा. नं. १००८, वाराणसी - २२१००१ (भारत)

फोन : आफिस- ३३३४५८ आवास- ३३४०३२, ३३५०२०

अपरं च प्राप्ति स्थानम्

कृष्णदास अकादमी

पो. बा. नं. १११८

के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी - २२१००१ (भारत)

फोन : ३३५०२०

THE  
HARIDAS SANSKRIT SERIES

30



# AMARAKOSA

( NĀMALINGĀNUS'ĀSANA )

Of

AMARASIMHA

Edited With

*Notes and The 'Maṇiprabhā'*

*Hindī commentary*

By

Pt. HARAGOVINDA ŚĀSTRĪ

*Vyākaraṇa-Sāhityāchārya-Sāhityaratna.*

THE  
CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE  
VARANASI-1

1998



**Publisher : Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1**  
**Printer : Chowkhamba Press, Varanasi-1**  
**Edition : Sixth, 1998**

ISBN : 81-7080-019-6

**© Chowkhamba Sanskrit Series Office**  
K. 37/99, Gopal Mandir Lane  
Near Golghar (Maidagin)  
P.BOX 1008, VARANASI-221001 (India)  
Phone : Office : 333458, Resi. : 334032 & 335020

Also can be had from  
**KRISHNADAS ACADEMY**  
Post Box No. 1118,  
K 37/118, Gopal Mandir Lane,  
Varanasi-221001 (India)  
Phone : 335020

# प्राक्थन

डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

एम. ए., पी-एच. डी., ए. एफ. आई., प्रिंसिपल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, भागलपुर

हमारे शास्त्रों ने 'शब्द' को ही साक्षात् ब्रह्म कहा है। शब्द अथवा अनाहत-नादके रूपमें प्राणियों ने ब्रह्मका साक्षात्कार किया है, अतः मानवजीवनमें शब्द तथा उसके अवबोध एवं अनुभूतिकी कितनी महत्ता तथा उपयोगिता है—इसकी कल्पना सज्ज ह्री की जा सकती है। पशु और मानवमें क्या अन्तर है? खर्वरता और सभ्यतामें क्या भेद है?—व्यक्त, व्युत्पन्न एवं सार्थक शब्द। इसीलिये हमारे आचार्यों ने कहा है कि यदि एक भी वर्ण, एक भी शब्द, सम्यग्ज्ञात तथा सुप्रयुक्त हुआ तो इहलोक तथा परलोकमें मनोवाञ्छित फल देनेवाला होता है।

थोड़ी-सी भ्रान्तिसे कितना अनर्थ हो सकता है, यह निम्नलिखित श्लोकसे स्पष्ट परिलक्षित है—

‘यद्यपि बहु नाधीये तथापि पठ पुत्र ! व्याकरणम् ।

स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥’

अतः यह सिद्ध हुआ कि मानवमात्रको वर्णों तथा शब्दोंका यथावत् ज्ञान होना आवश्यक है।

वेदोंसे लेकर आधुनिक साहित्य तक जो अनगिनत ग्रन्थ निर्मित हुए हैं, वे ही हमारी संस्कृतिकी प्रगतिके प्रतीक हैं। ये ग्रन्थ क्या हैं?—शब्द तथा अर्थका समन्वय—‘समृक्त वागर्थ’। इसकी महिमाको इङ्गित करनेके उद्देश्यसे कालिदासने ‘पार्वतीपरमेश्वरौ’को ‘वागर्थाविव समृक्तौ’का विशेषण दिया है। मानवकी समस्त भावनाएँ मनमें ही विलीन हो जायँ, यदि उसे उन सार्थक, इतरावबोध्य शब्दोंमें गुम्फित करनेकी क्षमता नहीं हो। यदि आज हमने वात्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसी, सूर आदिको अमरत्व प्रदान किया है

तो इसका कारण क्या है ?—उनमें उपयुक्त शब्दचयन तथा शब्दगुणनकी क्षमता जनसाधारणकी अपेक्षा अधिक थी ।

कोश तथा व्याकरण—इन दो शास्त्रोंके द्वारा उपयुक्त शब्दभाण्डारकी सृष्टि तथा उसके चयन एवं समीचीन प्रयोगकी शक्ति आती है, अतः भारतमें अतिप्राचीन कालसे—निघण्टु तथा निरुक्त-समयसे—ही कोशके अध्ययनकी परम्परा चली आ रही है । संस्कृतके प्रत्येक विद्यार्थीको इसी कारण 'अमरकोश' कण्ठस्थ कराया जाता था और अब भी कराया जाता है, यद्यपि धीरे धीरे यह परम्परा कुछ क्षीण होती जा रही है । अब तो जैसे अंग्रेजोंके विद्यार्थी पद-पदपर 'डिक्शनरी' उलटते हैं, वैसे ही संस्कृतके विद्यार्थियोंमें भी सरस्ते, प्रमादण्न बाजारमें बिकनेवाले कोशोंको उलटनेकी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । मैं समझता हूँ कि यह प्रवृत्ति घातक है । एक 'अमरकोश'के सुखस्थ कर लेनेसे—या कमसे कम इस्तामलकवत् आवश्यक शब्दपर्यायोंको याद रखनेसे—वाक्य-विन्यास या ग्रन्थनिर्माणमें जो सुविधा होगी, वह कदापि बार-बार आधुनिक बङ्गके कोशोंको उलटनेसे नहीं हो सकती, उसे तो शब्दद्वारिद्र्यसे ही मुक्ति नहीं मिलेगी, भावों तथा कल्पनाओंकी ऊँची उड़ान कैसे ले सकेगा ?

'अमरकोश' जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी ग्रन्थकी ऐसी टीका जो न केवल प्रामाणिक हो, किन्तु साथ-साथ सुगम हो तथा हिन्दीके विद्यार्थियों अथवा विद्वानोंके निमित्त उपयोगी हो, स्वागतका विषय है । श्रीहरगोविन्द-शास्त्रीने अत्यन्त परिश्रमसे तथा वैज्ञानिक पद्धतिसे यह टीका निर्मित की है । इसमें उन्होंने अनेकानेक ज्ञातव्य सामग्रीका समावेश किया है । 'परिशिष्ट' तथा 'शब्दानुक्रमिका'के द्वारा उन्होंने अपनी टीकाके महत्त्वको अभिवृद्ध किया है । हर्षका विषय है कि इसका नवोन संस्करण प्रकाशित हो रहा है । हमें पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत साहित्य तथा वाङ्मयसे प्रेम रखनेवाले सुधी एवं जिज्ञासु इसे अपनावेंगे और तद्द्वारा अपना हितसाधन करेंगे ।

# भूमिका

अनादिनिघ्नं शब्दब्रह्म नित्यमुपास्महे ।

व्यवहारक्रमः सृष्टेर्यतश्चलति निर्भरम् ॥ १ ॥

पण्डितप्रकाण्ड श्री अमरसिंह-विरचित अमरकोषको यदि अमरभाषा ( संस्कृत ) साहित्यका अमरकोष ( अक्षय निधि ) कहा जाय तो लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं होगी । जिस अमरकोषके द्वारा उक्त पण्डितप्रवरका नाम चिरकालके लिये अमर हो गया है, उस अमरकोषका अनुपम आदर केवल भारतवर्षमें ही नहीं, किन्तु भूमण्डलमात्रमें देखा जाता है । विद्याप्रेमी योरप देशवासी विद्वानोंको अपनी अपनी भाषाओंमें इसका अनुवादकर इससे लाभ उठाना कोई विशेष आश्चर्यकर नहीं है, जितना कि धर्मान्धताके कारण अन्य सप्रज्ञायके ग्रन्थोंको अग्नि और जलदेवकी शरण देते हुए मुहम्मद जातिवालोंने भी जब इसका अपनी भाषामें अनुवादकर<sup>१</sup> खुले हृदयसे इसकी उपयोगिताको अङ्गीकार किया, यह हम भारतवासियोंके लिये अत्यन्त ही हर्षप्रद विजय-चिह्न है । सुदूरतम चीनमें भी इसका अनुवाद<sup>२</sup> होना हम भारतियोंके लिये विशेषरूपेण गौरव की बात है ।

## कोषकी आवश्यकता

### सर्वप्रथम वैदिक शब्दकोषका निर्माण

जब बृहस्पतिके समान गुरु भी इन्द्रके समान शिष्यको हजारों वर्षोंतक शब्द पारायण करते हुए शब्दसागरका<sup>३</sup> अन्त नहीं पा सके, तब किसका

---

१. इसी कारण 'खालीक बरी, नामक फारसीभाषाके शब्दकोषको पद्यमय उर्दू भाषामें इन लोगोंने रचना की ।

२. 'छठीं शताब्दीमें 'गुणराज' नामक विद्वान्ने चीनी भाषामें अमरकोषका अनुवाद किया' यह मैक्समूलरका कथन है । इस बातका उद्योतिषाचार्य विद्वद्भरेण्य पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीने 'भट्ट क्षीरस्वामी' शीर्षक लेखमें अन्वेषण किया है ।

३. जैसे कहा भी है—

'इन्द्राद्योऽपि यस्यान्तं न व्युरक्षब्धवारिधेः ।

सामर्थ्य है कि अतिशय विस्तृत शब्दसागरकी चरम सीमाका पता लगावे । हों, यह तो अतिप्राचीनकालमें शब्दजम्होपासक मुनियोंका ही सामर्थ्य था कि वे योगाभ्यासके बलसे साक्षात् मन्त्रद्रष्टा होते थे और उन्हें किसी ग्रन्थसे किसी प्रकारकी भी सहायता अपेक्षित नहीं रहती थी, इसी आधारपर 'सर्वे सर्वार्थवाचकाः' ( सब शब्द सब अर्थोंके वाचक हैं ) यह वैयाकरणोंका सिद्धान्त है । किन्तु परिवर्तनशोक संसारमें काल-परिवर्तन होनेके कारण योगाभ्यासका भी क्रमशः हास होता गया और साथ ही साथ साक्षात् मन्त्रद्रष्टृत्व-शक्तिका भी ।

इसप्रकार अनिवार्य हासको देखकर भगवान् कश्यपने वेदके कठिन शब्दोंका संग्रहकर सर्वप्रथम 'निघण्टु' नामक कोषकी रचना की । यूथञ्जट गौका गोत्र जिसप्रकार कदापि नष्ट नहीं होता, उसी प्रकार वेदसे निकालकर संगृहीत इन शब्दोंका वेदत्व भी नष्ट नहीं हुआ है, अत एव 'निघण्टु'को भी वेद ही कहते हैं । पृश्न 'निघण्टु'के वेद होनेसे तद्ब्याख्यानभूत निरुक्तमें भी वेदत्व अबाधित ही है । भगवान् प्रजापति कश्यप वेदके उपज्ञाता थे, इस बातको भगवान् व्यासजीने कहा है—

‘वृषो हि भगवान् धर्मो ख्यातो लोकेषु भार्गव ।

निघण्टुकपदाख्याने निदि मां वृषमुत्तमम् ॥

कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते ।

तस्माद् वृषाकपिं प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः’ ॥

( महाभारत मोक्षपर्व अ० ३४२ । श्लो० ८६-८७ )

निघण्टु ग्रन्थमें 'वृषाकपि' शब्दका निर्वचन ( अध्याय ५ खण्ड ६ पद १६ ) मिलता भी है । किन्तु फिर भी जब योगाभ्यासका पूर्वाधिक हास होनेसे निघण्टुका अर्थ भी लोगोंको अवोध्य प्रतीत होने लगा, तब व्यामूर्ति भगवान् 'यास्क'ने समाध्याय ( वेद ) भूत उस 'निघण्टु'का भाष्य किया;

प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वर्तुं नरः कथम्’ ॥ सारस्वत श्लो० सं २ ।

१. इसी कारण भगवान् यास्कने निघण्टु ग्रन्थको लक्ष्यकर 'समाध्यायः समाख्यातः स व्याख्यातव्यः' इस वचनके द्वारा यहाँ वेदमात्रविषयक 'समाध्याय' शब्दका प्रयोग किया है ।

जिसका नाम 'निरुक्त' हुआ। इस बातको भी भगवान् व्यासजी स्वयं स्वीकार करते हैं—

‘शिपिविष्टेति चाख्यायां हीनरोमा च योऽभवत् ।

तेनाविष्टं तु यत्किञ्चिद्विष्टपिविष्टेति च स्मृतः ॥

‘यास्को मामृषिरव्यग्रोऽनेकयज्ञेषु गीतवान् ।

शिपिविष्ट इति हस्माद् गुह्यतामधरो ब्रह्म ॥

स्तुत्वा मां शिपिविष्टेति यास्क ऋषिरुदारधीः ।

मत्प्रसादाददो नष्टं ‘निरुक्त’मभिजगिमवान् ॥

( महाभारत मोक्षपर्व अध्याय ३४२ श्लो० ६९-७१ )

‘शिपिविष्ट’ शब्दका निर्वचन निरुक्तमें ( अध्याय ५ खण्ड ८ पद ३७ ) में मिलता भी है। किन्तु निरुक्तनिर्माता कौन यास्क थे, यह विषयान्तर होनेसे इसकी विवेचनाको यहीं छोड़कर अब प्रकृतानुसरण करता हूँ।

### लौकिक-शब्दकोषकी रचना

इसप्रकार और भी अधिक तपोबलके हासके साथ-साथ बुद्धिविकाशका भी हास होनेसे लौकिक शब्दोंका अर्थज्ञान भी जब लोगोंको अतिदुरूह एवं अज्ञेय होने लगा, तब लौकिक शब्दकोषोंकी रचना हुई, किन्तु इनमें सर्वप्रथम किस कोषकी रचना हुई, यह पता नहीं चलता; क्योंकि ‘शब्दकण्ठमुक्ताकोष’में ही १९ कोषोंके नाम आये हैं। ‘साहसार्क, कात्यायन’ इत्यादि अनेक कोष ऐसे हैं, जो अब अलभ्य हैं, किन्तु संगृहीत प्राचीन कोषोंमें उनके वचन संस्कृत-साहित्योपासकोंके उपजीव्य हो रहे हैं। इसीतरह ‘उत्पलिनी’ आदि भी अनेक कोषोंके वचन ‘मेदिनीकोष’में संगृहीत जान पड़ते हैं, किन्तु इसप्रकार अनेकानेक कोषोंके रहते हुए भी इस ‘अमरकोष’का ही सर्वाधिक प्रचार हुआ, इसमें ग्रन्थकारकी रचना-शैली ही प्रधान हेतु है।

कुछ कोषोंमें केवल नामार्थक शब्दोंका ही संग्रह पाया जाता है तो कुछ कोषोंमें केवल साधारण शब्दोंका ही, इसपर भी इन साधारण-शब्दार्थवाचक कोषोंमें लिङ्गादिका विवरण नहीं है और कुछ तो ऐसे कोष हैं, जिनमें साधारण-साधारण सर्वविध शब्दोंको भरकर उन्हें अत्यन्त दुरूह कर दिया गया है। ऐसा कोई भी कोष नहीं, जो प्रसिद्धतम, साधारण और नानार्थक

( अनेक अर्थवाले ) शब्दोंके सुसंग्रहसे परिपूर्ण होता हुआ भी लिङ्गनिर्देशसे अलङ्कृत एवं आबालबोध्य पद्यमय निबद्ध हो । यदि कोई ऐसा कोष है तो 'अमरकोष' ही है । इसके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अन्य कोषोंमें जो न्यूनता या दोष थे, उन सबोंका यथावत् परिमार्जन करते हुए अमरसिंहने बालकोंके भी सुलभतया कण्ठस्थ करने योग्य सरल श्लोकोंमें इस 'अमरकोष'की रचनाकर संसारका बहुत बड़ा उपकार किया ।

### अमरसिंहका समय विवेचन

इनके समयके विषयमें अनेक मत हैं । कोई तो इनको—

'धन्वन्तरिचपणकामरसिंहशङ्खवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।

ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्थ' ॥

इस श्लोकके आधारपर 'विक्रम' नृपतिके नवरत्नोंमें—से कहते हैं । तथा कोई-कोई—

'इन्द्रध्वजः काशकूटनापिशली शाकटायनः ।

पाणिन्यमरजैनेन्द्रा भवन्त्यष्टौ हि शाब्दिकाः' ॥

इस श्लोकके आधारपर 'पाणिनि' और 'जैन' अर्थात् समन्तभद्रके मध्य-कालमें ये हुए थे, ऐसा कहते हैं, किन्तु पाणिनिविरचित अष्टाध्यायीके भाष्य-कार भगवान् पतञ्जलिके समकालीन 'चान्द्रव्याकरण'कर्त्ता आचार्य 'चन्द्र'का नाम उक्त श्लोकमें पाणिनिके पहले आनेसे उक्त श्लोकमें क्रम अपेक्षित नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है । अन्य लोग इनको द्वितीय सन्के छठीं शताब्दीके बतलाते हैं ।

जो कुछ हो 'स्वर्गवर्ग'में देवताओंके पर्यायोंको कहनेके बाद इन्होंने भगवान् 'बुद्ध'के पर्यायवाचक शब्दोंको कहा है, अतः ये 'अमरसिंह' बौद्धमतावलम्बी थे, यह प्रायः सभी विद्वानोंका मत है ।

शोलापुर निवासी स्व० सेठ रावजी सखाराम दोशी महोदयने अमरकोष—सम्बन्धी एक ट्रेक्ट प्रकाशित किया है, उसकी भूमिकामें अनेक युक्तियोंसे उन्होंने प्रमाणित किया है कि अमरकोषकार अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी था । अपने कथनके प्रमाणमें दोशी महोदयका कहना है कि वर्तमानमें उपलब्धमान अमरकोषमें लगभग एक सौ श्लोक छूट गये हैं या जान-बूझकर

छोड़ दिये गये हैं । 'यस्य ज्ञानदयासिन्धोः.....' (११११) श्लोकके पूर्व जिन एवं जैनसम्मत सोलहवें तीर्थङ्करकी वन्दना अमरसिंहने दो श्लोकोंमें की है<sup>१</sup>, तथा 'सुरलोको.....त्रिविष्टपम् ।' ( १११८ ) के बाद ८० $\frac{१}{२}$  श्लोकोंमें अमरसिंहने महावीर आदि तीर्थङ्करों एवं जैनसम्प्रदायसम्मत देवी-देवताओंके पर्यायोंको कहा है । द्वितीय काण्डमें भी प्रायः १०-१२ श्लोकोंका वर्तमान अमरकोषमें छूट जाने या छोड़ दिये जानेकी चर्चा उक्त दोशी महोदयने की है । यद्यपि दोशीमहोदय कथित मङ्गलाचरणके दो श्लोकोंमें—से प्रथम श्लोक वादीमसिंह-विरचित 'गद्यचिन्तामणि' ग्रन्थमें भी मिलता है, अतः यह कहना कठिन है कि यह श्लोक अमरसिंहकी रचना है या वादीमसिंहकी, किन्तु द्वितीय श्लोक अन्यत्र कहीं नहीं उपलब्ध होता और वह श्लोक दोशीजीके कथनानुसार यदि मङ्गलाचरणका ही है तब तो दोशीमहोदयके कथनकी विशेषतः पुष्टि होती है कि अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी ही था ।

मेरा विचार था कि उक्त दोशीजीके ट्रेकटके श्लोकोंको अपने अमरकोषके द्वितीय संस्करणमें भी समाविष्ट करूँ, किन्तु उक्त ट्रेकटके श्लोकोंमें प्रचुर-मात्रामें अशुद्धियाँ होनेसे वैसा करना उचित प्रतीत नहीं हुआ और दोशीजी महोदयके ट्रेकटकी मूल प्रति—जो द्रविडप्रान्त-निवासी 'आषण्डानाथशास्त्री'से द्रविडाक्षरमें तालपत्रपर लिखित थी—को प्राप्त करनेका प्रयत्न करनेपर भी कृतकार्य न हो सकनेके कारण मुझे अपने विचारको स्थगित कर देना पड़ा ।

अमरसिंहने अन्य किसी ग्रन्थकी भी रचना की या नहीं, यह विषय सन्देहास्पद है । जयपुर सं० पाठशालाओंके निरीक्षक साहित्याचार्य पं० भट्ट श्रीतैलङ्ग मथुरानाथ शास्त्रीने 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें अमरभारतामें लिखा है कि—'इनके विषयमें यह भी प्राचीन दन्तकथा है कि 'ये अनेक ग्रन्थोंकी रचनाकर उन्हें नावमें रख कहीं अन्यत्र जा रहे थे, किन्तु बौद्धधर्म-

१. तद्यथा—जिनस्य लोकत्रयवन्धितस्य प्रचालयेत्पादसरोजयुग्मम् ।

नखप्रभादिभ्यसंरिप्रवाहैः संसारपङ्कं मयि गाढलज्जम् ॥ १ ॥

नमः श्रीक्षान्तिनाथाय कर्मारतिविनाशिने ।

पञ्चमहाक्रिणां यस्तु कामस्तरमै जिनेशिने ॥ २ ॥ इति ।



विरोधी आयौने 'अमरकोष'के अतिरिक्त सब ग्रन्थोंको पानीमें डुबो दिया' किन्तु यह बात निराधार होनेसे प्रामाणिक नहीं समझी जा सकती ।

लिङ्गानुशासनके श्लोकोंको प्रायः पाणिनिसूत्रके आधारपर इन्होंने लिखा है, इससे तथा—

‘अमरसिंहस्तु पापीयान् सर्वं भाष्यमचूचुरत्’ ।

इस श्लोकके आधारपर व्याकरण शास्त्रमें इनका पाणिन्यप्राख्य अनाद्वय है, किन्तु उक्त श्लोकद्वारा इनपर भाष्यचौर्यका दोष लगाना ईर्ष्याकृत मालूम पड़ता है, क्योंकि ग्रन्थके प्रारम्भमें ही ‘समादृत्यान्यतन्त्राणि संचितैः प्रतिसंस्कृतैः ( १११२ )’ इस वचनद्वारा ये उक्त दोषसे मुक्त हो चुके हैं और उक्त दोषाभावमें दूसरी बात यह भी है कि—यदि भाष्यकार ‘घञन्त-अबन्त’ शब्दोंको पुंलिङ्ग लिखते हैं, तो गतानुगतिक या चौर्यदोषके भयसे बादका कोई भी ग्रन्थकार स्वीय तो लिख नहीं सकता, अतः यदि वह पुंलिङ्ग लिखे तब उसपर चौर्यदोषारोपण न कर इन्हें भाष्यमतप्रचारकका श्रेय मिलना ही उचित प्रतीत होता है । इसीप्रकार भानुजिदीक्षितने ‘गौतमशार्कबन्धुश्च……(११११५) की स्वनिर्मित ‘व्याख्यासुधा’ टीकामें यद्यपि ‘वेदविरुद्धार्थानुष्ठातृस्वाजिनशाक्यौ नरकवर्गं वक्तुमुचितौ, तथापि देवविरोधिस्त्वेन बुद्धयुपारोहादन्नैवोक्तौ’ अर्थात् ‘वेदविरुद्ध अर्थानुष्ठानके कारण ‘जिन और शाक्य’को यद्यपि ‘नरकवर्ग’में कहना उचित था, तथापि देवविरोधी होनेसे बुद्धिस्थ होनेके कारण ये यहींपर कहे गये हैं’ ऐसा कहा है, किन्तु इस श्लोकके आधारपर जिन बुद्ध भगवान्की गणना भगवान् कृष्णके दश अवतारोंमें है, तथा जिन्हें वैष्णवभक्तवरेण्य ‘जयदेव’—जैसे श्रेष्ठ विद्वान् भी कृष्णभगवान्का अंश मानकर नमस्कार करते हैं, उन ‘बुद्ध’के लिये ‘नरकवर्ग’, देवविरोधिस्त्वेन’ इन शब्दोंका प्रयोग करना नितान्त अनुचित प्रतीत होता है ।

१. ‘वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्भिभ्रते  
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते चरप्रस्थं कुर्वते ।  
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते  
श्लेष्मान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय नमः” ॥

गीतगोविन्द १११२ ॥

## अमरकोषके नाम

ग्रन्थकारके नाम के आधारपर १ 'अमरकोष', ग्रन्थकारकृत अन्वर्थ ( सार्थक ) नाम-करणके—

‘समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

सम्पूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम्’ ( १।१।२ )

तथा ग्रन्थके तीनों काण्डोंके अन्तमें—

‘इत्यमरसिंहकृतौ ‘नामलिङ्गानुशासने’ ।’

इस वचनके आधारपर ‘नामलिङ्गानुशासन’ और ग्रन्थमें ‘तीन काण्ड हानेसे ‘त्रिकाण्ड’—ये तीन नाम हैं । देवभाषाशब्दसंग्रह होनेसे कोई-कोई इसे ‘देवकोष’ भी कहते हैं ।

## अमरकोषकी टीकायें

‘अमरकोष’की उपयोगिता ग्रन्थरचनाके बाद अतिप्राचीन विद्वानोंसे लेकर आधुनिक विद्वानोंके द्वारा की गयी उसकी टीकाओंसे भी सिद्ध होती है । इसपर प्राचीन विद्वानोंकी निम्न टीकायें हैं—

१ व्याख्याप्रदीप	...	अच्युतोपाध्याय ।
२ क्रियाकलाप	...	आशाधर ।
३ काशिका	...	काशीनाथ ।
४ ‘अमरकोषोद्घाटन	...	महेश्वरस्वामी ।

१. देवराज ‘यज्वा’ने निघाटुपर भाष्य लिखनेमें भोज और क्षीरस्वामीके नाम लिये हैं । भोजकाल ई० सन् १०१८-१०६० है, क्षी० स्वा० का समय ११ वीं शताब्दीका अन्तिम भाग है । इन्होंने ई० सन् ८८०-९२० कालके राजशेखरका नाम अपनी टीकामें लिया है । ‘गणराजमहोदधि’में वर्द्धमानने क्षी० स्वा० का नाम लिया है, जो ई० सन् ११४० में हुए थे । क्षी० स्वा० ने उपाध्याय, गौड़, श्रीभोज, व्याडि, भागुरि, मालाकार, और कारय ( कारयायन ) आदि कई विद्वानोंके वचन अपने ग्रन्थमें उद्धृत किये हैं । ये बहुत जगह ‘अमरकोषोद्घाटन’ नामक ‘अमरकोष’की टीकामें ग्रन्थकारके शब्दोंका विवेचन भी किये हैं । जैसे—‘स्त्री दाराद्यैर्यद्विशेष्यं’... ( १।१।२ ) ‘अत्र स्त्री दाराद्यम्’

५ बालबोधिनी	...	गोस्वामी ।
*६ अमरकौमुदी	...	नयनानन्द रामचन्द्र ।
७ 'अमरकोषपञ्जिका	...	नारायणशर्मा ।
८ शब्दार्थसंदीपिका	...	नारायण विद्याविनोद ।
९ सुबोधिनी	...	नीलकण्ठ ।
१० अमरकोषमाला	...	परमानन्द ।
११ अमरकोषपञ्जिका	...	वृद्धरपति ।
*१२ मुरधबोध[ ]	...	भरतमल्लिक (भरतसेन)
१३ ()व्याख्यासुधा	...	भानुजिदीक्षित द्वितीय
अथवा-रामाश्रमी	...	रामाश्रम ।
*१४ गुरुबालप्रबोधिनी	...	मञ्जुभट्ट ।
१५ सारसुन्दरी	...	मथुरेश विद्यालङ्कार ।
१६ अमरपदपारिजात	...	मल्लिनाथ ।

इति युक्तः पाठः' ऐसा, तथा 'कमनः कामनोऽभिकः' ( ११।२४ ) यहाँ 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः' ऐसा कहा है । इसीप्रकार इन्होंने और भी कई जगह विवेचना की है । ये भागुरि, तथा मालाकार आदिकी भी अपनी टीकामें भ्रान्ति आदि बतलाये हैं ।

१. इसका दूसरा नाम 'पदार्थकौमुदी' भी है, इसको सन् १६१९ ई० में नारायणशर्मानी बनाया था ।

२. इस निशानवाले टीकाओंके नाम आदिमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है । इन टीकाओंका नाम 'कषपद्रुम' कोषकी भूमिकाके ६ ठे पेजमें आये हैं तथा अमर-भारती (वर्ष १ अङ्क ६) के 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें कृपा है ।

[ ] गौरांगमल्लिकके पुत्र भरतमल्लिक ( भरतसेन ) की टीका बहुत विशद है । इसमें बहुत पाठान्तर है । इसमें वोपदेवके व्याकरणानुसार शब्दक्रम है । १८ वीं शताब्दीमें इसके टीकाकारकी सम्भावना की जाती है ।

() 'सिद्धान्तकौमुदी'कार भट्टोजिदीक्षितके पुत्र 'भानुजिदीक्षित'ने १७ वीं शताब्दीमें बनेलवंशी 'कीर्तिसिंह'को प्रार्थनासे यह टीका बनायी ।

*१७ बुधमनोहरा	...	महादेवतीर्थ ।
*१८ अमरविवेक	...	महेश्वर ।
१९ <sup>१</sup> अमरबोधिनी	...	मुकुन्दशर्मा ।
२० त्रिकाण्डचिन्तामणि	...	रघुनाथचक्रवर्ती ।
*२१ अमरकोषव्याख्या	...	राघवेन्द्र ।
२२ <sup>२</sup> त्रिकाण्डविवेक	...	रामनाथ ।
२३ वैषम्यकौमुदी	...	रामप्रसाद ।
*२४ अमरकोषव्याख्या	...	रामशर्मा ।
*२५ अमरवृत्ति	...	रामस्वामी ।
२६ प्रदीपमञ्जरी	...	रामेश्वरशर्मा ।
*२७ <sup>३</sup> पदचन्द्रिका	...	रायमुकुट ।
*२८ अमरव्याख्या	...	लक्ष्मणशास्त्री ।
*२९ अमरबोधिनी	...	लिंगमठ ।
३० पदमञ्जरी	...	लोकनाथ ।
*३१ व्याख्यामृत	...	शङ्कराचार्य ।
३२ अमरटीका	...	श्रीधर ।
३३ <sup>४</sup> टीकासर्वस्व	...	सर्वानन्द ।

१. यह टीका वोपदेवानुसारिणी है ।

२. सन् १६३३ ई० में यह टीका बनी टीकाकारने भूमिकामें बहुत टीकाकारोंके नाम लिखे हैं ।

३. बंगालके 'राधानगर'में रहनेवाले 'गोविन्द'के पुत्र बृहस्पतिने 'पदचन्द्रिका' (राय मुकुटमणि) बनायी, इसीको लोग रायमुकुट कहते हैं । जो सन् १४३१ ई० में बना था, इसके पूर्व १६ टीकायें थीं । 'बृहस्पति'के पुत्रके '१ विश्राम, २ राम' आदि नाम थे । 'रायमुकुट'में २७० व्यक्तियोंके प्रमाणक वचन हैं, यह बात Aufrecht ने लिखी है । २८, १०९-११८ ॥

४. यह टीका १० टीकाओंके आधारपर ११५९ ई० सन् में लिखी गयी है और लगभग क्षी० स्वा० कृत टीकाके बराबर ही है । यह रायमुकुट आदि

३४ अमरपद्ममुकुट	...	रंगाचार्य ।
*३५ बृहद्वृत्ति	...	×
*३६ ×	...	अप्ययदीक्षित ।
*३७ गुरुबालप्रबोधिनी	...	भानुदीक्षित ।
*३८ ×	...	मान्यभट्ट ।
*३९ ×	...	लिंगमसूरि ।
*४० अमरकोषपदविवृति	...	×
*४१ कामधेनु	...	वंगदेशीय कोई विद्वान्

यद्यपि आधुनिक अनेक विद्वानोंने भी इस ग्रन्थपर अनेक संस्कृत तथा हिन्दी टीकार्यें लिखी हैं, तथापि इनमें प्रत्येक शब्दोंका प्रचलित हिन्दीमें अर्थ, लिंगज्ञान, वचनज्ञान, शब्दके प्रातिपदिकादस्थाका शुद्ध स्वरूप, पाठान्तर, कठिन शब्दोंकी विवेचना, शब्दसे सम्बद्ध विषय या अन्य आवश्यकीय बातोंका समावेश नहीं होनेसे एक बहुत कमी चिरकालसे मेरे हृदयमें खटक रही थी। इसीकी पूर्तिके लिये मैंने संस्कृत और हिन्दीमें इस ग्रन्थराजकी क्रमशः टीका और टिप्पणी लिखकर इसे पूज्यपाद विद्वन्मुकुटमणि दार्शनिकसार्धभौम साहित्य-दर्शनाद्याचार्य माध्वमतावलम्बी श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलालजी महाराजको दिखलाया। पूज्यपाद गोस्वामीजी महाराजने इस टीकाकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पूज्य गोस्वामीजीकी बतलायी हुई शैलीसे मैंने इस 'मणिप्रभा' नामक हिन्दी टीका और साथ में 'अमरकोषमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणीमें अन्य आवश्यक बातोंका भी समावेश किया। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग सौ श्लोक छेपकके दिये गये हैं, मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके अतिरिक्त प्रसिद्ध १ बाहरी शब्द तथा मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके आंशिक समानाकार बाहरी

वंगदेशीय टीकाकारोंका आधार हुई। इसके बाद किन्तु अन्य वंगदेशीय टीकाकारोंके पूर्व 'सुभूतिचन्द्र या बौद्ध सुभूति' ने कामधेनु टीका बनायी जिसका वंगाली टीकाकर्ताओंने अधिकतर उल्लेख किया है। सन् १९७३ ई० में बनी हुई शरणदेवके 'दुर्घटवृत्ति' में 'सुभूति' का नाम मिलता है।

× इस निशानमें नाम नहीं कहा गया है।

शब्द में भी + ऐसे निशान कर दिये गये हैं, जिससे ग्रन्थकी उपयोगिता अधिक बढ़ गयी है। शीघ्रता आदिके कारण जो बातें छुट गयी थी, उनकी पूर्ति परिशिष्टमें की गयी है। यद्यपि परिशिष्टमें और भी अधिक बातोंको देनेका विचार था, किन्तु ग्रन्थाकारके बहुत बढ़ जानेसे वह विचार छोड़ देना पड़ा। मूल शब्दोंकी सूचीके अतिरिक्त बाहरी समानाकार शब्दोंकी तथा चेषक श्लोकोंमें आए हुए शब्दोंकी सूची भी साथमें दी गयी है, जो अन्यत्र किसी अमरकोषमें नहीं पायी जाती। इस प्रकार इस ग्रन्थको यथासाध्य सर्वावश्यकिय विषयोंसे परिपूर्ण बनानेकी भरपूर चेष्टा की गयी है।

### आभारप्रदर्शन

इस भूमिकाको पूरा करनेके पहले उन महानुभावोंका मैं अतिशय आभारी हूँ, जिन्होंने इस टीकाके निर्माण करनेमें किसी तरह भी सहायता पहुँचायी है। उनमें सर्वप्रथम जिन ग्रन्थोंसे इस टीकाकी रचनामें सहायता ली गयी है, उन ग्रन्थकारोंके प्रति आभारप्रदर्शनपूर्वक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ।

### सम्मतदाता

१ पूज्यपाद म० म० पं० श्री १०८ गोपीनाथ कविराजजी, प्रिंसिपल गवर्नमेण्ट सं० कालेज, बनारस—आपने अनेक ग्रन्थोंका नाम तथा प्रकरणादिका निर्देशकर टिप्पणी और परिशिष्ट बनानेमें मुझे बहुत सहायता पहुँचायी।

२ पूज्यपाद दार्शनिकसार्वभौम दर्शनसाहित्याचार्य श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलालजी शास्त्री—आपकी आदिष्ट शैलीद्वारा इस टीकाकी रचना हुई, तथा आपसे अन्य भी अनेक सम्मतियाँ मिलीं।

३ पू० पा० गवर्नमेण्ट सं० कालेजके प्रोफेसर व्याकरणाचार्य श्री गोपाल-शास्त्रीजी नेने—आपने द्वितीयकाण्ड तक इस टीकाका ३ प्रूफ देखा, तथा अन्यान्य अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की।

४ पं० नारायणदत्तजी त्रिपाठी मारवाड़ी सं० कालेजके प्रधानाध्यापक, व्याकरणाचार्य पोष्टाचार्य स्वर्णपदकप्राप्त—

५ पू० पा० पं० बंशीधरमिश्रजी आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरबारांविवासी उद्योतिषाचार्य, पोष्टाचार्य तथा उद्योतिषतीर्थ—

२ अ० भू०

आप लोगोंसे क्रमशः व्याकरण और उद्यौतिष सम्बन्धी बहुतसी सम्मतियाँ प्राप्त हुईं।

### ग्रन्थद्वारा सहायतादाता

१ श्री पं० नन्दविहारीमिश्र आयुर्वेदाचार्य, विशारद, आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरबारांनिवासी—आपने 'अमरविवेक' की प्राचीन पुस्तकद्वारा सहायता की।

२ श्री पं० ऋषिनन्दन पाण्डेय व्याकरणशास्त्री, काव्यतीर्थ, अध्यापक सं० पाठ० कसाप, आरा—आपने भाषाटीकासहित अमरकोषकी अतिप्राचीन पुस्तकके द्वारा सहायता की।

३ श्री पं० कृष्णपन्त साहित्याचार्य, अध्यक्ष विश्वनाथ संस्कृत पुस्तकालय, ललिताघाट, काशी—आपने अपने पुस्तकालयसे बहुतसी पुस्तकें समय-समय पर देकर बहुत सहायता की।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य जिन महानुभाव विद्वानोंके द्वारा भी मुझे जो कुछ सहायता प्राप्त हुई है, उनका मैं बहुत आभारी होते हुए कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ।

### टीकाके सहायक ग्रन्थ

'साङ्केतिक चिह्न और शब्दका विवरण' शीर्षक लेखमें आये हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त अग्निपुराण, अत्रिस्मृति, यमस्मृति, हारीतस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृतिकी बालमग्नटी टीका, आह्निकसूत्रावली, कषाद्रुमकोश, हिन्दीशब्दसागर, श्रीधरकोष आदि ग्रन्थ तथा अमरकोषकी श्री० स्वा० कृत 'अमरकोषेद्भाटन', महेश्वरकृत 'अमरविवेक', भानुजिदीक्षितकृत 'व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)' सर्वानन्दकृत 'टीकासर्वस्व', 'संक्षिप्तमाहेश्वरी', तथा एतद्व्याख्यानभूत 'अमरप्रकाश' द्वारा सहायता ली गयी है। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत ग्रन्थों द्वारा भी यत्र तत्र सहायता ली गयी है, उन ग्रन्थकारों और टीकाकारोंका मैं विशेष आभारी हूँ।

अन्तमें 'काशीस्थ चौखम्बा-बनारस-काशी-हरिदास सं० सिरीज़' के अध्यक्ष बाबू 'जयकृष्णदास हरिदास गुप्त' महोदयको अनेक अन्यवाद देता हूँ,

जिन्होंने इस ग्रन्थका प्रकाशनभार लेकर संस्कृत साहित्य ग्रन्थोद्धारमें उत्साहपूर्ण अपनी उदारताका परिचय दिया है ।

ग्रन्थ-सम्पादनके समय मानवसुलभ दृष्टिदोषवश एवं टाइपके अतिसूक्ष्माक्षर होनेसे तथा यन्त्र-सम्बन्धी दोषोंसे अर्थात् किसी प्रकारकी यदि अशुद्धि हो गयी हो तो—

‘गच्छतः स्वल्पं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाधनि सज्जनाः’ ॥

इस पद्यके अनुसार क्षीरग्राही हंसके समान विद्वज्जन उन अशुद्धियोंको सुधार कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ।

इति शम् ।

रथयात्रा, सं० १९९४

}

विद्वत्पादाब्जराजश्रीक—

हरगोविन्दशास्त्री



## द्वितीय संस्करण

लोकशङ्कर भगवान् शङ्करकी असीम अनुकम्पासे स्व-प्रथम-प्रयास सम्पादित अमरकोषीय 'मणिप्रभा'के द्वितीय संस्करणको प्रकाशित होते हुए देखकर अनुवादक होनेके नाते मुझे परम प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि कविकुञ्ज-शिरोमणि महाकवि कालिदास—जैसे विद्वान् भी सूत्रधारके मुखसे—

‘आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।

बलवदपि शिक्षितानामारमन्थप्रस्थयं चेतः ॥’

कहलवाते हुए कृतिकी सफलतामें सशङ्क होना अभिव्यक्त करते हैं, तब अपनी कृति—यह भी अध्ययनावस्थाकी प्रथम कृति—होनेके कारण मुझ जैसे अल्पज्ञको अपनी सफलतामें आशङ्कित होना अस्वाभाविक नहीं समझा जा सकता; परन्तु ‘मणिप्रभा’ युक्त इस अमरकोष ग्रन्थके प्रथम तथा द्वितीय काण्डोंका पाँच-पाँच, संस्करण प्रकाशित होना और इस सम्पूर्ण ग्रन्थके पुनः प्रकाशनार्थ अनेक वर्षोंसे पत्रादिद्वारा प्रेरणा करते रहना इस कृतिकी सफलता को स्पष्टतः अभिव्यक्त करता है ।

इस अमरकोषके ही नहीं, किन्तु ‘मणिप्रभा’ नामक मेरे राष्ट्रभाषाऽनुवाद-सहित अन्यान्य ग्रन्थों—रघुवंश, शिशुपालवध, नैषधचरित तथा मनुस्मृति आदि—को भी अन्यान्य विद्वज्जनसम्पादित विविध टीकाओं तथा अनुवादोंके रहते हुए भी अपनी नीर-छीर-विवेकिताद्वारा जिनलोगोंने अपनी गुणैकपक्ष-पातिताका स्पष्ट परिचय प्रदान किया है, उन परमादरणीय विद्वानोंका आभार मानता हुआ मैं उन्हें भूरिशः धन्यवाद देता हूँ ।

साथ ही वर्तमानमें शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयके प्राचार्य एवं समाज ( सोसल )-विभाग, विहार सरकारके भूतपूर्व उपनिर्देशक श्रीमान् माननीय ‘डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री’ महोदयका भी अत्यन्त आभारी होता हुआ मैं उन्हें अनेकानेक धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ; जिन्होंने मेरी

प्रार्थना स्वीकृतकर इस संस्करणका अपना पाण्डित्यपूर्ण 'प्राक्कथन' लिखनेकी अनुकम्पा की है।

इसके अतिरिक्त प्रायः पैंसठ वर्षोंसे संस्कृत साहित्यके विविध-विषयक ग्रन्थोंका प्रकाशनकर भारतीय आर्ष संस्कृतिके संरक्षण एवं संवर्द्धनके अन्यतम सेवाव्रती, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय तथा चौखम्बा विद्याभवन, काशीके अध्यक्ष श्रीमान् माननीय सेठ 'जयकृष्ण दासजी गुप्त' महोदयको भी शुभाशीःपूर्वक भूरिशः धन्यवाद देता हूँ; जिन्होंने इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रण करके सकल संस्कृतानुरागियोंके लिए इसे सुलभतम मूल्यमें प्रदान करते हुए त्रिवर्गको अर्जित करनेका सफल प्रयास किया है।

इस संस्करणके मुद्रणमें मेरे सुदूर प्रदेशमें रहनेके कारण प्रूफ संशोधन आदि कार्य करनेवाले मित्रवर्गको भी अनेकशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

यद्यपि मैंने इस संस्करणमें दृष्टचर त्रुटियोंके निराकरणका पूर्णतया प्रयास किया है, एवं कतिपय स्थलोंमें अनेक विषयोंको विशदकर इस संस्करणको पूर्वापेक्षया अधिक उपयुक्त बनानेका यथाशक्य प्रयत्न किया है; तथापि इसका सम्पादन, अक्षरसंयोजन, संशोधन एवं मुद्रणादि सब कार्य मानवकृत होनेसे और जगत्स्रष्टा ईश्वरके अतिरिक्त प्राणिमात्रको सर्वथा दोषविनिर्मुक्त होना असम्भव होनेसे इस संस्करणमें भी सम्भावित त्रुटियोंके लिए गुणैकपक्षपाती विद्वद्बृन्दसे बद्धाञ्जलि हो क्षमायाचना करता हूँ कि वे जिस प्रकार इसे अपनाकर अन्यान्य ग्रन्थोंको लिखनेके लिए मुझे उत्साहित करनेकी असीम अनुकम्पा की है, उसी प्रकार भविष्यमें भी अनुकम्पा करते रहें।

रामनवमी  
सं० २०१४

}

विद्वज्जनवशंवदः—

हरगोविन्दशास्त्री

# साङ्केतिक चिह्न और शब्दके विवरण

## मूलके सङ्केत

' ' इस चिह्नके बीचवाले अंश श्लेषक हैं, उनके अन्तमें ( ) इस कोष्ठके मध्यमें क्रमानुसार पङ्क्तिसंख्या लिखी गई है ।

श्लोकोंके पहले या मध्य भागमें दिये गये अङ्क हिन्दी टीकाके प्रतीक हैं ।

## टीका और टिप्पणीके संकेत

= —सन्दिग्ध ( 'सु' विभक्तिमें प्रातिपदिकसे भिन्न रूपवाले ) शब्दोंके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ।

+ —पाठभेद या मतभेदसे उपलब्ध पर्याय; और ग्रन्थान्तरमें उपलब्ध आंशिक समानाकार (प्रायः मिलते जुलते हुए) या प्रसिद्धतम पर्यायवाचक शब्द ।

[ ] —श्लेषक श्लोकोंकी हिन्दी टीका ।

उन-उन ग्रन्थोंके काण्ड, वर्ग, श्लोक, परिच्छेद, अध्यायादि जाननेके लिये अङ्क दिये गये हैं ।

पु या पु० —पुंलिंग

स्त्री या स्त्री० —स्त्रिलिंग

न या न० —नपुंसकलिंग

त्रि या त्रि० —त्रिलिंग

नि० —निश्चय

ए० व० —एकवचन

द्विव० —द्विवचन

ब० व० या बहुव० —बहुवचन

शेष० —शेष

म० —मत या मतभेद

उदा० —उदाहरण

स्वा० —स्वामी

स्त्री० स्वा० —स्त्रीस्वामी

महेश्वर० —महेश्वर

भा० दी० —भानुजिदीक्षित

मु० —मुकुट

भा० —भागुरि

प्रा० —प्राच्य

रा० कृ० दी० —रामकृष्णदीक्षित

बु० म० —बुधमनोहर

अ० वि० —अमरविवेक

व्या० सु० —व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)

पा० सू० —पाणिनीयसूत्र

कि० सू० —लिंगसूत्र

उ० सू० —उणादिसूत्र

वा० —वार्तिक

यो० सू० —योगसूत्र

अभि० चिन्ता० या अ० चि० म० —

अभिधानचिन्तामणि

या०स्मृ०या याज्ञ०स्मृ०—याज्ञवल्क्यस्मृति

मनु या मनुस्मृ०—मनुस्मृति

सा० द०—साहित्यदर्पण

गी०—श्रीमद्भगवद्गीता

वि० पु०—विष्णुपुराण

वै० सि० मं०—वैयाकरणसिद्धान्तलघु-

मञ्जूषा

सु० श्रु० क० रथा०—सुश्रुतकल्पस्थान

मा० नि०—माधवनिदान

अने० सं०—अनेकार्थसंग्रह

मे० या मेदि०—मेदिनीकोष

पृ०—पृष्ठ

श्लो०—श्लोक

अ०—अध्याय

चतु० चिन्ता०—चतुर्वर्गचिन्तामणि

दा० खं०—दानखण्ड

वृ० रत्ना०—वृत्तरत्नाकर

वीर० राजप्रक०—वीरमित्रोदयराज-

प्रकरण

कु० सं०—कुमारसम्भव

वाचस्प०—वाचस्पत्याभिधान

नि० सि०—निर्णयसिन्धु

रघु०—रघुवंश

\*, †, ‡, §, इत्यादि चिह्न टिप्पणीके प्रतीक हैं ।

देखनेका प्रकार—१ जिस शब्दके बाद जो संकेत है, उसीके साथ उस संकेतका सम्बन्ध है । २ संज्ञासहित संकेतका पहलेवाले उतने शब्दोंके साथ सम्बन्ध है । ३ कहीं-कहीं एक ही शब्दमें एकाधिक भी संकेत हैं । ४ नामके अन्तमें लिखी हुई संख्यामें पाठान्तर, कोषान्तर आदिके कोष्ठमध्यगत पर्यायोंकी गणना नहीं है । उदाहरण—‘स्वः’ (= स्वर, अ०), स्वर्गः, नाकः, त्रिविधः, त्रिदशालयः सुरलोकः ( ५ पु ), द्यौः ( = द्यौ ); द्यौः ( = दिव् । २ स्त्री ), ‘त्रिविष्टपम्’ ( न । + त्रिविष्टपम् ), ‘स्वर्ग के ९ नाम हैं’, यहाँ पर ‘स्वः’ के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘स्वर’ है और यह अवयव है । ‘स्वर्ग’ आदि पाँच शब्द पुंलिंग हैं । पहले ‘द्यौः’ के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘द्यौ’ और दूसरेके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘दिव्’ है, तथा ये दोनों शब्द ‘स्त्रीलिंग’ हैं । ‘त्रिविष्टप’ शब्द नपुंसक है, मतान्तरसे ‘त्रिविष्टपम्’ यह भी पर्याय है । ‘स्वः’ आदि ९ नाम ‘स्वर्ग’ के हैं, इसमें ‘त्रिविष्टपम्’ की गणना नहीं है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये ॥

## परिशिष्टके संकेत

परिशिष्टमें पहले मूल ग्रन्थमें आये हुए शब्दको देकर उसके काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क दे दिये गये हैं, फिर उस शब्दसे सम्बद्ध विषय लिखकर प्रमापक ग्रन्थके नाम आदि दिये गये हैं ॥

## शब्द-सूचीके संकेत

मूल ग्रन्थकी सूची देखनेका प्रकार—पहले शब्द, बादमें क्रमशः 'काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क' दिये गये हैं। जैसे—'अ ३ ४ ११' अर्थात् 'अ' शब्द तृतीय काण्डके चतुर्थ अव्ययवर्गके ग्यारहवें श्लोकमें आया है। ( देखिये पृ० ५१७ ) ॥

श्लेषक और टीकास्थ शब्दकी सूची देखनेका प्रकार—श्लेषक और टीकास्थ शब्दोंकी सूची १११ पृष्ठसे आरम्भ होकर १४९ पृष्ठोंमें समाप्त हुई है। उनमेंसे जो शब्द श्लेषकमें आये हैं, उन शब्दोंके पहले अध्यायके क्रमसे चलने वाला श्लेषकाङ्क, श्लेषकका शब्द और बादमें मूल ग्रन्थके जिस स्थलमें वह श्लेषकका शब्द आया है, उस मूल ग्रन्थके काण्ड, वर्ग और श्लोकके अङ्क दिये गये हैं; इसमें अर्द्धश्लोककी गणना नहीं है। जैसे—'४१ अंशुमालिन् १ ३ ३०' यहाँ पहले श्लेषकका अङ्क, बादमें श्लेषकका 'अंशुमालिन्' शब्द, फिर प्रथम काण्डके तृतीय 'दिग्वर्ग'के ३० वें श्लोकके बाद वह 'अंशुमालिन्' शब्द मिलेगा। ( देखिये पृष्ठ—३१ ) ॥

कुछ शब्द श्लेषकसे सम्बद्ध होते हुए भी मूल श्लेषकमें नहीं आये हैं, किन्तु श्लेषकसे भी बाहरी हैं; ऐसे शब्दोंमें श्लेषकाङ्कके आगे + ऐसा चिह्न लगाया गया है। जैसे + '४३ + आश्विन १ ४ १३' है, इसे भी उसीप्रकार पृष्ठ ४० में देखिये। यह शब्द श्लेषकमें नहीं आया है, किन्तु श्लेषककी टीकामें आया है ॥



## विषयानुक्रमणिका

	पृ०
प्राक्कथन                    ...                    ...	५
भूमिका                    ...                    ...	७
द्वितीय संस्करण की भूमिका                    ...	२०
सांकेतिक चिह्न और शब्दके विवरण                    ...	२२
विषयाः                    श्लोकसंख्या                    पृष्ठसंख्या	
<b>प्रथमकाण्डम्</b> ...                    ...	<b>१—१०४</b>
( मङ्गलाचरणम् , श्लोकः १ मः )                    ...	१
( प्रतिज्ञा                    " २ यः )                    ...	२
( परिभाषा                    " ३-५ मः )                    ...	"
१ स्वर्गवर्गः                    ७१                    ...	७
२ व्योमवर्गः                    १॥                    ...	२३
३ दिग्बर्गः                    ३५                    ...	२४
४ कालवर्गः                    ३१                    ...	३४
५ धीवर्गः                    १७                    ...	४८
६ शब्दादिबर्गः                    २५॥                    ...	५४
७ नाट्यवर्गः                    ३८                    ...	६६
८ पातालभोगिवर्गः                    ११                    ...	८१
९ नरकवर्गः                    ३॥                    ...	८६
१० वारिवर्गः                    ४३                    ...	८८
वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च २                    ...	१०३
<b>द्वितीयकाण्डम्</b> ...                    ...	<b>१०५—३६६</b>
( वर्गभेदकथनम् , श्लोकः १ मः )                    ...	१०५
१ भूमिवर्गः                    १८                    ...	"

विषयाः	श्लोकसंख्या	पृष्ठसंख्या
२ पुरवर्गः	३०	११३
३ शैलवर्गः	८	१२०
४ वनौषधिवर्गः	१६९॥	१२४
५ सिंहादिवर्गः	४३	१७३
६ मनुष्यवर्गः	१३९॥	१८७
७ ब्रह्मवर्गः	५७॥	२३७
८ क्षत्रियवर्गः	११९॥	२६३
९ वैश्यवर्गः	१११	३०६
१० शूद्रवर्गः	४६॥	३५०
काण्डसमाप्तिः	१	३६६
तृतीयकाण्डम्	...	३६७—५५२
( सर्गभेदकथनम् , श्लोकः १मः )	...	३६७
( परिभाषा " २यः )	...	३६८
१ विशेष्यनिधनवर्गः	११२॥	"
२ संकीर्णवर्गः	४२॥	४०७
३ नानार्थवर्गः	२५७	४२३
४ अभ्ययवर्गः	२३	५१६
५ लिङादिसंग्रहवर्गः	४६	५२२
काण्डसमाप्तिः (श्लो० ४७मः) १	...	५५२

प्रथमकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या २७८॥, द्वितीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ७३३॥

तृतीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ४८२ ए' सम्पूर्णग्रंथे सङ्कलितश्लोकसंख्या १४९४



## चक्रसूची

क्रमाङ्काः	चक्रनामानि	पृष्ठाङ्काः
१	कालमानबोधचक्रम्	४४
२	विविधमतेन हाराणां संज्ञाया यष्टिसंख्यायाश्च बोधकचक्रम्	२२४
३	पत्यादिसेनाविशेषे गजरायादिसंख्याबोधकचक्रम्	२१४
४	तुल्यमानबोधकचक्रम्	३४१
५	अनुलोमज प्रतिलोमज-जात्युत्पत्तिबोधकचक्रम्	३५२

## क्षेपकश्लोकपंक्तिसंख्या

प्रथमकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	५८	तृतीयकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	९५
द्वितीयकाण्डे    "	३३	एवं सम्पूर्णग्रन्थे	१८६

## परिशिष्टसूची

अमरकोषस्य परिशिष्टम्	...	५५३
मूलस्थशब्दानुक्रमणिका	...	
क्षेपक-टीकास्थशब्दानुक्रमणिका	...	







॥ श्रीः ॥

नामलिङ्गानुशासनम्

नाम

# अमरकोषः

प्रथमं काण्डम्

१ यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।

सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

विशेषां करणैरगोचरमपि प्रज्ञाहशा पश्यतां

यत्प्रत्यक्षमपश्चिमं कृतिरिह स्वःश्रेयसे योगिनाम् ।

आरभ्याणु महत्तमावधि परं यद्द्व्यापकं सर्वतो

वन्दे निर्गुणमेष पाणियुगलं बद्ध्वाऽऽनतस्तन्महः ॥ १ ॥

आसृष्टि प्रलयावधि त्रिभुवने विस्तारसिन्धोः परं

यस्या द्रष्टुमपि क्षमो न यदि चेत्पारङ्गतौ का कथा ।

ब्रह्मश्रीशशिवादिभिश्च सततं ज्ञानाय योपास्यते

तां वाचामधिनायिकां भगवतीं श्रीशारदामाश्रये ॥ २ ॥

मन्थाचलाबिलपयोधिबिनिस्सृतेन दृष्ट्वा ज्वलज्जगदिदं गरलेन शीघ्रम् ।

पीठ्वा हसंस्तदभिरक्षितवान् भृशं यस्तच्चोलकण्ठचरणाम्बुजमाश्रयामि ॥३॥

१ श्री अमरसिंह अपने रचे जानेवाले इस ग्रन्थकी निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति तथा प्रसिद्धि होने के लिये और व्याख्याता तथा अध्येताओं ( पढ़ने-वालों ) के उपदेशके लिये यथाचार<sup>१</sup> किए हुए मङ्गलाचरणको पहले लिखते हैं—‘यस्य ज्ञान...’ । हे पण्डितो ! अतिगम्भीर, ज्ञान और करुणाके समुद्र, जिसके निर्मल क्षमा आदि गुण हैं; उस अविनाशीकी आपलोग धन और मोक्ष के लिये सेवा करें ॥

१. ‘प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते’ इति न्यायात् । ‘मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते, वीरपुरुषाणि च भवन्ति, आयुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्च सिद्धार्था यथा स्युः’ इति भाष्योक्तेश्च ॥

१ समाहृत्यान्यतन्त्राणि, सङ्क्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

सम्पूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

२ प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

१ ग्रन्थ—समाप्तिके लिये इष्टदेव 'जिनदेव' का स्मरण कर श्रोता आदिके उत्साहवर्धनार्थ साभिधेय प्रयोजनको कह रहे हैं—'समाहृत्य' । नाम और लिङ्गको बतलानेवाले वररुचि आदिके तन्त्रों ( कोशों ) को एकत्रित कर विस्तार के थोड़ा होनेपर भी अधिक अर्थवाले, प्रत्येक पदकी प्रकृति और प्रत्ययोंको विचारपूर्वक संस्कार कर बनाये हुए वर्गों ( प्रकरणों ) से सम्पूर्ण नाम ( स्वः, स्वर्गः, नाकः, आदि ) और लिङ्ग ( पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) को बतलानेवाले इस शास्त्रको मैं कहता हूँ । त्रिकाण्ड—उत्पलिनी आदि कोशोंमें केवल नाम ( पर्याय ) बतलाये गये हैं और वररुचि आदिके ग्रन्थोंमें केवल लिङ्ग बतलाये गये हैं; नामलिङ्गानुशासन<sup>१</sup> ( अमरकोष ) नामक इस शास्त्र ( ग्रन्थ ) में तो नाम ( पर्याय ) और लिङ्ग ( पुंलिङ्ग..... ) ये सभी बतलाये गये हैं; अतः इसीको पढ़ना चाहिये ।

२ अब 'प्रायशः' इत्यादिसे इस ग्रन्थमें लिङ्गादि जाननेका उपाय ( परिभाषा ) बतलाते हैं—प्रायः रूप ( आकार ) भेद अर्थात् 'ङीप्, ङीष्, टाप्, विसर्ग और अमादेश' आदिसे लिङ्गों ( स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) को जानना चाहिये । ( उदाहरण—स्त्रीलिङ्ग जैसे—'शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।' ( १।१।३७ ), यहाँ 'शिवा और सर्वमङ्गला' इन दो शब्दोंके आवन्त होनेसे तथा 'भवानी, रुद्राणी और शर्वाणी' इन तीनों शब्दोंके ह्यन्त होनेसे 'सु' ( प्रथमा विभक्तिके एकवचन ) का लोप हो गया है; अतएव 'शिवा.....' पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । क्रमशः पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जैसे—'.....प्रदोषो रजनीमुखम् ( १।४।६ )' यहाँ 'प्रदोष' शब्दकी

१. नाम च लिङ्गं च नामलिङ्गे, तथोरनुशासनमिति नामलिङ्गानुशासनम् । स्वरादिनाम्नां पुंस्त्वादिलिङ्गानां च व्युत्पादकमिति यावत् ॥

२. आदिपदेन यत्र 'वामोरूः' इत्यादावूहप्रत्ययः, कृतिरित्यादौ क्तिन्प्रत्ययश्च तस्य ग्रहणम् । एवञ्च 'लक्ष्मीः' इत्यादौ सुलोपाभावे स्त्रीत्वं 'दधि' इत्यादौ सुलोपेऽपि क्लीबत्वमेवेति यथाशास्त्रं व्यवस्था कार्या, नानुमानमात्रेणैव ॥

## स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं १, तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

‘सु’ विभक्तिको रत्न-विसर्ग होने से ‘प्रदोष’ शब्द पुंलिङ्ग और ‘रजनीमुख’ शब्दकी ‘सु’ विभक्तिको अमादेश होनेसे ‘रजनीमुख’ शब्द नपुंसकलिङ्ग है।) ॥  
 कहीं-कहीं साहचर्य (पासवाले शब्दके अनुसार) से तीनों लिङ्ग समझना चाहिए। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘तद्वित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ( १।३।९ )’ यहाँ स्त्रीलिङ्गवाले ‘सौदामनी’ आदि शब्दोंके साहचर्यसे सन्दिग्ध ‘तद्वित् और विद्युत्’ ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंलिङ्ग जैसे—‘स्फूर्जथुर्वज्र-निर्घोषः ( १।३।१० )’ यहाँ ‘वज्रनिर्घोष’ शब्दके साहचर्यसे ‘स्फूर्जथु’ शब्द पुंलिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘इन्द्रायुधं शक्रधनुः ( १।३।१० )’ यहाँ ‘इन्द्रा-युध’ शब्दके साहचर्यसे ‘शक्रधनुष्’ शब्द नपुंसकलिङ्ग है) ॥

१ कहीं-कहीं विशेष रूपसे कहनेपर स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘द्योदिवौ द्वे स्त्रियाम्’..... ( १।२।१ )’ यहाँ ‘स्त्रियाम्’ इस विशेष शब्दसे ‘द्यो और दिव्’ ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंलिङ्ग जैसे—‘निधिर्ना शेवधिः’..... ( १।१।७१ )’ यहाँ ‘ना’ इस विशेष शब्दसे ‘निधि’ शब्द पुंलिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘रोचिः शोचिरुभे क्लीबे ( १।३।३४ )’ यहाँ ‘क्लीबे’ इस विशेष शब्दसे ‘रोचिष् और शोचिष्’ ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं) ॥

विशेषः—कहीं-कहीं सर्वनाम पदसे और विशेषण पदसे भी तीनों लिङ्ग जानने चाहिए। (सर्वनाम पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ( १।३।१ )’ यहाँ ‘ताः’ इस स्त्रीलिङ्गवाले सर्वनाम पद से ‘विक्, ककुप्, काष्ठा, आशा और हरित्’ ये पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। सर्वनाम पदसे पुंलिङ्ग जैसे—‘.....शुचिस्त्वयम् ( १।४।१६ )’ यहाँ ‘अयम्’ इस सर्वनाम पदसे ‘शुचि’ शब्द पुंलिङ्ग है। सर्वनाम पदसे नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘...विषुवद्विषुवं च तत् ( १।४।१४ )’ यहाँ ‘तत्’ इस सर्वनाम पदसे ‘विषुवत् और विषुव’ ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ॥ विशेषण पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘.....संहृतिर्बहुभिः कृता ( १।६।८ )’ यहाँ ‘कृता’ इस स्त्रीलिङ्ग विशेषण पदसे ‘संहृति’ शब्द स्त्रीलिङ्ग है)। विशेष पदसे लिङ्गके अतिरिक्त वचन आदिका भी ज्ञान होता है। (जैसे—‘स्त्रियां बहुष्वप्सरसः’..... ( १।१।५२ ) यहाँ ‘स्त्रियां और बहुषु’ इन दो विशेष शब्दोंके कहनेसे ‘अप्सरस्’ शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग

## १ 'भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः ।

और बहुवचन ही होता है । दूसरा उदाहरण जैसे—'स्वरव्ययं..... ( १।१।६ )' यहाँ 'अव्ययम्' इस विशेष पदसे 'स्वर' शब्द अव्यय ही है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये ) ॥

१. इस ग्रन्थमें प्रत्येक शब्दका लिङ्ग मालूम करनेके लिये उन शब्दोंके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' प्रायः नहीं किये गये हैं, जिनकेलिङ्ग पहिले नहीं कहे हैं और भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु जिन शब्दोंके लिङ्ग आदि कहींपर कह दिये गये हैं, उन्हींके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' किये गये हैं । (क्रमशः उदाहरण—पहला द्वन्द्व जैसे—जातिर्जातञ्च सामान्यं..... ( १।४।३१ )' यहाँ 'जातिसामान्यजातानि' इस तरह और 'कुलिशं भिदुरं पविः' ( १।१।४७ )' यहाँ 'कुलिशभिदुरपवयः' इस तरह द्वन्द्व नहीं किया गया है; यहाँ पहले उदाहरणमें द्वन्द्व समास करनेपर 'अन्तिम शब्दका लिङ्ग हो जानेसे 'जाति' शब्द खोलिङ्ग और 'जात तथा सामान्य' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं, यह मालूम नहीं हो सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी द्वन्द्व करनेपर 'कुलिश और भिदुर' ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग और 'पवि' शब्द पुंलिङ्ग है, यह मालूम नहीं पढ़ सकता । दूसरा एकशेष जैसे—'ओकः सञ्जाश्रयश्चोकाः..... (३।३।२३३)' यहाँ 'ओकस्' शब्दको 'सञ्जाश्रयश्चोकासौ' इस तरह और 'नभः खं श्रावणो नभाः (३।३।२३२)' यहाँ 'खश्रावणौ तु नभसौ' इस तरह एकशेष नहीं किया गया है; अन्यथा पहले उदाहरणमें 'ओकस्' शब्द 'सञ्ज' अर्थात् गृह अर्थमें नपुंसक तथा 'आश्रय' अर्थमें पुंलिङ्ग है यह मालूम नहीं पढ़ सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी 'नभस्' शब्द 'आकाश' अर्थमें नपुंसकलिङ्ग तथा 'श्रावण महीना' अर्थमें पुंलिङ्ग है यह ज्ञान नहीं हो सकता । तीसरा सङ्कर जैसे—'..... स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः (१।६।११)' यहाँ पुंलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और खोलिङ्ग क्रमसे

१. उपाध्याय-गौड-मालाकार-श्रीमोजास्तु इमं विभिन्नक्रमेण व्याचख्युः, तद्व्याख्या च 'उपाध्यायश्च क्रमाद्वते.....इत्याद्यैश्चार्थसूचनेति' क्षीरस्वामिकृतामरकोशोद्घाटनारख्य-व्याख्यायां भा० दी० कृतव्याख्यासुधायाः, पं० शिवदत्तकृतटिप्पण्यां क्षीरस्वाम्यादिमतं, राय-मुकुटकृत 'पदचन्द्रिका' रामकृष्णदीक्षितकृत 'पीयूष' व्याख्यां चानुपूर्व्येण विलिख्य पूर्वोक्त-टिप्पणीकारमतं च लिखितमिति तत एव सकलं सविस्तरतोऽवधार्यम् ॥

२. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (पा० सू० २।४।२६)' इति परवल्लिङ्गता स्यादित्याशयः ॥

## कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

ही कहे गये हैं—‘सङ्कर’ अर्थात् मिश्रण करके ‘स्तुतिः स्तोत्रं स्तत्रो नुतिः’ इस तरह व्यतिक्रमसे नहीं कहा गया है । ‘पीयूषममृतं सुधा (१११४८)’ यहाँ ‘पीयूषन्तु सुधाऽमृतम्’ इस तरह सङ्कर अर्थात् संमिश्रण नहीं किया गया है; किन्तु पहले नपुंसकलिङ्गवाले ‘पीयूष और अमृत’ इन दो शब्दोंको कहनेके उपरान्त ही स्त्री-लिङ्गवाले ‘सुधा’ शब्दको कहा गया है; इसी तरह ‘प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च... (११६१०)’ इत्यादिमें भी समझना चाहिये । इस ग्रन्थमें जिन शब्दोंके कहीं-पर लिङ्ग कहे गये हैं; उन शब्दोंके तो ‘१ द्वन्द्व, २ एकशेष और ३ सङ्कर’ प्रायः किये ही गये हैं । पहला द्वन्द्व जैसे—१ ‘स्त्रियां बहुष्वप्सरसः (१११५२)’—२ ‘यच्चैकपिङ्गैलविल... (१११६९)’—३ ‘नैर्ऋतो यातुरक्षसी (१११६०)’—४ ‘गन्धर्वो दिव्यगायने (३३१३३)’—५ ‘स्यात्किन्नरः किम्पुरुषः (१११७१)’ इन पाँच वाक्योंसे ‘१ अप्सरस्, २ यत्, ३ रक्षस्, ४ गन्धर्व और ५ किन्नर’ इन पाँच शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतः ‘विद्याधराप्सरसोयक्षरसो गन्धर्वकिन्नराः (१११११)’ यहाँ उक्त पाँच शब्दोंका द्वन्द्व किया ही गया है । समान लिङ्गवाले शब्दोंका तो यथावसर द्वन्द्व किया ही गया है; जैसे—‘यच्चैकपिङ्गैलविल-श्रीदपुण्यजनेश्वराः (१११६९)’ यहाँ ‘यच्च, एकपिङ्ग, ऐलविल, श्रीद और पुण्य-जनेश्वर’ ये शब्द समानलिङ्ग अर्थात् पुंलिङ्ग ही हैं, अतः इनका द्वन्द्व किया ही गया है । दूसरा एकशेष जैसे—‘पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः (२१६३१)’ इस वाक्यसे ‘श्वश्रू और श्वशुर’ इन दोनों शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतएव ‘श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ (२१६३७)’ यहाँ ‘श्वश्रू और श्वशुर’ इन दोनों शब्दों का ‘एकशेष’ किया ही गया है । तीसरा सङ्कर जैसे—‘श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी... (११६१३)’ यहाँ पहले खालिङ्गवाले ‘श्रुतिः’ शब्दको कहनेके उपरान्त पुंलिङ्गवाले ‘वेद और आम्नाय’ इन दो शब्दोंको कह कर फिर स्त्रीलिङ्गवाले ‘त्रयी’ शब्दको कहा गया है । ‘प्रायशः’ इस शब्दको कहनेसे ‘पयः कीलालममृतं... (१११०३)’—‘दुग्धं क्षीरं पयः समम् (२१५५१)’ इत्यादि वाक्योंसे यद्यपि ‘पयस्’ शब्दको नपुंसकलिङ्ग कह दिया गया है; तथापि ‘पयः क्षीरं पयोऽम्बु च (३३१३३३)’ यहाँ ‘अम्बुक्षारे तु पयसी’ इस तरह

१ त्रिलिङ्ग्यां त्रिविविति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।

२ निषिद्धलिङ्गं शेषार्थः—

३ त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

एकशेष नहीं करनेपर भी कोई दाष ( प्रातिज्ञाहान ) नहीं है । इसी तरह अन्यान्य उदाहरण भी समझने चाहिये ) ॥

१ तीनों लिङ्ग ( पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) हैं, यह बतलानेके लिये इस ग्रंथमें 'त्रिषु', पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्ग हैं, यह बतलानेके लिये 'द्वयोः' ये शब्द कहे गये हैं । (पहला तीनों लिङ्ग बतलानेके लिये जैसे— '.....मण्डलं त्रिषु ( ११३१५ )' यहाँ 'त्रिषु' शब्द कहनेसे 'मण्डल' शब्दके तीनों लिङ्ग ( पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) होते हैं । दूसरा स्त्रीलिङ्ग बतलानेके लिये जैसे— '.....अशनिर्द्वयोः ( १११४७ )' यहाँ 'द्वयोः' शब्दके कहनेसे 'अशनि' शब्द पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होता है ) ॥

विशेषः— पुंलिङ्ग को बतलाने के लिये 'ना, पुमान्, पुंसि.....' स्त्रीलिङ्ग को बतलानेके लिये 'स्त्री, स्त्रियाम्.....' और नपुंसकलिङ्ग को बतलानेके लिये 'क्लीबम्.....' शब्द कहे गये हैं । इनके उदाहरण स्वयं समझ लेना चाहिये ॥

२ जहाँ जिस लिङ्गका निषेध किया गया है, उस निषिद्ध (मना किये हुए) लिङ्गके अतिरिक्त शेष ( बाकी ) लिङ्ग उस शब्दके होते हैं । ( जैसे— 'संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री.....' ( ११४२० )' यहाँ 'अस्त्री' इस शब्दसे 'संवत्सर' आदि चार शब्दोंके स्त्रीलिङ्गका निषेध करनेसे उक्त चार शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में हैं ) ॥

३ जिस शब्दके अन्तमें 'तु' या आदिमें 'अथ' शब्द हों, ऐसे, '१ नाम-पद, २ लिङ्गपद, ३ सर्वनामपद और ४ अव्ययपद' इन चारोंका पहलेवाले ( पूर्वमें रहनेवाले ) शब्दोंके साथमें सम्बन्ध नहीं होता है । ( क्रमशः उदाहरण—पहला (नामपद) त्वन्त ( 'तु' अन्तवाला ) जैसे— '.....और्वस्तु वाडवो वडवानलः ( १११५६ )' यहाँ 'और्व' शब्दके आगे ( अन्तमें ) 'तु' शब्द है; अतः 'और्व' शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'वाडव' ही शब्दके साथ है, पूर्व ( पहले ) वाले शब्दके साथ नहीं । दूसरा ( लिङ्गपद ) त्वन्त जैसे— 'अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ( ११३१२ )' यहाँ 'पुंसि' इस शब्दके

## १. अथ स्वर्गवर्गः,

## १ स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।

अन्तर्मे 'तु' शब्द है; अत एव 'पुंसि' इस पदका आगेवाले 'अन्तर्धि' शब्दके साथ होनेसे वही ( अन्तर्धि शब्द ही ) पुंलिङ्ग है, पूर्व ( पहलेवाला ) नहीं । तीसरा ( सर्वनामपद ) त्वन्त जैसे—'गोष्ठं गोष्ठानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ( २।१।१३ )' यहाँ 'तत्' इस सर्वनाम पद के आगे 'तु' शब्द होनेसे उसका सम्बन्ध आगेवाले 'गौष्ठीन' शब्दके साथ है, पूर्ववाले 'गोष्ठानक' शब्दके साथ नहीं । चौथा ( अव्ययपद ) त्वन्त जैसे—'वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ( १।२।२ )' यहाँ 'वा' इस अव्यय पदके अन्तर्मे 'तु' शब्द है, अतः 'वा' पदका सम्बन्ध 'पुंसि' के साथ होनेसे 'आकाश और विहायस्' ये ही दो शब्द विकल्पसे पुंलिङ्ग होते हैं, पूर्ववाला 'विष्णुपद' शब्द नहीं । इसी तरहसे पहला ( नामपद ) अथादि ( 'अथ' शब्द आदिमें दो ऐसा ) जैसे—'मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्या.....' ( १।५।७ ) यहाँ 'अज्ञान' शब्दके पूर्वमें ( पहले ) 'अथ' शब्द रहनेसे वह 'अज्ञान' शब्द आगेवाले 'अविद्या' शब्दका ही पर्याय है, पूर्ववाले 'अपवर्ग' शब्दका नहीं । दूसरा ( लिङ्गपद ) अथादि जैसे—'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं' ( १।४।२६ ) यहाँ 'त्रिषु' इस लिंगपदके आदिमें 'अथ' शब्द रहनेसे पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके अर्थमें प्रयुक्त 'त्रिषु' इस शब्दका आगेवाले 'द्रव्ये' इसके साथ सम्बन्ध होनेसे 'शस्त' शब्द द्रव्य ही अर्थमें त्रिलिंग है, पूर्ववाले शब्दोंका पर्यायवाचक ( कल्याणमात्र का वाचक ) होनेपर त्रिलिंग नहीं है । इसी तरह तीसरे और चौथे अर्थात् सर्वनामपद और अव्ययपदके भी अथादिका उदाहरण समझना चाहिये ॥

विशेषः—यहाँ 'अथ' शब्द 'अथो' शब्दका उपलक्षण है, अतः 'अथ'के मुख्य 'अथो' शब्द भी जिसके आदिमें रहे, उसका सम्बन्ध भी पूर्ववाले शब्दके साथ नहीं होता है । ( जैसे—'.....साम सान्त्वमथो समौ—' भेदो-पजापावु.....' ( २।८।२१ ) यहाँ 'समौ'के आदि में 'अथो' शब्दके रहने से 'समौ' इस शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'भेद और उपजाप' इन्हीं शब्दों के साथ होगा, पूर्ववाले 'सान्त्व' शब्द के साथ नहीं ) । इसी तरह अन्यत्र भी अन्यान्य उदाहरणोंको स्वयं समझ लेना चाहिये ॥

१ स्वः ( =स्वर् अ० ), स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, सुरलोकः



- सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ।  
 १ अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।  
 सुपर्वाणः सुमनसुस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥  
 आदितेया दिविषदो, लेखा अदितिनन्दनाः ।  
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना, अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥  
 बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो, गीर्वाणा दानवारयः ।  
 वृन्दारका देवतानि, पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥  
 २ आदित्यविश्ववसवस्तुषिताऽऽभास्वरानिलाः ।  
 महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

( ५ पु ), द्यौः ( = द्यौः ), द्यौः ( = दिव् । २ स्त्री ), त्रिविष्टपम् ( न । + त्रिविष्टपम् ), 'स्वर्ग' के ९ नाम हैं ॥

१ अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, विबुधः, सुरः, सुपर्वा (=सुपर्बन्), सुमनाः (= सुमनस्), त्रिदिवेशः, दिवौकाः ( = दिवौकस् । + दिवोकाः ), आदितेयः, दिविषत् (=दिविषद्), लेखः, अदितिनन्दनः, आदित्यः, ऋभुः, अस्वप्नः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः ( = अमृतान्धस् ), बर्हिर्मुखः, क्रतुभुक् ( = क्रतुभुज् ), गीर्वाणः ( + गीर्वाणः ), दानवारिः, वृन्दारकः ( २४ पु ), दैवतम् ( पु न ), देवता ( स्त्री ), 'देवता' के २६ नाम हैं ॥

२ आदित्याः १२, विश्वे १०, वसवः ८, तुषिताः २६ या ३६, आभास्वराः ६४, अनिलाः ४९, महाराजिकाः २२० या २३६ या ४०००, साध्याः १२, रुद्राः ११, ( ९ पु ) 'गणदेवता' देवताओंके एक-एक गण ( समूह ) के ९ नाम हैं । इन गणदेवताओंके जितने-जितने भेद होते हैं, वे प्रत्येकके आगे लिख दिये गये हैं ॥

१. 'आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः ॥

वसवश्चाष्ट संख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः ॥ १ ॥

आभास्वराश्चतुःषष्टिर्वाताः पञ्चाशदूनकाः ॥

महाराजिकनामानो द्वे शते विशतिस्तथा ॥ २ ॥

साध्या द्वादश विख्याता रुद्रा एकादश स्मृताः ॥' इति ॥

एषां नामानि परिशिष्टे द्रष्टव्यानि ।

- १ विद्याधराप्सरसरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।  
 'पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽभी देवयोनयः ॥ ११ ॥
- २ असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।  
 शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥
- ३ सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।  
 समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥
- षडभिज्ञो दशषलोऽद्वयवादी विनायकः ।

१ विद्याधराः ( 'जीमूतवाहन, ...' ), अप्सरसः ( स्त्री, नि० व०, देवता-ओंकी स्त्रियाँ घृताची, मेनका, रम्भा, ... ), यक्षाः ( कुबेर, ... ), रक्षांसि ( = रक्षस्, न । लङ्कावासी, माया करनेवाले ), गन्धर्वाः ( देवताओंके यहाँ गानेवाले—'तुम्बुरु, ...' ), किन्नराः ( घोड़ेका मुँह तथा आदमीके शरीरवाले और आदमीका मुँह तथा घोड़ेके शरीरवाले ), पिशाचाः ( मांसभोजी भूत-विशेष ), 'गुह्यकाः' ( 'मणिभद्र, ...' ), सिद्धाः ( 'विश्वावसु, ...' ), भूताः ( शिव के गणविशेष—प्रमथ... । श्ल० ८ पु ), 'देवयोनि' के १० नाम हैं । ( इनका प्रयोग तीनों वचनोंमें होता है ) ॥

२ असुरः ( + आसुरः ), दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्र-शिष्यः, दितिसुतः, पूर्वदेवः, सुरद्विट् ( = सुरद्विष् । १० पु ) 'दैत्य' के १० नाम हैं ॥

३ सर्वज्ञः, सुगतः, बुद्धः, धर्मराजः, तथागतः, समन्तभद्रः, 'भगवान्' (= भगवत्), 'मारजित्', लोकजित्, जिनः, 'षडभिज्ञः', 'दशषलः', अद्वयवादी

१. 'सिद्धगुह्यकभूता हि पिशाचा देवयोनयः' इति भागुरिः पपाठेति क्षी० स्वा० ॥

२. 'निधिं रक्षन्ति ये रक्षास्ते स्युर्गुह्यकसंज्ञकाः' ॥ इति ॥

३. 'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः त्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इति ॥' इति पूर्वाक्ताः षड् भगा यस्य स 'भगवान्' इति ॥

४. मारान् कामक्रोधादीन् बौद्धसम्मतान् स्कन्धमार—क्लेशमार—मृत्युमार—देवपुत्रमारोश्च जयतीति मारजित् ।

५. 'दिव्यं चक्षुःश्रोत्रम् १. परचित्तज्ञानम् २. पूर्वनिवासानुस्मृतिः ३. आत्मज्ञानम् ४. विषदग्मनम् ५. कायव्यूहसिद्धिः ६' इति षट्सु—'दानम् १, शीलम् २, क्षान्तिः ३, वीर्यम् ४, ध्यानम् ५, प्रज्ञा ६' इति षट्सु वा अभिज्ञा ज्ञानं यस्य स 'षडभिज्ञः' इति ॥

६. 'दानं १ शीलं २ क्षमा ३ वीर्यं ४ ध्यानं ५ प्रज्ञा ६ बलानि ७ च ॥

उपायः ८ प्रणिधि ९ ज्ञानं १० दश बुद्धिबलानि वै ॥ १॥' इति ॥

मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः १शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥

स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।

गौतमश्चार्कबन्धुश्च, मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

२ ब्रह्माऽऽत्मभूः सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी पितामहः ।

हिरण्यगर्भो लोकेशः, स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥

धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो, विरञ्जिः कमलासनः ।

ऋष्टा प्रजापतिर्वेधा, विधाता विश्वसृज् विधिः ॥ १७ ॥

३ 'नाभिजन्माण्डजः पूर्वो, निधनः कमलोद्भवः (१)

सदानन्दो रजोमूर्तिः, सत्यको हंसवाहनः' (२)

४ विष्णुर्नारायणः कृष्णो, वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।

दामोदरो हृषीकेशः, केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो, गोविन्दो गरुडध्वजः ।

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी, विश्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥

( = अद्भ्यवादिन् ), विनायकः, मुनीन्द्रः, श्रीघनः, शास्ता ( = शास्त्र ), मुनिः ( १८ पु ) 'बुद्ध' के १८ नाम हैं ॥

१ शाक्यमुनिः, शाक्यसिंहः, सर्वार्थसिद्धः, शौद्धोदनिः, गौतमः, अर्कबन्धुः, मायादेवीसुतः ( ७ पु ), 'बुद्ध' के अवान्तरभेद, 'सप्तम बुद्ध' के ७ नाम हैं ॥

२ ब्रह्मा ( ब्रह्मन् ), आत्मभूः, सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी ( = परमेष्ठिन् ), पितामहः, हिरण्यगर्भः, लोकेशः, स्वयम्भूः, चतुराननः, धाता ( = धातृ ), अब्जयोनिः, द्रुहिणः ( = द्रुषणः ), विरञ्जिः ( + विरिञ्जिः ), कमलासनः, ऋष्टा ( = ऋष्टृ ), प्रजापतिः, वेधाः ( वेधस् ), विधाता ( = विधातृ ), विश्वसृज् ( = विश्वसृज् ), विधिः ( २० पु ), 'ब्रह्मा' के २० नाम हैं ॥

३ [ नाभिजन्मा ( = नाभिजन्मन् ), अण्डजः, पूर्वः, निधनः, कमलोद्भवः, सदानन्दः, रजोमूर्तिः, सत्यकः, हंसवाहनः ( ९ पु ), 'ब्रह्मा' के ९ नाम हैं ॥ ]

४ विष्णुः, नारायणः ( + नरायणः ), कृष्णः, वैकुण्ठः, विष्टरश्रवाः ( = विष्टरश्रवस् ), दामोदरः, हृषीकेशः, केशवः, माधवः, स्वभूः, दैत्यारिः, पुण्डरीकाक्षः, गोविन्दः, गरुडध्वजः, पीताम्बरः, अच्युतः, शार्ङ्गी ( = शार्ङ्गिन् ), विश्व-

१. विपश्यी शिखी विश्वभूः ककुच्छन्दश्च काञ्चनः । काश्यपश्च, सप्तमस्तु शाक्यसिंहोऽर्कबन्धवः ॥  
तथा राहुलसूः सर्वार्थसिद्धो गौतमान्वयः । मायाशुद्धोदनसुतो देवदत्तप्रजश्च सः ॥  
( अभि० चिन्ता० २।१४९-१५१ )

- उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।  
 पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥  
 देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।  
 वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥  
 विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।  
 १ 'पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः (३)  
 जलशायी विश्वरूपो, मुकुन्दो मुरमर्दनः' (४)  
 २ वसुदेवोऽस्य जनकः, स पद्मानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥  
 ३ बलभद्रः प्रलम्बघ्नो, बलदेवोऽभ्युताग्रजः ।  
 रेवतीरमणो रामः, कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥  
 नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।  
 सङ्कर्षणः सीरपाणिः, कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥  
 ४ मदनो मन्मथो मारः, प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।  
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः, कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥

क्सेनः (+ विश्वक्सेनः), जनार्दनः, उपेन्द्रः, इन्द्रावरजः, चक्रपाणिः, चतुर्भुजः, पद्मनाभः, मधुरिपुः, वासुदेवः, त्रिविक्रमः, देवकीनन्दनः, शौरिः (+ सौरिः), श्रीपतिः, पुरुषोत्तमः, वनमाली (=वनमालिन्), बलिध्वंसी (=बलिध्वंसिन्), कंसारातिः, अधोक्षजः, विश्वम्भरः, कैटभजित्, विधुः, श्रीवत्सलाञ्छनः ( ३९ पु ), कृष्ण भगवान् के ३९ नाम हैं ॥

[ १ पुराणपुरुषः, यज्ञपुरुषः, नरकान्तकः, जलशायी (=जलशायिन्), विश्वरूपः, मुकुन्दः, मुरमर्दनः ( ७ पु ), कृष्णभगवान् के ७ नाम हैं ॥ ]

२ वसुदेवः, आनकदुन्दुभिः ( २ पु ), 'कृष्णके पिता' के २ नाम हैं ॥

३ बलभद्रः, प्रलम्बघ्नः, बलदेवः, अभ्युताग्रजः, रेवतीरमणः, रामः, कामपालः, हलायुधः, नीलाम्बरः, रौहिणेयः, तालाङ्कः, मुसली (=मुसलिन् । + मुषली=मुषलिन्), हली (=हलिन्), सङ्कर्षणः, सीरपाणिः, कालिन्दीभेदनः, बलः ( १७ पु ), 'बलदेव' के १७ नाम हैं ॥

४ मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः, मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्पकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, शम्बरारिः (+ सम्बरारिः), मनसिजः, कुसुमेधुः,  
 Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

शम्भरारिर्मनसिजः, कुसुमेषुरनन्यजः ।

पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥

१ 'अरविन्दमशोकं च, चूतं च नवमल्लिका (५)

नीलोत्पलं च पञ्चैते, पञ्चबाणस्य सायकाः (६)

२ उन्मादनस्तापनश्च, शोषणः स्तम्भनस्तथा (७)

सम्मोहनश्च कामस्य, पञ्चबाणाः प्रकीर्तिताः' (८)

३ ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।

४ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा, कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥

५ 'इन्दिरा लोकमाता मा, क्षीरोदतनया रमा (९)

भार्गवी लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका' (१०)

अनन्यजः, पुष्पधन्वा (=पुष्पधन्वन्), रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः (१९ पु),  
'कामदेव' 'प्रद्युम्न' श्रीकृष्णपुत्रके १९ नाम हैं ॥

१ [ अरविन्दम्, अशोकम्, चूतम्, नवमल्लिका ( स्त्री ), नीलोत्पलम्  
( श्लो० ४ न ), ये ५ 'कामदेवके बाण' हैं ॥ ]

२ [ उन्मादन, तापन, शोषण, स्तम्भन, सम्मोहन, ये क्रमसे पूर्वोक्त  
५ 'कामदेवके बाणोंके धर्म' हैं ॥ ]

३ ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः ( + ऋश्यकेतुः, ऋष्यकेतुः, क्षत्र्यकेतुः ), अनिरुद्धः, उषा-  
पतिः ( ४ पु ), 'कामदेवके पुत्र' के ४ नाम हैं । ( पहलेवाले दो नाम कामदेवके  
तथा अन्तवाले दो नाम अनिरुद्धके हैं, ऐसा भी किसी का मत है ) ॥

४ लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया ( ६ स्त्री ), 'लक्ष्मी' के  
६ नाम हैं ॥

५ [ इन्दिरा, लोकमाता ( =लोकमातृ ), मा, क्षीरोदतनया ( + क्षीराब्धि-

१. 'उन्मादनं शोचनं च तथा सम्मोहनं विदुः ।

शोषणं मारणं चैव पञ्च बाणा मनोभुवः ॥ १ ॥

मदनोन्मादनौ चैव मोहनः शोषणस्तथा ।

सन्दीपनः समाख्याताः पञ्च बाणा इमे स्मृताः ॥ २ ॥'

ईदृशः क्षी० स्वा० पाठः ॥

- १ शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।  
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥
- २ 'चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु, श्रीवत्सो लाङ्छनं स्मृतम् (११)  
अश्वश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकः, (१२)  
सारथिर्दारुको मन्त्री, ह्युद्धवश्चानुजो गदः' (१३)
- ३ गरुत्मान् गरुडस्ताक्षर्यो, वैनतेयः खगेश्वरः ।  
नागान्तको विष्णुरथः, सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥
- ४ शम्भुरीशः पशुपतिः, शिवः शूली महेश्वरः ।  
ईश्वरः शर्व ईशानः, शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥  
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।  
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥  
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः, शितिकण्ठः कपालभृत् ।

तनया...), रमा, भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका (८ स्त्री), 'लक्ष्मी' के ८ नाम हैं ॥ ]

१ पाञ्चजन्यः ( पु )—'विष्णुका शङ्ख', सुदर्शनः ( पु न )—'विष्णुका चक्र', कौमोदकी ( स्त्री )—'विष्णुकी गदा', नन्दकः ( पु )—'विष्णुकी तलवार' और कौस्तुभः ( पु )—'विष्णुका मणि' है ॥

२ शार्ङ्गम् ( न )—'विष्णुका धनुष', श्रीवत्सः ( पु )—'विष्णुका चिह्न', शैव्यः, सुग्रीवः, मेघपुष्पः, बलाहकः ( ४ पु ), ४ 'विष्णुके घोड़े', दारुकः ( पु )—'विष्णुका सारथी' । उद्धवः ( पु )—'विष्णुका मन्त्री' और गदः ( पु ) 'विष्णुका छोटा भाई' है ॥ ]

३ गरुत्मान् (=गरुत्मत ), गरुडः, ताक्षर्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, नागान्तकः, विष्णुरथः, सुपर्णः, पन्नगाशनः ( ९ पु ) 'गरुड' के ९ नाम हैं ॥

४ शम्भुः, ईशः, पशुपतिः, शिवः, शूली (= शूलिन् ), महेश्वरः, ईश्वरः, शर्वः ( + सर्वः ), ईशानः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, भूतेशः, खण्डपरशुः, गिरीशः, गिरिशः, मृडः, मृत्युञ्जयः, कृत्तिवासाः (=कृत्तिवासस्), पिनाकी (=पिनाकिन् ), प्रमथाधिपः, उग्रः, कपर्दी (=कपर्दिन् ), श्रीकण्ठः, शितिकण्ठः, कपालभृत्,

वामदेवो महादेवो, विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥

कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।

हरः स्मरहरो भर्गस्त्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥

गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः, क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।

व्योमकेशो भवो भीमः, स्थाणु रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

१ 'अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च, गजारिश्च महानटः' (१४)

२ कपदोऽस्य जटाजूटः, पिनाकोऽजगवन्धनुः ।

प्रमथाः स्युः पारिषदा, ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५ ॥

४ 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव, कौमारी वैष्णवी तथा (१५)

वाराही च तथेन्द्राणी, चामुण्डा सप्त मातरः' (१६)

वामदेवः, महादेवः, विरूपाक्षः, त्रिलोचनः, कृशानुरेताः (=कृशानुरेतस्), सर्वज्ञः, धूर्जटिः, नीललोहितः, हरः (+ हारः), स्मरहरः, भर्गः (+ भर्ग्यः), त्यम्बकः, त्रिपुरान्तकः, गङ्गाधरः, अन्धकरिपुः, क्रतुध्वंसी (=क्रतुध्वंसिन्), वृषध्वजः, व्योमकेशः, भवः, भीमः, स्थाणुः, रुद्रः, उमापतिः ( ४८ पु ) 'शिव' के ४८ नाम हैं ॥

१ [ अहिर्बुध्न्यः, 'अष्टमूर्तिः, गजारिः, महानटः ( ४ पु), 'शिव' के ४ नाम हैं ॥ ]

२ कपदः (पु) 'शिवका जटासमूह', अजगवम् ( न । + अजकवम् ), पिनाकः (पु), २ 'शिवका धनुष' और 'प्रमथाः' (पु) 'शिवके सभासद' हैं ॥

३ ब्राह्मी,.....(स्त्री । आदि पदसे 'माहेश्वरी, कौमारी' इत्यादि आगे कहे हुए का संग्रह है ) 'लोकमातायै' हैं ॥

४ [ ब्राह्मी ( स्त्री । + ब्रह्माणी ), माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा ( ७ स्त्री), ये ७ 'लोकमातायै' हैं ॥ ]

१. 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही वैष्णवी तथा ॥

कौमारी चर्ममुण्डा च काली सङ्कर्षणीति च ॥ १ ॥' इति ॥

'ब्राह्मयाद्या मातरः स्मृताः' इति स्त्री० स्वा० ॥

२. 'पृथिवी १ सलिलं २ तेजो ३ वायु ४ राकाश ५ मेव च ॥

सूर्या ६ चन्द्रभसौ ७ सोमयाजी ८ चेत्यष्ट मूर्तयः ॥१॥' इति यादवः ॥

- १ विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमृणिमादिकमष्टधा ।
- २ 'अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा (१७)  
प्राप्तिः प्राकाम्यमोक्षित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः' (१८)
- ३ उमा कात्यायनी गौरी, काली हैमवतीश्वरी ॥ ३६ ॥  
शिवा भवानी रुद्राणी, शर्वाणी सर्वमङ्गला ।  
अपर्णा पार्वती दुर्गा, मृडानी चण्डिकाऽम्बिका ॥ ३७ ॥
- ४ 'आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा (१९)
- ५ कर्ममोटी तु चामुण्डा, ६ चर्ममुण्डा तु चर्चिका' (२०)
- ७ विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः,  
अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥
- ८ कार्तिकेयो महासेनः, शरजन्मा षडाननः ।  
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः, सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥  
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।

१ विभूतिः, भूतिः ( २ स्त्री ), ऐश्वर्यम् ( न ), 'ऐश्वर्यं यासिद्धि' के ३ नाम हैं । ( वे भागे कहे हुए 'अणिमा' आदि भेद से ८ प्रकार के हैं ) ॥

२ [ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः ( ५ स्त्री ), प्राकाम्यम्, ईशित्वम्, वशित्वम् ( ३ न ), ये ८ 'सिद्धियाँ' हैं ॥ ]

३ उमा, कात्यायनी, गौरी, काली ( + काला ), हैमवती, ईश्वरी ( + ईश्वरा ), शिवा ( + शिवी ), भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अम्बिका ( १७ स्त्री ), 'पार्वती' के १७ नाम हैं ॥

४ [ आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा ( ४ स्त्री ) 'पार्वती' के ४ नाम हैं ॥ ]

५ [ कर्ममोटी, चामुण्डा ( २ स्त्री ) 'चामुण्डा' के २ नाम हैं ॥ ]

६ [ चर्ममुण्डा, चर्चिका ( + चण्डिका २ स्त्री ), 'चण्डिका' के २ नाम हैं ॥ ]

७ विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, एकदन्तः, हेरम्बः, लम्बोदरः, गजाननः ( ८ पु ), 'गणेश' के ८ नाम हैं ॥

८ कार्तिकेयः, महासेनः, शरजन्मा (= शरजन्मन्), षडाननः, पार्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानीः, अग्निभूः, गुहः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः,

१. 'चर्ममुण्डेति चण्डिका' इति क्षीरस्वामिपाठात् ।



- षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥
- १ 'शृङ्गी शृङ्गी रिटिस्तुण्डी, नन्दिको नन्दिकेश्वरः' (२१)
- २ इन्द्रो मरुत्वान्मघवा, बिडौजाः पाकशासनः ।  
 वृद्धश्रवाः सुनासीरः, पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ४१ ॥  
 जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः, शतमन्युर्दिवस्पतिः ।  
 सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री, वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥  
 वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।  
 जग्भभेदी हरिहयः, स्वाराणमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥  
 सङ्क्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।  
 आखण्डलः सहस्राक्षः, ऋभुक्षाःस्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥  
 पुलोमजा शचीन्द्राणी, ४ नगरी त्वमरावती ।

षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः ( + क्रौञ्चदारणः । १७ पु ), 'कार्तिकेय' के १७ नाम हैं ॥

१ [ शृङ्गी (= शृङ्गिन् ), शृङ्गी (= शृङ्गिन् ), रिटिः, तुण्डी (= तुण्डिन् ), नन्दिकः, नन्दिकेश्वरः ( ६ पु ), 'नन्दी' के ६ नाम हैं ॥ ]

२ इन्द्रः, मरुत्वान् (= मरुत्वत् ), मघवा (= मघवन् । वै० मघवान् ), बिडौजाः (= बिडौजस् ), पाकशासनः, वृद्धश्रवाः (= वृद्धश्रवस् ), सुनासीरः ( + शुनासीरः, शुनाशीरः ), पुरुहूतः, पुरन्दरः, जिष्णुः, लेखर्षभः, शक्रः, शतमन्युः, दिवस्पतिः, सुत्रामा (= सुत्रामन् । + सूत्रामा ), गोत्रभिद्, वज्री (= वज्रिन् ), वासवः, वृत्रहा (= वृत्रहन् ), वृषा (= वृषन् ), वास्तोष्पतिः, सुरपतिः, बलारातिः, शचीपतिः, जग्भभेदी (= जग्भभेदिन् ), हरिहयः, स्वाराट् (= स्वाराज् ), नमुचिसूदनः, सङ्क्रन्दनः, दुश्च्यवनः, तुराषाट् (= तुहासाह् ), मेघवाहनः, आखण्डलः, सहस्राक्षः, ऋभुक्षाः ( ऋभुचिन् । ३५ पु ), 'इन्द्र' के ३५ नाम हैं ॥

३ पुलोमजा, शची ( + सची ), इन्द्राणी ( ३ स्त्री ), 'इन्द्राणी' के २ नाम हैं ॥

४ अमरावती ( स्त्री ), 'इन्द्रकी नगरी' उच्चैःश्रवाः (= उच्चैःश्रवस् । पु ),

१. 'शृङ्गी शृङ्गिरिटिस्तुण्डिनन्दिनौ नन्दिकेश्वरे ॥' इति स्त्री० स्वा० ॥

- हय उच्चैःश्रवाः सूतो, मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥  
 स्यात् प्रासादो वैजयन्तो, जयन्तः पाकशासनिः ।  
 १ ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः, ॥ ४६ ॥  
 २ ह्यादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।  
 शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥  
 ३ व्योमयानं विमानोऽस्त्री ४ नारदाद्याः सुरर्षयः ।  
 ५ स्यात्सुधर्मा देवसभा, ६ पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥  
 ७ मन्दाकिनी वियद्गङ्गा, स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।  
 ८ मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री, रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

‘इन्द्र का घोड़ा’; मातलिः (पु) ‘इन्द्र का सारथि’; नन्दनम् (न) ‘इन्द्र का लछान’; वैजयन्तः (पु). ‘इन्द्रकी अटारी’; जयन्तः, पाकशासनिः (२ पु) ‘इन्द्र के पुत्र’ के २ नाम हैं ॥

१ ऐरावतः, अभ्रमातङ्गः, ऐरावणः, अभ्रमुवल्लभः ( ४ पु ), ‘ऐरावत’ अर्थात् इन्द्रके हाथीके ४ नाम हैं ॥

२ ह्यादिनी (स्त्री), वज्रम् ( पु न ), कुलिशम् , भिदुरम् (+ भिदिरम् । २ न), पविः, शतकोटिः, स्वरुः (= स्वरु । + स्वरुः=स्वरुस्), शम्बः (+ स-म्बः, शंवः ), दम्भोलिः (५ पु), अशनिः ( पु स्त्री ), ‘वज्र’ के १० नाम हैं ॥

३ व्योमयानम् ( न ), विमानः ( पु न ), ‘पुष्पक विमान’ या ‘देवोंके ‘विमानमात्र’ के २ नाम हैं ॥

४ नारदः (पु)आदि शब्दसे ‘तृश्वरु, भरत, पर्वत, देवल..... ) ‘देवर्षि’ हैं ॥

५ सुधर्मा ( = सुधर्मा, सुधर्मन् ), देवसभा ( २ स्त्री ), ‘देवसभा’ के २ नाम हैं ॥

६ पीयूषम् ( + पेयूषम् ), अमृतम् ( २ न ) सुधा ( स्त्री ), ‘अमृत’ के ३ नाम हैं ॥

७ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका ( ४ स्त्री ), ‘आकाश-गङ्गा’ के ४ नाम हैं ॥

८ मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्रीः, रत्नसानुः, सुरालयः ( ५ पु ). ‘सुमेरु पर्वत’ के ५ नाम हैं ॥

- १ पञ्चैते देवतरवो, मन्दारः पारिजातकः ।  
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च, पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥
- २ सनत्कुमारो वैधात्रः, ३ स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।  
 \*नासत्यावश्विनौ दक्ष्णावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥
- ४ स्त्रियां बहुअप्सरसः, स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
- ५ 'घृताची मेनका रम्भा, उर्वशी च तिलोत्तमा (२२)  
 सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः, कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः' (२३)
- ६ हाहा ह्रूह्रश्चैवमाद्या, गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥
- ७ अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।  
 कूपीटयोनिर्ज्वलनो, जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥

१ मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः ( ४ पु ), हरिचन्दनम् ( पु न ), ये ५ 'देवताओं के वृक्ष' हैं ॥

२ सनत्कुमारः ( = सनात्कुमारः ), वैधात्रः ( २ पु ), 'सनकादि' के २ नाम हैं । ( 'आदि' शब्दसे 'सनक, सनन्दन, सनातन' का संग्रह है ) ॥

३ स्वर्वैद्यौ, अश्विनीसुतौ, नासत्यौ, अश्विनौ, दक्षौ, आश्विनेयौ ( ६ पु-नि० द्वि० व० ), 'अश्विनौकुमार' के ६ नाम हैं ॥

४ अप्सरसः ( स्त्री, नि० ब० व० ), 'उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्याओं' का १ नाम है ॥

५ ( घृताची, मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा, सुकेशी, मञ्जुघोषा ( ७ स्त्री ), इत्यादि उन 'अप्सरसों' के विशेष नाम हैं ) ॥

६ हाहाः ( + हहाः ), ह्रूह्रः ( २ पु ), इत्यादि 'देवताओं के यहाँ गानेवाले गन्धर्व' ( पु ) हैं । 'आदि' शब्दसे 'चित्ररथ, विश्वावसु.....' का संग्रह है ॥

७ अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, कूपीटयोनिः, उज्ज्वलनः, जातवेदाः (जातवेदस्), तनूनपात् 'वर्हिः' (=वर्हिस्, वर्हिष् । + वर्हिः = वर्हिः)

• 'भागुरिस्त्वाह—'नासत्यदसौ यमजावकंजावश्विनौ यमौ ॥'

नासत्यसदितौ दक्ष्णाविति ग्याख्येयं न स्वेको नासत्योऽन्यो दक्ष इति इति स्त्रो० स्वा० ॥

- बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश उषर्बुधः ।  
 आश्रयाशो बृहद्भानुः, कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥  
 रोहिताश्वो वायुसखः, शिखावानाशुशुक्षणिः ।  
 हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥  
 सप्ताचिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।  
 शुचिरप्पित्त १ मौर्वस्तु, वाडवो वडवानलः ॥ ५६ ॥  
 २ वह्नेर्द्वयोज्ज्वलकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।  
 ३ त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः, ४ सन्तापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥  
 ५ 'उल्का स्यान्निर्गतज्वाला, ६ भूतिर्भसितभस्मनी (२४)

शुष्मा (=शुष्मन् । म० बर्हिःशुष्मा=बर्हिःशुष्मन्), कृष्णवर्त्मा (=कृष्णवर्त्मन्), शोचिष्केशः, उषर्बुधः, आश्रयाशः (+ आशयाशः), बृहद्भानुः, कृशानुः, पावकः, अनलः, रोहिताश्वः (+ लोहिताश्वः), वायुसखः, शिखावान् (= शिखावत्), आशु-शुक्षणिः, हिरण्यरेताः (=हिरण्यरेतस्), हुतभुक् (=हुतभुज्), दहनः, हव्य-वाहनः, सप्ताचिः (=सप्ताचिष् । + सप्ताचिः + सप्ताचिः), दमुनाः, (=दमु-नस् । + दमूनाः=दमूनस्), शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुचिः (३३ पु), अप्पित्तम् (न), 'अग्नि' के ३४ नाम हैं ॥

१ और्वः (+ ऊर्वः), वाडवः, वडवानलः (३ पु), 'वडवानल' के ३ नाम हैं ॥

२ ज्वालः, कीलः (२ पु स्त्री), अचिः (= अचिष्, अचिस् । + अचिः = अचि । स्त्री न), हेतिः, शिखा (२ स्त्री), 'आगकी लहर' के ५ नाम हैं ॥

३ स्फुलिङ्गः, अग्निकणः (२ त्रि), 'चिनगारी' के २ नाम हैं ॥

४ सन्तापः, संज्वरः (२ पु), 'अग्नि के ताप' के २ नाम हैं ॥

५ [ उल्का (स्त्री), 'निकली हुई ज्वाला' अर्थात् तारा टूटने या लुप्त का १ नाम है ] ॥

६ [ भूतिः ( पु स्त्री ), भसितम्, भस्म (=भस्मन् । २ न), चारः

\*काली १, कराली २, मनोजवा ३, सुलोहिता ४, सुधूम्रवर्णा ५, स्फुलिङ्गिनी ६, विश्वदासा ७' इति—

'कराली सुधूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च सप्त जिह्वा विभावसोः॥

वाचस्पत्युक्ता इति वा सप्ताचिष इत्यवधेयम् ॥

- क्षारो रक्षा च १ दावस्तु, दवो वनहुताशनः' (२५)  
 २ धर्मराजः पितृपतिः, समवर्ती परेतराट् ।  
 कृतान्तो यमुनाभ्राता, शमनो यमराट् यमः ॥ ५८ ॥  
 कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।  
 ३ राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्त्रप आशरः ॥ ५९ ॥  
 रात्रिञ्चरो रात्रिचरः, कर्बुरो निकषात्मजः ।  
 यातुधानः पुण्यजनो, नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥  
 ४ प्रचेता वरुणः पाशी, यादसांपतिरप्पतिः ।  
 ५ श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥  
 पृषदश्वो गन्धवहो, गन्धवाहानिलाशुगाः ।  
 समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः, ॥ ६२ ॥  
 नभस्वद्वात-पवन-पवमान प्रभञ्जनाः, ।

(पु), रक्षा ( स्त्री ), 'राक्ष' के ५ नाम हैं ] ॥

१ [ दावः, दवः, वनहुताशनः ( ३ पु ), 'दावाग्नि' के ३ नाम हैं ] ॥

२ धर्मराजः, पितृपतिः, समवर्ती (=समवर्तिन्), परेतराट् (—परेतराज्),  
 कृतान्तः, यमुनाभ्राता (=यमुनाभ्रातृ), शमनः, यमराट् (=यमराज्), यमः,  
 कालः, दण्डधरः, श्राद्धदेवः, वैवस्वतः, अन्तकः (१४ पु), 'यमराज' के १४ नाम हैं ।

३ राक्षसः, कौणपः, क्रव्यात् (=क्रव्याद्), क्रव्यादः, अस्त्रपः ( + अस्त्रपः ),  
 आशरः ( + आशिरः ), रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः, कर्बुरः ( + कर्बरः ), निकषात्मजः,  
 यातुधानः ( + जातुधानः ), पुण्यजनः, नैर्ऋतः (१३ पु), यातु, रक्षः (=रक्षस् ।  
 २ न ) 'राक्षस' के १५ नाम हैं ॥

४ प्रचेताः (= प्रचेतस्), वरुणः ( + वरणः ), पाशी (=पाशिन्), याद-  
 सांपतिः, अप्पतिः ( ५ पु ), 'वरुण' के ५ नाम हैं ॥

५ श्वसनः, स्पर्शनः, वायुः, मातरिश्वा ( = मातरिश्चन् ), सदागतिः, पृषद-  
 श्वः, गन्धवहः, गन्धवाहः, अनिलः, आशुगाः, समीरः, मारुतः, मरुत्, जगत्प्राणः  
 (म० अगत्, प्राणः), समीरणाः, नभस्वान् (=नभस्वत्), वातः ( + वातिः ),  
 पवनः, पवमानः, प्रभञ्जनः, ( २० पु ) 'हवा' के २० नाम हैं ॥

- १ 'प्रकम्पनो महावातो, २ झंझावातः सवृष्टिकः' (२६)  
 ३ प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥  
 ४ 'हृदि प्राणो गुदेऽपानः, समानो नाभिमण्डले (२७)  
 उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः' (२८)  
 शरीरस्था इमे ५ रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।  
 जवो ६ऽथ शीघ्रं त्वरितं, लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥  
 सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।  
 ७ सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥  
 नित्यानवरताजस्रमप्य ८ थातिशयो भरः,  
 अतिवेलभृशत्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥  
 तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।

१ [प्रकम्पनः (पु), 'आँधी' का १ नाम है] ॥

२ [झंझावातः ( पु ) 'वर्षाके सहित द्रवा' अर्थात् झपसी का १ नाम है ] ॥

३ प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः ( ५ पु ), ये ५ 'शरीरमें रहने वाले वायु' हैं ॥

४ [हृदयमें 'प्राण', गुदामें 'अपान', नाभिमण्डलमें 'समान', कण्ठदेशमें 'उदान' और सम्पूर्ण शरीरमें 'व्यान' ( ५ पु ) नामक वायु रहता है ] ॥

५ रंहः ( = रंहस् ), तरः ( = तरस् । २ न ), रयः, स्यदः, जवः ( ६ पु ), 'वेग' के ५ नाम हैं ॥

६ शीघ्रम्, त्वरितम्, लघु, क्षिप्रम्, अरम्, द्रुतम्, सत्वरम्, चपलम्, तूर्णम्, अविलम्बितम्, आशु ( ११ न ), 'शीघ्र' के ११ नाम हैं ॥

७ सततम्, अनारतम्, अश्रान्तम्, सन्ततम्, अविरतम्, अनिशम्, नित्यम्, अनवरतम्, अजस्रम् ( ९ न ) 'नित्य' के ९ नाम हैं । ( इनमेंसे 'सतत' शब्दका प्रयोग जहाँ बीच में दूसरा काम नहीं किया जाय, वहीं होता है; जैसे—यह काम सतत करता है अर्थात् निरन्तर करता है ) ॥

८ अतिशयः, भरः ( २ पु ), अतिवेलम्, भृशम्, अत्यर्थम्, अतिमात्रम्, उद्गाढम्, निर्भरम्, तीव्रम्, एकान्तम्, नितान्तम्, गाढम्, बाढम्, दृढम्

- १ क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्याद्विशेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥
- २ कुबेरस्यम्बकसखा, यक्षराट् गुह्यकेश्वरः ।  
मनुष्यधर्मा धनदो, राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥  
किन्नरेशो वैश्रवणः, पौलस्त्यो नरवाहनः ।  
यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः, ॥ ६९ ॥
- ३ अस्योद्यानं चैत्ररथं, पुत्रस्तु नलकूबरः ।  
कैलासः स्थानमलका, पूर्वमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥
- ४ स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

(१२ न), 'अतिशय' अर्थात् अधिकके १४ नाम हैं । ( इनमेंसे 'अतिशय' शब्दका प्रयोग जहाँ किसी काम को अनेक बार किया जाय, वहीं होता है । जैसे—अतिशय करता है अर्थात् बारम्बार करता है ) ॥

१ 'शीघ्रम्'.....'दृढम्' तक शब्दोंका प्रयोग द्रव्यवाचक न रहने पर नपुंसकलिङ्गमें ही होता है और द्रव्यवाचक होनेपर तीनों लिङ्गों में उनका प्रयोग होता है । जैसे पहले उदा०—'भृशं धनम्, भृशं पण्डितः, भृशं पठति, भृशं दुष्टा'..... इनमें 'भृशम्' शब्द केवल न० है । दूसरा उदा०—'शीघ्रोऽश्वः, शीघ्रा लक्ष्मीः, शीघ्रं गमनम्'..... इनमें 'शीघ्रम्' शब्द त्रि० है । 'भरः, अतिशयः' इन दोनों शब्दोंका प्रयोग केवल पु० में ही होता है, अर्थात् ये विशेष्याधीन नहीं होते) ॥

२ कुबेरः, त्र्यम्बकसखा, यक्षराट् ( = यक्षराज् ), गुह्यकेश्वरः, मनुष्यधर्मा ( = मनुष्यधर्मन् ), धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किन्नरेशः, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, यक्षः, एकपिङ्गः, ऐलविलः ( + ऐडविलः, ऐडविडः ) श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः ( १७ पु ) 'कुबेर' के १७ नाम हैं ॥

३ चैत्ररथम् ( न ) 'कुबेरका उद्यान', नलकूबरः ( पु ) 'कुबेरका पुत्र', कैलासः ( पु ) 'कुबेरका निवासस्थान', अलका ( स्त्री ) 'कुबेरकी नगरी', पुष्पकम् ( न ) 'कुबेर का विमान' है ॥

४ किन्नरः, किम्पुरुषः, तुरङ्गवदनः, मयुः ( ४ पु ), 'किन्नर' अर्थात् 'कुबेरके दूत' के ४ नाम हैं ॥

१ निधिर्ना शेवधिर्भेदाः, २ पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ ७१ ॥

३ 'महापद्मश्च पद्मश्च, शङ्खो मकरकच्छपौ ( २९ )

मुकुन्दकुन्दनीलाश्च, खर्वश्च निधयो नव' ( ३० )

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

## २. अथ व्योमवर्गः ॥

४ द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं, व्योम पुष्करमम्बरम् ।

नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥

वियद्वाणुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।

५ 'विहायसोऽपि नाकोऽपि, द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ( ३१ )

१ निधिः, शेवधिः ( २ पु ), 'निधिसामान्य' अर्थात् खजानामात्र के २ नाम हैं ॥

२ पद्मः, शङ्खः ( २ पु ).....'खजानेके भेद' हैं ॥

३ [ महापद्मः, पद्मः, शङ्खः, मकरः, कच्छपः, मुकुन्दः, कुन्दः, नीलः, खर्वः ( ९ पु ), ये ९ 'निधिविशेष' हैं ] ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

## २. अथ व्योमवर्गः ॥

४ द्यौः ( = द्यौः ), द्यौः ( = दिव् । २ स्त्री ); अभ्रम्, व्योम ( = व्योमन् ), पुष्करम्, अम्बरम्, नभः ( = नभस् ), अन्तरिक्षम्, गगनम्, अनन्तम्, सुरवर्त्म ( = सुरवर्त्मन् ), खम्, वियत्, विष्णुपदम् ( १४ न ), आकाशम्, विहायः ( = विहायस् । २ पु न ); 'आकाश' के १६ नाम हैं ॥

५ [ विहायसः, नाकः, द्युः ( अ० ), तारापथः, अन्तरिक्षम् ( न ), मेघाश्वा

\* अयं श्लोकः श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचिताभिधानचिन्तामणौ ( २।१०७ ) नाममात्रायां समुपलभ्यते ॥

'पद्मोऽस्त्रिया महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' ॥ १ ॥

इत्ययं व्याख्यामुपायाः पाठः ॥



तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम् (३२)  
 विहायाः शकुने पुंस्त्रि, गगने पुंनपुंसकम् (३३)  
 इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ दिग्बर्गः ॥

- १ दिशस्तु ककुभः काष्ठा, आशाश्च हरितश्च ताः ।
- २ प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः, पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥  
 उत्तरा दिशुदीची स्याद्, ३ दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
- ४ 'अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् (३४)  
 प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं, प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु' ( ३५)
- ५ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥

(=मेघाध्वन् । शो० ४ पु ), महाबिलम् ( न ), विहायः (=विहायस्, पु न ।  
 किन्तु पक्षिवाचक होनेपर यह 'विहायस्' शब्द केवल पुंलिङ्ग ही है) 'आकाश'  
 के ८ नाम हैं ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ दिग्बर्गः ॥

- १ दिक् (=दिश), ककुप् (=ककुभ्), काष्ठा, आशा, हरित् (५ स्त्री),  
 'विशाओं' के ५ नाम हैं ॥
- २ प्राची, अवाची ( + अपाची ), प्रतीची, उदीची ( ४ स्त्री ), 'पूर्व,  
 दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा' के क्रमशः १—१ नाम हैं ॥
- ३ दिश्यम् (त्रि), 'दिशामें होने वाले पदार्थ' का १ नाम है । (जैसे =  
 दिश्यो गजः, दिश्या करिणी, दिश्यं वस्त्रम्.....) ॥
- ४ [ अवाचीनम्, उदीचीनम्, प्रतीचीनम् प्राचीनम् ( ४ त्रि ), 'दक्षिण,  
 उत्तर, पश्चिम और पूर्व दिशामें होनेवाले पदार्थ' के क्रमशः १-१ नाम हैं ] ॥
- ५ इन्द्रः, वह्निः, पितृपतिः, नैऋतः, वरुणः, मरुत्, कुबेरः, ईशः ( ८ पु ),  
 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैऋत कोण, पश्चिम दिशा,  
 वायव्य कोण, उत्तर दिशा और ईशान कोण' के क्रमशः १—१ स्वामी

कुबेर ईशः पतयः, पूर्वादीनां दिशा क्रमात् ।

१ 'रविः शुक्रो महीसूनुः, स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ( ३६)

बुधो बृहस्पतिश्चेति, दिशां चैव तथा ग्रहाः' ( ३७)

२ 'ऐरावतः पुण्डरीको, वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥

पुष्पदन्तः सार्वभौमः, सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

३ 'करिण्योऽभ्रमुकपिला, पिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

हैं । ( अर्थात् पूर्व दिशाके स्वामी इन्द्र, अग्निकोण के स्वामी अग्नि, दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज, ..... ) ॥

१ रविः, शुक्रः, महीसूनुः ( मंगलः ), स्वर्भानुः ( राहुः ), भानुजः ( शनिः ) विधुः ( चन्द्रः ), बुधः, बृहस्पतिः ( ८ पु ) 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, आदि आठ दिशाओं' के क्रमशः १—१ ग्रह हैं । ( जैसे—पूर्व दिशाका ग्रह 'सूर्य', अग्निकोणका 'शुक्र', दक्षिण दिशाका 'मङ्गल'..... ] ॥

२ ऐरावतः, पुण्डरीकः, वामनः, कुमुदः, अञ्जनः पुष्पदन्तः, सार्वभौमः, सुप्रतीकः ( ८ पु ), 'पूर्वदिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैऋतकोण, पश्चिम दिशा वायव्यकोण, उत्तर दिशा और ईशान कोण' के क्रमशः १—१ दिग्गज हैं । ( अर्थात् पूर्व दिशाका दिग्गज 'ऐरावत', अग्नि कोणका दिग्गज 'पुण्डरीक', नैऋत्यकोणका दिग्गज 'वामन'..... ) ॥

३ अभ्रमुः, कपिला, पिङ्गला, अनुपमा, ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती ( + शुभ्रदन्ती ), अङ्गना ( + अञ्जना ), अञ्जनावती ( ८ स्त्री ), 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण कोण आदि आठ दिशाओंकी हथिनी' और 'ऐरावत, पुण्डरीक, वामन आदि आठ दिग्गजोंकी स्त्रियों' के क्रमशः १—१ नाम हैं । ( अर्थात् 'पूर्व दिशाकी हथिनी' 'अभ्रमु' अग्नि कोणकी हथिनी 'कपिला', दक्षिण दिशाकी

१. 'ऐरावतः पुण्डरीकः कुमुदोऽञ्जनवामनाः' इति भागुरिः क्रमं व्यत्यस्तवान् । माणपि-  
'ऐरावतः सुप्रतीकः इति' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'करिण्यो... नावती' अयमंशः क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नास्ति, किन्तु टीकायामुप-  
लभ्यते । व्या० सु०, अम० वि० पुस्तके मूल एवास्ति । 'वामना चाञ्जनावती' इति क्षी०  
स्वा० पाठः ॥

- १ क्लीबाव्ययं त्वपदिशं, दिशोर्मध्ये विदिविस्त्रयाम् ॥ ५ ॥  
 २ अभ्यन्तरं त्वन्तरालं, ३ चक्रवालं तु मण्डलम् ।  
 ४ अभ्रं मेघो वारिवाहः, स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥  
 धाराधरो जलधरस्तडित्वान् वारिदोऽम्बुभृत् ।  
 घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥  
 ५ कादम्बिनी मेघमाला, ६ त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।  
 ७ स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च, ॥ ८ ॥  
 ८ शम्पाशतहृदाह्वादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा, ।  
 तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि, ॥ ९ ॥

हथिनी 'पिङ्गला'..... । इसी तरह पेरावतकी स्त्री 'अभ्रमु', पुण्डरीककी स्त्री 'कपिला', वामनकी स्त्री 'पिंगला'..... ॥

१ अपदिशम् ( न, अ ), विदिक् ( = विदिश् स्त्री । + प्रदिक् = प्रदिश् ), 'दिशाओंके मध्यभाग' अर्थात् 'कोण' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यन्तरालम्, अन्तरालम् ( २ न ) 'बीच' अर्थात् मध्यमभागके २ नाम हैं ॥

३ चक्रवालम्, मण्डलम् ( २ न ), 'घेरा, गोलाई' के २ नाम हैं ॥

४ अभ्रम् ( न ), मेघः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः ( + पयोधरः ), तडित्वान् ( = तडित्वत् ), वारिदः, अम्बुभृत्, घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक् ( = जलमुच् । + पयोमुक् = पयोमुच् ), धूमयोनः ( १४ पु ) 'बादल' के १५ नाम हैं ॥

५ कादम्बिनी, मेघमाला ( २ स्त्री ), 'मेघ-समूह' के २ नाम हैं ॥

६ अभ्रियम् ( त्रि ), 'मेघमें होनेवाले पदार्थ' का १ नाम है ॥ ( जैसे- अभ्रियो धारापातः, अभ्रियं जलम्, अभ्रिया आपः,..... ) ।

७ स्तनितम्, गर्जितम्, रसितम्,..... ( ३ न । 'आदि' शब्दसे ध्वनितम्,..... ) 'मेघके गर्जन या तड़पने' के ३ नाम हैं ॥

८ शम्पा ( + शम्बा ), शतहृदा, हादिनी, पेरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामनी ( + सौदामिनी ), विद्युत्, चञ्चला, चपला ( १० स्त्री ) 'बिजली' के १० नाम हैं ॥

- १ स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो, २ मेघज्योतिरिरम्भदः ।
- ३ इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥
- ४ वृष्टिर्वर्ष ५ तद्विघातेऽवग्राह्यप्रहौ समौ ।
- ६ धारासम्पात आसारः ७ सीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥
- ८ वर्षोपलस्तु करका, ९ मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।
- १० अन्तर्धा व्यवधा पुंसि, त्वन्तधिरपवारणम् ॥ १२ ॥

१ स्फूर्जथुः, वज्रनिर्घोषः ( + वज्रनिष्पेषः । २ पु ), 'विजली गिरने के समयकी आवाज' के २ नाम हैं ॥

२ मेघज्योतिः ( = मेघज्योति, —मेघज्योतिः = मेघज्योतिष् ), इरंभदः ( २ पु० ), 'बादलके प्रकाश' के २ नाम हैं । ( यह प्रकाशप्रायः प्रातःकाल या सायंकाल बादलके लाल-पीला होनेसे होता है )

३ इन्द्रायुधम्, शक्रधनुः ( = शक्रधनुष् ), ऋजुरोहितम् ( ३ न ) 'इन्द्र धनुष' के ३ नाम हैं । ( म० पहलेवाले दो शब्द पहले अर्थ और 'रोहितम्' यह एक शब्द 'सीधा इन्द्रधनुष' इस अर्थ में है ) ॥

४ वृष्टिः ( स्त्री ), वर्षम् ( न ) 'वर्षा' के २ नाम हैं ॥

५ अवग्रहः, अवग्राहः ( २ पु ), 'वर्षाके न होने' अर्थात् 'सूखा पड़ने' के २ नाम हैं ॥

६ धारासम्पातः, आसारः ( २ पु ), 'लगातार जोरसे वर्षा होने' के २ नाम हैं ।

७ सीकरः ( पु । + शीकरः ) 'पानीके कण' अर्थात् 'पानी की छोटी-छोटी बूंदों' का १ नाम है ॥

८ वर्षोपलः ( पु ), करका ( पु स्त्री ), 'बनौरी, ओला' के २ नाम हैं । ( जो पानी बादलसे भी ऊँचे स्थानमें जाकर बर्फके समान कड़ा और सफेद होकर पानीके साथ गिरता है, जिसे पत्थर पड़ना कहते हैं ) ॥

९ दुर्दिनम् ( न ), 'जब आकाशमें लगातार बादल घिरे रहें, ऐसे समय' का एक नाम है ॥

१० अन्तर्धा, व्यवधा ( २ स्त्री ), अन्तधिः ( पु ), अपवारणम्, अपिधा-

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

- १ हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥  
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।  
अञ्जो जैवातृकः सोमो, ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥  
द्विजराजः शशधरो, नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।
- २ कला तु षोडशो भागो, ३ बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
- ४ भित्तं शकलखण्डे वा, पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
- ५ चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना, ६ प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥
- ७ कलङ्काङ्गौ लाञ्छनं च, चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

नम्, तिरोधानम्, पिधानम्, आच्छादनम् ( ५ न ), 'ढाँकने' अर्थात् 'कपड़े आदिसे छिपाने' के ८ नाम हैं ॥

१ हिमांशुः, चन्द्रमाः ( = चन्द्रमस् ), चन्द्रः, इन्दुः कुमुदबान्धवः, विधुः, सुधांशुः, शुभ्रांशुः, ओषधीशः, निशापतिः, अञ्जः, जैवातृकः, सोमः ( —सोमा, =सोमन् ), ग्लौः, मृगाङ्कः ( + शशाङ्कः ), कलानिधिः, द्विजराजः, शशधरः, नक्षत्रेशः, क्षपाकरः ( + निशाकरः । २० पु० ), 'चन्द्रमा' के २० नाम हैं ॥

२ कला ( स्त्री ) 'पूर्ण चन्द्रमाके सोलहवें हिस्से' का १ नाम है ।  
( चन्द्रमाकी सोलह कलायें हैं, अतः सोलहवें भागको एक कला कहते हैं ) ॥

३ बिम्बः ( पु न ), मण्डलम् ( त्रि ), 'सूर्य या चन्द्रमाके बिम्ब' के २ नाम हैं ॥

४ भित्तम् ( न ), शकलम्, खण्डम् ( २ पु न ), अर्धः ( पु ) 'खण्ड, टुकड़ा' के ४ नाम हैं; किन्तु 'बराबर का हिस्सा' इस अर्थ में 'अर्ध' शब्द निरय नपुंसक है ॥

५ चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ( ३ स्त्री ), 'चाँदनी' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रसादः ( पु ), प्रसन्नता ( स्त्री ), 'प्रसन्नता' के २ नाम हैं ॥

७ कलङ्कः, अङ्कः ( २ पु ), लाञ्छनम्, चिह्नम्, लक्ष्म ( = लक्षमन् ),

\* 'अमृता मानदा पूषा पुष्टिस्तुष्टी रतिर्धृतिः ।

शशिनी चन्द्रिका कान्तिज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरज्जदा ॥ १ ॥

पूषणा चाथ पूर्णा स्युः कलाश्चन्द्रस्य षोडश ।' इति ॥

- १ सुषमा परमा शोभा, २ शोभा कान्तिद्युतिश्छविः ॥ १७ ॥  
 ३ अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।  
 प्रालेयं मिहिका चाथ ४ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥  
 ५ शीतं गुणे ६ तद्वदर्थः, सुषीमः शिशिरो जडः ।  
 तुषारः शीतलः शीतो, हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥  
 ७ ध्रुव औत्तानपादिः स्याद्दगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।  
 मैत्रावरुणिर ९ स्यैव, लोपामुद्रा सधमिणी ॥ २० ॥

लक्षणम् ( + लक्ष्मणम् ४ न ) 'चिह्न' अर्थात् निशान के ६ नाम हैं ॥

१ सुषमा ( स्त्री ), 'अधिक शोभा' का १ नाम है ॥

२ शोभा ( म० अभिव्यक्ति ), कान्तिः, द्युतिः, छविः ( ४ स्त्री ) 'शोभा' के ४ नाम हैं ॥

३ अवश्यायः, नीहारः, तुषारः ( ३ पु ), तुहिनम्, हिमम्, प्रालेयम्, ( ३ न ), मिहिका ( स्त्री । + महिका ), 'पाला पड़ने' अर्थात् 'ओस, हिम' के ७ नाम हैं ॥

४ हिमानी, हिमसंहतिः ( २ स्त्री ) 'बहुत पाला पड़ने' के २ नाम हैं ॥

५ शीतम् ( न ) 'यह शब्द 'गुणवाचक' है, अर्थात् शीतलता के अर्थमें नपुंसकलिङ्ग में ही प्रयुक्त होता है' ॥

६ सुषीमः ( + सुषिमः, सुषीमः ), शिशिरः, जडः, तुषारः, शीतलः, शीतः, हिमः ( ७ त्रि ), 'ठण्ढा गुणवाले द्रव्य' अर्थात् 'ठण्ढी हवा पानी' इत्यादिके ७ नाम हैं । 'तुषार, हिम, शीत' इन तीन शब्दोंके निरुद्ध लक्षणासे द्रव्यादि अर्थात् हवा, पानी इत्यादि भी अर्थ हैं, अतः इन शब्दोंको दोनों जगह ( गुण और गुणीके पर्याय में ) कहा गया है' ॥

७ ध्रुवः, औत्तानपादिः ( २ पु ) 'उत्तानपाद' के पुत्र अर्थात् 'मनुके पौत्र ध्रुव' के २ नाम हैं ॥

८ अगस्त्यः ( + अगस्तिः ), कुम्भसम्भवः ( + कुम्भजः ), मैत्रावरुणिः ( + मैत्रावरुणः । ३ पु ), 'अगस्त्य मुनि' के ३ नाम हैं ॥

९ लोपामुद्रा ( स्त्री ), 'अगस्त्य मुनिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

- १ नक्षत्रमृक्षं भं तारा, तारकाऽप्युडु वा स्त्रियाम् ।  
 २ दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा ३ अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥  
 ४ राधा विशाखा ५ पुष्ये तु, सिध्यतिष्यौ ६ अविष्टया ।  
 समा धनिष्ठा ७ स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥  
 ८ मृगशीर्षे मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

१ नक्षत्रम्, ऋक्षम्, भम् ( ३ न ), तारा, तारका ( २ स्त्री ), उडुः ( स्त्री न ), 'नक्षत्र' के ६ नाम हैं ॥

२ दाक्षायण्यः ( स्त्री नि० ब० व० ) 'अश्विनी, भरणी..... सत्ता-इस नक्षत्रों' का १ नाम है ॥

३ अश्वयुक् ( = अश्वयुज् ), अश्विनी ( २ स्त्री ), 'अश्विनी' के २ नाम हैं ॥

४ राधा, विशाखा ( २ स्त्री ) 'विशाखा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

५ पुष्यः, सिध्यः, तिष्यः ( ३ पु ), 'पुष्य नक्षत्र' के ३ नाम हैं ॥

६ अविष्टा, धनिष्ठा ( २ स्त्री ), 'धनिष्ठा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

७ प्रोष्ठपदाः ( + प्रौष्ठपदाः ), भाद्रपदाः ( २ पु स्त्री, नि० ब० व० ), 'पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र' के दो नाम हैं ॥

८ मृगशीर्षम्, मृगशिरः ( = मृगशिरस् । २ न ), आग्रहायणी ( स्त्री ),

१. अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी' मृगः ।

आर्द्रा-पुनर्वसू पुष्य आश्लेषा च ततो मघा ॥ १ ॥

पूर्वाफल्गुनिका जेया तत उत्तरफल्गुनी ।

इस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा मैत्रभं ततः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा मूलं ततः पूर्वोत्तराषाढेऽभिजित्ततः ।

श्रवणश्च धनिष्ठा च ततश्च शततारकाः ॥ ३ ॥

पूर्वोत्तराभाद्रपदे रेवती तदनन्तरम् ।

अष्टाविंशतिराख्यातास्तारका मुनिसत्तमैः ॥ ४ ॥ इति ।

उत्राभिजिन्मानमाह—

'अभिजिद्भोगमिदं वै वैश्वदेवान्यपादमखिलं च तत् ।

आयाश्चतस्रो नाड्योऽथ हरिभस्यैतस्य रोहिणोविदम् ॥ १ ॥' इति ।

अश्विन्यादिवज्राभिजितः स्वतन्त्रमानमतः सप्तविंशतिरेव नक्षत्राणि मुख्यानोक्तस्तदेवो-  
 क्तमित्यवधेयम् ।

- १ इक्ष्वास्तच्छिरोदेशे, तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
- २ बृहस्पतिः सुराचार्यो, गोपतिर्धिषणो गुरुः ।  
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः, ॥ २४ ॥
- ३ शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य, उशना भार्गवः कविः ।
- ४ अङ्गारकः कुजो भौमो, लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
- ५ रौहिणेयो बुधः सौम्यः, ६ समौ सौरिशनैश्चरौ ।
- ७ तमस्तु राहुः स्वर्भानुः, सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥
- ८ सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।

‘मृगशिरा नक्षत्र’ के ३ नाम हैं ॥

१ इक्ष्वाः ( स्त्री, नि० ब० व० । ‘इक्ष्वाः’ स्त्री० स्वा० ), ‘मृगशिरा नक्षत्र’ के शिरोभागमें उद्य होनेवाली पाँच ताराओं का १ नाम है ॥

२ बृहस्पतिः ( + बृहतां पतिः ), सुराचार्यः गोपतिः ( वै० गोपतिः ), धिषणः गुरुः, जीवः, आङ्गिरसः, वाचस्पतिः ( + वाक्पतिः, वाचां पतिः ), चित्रशिखण्डिजः ( ९ पु ), ‘बृहस्पति’ के ९ नाम हैं ) ॥ ( ये देवताओं के गुरु हैं ) ॥

३ शुक्रः, दैत्यगुरुः, काव्यः, उशनाः (= उशनस् ), भार्गवः, कविः ( ६ पु ), ‘शुक्राचार्य’ के ६ नाम हैं ( ये दैत्यों के गुरु हैं ) ॥

४ अङ्गारकः, कुजः, भौमः, लोहिताङ्गः, महीसुतः ( ५ पु । इसी तरह ‘धरणीसुतः, भूमिसुतः.....’ ), ‘मङ्गलग्रह’ के ५ नाम हैं ॥

५ रौहिण्यः, बुधः, सौम्यः ( ३ पु ), ‘बुध’ के ३ नाम हैं ॥

६ सौरिः ( + शौरिः, सूरः ), शनैश्चरः ( + शनिः, पङ्कः, मन्दः... २ पु ), ‘शनि’ के दो नाम हैं ॥

७ तमः ( + तमस्, न + तमः = तम, पु ), राहुः, स्वर्भानुः, सैहिकेयः, विधुन्तुदः ( ४ पु ), ‘राहु’ के ५ नाम हैं ॥

८ चित्रशिखण्डिनः ( = चित्रशिखण्डिन्, पु, नि० ब० व० ), ‘सप्तर्षियों’ का एक नाम है । ( उनके मरीचि १, अङ्गिरा २, अत्रि ३, पुलस्त्य ४, पुलह ५, क्रतु ६ और वसिष्ठ ७ ये नाम हैं, इन्हींको ‘चित्रशिखण्डो’ कहते हैं ) ॥

१. मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥

वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥ १ ॥ इति ॥



- १ राशीनामुद्यो लग्नं, ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥  
 २ सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः,  
 भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥  
 भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः,  
 विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥  
 धुमणिस्तरणिमित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।  
 विभावसुर्ग्रहपतिस्त्रिषाम्पतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥  
 भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।  
 ३ 'पञ्चाक्षस्तेजसाराशिश्छायाणाथस्तमिस्रहा (३८)  
 कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः (३९)  
 प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः (४०)

१ लग्नम् ( न ), 'राशि' का १ नाम है । 'मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, धनुः ९, मकर १०, कुम्भ ११, और १२ मीन' ये 'बारह राशियाँ' होती हैं ॥

२ सूरः, सूर्यः, अर्यमा ( = अर्यमन् ), आदित्यः, द्वादशात्मा ( = द्वादशात्मन् ), दिवाकरः, भास्करः, अहस्करः, ब्रध्नः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्वान् ( = भास्वत् ), विवस्वान् ( = विवस्वत् ), सप्ताश्वः हरिदश्वः, उष्णरश्मिः, विकर्तनः, अर्कः, मार्तण्डः ( = मार्ताण्डः ), मिहिरः ( = मिहरः, महिरः ) अरुणः, पूषा ( = पूषन् ), धुमणिः ( = अम्बरमणिः, गगनमणिः, ..... ), तरणिः, मित्रः, चित्रभानुः, विरोचनः, विभावसुः, ग्रहपतिः, त्रिषाम्पतिः, अहर्पतिः ( वै०-अहःपतिः, अहपतिः ), भानुः, हंसः, सहस्रांशुः ( = चण्डांशुः ), तपनः ( = तापनः ), सविता ( = सविन् ), रविः ( ३७ पु ) 'सूर्य' के ३७ नाम हैं ॥

[ पञ्चाक्षः, तेजसाराशिः, छायाणाथः, तमिस्रहा ( = तमिस्रहन् ), कर्मसाक्षी ( = कर्मसाक्षिन् ), जगच्चक्षुः ( = जगच्चक्षुष् ), लोकबन्धुः, त्रयीतनुः, प्रद्योतनः, दिनमणिः, खद्योतः, लोकबान्धवः, हनः, भगः, धामनिधिः, अंशुमाली

१. 'मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ॥

तुला च वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ १ ॥' इति ॥

इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः' ( ४१ )

१ माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपाश्विकाः ॥ ३१ ॥

२ सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः, काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।

३ परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

४ किरणोऽमयूखांशुगभस्तिघृणिघृण्यः\*

भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

५ स्युः प्रभारुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ।

( = अंशुमालिन् ), अब्जिनीपतिः ( + पद्मिनीपतिः १७ पु ), 'सूर्य' के १७ नाम हैं ] ॥

१ माठरः, पिङ्गलः, दण्डः ( ३ पु ), † 'सूर्य' के पार्श्ववर्तियों अर्थात् 'सूर्य' के पासमें रहनेवालों' के ३ नाम हैं ।

२ सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः, काश्यपिः, गरुडाग्रजः ( ५ पु ), 'सूर्य' के सारथि' के ५ नाम हैं ॥

३ परिवेषः ( + परिवेशः ), परिधिः ( २ पु ), उपसूर्यकम्, मण्डलम् ( २ न ), 'मण्डल' के ४ नाम हैं ( 'सूर्य' और चन्द्रमाके चारों तरफ दिखलाई पड़नेवाले तेजोविशेषको 'मण्डल' कहते हैं ) ॥

४ किरणः, उल्लः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः ( + घृणिणः ), घृणिणः ( + घृणिणः, पृश्निः, रश्मिः ), भानुः, करः ( ९ पु ), मरीचिः ( पु स्त्री ), दीधितिः ( स्त्री ), 'किरण' के ११ नाम हैं ॥

५ प्रभा, रुक् ( = रुच् ), रुचिः, त्विट् ( = त्विष् ), भा, भाः ( = भास् ),

\* '.....घृणिघृण्यः' '.....घृणिपृश्नयः', '.....घृणिरश्मयः' इति पाठान्तराणि ।

† 'इन्द्रादयो द्वादश नामान्तरेणार्कपरिचारकाः, यत्सौर(तन्त्र)म्—

'तत्र शक्रो वामपार्श्वे दण्डाख्यो दण्डनायकः ॥

बहिस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गलो वामनश्च सः ॥ १ ॥

यमोऽपि दक्षिणे पार्श्वे जवेन्माठरसंज्ञया' ॥ इति ।

एवमन्ये यावायाः गुह्यहरादुखरादयः । तेषु प्राधान्यात्त्रय एवोक्तं । स्त्री० स्था० ॥

कचित् 'वामनश्च सः' इत्यत्र स्थाने 'जमनश्च सः' इति, 'वामनायाः' इत्यत्र, 'जवे' पाठायाः' इति च पाठान्तरम् ॥

- रोचिः शोचिष्ठमे कलोवे, १ प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥  
 २ कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कटुष्णं त्रिषु तद्वति ।  
 ३ तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वध्मृगवृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥  
 इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

## ४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालो दिष्टोऽप्यनेहाऽपि समयोऽद्वयथ पञ्चतिः ।

छविः, द्युतिः, दीप्तिः ( १ स्त्री ), रोचिः ( = रोचिष् ), शोचिः ( = शोचिष् । २ न ), 'प्रभा' के ११ नाम हैं ॥

१ प्रकाशः, द्योतः, आतपः ( ३ पु ), 'धूर' अर्थात् 'धाम' के ३ नाम हैं । ('दीप्ति, आतप आदि यद्यपि असाधारण धर्म हैं' तथापि कविलोग इनका प्रयोग सामान्यरूपसे करते हैं, जैसे—'मुखदीप्ति, चन्द्रातपः.....' ) ॥

२ कोष्णम्, कवोष्णम्, मन्दोष्णम्, कटुष्णम् ( ४ न ), 'थोड़ा गर्म' के ४ नाम हैं । ( ये शब्द धर्मिवाचक होनेपर त्रि० हैं, जैसे—'कोष्णं जलम्, कोष्णः प्रस्तरः, कोष्णा शिला,.....' इन उदाहरणोंमें 'जल, प्रस्तर और शिला' शब्द के क्रमशः नपुंसक, पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होनेसे 'कोष्ण' शब्द भी क्रमशः नपुंसक, पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्गमें प्रयुक्त हुआ है ) ॥

३ तिग्मम्, तीक्ष्णम्, खरम् ( ३ न ), 'अधिक गर्म' के ३ नाम हैं ॥

४ मृगवृष्णा, मरीचिका ( २ स्त्री ), 'मृगवृष्णा' के २ नाम हैं । ( गर्मोंके दिनोंमें रेतीली जमीनपर सूर्यका ताप लगनेसे जलका जो आमास होता है उसे 'मृगवृष्णा' कहते हैं ) ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

## ४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालः, दिष्टः, अनेहा ( + अनेहस् ), समयः ( ४ पु ) 'समय' के ४ नाम हैं ॥

६ पञ्चतिः ( + पञ्चती ), प्रतिपत् ( = प्रतिपद् । २ स्त्री ) 'परिचा तिथि' के २ नाम हैं ॥

- प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे १ तथाद्यास्तितथयो द्वयोः ॥ १ ॥  
 २ घञो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।  
 ३ प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्पमुषःप्रत्युषसो अपि ॥ २ ॥  
 प्रभातं च ४ दिनान्ते तु सायं सन्ध्या पितृप्रसूः ।  
 ५ प्राह्णापराह्णमध्याह्नस्त्रिसन्ध्यदमथ शर्वरी ॥ ३ ॥  
 निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

तिथिः ( पु स्त्री ), 'प्रतिपत् , द्वितीया आदि तिथियों' का १ नाम है । ( 'वे प्रतिपत् १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पञ्चमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, और शुक्लपक्ष में पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष में अमावास्या १५, पन्द्रह तिथियाँ होती हैं' ) ॥

२ घञः ( पु ), दिनम्, अहः (= अहन् । २ न ), दिवसः, वासरः ( + वारः । २ पु न ) 'दिन' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्यूषः ( + प्रत्यूषस् , पु न ), अहर्मुखम्, कल्पम् ( + कल्पम् ), उषः (= उषस् । + उषा, अ० ), प्रत्युषः ( = प्रत्युषस् ), प्रभातम् ( ५ न ), 'प्रातःकाल' के ६ नाम हैं ॥

४ दिनान्तः ( पु ), सायम् ( अ०, न । + सायः [ पु ), सन्ध्या ( + सन्धा ), पितृप्रसूः ( २ स्त्री ), 'सायङ्काल' के ४ नाम हैं ॥

५ त्रिसन्ध्यम् ( न । वै० त्रिसन्ध्या, स्त्री ), 'प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायङ्काल; इन तीनों समयके समूह' का १ नाम है ॥

६ शर्वरी ( + शार्वरी ), निशा ( + निट् = निश ), निशीथिनी, रात्रिः

\* 'युष्टं विभातं द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्गं इष्यते' इत्यधिकः क्षेपकाशः कचित्समुपलभ्यते ।

† 'प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया च ततः परम् ।

चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ १ ॥

नवमी दशमी चैकादशी द्वादशी तथा ।

त्रयोदशी ततो शेषा पुनर्केना चतुर्दशी ॥ २ ॥

शुक्ले पञ्चदशी सन्निः पूर्णिमा समुदीर्यते ।

कृष्णपक्षे तु विदुषैरमावास्या प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥ इति ॥

□ तथा च जीर्णकै—'मादतदीपं...साव धूर्तः' इति नेषव च० २२।५२ ।

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

- १ तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयाऽन्विता ।
- २ आगामिवर्तमानाद्वर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
- ४ गणरात्रं निशा बह्वयः ५ प्रदोषो रजनीमुखम् ।
- ६ अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ ७ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥
- ८ स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

( + रात्री ), त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी ( + रजनिः ), यामिनी, तमी ( + तमिः, तमा । १२ स्त्री ), 'रात' के १२ नाम हैं ॥

१ तमिस्रा ( स्त्री ) 'अंधेरी रात' का १ नाम है ॥

२ ज्योत्स्नी ( स्त्री । + ज्योत्स्ना, ज्योत्स्नी ), 'उजेली रात' का १ नाम है ॥

३ क्षपक्षिणी ( स्त्री ), 'वर्त्तमान और आगेके दिनसे युक्त रात' का १ नाम है । तुल्यन्यायसे वर्त्तमान रात्रि और दूसरी रात्रिके सहित दूसरे दिन का भी यह नाम है ॥

४ गणरात्रम् ( न ), 'रात्रियोंके समूह' का १ नाम है ॥

५ प्रदोषः ( पु ), रजनीमुखम् ( न ), 'रातके पहले हिस्से' के २ नाम हैं ॥

६ अर्धरात्रः, निशीथः ( पु २ ), 'आधीरात' के २ नाम हैं ॥

७ यामः, प्रहरः ( २ पु० ), 'प्रहर' के २ नाम हैं । ( दिन और रातके आठवें हिस्से अर्थात् तीन घण्टेका १ 'प्रहर' होता है ) ॥

८ पर्व ( = पर्वन्, न । म०, 'पर्व = पर्वन्, सन्धिः, ये दो नाम या 'पर्व-सन्धिः' यह एक नाम ) 'प्रतिपद् और पूर्णिमा या अमावास्याके मध्यभाग' का १ नाम है ॥

• 'पक्षिणी' पञ्चतुल्याभ्यामहोभ्यां वेष्टिता निशा ॥' इति ॥

'पक्षिणी' 'पूर्णिमायां स्याद्विह्वलां शकभेदिनि ।

आगामिवर्त्तमानाद्वर्युक्ताभ्यामपि स्त्रियाम् ॥ १ ॥

इति मेदिनीकोशात् ॥

- १ पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे २ पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
- २ कलाहीने सानुमतिः ४ पूर्णं राका निशाकरे ।
- ५ अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥
- ६ सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली ७ सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।
- ८ उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूर्णि च ॥ ९ ॥

१ पक्षान्तः ( पु ), पञ्चदशी ( स्त्री ), 'पूर्णिमा या अमावास्या तिथि' के २ नाम हैं ॥

२ पौर्णमासी, पूर्णिमा ( २ स्त्री ), 'पूर्णिमा' अर्थात् 'शुक्लपक्षकी अन्तिम तिथि' के २ नाम हैं ॥

३ अनुमतिः ( स्त्री ) 'जिसमें चन्द्रमा की कला कुछ क्षीण हो उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'प्रतिपद्युक्त पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

४ राका ( स्त्री ), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला परिपूर्ण हो, उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'शुद्ध पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

५ अमावास्या, अमावस्या ( २ स्त्री । + अमावसी, अमावासी, अमामासी, अमामसी, अमा ), ॐ दर्शः, सूर्येन्दुसङ्गमः ( २ पु ), 'अमावास्या' अर्थात् 'कृष्णपक्षकी अन्तिम तिथि' के ४ नाम हैं ॥

६ † सिनीवाली (स्त्री), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला पूर्णतया क्षीण नहीं हुई हो, उस अमावास्या' का अर्थात् 'चतुर्दशीयुक्त अमावास्या' का १ नाम है ॥

७ [] कुहूः ( स्त्री । + कुहुः ), 'जिसमें चन्द्रमाकी कलापूर्णतया क्षीण हो गई हो, उस अमावास्या' अर्थात् 'शुद्ध अमावस्या' का १ नाम है ॥

८ उपरागः, ग्रहः ( २ पु ), 'सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण' के २ नाम हैं ॥

\* † [] या पूर्वामावास्या सिनीवाली योत्तरा सा कुहूः इति श्रुतिः । अयमभिप्रायः—चतुर्दश्याश्चरमप्रहरोऽमावस्याया अष्टौ प्रहराश्चेति नवप्रहरात्मकश्चन्द्रस्य क्षयसमयः शास्त्रसम्मतः । तत्र प्रथमप्रहरद्वये चन्द्रस्य सूक्ष्मत्वम्, अन्तिमप्रहरद्वये कृत्स्नक्षयः । अतोऽमावास्यायाः प्रथमप्रहरः 'सिनीवाली' संज्ञकः, अन्तिमप्रहरद्वयं 'कुहू' नामकम्, मध्यमप्रहरपञ्चकं 'दर्श' नामकमित्यवधेयम् ॥

- १ सोपप्लवोपरक्तौ द्वास्वग्न्युत्पात उपाहितः ।
- २ एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥
- ४ अष्टादश निमेषास्तु काष्ठाऽत्रिंशत्तु ताः कलाः ।
- ६ तास्तु त्रिंशत्क्षणऽस्ते तु मुहूर्तौ द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥
- ८ ते तु त्रिंशदहोरात्रः ९ पक्षस्ते दश पञ्च च ।

१ सोपप्लवः, उपरक्तः ( २ पु ), 'ग्रहण लगनेपर राहुसे ग्रस्त' ( कुछ कटे हुए ) सूर्य या चन्द्रमा के २ नाम हैं ॥

१ अग्न्युत्पातः, उपाहितः ( २ पु ), 'आकाशमें अग्नि-विकार, तारा टूटना, धूमकेतु नामकी ताराका उदय होना और उसके उपद्रव, सूर्य-ग्रहणादिमें आग्नेयमण्डलसे उत्पन्न तेजोविशेष' इनके २ नाम हैं ॥

२ पुष्पवन्तौ ( = पुष्पवत्, नि० द्विव० । + पुष्पवन्तौ । म० पुष्पवन्तौ = पुष्पवन्तः ) 'सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों का १ नाम है ॥

४ निमेषः ( पु ), 'निमेष' का १ नाम है । आँखके पलक गिरनेमें जितना समय लगे उसे 'निमेष' कहते हैं ) । काष्ठा ( स्त्री ), 'अट्टारह निमेषके बराबर समय' का 'काष्ठा' यह १ नाम है ॥

५ कला ( स्त्री ), 'तीस काष्ठाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

६ ऽक्षणः ( पु ) 'तीस कलाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

७ मुहूर्तः ( पु न ) 'बारह क्षण' अर्थात् 'दो घड़ी' के बराबर समय का १ नाम है ॥

८ अहोरात्रः ( पु ), 'दिन रात' अर्थात् 'तीस मुहूर्त' या साठ घड़ी का १ नाम है ॥

९ पक्षः ( पु ), 'पन्द्रह दिन-रात या पक्ष' का १ नाम है ॥

\* 'यावता समयेन चलितः परमाणुः पूर्वदेशं जग्यादुत्तरदेशमुपसंपद्येत स कालः 'क्षणः' इति पातञ्जलभाष्यम् । तस्य च क्षणस्यातीन्द्रियत्वम् । निमेषस्य चतुर्थो भागः 'क्षणः' इति टीकाकृतः' इति वै० सि० मञ्जूषायां शब्दबुद्ध्यादीनां क्षणिकत्वनिरूपणावसरे कुजिकायामुक्तः क्षणस्वतीन्द्रियोऽन्य एवेत्यवधेयम् ॥

- १ पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ २ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥  
 ३ द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादतुष्टैरयनं त्रिभिः ।  
 ५ अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥  
 ६ समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।

१ शुक्लः, कृष्णः ( २ पु ), ये 'पक्षके दो भेद' हैं । ( उसमें उजियाले पक्षको 'शुक्ल' और अंधियारे पक्षको 'कृष्ण' कहते हैं ) ॥

२ मासः ( पु ), दो पक्ष, महीना का १ नाम है । ( 'मार्गशीर्ष १, पौष २, माघ ३, फाल्गुन ४, चैत्र ५, वैशाख ६, ज्येष्ठ ७, आषाढ ८, श्रावण ९, भाद्र १०, आश्विन ११ और कार्तिक १२ ये बारह महीने होते हैं' ) ॥

३ ऋतुः ( पु ), 'ऋतु' का १ नाम है । मार्गशीर्ष अर्थात् अगहनसे दो-दो महीनोंके 'हेमन्त' आदि एक-एक ऋतु होते हैं, इस प्रकार एक वर्षमें ६ ऋतु होते हैं । ( 'हेमन्त १, शिशिर २, वसन्त ३, ग्रीष्म ४, वर्षा ५ और शरत् ६ ये ६ ऋतु हैं, मार्गशीर्ष (अगहन) और पौषमें 'हेमन्त' १, माघ और फाल्गुनमें 'शिशिर' २, चैत्र और वैशाखमें 'वसन्त' ३, ज्येष्ठ और आषाढमें 'ग्रीष्म' ४, श्रावण और भाद्रमें 'वर्षा' ५ तथा आश्विन और कार्तिक में 'शरत्' ६ ऋतु होते हैं' ) ॥

४ अयनम् ( न ), 'अयन' का १ नाम है । यह ३ ऋतु या ६ मासका होता है ।

५ सूर्यके गतिभेदसे यह 'अयन' दो प्रकारका होता है, उसमें जब सूर्यकी गति कुछ उत्तरकी तरफ होती है उसे 'उत्तरायणम्' ( न ), अर्थात् 'उत्तरायण' और जब सूर्यकी गति कुछ दक्षिणकी तरफ होती है उसे 'दक्षिणायनम्' ( न ), अर्थात् 'दक्षिणायन' कहते हैं । 'उत्तरायण' में मकरसे मिथुन राशितक और 'दक्षिणायन' में कर्कसे धनु राशितक सूर्यकी संक्रान्ति रहती है' ) ॥

६ विषुवत्, विषुवम् ( + विषुणम् । २ न ), 'जब रात दिन दोनों बराबर हो जाते हैं, उस समय'के २ नाम हैं । ( 'जब तुला और मेषकी सूर्यसंक्रान्ति होती है, तब दिन रात बराबर होते हैं' ) ॥

\* तदुक्तम्—'आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासावृतुः स्मृतः' इति ।



- १ 'पुण्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी २ मासे तु यत्र सा (४२)  
 नाग्ना स पौषो ३ माघाद्याश्चैवमेकादशापरे' (४३)  
 ४ मार्गशीर्षे सहा मार्ग आम्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥  
 ५ पौषे तैषसहस्यौ द्वौ ६ तपा माघेऽथ फाल्गुने ।  
 स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः ८ स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

१ [ पौषी ( स्त्री ), 'पुण्य नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा' अर्थात् 'पौष मासकी पूर्णिमा' का १ नाम है ] ।

२ [ पौषः (पु), 'पूँस महीना' अर्थात् जिसमें 'पौषी' पूर्णिमा हो, उसका १ नाम है ] ॥

३ [ इसी तरह माघ आदि ग्यारह महीनोंको भी समझना चाहिये, अर्थात् मघा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'माघी' महीना 'माघः' १, पूर्वोत्तरफाल्गुनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'फाल्गुनी' मास 'फाल्गुनः' २, चित्रा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'चैत्री' मास 'चैत्रः' ३, विशाखा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'वैशाखी' मास 'वैशाखः' ४, ज्येष्ठा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'ज्यैष्ठी' मास 'ज्येष्ठः' ५, पूर्वोत्तराषाढा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आषाढी' मास 'आषाढः' ६, श्रवण नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'श्रावणी' मास 'श्रावणः' ७, पूर्वोत्तराभाद्रपद नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'भाद्रपदी' मास 'भाद्रपदः' ८, अश्विनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आश्विनी' मास 'आश्विनः' ९, कृत्तिका नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'कार्तिकी' मास 'कार्तिकः' १० और मृग नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'मार्गी' मास 'मार्गः' ११ होते हैं, इनमें पूर्णिमाके वाचक 'माघी' आदि ११ शब्द स्त्री० और मासके वाचक 'माघ' आदि ११ शब्द पुं० हैं ] ॥

४ मार्गशीर्षः, सहाः ( = सहस् ), मार्गः, आम्रहायणिकः ( + आम्रहायणः । ४ पु ), 'अमरमहीने' के ४ नाम हैं ॥

५ पौषः, तैषः, सहस्यः ( ३ पु ), 'पौष मास' के ३ नाम हैं ॥

६ तपाः ( = तपस् ), माघः ( २ पु ), 'माघ मास' के २ नाम हैं ॥

७ फाल्गुनः, तपस्यः, फाल्गुनिकः ( ३ पु ) 'फाल्गुन मास' के ३ नाम हैं ॥

८ चैत्रः, चैत्रिकः, मधुः ( ३ पु ), 'चैत्र मास' के ३ नाम हैं ॥

- १ वैशाखे माघवो राघो २ ज्येष्ठे शुक्रः ३ शुचिस्त्वयम् ।  
 आषाढे ४ श्रावणे तु स्यान्नमाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥  
 ५ स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः स्रमाः ।  
 ६ स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि ७ स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥  
 बाहुल्योर्जो कार्तिकिको ८ हेमन्तः ९ शिशिरोऽस्त्रियाम् ।  
 १० वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥  
 निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

- १ वैशाखः, माघवः, राघः ( ३ पु ), 'वैशाख मास' के ३ नाम हैं ॥  
 २ ज्येष्ठः ( + ज्यैष्ठः ), शुक्रः, ( २ पु ), 'ज्येष्ठ मास' के २ नाम हैं ॥  
 ३ शुचिः, आषाढः ( + आषाढकः । २ पु ), 'आषाढ मास' के २ नाम हैं ॥  
 ४ श्रावणः, नमाः ( = नभस् ) श्रावणिकः ( ३ पु ), 'श्रावण मास' के ३ नाम हैं ॥  
 ५ नभस्यः, प्रौष्ठपदः, भाद्रः, भाद्रपदः ( ४ पु ), 'भाद्र मास' के ४ नाम हैं ॥  
 ६ आश्विनः, इषः, आश्वयुजः ( ३ पु ), 'आश्विन मास' अर्थात् 'कार' के ३ नाम हैं ॥  
 ७ कार्तिकः, बाहुल्यः, ऊर्जः, कार्तिकिकः ( ४ पु ), 'कार्तिक मास' के ४ नाम हैं ॥  
 ८ हेमन्तः ( पु । + हेमा, = हेमन्, पु ), 'हेमन्त ऋतु' का १ नाम है ।  
 ( 'यह अगहन और पौष मासमें होता है' ) ॥  
 ९ शिशिरः ( पु न ), 'शिशिर ऋतु' का १ नाम है । ( 'यह माघ और फाल्गुन मासमें होता है' ) ॥  
 १० वसन्तः, पुष्पसमयः, सुरभिः ( + ऋतुराजः । ३ पु ), 'वसन्त ऋतु' के ३ नाम हैं । ( 'यह चैत वैशाख मास में होता है' ) ॥  
 ११ ग्रीष्मः, ऊष्मकः, ( + उष्मकः, उष्णकः, ऊष्मणः, उष्मणः ), निदाघः, उष्णोपगमः ( + ऊष्णोपगमः ), उष्णः ( + ऊष्णः ), ऊष्मागमः ( + उष्मागमः ), तपः ( ७ पु ), 'ग्रीष्म ऋतु' के ७ नाम हैं । ( 'यह ज्येष्ठ और आषाढ मास में होता है' ) ॥

- १ स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूमि वर्षा २ अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥  
 ३ षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।  
 ४ संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥  
 ५ मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो ६ वर्षेण चतः ।

१ प्रावृट् ( = प्रावृष्, स्त्री ), वर्षाः ( स्त्री, नि० ब० व० ) 'वर्षा ऋतु' के २ नाम हैं । ( 'यह श्रावण और भादों मासमें होता है' ) ॥

२ शरत् ( = शरद्, स्त्री ), 'शरद् ऋतु' का १ नाम है । ( 'यह आश्विन और कार्तिक मासमें होता है' ) ॥

३ मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन महीनेसे हर दो-दो महीनोंमें हेमन्त आदि एक एक ऋतु होते हैं । 'ऋतु' शब्द ( पु ) है । ( 'इनका क्रम पृष्ठ ३९ श्लोक १३ में कहा जा चुका है, अतः वहाँ से देखिये' ) ॥

४ संवत्सरः ( + परिवत्सरः ), वत्सरः, अब्दः ( ३ पु ), हायनः ( पु न । म० ४ पु न ), शरत् ( = शरद्, स्त्री ), समाः ( स्त्री०, नि० ब० व० ), 'वर्ष, साल' के ६ नाम हैं ( 'यह १२ महीनेका होता है' ) ॥

५ मनुष्योंके एक महीनेका 'पैत्रः अहोरात्रः' ( पु ) अर्थात् 'पितरोंकी दिन-रात' होती है । ( 'उसमें मनुष्योंके कृष्णपक्षमें पितरोंका दिन' और मनुष्योंके शुक्लपक्षमें 'पितरोंकी रात' होती है । जिस मतमें आधीरातके बाद दिनका आरम्भ माना जाता है—जैसा कि अंग्रेजीमें तारीखोंका क्रम है; उसके अनुसार यह कथन ठीक है, वस्तुतः तो मनुष्योंके कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे शुक्लपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंका दिन' और मनुष्योंकी शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे कृष्णपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंकी रात' होती है; इस तरह मनुष्योंकी अमावास्याके अन्तमें 'पितरोंका मध्याह्न' और मनुष्योंकी पूर्णिमाके अन्तमें 'पितरोंकी आधी रात' होती है' ) ॥

६ मनुष्योंके एक वर्ष या उत्तरायण और दक्षिणायन का 'दैवः अहोरात्र' ( पु ) अर्थात् 'देवताओंकी एक दिन-रात' होती है । ( 'इसमें उत्तरायण

'पित्र्ये राज्यदानी मासः प्रविभागस्तु पक्षयोः ।

कर्मचेष्टास्वहः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी ॥ १ ॥' इति मनुः १।६६ ॥

## १ दैवे युगसद्वत्ते द्वे ब्राह्मः—

अर्थात् सूर्यकी मकरसंक्रान्तिसे मिथुनसंक्रान्तितक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायन अर्थात् सूर्यकी कर्कसंक्रान्तिसे धनुसंक्रान्तितक 'देवताओंकी रात' होती है । यह भी आधीरातसे दिनारम्भसे गणनानुसार ही है, वस्तुतः तो उत्तरायणके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी मेषसंक्रान्तिके प्रथम दिनसे दक्षिणायनके पूर्वार्द्ध अर्थात् सूर्यकी कन्यासंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायनके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी तुलासंक्रान्तिके प्रथम दिनसे उत्तरायणके पूर्वार्द्ध अर्थात् मीनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंकी रात' होती है । इस प्रकार उत्तरायणके अर्थात् सूर्यकी मिथुनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंका मध्याह्न' और दक्षिणायनके अर्थात् सूर्यकी धनुसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंकी आधीरात' होती है' ) ॥

१ देवताओंके दो हजार युगका 'ब्राह्मः अहोरात्रः' ( पु ) अर्थात् 'ब्रह्माकी दिन-रात' होती है । ( 'देवताओंके ३६० दिन या मनुष्योंके ३६० वर्षका 'दिव्यवर्षम्' (न) अर्थात् 'देवताओंका एक वर्ष' होता है । और बाहर हजार दिव्य वर्ष ( देवताओंके वर्ष ) का 'मनुष्योंका चतुर्युग' ( 'सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग' ) होता है, यही 'देवताओंका एक युग' है ।

१. 'दैवे राध्यहनी वर्षं प्रविमागस्तयोः पुनः ।

अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्यादक्षिणायनम् ॥ १ ॥ इति मनुः १।६७ ॥

२. 'कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिश्चेति चतुर्युगम् ।

प्रोच्यते तत्सहस्रं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ॥ १ ॥ इति वि० पु० ।

कृतं सत्ययुगम्, अन्ये प्रसिद्धाः ॥

३. 'चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणान्तु कृतं युगम् ।

तस्य तावच्छती संख्या सन्ध्यांश्च तथाविधः ॥ १ ॥

इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्यांशेषु च त्रिषु ।

एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ २ ॥

यदेतत्परिसङ्ख्यातमादावेव चतुर्युगम् ।

एतद्द्वादशसाहस्रं 'देवानां युगमुच्यते' ॥ ३ ॥ इति मनुः १।६९-७१ ॥

—१ कल्पौ तु ती नृणाम् ॥ २१ ॥

२ मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

देवताओं के इसी दो हजार युग का 'ब्रह्माकी एक दिन-रात' होती है; अर्थात् देवताओं के एक हजार युग का 'ब्रह्माका दिन' और उतने ही ( देवताओं के एक हजार युग ) की 'ब्रह्माकी रात' होती है' ) ॥

१ वही ब्रह्माकी दिन-रात मनुष्यों का 'कल्प' ( ५० व० भी होता है ), 'कल्प' अर्थात् स्थिति और प्रलय का काल है । ('उसमें ब्रह्मा के दिनमें 'मनुष्यों का स्थितिकाल और ब्रह्मा की रातमें 'मनुष्यों का प्रलयकाल' है' ) ॥

२ देवताओं के एकहत्तर युग का 'मन्वन्तरम्' ( न ), १ 'मन्वन्तर' अर्थात् चौदह मनुओंमेंसे प्रत्येक मनु का स्थितिकाल होता है । ( स्वायम्भुव १ स्वरोचिष २, औत्तमि ३, तामसि ४, रैवत ५, आयुष ६, वैवस्वत ७, सावर्णि ८, दक्षसावर्ण ९, ब्रह्मावर्ण १०, धर्मसावर्ण ११, रौद्रसावर्ण १२, रौच्यसावर्णि १३ और भीत्यसावर्णि १४ ये चौदह मनु हैं' इनमेंसे प्रत्येक के स्थितिकाल को 'मन्वन्तर' कहते हैं । उनमें ६ मनु बीत चुके हैं, सातवाँ 'वैवस्वत' मन्वन्तर बीत रहा है और अन्य सात बाकी हैं । 'पृष्ठ ३८ श्लोक ११ से यहाँ तक कहे

१ 'दैविकानां युगानाम् तु सहस्रं परिसङ्ख्यया ।

ब्राह्ममेकमहर्षेण तावती रात्रिमेव च ॥ १ ॥ इति मनुः १।७२ ॥

२ 'यत्प्राग्द्वादशसाहस्रमुदितं दैविकं युगम् ।

तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिदोच्यते ॥ २ ॥ इति मनुः १।७९ ॥

३ 'मनुः स्वायम्भुवो नाम मनुः स्वरोचिषस्तथा ।

औत्तमिस्तामसिश्चैव रैवतश्चायुषस्तथा ॥ १ ॥

एते तु मनवोऽतीताः सप्तमस्तु रवेः सुतः ।

वैवस्वतोऽयं यत्प्रेतस्तप्तमं वर्त्तते युगम् ॥ २ ॥

सावर्णिर्दक्षसावर्णो ब्रह्मासावर्ण इत्यपि ।

धर्मसावर्ण रुद्रस्तु सावर्णो रौच्यभीत्यवत् ॥ ३ ॥ इति वि० पु० ।

हुए कालका मान चक्रमें स्पष्ट है ॥

\* 'अष्टादश निमेषास्तु ( १४।११ ) इत्यत आरभ्य 'युगानामेकसप्ततिः ( १४।२२ ) इत्यन्तग्रन्थस्य कालज्ञानात्मको निष्कर्षोऽत्र चक्रे द्रष्टव्यः ॥

ॐ अथ कालमानबोधकचक्रम् ॐ

नेत्रस्पन्दकाल,	१ निमेषः ( ३६ विपला )	( ५३६ सेकेण्ड )
१८ निमेषाः	१ काष्ठा ( ३ विपला )	( ५४ सेकेण्ड )
३० काष्ठाः	१ कला ( २० विपला )	( ८ सेकेण्ड )
३० कलाः	१ क्षणः ( १० पला )	( ४ मिण्ट )
१२ क्षणाः	१ मुहूर्तः ( २ घटायौ )	( ४८ मिण्ट )
३० मुहूर्ताः	१ अहोरात्रः ( मानुषः )	( २४ घण्टा )
१५ अहोरात्राः	१ पक्षः ( मानुषः )	१ पैत्रं दिनं निशा वा
२ पक्षौ	१ मासः ( मानुषः )	१ अहोरात्रः ( पैत्रः )
१२ मासाः	१ वर्षम् ( मानुषम् )	१ अहोरात्रः ( दैवः )
३६० दैवाहोरात्राः	३६० मानुषवर्षाणि	१ वर्षम् ( दिव्यम् )
१२०० दिव्यवर्षाणि	४३२००० मानुषवर्षाणि	१ कलिमानम्
२४०० "	८६४००० "	१ द्वापरमानम्
३६०० "	१२९६००० "	१ त्रेतामानम्
४८०० "	१७२८००० "	१ सत्ययुगमानम्
एवं १२००० "	४३२०००० "	मानुषं चतुर्युगमानम् वा दैवं युगम्
१२००० दिव्यवर्षाणि × १००० = १२०००००० दिव्यवर्षाणि	४३२०००० मानुषवर्षाणि × १००० = ४३२००००००० मानुषवर्षाणि	१ दिनम् ( ब्राह्मम् )
"	"	१ रात्रिः ( ब्राह्मी )
१२०००००० + १२०००००० = १४०००००० दिव्यवर्षाणि	४३२००००००० ÷ ४३२००००००० = ८६४००००००० मानुषवर्षाणि	१ अहोरात्रः ( ब्राह्मः )
१२००० दिव्यव. = चतुर्युगमानम् × ७१ = ८५२००० दिव्यवर्षाणि	४३२०००० मानुषवर्षाणि × ७१ = ३०६७२०००० मानुषवर्षाणि	१ मन्वन्तरम्

- १ संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥  
 २ अस्त्री पङ्क्तं पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकर्मवम् ।  
 कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥  
 ३ स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।  
 ४ मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदाः ॥ २४ ॥  
 स्यादानन्दाधुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।  
 ५ श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥  
 भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।  
 शस्तं ६ चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥  
 ७ मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।

१ संवर्तः, प्रलयः, कल्पः, क्षयः, कल्पान्तः, ( ५ पु ), 'प्रलय काल' के ५ नाम हैं ॥

२ पङ्क्तम् ( न पु ), पाप्मा ( = पाप्मन्, पु ) पापम् किल्बिषम्, कर्मवम्, कलुषम्, वृजिनम्, एनः ( = एनस् ), अघम्, अंहः ( = अंहस् । + अंघः, अंघस् ), दुरितम्, दुष्कृतम् ( १० न ), 'पाप' के १२ नाम हैं ॥

३ धर्मः ( पु न । + धर्मा = धर्मन्, पु ), पुण्यम्, श्रेयः ( = श्रेयस् ), सुकृतम् ( ३ न ) वृषः ( पु ) 'धर्म' के ५ नाम हैं ॥

४ मुत् ( = मुद् ), प्रीतिः ( २ स्त्री ), प्रमदः, हर्षः, प्रमोदः, आमोदः, संमदः, आनन्दथुः, आनन्दः, ( ७ पु ), शर्म ( = शर्मन् ), शातम् ( + सातम् ) सुखम् ( ३ न ), 'हर्ष' के १२ नाम हैं ॥

५ श्वःश्रेयसम् ( स्वःश्रेयसम् ), शिवम्, भद्रम् ( भन्दम् ), कल्याणम्, मङ्गलम्, शुभम्, भावुकम्, भविकम्, भव्यम्, कुशलम् ( + कुषलम् । १० न ), 'क्षेमम्' शस्तम् ( २ न पु ) 'कल्याण' के १२ नाम हैं ॥

६ 'पाप, पुण्य' शब्द और 'सुख' शब्दसे 'शस्त' शब्दतक १३ शब्द द्रव्यविशेष में प्रयुक्त होने पर त्रिलिङ्ग होते हैं । ( जैसे—'पापो अनुप्यः, पापो निघनता, पापं दैन्यम् । पुण्यः प्रतापः, पुण्या सङ्गत्, पुण्यं यज्ञः । कल्याणो बन्धुः, कल्याणी भार्या, कल्याणं वित्तम्.....' ) ॥

प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥

२ दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिविधिः ।

३ हेतुर्ना कारणं बीजं ४ निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

५ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः ६ प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

७ विशेषः कालिकोऽवस्थाऽगुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

९ अनुर्जननजन्मानि जनितरूपतिरुद्भवः ।

१० प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्त्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

उद्धः, तल्लनः (२ पु), ये ५ किसी द्रव्यवाचक शब्दके साथ समस्त होकर अन्तमें रहनेसे उसकी श्रेष्ठताको प्रकट करते हैं । इनका स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है । जैसे—‘गोमतल्लिका, गोमचर्चिका, गोप्रकाण्डम्, गवोद्धः, गोतल्लजा, .....’ ) ॥

१ अयः ( पु ) ‘शुभकारक भाग्य’ का १ नाम है ॥

२ दैवम् , दिष्टम् , भागधेयम् , भाग्यम् ( ४ न ), नियतिः ( स्त्री ), विधिः ( पु ), ‘भाग्य’ के ६ नाम हैं ॥

३ हेतुः ( पु ), कारणम् , बीजम् ( २ न ), ‘कारण’ के ३ नाम हैं ॥

४ निदानम् ( न ), ‘मूल कारण’ का १ नाम है ॥

५ क्षेत्रज्ञः, आत्मा ( =आत्मन् ), पुरुषः ( ३ पु), ‘शरीरकी अधिष्ठात्री देवता’ के ३ नाम हैं ॥

६ प्रधानम् ( न ), प्रकृतिः ( स्त्री ), ‘सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणकी साम्यावस्था’ के २ नाम हैं ॥

७ अवस्था ( स्त्री ), ‘समयकृत विशेष’ अर्थात् ‘उन्न’का १ नाम है । ( जैसे—लङ्कपन, जबानी, बुढ़ापा, ..... ) ॥

८ सत्त्वम् , रजः ( = रजस् । + रजः = रज, पु ), तमः ( =तमस् ) + तमः, =तम, पु । ३ न), ये ३ ‘प्रकृतिके धर्म’ हैं । उनका क्रमशः ‘सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण’ यह १-१ नाम है ॥

९ अनुः ( =अनुस् ), जननम्, जन्म ( =जन्मन् । + जन्मः = जन्म, पु । ३ न ), जनिः ( + पु), उत्पत्तिः ( २ स्त्री ), उद्भवः ( पु), ‘उत्पत्ति’ अर्थात् ‘पैदा होने या जन्म लेने’ के ६ नाम हैं ॥

१० प्राणी ( =प्राणिन् ), चेतनः, जन्मी ( =जन्मिन् ) जन्तुः, जन्त्युः, शरीरी



- १ जातिर्जातं च सामान्यं २ व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।  
 ३ चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥  
 इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

### ५. अथ धीवर्गः ।

- ४ बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।  
 प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥  
 ५ धीर्धारणावती मेधा ६ संकल्पः कर्म मानसम् ।  
 ७ 'अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च' (४४)

( = शरीरिन् । ६ पु ), 'प्राणी' के ६ नाम हैं ॥

१ जातिः ( स्त्री ), जातम्, सामान्यम् ( २ न ), 'जाति' के ३ नाम हैं ।  
 ( 'जैसे—गोख, ब्राह्मणख, चटरख, .....' ) ॥

२ व्यक्तिः, पृथगात्मता ( २ स्त्री ), 'व्यक्ति' के २ नाम हैं । ( 'जैसे—  
 गौ, मनुष्य, राम, श्याम, .....' ) ॥

३ चित्तम्, चेतः ( = चेतस् ), हृदयम्, स्वान्तम्, हृत् ( = हृद् ), मानसम्,  
 मनः ( = मनस् । ७ न ), 'मन या चित्त' के ७ नाम हैं ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

### ५. अथ धीवर्गः ॥

४ बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः,  
 चित् ( = चिद् ), संवित् ( = संविद् ), प्रतिपत् ( = प्रतिपद् ), ज्ञप्तिः, चेतना  
 ( १४ स्त्री ), 'बुद्धि' के १४ नाम हैं ॥

५ मेधा ( स्त्री ), 'धारणा शक्तिवाली बुद्धि' का १ नाम है ॥

६ संकल्पः ( पु ), 'संकल्प, मानसिक कर्म' का १ नाम है ॥

७ [ अवधानम्, समाधानम्, प्रणिधानम् ( ३ न ), 'समाधान' के ३  
 नाम हैं ] ॥

• 'साङ्ख्ये बुद्धिर्मेरुयेते पर्वणाः, वैशेषिकादौ पु चतुर्दशापि बुद्धयः' इति श्री० स्वा० ॥

- १ चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा सङ्ख्या विचारणा ॥ ३ ॥
- २ 'विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते' (४५)
- ४ अध्याहारस्तर्क ऊहो ५ विचिकित्सा तु संशयः ।  
सन्देहद्वापरौ ६ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥
- ७ मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता ८ व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।
- ९ समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ १० भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥ ४ ॥
- ११ संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।

१ चित्ताभोगः, मनस्कारः ( २ पु ), 'सुखादिमें मनके लगे रहने' के २ नाम हैं ॥

२ चर्चा, सङ्ख्या, विचारणा ( ३ स्त्री ), 'प्रमाणोंके द्वारा किसी विषयके विचार करने' के ३ नाम हैं ॥

३ [ विमर्शः ( पु ) ] भावना, वासना ( २ स्त्री ), 'बीती हुई बात आदिके संस्कार' के ३ नाम हैं ] ॥

४ अध्याहारः, तर्कः, ऊहः ( ३ पु ), 'तर्क' के ३ नाम हैं ॥

५ विचिकित्सा ( स्त्री ), संशयः, सन्देहः, द्वापरः ( ३ पु ), 'सन्देह' के ४ नाम हैं ॥

६ निर्णयः, निश्चयः ( २ पु ), 'निश्चय' के २ नाम हैं ॥

७ मिथ्यादृष्टिः, नास्तिकता ( २ स्त्री ), 'नास्तिकपना' के २ नाम हैं ।  
( 'ईश्वर या परलोक नहीं हैं, ऐसे ज्ञानको 'नास्तिकपना' कहते हैं' ) ॥

८ व्यापादः ( पु ), द्रोहचिन्तनम् ( न ), 'किसीसे द्रोह करनेका विचार करने' के २ नाम हैं ॥

९ सिद्धान्तः, राद्धान्तः ( २ पु ), 'सिद्धान्त' के २ नाम हैं । ( 'वाद-विवादके द्वारा किसी विषयको निश्चय करने या अपने अटल मतको 'सिद्धान्त' कहते हैं' ) ॥

१० भ्रान्तिः, मिथ्यामतिः ( २ स्त्री ), भ्रमः ( पु ), 'भ्रम' के ३ नाम हैं ।  
( 'जैसे—शुक्तिमें रजतका, रस्सीमें सर्पका ज्ञान होना 'भ्रम' है' ) ॥

११ संवित् (= संविद् ), आगूः (= आगुर्, 'आगूः, आगुरी, आगुरः' ऐसे रूप होते हैं । अथवा—आगूः, = आगू, 'आगूः, आग्वौ, आग्वः' इत्यादि

- १ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥  
 २ मोक्षे धीर्ज्ञानश्मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।  
 ४ मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥  
 मोक्षोऽपवर्गोऽपथाज्ञानमविद्याऽहम्मतिः स्त्रियाम् ।  
 ६ रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥  
 गोचरा इन्द्रियार्थाश्च ७ हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।  
 ८ कर्मेन्द्रियं तु पायवादि—

‘खलपू’ शब्दके समान रूप होते हैं । ( २ स्त्री ), प्रतिज्ञानम् ( न ), नियमः, आश्रवः, संश्रवः ( ३ पु ), ‘प्रतिज्ञा’ के ३ नाम हैं ॥

१ अङ्गीकारः ( + स्वीकारः ), अभ्युपगमः, प्रतिश्रवः, समाधिः ( ४ पु ), ‘स्वीकार करने’ के ४ नाम हैं ॥

२ ज्ञानम् ( न ), ‘मोक्ष-विषयक बुद्धि’ का १ नाम है ॥

३ विज्ञानम् ( न ), ‘शिल्प (कारीगरी), अथवा शास्त्रविषयक बुद्धि’ का १ नाम है । ( मुकुटने ‘मोक्षे’ इसको निमित्त सप्तमी मानकर मोक्षनिमित्तक शिल्प-शास्त्र-विषयक बुद्धिको ‘ज्ञान’ तथा अन्यनिमित्तक शिल्प-शास्त्रविषयक बुद्धिको ‘विज्ञान’ अर्थ किया है ) ॥

४ मुक्तिः ( स्त्री ), कैवल्यम्, निर्वाणम्, श्रेयः ( = श्रेयस् ), निःश्रेयसम्, अमृतम् ( ५ न ), मोक्षः, अपवर्गः ( २ पु ), ‘मोक्ष’ के ८ नाम हैं ॥

५ अज्ञानम् ( न ), अविद्या, अहम्मतिः ( २ स्त्री ), ‘अज्ञान’ के ३ नाम हैं ॥

६ रूपम् ( न ), शब्दः, गन्धः, रसः, स्पर्शः ( ४ पु ), ये ५ नेत्रादि एक-एक इन्द्रिय के एक-एक विषय’ के नाम हैं । ( ‘नेत्रका विषय ‘रूप’ भिन्ना का विषय ‘रस’ नासिकाका विषय ‘गन्ध’ कानका विषय ‘शब्द’ और त्वचा अर्थात् चमकेका विषय ‘स्पर्श’ है । इन्हींके गोचरः, विषयः, इन्द्रियार्थः ( ३ पु ), ये ३ सामान्य नाम हैं ॥

७ हृषीकम्, विषयि ( = विषयिन् ), इन्द्रियम् ( ३ न ), ‘इन्द्रियों’ के ३ नाम हैं । ( ‘कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय भेदसे इन्द्रिय दो प्रकारके हैं; जिनका विवरण आगे किया जा रहा है’ ) ॥

८ कर्मेन्द्रियम् ( न ), ‘काम करनेवाली इन्द्रियों’ का १ नाम है । ( ‘पायु अर्थात् गुदा १, उपस्थ अर्थात् भग या लिङ्ग २, हाथ ३, पैर ४ और शब्द ५ ये कर्मेन्द्रिय अर्थात् काम करनेवाली इन्द्रियां हैं । ‘मलत्याग करना,

—१ मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

- २ तुवरस्तु कषायोऽघ्नी ३ मधुरो लवणः कटुः ।  
 तिक्तोऽम्बलश्च रसाः पुंसि ४ तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥  
 ५ विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

भोग करना, ग्रहण करना, चलना और बोलना' इनमेंसे १-१ नाम क्रमशः एक-एक इन्द्रियका' है' ) ॥

१ धीन्द्रियम् ( न । + ज्ञानेन्द्रियम् ), 'ज्ञानेन्द्रिय' का १ नाम है ।  
 ( 'मन १, कान २, नेत्र ३, जीभ ४, त्वचा ५ और नाक ६, ये ६ ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् ज्ञान करनेवाली इन्द्रिया' हैं । 'जानना, सुनना, देखना, स्वाद लेना, स्पर्श-ज्ञान करना और सूँघना' इनमें से १-१ काम क्रमशः १-१ इन्द्रियका है' ) ॥

२ तुवरः ( + तूवरः, कुवरः । पु ) कषायः, ( पु न ) 'कषाय' कसाव' के २ नाम हैं । ( हरेंमें 'कषाय' रस होता है ) ॥

३ मधुरः, लवणः, कटुः, तिक्तः, अम्बलः ( + अम्बलः, अरुलः । ५ पु ), 'मीठा, खारा, कडुआ, तीता और खट्टा' ये पाँच और पहिला 'कषाय' ऐसे ६ रस हैं । ('इनमें पानी आदि 'मीठा', नमक, सोरा आदि 'खारा' मिर्च आदि 'कडुआ' नीम, चिरैता आदि 'तीता' और आम, नींबू, हमली आदि 'खट्टे' होते हैं । रसः ( पु ) हैं' ) ॥

४ ये 'तुवर, मधुर' आदि ७ नाम स्वतः रसवाचक रहनेपर पुंलिङ्ग हैं; किन्तु द्रव्यवाचक अर्थात् रसवाले पदार्थके अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग हैं । जैसे—मधुरं जलम्, मधुरा आपः, मधुरो गुडः, ... ) ॥

५ परिमलः ( पु ), 'किसी पदार्थके संघर्ष अर्थात् रगड़से

१. तथा च कामन्दकः — 'पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः ।

उत्सर्गं आनन्दादानगत्याकापाश्च तत्किमाः ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम् — 'मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा मूह ।

नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ १ ॥' इति ॥

- १ आमोदः सोऽतिनिर्हारी २ वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥  
 ३ समाकर्षी तु निर्हारी ४ सुरभिघ्राण तर्पणः ।  
 इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥  
 ६ पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो ७ विस्त्रं स्यादामगन्धि यत् ।  
 ८ शुक्लशुभ्रशुचिः श्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥  
 अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।  
 हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः —

उत्पन्न जनमनोहर गन्धविशेष या वकुलके गन्ध' का १ नाम है ।

१ <sup>१</sup>आमोदः ( पु ), 'अत्यन्त बढियां गन्ध या कस्तूरीके गन्ध' का १ नाम है ॥

२ यहाँ से 'गुणे शुक्लादयः पुंसि (१५।१७)' के पूर्वतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ समाकर्षी (= समाकर्षिन् ), निर्हारी (= निर्हारिन् । २ त्रि ), 'दूरस्थ सुगन्धित पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

४ <sup>२</sup>सुरभिः, घ्राणतर्पणः, इष्टगन्धः, सुगन्धिः ( ४ त्रि ), 'सुगन्धि' के ४ नाम हैं ( इनमें 'सुरभि' नाम 'चमकके गन्ध' का भी है ) ॥

५ आमोदी (= आमोदिन् ), <sup>३</sup>मुखवासनः ( भागुरि म० अगुरुवासनः । २ त्रि ), 'मुखको सुगन्धित करनेवाले पान आदि' के २ नाम हैं । ( 'मुखवासनः' नाम 'कपूरके गन्ध' का भी है ) ॥

६ पूतिगन्धिः, दुर्गन्धः ( २ त्रि ), 'दुर्गन्धि, बदबू' के २ नाम हैं ॥

७ विस्त्रम् ( त्रि ), 'विना पके हुए मांस आदिके गन्ध' का १ नाम है ॥

८ शुक्लः, शुभ्रः, शुचिः, श्वेतः, विशदः, श्वेतः, पाण्डरः, अवदातः, सितः, गौरः, वलक्षः ( + अवलक्षः ), धवलः, अर्जुनः, हरिणः, पाण्डुरः, पाण्डुः ( १६ त्रि ), 'सफेद, उज्जले' के १६ नाम हैं । ( 'मतान्तरसे 'शुक्ल' आदि १३ नाम 'सफेद' के हैं और अन्तवाले 'हरिणः' आदि ३ नाम 'पाण्डुर' अर्थात् 'कुछ पीलापन लिये हुए सफेद' के हैं ) ॥

१-२-३. 'कस्तूरिकायामामोदः कपूरे मुखवासनः ।

वकुले स्यात्परिमलक्षम्पके

सुरभिस्तथा ॥ १ ॥' इति ॥

—१ ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

- २ कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।  
 ३ पीतो गौरो हरिद्राभः ४ पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥  
 ५ लोहितो रोहितो रक्तः ६ शोणः कोकनदच्छविः ।  
 ७ स्रव्यक्तरागस्वरुणः ८ श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥  
 ९ श्यावः श्यात्कपिशो १० धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।  
 ११ कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥  
 १२ चित्रं किर्मीरकलमाषशबलैताश्च कर्बुरे ।

१ ईषत्पाण्डुः, धूसरः ( २ त्रि ), 'धूसर' के २ नाम हैं ॥

२ कृष्णः, नीलः, असितः, श्यामः, कालः, श्यामलः, मेचकः ( ७ त्रि ), 'काले' के ७ नाम हैं ॥

३ पीतः, गौरः, हरिद्राभः ( ३ ), 'पीले' के ३ नाम हैं ॥

४ पालाशः ( + पलाशः ), हरितः, हरित् ( ३ त्रि ), 'हरे' के ३ नाम हैं ॥

५ लोहितः रोहितः, रक्तः ( ३ त्रि ), 'लाल' के ३ नाम हैं ॥

६ शोणः ( त्रि ), 'लाल कमलके समान सुख लाल' का १ नाम है ॥

७ रुणः ( त्रि ), 'गुलाबी' का १ नाम है ॥

८ पाटलः ( त्रि ), 'सफेदी लिये हुए लाल रंग' का १ नाम है ॥

९ श्यावः, कपिशः ( २ त्रि ), 'फोके रंग' के २ नाम हैं ॥

१० धूम्रः, धूमलः, कृष्णलोहितः, ( ३ त्रि ), 'कालापनसे युक्त लाल' के ३ नाम हैं ॥

११ कडारः, कपिलः, पिङ्गः, पिशङ्गः, कद्रुः, पिङ्गलः ( ६ त्रि ), 'भूरे' के ६ नाम हैं ॥

१२ चित्रम् ( भा० दी० म० नपुं० ), किर्मीरः ( + कर्मीरः ), कलमाषः, शबलः, एतः, कर्बुरः ( ६ त्रि ), 'चितकबरे' के ६ नाम हैं । ( 'कौन २ रंग कैसे होते हैं, यह बात टिप्पणीमें स्पष्ट है' ❀ ) ॥

\*श्वेतादिरागाणां व्यक्तं विवरणं शब्दार्णवे प्रोक्तम् । तथा—

'श्वेतस्तु समपीतोऽसौ रक्तैरजपारुचिः । बलञ्चस्तु सितः श्यामः कन्दलीकुसुमोपमः ॥१॥

१ गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥



६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ ॐ ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाणा सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

१ इनमें से 'शुक्ल' आदि सब शब्द गुणवाचक रहनेपर पुंलिङ्ग ही होते हैं और गुणवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं ( 'जैसे—शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम्, .....' ) ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥



६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ ब्राह्मी ( + गौः, = गो ), भारती, भाषा, गीः ( गिर् + गिरा ), वाक् ( = वाच् ), वाणी ( + वाणिः ), सरस्वती, व्याहारः ( पु ), उक्तिः ( शेष ८ स्त्री ), लपितम्, भाषितम्, वचनम्, वचः ( = वचस् । ४ न ), 'वचन' अर्थात् 'बोलने' के १३ नाम हैं । ( 'इनमेंसे 'ब्राह्मी' से 'सरस्वती' तक ६ शब्द 'वचनके अधिष्ठात्री देवी' के भी नाम हैं' ) ॥

अर्जुनस्तु सितः कृष्णकेशवान् कुमुदच्छविः । पाण्डुस्तु पीतभागार्दः केतकीधूलिसन्निभः ॥२॥  
धृतरस्तु सितः पीतकेशवान् बकुलच्छविः । मेचकः कृष्णनीलः स्यादतसीपुष्पसन्निभः ॥३॥  
सितपीतहरिद्रक्तः कडारस्तृणवहिवत् । अयं तद्रक्तपीताङ्गः कपिलो गोविभूषणः ॥४॥  
हरिताशेऽधिकेऽसौ तु पिशङ्गः पद्मधूलिवत् । पिशङ्गस्त्वासितावेशात्पिशो दीपशिखादिषु ॥५॥

पिङ्गलस्तु परिच्छायः पिङ्गे शुक्लाङ्गखण्डवत् ॥ इति ॥

१ 'ब्राह्मी गौभारती.....' इति पाठान्तरम् ॥

१ अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

३ तिङ्मुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

४ श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी ५ धर्मस्तु तद्विधिः ।

१ अपभ्रंशः, अपशब्दः (२ पु) 'अपभ्रंश' अर्थात् 'व्याकरण शास्त्रसे नहीं सिद्ध होनेवाले गगरी, घड़ा, इत्यादि अष्ट (असंस्कृत) शब्द' के २ नाम हैं ॥

२ शब्दः ( पु ), 'व्याकरण आदि शास्त्रोंमें जो वाचक हैं उन'का १ नाम है । ('जैसे—'भोत-प्रोत तन्तुओंका वाचक 'पट' शब्द है, कम्बुग्रीवादि-संस्थान विशिष्टका वाचक 'घट' शब्द है, .....' ) ॥

३ वाक्यम् (न), 'वाक्य' का १ नाम है । ('तिङन्त-समुदाय १, 'सुबन्त-समुदाय २, पद-समुदाय ३, वा कारकान्वित क्रिया ४, को 'वाक्य' कहते हैं । क्रमशः उदाहरण—१ तिङन्त-समुदाय जैसे—'पचति, भवति, .....' । २ सुबन्त-समुदाय जैसे—'प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्, .....' । ३ पद-समुदाय जैसे—'देवदत्तो गच्छति, ओदनं पचति, .....' । ४ कारकान्वित क्रिया जैसे—'रावणं जहि निशितेन शरेण, .....' ) ॥

४ श्रुतिः, वेदः, आम्नायः ( २ पु ), त्रयी ( शेष २ स्त्री ), 'वेद' के ४ नाम हैं ॥

५ धर्मः (पु । मुकुट म० 'त्रयीधर्मः', पु.) 'धर्म' अर्थात् 'वेदोक्त यज्ञादि

१. 'ऋक्, साम, यजुः' इति प्रत्येकं वेदस्य पर्याय इत्युक्त्वा 'त्रयीधर्मः' इत्येकं 'वेद-विहितयागादिकर्मणः' पर्याय इत्युक्तम्, तत्र च त्रय्या धर्मस्त्रयीधर्मः, तथा त्रय्या विधिविधी-यमानो यागादिरिति विग्रहः प्रदर्शितस्तच्चिन्त्यम् । 'विधा धर्मेण शोभते, धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे (गी. १।१), धर्मानो वक्तुमर्हसि (मनु. १।२)। ब्रूहि धर्मानशेषतः (याज्ञ. स्मृ. १।१), धर्मादनिच् केवलात् (पा. सू. ५।४।१२४), इत्याद्यभियुक्तोक्तवचनेषु 'धर्म'शब्दस्यैव दर्शनात् । 'मीमः मीम-सेनः, सत्या, भामा, सत्यभामा', इतिवत्पदैकदेशस्यात्रापि प्रयोग इति तु नाशङ्क्यम् । लोके मीमादीनां पृथक् पृथक् प्रयोगदर्शनेनास्य 'त्रयीधर्म'शब्दस्य कापि तथाऽदर्शनेन वैषम्यात् । 'त्रयीधर्म'शब्दस्य प्रयोग उपलब्धे तु प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाववरूपं सम्बन्धं मत्वा पष्ठोत्तरपुरुष-समासो बोध्यः । ब्राह्मणश्रुत्रियवैश्यानां द्विजत्वेऽपि ब्राह्मणस्यापि द्विजत्ववदिहापि सामान्य-विशेषरूपेणोभयसम्भवात् ".....वेदास्त्रयस्त्रयी ( १।३।६ )" इत्यनेन पौनरुक्त्यं नाशङ्क्यम् । ".....धर्ममस्त्रियाम् ( १।४।२४ )" इत्यनेनापि न पौनरुक्त्यम् । तत्र धर्मपर्यायाणामत्र च धर्मस्वरूपस्य धर्मप्रमाणस्य चाभिधानेनादोषात् । अधिकस्तु परत्र द्रष्टव्यम् ॥



- १ स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥  
 २ शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गश्मोङ्कारप्रणवौ समौ ।  
 ४ इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥  
 ६ आन्वीक्षिकी—

कर्म'का १ नाम है । ( 'स्मृतियोंके भी वेदमूलक होनेसे स्मृत्युक्त कर्म भी 'धर्म' ही हैं' ) ॥

१ ऋक् ( = ऋच्, स्त्री ), साम ( = सामन् ), यजुः ( = यजुस् । २ न ), अर्थात् 'ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद' ये ३ 'वेद' हैं, इन तीनोंका 'त्रयी' ( स्त्री ), यह १ नाम है ॥

२ शिक्षा ( स्त्री ), आदि ( 'आदि शब्दसे 'कल्प १, व्याकरण २, निरुक्त ३, ज्योतिष ४ और छन्दः ५, इनका संग्रह है' ) को 'वेदाङ्गम्' ( न ) 'वेदाङ्ग' अर्थात् 'वेदोंका अङ्ग' कहते हैं ॥

३ ओङ्कारः ( + ॐकारः ), प्रणवः, ( २ पु ), 'वेदारम्भ' अर्थात् 'ओङ्कार' के २ नाम हैं ॥

४ इतिहासः ( पु ), 'पुरावृत्तम्' ( न ), 'इतिहास' के २ नाम हैं । ( 'पूर्व-कालमें बीती हुई कथाको 'इतिहास' कहते हैं, जैसे—'महाभारत, ...' ) ॥

५ उदात्तः ( पु ), आदि ( 'आदि पदसे 'अनुदात्त और स्वरित' का संग्रह है' ), ३ को 'स्वरः' ( पु ), अर्थात् 'स्वर' कहते हैं ॥

६ आन्वीक्षिकी<sup>३</sup> ( स्त्री ), 'गौतम आदिकी रचित तर्कविद्या' का १ नाम है ॥

१. तदुक्तम्—'शिक्षा कस्यो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः ।

छन्दोविचितिरित्येष षडङ्गो वेद उच्यते ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम्—'उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः ।

चतुर्थः प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः ॥ १ ॥' इति ॥

३. आन्वीक्षिक्यादयश्चतस्रो विधाः कामन्दके—

'अन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती ।

विषा होताश्चतस्रस्तु लोकसंस्थितिहेतवः ॥ १ ॥' इति ॥

१ दण्डनीतिस्तर्कविद्याऽर्थशास्त्रयोः ।

२ आख्यायिकोपलब्धार्था ३ पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

१ दण्डनीतिः ( स्त्री ), 'बृहस्पति आदिके रचिते अर्थशास्त्र' का १ नाम है ॥

२ आख्यायिका, उपलब्धार्था ( २ स्त्री ), 'आख्यायिका' के २ नाम हैं ।  
( 'अनुभूत विषयको प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थको 'आख्यायिका' कहते हैं,  
हैं, जैसे—'कादम्बरी, वासवदत्ता'.....' ) ॥

३ पुराणम् ( न ), 'पुराण' अर्थात् पाँच लक्षणोंसे युक्त ग्रंथ का १ नाम है । ( 'सर्ग १, प्रतिसर्ग अर्थात् संहार २, वंश ३, मन्वन्तर ४ और वंशवर्णन ५, इन पाँच लक्षणोंसे युक्त ग्रन्थको 'पुराण' कहते हैं । 'पद्मपुराण १, ब्रह्म-पुराण ३, शिवपुराण ४, देवीभागवत पुराण ५, नारदपुराण ६, मार्कण्डेयपुराण ७, अग्निपुराण ८, भविष्यपुराण ९, ब्रह्मवैवर्तपुराण १०, लिङ्गपुराण ११, वाराह-पुराण १२, स्कन्दपुराण १३, वामनपुराण १४, कूर्मपुराण १५, मत्स्यपुराण १६ गरुडपुराण १७, और ब्रह्माण्डपुराण १८, ये १८ 'पुराण'<sup>३</sup> हैं' ) ॥

तासां प्रतिपाद्यविषयाश्च विज्ञानादयस्तदाह—

'आन्वीक्षिक्यां तु विज्ञानं वर्माधर्मौ त्रयीस्थितौ ।

अर्थानर्थौ तु वात्तायां दण्डनीत्यां नयानयो ॥ १ ॥' इति ॥

१. 'आख्यायिका कथावस्त्यात्कवेर्वशादिकीर्तनम् ।

अस्यामन्यकवीनाञ्च वृत्तं पद्यं कचित्कचित् ॥ १ ॥

कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते ।

आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ॥ २ ॥

अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भावार्थसूचनम् ॥' इति ॥ सा द० ६।३३४॥

२. 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥१॥

इति अमि० चिन्ता० 'हैम' २।१६६ ॥

प्रतिसर्गः संहारोऽन्यस्पष्टम् । कचित् 'वंशानुचरितं चैव'ति तृतीयपादस्थाने 'भूम्यादेशैव संस्थानम्' इति पाठभेदः ।

३. तदुक्तं विष्णुपुराणे—

## १ प्रबन्धकल्पना कथा २ प्रवहिका प्रहेलिका ।

१ कथा ( स्त्री ), 'कथा' अर्थात् 'वाक्यविस्तारकी कल्पनावाले ग्रन्थ' का १ नाम है । ( 'जैसे—'रामायण, कथासरित्सागर, बृहत्कथामञ्जरी, .....') ॥

२ प्रवहिका ( + प्रवहिका, प्रवहिका, प्रवहिका, प्रवहिका, विपादिका ),<sup>२</sup> प्रहेलिका ( २ स्त्री ), 'पहेली, बुझावला' के २ नाम हैं । ( संस्कृतकी पहेली जैसे— 'पानीयं पातुमिच्छामि स्वतः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि न दास्यसि पिबाम्यहम्' । इस श्लोकमें दोनों 'दास्यसि' पदको दानार्थक मानकर 'दोगी' यह अर्थ करनेपर सन्देह होता है और एक 'दास्यसि' पदको उक्तार्थक तथा दूसरे 'दास्यसि' पदका 'दासी हो' यह अर्थ माननेपर सन्देह दूर हो जाता है । हिन्दीकी पहेली जैसे—'सारी लुगड़ी जल गई, जला न एको तागा । घरके लड़के फँस गये, घर खिड़कीसे आगा' ॥ इस पद्यमें 'समूची लुगड़ी अर्थात् कन्धाके जकने पर एक तागाका भी नहीं जलना, चैतन्य गृहवासियोंका फँस जाना और अचैतन्य घरका भाग जाना, ये सब सन्देह उत्पन्न होते हैं; किन्तु 'जल गया' इस शब्दका 'जलमें गया' ऐसा अर्थ करनेपर एक तागाका भी नहीं जलना असन्देहार्थक है, तथा जालमें चैतन्य मछलियोंका फँस जाना और जालके छिद्ररूपी खिड़कीसे पानरूपी मछलियोंके घरका भाग जाना ऐसा अर्थ करनेसे कोई सन्देह नहीं होता है, इसी तरह प्रत्येक भाषामें 'पहेली होती है' ) ॥

अष्टादश पुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते । पाञ्च ब्राह्मं वैष्णवञ्च शैवं भागवतं तथा ॥१॥  
तथाऽन्यत्रारदोयञ्च मार्कण्डेयञ्च सप्तमम् आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम् ॥२॥  
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लेङ्गमेकादशं तथा । वाराहं द्वादशञ्चैव स्कान्दश्चात्र त्रयोदशम् ॥३॥  
चतुर्दशं वामनकं कोर्मि पञ्चदशं स्मृतम् । मात्स्यञ्च गार्ग्यञ्चैव ब्रह्माण्डञ्च ततः परम् ॥४॥ इति ॥

प्रत्येकपुराणस्य श्लोकसङ्ख्याविषयादिज्ञानार्थं विष्णुपुराणस्य त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायो द्रष्टव्य इति ।

१. तदुक्तम्—'व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनम् ।

यत्र बाह्यार्थसम्बद्धं कथ्यते सा प्रहेलिका ॥ १ ॥' इति ॥

१ स्मृतिस्तु धर्मसंहिता २ समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

३ 'समस्या तु समासार्था ४ किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

५ वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादद्वाह्यः ॥ ७ ॥

१ स्मृतिः ( स्त्री ), 'स्मृति शास्त्र' अर्थात् 'मनु आदिके बनाये हुए धर्म-ग्रन्थ' का १ नाम है । ( मनुस्मृति आदि २० या इससे भी अधिक स्मृतियाँ हैं ) ॥

२ समाहृतिः ( स्त्री ) संग्रह ( पु ), 'संग्रह ग्रन्थ' के २ नाम हैं । ( 'जैसे—'हितोपदेश, पञ्चतन्त्र,.....' ) ॥

३ समस्या, समासार्था ( + असमासार्था' । २ स्त्री ), 'समस्या' के २ नाम हैं । ( 'पद्यपूर्तिके लिये पद्यका थोड़ा अंश जो कहा जाय, उसे 'समस्या' कहते हैं, जैसे—'टटं टटं टटं टटं टटं' यह थोड़ा पद्यांश कहा गया है, इसे पूरा करनेपर 'राज्याभिषेके मद्रविह्वलाया हस्तच्युतो हेमघटो युवत्याः । सोपानमार्गेषु करोति शब्दं टटं टटं टटं टटं टटं' यह पद्य होता है । यह भी प्रत्येक भाषामें होती है' ) ॥

४ किंवदन्ती, जनश्रुतिः ( २ स्त्री ), लोगों में बातचीतके चलने, दौरा हो जाने, लोकनिन्दा या लोकोक्ति' के २ नाम हैं ॥

५ वार्ता, प्रवृत्तिः ( २ स्त्री ), वृत्तान्तः, उदन्तः ( २ पु ), 'बात' के ४ नाम हैं ॥

६ आह्वयः ( पु ), आख्या, आह्वा ( २ स्त्री ), अभिधानम्, नामधेयम्,

१. 'समस्या त्वसमासार्था.....' इति पाठान्तरम् ॥

२. मनुयर्मो वसिष्ठोऽत्रिर्दक्षो विष्णुस्तथाऽङ्गिराः ।

उशना वाक्पतिर्व्यास आपस्तम्बोऽथ गौतमः ॥ १ ॥

कात्यायनो नारदश्च याज्ञवल्क्यः पराशरः ।

संवत्संचैव शङ्खश्च हारीतो लिखितस्तथा ॥ २ ॥ इति ॥

पता विंशतिराख्याता धर्मशास्त्रप्रवर्त्तकाः ।

कचित् 'नारदश्च' इत्यस्य स्थाने 'शातातपश्च' इति पाठः । 'मन्वादिस्मृतयो यास्तु षट्त्रिंशत्परिकीर्त्तिताः' इति भविष्यपुराणे गुहं प्रति विष्णुक्तेस्तासां षट्त्रिंशत्सङ्ख्या वा बोध्या ॥

३. 'विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्रभाष्ययोः ।

निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्मुखाः ॥ १ ॥ इति ॥

आख्याह्ने अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

- १ हूतिराकारणाद्धानं २ संहृतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥
- ३ विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
- ५ उपोद्घात उदाहारः ६ शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
- ७ प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च ८ प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
- ९ मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानं १० मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥

नाम ( = नामन् । ३ न । + संज्ञा, स्त्री ), 'नाम' के ६ नाम हैं ॥

१ हूतिः, आकारणा ( २ स्त्री ), आद्धानम् ( न ), 'बुलाने या पुकारने' के ३ नाम हैं ।

२ संहृतिः ( स्त्री ), 'इकट्ठा होकर बहुत लोगोंके पुकारने' का १ नाम है ॥

३ विवादः, व्यवहारः ( २ पु ), 'विवाद या झगड़ा' अर्थात् 'लेन, देन इत्यादि किसी विरुद्ध विषयोंको लेकर परस्पर विरुद्ध भाषण करने या मुकदमे-बाजी' के २ नाम हैं ॥

४ उपन्यासः ( पु ), वाङ्मुखम् ( न ), 'बातको प्रारम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ उपोद्घातः, उदाहारः ( २ पु ), 'कही जानेवाली बातकी सिद्धिके लिये भूमिका बाँधने, या दृष्टान्त आदि देने' के २ नाम हैं ॥

६ शपनम् ( न ), शपथः ( पु ) 'शपथ कसम' के २ नाम हैं ॥

७ प्रश्नः, अनुयोगः, ( २ पु ), पृच्छा ( स्त्री ), 'प्रश्न' के २ नाम हैं ॥

८ प्रतिवाक्यम्, उत्तरम् ( २ न ), 'उत्तर, जबाब' के २ नाम हैं ॥

९ मिथ्याभियोगः ( पु ), अभ्याख्यानम् ( न ), 'किसीपर झूठा आक्षेप करने' के २ नाम हैं ॥ ( जैसे—'कुछ नहीं लिये हुए किसी आदमीपर तुमने अमुक चीज ली है, इत्यादि आक्षेप करना, .....' ) ॥

१० मिथ्याभिशंसनम् ( न ), अभिशापः ( पु । + शापः ), 'किसीके ऊपर पापविषयक झूठा सन्देश करने' के २ नाम हैं । ( 'जैसे—किसीने परदारागमन या मद्यपान इत्यादि नहीं किया है ; किन्तु उसपर परदारागमन या मद्यपान आदि करनेका सन्देश करना, .....' ) ॥

- अभिशापः १ प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।  
 २ 'यशः कीर्तिः समज्ञा च ३ स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिः ॥ ११ ॥  
 ४ आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।  
 ७ काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥  
 ७ अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।  
 उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥  
 ८ पारुष्यमतिवादः स्याद्—

१ प्रणादः ( पु ), 'गुणके प्रेमसे कहे हुए शब्द' अर्थात् 'वाहवाही या शाबासी देने' का २ नाम है ॥

२ यशः ( = यशस्, न ), कीर्तिः, समज्ञा ( + समाज्ञा, समज्या । ३ स्त्री ), 'कीर्ति यश' के ३ नाम हैं । ( जीवित व्यक्तिकी ख्यातिकी 'यश' तथा मृत व्यक्तिकी ख्यातिकी 'कीर्ति' कहते हैं, ऐसा मनुस्मृतिके टीकाकार कुल्लुक भट्टने कहा है" ॥

३ स्तवः ( पु ), स्तोत्रम् ( न ), नुतिः, स्तुतिः ( + प्रशंसा । २ स्त्री ), 'स्तुति' के ४ नाम हैं ॥

४ आम्रेडितम् ( न ), 'एक ही शब्दको दो या तीन बार कहने' का १ नाम है । ( जैसे—साँप साँप दौड़ो दौड़ो,.....' ) ॥

५ उच्चैर्घुष्टम् ( न ), घोषणा ( स्त्री ), ऊँचे स्वरसे घोषणा कहने' के २ नाम हैं ।

६ काकुः ( स्त्री ), 'शोक डर या काम इत्यादिके कारण विकृत ध्वनिसे बोलने' का १ नाम है । 'जैसे—उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते'.....' अर्थात् किसी बुराई करनेवालेसे—'आपने हमारा बड़ा उपकार किया' इत्यादि वचन कहना.....' ) ॥

७ अवर्णः, आक्षेपः, निर्वादः, परीवादः ( + परिवादः ), अपवादः ( + अववादः ), उपक्रोशः ( ६ पु ), जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा ( ३ स्त्री ), गर्हणम् ( न ), 'निन्दा, शिकायत' के १० नाम हैं ॥

८ पारुष्यम् ( न ), अतिवादः ( पु ), 'कटु वचन या कड़ाईसे बोलने' के २ नाम हैं ॥

१. 'यशः कीर्तिः समज्या च.....' इति पाठान्तरम् ।

२. पतदर्थं मनुस्मृतेर्मन्वर्थमुक्तावली ( ८।१२७ ) टीका द्रष्टव्या ।

३. तस्य परमाग्नेडितम् ( पा० सू० ८।१।२ ) इत्यनेनेत्यवधेयम् ॥

—१ भर्त्सनं त्वपकारगीः ।

- २ यः सनिन्द उपात्मभस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥  
 ३ तत्र त्वाक्षारणा यः स्वादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।  
 ४ स्यादाभाषणमालापः ५ प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥  
 ६ अनुलापो मुहुर्भाषा ७ विलापः परिदेवनम् ।  
 ८ विप्रलापो विरोधोक्तिः ९ संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥  
 १० सुप्रलापः सुवचनं ११ मपलापस्तु निहवः ।

१ भर्त्सनम् ( न ), अपकारगीः ( = अपकारगिर् , स्त्री ), 'फटकारने' के २ नाम हैं ॥

२ परिभाषणम् ( न ), 'शिकायत करते हुए दोषको कहने' का १ नाम है ॥

३ आक्षारणा ( स्त्री । + न ), 'परपुरुषगमन या परस्त्री-गमन-विषयक दोष लगाने' का १ नाम है ॥

४ आभाषणम् ( न ), आलापः ( पु ), 'प्रेमसे बात करने' के २ नाम हैं ॥

५ प्रलापः ( पु ), 'प्रलाप करने, बड़बड़ाने' का १ नाम है ॥

६ अनुलापः ( पु ), मुहुर्भाषा ( स्त्री ), 'एक ही विषयको बार-बार कहने' के ३ नाम हैं ॥

७ विलापः ( पु । + विलपनम्, न ), परिदेवनम् ( न । + स्त्री ), रोते हुए बोलने' के ३ नाम हैं ॥

८ विप्रलापः ( पु ), विरोधोक्तिः ( स्त्री ), 'परस्पर विरुद्ध बात कहने' के २ नाम हैं ॥

९ संलापः ( पु ), 'परस्परमें बात करने' का १ नाम है । ( 'आलाप' एक आदमी भी कर सकता है; किन्तु 'संलाप' एक आदमी नहीं कर सकता, यही आलाप और संलापमें भेद है' ) ॥

१० सुप्रलापः ( पु ), सुवचनम् ( न ), 'मीठे वचन' के २ नाम हैं ॥

११ अपलापः, निहवः ( २ पु ), 'असक्त विषयको छिपानेके लिये सुकर जाने' के २ नाम हैं ॥

- १ 'चोद्यमाक्षेपाभियोगौ २ शापाक्रोशौ दुरेषणा (४६)
- ३ अस्त्री चाटु चटु ४ श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकृत्यनम्' (४७)
- ५ सन्देशवाग्वाचिकं स्याद्द्व्याग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
- ७ 'रुषती वागकल्याणी ८ स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
- ९ अत्यर्थमधुरं सान्त्वं—

१ [ चोद्यम् ( न ), आक्षेपः, अभियोगः ( २ पु ), 'आक्षेप' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ शापः, आक्रोशः ( २ पु ), दुरेषणा ( स्त्री ), 'शाप देने' के ३ नाम हैं ] ॥

३ [ चाटु, चटु ( २ पु न ), 'मुंहदेखी बात कहने, चापलूसी करने' के २ नाम हैं ] ॥

४ [ श्लाघा ( स्त्री ) 'प्रेमसे झूठी स्तुति करने' का १ नाम है ] ॥

५ सन्देशवाक् ( = सन्देशवाच्, स्त्री ), वाचिकम् ( न ) 'संदेश कहने' के २ नाम हैं ॥

६ यहां से '.....त्रिषु तद्वति ( १।६।२२ ) तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ रुषती ( त्रि । + रुशती, उषती मु० म० । यह 'रुषती' स्त्रीलिङ्गका रूप है, पुंलिङ्गमें 'रुषन्' और नपुंसकलिङ्गमें 'रुषत्' रूप होता है । इसी तरह आगे कहे जानेवाले शब्दोंके भी तीनों लिङ्गमें भिन्न २ रूप होंगे, उन्हें स्वयं समझ लेना चाहिये ), 'अशुभ वचन' का १ नाम है ॥

८ कल्या ( त्रि । + काल्या ), 'शुभ वचन' का १ नाम है ॥

९ सान्त्वंम् ( त्रि ), 'अत्यन्त मधुर वचन' का १ नाम है ॥

१. 'चोद्यमाक्षेप.....विकृत्यनम्' अयमंशः स्त्री० स्था० टीकायामुपलभ्यते ॥

२. 'उषती वागकल्याणी.....' इति मुकुटसम्मतं पाठान्तरम् । अत्र 'रुषती' हिंसे-त्यर्थः, न तां वदेदुषतीं ( गीं ) पापलोक्याम्, अत एव 'उषती'ति असम्भ्यः पाठः इति क्षी० स्वा० । 'मुकुटस्तु 'उषती'ति पाठे 'उष दाहे' इत्यस्य शत्रन्तस्य 'उषती' इति रूपमाह, तत्र । तस्माच्छपि 'कर्तरि शप्' ( पा० सू० ३।१।६८ ) 'पुगन्तलघु—( पा० सू० ७।१।८६ ) इति गुणस्य 'शप्स्यनोर्नित्यम्' ( पा० सू० ७।१।८१ ) इति नुमश्च प्रसङ्गात् इति भा० दी० । तन्नेति भा० दी० प्रतीकमादाय 'पुणस्य संज्ञापूर्वकत्वेन नुम आगमशासनत्वेन तेनैव वारितत्वेनाकिञ्चित्करमेतत् । पीयूषव्याख्यायामपि 'उषती' इति पाठं प्रदर्श्य 'रुशती' इत्येके-इत्युक्तम् इति शि० द० इत्युक्तम् ॥



—१ सङ्गतं हृदयङ्गमम् ॥ १८ ॥

२ निष्ठुरं परुषं ३ ग्राम्यमश्लीलं ४ सूनुतं प्रिये ।

सत्येऽप्यथ सङ्कुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

६ लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं ७ निरस्तं त्वरितोदितम् ।

८ 'अम्बूकृतं सनिष्ठीवश्मव्यदं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

१० अनक्षरमवाच्यं स्याद्दाहतं तु मृषार्थकम् ।

१ सङ्गतम्, हृदयङ्गमम् (२ त्रि), 'संगतियुक्त वचन, मौकेकी बात' के २ नाम हैं ॥

२ निष्ठुरम्, परुषम् (२ त्रि), 'निष्ठुर वचन' के २ नाम हैं ॥

३ ग्राम्यम्, अश्लीलम् (२ त्रि), 'भाँड़ आदिके कहे हुए सभ्यता-विरुद्ध वचन' के २ नाम हैं ॥

४ सूनुतम् (त्रि), 'सत्य और प्रिय वचन' का १ नाम है ॥

५ सङ्कुलम्, विकष्टम्, परस्परपराहतम् (भा० दी० म० । ३ त्रि), 'विरुद्धार्थक या बेमौकेकी बात' के ३ नाम हैं ॥

६ लुप्तवर्णपदम्, ग्रस्तम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'रोगी, बालक या असमर्थके कहे हुए अधूरे वचन' के २ नाम हैं ।

७ निरस्तम्, त्वरितोदितम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'शीघ्रतासे कहे हुए वचन' के २ नाम हैं ॥

८ अम्बूकृतम्, सनिष्ठीवम् (भा० दी० म० सनिष्ठेवम् । २ त्रि), 'थूकका छोट्टा निकलते हुए कहे गये वचन' के २ नाम हैं ॥

९ अव्यदम् (+ अवध्यम्), अनर्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अनर्थक वचन' अर्थात् 'बिना मतलबकी बात' के २ नाम हैं ॥

१० अनक्षरम्, अवाच्यम् (२ त्रि), 'नहीं कहने योग्य वचन' के २ नाम हैं ॥

११ दाहतम्, मृषार्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अत्यन्त झूठे वचन' के २ नाम हैं । (जैसे-बन्ध्याका वह लड़का, आकाशपुष्पका मुकुट पहने हुए, मृगतृष्णाके जलमें स्नानकर, कच्छपीदुग्धको पीनेके उपरान्त, शशशृङ्गके बाजाको

१. 'अम्बूकृतं सनिष्ठेवमवध्यं स्यादनर्थकम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ 'सोऽलुण्ठनं तु सोऽप्रासं २ भणितं रतिकूजितम् (४८)  
 ३ आद्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् (४९)  
 ४ अथ ग्लिष्टमविस्पष्टं ५ वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥  
 ६ सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ।  
 ७ शब्दे निनादनिनद्ध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥  
 स्वाननिर्घोषनिर्हादनादतिस्वानानिध्वनाः ।  
 आरवावसंरावविरावा ८ अथ मर्मरः ॥ २३ ॥  
 स्वनिते वस्त्रपर्णानां ९ भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

बजाकर अष्टम स्वरसे गान किया तो, उसे परार्द्धसे अधिक रूपया पारितोषिक मिला (.....) ॥

- १ [ सोऽलुण्ठनम्, सोऽप्रासम् ( २ त्रि ), 'हँसीकी बात'के २ नाम हैं ] ॥  
 २ [ भणितम् ( + मणितम् ), रतिकूजितम् ( २ त्रि ), 'रति-कालमें किये हुए शब्द'के २ नाम हैं ] ॥  
 ३ [ आद्यम्, हृद्यम्, (मनोहारि = मनोहारिन्), विस्पष्टम्, प्रकटोदितम् ( ५ त्रि ), 'स्पष्ट वचन' के ५ नाम हैं । ( म० से 'आद्यम्' आदि ३ नाम 'मनोहर वचन' के हैं और शेष 'विस्पष्टम्' आदि २ नाम उक्तार्थक हैं ) ] ॥  
 ४ ग्लिष्टम्, अविस्पष्टम् ( २ त्रि ) 'अस्पष्ट वचन' के २ नाम हैं ॥  
 ५ वितथम्, अनृतम् ( २ त्रि ), झूठे वचन' के २ नाम हैं ॥  
 ६ सत्यम्, तथ्यम्, ऋतम्, सम्यक् ( = सम्यक्च । ४ त्रि ), 'सत्य वचन' के ४ नाम हैं । ये चार शब्द द्रव्यवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे-सत्यः पुरुषः, सत्या नारी, सत्यं कुलम्, .....' ) ॥  
 ७ शब्दः, निनादः, निचदः, ध्वनिः, ध्वानः, रवः, स्वनः, स्वानः, निर्घोषः, निर्हादः, नादः, निस्वानः, निस्वनः, आरवः, आरावः, संरावः, विरावः ( १७ पु ), 'शब्द' के १७ नाम हैं ॥  
 ८ मर्मरः ( पु ), 'कपड़े या सूखे पत्तोंके शब्द' का १ नाम है ॥  
 ९ शिञ्जितम् ( न । + स्वामी म० 'शिञ्जा' ), 'आभूषणके शब्द'का १ नाम है ॥

१. 'सोऽलुण्ठनं.....प्रकटोदितम्' अवमंशः क्षी० स्वा० टीकायामुपलभ्यते । 'सोऽलुण्ठनं.....कूजितम्' इत्येतावन्मात्रोऽशौ भा० दी० व्याख्यातम् ॥

१ निक्राणो निक्रणः क्राणः कणः कगनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणायाः कणिते २ प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।

३ कोलाहलः कलकलः स्तिरश्वां वाशितं कृतम् ॥ २५ ॥

५ स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने ६ गीतं गानमिमे समे ।

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

## ७. अथ नाट्यवर्गः ।

७ निषादर्वभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

१ निक्राणः, निक्रणः, क्राणः, कणः ( ४ पु ), कगनम् ( न ), 'वीणा आदिके शब्द' के ५ नाम हैं ॥

२ इन 'निक्राण' आदि शब्दोंके 'प्र' आदि ( आदिसे 'उर, सु' इत्यादिका संग्रह है ) उपसर्ग जोड़नेसे बने हुए 'प्रकाणः' प्रकणः' आदि ( आदि शब्दसे 'प्रकगनम्, उपकणः, उपक्राणः, उपकगनम्.....' का संग्रह है ) शब्द भी उसी अर्थमें होते हैं । ( 'मा० दी० मतमें 'शिक्षितम्.....' आदि ६ नाम 'भूषणादिके शब्द' के हैं, 'प्रकाण' आदि 'वीणादिके शब्द' के हैं' ) ॥

३ कोलाहलः, कलकलः ( २ पु० ), 'कोलाहल, शोरगुल' के २ नाम हैं ॥

४ वाशितम् ( + वासितम् । न ), 'पक्षियोंके चहचहाने' अर्थात् शब्द करने'का १ नाम है ॥

५ प्रतिश्रुत् ( स्त्री ), प्रतिध्वानः ( + प्रतिध्वनिः । पु ), प्रतिध्वनित शब्द' के २ नाम हैं । ( 'ऐसा शब्द पहाड़ आदिकी गुफामें या मन्दिरोंमें होता है' ) ॥

६ गीतम्, गानम् ( २ न ), 'गाना' के २ नाम हैं ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

## ७. अथ नाट्यवर्गः ॥

७ निषादः, ऋषभः, गान्धारः, <sup>२</sup>पड्जः, <sup>३</sup>मध्यमः, धैवतः,

१. चिन्त्यमेतत्, 'कणो वीणायाञ्च' ( पा० सू० ३।३।६५ ) इति 'च'कारस्य, 'नौ अनुपसर्गो' इत्यनुकर्षणार्थकत्वात् क्षी० स्वा० महे० रा० कु० दी० कृतपूर्वव्याख्यानस्यैवौचित्यात् ॥

२ 'न'सां कण्ठमुरस्तालुं जिह्वां दन्तांश्च संस्पृजन् ।

पड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्पड्ज इति स्मृतः ॥ १ ॥ इति ॥

३ 'तद्वदेवोत्थितो वायुररः कण्ठसमाहृतः ।

नाभिं प्राप्नो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः' ॥ २ ॥ इति ॥

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

१ काकली तु कले सूक्ष्मे २ ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलौ ३ मन्द्रस्तु गम्भीरे ४ तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

५ 'नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः (५०)

स मन्द्रः कण्ठवध्यस्यस्तारः शिरसि गीयते' (५१)

६ समन्वितलयस्त्वेकतालो ७ वीणा तु बल्लका ।

पञ्चमः ( ७ पु ), ये ७ 'वीणा आदिके तार तथा प्राणियोंके कण्ठसे निकले हुए स्वरोंके भेद' हैं ।

१ काकली ( + काकलिः । स्त्री ), 'मधुर ध्वनि' का १ नाम है ॥

२ कलः ( त्रि ), 'अस्पष्ट मधुर ध्वनि' का १ नाम है ॥

३ मन्द्रः ( + मद्रः । त्रि ), 'गम्भीर ध्वनि' का १ नाम है ॥

४ तारः ( त्रि ), 'अत्यन्त ऊँचे शब्द' का १ नाम है ॥

५ [ मनुष्योंके हृदयमें शब्द प्रकाशकी ध्वनियाँ रहती हैं, उनमें कण्ठके बीच-बाजोंको 'मन्द्रः', (त्रि) 'मन्द्र' और शिरके बीच-बजनेवालोंको 'तारः' (त्रि), 'तार' कहते हैं ] ॥

६ एकतालः ( पु ), 'गति और आजाओंके लयका एक स्वरमें मिलाने' का १ नाम है ॥

७ वीणा, बल्लका, विपञ्ची ( ३ स्त्री ), 'वीणा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'नृणामुरसि' ..... 'गीयते' इत्यंशः केवलं मद्देष्टव्याख्यायते पुस्तके समुक्तमर्थे, किन्तु सर्वैरप्यव्याख्यातोऽयमिरयवधेयम् ॥

२. 'वायुः समुद्रतो नाभेरुद्वत्कण्ठमूर्द्धसु ।

विचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ प्रसङ्गात्कुतः २ स्थानात्कस्य २ स्वरस्याविर्भाव इत्यत्र नारदाक्तिः प्रदर्श्यते—

'षड्जं रीति मयूरस्तु गात्रो नर्दन्ति चर्षभम् ।

अजाविकौ च गान्धारं कौञ्चो वदति मध्यमम् ॥ १ ॥

पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रीति पञ्चमम् ।

अथस्तु धैवतं रीति निषादं रीति कुजराः' ॥ २ ॥ इति ॥

पुष्पसाधारणे काले वसन्तर्त्तौ इत्यर्थः ॥

३. कस्य २ वीणायाः कानि २ नामानित्यत्र हेमोक्तं प्रदर्श्यते—

- विणञ्ची १ सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥  
 २ ततं वीणादिकं वाद्यश्मानदं मुरजादिकम् ।  
 ४ वंशादिकं तु सुषिरं ५ कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥  
 ६ चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यमानकम् ।

१ परिवादिनी ( स्त्री ), 'सितार' अर्थात् 'सात तारवाली वीणा' का १ नाम है ॥

२ ततम् ( न ), 'वीणा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ( 'आदि पदसे 'सैरन्ध्री, रावणहस्त, एकतारा, सारंगी, इसराज, बेला, तानपूरा,.....' का संग्रह है' ) ॥

३ आनन्दम् ( + अवनन्दम् । न ), 'जो चमड़ेसे मढ़े गये हों, उन मुरज आदि बाजाओं' का १ नाम है । ( 'जैसे—मुरज, पटह, ढोल, तबला,.....' ) ॥

४ सुषिरम् ( + शुषिरम् । न ), 'वंशी आदि बाजाओं' का १ नाम है । ( 'आदि पदसे 'शङ्ख, मुरली; तुतुही, सींगा, वेन.....' का संग्रह है' ) ॥

५ घनम् ( न ), 'घड़ी, घण्टा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ( 'आदि पदसे 'घण्टी, झाल, जोड़ी, मंजीरा,....' का संग्रह है' ) ॥

६ वादित्रम्, आतोद्यम् ( २ न ), पूर्वोक्त 'तत १, आनन्द २, सुषिर ३ और घन ४' इन 'चार प्रकारके बाजाओं' के २ नाम हैं ॥

'शिवस्य वीणा नालम्बी सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥

नारदस्याथ महती गणानान्तु प्रभावती ।

विश्वामसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।

चाण्डालानां तु कण्डोलवीणा चाण्डालिकाऽपि सा' ॥ इति ॥

अ० चि० म० 'हैम' २ । २०२-२०४ ॥

१. वंशादिकं तु सुषिरं..... इति भा० दी० प्राच्यसम्मतं पाठान्तरम्, क्षी० स्वा० महे० सम्मतं तु मूलोक्तमित्यवधेयम् ॥

२. तथा च भरतः—

'ततत्रैवावनदं च घनं सुषिरमेव च । चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोषं लक्षणाश्रितम्' ॥१॥ इति ॥

- १ मृदङ्गा मुरजा २ भेदास्त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकाख्यः ॥ ५ ॥
- ३ स्याद्यशःपटहो ढक्का ४ भेरी खी दुन्दुभिः पुमान् ।
- ५ आनकः पटहोऽस्त्री स्याद्वकीणो वीणादिवादयम् ॥ ६ ॥
- ७ वीणादण्डः प्रवालः स्याद्वककुभस्तु प्रसेवकः ।
- ९ कोलम्बकस्तु कायोऽस्या १० उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

१ मृदङ्गः, मुरजा: ( २ पु ) 'मृदङ्ग' के नाम हैं ।

२ अङ्कयः, आलिङ्गयः, ऊर्ध्वकः ( ३ पु ) ये तीन 'मृदङ्गके भेद' हैं ।  
( हरीतकीके समान आकारवाला 'अङ्कय', यवके राधयामाके समान आकार  
वाला 'ऊर्ध्वक' और गोपुच्छके समान आकारवाला 'आलिङ्गय' होता है ) ॥

३ यशःपटहः ( पु ), ढक्का ( खी ) 'नगाड़ा' के दो नाम हैं ॥

४ भेरी ( + भेरिः, भम्भा । खी ), दुन्दुभिः ( पु । आनकः, दुन्दुभिः ।  
२ पु ) 'दुन्दुभिः' के २ नाम हैं ॥

५ आनकः, पटहः, ( २ पु ), 'पटह' के २ नाम हैं ॥

६ कोणः ( पु ), 'वीणा, बेला, सारङ्गी या इसराज आदि बजानेके  
लिये काठकी बनाई हुई धनुही' का १ नाम है ॥

७ वीणादण्डः ( भा० दी० म० ), प्रवालः ( २ पु ) 'वीणादण्ड' के  
२ नाम हैं ॥

८ ककुभः, प्रसेवकः ( २ पु ) 'वीणाके नीचेवाले, चमड़ा आदिसे  
ढके हुए भाण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ कोलम्बकः ( पु ), 'वीणाका ढाँचा' अर्थात् 'ताररहित वीणाके  
दण्डादि समुदाय' का १ नाम है ॥

१० उपनाहः ( पु ), निबन्धनम्, ( न । भा० दी० म० ), जहाँ वीणा-  
का तार बाँधा जाता है, उस जगह' के २ नाम हैं ॥

१. '.....मेर्यामानकदुन्दुभी' इति भा० दी० सम्मतः पाठः । तत्र मेर्यामानकदुन्दुभि-  
शब्दान् पृथक् २ व्याख्याय 'द्वे मेर्याः' इति तदुक्तिश्चिन्तया 'त्रीणि मेर्याः' इत्युक्तेरौचित्यात् ॥

२. १. ४. तदुक्तम्—'हरीतक्याकृतिस्रक्कथी यवमध्यस्तयोर्ध्वकः ।

आलिङ्गयश्चैव गोपुच्छसमानः परिकीर्तितः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ।  
 मर्दलः पणवोऽन्ये च २ नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥  
 ३ विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वं ४ भोगो ५ घनं क्रमात् ।  
 ६ तालः कालक्रियामानं ७ लयः साम्यं ८ मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥  
 ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।  
 ९ तौर्यन्त्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

१ डमरुः मड्डुः, डिण्डिमः, झर्झराः, मर्दलः, पणवः ( ६ पु ), भादि ('भादि पदसे 'गोमुखः, हुडुकः'.....' का संग्रह है' ) 'डमरु, मड्डु अर्थात् जलतरङ्ग, डुगडुगी, झांझ, मर्दल, ढोल आदि बाजाओं' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

२ नर्तकी, लासिका ( २ स्त्री । धस्तुतः ये दोनों शब्द मिलिङ्ग हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्गमें रूपप्रदर्शन के लिये स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, पु० में 'नर्तकः'लासकः' न० में 'नर्तकम् , लासकम्' ऐसे रूप होते हैं ), 'नाचने वाले' के २ नाम हैं ॥ ( 'जैसे—'कथक, छोकड़ा, वेश्या.....' ) ॥

३ तत्त्वम् ( न ), 'विलम्बसे नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

४ भोगः ( पु ) 'जल्दी २ नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

५ घनम् ( न ), 'सामान्य समय ( मध्यम गति ) से नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

६ तालः ( पु ), 'ताल' अर्थात् 'जिसमें समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है, उसका १ नाम है ॥

७ लयः ( पु ), 'लय' अर्थात् 'जिसमें गाने बजाने और हाथ, झू आदि चलाकर भाव दिखानेके लिये समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है उसका १ नाम है ॥

८ ताण्डवम् ( पु न ), नटनम्, नाट्यम्, लास्यम्, नृत्यम् ( + नृत्तम् ), नर्तनम् ( ५ न ), 'नाचने' के ६ नाम हैं ॥

९ तौर्यन्त्रिकम्, नाट्यम् ( २ न ), 'नाचना, गाना और बजाना; इन तीनोंके समुदाय' के २ नाम हैं ॥

- १ भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।  
 स्त्रीवेशधारी पुरुषो २ नाट्योक्तौ ३ गणिकाऽञ्जुका ॥ ११ ॥  
 ४ भगिनीपतिरावुक्तो ५ भावो विद्वान् ६ आवुकः ।  
 जनको ७ युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥  
 ८ राजा भट्टारको देव ९ स्तत्सुता भर्तृदारिका ।  
 १० देवी कृताभिषेकाया ११ मितरास्तु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

१ भ्रुकुंसः, भ्रुकुंसः, भ्रुकुंसः ( + भ्रुकुंसः । ३ पु ), स्त्रीका रूप बनाकर नाचनेवाले पुरुष' के ३ नाम हैं ॥

२ 'नाट्योक्तौ' इस पदका 'अङ्गद्वयः' ( १।७।१६ ) के पहलेतक अधिकार होनेसे आगे वहे जानेवाले नामोंका प्रयोग नाट्यमें ही होगा, अन्यत्र नहीं ॥

३ गणिका, अञ्जुका ( २ स्त्री ) 'वेश्या' के २ नाम हैं ॥

४ आवुक्तः ( + आवुक्तः । पु ), 'बहनोई' अर्थात् 'बहनके पति' का १ नाम है ॥

५ भावः ( पु ), 'विद्वान्' का १ नाम है ॥

६ आवुकः ( पु ), 'पिता' का १ नाम है ॥

७ युवराजः, कुमारः ( २ पु । म० कुमारः, भर्तृदारकः ) 'युवराज' के १ नाम हैं ॥

८ भट्टारकः, देवः ( २ पु ), 'राजा' के २ नाम हैं ॥

९ भर्तृदारिका ( स्त्री ), 'राजकुमारी' का १ नाम है ॥

१० देवी ( स्त्री ), 'पटरानी' का १ नाम है ॥

११ 'भट्टिनी (स्त्री), 'राजाकी दूसरी सामान्य स्त्रियों' का १ नाम है ॥

<sup>१</sup>अयमत्र प्रयोगक्रमः—

'गणिकानुचरैरञ्जुकेति नाम्ना नृपेण सा । युवराजस्तु सर्वेण कुमारो भर्तृदारकः ॥ १ ॥

भट्टारको वा देवो वा वाच्यो भृत्यजेन सः । ब्राह्मणेन तु नान्नैव राजन्नित्यृषिभिः स च ॥ २ ॥

वयस्य राजन्निति वा विदूषक इमं वदेत् । अभिषिक्ता तु राजाऽसौ देवीत्यन्या तु भोगिनी ॥ ३ ॥

भट्टिनीत्यपरैरन्या नीचैर्गौरवामिनीति सा' ॥ इति ॥



- १ अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ २ 'राजशालस्तु राष्ट्रियः ।  
 ३ अम्बा मातापुत्र बाला स्याद्वासुधार्यस्तु मारिषः ॥ २४ ॥  
 ६ अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा ७ निष्ठा निर्वहणे समे ।

१ अब्रह्मण्यम् ( न ), 'सर्वथा अवध्य ब्राह्मण इत्यादिको मारनेके दोषको कहन' का १ नाम है ॥

२ राष्ट्रियः ( पु ), 'राजाके शाले' का १ नाम है । ( 'इसे प्रायः नगरके कोतवालीका अधिकार मिलता है' ) ॥

३ अम्बा, माता ( = मातृ । २ स्त्री ), 'माता' के २ नाम हैं ।  
 ( 'नाट्योक्तौ' इस शब्दका अधिकार प्रायिक या विधि और नियम<sup>१</sup> है; अत एव नाटकस्थलसे सिद्ध स्थलमें भी 'अम्बा, माता' इन शब्दोंका प्रयोग होता है' ॥ )

४ बाला, वासुः ( २ स्त्री ) 'कुमारी' के २ नाम हैं ॥

५ आर्यः, मारिषः ( + मर्षकः । २ ), 'अपनेसे श्रेष्ठ या सूत्र-धारके पार्श्ववर्त्ती' के २ नाम हैं ॥

६ अत्तिका ( + अन्तिका । स्त्री ), 'बड़ी बहन' का १ नाम है ॥

७ निष्ठा ( स्त्री )<sup>२</sup> निर्वहणम् ( न ), 'नाटकके 'निर्वहण' नामक पांचवे सन्धि-विशेष या आरम्भ किये हुये विषयको पूरा करने' के २ नाम हैं ॥

<sup>१</sup> 'राजशालस्तु' इति महे० सम्मतः पाठः ।

<sup>२</sup> नाट्यातिरिक्तस्थलेऽपि 'अम्बा' शब्दस्य, नाट्यस्थलेऽपि 'मातृ' शब्दस्य प्रयोगोपलब्धेर्नाट्यस्थलेऽम्बाशब्दस्य प्रचुरप्रयोगात्प्राधिकत्वम्, 'मट्टिन्यज्जुकात्तिके'त्यादीनान्तु नियमः ।

अत एव—

'अथैषा रूपकादीनामुक्तीर्वक्ष्याम्यशेषतः । कासुचिन्नियमस्तत्र विधिरेव तु कासुचित्' ॥ १ ॥

इति शब्दान्वोक्तयोर्विधिनियमयोः सङ्गतिरित्यवधेयम् ॥

<sup>३</sup> तद्वक्तं साहित्यदर्पणे—

'मुखं १ प्रतिमुखं २ गर्भो ३ विमर्शः ४ उपसंहृतिः ५ ।

इति पञ्चास्य भेदाः स्युः क्रमात्' ।

सा० द० ६ । ७५-७६ ॥

उपसंहृतिर्निर्वहणमित्यर्थः । एतल्लक्षणञ्चोक्तं सुपाकरेण—

'मुखसंख्यादयो यत्र विकीर्णा बीजसंयुताः । महाप्रयोजनं यान्ति तन्निर्वहणमुच्यते' ॥ १ ॥ इति

- १ हण्डे २ हजे ३ हलाऽऽह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥  
 ४ अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो ५ व्यञ्जकामिनयौ समौ ।  
 ६ निर्वृत्ते त्वक्कलत्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकेऽसात्त्विके ॥ १६ ॥  
 ८ शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

१ हण्डे ( अ ), 'नीचको बुलाने' का १ नाम है ॥

२ हजे ( अ ), 'चेटी ( दासी ) को बुलाने' का १ नाम है ॥

३ हला ( अ ), 'सखीको बुलाने' का १ नाम है ॥

४ अङ्गहारः, अङ्गविक्षेपः ( २ पु ) 'नृत्य विशेष' के २ नाम हैं ।  
 ( 'नाट्योक्तौ' इस पदका अधिकार यही तक है, अतः आगे कहे जानेवाले  
 शब्दों का प्रयोग नाटकसे भिन्न स्थलमें भी होगा ) ॥

५ व्यञ्जकः, अभिनयः ( २ पु ) 'इशारा आदिसे मनके अभिप्रायको  
 प्रकट करने' के २ नाम हैं ॥

६ आङ्गिकम् ( त्रि ), 'अङ्गके द्वारा किये गये कटाक्ष आदि' का  
 १ नाम है ॥

७ सात्त्विकम् ( त्रि ), 'सत्त्वगुणसे उत्पन्न स्तम्भ आदि गुणों' का  
 १ नाम है । ( 'स्तम्भ १, स्वेद ( पसीना ) २, रोमाञ्च ३, स्वरभङ्ग ४, वेपथु  
 ( कंपन ) ५, वैवर्ण्य ६, अश्रु ७ और प्रलय ( मूर्च्छा ) ८, ये ८  
 'सात्त्विक गुण' हैं ॥

८ शृङ्गारः, वीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्रः

यथा वा साहित्यदर्पणे—

'जीवन्तो मुखावर्था विप्रकीर्णा यथायथम् । एकार्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्' ॥ १ ॥

इति सा० द० ६ । ८१—८२ ॥

१. तदुक्तम्—'स्तम्भः १ स्वेदोऽथ रोमाञ्चः ३ स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः ५ ।

वैवर्ण्यं ६ मधु ७ प्रलयः ८ इत्यष्टौ सात्त्विका गुणाः ॥ १ ॥

इति सा० द० ३ । १३५—१३६ ॥

बीभत्सरौद्रौ च रसाः १ शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

- २ उत्साहवर्धनो वीरः ३ कारुण्यं करुणा घृणा ।  
 कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यष्टथो हसः ॥ १८ ॥  
 हासो हास्यं च ५ बीभत्सं विकृतं त्रिविदं द्वयम् ।  
 ६ विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥  
 दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।

( ८ पु ) ये ८ 'शृङ्गार, वीर आदि' 'रसः' ( पु ) अर्थात् 'रस' हैं । ( च  
 शब्दसे नवम 'शान्तः' ( पु ) अर्थात् 'शान्त' रसका और मुनीन्द्रके मतसे  
 दशम 'वात्सल्यम्' ( न ) अर्थात् 'वात्सल्य' रसका भी संग्रह है ) ॥

१ शृङ्गारः, शुचिः, उज्ज्वलः, ( ३ पु ), 'शृङ्गार रस' के ३ नाम हैं ॥

२ उत्साहवर्धनः, वीरः, ( २ पु ), 'वीर रस' के २ नाम हैं ॥

३ कारुण्यम् ( न ), करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा ( ५ स्त्री ),  
 अनुक्रोशः ( पु ), 'करुण रस या दया' के ७ नाम हैं ॥

४ हसः, हासः ( + हासिका, स्त्री । २ पु ), हास्यम् ( न ), 'हास्य रस'  
 के ३ नाम हैं ॥

५ बीभत्सम्, विकृतम् ( + वैकृतः । २ त्रि ), 'बीभत्स रस' के  
 २ नाम हैं ॥

६ विस्मयः ( पु ), अद्भुतम्, आश्चर्यम्, चित्रम् ( ३ त्रि ), 'आश्चर्य या  
 अद्भुत रस' के ४ नाम हैं ॥

७ भैरवम्, दारुणम्, भीषणम्, भीष्मम्, घोरम्, भीमम्, भयानकम्,

१. साहित्यदर्पणे 'शान्त'स्यापि नवमरसत्वमङ्गीकृतम् । तद्यथा —

'शृङ्गार १ हास्य २ करुण ३ रौद्र ४ वीर ५ भयानकाः ६ ।

बीभत्सोऽद्भुत ८ हस्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः' ॥ १ ॥

इति सा० द० ३ । १८२ ॥

२. मुनीन्द्रेण 'वात्सल्य'स्यापि दशमरसत्वमङ्गीकृतम् । तद्यथा —

'स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः' ।

इति सा० द० ३ ॥ २७ ।

भयङ्करं प्रतिभयं १ रौद्रं तूग्रमरमी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश ३ दरस्त्रासोभीतिभीः साध्वसं भयम् ।

४ विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

६ गर्वोऽभिमानोऽहङ्कारोऽमानश्चित्तसमुन्नतिः ।

८ 'दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः' (५२)

९ अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽवहेलनमसूर्क्षणम् ।

भयङ्करम्, प्रतिभयम्, ( १ त्रि ), 'भयानक रस' के १ नाम हैं ॥

१ रौद्रम्, उग्रम्, ( २ त्रि ), 'उग्र रस' के २ नाम हैं ॥

२ 'अद्भुतम्' यहाँसे लेकर 'उग्रम्' यहाँतक १४ शब्द 'रस' के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पुंलिङ्ग है और 'रसवाले' के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग है ॥

३ दरः, त्रासः ( २ पु ), भीतिः, भीः ( + भिया । २ स्त्री ), साध्वसम्, भयम् ( २ न ), 'डर' के ६ नाम हैं ॥

४ भावः ( पु ), 'रत्यादिरूप मनके विकार-विशेष' का १ नाम है ॥

५ अनुभावः ( पु ), 'मनके विकारके प्रकाशक रत्यादिसूचक रोमाञ्च आदि' का १ नाम है ॥

६ गर्वः, अभिमानः, अहङ्कारः ( ३ पु ), 'अभिमान, घमण्ड' के ३ नाम हैं ॥

७ मानः ( पु ), चित्तसमुन्नतिः ( भा० दी० म० । स्त्री ), 'मान, चित्तोन्नति' के २ नाम हैं । ( 'महे० आदिके मतसे १ ही नाम है । 'गर्व' आदि ५ शब्द एकार्थक हैं, यह भी किसी किसी का मत है ) ॥

८ [ दर्पः, अवलेपः, अवष्टम्भः, चित्तोद्रेकः, स्मयः, मदः ( ६ पु ), 'घमण्ड' के ६ नाम हैं ] ॥

९ अनादरः, परिभवः, परीभावः ( ३ पु ), तिरस्क्रिया, रीढा, अवमानना, अवज्ञा ( ४ स्त्री ), अवहेलनम् ( + अवहेला, स्त्री ), असूर्क्षणम् ( + मु०, बु० मनो०, महे० 'असूचणम्, असुचणम्, संसूर्क्षणम्, संसूर्चणम्' । २ न ), 'अनादर' के ९ नाम हैं ॥

- १ मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा २ साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥  
 ३ क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु 'परस्य विषये स्पृहा ।  
 ५ अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥  
 ७ वैरं विरोधो विद्वेषो ८ मन्युशोकौ तु शुक्लियाम् ।  
 ९ पश्चात्तापऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

१ मन्दाक्षम् ( + मन्दाक्षम् । न ), ह्रीः, त्रपा, व्रीडा ( + व्रीडः, पु ), लज्जा ( ४ स्त्री ), 'लज्जा' के ५ नाम हैं ॥

२ अपत्रपा ( स्त्री ), 'पिता आदि दूसरेसे लज्जा करने' का १ नाम है ॥

३ क्षान्तिः, तितिक्षा ( २ स्त्री ), 'दूसरेकी उन्नतिको सहन करने' के २ नाम हैं ॥

४ अभिध्या ( स्त्री ), 'दूसरेकी सम्पत्ति आदिको चाहने' का १ नाम है ॥

५ अक्षान्तिः, ईर्ष्या ( २ स्त्री ), 'ईर्ष्या' अर्थात् 'दूसरे की सम्पत्तिको नहीं सहने' के २ नाम हैं ॥

६ असूया ( स्त्री ), 'औद्धत्यसे किसीके गुण-विषयक काममें भी दोष निकालने' का १ नाम है । ( 'जैसे—किसीके दयार्द्र होकर पुण्य करनेपर 'यह नामके लिये पुण्य करता है' इत्यादि दोष निकालनेको "असूया" कहते हैं' ) ॥

७ वैरम् ( न ), विरोधः, विद्वेषः ( २ पु ), 'वैर करने' के ३ नाम हैं ॥

८ मन्युः, शोकः ( २ पु ), शुक् ( = शुच्, स्त्री ), 'शोक' के ३ नाम हैं ॥

९ पश्चात्तापः, अनुतापः, विप्रतीसारः ( + विप्रतिसारः । ३ पु ), 'पछ-ताने' के ३ नाम हैं ॥

१. ".....परस्य विषये स्पृहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'असूयाऽन्यगुणर्क्षानामौद्धत्यादसहिष्णुता ।

दोषोद्धावभ्रविभेदाऽवशाकोषेक्षितादिकृत' ॥ १ ॥ इति सा० द० ३।१६६॥

- १ कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुक्कुधौ स्त्रियौ ।  
 २ शुचौ तु चरिते शीलश्मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥  
 ४ प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् ।  
 इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥  
 कामोऽभिलाषस्तर्षश्च ६ सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।  
 ७ उपाधिर्ना धर्मचिन्ता ८ पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥  
 ९ स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानश्चुत्कण्ठोत्कलिके समे ।  
 ११ उत्साहोऽध्यवसायः स्यात् १२ स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥  
 १३ कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।

१ कोपः, क्रोधः, अमर्षः, रोषः, प्रतिघः ( ५ पु ), रुक् ( = रुप् । + रुषा ), कुध् ( + कुधा । स्त्री ), 'क्रोध' के ७ नाम हैं ॥

२ शीलम् ( न ), 'शील' अर्थात् 'आचरण शुद्ध रखने'का १ नाम है ॥

३ मुन्मादः, चित्तविभ्रमः ( २ पु ), 'पागलपन' के २ नाम हैं

४ प्रेमा ( = प्रेमन्, पु ), प्रियता ( स्त्री ), हार्दम्, प्रेम ( = प्रेमन् २ न ), स्नेहः ( पु ) 'प्रेम' के ५ नाम हैं ॥

५ दोहदम् ( न ), इच्छा, काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, तृट् ( = तृष् ), वाञ्छा, लिप्सा ( ७ स्त्री ), मनोरथः, कामः, अभिलाषः, तर्षः ( ४ पु ), 'इच्छा, चाहना' के १२ नाम हैं । ( 'म० से 'दोहदम्' यह १ नाम 'गर्भिणीकी इच्छा' का है और शेष १२ नाम उक्तार्थक हैं ) ॥

६ लालसां ( पु स्त्री ), 'लालसा' अर्थात् 'अधिक चाहना' का १ नाम है ॥

७ उपाधिः ( पु ), धर्मचिन्ता ( स्त्री ) 'धर्मविषयक चिन्ता' के २ नाम हैं ॥

८ आधिः ( पु ), 'मानसिक दुःख' का १ नाम है ॥

९ चिन्ता, स्मृतिः ( २ स्त्री ), आध्यानम् ( न ), 'याद करने' के ३ नाम हैं ॥

१० उत्कण्ठा, उत्कलिका ( २ स्त्री ), 'उत्कण्ठा' के २ नाम हैं ॥

११ उत्साहः, अध्यवसायः ( २ पु ) 'उत्साह' के २ नाम हैं ॥

१२ वीर्यम् ( न ), 'सामर्थ्ययुक्त उत्साह' का १ नाम है ॥

१३ कपटः ( पु न ), व्याजः, दम्भः उपधिः ( ३ पु ), छद्म ( = छद्मन् ),

कुसृतिनिकृतिः शाठ्यं १ प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

२ कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।

३ स्त्रीणां विलासविश्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥

हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।

कैतवम्, कुसृतिः, निकृतिः, ( २ स्त्री ), शाठ्यम् ( + शठनम् । शेष ३ न ), 'धूर्तता, कपट, दगाबाजी' के ९ नाम हैं ॥

१ प्रमादः ( पु ), अनवधानता ( स्त्री ), 'असावधानी' के २ नाम हैं ॥

२ कौतूहलम्, कौतुकम्, कुतुकम्, कुतूहलम् ( ४ न ), 'कौतूहल' अर्थात् 'खेल, तमाशा, जादू, ....' के ४ नाम हैं ॥

३ विलासः, विश्वोकः, विभ्रमः ( ३ पु ), ललितम् ( न ), हेला, लीला ( २ स्त्री ), ये ६ 'स्त्रियोंके शृङ्गार, भाव अर्थात् रस्यादि और मनोविकारसे उत्पन्न क्रियाविशेष' हैं, इनका 'हावः' ( पु ) 'हाव' यह १ नाम है । ('नाटकरत्नकोष' में—'लीला १, विलास २, विश्विच्छिन्ति ३, विभ्रम ४, किलकिञ्चित ५, मोट्टायित ६, कुट्टमित ७, विश्वोक ८, ललित ९ और विद्वत १० ये १० स्त्रियोंकी स्वभावज क्रियाएँ हैं, यह कहा है' । 'साहित्यदर्पण' में—'भाव १, हाव २, हेला ३, शोभा ४, कान्ति ५, दीप्ति ६, माधुर्य ७, प्रगल्भता ८, औदार्य ९, धैर्य १०, लीला ११, विलास १२, विश्विच्छिन्ति १३, विश्वोक १४, किलकिञ्चित १५, मोट्टायित १६, कुट्टमित १७, विभ्रम १८, ललित १९, मद २०, विद्वत २१, तपन २२, मौढ्य २३, विषेप २४, कुतूहल २५, हसित २६, चकित २७, और केलि २८, ये २८ जवानोंमें स्त्रियोंके सात्त्विक भावसे उत्पन्न अलङ्कार होते हैं, ऐसा कहा है; उनमें 'भाव' आदि ३ 'आङ्गिक अलङ्कार' हैं, 'शोभा' आदि ७ विना यत्नके उत्पन्न अलङ्कार हैं और 'लीला' आदि १८ 'स्वभावज अलङ्कार' हैं । पूर्वोक्त २८ अलङ्कारों में 'भाव' आदि १० अलङ्कार पुरुषोंके भी हो सकते हैं, किन्तु स्त्रियोंमें ही इनको

१. तदुक्तं नाटकरत्नकोषे—

'लीला विलासो विश्विच्छिन्तिविभ्रमः किलकिञ्चितम् ।

मोट्टायितं कुट्टमितं विश्वोको ललितं तथा ॥ १ ॥

विद्वतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः' ॥ इति ॥

१ द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

२ व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च ३ क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।

४ घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

अधिर शोभा होती है, ऐसा भी कहा है' ) ॥

१ द्रवः, केलिः ( + केली, स्त्री ), परीहासः ( + परिहासः । ३ पु ), क्रीडा, लीला ( + खेला । स्त्री ), नर्म ( = नर्तन न ), 'क्रीडामात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ व्याजः, अपदेशः ( २ पु ), लक्ष्यम् ( + लक्षम् । न ), 'बहाना करने' के ३ नाम हैं ॥

३ क्रीडा, खेला ( २ स्त्री ), कूर्दनम् ( न ), 'लड़कपनके खेल' के ३ नाम हैं । ( म० प्रथम दो नाम उक्तार्थक और तीसरा नाम 'कूर्दने' का है ।

४ घर्म, निदाघः, स्वेदः ( ३ तु ), भा० दी० म१ 'घाम' के और मु० म० 'पसीने' के ३ नाम हैं ॥

५ प्रलयः ( पु ) नष्टचेष्टता ( + मूर्च्छा । स्त्री ), 'बेहोशी' के २ नाम हैं ॥

१. तदुक्तम्—

'यौवने सर्वजास्तासामष्टाविंशतिसङ्ख्यकाः ।

अलङ्कारास्तत्र भावभावहेलास्त्रयोऽङ्गजाः ॥ १ ॥

शोभा कान्तिश्च दीप्तिश्च माधुर्यं च प्रगल्भता ।

औदार्यं धैर्यमित्येते सप्तैव स्युरयलजाः ॥ २ ॥

लीला विलासो विच्छित्तिर्विवेकः किलकिञ्चित् ।

मोहायितं कुट्टमितं विभ्रमो ललितं मदः ॥ ३ ॥

विहृतं तपनं मौग्ध्यं विक्षेपश्च कुतूहलम् ।

इदितं चकितं केलिरित्यष्टादशसंख्यकाः ॥ ४ ॥

स्वभावजाश्च, भावाद्या दश पुंसां भवन्त्यपि ॥

( इति सा० द० ३।८९-९३ ॥ )

पतेषां लक्ष्मणोदाहरगान्धर्व ग्रन्थविस्तरमिषा नोक्तानोक्त्यन्तस्तानि सा० द० ३।९६-११० तमे श्लोके द्रष्टव्यानि ॥



- १ अवहित्थाऽऽकारगुतिः २ समौ संवेगसंभ्रमौ ।  
 ३ स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः ४ स मनाविस्मृतम् ॥ ३४ ॥  
 मध्यमः स्याद्विहसितं ५ रोमाञ्चो 'रोमहर्षणम्' ।  
 ७ क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं ८ जृम्भस्तु मिथु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥  
 ९ विप्रलम्भो विसंवादो १० रिङ्गणं स्खलनं समे ।  
 ११ स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

१ अवहित्था ( + न ), आकारगुतिः ( २ स्त्री ), 'अपने आकारको छिपाने' के २ नाम हैं ॥

२ संवेगः, संभ्रमः ( २ पु ) 'हर्ष आदिके कारण शीघ्रता करने' के २ नाम हैं ॥

३ आच्छुरितकम् ( न । काय म० 'अवच्छुरितम् ) 'साभिप्राय हँसने' का १ नाम है ॥

४ 'स्मितम् ( न ), 'साभिप्राय मुस्कुराने' का १ नाम है ॥

५ 'विहसितम् ( न ) 'साधारण हँसने' का १ नाम है ॥

६ रोमाञ्चः ( पु ), रोमहर्षणम् ( + लोमहर्षणम् , रोमोद्धमः, उद्धर्षणम् उल्लासनकम् । 'रोमाञ्च होने' के २ नाम हैं ॥

७ क्रन्दितम् रुदितम्, क्रुष्टम् ( ३ न ) 'रोने' के ३ नाम हैं ॥

८ जृम्भः ( त्रि ), जृम्भणम् ( न ) 'जम्हाई' के २ नाम हैं ॥

९ विप्रलम्भः, विसंवादः ( २ पु ) 'ठगपनेसे बात करने' के २ नाम हैं ॥

१० रिङ्गणम् ( + रिङ्गणम् ), स्खलनम् ( २ न ) 'धर्ममार्गसे प्रतिकूल चलने, रेंगने, की जगहके चिकनी ढानेसे या अन्य किसी कारणसे पैर फिसल जाने' के ५ नाम हैं ॥

११ निद्रा ( स्त्री ) शयनम् ( न ) स्वापः, स्वप्नः, संवेशः ( ३ पु ), 'नींद' के ५ नाम हैं ॥

१. '.....लोमहर्षणम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'ईषद्विकसितैर्द तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम् ।

अकक्षितदिजद्वारमुत्तमानां स्मितं भवेत्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—'आकुञ्चितकपोलाक्षं सस्वनं निःस्वनं तथा ।

प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ तन्द्नी प्रमीला २ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।  
 ३ अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण ४ संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥  
 स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाप्यथ वेपथुः ।  
 कम्पोऽप्यथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥  
 इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

## ८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

- ७ अधोभुवनपातालं बलिसञ्च रसातलम् ।  
 नागलोकोऽप्यथ कुहरं शुषिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥

१ तन्द्नी ( + तन्दिः, तन्द्ना ), प्रमीला ( २ स्त्री ), 'तन्द्ना होने' अर्थात् 'अधिक थकावट आदिके कारण शरीरेन्द्रियोंके शिथिल होने या नींद के आदि और अन्तमें आलस्य होने' के २ नाम हैं ॥

२ भ्रुकुटिः, भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः ( + भ्रुकुटिः । ३ स्त्री ), 'क्रोध आदिसे भौंहको टेढ़ा करने' के ३ नाम हैं ॥

३ अदृष्टिः ( स्त्री ), 'क्रूरतापूर्वक देखने' का १ नाम है ॥

४ संसिद्धिः, प्रकृतिः ( २ स्त्री ), स्वरूपम् ( न ), स्वभावः, निसर्गः ( २ पु ), 'स्वभाव' के ५ नाम हैं ॥

५ वेपथुः, कम्पः ( २ पु ), 'काँपने' के २ नाम हैं ॥

६ क्षणः, उद्धर्षः, महः, उद्धवः, उत्सवः ( ५ पु ), 'उत्सव' के ५ नाम हैं ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

## ८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

७ अधोभुवनम् ( + अधः, अ० ), पातालम्, बलिसञ्च (= बलिसञ्चन् ), रसातलम् ( ४ न ), नागलोकः ( पु । + अधोलोकः ), 'पाताल' के ५ नाम हैं ॥

८ कुहरम्, शुषिरम् ( सुषिरम् ), विवरम्, विलम् ( + विलम् ),

१. ....'शुषिरं विवरं विलम्' इति पाठान्तरम् ।

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।

१ गतावटौ भुषि श्वभ्रे २ सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

३ अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

४ ध्वान्तं गाढेऽन्धतमसं ५ क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥

६ विश्ववसंतमसं ७ नागाः काद्रवेयाऽस्तदीश्वराः ।

शेषोऽनन्तोऽघासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोमसे ॥ ४ ॥

तिलित्सः स्याज्जगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

छिद्रम्, निर्व्यथनम्, रोकम्, रन्ध्रम्, श्वभ्रम् ( + स्वभ्रम् । ९ न ), वपा, शुषिः ( + सुषिः । २ स्त्री ), 'बिल' के ११ नाम हैं ॥

१ गतः ( + गता, स्त्री ), अवटः ( + अवटिः, स्त्री । २ पु ), 'गढे' के २ नाम हैं ॥

२ शुषिरम् ( त्रि । + सुषिरम् ), 'छेदवाली चीज' का १ नाम है ॥

३ अन्धकारः ( पु न ), ध्वान्तम्, तमिस्रम्, तिमिरम्, तमः ( = तमस् । + तमसम् । ४ न ), 'अन्धकार' के ५ नाम हैं ॥

४ अन्धतमसम् ( न ), 'बहुत अधिक अन्धकार' का १ नाम है ॥

५ अवतमसम् ( न ), 'थोड़े अन्धकार' का १ नाम है ॥

६ संतमसम् ( न ), 'सर्वत्र फैले हुए अन्धकार' का १ नाम है ॥

७ नागः, काद्रवेयः ( २ पु ), महे० मतसे 'नाग' के और भा० दी० मतसे 'फणा और पूँछके सहित मनुष्याकार देवयोनि-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ शेषः, अनन्तः ( २ पु ), 'शेष' अर्थात् 'नागोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

९ वासुकिः, सर्पराजः ( २ पु ), 'वासुकि' अर्थात् 'साँपोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

१० गोमसः ( + गोमसः ), तिलित्सः ( २ पु ), 'पनस जातिके साँप या छोटे जातिके सर्प-सामान्य' के २ नाम हैं ॥

११ अजगरः, शयुः, वाहसः ( ३ पु ), 'अजगर साँप' के ३ नाम हैं ॥

१. ....वपा शुषिः' इति पाठान्तरम् ।

१ 'अलगदों जलव्यालः २ समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

३ मालुधानो मातुलाहिः निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।

५ सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ॥ ६ ॥

आशीविषो विषधरश्चक्रो व्यालः सरीसृपः ।

कुण्डली गूढपाञ्चश्रुः श्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥

दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ।

उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

६ 'लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा (५३)

कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा (५४)

१ अलगदः ( + अलगदः ), जलव्यालः ( २ पु ), 'डोंड़ साँप, या पानीमें रहनेवाले सब साँप' के २ नाम हैं ॥

२ राजिलः ( + राजीलः ), डुण्डुभः ( मु० म० डुण्डुभः, स्वा० म० दण्डुभः । २ पु ), 'दोनों तरफ मुखवाले साँप' के २ नाम हैं । ( इसे विष नहीं होता है ) ॥

३ मालुधानः, मातुलाहिः ( २ पु ), 'छट्वाकार चितकबरे साँप' के २ नाम हैं ॥

४ निर्मुक्तः, मुक्तकञ्चुकः ( २ पु ) 'जिसने केंचुल छोड़ दिया हो उस साँप' के २ नाम हैं ॥

५ सर्पः, पृदाकुः, भुजगः, भुजङ्गः, अहिः, भुजङ्गमः, आशीविषः ( + आशीविषः ), विषधरः, चक्रा ( = चक्रिन् ), व्यालः ( + व्याहः ), सरीसृपः, कुण्डली ( = कुण्डलिन् ), गूढपात् ( गूढपाद् ), चक्षुःश्रवाः ( = चक्षुःश्रवस् ), काकोदरः, फणी ( = फणिन् ), दर्वीकरः दीर्घपृष्ठः, दन्दशूकः, बिलेशयः ( + बिलेशयः ) उरगः, पन्नगः, भोगी ( = भोगिन् ), जिह्मगः, पवनाशनः, ( ५५ पु । ये २५ पुल्लिङ्ग हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्ग होनेपर इनमें अकारान्तके 'सर्पिणी' भुजगी, इत्यादि रूप बदल जायेंगे ), 'साँप' के २५ नाम हैं ॥

६ [ लेलिहानः, द्विरसनः ( + द्विजिह्वः ), गोकर्णः, कञ्चुकी ( + कञ्चुकिन् ), कुम्भीनसः, फणधरः, हरिः, भोगधरः ( ८ पु ), 'साँप' के ८ नाम भी हैं ] ॥

१. 'अलगदों जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ' इति पाठान्तरम् ।

- १ अहेः शरीरं भोगः स्यादशरीरस्य हि दंष्ट्रिका' (५५)  
 ३ त्रिष्वहेयं विषास्थ्यादि ४ स्फटायां तु फणा द्वयोः ।  
 ५ समौ कञ्चुकनिर्मोकौ ६ श्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥  
 ७ पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।  
 'सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥  
 दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

१ [ भोगः ( पु ), 'साँपके शरीर' का १ नाम है ] ॥

२ [ आशीः ( = आशी । + आशीः, + आशिस, स्त्री ), अहिदंष्ट्रिका ( २ स्त्री ) 'साँपके दाँत' के २ नाम हैं ] ॥

३ आहेयम् ( त्रि ), 'साँपके विष, डड्डी, शरीर, कँचुल, दाँत, आदि, साँपसे उत्पन्न पदार्थमात्र' का १ नाम है ॥

४ स्फटा ( स्त्री । + फटा ), फणा ( स्त्री पु । + २ स्त्री पु ), 'साँपके फणा' के १ नाम हैं ॥

५ कञ्चुकः, निर्मोकः ( २ पु ) 'साँपके कँचुल' के २ नाम हैं ॥

६ श्वेडः ( पु ), गरलम्, विषम् ( २ न । + २ पु न ), 'विष, जहर' के ३ नाम हैं ॥

७ काकोलः, कालकूटः, हलाहलः ( + हालाहलम्, हालहलम् । ३ पु न ) सौराष्ट्रिकः, ( + सारोष्ट्रिकः ), शौक्लिकेयः, ब्रह्मपुत्रः, प्रदीपनः, दारदः, वत्सनाभः ( ६ पु ) 'काकोल, कालकूट आदि स्थावर विष' का १-१ नाम है । ( 'विषके दो भेद होते हैं—'स्थावर १ और जङ्गम २' । पहले स्थावर-

१. 'सारोष्ट्रिकः .....' इति मु० पाठः ॥

२. तदुक्तं श्रीमद्भगवद्वन्तर्ग्युपदिष्टसुश्रुतेन सुश्रुतसंहितायाः कल्पस्थानस्य द्वितीयाध्याये—  
 'स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । दशाधिष्ठानमाधन्तुं द्वितीयं षोडशाश्रयम्' ॥ १ ॥

सुश्रु० क० स्था० २

अन्यच्च माषवनिदानस्य विषरोगनिदानप्रकरणे—

'स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । मूलाद्यात्मकमाद्यं स्यात्परं सर्पादिसम्भवम्' ॥ १ ॥

मा० नि० विषरोगनिदानप्रकरण

विषके १० भेद होते हैं—मूल १, पत्र २, फल ३, पुष्प ४, त्वक् ( छाल ) ५, क्षीर ( दूध ) ६, सार ७, निर्यास ( लासा ) ८, धातु ९ और कन्द १० । उनमें मूलविषके ८, पत्रविषके ५, फलविषके १२, पुष्पविषके ५, त्वक्विष—निर्यासविष—सारविषके ७, क्षीरविषके ३, धातुविषके २ और कन्दविषके १३ भेद होते हैं । इन ५५ भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं । ये विष पहाड़, पेड़, पौधा आदि स्थावर पदार्थोंमें होते हैं । जङ्गमविष १६ तरहका होता है—इन भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं<sup>३</sup> । जङ्गमविष बाघ, सिंह, भेड़िया, स्यार, साँप, बिच्छू, घरे, भौंरा, मधुमक्खी, मेंढक, छिपकिली, चूहा आदि जङ्गम जन्तुओंमें पाये

१. सुश्रुते 'दशाधिष्ठानमाद्यन्तु' इत्यनेनाद्यस्य स्थावरविषस्य दशाधिष्ठानान्युक्त्वा तानि नामतो निर्दिशति—

'मूलं १ पत्रं २ फलं ३ पुष्पं ४ त्वक् ५ क्षीरं ६ सारं ७ एव च ।

निर्यासो ८ धातुश्च ९ इत्येव कन्दश्च १० दशमः स्मृतः' ॥ १ ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २।२॥

२. तदुक्तं सुश्रुतस्य कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये —

'तत्र क्लृप्तकाश्चमारगुज्जासुगन्धगर्गरककरघाटविद्युच्छिखाविजयानीत्यष्टौ मूलविषाणि । विषपत्रिकालम्बावरदारुककरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पत्रविषाणि । कुमुदतीवेणुकारकरम्भमहाकरम्भकर्कोटकरेणुकखद्योतकचर्मरीभगन्यासर्पधातिनन्दनसारपाकानीति द्वादश फलविषाणि । वेत्रकादम्बवल्लिजकरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पुष्पविषाणि । अन्त्रपाचककर्त्तरीसोरीयककरघाटकरम्भनन्दनवराटकानि सप्त त्वक्सारनिर्यासविषाणि । कुमुदध्वीस्तुहीजालक्ष्मीयाणि त्रीणि क्षीरविषाणि । केणाश्मभस्म हरितालञ्च द्वे धातुविषे । कालकूटवस्सनामसर्पपपालककर्दमकवैराटकमुस्तकशृङ्गोविषप्रपुण्डरीकमूलकहालाहलमहाविषकर्कोटकानीति त्रयोदश कन्दविषाणि । इत्येवं पञ्चपञ्चाशत्स्थावरविषाणि भवन्ति' ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २ । ३—१० ॥

३. तदुक्तं सुश्रुते कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये—

'जङ्गमस्य विषस्योक्तान्यधिष्ठानानि षोडश । समासेन मया यानि विस्तरस्तेषु वक्ष्यते' ॥ १ ॥

तत्र दृष्टिनिःश्वासदंष्ट्रानखमूत्रपुरीषशुकलालार्तवमुखसन्दंशविशद्वितगुदास्थपित्तशूकशयानीति' ॥ २ ॥ इति सुश्रु० क० स्था० ३ । १—२ ।

१ विषवैद्यो जाङ्गलिको २ 'व्यालग्राह्यद्वितुण्डिकः ॥ ११ ॥  
इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥



## ९. अथ नरकवर्गः ।

३ स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
४ तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

जाते हैं । किन २ जन्तुओंमें कौन २ विष रहते हैं यह भी टिप्पणीमें स्पष्ट है<sup>२</sup> ) ॥

१ विषवैद्यः, जाङ्गलिकः ( २ पु ), 'विषका दूर करनेवाले वैद्य' के २ नाम हैं ॥

२ व्यालग्राही ( = व्यालग्राहन् । + व्यालग्राहः ), अद्वितुण्डिकः, ( + आ-द्वितुण्डिकः । २ पु ), 'साँप पकड़नेवाले या सँपेरा' के २ नाम हैं ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥



## ९. अथ नरकवर्गः ॥

३ नारकः, नरकः, निरयः ( ३ पुं ), दुर्गतिः ( स्त्री ), 'नरक' के ३ नाम हैं ॥  
४ तपनः, अवीचिः ( + स्त्री ), महारौरवः, रौरवः, संघातः

१. ".....व्यालग्राह्यद्वितुण्डिकः" इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तत्र दृष्टिनिःश्वासविषास्तु दिव्याः सर्पाः, भौमास्तु दंष्ट्राविषाः । मार्जारश्वबानर-मकरमण्डूकपाकमत्स्यगोषाशम्बूकप्रचलाकगृहगोषिकाचतुष्पादकीटास्तथान्ये दंष्ट्रानखवि-षाः ॥ चिपिटपिच्छककषायवासिकसर्पपवासिकतोटकबर्चःकीटकौण्डिल्यकाः शकृन्मूत्रविषाः ॥ मूषिकाः शूकविषाः । लताश्च लालामूत्रपुरीषमुखसन्दंशनखशुकासैवविषाः ॥ दृश्चिकविश्वम्भ-रराजीवमत्स्योच्छिदिङ्गाः समुद्रवृश्चिकाश्चालविषाः ॥ चित्राशिरस्सरावकुदिशतदारुकारिमेदक-शारिकामुखा मुखसन्दंशविशद्वितमूत्रपुरीषविषाः । मक्षिकाकणमजलायुका मुखसन्दंशविषाः ॥ विषहतास्थिसर्पकण्टकवरटीमत्स्यास्थि चेत्यस्थिविषाणि । शकुलीमत्स्यरत्तराजीवरकीमत्स्याश्च पिच्छविषाः ॥ सूक्ष्मतुण्डोच्छिदिङ्गवरटीशतपदीशूकबलमिकाशृङ्गोन्नमराः शूकतुण्डविषाः ॥ कीटसर्पदेहाः गतासवः शवविषाः । शेषासवनुक्ता मुखसन्दंशविषेभ्येव गणयितव्याः' ॥ इति सुश्रु० क० स्था० ३ । ३—१० ॥

‘संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः १ सत्त्वास्तु नारकाः ।

प्रेता २ वैतरणी सिन्धुः ३ स्यादलक्ष्मोस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

४ विष्टिराजूः ५ कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

६ पीडा बाधा व्यथा ‘दुःखमामनस्यं प्रसूतिज्ञम् ॥ ३ ॥

( + संहारः । ५ पु ), कालसूत्रम् ( न ), आदि ( ‘आदि शब्दसे ‘तामिस्रम्, अन्धतामिस्रम्, संजीवनम्, महावीचिः (छी), संप्रतापनम् (शेष ४ न), इत्यादिका संग्रह है ), ‘भिन्न भिन्न नरक-विशेष’ का १—१ नाम है ।  
( ‘नरक २१ होते हैं, उनके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं’<sup>१</sup> ) ॥

१ नारकः ( भा० दी० म० ), प्रेतः ( + परेतः । २ पु ), ‘नरकके प्राणियों’ के २ नाम हैं ॥

२ वैतरणी ( स्त्री ), ‘यमलोकके समीप बहनेवाली वैतरणी नामकी नदी’ का १ नाम है ॥

३ अलक्ष्मीः (भा० दी० म०), निर्ऋतिः (२ स्त्री), ‘नरककी अशोभा’ के २ नाम हैं ॥

४ विष्टिः, आजूः ( २ स्त्री ), ‘बलात्कारसे नरकमें ढकेलने’ के २ नाम हैं ॥

५ कारणा, यातना, तीव्रवेदना (३ स्त्री), स्वा० म० ‘नरकके दुःख’ के और भा० दी० म० ‘कठोर दुःख’ के ३ नाम हैं ॥

६ पीडा, बाधा ( + आबाधा ), व्यथा ( ३ स्त्री ), दुःखम्, आमनस्यम्

१. ‘संहारः काल.....’ इति पाठान्तरम् ।

२. ‘.....दुःखममानस्यं.....’ इति पाठान्तरम् ॥

३. उच्छास्त्रवर्त्तिनो लुब्धस्य राज्ञः प्रतिग्रहस्वीकारे पर्यायेणैकविंशतिं नरकान् यातीत्यु-  
पक्रम्य तेषामेकविंशतिनरकाणां नामान्युक्तानि मनुना ! तद्यथा—

‘तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ । नरकं कालसूत्रं च महानरकमेव च ॥ १ ॥

संजीवनं महावीचिं तपनं संप्रतापनम् । संघातं च सकाकोलं कुड्मलं प्रतिमूर्तकम् ॥ २ ॥

लोहशंकुमृजीषं च पन्थानं शास्मलीं नदीम् । अतिपत्रवनं चैव लोहदारकमेव च ॥ ३ ॥

इति मनुः ४ । ८८—९० ॥



स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं १ त्रिध्वेषां भेद्यगामि यत् ।

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रोऽस्थिरकूपारः पाणवारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपां पतिः ।

१ तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

( + अमानस्यम् ), प्रसूतिजम् , कष्टम् ; कृच्छ्रम् , आभीलम् ( ६ न ), 'दुःख' के ९ नाम हैं । ( 'वस्तुतस्तु 'पीडा.....' ४ 'मानसिक दुःख' के, 'आमनस्यम्,.....' २ 'मनोविकार' अर्थात् 'उदासी' के और 'कष्टम्,.....' ३ 'शारीरिक दुःख' के नाम हैं ) ॥

१ इनमें 'दुःख' इत्यादि शब्द किसीके विशेषण होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे — 'दुःखा दुर्नृपसेवा, दुःखः पुत्रो ह्यरुण्डितः, दारिद्र्यमखिलं दुःखम्,.....' ) ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रः, अविधः, अकूपारः, पारावारः ( + पारावारः ), सरित्पतिः, उदन्वान् ( = उदन्वत् ), उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान् ( = सरस्वत् ), सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः जलनिधिः, यादःपतिः ( + पाथःपतिः ), अपां पतिः ( १५ पु ), 'समुद्र' के १५ नाम हैं ॥

३ क्षीरोदः, लवणोदः ( २ पु ), आदि ( 'आदि' शब्दसे 'दध्युदः १, घृतोदः २, सुरोदः ३, इक्षुदः ४, स्वादूदः ५ ( ५ पु )' इन पांचोंका संग्रह है ) 'क्षीर-समुद्र १, क्षारा समुद्र २, आदि ( 'आदि' शब्द से 'दधि-समुद्र १, घृत-समुद्र २, मद्य-समुद्र ३, रस-समुद्र ४, मीठे जलका समुद्र ५, इन पांचोंका

- १ आपः स्त्री भूमिनि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।  
 पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥  
 'कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।  
 अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥  
 मेघपुष्पं घनरसरस्त्रिषु द्वे आप्यममयम् ।  
 ३ भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि ५ रथोमिषु ॥ ५ ॥  
 महत्सुल्लोलकल्लोलौ ६ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ।

संग्रह है, इस तरह सब २ मात 'समुद्र' हैं ) का १—१ नाम हैं ॥

१ आपः ( = अप्, निश्च स्त्री० ब० व० । + आपः = आपस्, न ),  
 वाः ( = वार् ), वारि ( + वारम् ), सलिलम् ( + सरिलम्, सलिरम् ),  
 कमलम्, जलम्, पयः ( + पयस् ), कीलालम्, अमृतम्, जीवनम्, भुवनम्,  
 वनम्, कबन्धम् ( + कमन्धम्, कम्, अन्धम् ), उदकम् ( + दकम् ), पाथः  
 ( = पाथस् ), पुष्करम्, सर्वतोमुखम्, अम्भः ( = अम्भस् ), अर्णः ( = अर्णस् ),  
 तोयम्, पानीयम्, नीरम् ( + नारम्, न पु ), क्षीरम्, अम्बु, शम्बरम् ( संवरम् ),  
 मेघपुष्पम् ( २५ न ), घनरसः ( पु + न ), 'पानी' के २७ नाम हैं ॥

२ 'आप्यम्, अमयम् ( २ न )' 'पानी के विकार' अर्थात् 'पानीसे बने  
 पदार्थ बर्फ, शर्वत आदि' के २ नाम हैं ॥

३ भङ्गः, तरङ्गः ( २ पु ), ऊर्मिः, वीचिः ( स्वा० म० नि० स्त्री । २ पु  
 स्त्री ), 'पानी के तरङ्ग लहर' के ४ नाम हैं ॥

४ सुल्लोलः, कल्लोलः ( २ पु ), 'बड़ी तरङ्ग' के २ नाम हैं ॥

५ आवर्तः ( पु ), 'चक्रोद्' भँवर अर्थात् 'पानीके गोलाकार घूमने' का  
 १ नाम है ॥

१. केचित्तु 'कमन्धमुदकं.....' इति पठित्वा 'कमन्धम्' प्रत्येकं नाम 'कम्, अन्धम्' इति  
 नामद्वयं वेत्याहुः । अत्र 'कबन्धश्च दकम्.....' इति च पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्येण—

'लवणक्षीरदध्याज्यसुरेक्षुस्वादुवारयः' ।

इति अभि० चि० म० 'हेम' ४ । १४१ ॥

यथा वा—'लवणेषुसुरासपिर्दधिक्षीरजलाः समाः' ॥ इत्यन्यत्र ॥

- १ पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥  
 २ चक्राणि पुटभेदाः स्युर्धमाश्च जलनिर्गमाः ।  
 ३ कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥  
 ४ पाराप्वारे परार्वाची तीरे ६ पात्रं तदन्तरम् ।  
 ५ द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥  
 ८ तोयोत्थितं तत्पुलिनं ९ सैकतं सिकतामयम् ।  
 १० निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्मौ ॥ ९ ॥

१ पृषत् ( न । + पृषन्ति; पु ), बिन्दुः, पृषतः ( २ पु ), विप्रुट्, (= वि-  
 प्रुष्, स्त्री । + विप्लुट् = विप्लुष् ), 'बूँद' ठोप' के ४ नाम हैं ॥

२ चक्रम् ( न । + चक्रम् ), पुटभेदः, भ्रमः, जलनिर्गमः ( ३ पु ), महे०,  
 स्वा० म० 'गोलाकार होकर जलके नीचे जाने' के ४ नाम हैं । ( भा०  
 दी० म० पहलेवाले दो नाम उक्तार्थक और अन्त वाले दो नाम 'जल  
 निकलनेके समुदाय' के और अन्यके म० पहले वाले दो नाम उक्तार्थक तथा  
 अन्तवाले दो नाम 'नीचेसे ऊपरकी तरफ जलके निकलने' अर्थात् 'जमीन  
 फटकर भव फूटने या फौड्वारा छूटने' के हैं ) ॥

३ कूलम्, रोधः ( = रोधस् । + रोधः, = रोध, पु ), तीरम्, प्रतीरम्  
 ( ४ न ), तटम् ( त्रि ), 'नदी के किनारे' के ५ नाम हैं ॥

४ पारम् ( न ) 'नदीके उधरवाले किनारे' का नाम १ है ॥

५ अवारम् ( न ), 'नदीके इधरवाले किनारे' का १ नाम है ॥

६ पात्रम् ( न ) 'दोनों किनारोंके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

७ द्वीपम्, अन्तरीपम् ( २ पु न ), 'टापू' के २ नाम हैं ॥

८ पुलिनम् ( न ), 'पानीसे शीघ्र निकले हुए किनारे' का १ नाम है ॥

९ सैकतम्, सिकतामयम् ( २ न ), 'रेतीले स्थान या किनारे' के  
 २ नाम हैं ॥

१० निषद्वरः, जम्बालः, पङ्कः ( पु न ), शादः, कर्मः ( शेष ४ पु ),  
 'कीचड़, पङ्क' के ५ नाम हैं ॥

१. 'चक्राणि पुटभेदाः.....' इति भा० दी० पाठान्तरम् ।

- १ जलोच्छ्वासाः परीवाहाः २ कूपकास्तु विदारकाः ।
- ३ नाव्यं त्रिलिङ्गं नीतार्ये ४ स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥
- ५ उडुपं तु प्लवः कोलः ६ स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।
- ७ आतरस्तरपण्यं स्याद् ८ द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
- ९ सांयात्रिकः पोतवणिक् १० कर्णधारस्तु नाविकः ।

१—जलोच्छ्वासः, परीवाहः ( + परिवाहः । २ पु ), 'बड़े हुए पानीके निकलनेके मार्ग' अर्थात् 'कनवाह' के २ नाम हैं ॥

२—कूपकः; विदारकः, 'सूखीसी नदियोंमें थोड़ी देर में कुछ पानी इकट्ठा होनेके लिये किये गये गढ़े' के २ नाम हैं । ( 'शोणभद्र, फणु आदि पहाड़ी या बालूदार नदियोंमें गढ़ा करनेसे १०-५ मिनटमें थोड़ा पानी जमा हो जाता है' ) ॥

३ नाव्यम् (त्रि), 'नावसे पार होने योग्य नदी आदि' का १ नाम है ॥

४ नौः, तरणिः ( + तरणी ), तरिः ( + तरीः, तरी । ३ स्त्री ), 'नाव' के ३ नाम हैं ॥

५ उडुपम् ( पु न ), प्लवः, कोलः ( २ पु ), महे० म० 'छोटी नाव' के और भा० दी० म० 'तैरनेके लिए घड़ा, कनस्तर, तुम्बी आदिसे बनाये गये साधन-विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ स्रोतः ( = स्रोतस्, न । + स्रोतः, = स्रोत, पु; श्रोतः, + श्रोतस्, न ), 'स्रोता' अर्थात् 'पानीके प्राकृतिक बहाव' का १ नाम है ॥

७ आतरः ( पु । + आवापः ). तरपण्यम् ( न ), 'खेवाई' अर्थात् 'नावके भाड़े या उतराई' के २ नाम हैं ॥

८ द्रोणी ( + द्रोणिः, द्रुणिः ), काष्ठांम्बुवाहिनी (भा० दी० म० । २ स्त्री), 'काठकी बनाई गई छोटी नाव' अर्थात् 'डोंगी' के २ नाम हैं ॥

९ सांयात्रिकः, पोतवणिक् ( = पोतवणिज् । २ पु ), 'नाव या जहाजके व्यापारी' के २ नाम हैं ॥

१० कर्णधारः, नाविकः ( २ पु ), 'पतवार पकड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

- १ नियामकाः पोतवाहाः २ कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥  
 ३ नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।  
 ५ अग्निः स्त्री काष्ठकुद्दालः ६ सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥  
 ७ 'यानपात्रं तु पोतोऽब्धिभवे त्रिषु समुद्रियम् ( ५६ )  
 ९ सामुद्रिको मनुष्योऽब्धिजाता सामुद्रिका च नौः' ( ५७ )

१ नियामकः, पोतवाहः ( २ पु ), 'मगर, मछली आदि दुष्ट जल-जन्तुओंसे जहाजकी रक्षाके लिये जहाजके ऊँचे हिस्सेपर बैठनेवाले' के २ नाम हैं । ( 'समुद्रगामी बड़े-बड़े जहाजोंमें ऐसे लोग रहते हैं, जिन्हें 'जहाजका कप्तान' कहते हैं' ) ॥

२ कूपकः, गुणवृक्षकः ( २ पु ), 'मस्तूल' के २ नाम हैं । ( 'पाल या गौद बाँधनेके लिए जहाज या नावके बीचमें खड़े किये हुए खम्भेको 'मस्तूल' कहते हैं । किसी २ के मतसे 'नावको बाँधनेवाले खूँटे' के ये २ नाम हैं' ) ॥

३ नौकादण्डः ( पु ), क्षेपणी ( स्त्री । + क्षेपणिः, क्षिपणिः, क्षिपा ), 'डांडे' के २ नाम हैं ॥

४ अरित्रम्, केनिपातकः ( २ पु ), 'पतवार' के २ नाम हैं ॥

५ अग्निः ( स्त्री । + अग्नी ), काष्ठकुद्दालः ( पु । + काष्ठकुद्दालः ), 'जहाज आदिके कतवार आदिको हटानेके लिये काष्ठके बनाये कुद्दाल' के २ नाम हैं ॥

६ सेकपात्रम्, सेचनम् ( २ न ), 'नाव, जहाज इत्यादिमें एकत्रित हुए पानीको फेंकनेके लिये चमड़ा आदिके थैले या मशक' के २ नाम हैं । उपलक्षणतया 'पानी भरनेवाले मशकमात्र' के भी ये २ नाम हैं ॥

७ [ पोतः ( पु ), 'जहाज' का १ नाम है ] ॥

८ [ समुद्रियम् ( त्रि ), 'समुद्रमें होनेवाले पदार्थ' का १ नाम है ] ॥

९ [ सामुद्रिकः ( पु ), 'समुद्रके मनुष्य' का १ नाम है ] ॥

१० [ सामुद्रिका ( स्त्री । + समुद्रिका ), 'समुद्रमें जानेवाली नाव' का १ नाम है ] ॥

१. यानपात्रं.....च नौः' इत्येवोऽशः क्षी० स्वा० व्याख्यानुरोधेनात्र मूले एवोपन्यस्तः ।  
 तत्र '.....मनुष्योऽब्धिजातादौ नौः समुद्रिका' इति पाठान्तरम् ॥

- १ क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।  
 ३ त्रिष्वागाधाऽप्रसन्नोऽच्छः ५ कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥  
 ६ निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।  
 ८ अगाधमतलस्पर्शं ९ कैवर्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥  
 १० आनायः पुंसि जालं स्यात् ११ शणसूत्रं पवित्रकम् ।  
 १२ मत्स्याधानी कुवेणी स्यात् १३ बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

१ अर्द्धनावम् ( न ), 'नावके आधे द्विस्ते' का १ नाम है ॥

२ अतिनु ( त्रि ) 'नावकी अपेक्षा अधिक वेगसे चलनेवाले मनुष्य या पानीके बहाव आदि' का १ नाम है ॥

३ यहाँसे लेकर 'अगाधमतलस्पर्शं.....( ११०।१५ )' के पहलेतक 'त्रिषु' शब्दका अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ प्रसन्नः, अच्छः ( + स्वच्छः । २ त्रि ), 'साफ, निर्मल पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

५ कलुषः, अनच्छः, आविलः ( ३ त्रि ), 'गन्दे पानी आदि' के ३ नाम हैं ॥

६ निम्नम्, गभीरम्, गम्भीरम् ( ३ त्रि ), 'गम्भीर गहरे' के ३ नाम हैं ॥

७ उत्तानम् ( त्रि ) 'थाह, या उथला छिछिल' का १ नाम है ॥

८ अगाधम्, अतलस्पर्शम् ( २ त्रि ), 'अथाह, बहुत गहरे' के २ नाम हैं ॥

९ कैवर्तः, दाशः ( + दासः ), धीवरः ( ३ पु ), 'मल्लाह' के ३ नाम हैं ॥

१० आनायः ( पु ), जालम् ( न ), 'जाल' के १ नाम हैं ॥

११ शणसूत्रम्, पवित्रकम् ( २ न ), 'सुतलीके बने हुए जाल' के २ नाम हैं ॥

१२ मत्स्याधानी, कुवेणी ( २ स्त्री ), 'मछलियोंको पकड़कर रखने-वाले बर्तन' के २ नाम हैं ॥

१३ बडिशम् ( + बलिशम् ), मत्स्यवेधनम् ( २ न ), 'बंशी' अर्थात् 'छोहेके बने हुए मछली फँसानेके साधन-विशेष' के २ नाम हैं । '( 'जिसमें आटा

- १ पृथुरोमा क्षषो मत्स्यो मीनो विसारिणोऽण्डजः ।  
‘विसारः शकली चाथ २ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
- ३ सहस्रदंष्ट्रः पाठीन ४ उलूपी शिशुकः समौ ।
- ५ नलमीनश्चिलिचिमः ६ प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
- ७ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो भृषाः ।
- ९ रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

या कीड़ा आदि लपेटकर पानीमें फेंककर मछलियां फँसाई जाती हैं, उसे ‘बंसी’ कहते हैं ) ॥

१ पृथुरोमा ( = पृथुरोमन् ), क्षषः, मत्स्यः, मीनः, विसारिणः, अण्डजः, विसारः, शकली ( = शकलिन् । + शकुली, = शकुलिन्, सकली, = सकलिन् । ८ पु ), ‘मछली’ के ८ नाम हैं ॥

२ गडकः, शकुलार्भकः ( २ पु ), ‘गडक मछली’ के २ नाम हैं ॥

३ सहस्रदंष्ट्रः, पाठीनः ( २ पु ), ‘पहिना मछली’ अर्थात् ‘बहुत दांत वाली पहिनानामक एक प्रकारकी मछली या पोठिया मछलीके २ नाम हैं ॥

४ उलूपी ( = उलूपिन् ), शिशुकः ( २ पु ), ‘सूँस’ के २ नाम हैं ॥

५ नलमीन ( + नडमीनः, तलमीनः ), चिलिचिमः ( चिलिचिमिः । २ पु ), ‘नरकटमें रहनेवाली एक प्रकारकी मछली-विशेष’ के २ नाम हैं ॥

६ प्रोष्ठी ( स्त्री ), शफरी ( स्त्री । + पु स्त्री ), ‘सहरी या पोठिया मछली’ के २ नाम हैं ॥

७ पोताधानम् ( न ), ‘अण्डेसे निकले हुए मछलियोंके छोटे छोटे बच्चोंके समुदाय’ का १ नाम है ।

८ भृष मछलियों के ‘भेद’को कहते हैं अर्थात् वक्ष्यमाण शब्द पर्याय नहीं हैं ॥

९ रोहितः, मद्गुरः शालः ( + सालः ), राजीवः, शकुलः, तिमिः, तिमि-क्लिः ( ७ पु ), आदि ( ‘आदि पदसे ‘तिमिक्लिगिलः, नन्दीवर्तः ( २ पु ), आदिका संग्रह है’ ), ‘रोड्ड, मोंगरा, शाल, बरारी, शकुल, तिमि,

१. ‘विसारः शकुली चाथ’ इति मा० दी० सम्मतः पाठः, मूलोक्तश्च महे० क्षी० स्वा० सम्मतः पाठ इत्यवधेयम् ॥

तिमिङ्गिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।

२ तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्खो मकरादयः ॥ २० ॥

३ स्यात्कुलीरः कर्कटकः ४ कूर्मं कमठकच्छपौ ।

५ ग्राहोऽवहारो ६ नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥

गण्डूपदः किञ्चुलको ८ निहाका गोधिका समे ।

९ रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूमिनि जलौकसः ॥ २२ ॥

तिमिङ्गिल आदि ( 'आदि पदसे 'तिमिङ्गिलगल और नन्दीवर्त' आदिका संग्रह है' ), 'मछलियोंके भेद' हैं ॥

१ यादः ( = यादस्, न ) जलजन्तुः ( पु ), 'जलमें रहनेवाले जीव' के २ नाम हैं ॥

२ शिशुमारः, उद्रः, शङ्खः, मकरः, ( ४ पु ), आदि ( 'आदि पदसे 'जल-हस्ती' ( = जलहस्तिन् ), जलकुक्कुटः, कर्कः, कच्छपः, ( ४ पु ), का संग्रह है' ) सूँस, ऊद, शङ्ख, मगर, आदि ( 'आदि शब्दसे 'जलहाथी, जलमुर्गा, केकड़ा, कछुआ' आदिका संग्रह है ) जलमें रहनेवाले जीव' हैं ॥

३ कुलीरः ( + कुलिरः ), कर्कटकः ( ककटः, कर्कः, करटकः, करढकः । ( २ पु ), 'केकड़े' के २ नाम हैं ॥

४ कूर्मः, कमठः, कच्छपः, ( ३ पु ), 'कछुए' के ३ नाम हैं ॥

५ ग्राहः, अवहारः ( + अवराहः । २ पु ), 'ग्राह' अर्थात् 'चढियाल' के २ नाम हैं ॥

६ नक्रः, कुम्भीरः ( २ पु ), 'नाक' अर्थात् 'ग्राहके भेद, एक तरहके जलचर विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ महीलता ( स्त्री ), गण्डूपदः, किञ्चुलकः ( + किञ्चुलकः, किञ्चिलिकः । २ पु ), 'केचुआ' के ३ नाम हैं ॥

८ निहाका, गोधिका ( २ स्त्री ), 'गोह' के २ नाम हैं ॥

९ रक्तपा, जलौका, जलौकसः ( = जलौकस्, प्रायः ब० व० । + जलोका, जलुका, जलजन्तुका, जलोरगी । ३ स्त्री ), 'जौक' के ३ नाम हैं ॥

१. ".....किञ्चुलकः....." इति मा० दी०, क्षी० स्वा० पाठः ॥

२. 'जलोरगौ जलोका तु जलौका च जलौकसि'

इति संसारार्णवोक्तेरत्र बहुवचनस्य प्रायिकत्वम् ।



- १ मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः २ शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।
- ३ क्षुद्रशङ्खाः 'शङ्खनखाः ४ शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
- ५ भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदुंराः ।
- ६ शिली गण्डूपदी ७ भेकी वर्षाभ्वी ८ कमठी 'डुलिः ॥ २४ ॥
- ९ मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

१ मुक्तास्फोटः ( पु ), शुक्तिः ( स्त्री ), 'क्षितुही, सीप' के २ नाम हैं ।  
( 'गजराज, मेघ, सूकर, शङ्ख, मछली, साँप, सीप और बाँस' इनसे मोती निकलती है, किन्तु अधिकतर सीप से ही निकलती है' ) ॥

२ शंखः, कम्बुः ( २ पु न ), 'शङ्ख' के २ नाम हैं ॥

३ क्षुद्रशङ्खः, शङ्खनखः ( + शङ्खनकः । २ पु ) 'छोटे शङ्ख' के २ नाम हैं ॥

४ शम्बूकः ( पु । + शम्बुकः, शाम्बुकः ), जलशुक्तिः ( स्त्री । भा० दी० म० ), 'घोंघा, दोहना या पानीमें होनेवाली हर तरहकी सीप' के २ नाम हैं ॥

५ भेकः, मण्डूकः, वर्षाभूः, शालूरः ( + सालूरः ), प्लवः, दुंराः ( ६ पु ), 'मैंढक' के ६ नाम हैं ॥

६ शिली, गण्डूपदी ( २ स्त्री ), 'केंचुपकी स्त्री या केंचुपके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ भेकी, वर्षाभ्वी ( २ स्त्री ), 'बेंगुची, मैंढककी स्त्री या मैंढकके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ कमठी, डुलिः ( + डुलिः । स्त्री ) 'कछुई' के २ नाम हैं ॥

९ शृङ्गी ( स्त्री । + मद्गुरी ), 'मगरकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१. '.....शङ्खनकाः.....' इति पाठान्तरम् ॥

२. '.....डुलिः' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तम्—'करीन्द्रजीमूतवराहशंखमस्यादिशुक्ल्यद्भववेणुजानि ।

मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्ल्यद्भवमेव भूरि' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

- २ जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥  
 ४ आहावस्तु निपानं स्यादुपकूरजलाशये ।  
 ५ पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥  
 ६ नेमिस्त्रिकाऽस्य ७ विनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।  
 ८ पुष्करिण्यां तु खातं स्यात्स्वातं देवखातकम् ॥ २७ ॥  
 १० पद्माकरस्तडागोऽस्त्री ११ कासारः सरसी सरः ।

१ दुर्नामा (= दुर्नामन्, पु। + दुर्नाम्नी, स्त्री), दीर्घकोशिका ( स्त्री । + दीर्घकोषिका ), 'जोंकके समान एक प्रकारके जलचर-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ जलाशयः, जलाधारः ( २ पु ), 'तालाब, पोखरा, बावली आदि' के २ नाम हैं ॥

३ हृदः(पु), 'अथाह जलवाले तालाब आदि' का १ नाम है ॥

४ आहावः ( पु ), निपानम् ( न ), 'सुखपूर्वक गौ आदिके जल पीनेके लिये कूपके पास बनाये हुए ढौज' के २ नाम हैं ॥

५ अन्धुः, प्रहिः, कूपः ( ३ पु ), उदपानम् ( न पु ), 'कूआं, इनारा' के ३ नाम हैं ॥

६ नेमिः ( भा० दी० म० ) त्रिका ( २ स्त्री ) 'धुरई, गड़ारी' के २ नाम हैं ॥

७ विनाहः ( पु । + विनाहः ), 'कुँपके जगत्' का १ नाम है ॥

८ पुष्करिणी ( स्त्री ), खातम् ( न ) 'पोखरी, छोटी तलैया' के २ नाम हैं ॥

९ अस्वातम्, देवखातकम् ( २ न ), 'अकृत्रिम या देवमन्दिरके आगे-वाले पोखरा, तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

१० पद्माकरः, तडागः ( + तडाकः, तटागः, तटागः । २ पु ), 'कमल उत्पन्न होनेवाले अथाह तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

११ कासारः (पु), सरसी (स्त्री), सरः ( = सरस् न ), 'कृत्रिम ( किसी-

- १ वेशन्तः पल्लवं चारुपसरो २ वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥  
 ३ खेयं तु परिखाऽऽधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।  
 ५ स्यादलवालमावालमावापोऽदथ नदी सरित् ॥ २९ ॥  
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी हृदिनी धुनी ।  
 'स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ॥ ३० ॥  
 ७ 'कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधोवका सरस्वती' ( ५८ )  
 ८ गङ्गा विष्णुपदी जहुतनया सुरनिम्नगा ।  
 भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रता भोग्मसूरपि ॥ ३१ ॥

के खुदवाये हुए कमल उत्पन्न होनेवाले तालाब आदि' के भा० दी० मतसे) ३ नाम हैं। ('पद्माकरः.....सरः' 'कमल उत्पन्न होनेवाले जलाशय मात्र' के ५ नाम हैं, यह सहे० का मत है' ) ॥

वेशन्तः ( पु ), पल्लवम् , अश्वतरः ( = अश्वसरस् । २ न ), 'पानोके छोटे-छोटे गढे' के ३ नाम हैं ॥

२ वापी ( + वापिः ), दीर्घिका ( २ स्त्री ), 'बावलो' के १ नाम हैं ॥

३ खेयम् ( न ), परिखा ( स्त्री ), 'कित्ते आदिके चारो आरको खाई' के २ नाम हैं ॥

४ आधारः ( पु ), 'पानोके खाँय' का १ नाम है ॥

५ अलवालम् ( + अलवालम् ), आवालम् ( १ न ), आवापः ( पु ), 'थाला' अर्थात् 'गांड़ी या पौधे हो सींचनेके लिये उनके जड़में मिट्टी आदिसे बनाये हुए घेरे' के ३ नाम हैं ॥

६ नदी, सरित्, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, हृदिनी ( + हृदिनी ), धुनी, स्रोतस्वती ( + स्रोतस्विनी ), द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा ( + अपगा । १२ स्त्री ), 'नदी' के १२ नाम हैं ॥

७ [ कूलङ्कषा, निर्झरिणी, रोधोवका, सरस्वती ४ स्त्री ), 'नदी' के ४ नाम हैं ] ॥

८ गङ्गा, विष्णुपदी, जहुतनया ( + जाह्नवी ), सुरनिम्नगा, भागीरथी,

१. ....'हृदिनी'.....'इति पाठान्तरम् ॥ २. 'स्रोतस्विनी'.....'इति पाठान्तरम् ॥

- १ कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।
- २ रेवा तु नर्मदा सोमोज्ज्वा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
- ३ करतोया सदानीरा ४ बाहुदा सैतवाहिनी ।
- ५ 'शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
- ६ शोणो हिरण्यवाहः स्यात्—

त्रिष्यगा, त्रिस्त्रोताः ( = त्रिस्त्रोतस् ), भोग्मसूः ( ८ स्त्री ), 'गङ्गा नदी' के ८ नाम हैं ॥

१ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वसा ( = शमनस्वस् । + यम-स्वसा, = यमस्वस् । ४ स्त्री ), 'यमुना नदी' के ४ नाम हैं ॥

२ रेवा, नर्मदा, सोमोज्ज्वा, मेकलकन्यका ( ४ स्त्री ), 'नर्मदा नदी' के ४ नाम हैं ॥

३ 'करतोया, सदानीरा ( २ स्त्री ), 'पार्वतीके विवाह-कालमें कन्यादानके जलसे निकली हुई नदी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ बाहुदा, सैतवाहिनी ( २ स्त्री ), 'कार्तवीर्यद्वारा निकाली हुई एक नदी विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ 'शतद्रुः ( + शितद्रुः ), शुतुद्रिः ( २ स्त्री ) 'सतलज नदी' के २ नाम हैं ॥

६ विपाशा, विपाट् ( = विपाश् । २ स्त्री ), 'विपाशा नदी' के २ नाम हैं ॥

७ शोणः ( + शोणभद्रः ), हिरण्यवाहः ( + हिरण्यवाहुः । २ पु ), 'सोन नामक नदी' के २ नाम हैं ॥

१. 'शुतुद्रिस्तु शतद्रुः स्यात्' इति क्षी० स्वा० सम्भते पाठभेदेऽपि मूलोक्त आ० दी०, महे० संमतपाठान्न नाम्नि भेदः' उभयथापि 'शतद्रुः, शुतुद्रिः' इत्यनयोरेवामिधानयोर्लोभादि-त्यवधेयम् ॥

२. '.....हिरण्यवाहुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. इयं 'करतोया' नदी पूर्वदेशस्था ब्रह्मपुत्रेण सङ्गता पुलस्त्यतीर्थयात्रायां तथैवोक्तेः । प्रथमं कर्कटे देवी त्र्यम्बं गङ्गा रजस्वला । सर्वा रक्तवहा नद्यः करतोयाऽम्बुवाहिनी' ॥ १ ॥

इति याज्ञवल्क्यस्मृत्योक्त्यालम्ब्यटोपटीकायां करतोयाऽम्बुवाहिनीत्युक्त्या 'सदानीरा' इत्यन्वर्थं नामेत्यवधेयम् ॥

४. वसिष्ठशापादिर्यं शतधा द्रुतेति पौराणिकोक्त्याऽनुसन्धानादस्याः 'शतद्रुः' इति नाम्नातमिति शेषम् ॥

—१ कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित् ।

२ शरावती वेन्नवती चन्द्रभागा<sup>१</sup> सरस्वती ॥ ३४ ॥  
कावेरी सरितोऽन्याश्च ३ सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः ।

४ द्वयोः प्रणाली पयसः पदभ्यां ५ त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥  
देविकायां सरयवां च भवे दाविकसारवौ ।

६ सौगन्धिकं तु कल्लारं ७ हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

८ स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजम् च ।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् ११ सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

१ कुल्या ( स्त्री ), 'नहर' का १ नाम है ॥

२ शरावती, वेन्नवती, चन्द्रभागा ( + चान्द्रभागी, चन्द्रभागी, चान्द्र-  
भागा, चन्द्रिका ), सरस्वती, कावेरी ( ५ स्त्री ), 'शरावती आदि प्रत्येक  
नदियों' का १-१ नाम है । अन्य भी 'कौशिकी, गण्डकी, गोदा, वेणी,  
चर्मण्वती, सिन्धु' आदि नदियाँ हैं ॥

३ सम्भेदः, सिन्धुसङ्गमः ( पु ), 'नदियोंके संगम' के २ नाम हैं ॥

४ प्रणाली ( पु स्त्री । अन्यमतमें स्त्री न ), 'पनारे या नाले' का  
१ नाम है ॥

५ दाविकः, सारवः ( २ त्रि ), 'देविका और सरयू नदीमें होने-  
वाले पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ सौगन्धिकम्, कल्लारम् ( न ), 'सायंकालमें फूलनेवाले श्वेतकमल'  
के २ नाम हैं ॥

७ हल्लकम्, रक्तसन्ध्यकम् ( २ न ) 'लाल कल्लार या त्रिकालमें  
फूलनेवाले रक्तपुष्प-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ उत्पलम्, कुवलयम् ( + कुवम्, कुवलम् । २ न ), 'श्वेत कमल या  
सामान्यतः कमल और कुमुदमात्र' के २ नाम हैं ॥

९ नीलाम्बुजम् ( = नीलाम्बुजमन् । + नीलाम्बुजम् ), इन्दीवरम्  
( + इन्दीवारम् । २ न ), 'नील कमल' के २ नाम हैं ॥

१० कुमुदम्, कैरवम् ( २ न ) 'श्वेत कमल, कुमुद या कोई' के  
२ नाम हैं ॥

१. '...चान्द्रभागी...' इति, '...चन्द्रभागी...' इति च पाठान्तरम् ॥

- १ शालूकमेषां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
- ३ जलनीली तु 'शेवालं शैवालोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥  
कुमुदिन्यां ५ नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः ।
- ६ वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥  
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥  
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
- ७ पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥  
रक्तोत्पलं कोकनदं ९ नालो नालम्—

१ शालूकम् ( न ), 'कमलमात्रके कन्द ( जड़ )' का १ नाम है ॥

२ वारिपर्णी, कुम्भिका ( २ स्त्री । + 'वारिपर्णः, कुम्भिकः, २ पु ), 'पुरइन' या जलकुम्भी' के २ नाम हैं ॥

३ जलनीली ( स्त्री ), शेवालम् ( न । + शेवालः, पु ) शैवालः ( पु । शेवलः, शैवलः ), 'सेवाल' के ३ नाम हैं ॥

४ कुमुद्वती, कुमुदिनी ( २ स्त्री ), 'कोई' के २ नाम हैं ॥

५ नलिनी ( + नडिनी ), बिसिनी, पद्मिनी ( ३ स्त्री ), आदि ('आदिसे 'सरोजिनी, कमलिनी, उत्पलिनी ( ३ स्त्री ), ..... का संग्रह है'), 'कमलिनी या कमल-समूह' के ३ नाम हैं ॥

६ पद्मम्, नलिनम्, भरविन्दम्, महोत्पलम्, सहस्रपत्रम्, कमलम्, शतपत्रम्, कुशेशयम्, पङ्केरुहम्, तामरसम्, सारसम्, सरसीरुहम्, बिसप्रसूनम्, राजीवम्, पुष्करम्, अम्भोरुहम् ( १६ पु न ), 'कमल' के १६ नाम हैं ॥

७ पुण्डरीकम्, सिताम्भोजम् ( २ न ), 'श्वेत कमल' के २ नाम हैं ॥

८ रक्तोत्पलम्, कोकनदम् ( २ न ), 'लाल कमल' के २ नाम हैं ॥

९ नालः ( पु ), नालम् ( न । + नाली, नाला, २ स्त्री ), 'कमलके डण्डल' के २ नाम हैं ॥

१. '.....शेवलं शेवालोऽथ.....' इति पाठान्तरम् ॥

२. '.....नाला नालमयास्त्रियाम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कुम्भको वारिपर्णः स्यादित्येके' इति क्षी० स्वा० वचनात् ॥

—१ अथास्त्रियाम् ।

मृणालं विसमब्जादिकदम्बे २ षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

३ करहाटः शिफाकन्दः ४ किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

५ संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

इति चारिवर्गः ॥ १० ॥



१ मृणालम्, विसम्, (+ विसम्, विशम् । २ पु न ), 'कमल आदिके डण्डल' के २ नाम हैं ॥

२ षण्डम् ( न पु ) 'कमलके फूल, पत्ती, डण्डल, जड़ आदि सब अवयवमात्र' का १ नाम है ॥

३ करहाटः, शिफाकन्दः (+ शिफा, स्त्री; कन्दः, पु न । २ पु), 'कमलकी जड़' के दो नाम हैं ॥

४ किञ्जल्कः, केसरः (+ केशरः । २ पु न ), 'कमलके 'केसर' (पराग) के २ नाम हैं ॥

५ संवर्तिका (स्त्री), नवदलम् (न), 'कमलके नये पत्ते' के २ नाम हैं ॥

६ बीजकोशः ( + बीजकोषः, बीजकोशः, बीजकोषः ), वराटकः (२ पु), 'कमलगट्टे' के २ नाम हैं ॥

इति चारिवर्गः ॥ १० ॥



## अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

३ उक्तं स्वर्ग्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाढ्यकम् ।  
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ १ ॥  
'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

## अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

१ मैने ( अमरसिंह ने ) 'स्वर् १, व्योम ३, दिक् ३, काल ४, धी ५, शब्दादि ६, नाढ्य ७, पातालभोगि ८, नरक ९ और वारि १०' इन 'दस वर्गों तथा इनके प्रसङ्गसे प्राप्त 'देवता, राक्षस, मेघ, विद्युत्' आदिको कहा है । ( 'शब्दादि' के 'आदि' शब्दसे रस, गन्ध, ... का संग्रह है' ) ॥

२ श्रीअमरसिंह के बनाये हुए, नाम (स्वर्, स्वर्ग, नाक, ...) और लिङ्ग ( 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और अव्ययादि' ) को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशासन' अर्थात् 'अमरकोष' नामक इस ग्रन्थमें 'स्वर्' आदि ( 'आदि' शब्दसे 'व्योम, दिक्, काल, ...' १० वर्गोंका और मु० मतसे

१. 'इत्यमरसिंहकृतौ.....समर्थितः' इत्ययं चरमः श्लोकः काण्डत्रयेऽपि क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, किन्तु तत्कृते 'अमरकोषोद्घाटन' नामके व्याख्याने प्रथमचरमाध्याययोरव्याख्यातो मूलमात्रमेवोपलभ्यते, भा० दी० अव्याख्यातोऽप्ययं प्रथमकाण्डमात्रे महे० व्याख्यात इत्यतो ग्रन्थकृता रचितो न वेति स्वयमनुसंधेयम् ॥

२. 'अत्र गणनया दशानामेव वर्णानामुपलब्धेः 'उक्तमि'ति प्रतीकमादाय 'अत्रैकादश वर्गाः' इति भा० दी० व्याख्यानं चिन्त्यम् । यद्वा मङ्गलाचरण-प्रतिज्ञा-परिभाषीयार्णां श्लोकानामेकं पृथग्वर्गमुररीकृत्य 'अत्रैकादश वर्गाः' इति तदुक्तेः सामञ्जस्यमित्यवधेयम् । 'पुण्यपत्तन'— मुद्रिते क्षीरस्वामिकृतामरकोषोद्घाटनाव्याख्याने तु व्योमदिग्वर्गावेकीकृत्यास्मिन् काण्डे नवैव वर्गाः प्रदर्शिताः ॥

३. प्राधान्यादस्मिन् काण्डे स्वर्गीयसाधारणवस्तुनिरूपणात् स्वरादि नाढ्यवर्गान्तं 'स्वर्गवर्गः' ततश्च पातालसम्बन्धिषडार्थानिरूपणात्पातालादि वारिवर्गान्तं 'पातालवर्गः' इत्येतौ द्वावेव वर्गौ मुकुटेनोररीकृतावित्यवधेयम् ॥



स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके 'अमरकोषे'  
प्रथमः स्वरादिकाण्डः समाप्तः ।



'पातालवर्ग' का संग्रह है' ) का यह प्रथम काण्ड ( भाग ) अङ्ग ( भेद और  
अपभेद ) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्रीरामस्वार्थमिश्रतनुजश्रीहरगोविन्दमिश्र-  
विरचितायां मणिप्रभाख्यामरकोषव्याख्यायां प्रथमः  
स्वरादिकाण्डः समाप्तः ॥



## अथ द्वितीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ वर्गाः पृथ्वीपुरस्माभृन्नौषधिमृगादिभिः ।

नृब्रह्मक्षत्रविट्शूदैः साङ्गापाङ्गरिहोदिताः ॥ १ ॥

१. अथ भूमिवर्गः ।

२ भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।

धरा धरित्रीधरणिःक्षोणिज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

१ इस द्वितीय काण्डमें अङ्गों और उपाङ्गोंके सहित 'पृथ्वी, पुर, पर्वत, वनौषधि, मृगादि' ('आदि' शब्दसे 'पच्ची, की' आदिका संग्रह हैं अथवा 'मृगादि' शब्द 'सिंहवाचक है ), मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; ये १० वर्ग अर्थात् 'भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग ४, ..... 'कहे गये हैं । ( 'भूमिके अङ्ग—'मृत्, शाखा और नगर' आदि तथा उपाङ्ग 'मृत्सा आदि; पुरके अङ्ग—'आपण' आदि तथा उपाङ्ग 'विपणी' आदि; पर्वतके अङ्ग—'शिला' आदि तथा उपाङ्ग 'मैनासिल, गेरु' आदि धातु; वनौषधिके अङ्ग—'वृक्ष' आदि तथा उपाङ्ग 'फूल, फल' आदि; मृगके अङ्ग—'रह' आदि; तथा उपाङ्ग 'लोम' आदि एवं 'मृगादि'के आदि पदसे संगृहीत पच्चीके अङ्ग—'कीट, फतीङ्गा' आदि तथा उपाङ्ग 'चञ्चु, पङ्क' आदि हैं; इसी तरह अन्यान्य वर्गोंका भी अङ्गोपाङ्ग समञ्चना चाहिये ) ॥

१. अथ भूमिवर्गः ।

२ भूः (= भू । + भूः, = भूर, अ०), भूमिः ( + भूमी), अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणिः ( + धरणी), क्षोणिः ( + क्षोणी,

१. 'मृगादि' शब्दस्यायमेवार्थः समुचितः, मृगान् पशून्तीति मृगादिरिति व्युत्पत्त्या 'मृगादि' शब्दस्य सिंहपर्यायकामसामञ्जस्यात् । अत एवाग्रे 'सिंहविर्ग'कथनं संगच्छतेऽन्यथा मृगादिवर्गकथनस्यौचित्यात् ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वा वसुन्धरा ।

गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्षमाऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

१ 'विपुला गह्वरी धात्री गौरिता कुम्भिनी क्षमा' (१)

भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा' (२)

२ मृन्मृत्तिकाऽप्रशस्ता तु मृत्सा मृत्खा च मृत्तिका ।

४ उर्वरा सर्वसस्याख्या ५ स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

६ ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ ७ स्थलं स्थली ।

चौणिः, चौणी ), ज्या ( + इज्या<sup>१</sup> ), काश्यपी, चितिः<sup>२</sup> सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वा, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, पृथिवी ( + पृथ्वी ), पृथ्वी, क्षमा, अवनिः ( + अवनी ), मेदिनी मही ( + महिः<sup>३</sup> । २७ स्त्री ), 'पृथ्वी, के २० नाम हैं ॥

१ [ विपुला, गह्वरी, धात्री, गौः ( = गो ), इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा ( + रत्नवती ), जगती, सागराम्बरा ( ११ स्त्री ) 'पृथ्वी, के ११ नाम हैं ] ॥

२ मृत् ( = मृद् ), मृत्तिका ( २ स्त्री ), 'मिट्टी' के नाम हैं ॥

३ मृत्सा, मृत्सा ( २ स्त्री ), 'अच्छी मिट्टी' के २ नाम हैं ॥

४ उर्वरा ( + ऊर्वरा । स्त्री ), उपजाऊ मिट्टी' का १ नाम है ॥

५ ऊषः ( पु ), क्षारमृत्तिका ( स्त्री, ) 'खारी मिट्टी' अर्थात् 'सादी मिट्टी, रेह' के १ नाम हैं ॥

६ ऊषवान् ( = ऊषवत् ), ऊषरः ( २ त्रि ), 'खारी मिट्टीवाले स्थान, अर्थात् 'ऊसर या रेहचट जमीन' के २ नाम हैं ॥

७ स्थलम् ( न ), स्थली ( स्त्री ), 'स्थल' के नाम हैं । ( 'अकृत्रिम भूमि' का 'स्थली' ( स्त्री ) यह १ नाम है, 'कृत्रिम भूमि' का 'स्थला' ( स्त्री ) यह १ नाम है और 'भूमिसामान्य' अर्थात् 'भूमिमात्र' का 'स्थलम्' ( न ) यह १ नाम है' ) ॥

१. 'इज्या इति मूर्खव्याख्या, 'ज्या भौर्वी 'ज्या वसुन्धरा' इति शाश्वतविरोधात्' इति श्री० स्ता० ॥

२. 'वौचिः पङ्क्तिर्माहिः केलिरित्याद्या ह्रस्वदीर्घयोः' इति बाचस्पत्युक्तेः ॥

१ समानौ मरुधन्वानौ २ द्वे खिलाप्रहतौ समे ॥ ५ ॥

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जयत् ।

४ लोकोऽयं भारतं वर्ष—

१ मरुः, धन्वा ( = धन्वन् । २ पु ), 'मरुस्थल' अर्थात् 'मारवाड़ देश या राजपूतानेकी ज़मीन' के २ नाम हैं ॥

२ खिलम् , अप्रहतम् (२ त्रि), 'बिना जुति हुई जमीन' के २ नाम हैं ॥

३ जगती ( स्त्री ), लोकः ( पु ) विष्टपम् ( + पु, + पिष्टपम् ), भवनम्, 'जगत् ( ३ न ), 'भूतल जगत्' के ५ नाम हैं ॥

४ 'भारतम् ( + भारतवर्षम् , भारतवर्षः, पु न । न ) 'हिन्दुस्तान' का १ नाम है । ( 'यह 'हिन्दुस्तान' जम्बूद्वीपका नवमांश है ।<sup>१</sup> वर्ष ९ हैं— भारत १, किंपुरुष २ हरिवर्ष ३ रम्य ४, हिरण्य ५, कुरु ६, भद्राश्व ७, केतुमाल ८ और इलाघृत ९ । इनमें क्रमशः ३ हिमालयके दक्षिण, ३ उत्तर, १-१ पूर्व तथा पश्चिम और १ मध्य भाग में है' ) ॥

१. एकं महाभूतं 'पृथ्वी' पञ्चमहाभूतविषयेन्द्रियात्मकं 'जगत्' इति 'पृथ्वीजगत्यो' भेदः ॥

२. 'उत्तरं' यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः' ॥ १ ॥ इति ।

वर्षं स्थानं विदुः प्राज्ञाः इमं लोकं च भारतम्' ॥ इति भारविश्व ।

३. तदुक्तम् । जम्बूद्वीपस्थानां नववर्षाणां नामानि —

'स्याद्भारतं किंपुरुषं हरिवर्षं च दक्षिणाः ।

रम्यं हिरण्यकुरू हिमाद्रेरुत्तराख्यः ॥ १ ॥

भद्राश्वकेतुमालौ तु द्वौ वर्षौ पूर्वपश्चिमौ ।

इलाघृतं तु मध्यस्थं सुमेरुयत्र तिष्ठति' ॥ २ ॥

इति वाचस्पतिः ॥

एषां सीमां भुवन् क्षी० स्वा० त्वष्टावेव वर्षाण्याह । तद्यथा—

'हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुन्तरे ।

नीलः श्वेतश्च शृङ्गीवान् गन्धमादनमष्टमम् ॥ १ ॥

इति सीमाविच्छिन्नान्यष्टौ वर्षाणि' ॥ इति ॥

—१ शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥

- देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य २ उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।  
 ३ प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात् ४ मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥  
 ५ आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।

१ 'प्राच्यः ( पु ), 'शरावती नदीके पूर्व और दक्षिण वाले देश' का १ नाम है ॥

२ 'उदीच्यः ( पु ), 'शरावती नदीके पश्चिम और उत्तर वाले देश' का १ नाम है ॥

३ प्रत्यन्तः, 'म्लेच्छदेशः ( २ पु ), 'म्लेच्छ देश' अर्थात् 'कामरूप आदि' के २ नाम हैं ।

४ 'मध्यदेशः मध्यमः ( पु ), 'मध्यदेश' के २ नाम हैं ॥

५ 'आर्यावर्तः ( पु ), पुण्यभूमिः ( स्त्री ), 'विन्ध्याचल और हिमालय पहाड़ के बीचवाले देश' के २ नाम हैं ॥

१. 'विन्ध्यहिमागयोः इति पाठान्तरम् ।

२, ३. उक्तञ्च काशिकायाम्—

'प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा ।

विदुषां शब्दसिद्धयर्थे सा नः पातु शरावती' ॥ १ ॥ इति ॥

४. तदुक्तं—चातुर्वर्ण्यव्यवस्थानं यस्मिन्देशे न विद्यते ।

तं म्लेच्छविषयं प्रादुरार्यावर्तमतः परम्' ॥ इति ॥

विषयो देशः ।

५. तदुक्तं मानुना—'हिमवद्विन्ध्योर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।

प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ ( २।२९ ) ॥

अत्र विनशनं तीर्थविशेषः, परे प्रसिद्धाः ॥

६. तदुक्तं मनुना—'आसमुद्राच्च वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात् ।

तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः' ॥ १ ॥ इति ( २।२२ ) ॥

तयोर्हिमवद्विन्ध्यपर्वतयोरित्यर्थः ॥

- १ नीवृत्जनपदो २ देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥  
 ३ त्रिधागोष्ठाधन्नद्वये नड्वान्नड्वल इत्यपि ।  
 ५ कुमुद्वान् कुमुद्वये ६ वेतस्वान् बहु वेतसे ॥ ९ ॥  
 ७ शाद्वलः शाद्वरिते ८ सजम्बाले तु पङ्क्तिः ।  
 ९ जलप्रायमनूपं स्यात् १० पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

१ नीवृत्, जनपदः ( + जानपदः । २ पु ), 'मनुष्योंके ठहरनेकी जगह-ग्राम, नगर' के २ नाम हैं ॥

२ देशः, विषयः ( २ पु ), उपवर्तनम् ( न ), 'देश' अर्थात् 'ग्रामके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

३ यहाँसे लेकर 'गोष्ठं गोस्थानम्...' ( २।१।१२ ) के पहलेतक 'त्रिषु'का अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ नड्वान् ( नड्वत् ), नड्वलः ( २ त्रि ), 'नरसल या नरकट जिस देशमें अधिक हों, उस देश' के २ नाम हैं ॥

५ कुमुद्वान् ( = कुमुद्वत्, त्रि ), 'जिस देशमें कुमुद अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

६ वेतस्वान् ( = वेतस्वत्, त्रि ), 'जिस देशमें वेत अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

७ शाद्वलः ( + शाद्वलः । त्रि ), 'नई घासोंसे ढरा भरा स्थान या देश' का १ नाम है ॥

८ पङ्क्तिः ( त्रि ), 'कीचड़वाले देश या स्थान' का १ नाम है ॥

९ जलप्रायम्, 'अनूपम् ( २ त्रि ), 'बहुत जलवाले स्थान या अनेक प्रकारके पेड़ लता और झरनेवाले जङ्गलसे युक्त सब तरहके अन्न पैदा होनेवाले देश' के २ नाम हैं ।

१० कच्छः ( पु । + न ), 'बहुत पानीवाले स्थानके समान नदी आदिके पासवाले बगीचा इत्यादि' का १ नाम है । ( 'भा० दी० मतसे 'जलप्रायम्' आदि २ नाम उक्तार्थक हैं' ) ॥

१. तदुक्तम्—'नानाद्रुमलतावीरुनिर्झरप्रान्तशीतलैः ।

वनैर्व्याप्तमनूपं स्यात्सस्यैर्व्रीहिवनादिभिः' ॥ १ ॥ इति ।

- १ स्त्री शर्करा शर्करिलः २ शार्करः शर्करावति ।  
 देश पवादिमात्रेवेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥  
 ४ देशो नद्यम्बुवृष्टयम्बुसम्पन्नद्वीहिपालितः ।  
 स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥  
 ५ सुराक्षि देशे राजन्वान् स्यादुत्ततोऽन्यत्र राजवान् ।  
 ७ गोष्ठं गोस्थानकं ८ तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥  
 ९ पर्यन्तभूः परिसरः—

१ शर्करा ( नि० स्त्री ), शर्करिलः ( त्रि ), 'अधिक बालूवाले या छोटे-छोटे कङ्कड़वाले या रेतीले देश' के २ नाम हैं ॥

२ शार्करः, शर्करावान् ( = शर्करावत् । २ त्रि ), 'बालूवाले देश इत्यादि' ( 'आदि' शब्दसे बालूवाले पदार्थ आदिका संग्रह है ) के नाम हैं ॥

३ इसी तरह 'सिकता' आदि शब्दसे भी तर्ककर समझना चाहिये । ( यथा—'सिकताः ( नि० स्त्री । + नि० ब० व० ), सैकतिलः ( त्रि ), 'बालू वाले देश' के २ नाम हैं । सैकतः, सिकतावान् ( = सिकतावत् । २ त्रि ) बालू वाले देश आदि' के दो नाम हैं ) ॥

४ नदीमातृकः, देवमातृकः ( २ त्रि ), 'नदी और नहर आदिके पीनीसे खेत सिंचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का तथा वर्षाके पानीसे खेत सींचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ राजन्वान् ( राजन्वात्, त्रि ), 'धर्मात्मा, शीलवान् और सदा-चारी राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

६ राजवान् ( = राजवत्, त्रि ), 'सामान्य राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

७ गोष्ठम्, गोस्थानकम् ( २ न ) 'गौओंके रहनेके स्थान-गोशाला आदि' के २ नाम हैं ॥

८ गौष्ठीनम् ( न ), 'जहाँ पहले गौ रहती हो, उस स्थान' का नाम है ॥

९ पर्यन्तभूः ( स्त्री ), परिसरः ( पु ) नदी और पहाड़ आदिके पासकी भूमि' के २ नाम हैं ॥

## —१सेतुराली खियां पुमान् ।

- २ वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुनपुंसकम् ॥ १४ ॥  
 ३ अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।  
 सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥  
 ४ अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।  
 ५ व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥  
 ६ अपन्थास्त्वपथं ७ तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।  
 ८ प्रान्तरं दूरशून्याऽध्वाकान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

१ सेतुः ( पु ), आलिः ( + आली । खी ), 'पुल' के २ नाम हैं ॥

२ वामलूरः, नाकुः ( २ पु ), वल्मीकम् ( + वल्मीकम् । पु न ), 'बामी, बम्बौट, दिमकाण' अर्थात् 'दीमकों द्वारा इकट्ठी की हुई मिट्टी के ढेर' के ३ नाम हैं ॥

३ अयनम्, वर्त्म ( = वर्त्मन् । २ न ), मार्गः, अध्वा ( = अध्वन् ), पन्थाः ( = पथिन् । + पथः । ३ पु ), पदवी ( + पदविः ), सृतिः, सरणिः ( + शरणिः ), पद्धतिः ( + पद्धती ), पद्या, वर्तनी, ( + वर्तनिः, वर्त्मनिः ), एकपदी ( + एकपात् = एकपाद् । ७ खी ), 'मार्ग, रास्ते' के १२ नाम हैं ॥

४ अतिपन्थाः ( = अतिपथिन् ), सुपन्थाः ( = सुपथिन् ), सत्पथः ( ३ पु ), 'अच्छे मार्ग' के ३ नाम हैं ॥

५ व्यध्वः, दुरध्वः, विपथः, कदध्वा ( = कदध्वन् ), कापथः ( + कुपथः । ५ पु ), 'खराब मार्ग' के ५ नाम हैं ॥

६ अपन्थाः ( = अपथिन्, पु ), अपथम् ( न ), 'कुमार्ग खराब रास्ते' के २ नाम हैं ॥

७ शृङ्गाटकम्, चतुष्पथम् ( २ न ), 'चौरास्ता या चौक' के २ नाम हैं ॥

८ प्रान्तरम् ( न ), जिसमें बहुत दूरतक छाया और पानी नहीं मिले, उस रास्ते' का १ नाम है ।

९ कान्तारम् ( पु न ), चोर, कण्टक और झाड़ी इत्यादिसे दुर्गम रास्ते' का १ नाम है ॥

१. 'विपथ—कापथ' च डोबमाडुः, यदामनः—( 'पथः संख्याव्ययादेः' ) 'सङ्ख्याभ्यवृत्तस्य पथः डोबता' इति स्त्री० स्वा० 'विप्रथकापथ' शब्दयोर्नपुंसकत्वमप्युक्तवान् ॥



- १ गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं २ नल्वः 'किष्कुचतुःशतम् ।  
 ३ घण्टापथः संसरणं ४ तत्पुरम्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥  
 ५ 'द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी (३)  
 दिवस्पृथिव्यौ ६ गज्जा तु रुमा स्यालुवणाकरः' ( )  
 इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

—o—o—o—

- १ 'गव्यूतिः ( स्त्री । + पु नः क्रोशस्, गोमतम्, २ न ), 'दो क्रोश लम्बे रास्ते या स्थान' का १ नाम है ॥  
 २ 'नल्वः ( पु । + न ), 'चार हजार हाथ लम्बे रास्ते या रस्सी आदि' का १ नाम है ॥  
 ३ 'घण्टापथः ( पु ), संसरणम् ( न ) 'राजमार्ग' के २ नाम हैं ॥  
 ४ 'उपनिष्करम् ( न ) गांवके राजमार्ग' का १ नाम है ॥  
 ५ [ द्यावापृथिव्यौ, रोदस्यौ, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिव्यौ ( ५ स्त्री नि० द्विव० ), 'आकाश और पृथ्वीके समुदाय' के ५ नाम हैं ] ॥  
 ६ [ गज्जा, रुमा ( २ स्त्री ), लवणाकरः ( पु ), 'खारा समुद्र' के ३ नाम हैं ] ॥  
 इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

—o—o—o—

१. 'किष्कुचतुःशती' इति काचित्कः पाठः ।  
 २. अर्थक्षेपकः स्त्री० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यते, तत्र 'दिवस्पृथिव्यौ गज्जा तु' इत्यस्य स्थाने 'दिवस्पृथिव्याः संक्षेपम्' इति पाठमेदश्चोक्त इति ज्ञेयम् ॥  
 ३. 'अङ्गोपाङ्गोपेक्षया भूमेः प्राधान्यादाह—'इति भूमिवर्ग' इतीत्यवधेयम् ॥  
 ४. तथा च बृहस्पतिः—  
 'धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशं, क्रोशद्वयं पुनः । गव्यूतं स्त्री तु गव्यूतिर्गौरुतंगोमतं च तत् ॥ १ ॥ इति ।  
 'धनुर्हस्तचतुष्टयम्' इति ।  
 'द्राभ्यां धनुःसहस्राभ्यां गव्यूतिः पुंसि भाषितः ॥ इति शब्दान्वयः' इति ॥  
 एवञ्च—४ हस्ताः = १ धनुः । १००० धनूषि = १ क्रोशः । २ क्रोशौ वा २००० धनूषि = १ गव्यूतिः ।  
 ५. 'नल्वं हस्तशतम्' इति भा० दी० । 'किष्कुहस्तस्तेषां चतुःशती 'नल्वम्' इति माला । कात्यस्तु—'नल्वं [ विश ] हस्तशतम्' इति स्त्री० स्वा० । 'नल्वं विश हस्तशतम्' इति मुकुटः ॥  
 ६. 'दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः' इति चाणक्य इति ॥  
 ७. 'धुधैः संसरणं बर्तमं गजादीनामसंकुलम् । पुरोपनिष्करं चोक्तम्' इति स्त्री० स्वा० ॥

## २. अथ पुरवर्गः ।

- १ पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।  
स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥  
तच्छास्त्रानगरं ३ वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।  
४ आपणस्तु निषद्यायां ५ विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥  
६ रथ्या प्रतोली विशिखा ७ स्याच्च यो वप्रमस्त्रियाम् ।

## २. अथ पुरवर्गः ।

१ पूः (= पुर, स्त्री), पुरी, नगरी ( २ स्त्री न ), पत्तनम् ( + पट्टनम् ), पुटभेदनम्, स्थानीयम् ( ३ न ), निगमः ( पु ), 'नगर' के ७ नाम हैं । ( 'जहाँ अनेक तरहके कारीगर व्यापारी आदि वसते हैं उसके 'पूः, पुरी, नगरी' ये ३ नाम हैं, 'जहाँ राजाके नौकर आदि वसते हैं उसके 'पत्तनम्, पुटभेदनम्' ये २ नाम हैं और खाई या चहारदीवारी आदिसे घिरे हुए नगरके 'स्थानीयम्, निगमः' ये २ नाम हैं' यह भी किसी २ का मत है' ) ॥

२ शास्त्रानगरम् ( न ), 'राजधानीके समीपवर्ती छोटे-छोटे नगर' का १ नाम है ॥

३ वेशः, वेश्याजनसमाश्रयः ( भा० दी० । २ पु ), 'वेश्याओंके वास-स्थान' के २ नाम हैं ॥

४ आपणः ( पु ), निषद्या ( स्त्री ) 'बाज़ार, हाट या या ग्राहकोंके खरीदने योग्य वस्तु ( सौदा ) के रखनेके स्थान' अर्थात् 'गोदाम' के २ नाम हैं ॥

५ विपणिः ( + विपणी ), पण्यवीथिका ( + पण्यवीथी । २ स्त्री ), 'दुका-नोंकी पङ्क्ति या बाज़ार का रास्ता या बाज़ारसे भिन्न सौदा बेचनेके किसी भी स्थान' के २ नाम हैं । ( 'आपण' आदि ४ नाम 'बाज़ार' के हैं, यह भी मत है' ) ॥

६ रथ्या, प्रतोली, विशिखा ( ३ स्त्री ), 'गल्ली' के ३ नाम हैं । ( 'विपणिः आदि ५ नाम एकार्थक हैं, यह भी मत है' ) ॥

७ चयः ( पु ), वप्रम् ( न पु ), 'धूस' अर्थात् 'किलेके चारों तरफ ऊँचे किये हुये मिट्टीके ढेर' के २ नाम हैं ॥

- १ प्राकारो वरण 'सालः २ प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥  
 ३ भित्तिः स्त्री कुड्यः पृष्ठकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।  
 ५ गृहं गेहोदवसितं वेश्म सश निकेतनम् ॥ ४ ॥  
 'निशान्तवस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।  
 गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकायनिलयाः ॥ ५ ॥  
 ६ वासः कुटी द्वयाः शाला सभा ७ संजवनं त्विदम् ।  
 चतुःशालं ८ मुनीनां तु पर्णशालोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

१ प्राकारः, वरणः, सालः ( + शालः । ३ पु ), 'बाँस या काँटा आदि-  
 के घेरे' के ३ नाम हैं ॥

२ प्राचीनम् ( + प्राचीरम् । न ), 'काँटा आदिसे घिरे हुए नगरके  
 समीपवाले स्थान' का १ नाम है ॥

३ भित्तिः ( स्त्री ), कुड्यम् ( न ), 'दीवाल' के २ नाम हैं ॥

४ पृष्ठकम् ( + पृष्ठकम्, पृष्ठकम् । न ), 'मजबूतीके लिये भीतरमें  
 दृढ़ड़ी, लोहा, लकड़ी या टीन आदि देकर बनाई हुई दीवाल' का १  
 नाम है ॥

५ गृहम्, गेहम्, उद्वनयितम्, वेश्म ( = वेश्मन् ), सश ( = सशन् )  
 निकेतनम्, निशान्तम्, वस्त्यम् ( + वस्त्यम्, वस्त्यम् ) सदनम् ( + सादनम् )  
 भवनम्, अगारम्, मन्दिरम् ( १२ न ), गृहाः ( पु नि० ब० ब० ), निकायः  
 ( + निकायः ), निलयः, आलयः ( ३ पु ), 'मकान' के १६ नाम हैं ॥

६ वासः ( पु ), कुटी ( कुटिः । पु स्त्री ), शाला, सभा ( २ स्त्री ),  
 'सभाभवन या बैठकस्थानः' के ४ नाम हैं । ( 'गृहम्' ..... २० नाम  
 'मकान' ही के हैं, यह भी मत है ) ॥

७ संजवनम्, चतुःशालम् ( + चतुःशाला, स्त्री । २ न ), चौतरफा घर-  
 वाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

८ पर्णशाला ( स्त्री । + न ), उटजः ( पु न ), 'पत्तोंसे बनाई हुई साधुओं-  
 की कुटी' के २ नाम हैं ॥

१. 'सालः प्राचीरं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कुलोदवसितं वस्त्यम्' इति वाचस्पत्यनुरोधात्—'निशान्तवस्त्यसदनम्' इत्यपीति  
 श्री० स्वा० आ० ॥

- १ चैत्यमायतनं तुल्ये २ वाजिशाला तु मन्दुरा ।
- ३ आवेशनं शिल्पिशाला ४ प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
- ५ मठश्छात्रादिनिलयो ६ गङ्गा तु मदिरागृहम् ।
- ६ गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
- ९ 'कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूः चन्द्रशाला शिरोगृहम्' (५)
- ११ वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

- १ चैत्यम्, आयतनम् ( २ न ), 'यज्ञस्थान—विशेष' के २ नाम हैं ॥
  - २ वाजिशाला, मन्दुरा ( २ स्त्री ), 'अस्तबल' के २ नाम हैं ॥
  - ३ आवेशनम् (न), शिल्पिशाला ( + शिल्पशाला । स्त्री । + न ), 'कारो-  
गरोके घर' के २ नाम हैं ॥
  - ४ प्रपा, पानीयशालिका ( + पानीयशाला । २ स्त्री ), 'पौसरा, प्याऊँ,  
या पानी रखनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥
  - ५ मठः ( पु ), 'मठ' अर्थात् 'विद्यार्थियों या संन्यासियोंके रहनेकी जगह'  
के २ नाम हैं ॥
  - ६ गङ्गा ( स्त्री ), मदिरागृहम् ( न ), कलवरिया या मदिराके घर'  
के २ नाम हैं ॥
  - ७ गर्भागारम्, वासगृहम् ( २ न ), 'घरके बीचके हिस्से' अर्थात्  
'तहखाने' के २ नाम हैं ॥
  - ८ अरिष्टम्, सूतिकागृहम् ( + सूतिकागृहम् । २ न ), 'सौरीके घर'  
अर्थात् 'जिसमें लकड़ा पैदा हुआ हो उस घर' के २ नाम हैं । ('किसीके मतसे  
'गर्भागारम्,.....' ४ शब्द एकार्थक हैं' ) ॥
  - ९ [ कुट्टिमः ( पु न ), 'पत्थर या संगमर्मर आदिके बने हुए फर्श'  
का १ नाम है ] ॥
  - १० [ चन्द्रशाला ( स्त्री ), शिरोगृहम् ( न ), 'अटारी या घरके ऊपरी  
छत' के २ नाम हैं ] ॥
  - ११ वातायनम् ( न ), गवाक्षः ( पु ), 'झरोखे' के २ नाम हैं ॥
  - १२ मण्डपः ( पु न ), जनाश्रयः ( पु ), 'मण्डप' के २ नाम हैं ॥
- 
१. 'शिल्पिशालम्' इति पाठान्तरम् । 'शिल्पशाला' इति सभ्यः पाठ' इति श्री० स्वा० ॥
  २. अयं श्री० स्वा० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

- १ 'हर्म्यादि धनिनां वासः २ प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥  
 ३ सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।  
 ५ स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्धावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥  
 'विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसङ्गनाम् ।  
 ६ अन्तःपुरं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥  
 शुद्धान्तश्चावरोधश्च ७ स्याददृष्टः क्षोममस्त्रियाम् ।  
 ८ प्रघाणप्रघणालिन्दः वहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

१ हर्म्यम् ( न ), आदि ( 'आदि' शब्दसे 'स्वस्तिकम्, अष्टालिकम्, वास-  
 गृहम् ( ३ न ), ..... 'धनियोंके रहनेके स्थान' का १ नाम है ॥

२ प्रासादः ( पु ), 'देवताओं और राजाओंके निवासस्थान या  
 कोठे' का १ नाम है ॥

३ सौधः ( पु न ), राजसदनम् ( न ), 'राजाके घर' के २ नाम हैं ॥

४ उपकार्या, उपकारिका ( २ स्त्री ) 'तम्बू, कनात, सामियाना' के  
 २ नाम हैं । ( 'सौधम्, ..... ' ४ शब्द 'राजगृह' के नाम हैं ) ॥

५ स्वस्तिकः, सर्वतोभद्रः, नन्धावर्तः, आदि ( 'आदि' शब्दसे 'रूपकः,  
 वर्द्धमानः, ..... ), विच्छन्दकः ( + विच्छर्दकः । ४ पु ), 'धनियोंके गृहों'  
 के १-१ नाम हैं । ( 'चारों तरफसे दरवाजा और तोरणवाले घरको 'स्वस्तिक',  
 अनेक मंजिले घरको 'सर्वतोभद्र', गोलाकार घरको 'नन्धावर्त' और बड़े तथा  
 सुन्दर घरको 'विच्छन्दक' कहते हैं ) ॥

६ अन्तःपुरम्, अवरोधनम् ( २ न ), शुद्धान्तः, अवरोधः ( २ पु ),  
 'रनिवास' के ४ नाम हैं ॥

७ अदृष्टः ( पु ), क्षोमम् ( + क्षौमम् । न पु ), 'अटारी' के २ नाम हैं ॥

८ प्रघाणः, प्रघणः, अलिन्दः ( + आलिन्दः । ३ पु ), 'पटडेहर' अर्थात्  
 'चौखटकी बाहरी जगह' के ३ नाम हैं ॥

१. पतत्पूर्वं 'मत्ताकम्बोऽपाश्रयः स्यात्प्रमीवो मत्तवारणः' इति श्लेषकः क्षी० स्वा०  
 व्याख्याने उपलभ्यते ॥

२. 'विच्छर्दकप्रभेदा हि' इति पाठाभ्तरम् ॥

- १ गृहावग्रहणी 'देहल्यरङ्गणं चत्वरजिरे ।
- २ अधस्ताद्वारुणि शिला ४ नासा दारुपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
- ५ प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात् ६ पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।
- ७ वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

१ गृहावग्रहणी, देहली ( २ स्त्री ), 'डेहरी या दरवाजेके नीचेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

२ अङ्गणम् ( महे० । + अङ्गनम्, भा० दी० स्त्री० २ न०; । + प्राङ्गणम्, प्राङ्गणम् ), चत्वरम्, अजिरम् ( ३ न ) 'आँगन चवूतरे' के ३ नाम हैं ॥

३ शिला ( + शिली ! स्त्री ), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके नीचेवाले काठ लोहे या पत्थर' का १ नाम है ॥

४ नासा ( स्त्री ), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके ऊपरवाले काष्ठ, लोहे या पत्थर' का १ नाम है ।

५ प्रच्छन्नम्, अन्तद्वारम् ( २ न ), 'खिड़की' के २ नाम हैं ॥

६ पक्षद्वारम्, पक्षकम् ( + पु, स्त्री० स्या० भा० दी० २ न ), 'मुख्य द्वारके बगलवाले द्वार' के २ नाम हैं ॥

७ वलीकम् ( + पु ), नीध्रम्, पटलप्रान्तम् ( ३ न ), 'छान्ह ओरी, या घोड़मुँहा' के ३ नाम हैं ॥

८ पटलम् ( न ), छदिः ( = छदिस्, स्त्री स्त्री० स्या०, नपुं० भा० दी०, महे० ) : 'छावना, छाजन' के २ नाम हैं ॥

१. 'देहल्यङ्गणम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'पक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. णान्तस्याङ्गणशब्दस्य पृषोदरादित्वात्सिद्धिः । 'अङ्गनं प्राङ्गणे याने कामिन्यामङ्गना मता' इति विश्वमेदिन्युक्तेः, 'अङ्गनं प्राङ्गणे यानेऽप्यङ्गना तु नितम्बिनी' इति अनेकार्थसंग्रहे हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च नान्तोऽपि 'अङ्गन' शब्द इत्यवधेयम् । अधिकं व्याख्यासुवाटिप्पणे द्रष्टव्यम् ।

४. 'प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पक्षद्वारं तदुच्यते' इति कात्याय 'पक्षद्वार' शब्दः पूर्वान्वयीत्यन्ये' इति भा० दी० । तत्र शोभनम्, 'त्वन्ताथादि न पूर्वभाक्' ( १।१।४ ) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञा-विरोधात् । 'तोः' स्थाने 'च' पाठमाश्रित्याविरोधोऽपीत्यवधेयम् ॥

५. 'छदिः स्त्रियामेव ( लि० सू० १३५ ) इत्यत्र 'इयं छदिः' इत्यादिना 'छदिः' शब्दसाधुत्वमुक्त्वा 'पटलं छदिः' इत्यमरकोषे 'पटल'साहचर्यात् 'छदिषः' स्त्रीबतां वदन्तोऽमरव्याख्या-

- १ गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।
- २ कपोतपालिकायां तु विटङ्गं पुत्रपुंसकम् ॥ १५ ॥
- ३ स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः ४ स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

१ गोपानसी, <sup>१</sup>बलभी ( + बलभिः, <sup>२</sup>बडभी । २ स्त्री ) 'घरन, कैची या छानेके लिये विये हुए टेढ़े काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

२ कपोतपालिका ( स्त्री ), विटङ्गम् ( न पु ), 'कवूनर आदि पक्षियों के लिये लकड़ी आदिके बनाए हुए घर' के २ नाम हैं ॥

३ द्वाः ( = द्वार स्त्री ), द्वारम् ( न ), प्रतीहारः ( + प्रतिहारः । पु ), 'दरवाजे' के ३ नाम हैं ॥

४ वितर्दिः ( + वितर्दी ), वेदिका ( २ स्त्री ), 'वेदी चौतरा' के २ नाम हैं ॥

तार उपेक्षया' इति मट्टोजीदीक्षितः । 'छदिः स्त्रियामेव' ( लि० सू० १३५ ) इत्यत्र एवपदमन्तराऽपि सूत्रोक्त्या छदिषः स्त्रीत्वे लब्धे 'पटलं छदिः (अमर २।२।१४) इत्यत्र पटलसाहचर्यात्स्त्रीत्वसन्देह इति तन्निवारणाय सूत्रे 'एव'कारस्तदुच्यते' अमरव्याख्यातार उपेक्षया' इति सुबोधिनीकारः । 'पटलच्छदिषी समे' ( अमि० चिन्तामणौ ४।७६ ) इत्यस्य 'पटयति स्थगयति पटलं त्रिलिङ्गः 'मदिकन्दि—' ( उणा० सू० ४६५ ) इत्यलः, पटं लातीति वा ॥१॥ छादतेऽनेनच्छदिः क्लीबलिङ्गः 'अचिशुचि—' ( उ० सू० २६५ ) इति इस् 'छदेरिस्मन्—' ( पा० सू० ४।२।३२ ) इति ह्रस्वः' इति व्याख्यानं कृतम् । वाचस्पत्यभिधाने च 'छदिः' स्त्री, छद-कि, 'छदिषि पटले' ( चाल ), अमरः, 'छदिः स्त्रियाम्' ( लि० सू० १३६ ) पा० वक्तरेदन्तताऽस्य' इति, 'छदिष्, न०, छद् इति 'पटले सान्तं क्लीबं' रायमुकुटः । 'इन्द्रस्य छदिसि' यजु० ५।२।२ गृहे निषण्डः, इति चोक्तत्वात् इकारान्तः 'छदि' शब्दः स्त्रीलिङ्गः, सकारान्तश्च 'छदिस्' शब्दः क्लीबलिङ्गः, इत्यायातम् । स्त्री० स्वा० मु० क्लीबत्वम् महे० भा० दी० स्त्रीत्वमामनन्ति, तथा व्याख्यामुधाटिप्पणीकाराः पं० शिवदत्ता अपि स्त्रीत्वे अन्यकारप्रतिज्ञाभङ्गापत्त्या लिङ्गस्य लोकाश्रयत्वाङ्गीकारात् 'छदिः स्त्रियाम्' ( लि० सू० १३५ ) इत्यस्याकिञ्चिकरत्वेन तस्य क्लीबत्वमेवाङ्गीकृतवन्तः । वस्तुतस्तु वाचस्पत्युक्तयुक्त्या इकारान्तच्छदि'शब्दस्य स्त्रीत्वाङ्गीकारे सकारान्तच्छदिः' शब्दस्य क्लीबत्वाङ्गीकारे च दीक्षितादिविरोधेऽपि नैव अन्यकारप्रतिज्ञाभङ्गः, नापि स्त्री० स्वा० मुकुटयोर्विरोध इत्यवधेयम् ॥

१. मुकुटेनास्य पर्यायता नाङ्गीकृता ॥

२. 'ओको गृहं पितं चालो वडभी चन्द्रशालिका' इति त्रिकाण्डशेषात्,

'शुद्धान्ते वडभी चन्द्रशाले सौषोर्ध्ववेश्मनि' इति रमसाच्च ॥

- १ तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं २ पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥  
 ३ कूटं पूर्व्वारि यद्वस्तिनखस्तस्मिन्नध्य त्रिषु ।  
 कपाटमररं तुल्ये ५ तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥  
 ६ आरोहणं स्यात्सोपानं ७ निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।  
 ८ संमार्जनी शोधनी स्यात् ९ संकरोऽवकरस्तया ॥ १८ ॥  
 क्षिते १० मुखं निःसरणं ११ सन्निवेशो निकर्षणम् ।

१ तोरणः ( पु न ), बहिर्द्वारम् ( न ), 'तोरण, बाहरी फाटक' के २ नाम हैं ॥

२ पुरद्वारम्, गोपुरम् ( २ न ), 'नगरके बड़े फाटक' के २ नाम हैं ॥

३ हस्तिनखः ( पु ), 'सुखपूर्वक चढ़नेके लिये राजद्वार या नगर-द्वारपर बनाई हुई ढालू जमीन' का १ नाम है ॥

४ कपाटम् ( + कवाटम् ), अररम् ( अररी ( स्त्री ), अररिः ( पु ) । २ त्रि ), 'किवाड़' के २ नाम हैं ॥

५ अर्गलम् ( न स्त्री ), 'किल्ली' के २ नाम हैं ॥

६ आरोहणम् सोपानम्, ( २ न ), 'सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

७ निश्रेणिः ( + निश्रेणी ), अधिरोहिणी ( + अधिरोहणी । २ स्त्री ) 'काठकी सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

८ संमार्जनी, शोधनी ( २ स्त्री ), 'झाड़' के २ नाम हैं ॥

९ संकरः ( + संकारः ) अवकरः ( २ पु ), 'कतवार, बहारन' के २ नाम हैं ॥

१० मुखम्, निःसरणम् ( २ न ), 'घर आदिके प्रधान द्वार' के २ नाम हैं ॥

११ सन्निवेशः ( पु ), निकर्षणम् ( न ), 'ठहरने योग्य स्थान' के २ नाम हैं ॥

१. 'तद्विष्कम्भ्यर्गलम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी' इति पाठान्तरम् ॥  
 ३. 'संकरोऽवकरः' इत्यपि पाठान्तरम् ॥



१ समौ संवसथग्रामौ २ वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥

३ 'ग्रामान्तमुपशस्यं स्यात् ४ सीमसीमे स्त्रियामुभे ।

५ घोष आभीरपल्ली स्यात् ६ पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ शैलवर्गः ।

७ महीध्रे शिखरिक्कमाभृदहार्यधरपर्वताः ।

अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

१ संवसथः, ग्रामः ( २ पु ), ग्राम के २ नाम हैं ॥

२ वेश्मभूः ( स्त्र ), वास्तुः ( पु न ), 'घरकी जमीन' के २ नाम हैं ॥

३ ग्रामान्तम् ( + पु ), उपशस्यम् ( २ न ), 'गाँवके पासवाली जमीन' के २ नाम हैं ॥

४ सीमा ( = सीमन् ), सीमा ( २ स्त्री ), 'सिवान, सीमा, सरहद्द' के २ नाम हैं ॥

५ घोषः ( पु ), आभीरपल्लीः ( + आभीरपल्ली । स्त्री ), 'अहीरोंके झोपड़े या गाँव' के २ नाम हैं ॥

६ पक्कणः, शबरालयः ( २ पु ), 'कोल, भील, किरात आदि म्लेच्छ जातियोंके घर' के २ नाम हैं ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ शैलवर्गः ।

७ महीध्राः, शिखरी ( = शिखरिन् ), क्कमाभृत् ( + भूभृत् ), अहार्यः, धरः, पर्वतः, अद्रिः, गोत्रः, गिरिः, ग्रावा ( = ग्रावन् ), अचलः, शैलः, शिलोच्चयः, ( १३ पु ), 'पहाड़' के १३ नाम हैं ॥

१. 'ग्रामान्त उपशस्यं स्यात्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ लोकालोकश्चक्रवालत्रिकूटत्रिककुत्समौ ।  
 २ अस्तस्तु चरमक्षमाभृद्धुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥  
 ५ हिमवाणिषधो विन्ध्यो 'माल्यवान् पारियात्रकः ।  
 गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥  
 ६ पाषाणप्रस्तरप्रावापलाशमानः शिला दृषत् ।  
 ७ कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं ८ 'प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥  
 ९ कटकः १० स्नुः प्रस्थः 'सानुरखियाम् ।

१ लोकालोकः, चक्रवालः ( + चक्रवादः । २ पु ), 'सात द्वीपवाली पृथ्वीको घेरे हुए पहाड़' के २ नाम हैं ॥

२ त्रिकूटः, त्रिकुत् (=त्रिकुट् १-२ पु), 'त्रिकूट पहाड़' के २ नाम हैं ॥

३ अस्तः, चरमक्षमाभृत् ( २ पु ), 'अस्ताचल' के २ नाम हैं ॥

४ उदयः, पूर्वपर्वतः ( २ पु ), 'उद्याचल' के २ नाम हैं ॥

५ हिमवान् (= हिमवत्), निषधः, विन्ध्यः, माल्यवान् (=माल्यवत्), पारियात्रकः ( + पारियात्रिकः), गन्धमादनम् (न । + पु), हेमकूटः (शेष पु), 'हिमालय, निषध आदि पहाड़ों' का क्रमशः १-१ नाम है । ( 'अन्य शब्दोंसे 'मन्दरः, मलयः, सहायः, चित्रकूटः, मनाकः (५ पु), ..... का संग्रह है' ) ॥

६ पाषाणः, प्रस्तरः, प्रावा (= प्रावन्), उपलः, अश्मा (= अश्मन् । ५ पु), शिला, दृषत् (= दृषद् । २ स्त्री), 'पत्थर' के ७ नाम हैं ॥

७ कूटः ( पु न ), शिखरम्, शृङ्गम् ( २ न । + ३ पु न ), 'पहाड़की चोटी' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रपातः, अतटः ( + तटः ), भृगुः ( ३ पु ), 'पहाड़से गिरने योग्य स्थान' के ३ नाम हैं ॥

९ कटकः ( पु न ), 'पहाड़के मध्यभाग' का १ नाम है ॥

१० स्नुः, प्रस्थः, सानुः ( ३ पु न ), पहाड़के समतल भूमिके

१. 'माल्यवान् पारियात्रिकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रपातस्तु तटो भृगुः' इति पाठान्तरम् । तत्र 'प्रपातयेत यस्मात्तटात्स भृगुरिति विग्रहो ज्ञेयः । मूलपाठे च 'प्रपातयस्मादिति प्रपातः, न तटमत्रैत्यतट इत्ये' विग्रहो ज्ञेयः ॥

३. 'सानुरखियौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. क्षीरस्वामिभानुबिदीक्षितौ तु 'स्नुः प्रस्थः सानुरखियौ' इति पठित्वा 'द्वित्वात्प्रस्थोऽ-

१ उत्सः प्रस्त्रवणं २ वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥

३ दरी तु कन्दरो वा स्त्री ४ देवखातबिले गुहा ।

गहरं ५ गण्डशैलास्तु व्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

६ 'दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः' (६)

७ खनिः स्त्रियामाकरः स्यात् ८ पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥

किसी एक भाग' के ३ नाम हैं ॥

१ उत्सः ( पु ), प्रस्त्रवणम् ( न ) 'पहाड़से गिरे हुए अधिक जलके झकड़ा होनेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

२ वारिप्रवाहः ( अन्य मतसे ), निर्झरः, झरः ( ३ पु ), 'झरना' के ३ नाम हैं । ( 'अन्य आचार्योंके मतसे 'उत्सः, ..... ५ नाम 'झरना' के हैं' ) ॥

३ दरी ( स्त्री ), कन्दरः ( पु स्त्री ), 'पहाड़की कन्दरा' के २ नाम हैं ॥

४ देवखातबिलम् ( भा० स्त्री० । 'देवखातम्, बिलम्' महे० ), गुहा ( स्त्री ), गहरम् ( शेष न ), 'स्वभाव ही से बने हुए बिल या गुफा' के ३ नाम हैं ॥ ( 'किसी २ के मतसे 'गुहा, गहरम्' ये दो ही नाम हैं' ) ॥

५ गण्डशैलः ( पु ), 'पहाड़से गिरी हुई बड़ी २ चट्टान' का १ नाम है ॥

६ [ दन्तकः ( पु ), 'पहाड़के टेढ़े स्थानसे बाहर निकली हुई बड़ी चट्टान' का १ नाम है ] ॥

७ खनिः ( + खनिः खनी । स्त्री ), आकरः ( पु । + गङ्गा स्त्री ), 'खान' अर्थात् 'रत्न, धातु और कोयला आदिके निकलनेके स्थानके २ नाम हैं ॥

८ पादाः, प्रत्यन्तपर्वतः ( २ पु ), 'आसपासकी छोटी पहाड़ी' के २ नाम हैं ॥

प्यस्त्री' इत्याह तुः । महेश्वरस्तु त्रयाणामपि स्त्रीत्वाभावमुक्त्वा 'स्तुः' पुंलिङ्ग इति सर्वधर' इत्याह ।

१. अयं क्षेत्रकः स्त्री० स्वा० व्याख्यानोऽभिधानचिन्तामणौ ( ४।१०० ) च समुपलभ्यते ।

२. यस्कात्थः—'देवखाते बिले गुहा' इति, शाश्वतोऽप्याह—'गहरं बिलदम्भयोः' ( श्लो० ६५६ ) इति, अभिधानचिन्तामणौ—'दरी स्यात्कन्दरोऽखातबिले तु गहरे गुहा' ( ४।९९ ) इति प्रामाण्यादिति विभावनीयम् ॥

३-४. 'स्यादाकरः खनिः खानिर्गङ्गा —' इति ( अभि० चिन्ता ४।१०२ ) उक्तेः ॥

१ उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

३ धातुर्मनःशिलाद्यद्रेऽगैरिकं तु विशेषतः ।

५ निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥



१ उपत्यका (स्त्री), 'पहाड़के पासवाली जमीनके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥

२ अधित्यका ( स्त्री ), 'पहाड़के ऊपरवाले स्थान' का १ नाम है ॥

३ धातुः (पु), 'धातु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए धातु' का १ नाम है ।  
( 'सोना, चाँदी, ताँबा, हरिताल, मैन्सिल, गेरु, अजून, कसीस, सीसा, लोहा, हिङ्गुल (सिंगरफ), गन्धक और अभ्रक आदि धातु पहाड़से निकलते हैं' ) ॥

४ गैरिकम् ( न ), 'गेरु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए लाल रंगके एक धातु-विशेष' का १ नाम है ॥

५ निकुञ्जः, कुञ्जः ( १ पु न ), 'कुञ्ज' अर्थात् 'लता या झाड़ी आदिसे आच्छादित स्थान-विशेष' के २ नाम हैं ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥



१. तदुक्तम्—'सुवर्णरूप्यताम्राणि हरितालं मनःशिला ।

गैरिकाजूनकासीसलोहसीसाः सहिङ्गुलाः ॥ १ ॥

गन्धकोऽभ्रकताम्राद्या धातवो गिरिसम्भवाः ॥' इति ॥

कचित्तु—'स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गं यसदमेव च ।

सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः' ॥ १ ॥

इति सप्त धातव उक्ताः । तत्रैव—

'सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ।

तुथं कांस्यं च रौतश्च सिन्दुरश्च शिञ्जाजतु' ॥ १ ॥

इति सप्तोपधातवश्च उक्ताः । सविस्तरमेतद्विवरणं चरकादिग्रन्थेषु द्रष्टव्यम् ॥

## ४ अथ वनौषधिवर्गः ।

- १ अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।
- २ महारण्यमरण्यानी ३ गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥
- ४ आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।
- ५ अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥
- ६ पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।
- ७ स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥
- ८ वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी १ लेखास्तु राजयः ।

## ४. अथ वनौषधिवर्गः ।

१ अटवी ( + अटविः । स्त्री ), अरण्यम्, विपिनम्, गहनम्, काननम्, वनम्, ( + वनी, स्त्री । ५ न ), 'वन, जङ्गल' के ६ नाम हैं ॥

२ महारण्यम् ( न ), अरण्यानी ( स्त्री ), 'बड़े जङ्गल' के २ नाम हैं ॥

३ गृहारामः, निष्कुटः ( २ पु ), 'घरके पासमें लगाये हुए जङ्गल' के २ नाम हैं ॥

४ आरामः ( पु ), उपवनम् ( न ), 'किसीके लगाये हुए उद्यान या बगीचे' के २ नाम हैं ॥

५ वृक्षवाटिका ( स्त्री ), 'मन्त्रियों या वेश्याओंके उपवन' का १ नाम है ॥

६ आक्रीडः ( पु । + न ), उद्यानम् ( न ), 'प्रमदाओं या मित्रोंके साथ क्रीडा करने के लिये लगाये हुए साधारण वन या बगीचे' के २ नाम हैं ॥

७ प्रमदवनम् ( न ), 'रानियोंके क्रीडाके लिये लगाये हुए वन या फुलवाड़ी' का १ नाम है ॥

८ वीथी ( + वीथिः ), आलिः ( + अलिः ), आवलिः ( आवली ), पङ्क्तिः ( + पङ्की ), श्रेणी ( + श्रेणिः । ५ स्त्री ), 'कतार, पङ्क्ति' के ५ नाम हैं ॥

९ लेखा १ ( + रेखा ), राजिः ( २ स्त्री ), 'रेखा, लकीर' के २ नाम हैं ॥

१. या सान्तरा सा 'पङ्क्तिः' या च निरन्तरा सा 'रेखा' कथ्यते । यथा—क्षत्रियपङ्क्तिः, ब्राह्मणपङ्क्तिः, ..... । मसीमस्मादिखचिता रेखा । यथा—भस्मरेखा, ..... ॥

१ वन्या वनसमूहे स्यादश्ङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

२ वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।

‘अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५ ॥

४ वानस्पत्यः फलैः पुष्पाश्चैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

६ ‘ओषध्यः फलपाकान्ताः ७ स्युरबन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

७ बन्ध्योऽफलोऽवकेशी च—

१ वन्या ( स्त्री ), ‘वन के समूह’ का १ नाम है ॥

२ अङ्कुरः ( + अङ्कुरः<sup>१</sup> । पु ), अभिनवोद्भिन् (= अभिनवोद्भिज् स्त्री, भा० दी० । + प्ररोहः ), ‘अङ्कुर’ के २ नाम हैं ॥

३ वृक्षः, महीरुहः, शाखी ( = शाखिन् ), विटपी ( = विटपिन् ), पादपः ( + अङ्घ्रिपः, चरणपः, ..... ), तरुः, अनोकहः, कुटः, सालः ( + शालः ), पलाशी ( = पलाशिन् ), द्रुः, द्रुमः, अगमः, ( + अगच्छः, ..... । १३ पु ) ‘पेड़’ के १३ नाम हैं ॥

४ वानस्पत्यः ( पु ) ‘फूलकर फलनेवाले पेड़’ का १ नाम है । जैसे—आम, लीची, आमड़ा ..... ) ॥

५ वनस्पतिः<sup>२</sup> ( पु ), ‘बिना फूले फलनेवाले पेड़’ का १ नाम है । ( जैसे—गूलर, कटहल, पीपल, बब ..... ) । किसीके मतसे उक्त दोनों शब्द ‘वृक्षमात्र’ के वाचक हैं, ) ॥

६ ओषधी ( औषधीः । स्त्री ), फलकर पकनेके बाद नष्ट होनेवाले उद्भिद् का १ नाम है । ( ‘जैसे—‘धान, चना, जौ, गेहूँ .....’ ) ॥

७ अबन्ध्यः ( अबन्ध्यः ) फलेग्रहिः ( २ त्रि ), ‘अपने २ समयमें फलनेवाले पेड़ आदि’ के २ नाम हैं ॥

८ बन्ध्यः ( + बन्ध्यः ), अफलः, अवकेशी ( = अवकेशिन् । ३ त्रि ),

१. ‘अनोकहः कुटः शाल’ इति पाठान्तरम् ॥

२. ‘ओषधिः फलपाकान्ता स्यादबन्ध्यः’ इति पाठान्तरम् ॥

३. ‘अङ्कुरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः’ इति इलायुधः (अभिधानरत्नमालायां २।३०) इति अमरविक्रमपुस्तके ‘अङ्कुरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः’ इति इलायुधः इति व्याख्यामुद्रापुस्तके लिखितन्तु तत्र तथाऽनुपलब्धेऽप्यन्यम् ।

४. ‘वनस्पतिः’ इत्येकं नाम ‘आम्रादिवृक्षस्ये’ति भा० दी० चिन्त्यः । आम्रादिवृक्षस्य पुष्पा-ज्जातफलोपलक्षितवृक्षत्वात् ‘तैरपुष्पाद्वनस्पतिः’ इति मूलोक्तिविरोधादित्यवश्यम् ।

## —१ फलवान्फलिनः फली ।

- २ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥  
 फुल्लश्चैते विकसिते ३ स्युरबध्यादयस्त्रिषु ।  
 ४ 'स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुः<sup>५</sup>र्हस्वशाखाशिफः ध्रुपः ॥ ८ ॥  
 ६ अप्रकाण्डे स्तम्भगुल्मौ ७ वल्ली तु व्रततिर्लता ।  
 ८ लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥  
 ९ नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

नहीं फलनेवाले पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ॥

१ फलवान् ( = फलवत् ), फलिनः, फली ( = फलिन् । ३ त्रि ), 'फले हुए पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ।

२ प्रफुल्लः ( + प्रफुल्लतः ), उत्फुल्लः, संफुल्लः, व्याकोशः ( + व्याकोषः ), विकचः, स्फुटाः, फुल्लः, विकसितः ( ८ त्रि ), 'फूले हुए पेड़, लता आदि' के ८ नाम हैं ॥

३ 'अबन्ध्य' से 'विकसितः' शब्द तक सब शब्द मिलिङ्ग हैं ॥

४ स्थाणुः ( पु न ), ध्रुवः, शङ्कुः ( २ पु ), 'खुत्थ, टूटे पेड़' के ३ नाम हैं ॥

५ ध्रुपः ( पु ), गांछी, या जिसकी डाल आदि छोटी हों, उस पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ स्तम्भः, गुल्मः ( २ पु ), 'बिना डालवाले पेड़, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वल्ली ( + वल्लिः, वेल्लिः ), व्रततिः ( + व्रतती, प्रततिः ), लता ( ३ स्त्री ), 'लता, लत्तर' के ३ नाम हैं । ( जैसे—अंगूर, मालती, कदू, खीरा, ... ) ॥

८ वीरुव ( = वीरुध् ), गुल्मिनी ( २ स्त्री ), उलपः ( पु ), 'बहुत डालों-से युक्त लता' के ३ नाम हैं ॥

९ उच्छ्रायः, उत्सेधः, उच्छ्रयः ( ३ पु ) 'पेड़ आदिकी ऊँचाई' के ३ नाम हैं ॥

- १ अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः 'स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥
- २ समे शाखालते ३ स्कन्धशाखाशाले ४ शिफाजटे ।
- ५ शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥
- ६ शिरोऽग्रं शिखरं वा ना ७ मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।
- ८ 'सारो मज्जा नरि ९ त्वक्छी वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

१ प्रकाण्डः ( पु न ), स्कन्धः ( पु ), 'कन्धा, पेड़ आदिकी शाखाकी जड़' के २ नाम हैं ॥

२ शाखा ( + शिखा ), लता ( २ स्त्री ), 'डाल' के २ नाम हैं ॥

३ स्कन्धशाखा, शाला ( २ स्त्री ), 'सबसे पहले फूटनेवाली डाल' के २ नाम हैं ॥

४ शिफा, जटा ( २ स्त्री ), 'सोर' अर्थात् 'जमीनके भीतर फैली हुई पेड़की जड़' के २ नाम हैं ॥

५ अवरोहः ( पु ), 'पेड़की जड़ या पेड़ आदिपर चढ़ी हुई गुड़ूची आदि लता' का १ नाम है । ( 'यह महे० और मुकुटका मत है । भा० दी० मतसे 'अवरोहः' ( पु ), 'डालकी जड़' का १ नाम है तथा 'लता' ( स्त्री ), 'वृक्षके ऊपर चढ़नेवाली लता' का १ नाम है' ) ॥

६ शिरः ( = शिरस् ), अग्रम् ( २ नाम स्त्री० स्वा० महे० मतसे ); शिखरम् ( ३ न ), 'फुनगी' अर्थात् 'पेड़ आदिके सबसे ऊपरके हिस्से' के ३ नाम हैं ॥

७ मूलम् ( न ), बुध्नः ( + वध्नः ), अङ्घ्रिनामकः ( 'पैरके वाचक सब शब्द । २ पु ), 'पेड़ आदिकी जड़' के ३ नाम हैं ॥

८ सारः, मज्जा ( = मज्जन् । + मज्जा = मज्जा, स्त्री । + २ पु ), 'लकड़ीके बीचका ढीर' अर्थात् 'सारिल लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

९ त्वक् ( = त्वच्, स्त्री ), वल्कम्, वल्कलम् ( २ पु न ), 'पेड़ आदिके छिलके' के ३ नाम हैं ॥

१. 'स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सारो मज्जा समौ' इति पाठान्तरम् ॥



- १ काष्ठं दारविन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ।  
 ३ निष्कुहः कोटरं वा ना ४ वल्लुरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥  
 ५ पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।  
 ६ पल्लवोऽस्त्री किसलयं ७ विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥  
 ८ 'वृक्षादीनां फलं सस्यं ९ वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

१ काष्ठम्, दारु ( + दारुः, पु । २ न ), 'लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

२ इन्धनम्, एधः ( = एधस् ), इध्मम् ( ३ न ), एधः ( पु ), समित् ( = समिध् । स्त्री ), 'जलावन, इंधन' के ५ नाम हैं । ( 'भा० दी० मतसे 'इन्धनम्, .....' ३ नाम 'जलावन' के और 'एधः, समित्' ये २ नाम 'इधनकी लकड़ी' के हैं ) ॥

३ निष्कुहः ( + निष्कुटः । पु ), कोटरम् ( पु न ), 'पेड़के खोदरा' के २ नाम हैं ॥

४ वल्लरिः ( + वल्लरी ), मञ्जरिः ( + मञ्जरी । २ स्त्री ), 'मञ्जरी, बौर, मौंजर' के २ नाम हैं ॥

५ पत्रम्, पलाशम्, छदनम्, दलम्, पर्णम् ( ५ न ), छदः ( पु ), 'पत्ता' के ६ नाम हैं ॥

६ पल्लवः ( + पु ), किसलयम् ( २ पु न ), 'नये पल्लव' के २ नाम हैं ॥

७ विस्तारः ( पु, भा० दी० ), विटपः ( पु न, महे० स्त्री० स्वा० ), 'पेड़के फैलाव' के २ नाम हैं । ( 'पल्लवः, .....' ४ नाम एकार्थक हैं यह भी किसी-किसी का मत<sup>३</sup> है, ) ॥

८ फलम् ( भा० दी० ), सस्यम् ( + शस्यम् । २ न ), 'फल' के २ नाम हैं ॥

९ वृन्तम्, प्रसवबन्धनम् ( भा० दी० । २ न ), 'भैंटी' अर्थात् 'पेड़ आदिके फल या फूलकी जब' के २ नाम हैं ॥

१. 'वृक्षादीनां फलं शस्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'विटपो न स्त्रियां साम्ये शाखाविस्तारपल्लवे' इति ( मेदि० पृ० १०९ श्लो० २२ ) पान्तवर्गे मेदिनीवचनात्, 'शाखायां पल्लवे साम्ये विस्तारो विटपेऽस्त्रियाम्' इति रमसात्, 'स्कन्माधूर्व तरोः शाखा कटपो(पो) विटपो मतः' इति कात्याञ्चेत्यवधेयम् ॥

- १ आमे फले शलाटुः स्या २ चक्षुके वानमुमे त्रिषु ॥ १५ ॥  
 ३ क्षारको जालकं कलीवे ४ कलिका कोरकः पुमान् ।  
 ५ 'स्याद् गुच्छकस्तु स्तवकः ६ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥  
 ७ स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।  
 ८ मकरन्दः पुष्परसः ९ परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥  
 १० द्विहीनं प्रसवे सर्व—

१ शलाटुः ( त्रि ), 'कच्छे फल' का १ नाम है ॥

२ वानम् ( त्रि ), 'सूखे फल' का १ नाम है ॥

३ क्षारकः ( पु ), जालकम् ( न ), 'नई कली या कलियोंके समूह' के २ नाम हैं ॥

४ कलिका ( स्त्री ), कोरकः ( पु ), 'कोंड़ी' अर्थात् 'बिना खिले हुए फूल' के २ नाम हैं ॥

५ गुच्छकः ( + गुच्छः, गुत्सकः, गुत्सः ), स्तवकः ( २ पु ), महे० मतसे 'कलियोंसे छिपी हुई गांठ' के और भा० दी० मतसे 'शीघ्र खिलनेवाली कली' के और अन्य मतसे 'फूल या फल आदिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥

६ कुट्मलः ( + कुट्मलः ), मुकुलः ( २ पु न ), 'अधखिली कली' के २ नाम हैं ॥

७ सुमनसः ( = सुमनस्, नि० स्त्री ब० व० । + ए० व०<sup>३</sup> ), पुष्पम्, प्रसूनम्, कुसुमम्, सुमम् ( ४ न ), 'फूल' के ५ नाम हैं ॥

८ मकरन्दः, पुष्परसः ( २ पु ), 'फूलके रस' के २ नाम हैं ॥

९ परागः ( पु ), सुमनोरजः ( = सुमनोरजस्, न ) 'फूलके पराग' के २ नाम हैं ॥

१० पहले कहे हुए शब्दोंका सामान्यतः लिङ्गनिर्देश करनेके उपरान्त 'द्वि-

१. 'स्याद्गुत्सकस्तु स्तवकः कुट्मलो' इति पाठान्तरम् ॥

२. कुसुमं समम् इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सुमनाः पुष्पमालत्योः' ( मेदि० पृ० १९० श्लो० ६७ ) इति सान्तवर्गे मेदिन्युक्तेः, 'पुष्पं सुमनाः कुसुमम्' इति नाममालोक्तेः, 'सुमनाः प्राञ्चदेवयोः । जात्याः पुष्पे.....' ( अने० सं० ३।७६० ) इति हैमोक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

६ अ०

—१ हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

२ आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैज्जुदं फले ॥ १८ ॥

बार्हतं च ३ फले जम्बुवा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

४ पुं जातीप्रभृतयः स्त्रिलिङ्गा ५ व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

ह्रीन' इस शब्दसे अब विशेषतया लिङ्गनिर्देश करते हैं । आगे कहे जानेवाले पेड़, लता और औषधके वाचक शब्द यदि फूल, फल, जड़ और पत्तेके वाचक हों तो वे नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं । ( 'जैसे—'चम्पकम्, आम्रम्, सूरणम्' ये तीन शब्द क्रमशः 'चम्पाके फूल, आमके फल और सूरनकी जड़' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होनेसे नपुंसकलिङ्ग हुए हैं' ) ॥

१ ( 'हरीतक्यादयः' इस शब्दसे उक्त लिङ्गका बाधक वचन कह रहे हैं ) फल आदि अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी 'हरीतकी, कर्कटी' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग ही रह जाते हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होते । ( 'जैसे—'हरीतकी, कर्कटी, दाचा, बदरी' आदि शब्द क्रमशः 'हरें, ककड़ी, दाख और बैरके फल' इस अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् स्त्रीलिङ्ग ही हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं' ) ॥

२ आश्वत्थम्, वैणवम्, प्लाक्षम्, नैयग्रोधम्, ऐज्जुदम्, बार्हतम् ( ६ न ), 'पीपल, बाँस, पाकड़, बट, इज्जुदी और भटकटैयाके फल' के क्रमशः १-१ नाम हैं ॥

३ जम्बूः ( स्त्री ), जम्बु, जाम्बवम् ( २ न ), 'जामुनके फल' के ३ नाम हैं ॥

४ जाती ( स्त्री ) प्रभृति ( 'प्रभृति' शब्दसे 'यूथिका, मल्लिका, .....' ), शब्दके पुंस्पर्ध अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहते हैं अर्थात् उनका नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । 'जैसे—'जाती, यूथिका, मल्लिका, ..... ( ३ स्त्री ), शब्द पहले लतार्थक रहनेपर स्त्रीलिङ्ग होनेसे पुंस्पर्धक होनेपर भी स्त्रीलिङ्ग ही रहते हैं' ) ॥

५ व्रीहिः ( पु ), आदि ( 'आदि' शब्दसे 'यवः, मुद्गः, माषः, प्रियङ्गुः, गोधूमः, चणकः, .....' ) शब्दके फल अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । ( 'जैसे—'व्रीहिः, यवः, मुद्गः, माषः, प्रियङ्गुः ..... ( ५ पु ), शब्द पहले औषध्यर्थक रहने पर पुंलिङ्ग होनेसे अब फलार्थक होनेपर भी पुंलिङ्ग ही रह गये हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं' ) ॥

- १ विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि २ पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ।
- ३ बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥  
अश्वत्थेऽप्यथ कपित्थे स्मृर्दधित्थम्राहिमन्मथाः ।  
नस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
- ५ उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।
- ६ कोविदारो चमरिकः कुहालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥
- ७ सप्तपर्णो विशालत्वकशारदो विषमच्छदः ।

१ विदारी ( स्त्री ), आदि ( 'आदि' शब्दसे 'शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी, .....' ) शब्दके 'मूल, फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । ( जैसे-विदारी, शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी ( ४ स्त्री, ..... ) 'मूल फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पहलेवाला स्त्रीलिङ्ग ही रह गया है, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुआ है<sup>२</sup> ) ॥

२ पाटला ( स्त्री न ), 'पाटलाके फूल' अर्थमें यह स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होता है ।

३ बोधिद्रुमः ( + बोधिः ), चलदलः, पिप्पलः, कुञ्जराशनः ( + गजाशनः ), अश्वत्थः ( ५ पु ) 'पीपलके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

४ कपित्थः ( + कबित्थ, कवित्थः ), दधित्थः, म्राही (=म्राहिन्) मन्मथः, दधिफलः, पुष्पफलः, दन्तशठः ( ७ पु ) 'कैथ' के ७ नाम हैं ॥

५ उदुम्बरः ( उद्दुम्बरः ) जन्तुफलः, यज्ञाङ्गः, हेमदुग्धकः ( ४ पु ) 'गूलर' के ४ नाम हैं ॥

६ कोविदारः, चमरिकः, कुहालः, युगपत्रकः ( ४ पु ), 'कचनार' के ४ नाम हैं ॥

७ सप्तपर्णः, विशालत्वक् ( = विशालत्वच् ) शारदः ( + शारदी ), विषम-

१. 'विशालत्वक् शारदी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दिहीने प्रसवं सर्वम्' ( २।४।१८ ) इति स्त्रीत्ववाचनायेमानीत्यवधेयम् ॥

३. यत्तु भा० दी० 'पाटलः कुसुमे वर्णेऽप्याशुव्रीहिश्च पाटला' इति शाश्वतोक्त्या 'पाटला' शब्दस्य पुंस्त्वमप्युक्तम्, तत्तु 'पाटला पाटलौ स्त्री स्यादस्य पुष्पे पुनर्न ना' ( मेदि० पृ० १६६ श्लो० १०९ ) इति मेदिन्यां पुंस्त्वनिषेधाद्—पाटलन्तु कुङ्कुमश्चेतरक्तयोः । पाटलः स्यादाशु व्रीहिः पाटला पाटलिद्रुमे' ( अने० सं० ३।६६४ ) इति हैनोक्तेश्च चिन्त्यमेवेति विभावनीयम् ॥

- १ आरग्वधे 'राजवृक्षशंपाकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥  
 आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।  
 २ स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥  
 ३ वरुणो वरणः सेतुस्तिकशाकः कुमारकः ।  
 ४ पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥  
 ५ पारिभद्रे निम्बतरुमन्दारः पारिजातकः ।  
 ६ तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥  
 वञ्जुलश्चित्रकृत् ऽद्याथ द्वौ पीतनकपीतनौ ।  
 आम्रातके ८ मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥

वृक्षः ( ४ पु ) 'सतवना, छितवन' अर्थात् 'सात पत्तेवाले वृक्ष-विशेष, ससर्पण' के ४ नाम हैं ॥

१ आरग्वधः ( + आरग्वधः, अरग्वधः ), राजावृक्षः, शंपाकः ( + शम्पाकः, संपाकः ) चतुरङ्गुलः, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः ( + सुपर्णकः, सुवर्णः, सुपर्णः, । ८ पु ), 'अमलतास' के ८ नाम हैं ॥

२ जम्बीरः, दन्तशठः, जम्भः, जम्भीरः, जम्भलः ( + जम्भरः । ५ पु ), 'जम्बीरी नींबू' के ५ नाम हैं ॥

३ वरुणः, वरणः, सेतुः, तिक्तशाकः, कुमारकः ( ५ पु ) 'वारुण' के ५ नाम हैं ॥

४ पुन्नागः, पुरुषः, तुङ्गः, केसरः ( + केशरः ), देववल्लभः ( ५ पु ) नाग-केशर वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

५ पारिभद्रः, निम्बतरुः, मन्दारः, परिजातकः ( ४ पु ) 'वकायन' के ४ नाम हैं ॥

६ तिनिशः, स्यन्दनः, नेमिः ( + नेमी = नेमिन् ), रथद्रुः अतिमुक्तकः, वञ्जुलः, चित्रकृत् ( ७ पु ) 'वञ्जुल, तिनिश' के ७ नाम हैं ॥

७ पीतनः, कपीतनः, आम्रातकः ( + अम्रातकः । ३ पु ), 'अमड़ा' के ३ नाम हैं ॥

८ मधूकः ( मधुकः, मधूलः, मधुलः ), गुडपुष्पः, मधुद्रुमः, वानप्रस्थः,

१, 'राजवृक्षशम्पाकचतुरङ्गुलाः' इति पाठान्तरमिति सुभृत्यादय इति मा० क्षी० ॥

- वानप्रस्थमधुष्ठीलौ १ 'जलजेऽत्र मधूलकः ।  
 २ पीलौ गुडफलः खंसी ३ तस्मिंस्तु गिरिसम्भवे ॥ २८ ॥  
 'अक्षोटकर्पूरालौ ४ अक्षोटो तु निकोचकः ।  
 ५ पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे ॥ २९ ॥  
 रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरवज्जुलाः ।  
 ७ द्वौ परिष्याधविपुलौ नादेयी अम्बुवेतसे ॥ ३० ॥  
 ८ शोभाजनैः शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।

मधुष्ठीलः ( + मधुष्ठीलः । ५ पु ), 'महुआ' के ५ नाम हैं ॥

१ मधूलकः ( + मधूलः । पु ), 'पासीमें या पहाड़पर होनेवाले महुए' का एक नाम है । ( इसके पत्ते बहुत बड़े २ होते हैं ) ॥

२ पीलुः, गुडफलः, खंसी ( = खसिन् । ३ पु ), 'पीलुनामक वृक्षविशेष' के ३ नाम हैं ॥

३ अक्षोटः, कर्पूरालः ( + कर्पूरालः । २ पु ), 'पहाड़ी पीलु' के २ नाम हैं ॥

४ अक्षोटः ( + अक्षोटः, अक्षोलः ), निकोचकः ( + निकोटकः । २ पु ), 'ढेलानामक वृक्ष-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ पलाशः, किंशुकः, पर्णः, वातपोथः ( ४ पु ), 'पलाश' के ४ नाम हैं ॥

६ वेतसः, रथः, अभ्रपुष्पः ( + रथाभ्रपुष्पः ), विदुरः, शीतः ( + न ), वानीरः, वज्जुल ( ७ पु ), 'बैत' के ७ नाम हैं ॥

७ परिष्याधः, विदुलः, नादेयी ( स्त्री ), अम्बुवेतसः ( + जलवेतसः । शेष पु ), 'जलबैत' के ४ नाम हैं ॥

८ शोभाजनः ( + शोभाजनः, सोभाजनः, सौभाजनः ) शिश्रुः, तीक्ष्ण-गन्धकः, अक्षीवः ( + आक्षीवः, आक्षीरः, मु० ), मोचकः ( + मोचः । ५ पु ), 'सहिजन' के ५ नाम हैं ॥

१. गिरिजेऽत्र मधूलकः, इति पाठान्तरम् ॥

२. 'अक्षोटकर्पूरालौ' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीरमोचकाः इति पाठान्तरम् ॥

- १ रक्तोऽलौ मधुशिग्रुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥  
 २ बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरधीफलाययि ।  
 ४ प्लक्षो जटी पर्कटी स्यापन्न्यग्रोधो बहुपावटः ॥ ३१ ॥  
 ६ गालवः शाबरो लोभ्रमिरीटमित्त्वमार्जनौ ।  
 ७ आम्रश्चूतो रसालोऽसौ न सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥  
 ९ 'कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः' ( ७ )  
 १० 'कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

१ मधुशिग्रुः ( पु ), 'लाल फूलवाले सहिजन' का १ नाम है ॥

२ अरिष्टः ( + रिष्टः ) फेनिलः ( २ पु ), 'रीठा' के २ नाम हैं ॥

३ बिल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरः, श्रीफलः ( ५ पु ), 'वेल' के ५ नाम हैं ॥

४ प्लक्षः, जटी ( = जटिन् । + जटि, स्त्री । २ पु ), पर्कटी ( स्त्री ), 'पाकड़' के ३ नाम हैं ॥

५ न्यग्रोधः, बहुपात् ( = बहुपाद् ), वटः ( ३ पु ), 'वट बरगद' के ३ नाम हैं ॥

६ गालवः शाबरः ( + साबरः ), लोभ्रः ( + रोभ्रः ), मिरीटः ( + तरः ), मित्वः, मार्जनः ( ६ पु ), 'लोध' के ६ नाम हैं । ( 'गालवः, आदि २ नाम 'सफेद लोध' के और 'लोभ्रः' आदि ४ नाम 'लोध' के हैं, यह क्षी० स्वा० का मत है' ) ॥

७ आम्रः, चूतः, रसालः ( ३ पु ), 'आम' के ३ नाम हैं ॥

८ सहकारः, अतिसौरभः ( महे० । २ पु० ), 'सुगन्धियुक्त आम' के २ नाम हैं ॥

९ [ कामाङ्गः, मधुदूतः, माकन्दः, पिकवल्लभः ( ४ पु ), 'आम' के ४ नाम हैं ] ॥ ७ ॥

१० कुम्भम्, लूखलकम् ( + उदूखलकम्, कुम्भोलूखलकम् । २ न ), कौशिकः, गुग्गुलुः, पुरः ( ३ पु ), 'गुग्गुलु' के ५ नाम हैं ॥

१. 'कामाङ्ग'.....'वल्लभः' अयमंशः क्षी० स्वा० पुस्तके मूल एवेत्यवधेयम् ॥

२. 'कुम्भं चोलूखलकं' इति पाठान्तरम् । तत्र नामद्वयस्वीकारे मूलपाठ एव समीचीन इति ।

१ शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

२ राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुधनुःपटः ।

३ गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाष्टयथ द्वयोः ।

‘कर्कन्धूबदरी कोलिः ५ कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

१ शेलुः ( + सेलुः ), श्लेष्मातकः, १शीतः ( + न ), उद्दालः, बहुवारकः ( ५ पु ), ‘लसोड़ा’ के ५ नाम हैं ॥

२ राजादनम् ( + राजातनम् । + पु । न ), प्रियालः ( + पियालः ), सन्नकद्रुः (सन्नः, कद्रुः, यह सोमनन्दीके मतसे), धनुःपटः, ( + धनुःपटः, धनुः = धनुस्, पटः । ३ पु ), ‘चिरौजी, पियार’ के ४ नाम हैं ॥

३ गम्भारी ( + कम्भारी ), सर्वतोभद्रा, काश्मरी ( + काश्मरी ), मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी ( ६ स्त्री ), काश्मर्यः (पु), ‘गम्भार’ के ७ नाम हैं ॥

४ ‘कर्कन्धूः ( + कर्कन्धुः । पु स्त्री ), बदरी ( + १ पु स्त्री मुकु० ), कोलिः ( + कोली, कोला । स्त्री ), ‘बेर’ के ३ नाम हैं ॥

५ कोलम्, कुवलम्, फेनिलम्, सौवीरम् ( + सौवीर्यम् ), बदरम् ( ५

१. कर्कन्धु ( न्धू ) बदरी कोलिर्घोषा कुवलफेनिले ।

सौवीरं बदरं कोलमय ..... इति क्षी० स्वा० पाठः : ॥

२. सङ्ख्यागणनायामुक्तोऽप्ययं शब्दो भा० दी० अख्याख्यातस्संशोधकप्रमादात्तुटितो व्याख्यातृत्यक्तो वेति बुधैर्मृग्यम् ॥

३. कर्क कण्टकं दधातीति विगृह्य ‘अन्दुद्भूजम्बूकफेलककर्कन्धूदिषिषुः’ ( उ० सू० १।१३ ) इति कूपत्ययेऽस्य सिद्धिरिति० भा० दी० । क्षी० स्वा० तु ‘कर्कोलीहितोऽन्धुः कर्कन्धुः शकन्ध्वादित्वात्पररूपमित्याह । तच्चिन्त्यम्, सिद्धान्तकौमुद्यां ‘शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्’ (वार्ति० ३६३२) इति वार्तिकोदाहरणत्वेनोक्तस्य ‘कर्कन्धु’ शब्दस्य ‘कर्काणां राजविशेषाणामन्धुः कूपः कर्कन्धुः’ इति तत्रैव तत्त्वबोधिण्यां दण्डयुक्तं: ‘अन्दुद्भू—’ ( उ० सू० १।९३ ) इति पाणिनिसूत्रस्य च विरोधात् ह्रस्व ‘कर्कन्धु’ शब्दस्यान्यार्थकत्वादित्यवधेयम् ॥

४. ‘अथ द्वयोः’ इत्युक्त्या ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधात् ‘कर्कन्धूबदरी’ त्युभौ शब्दौ पुंस्त्रीलिङ्गाविति मुकुटोक्तिश्चिन्त्या । तथा सति ‘बदरी कोलाकार्पास्योवदरन्तु फले तयोः’ ( अने० संग्र० ३।५८३ ) इति हेमचन्द्राचार्याक्तेः ‘बदरी कोले, क्षोवं तु तत्फले’ ( मेदि० पृ० १४९ क्षो० २७ ) इति मेदिन्युक्तेश्च विरोधस्य दुर्गारत्वादित्यवधेयम् ॥



सौवीरं बदरं घोण्टाऽथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।

विकङ्कतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

२ ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।

३ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारको ॥ ३८ ॥

४ काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुको ।

५ गोलीढो झटलो घण्टापाटलिर्भौक्षमुष्करो ॥ ३९ ॥

६ तिलकः क्षुरकः श्रीमान्—

न ), घोण्टा ( + घुण्टा । स्त्री ), 'वैर के फल या वनवैर' के ६ नाम हैं<sup>१</sup> ॥

१ स्वादुकण्टकः ( + गोपकण्टः ), विकङ्कतः ( + वैकङ्कतः ), सुवावृक्षः, ग्रन्थिलः, व्याघ्रपात् ( = व्याघ्रपाद् । + व्याघ्रपादः, व्याघ्रपादपः । ५ पु ), 'कटाय' के ५ नाम हैं ॥

२ ऐरावतः, नागरङ्गः ( २ पु ), नादेयी, भूमिजम्बुका ( + भूमिजम्बू । २ स्त्री ), 'नारङ्गी वृक्ष' के ४ नाम हैं । ( प्रथम २ नाम 'नारङ्गी वृक्ष' के और अन्तर्वाले २ नाम 'भूमिजम्बू' अर्थात् 'एक प्रकारके कन्द के हैं, यह भी अन्याचार्यों ( गौड़ ) का मत है' ) ॥

३ तिन्दुकः ( + तिन्दुकी ), स्फूर्जकः, कालस्कन्धः, शितिसारकः ( + नील-सारः ४ पु ), 'तैन्दुआनमक वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

४ काकेन्दुः कुलकः, काकतिन्दुकः, काकपीलुकः ( ४ पु ), 'कुचिला' के ४ नाम हैं ॥

५ गोलीढः ( + गोलिहः ), झटलः, घण्टापाटलिः ( + घण्टा, पाटलिः, स्त्री० स्वा० ), मोक्षः, मुष्ककः ( + मूषकः । ५ पु ), काला पादर या लोघ-विशेष' के ५ नाम हैं ॥

६ तिलकः, क्षुरकः, श्रीमान् (= श्रीमत् । ३ पु ) 'तिलक वृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

१. 'गोलीढा झटलो' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बदरीसदृशाकारो वृक्षः सूक्ष्मफलो भवेत् । अटव्यामेव सा घोण्टा गोपघोण्टेति चोच्यते' ॥१॥

इत्युक्तेर्बदरीसदृशाकारस्य वन्यफलस्येति केचिन्मतेनेदम् ॥

३. कर्कण्वादित्रयं वृक्षार्थकम्, अन्ये फलार्थकाः, घोण्टा इत्युभयस्येक-अर्थादुभयसम्बन्धी' इति० स्त्री० स्वा० ॥

—१ समौ पिचुलझावुकौ ।

२ श्रीपणिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

३ क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

४ तूदस्तु यूषः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदार च ॥ ४१ ॥

तूलं च ५ नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रियः ।

६ वीरवृक्षोऽरुक्करोऽग्निमुखो भल्लातकी तृषु ॥ ४२ ॥

७ गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपाश्वकाः ।

प्लक्षश्च ८ तिन्तिडी चिञ्चाऽम्लिकाऽथो पीतसारके ॥ ४३ ॥

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

१ पिचुलः, झावुकः ( २ पु ), 'भाऊ वृक्ष' के २ नाम हैं ॥

२ श्रीपणिका ( + श्रीपणी ), कुमुदिका, कुम्भी ( ३ स्त्री ), कैडर्यः ( + कैडर्यः, कैटर्यः ), कट्फलः ( २ पु ), 'कायफर' के ५ नाम हैं ॥

३ क्रमुकः, पट्टिकाख्यः, पट्टी ( = पट्टिन् । + पट्टी = पट्टी, स्त्री ), लाक्षाप्रसादनः ( ४ पु ), 'पठानीलोध' के ४ नाम हैं ॥

४ तूदः ( + नूदः ), यूषः ( + यूषः, सुकृ० ), क्रमुकः, ब्रह्मण्यः ( ४ पु ), ब्रह्मदार ( + ब्रह्मकाष्ठम् ), तूलम् ( + तूली, गौड मतसे । २ न ) 'सहृतूत या तूत' के ६ नाम हैं ॥

५ नीपः, प्रियकः, कदम्बः, हलिप्रियः ( + हरिप्रियः । ४ पु ), कदम्ब वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

६ वीरवृक्षः, अरुक्करः ( २ पु ), अग्निमुखी ( स्त्री ), भल्लातकी ( त्रि ), 'भिलावा' के ४ नाम हैं ।

७ गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कपीतनः, सुपाश्वकः, प्लक्षः ( ५ पु ), 'लाही पीपल' के ५ नाम हैं ॥

८ तिन्तिडी ( + तिन्तिली ), चिञ्चा, अम्लिका ( + आम्लिका, आम्लीका, अम्लीका । ३ स्त्री ) 'इमली' के ३ नाम हैं ॥

९ पीतसारकः ( + पीतसारकः ), सर्जकः, असनः ( + आसनः ), बन्धूकपुष्पः, प्रियकः, जीवकः ( ६ पु ), 'विजयसार' के ६ नाम हैं ॥

१. 'कैडर्यकट्फलौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तूदस्तु यूषः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पीतसारके' इति पाठान्तरम् ॥

- १ 'शाले तु सर्जकार्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥
- २ नदीसर्जो वीरतरुः इन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।
- ३ राजादनः फलाध्यक्षः क्षारिकायाऽमथ द्वयोः ॥ ४५ ॥  
इङ्गुदी तापसतरुभूर्जं चमिमृदुत्वचौ ।
- ६ पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शास्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥
- ७ पिच्छा तु शास्मलीवेष्टे ८ रोचनः कूटशास्मलिः ।
- ९ चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करज्जके ॥ ४७ ॥

१ शालः ( + शालः, श्यालः ), सर्जः ( + सर्जकः ), कार्याः ( + कार्याः ),  
अश्वकर्णकः, सस्यसंवरः ( + सस्यशंवरः । ५ पु ) 'शाल या सखुआ'  
के ५ नाम हैं ॥

२ नदीसर्जः, वीरतरुः, इन्द्रद्रुः, ककुभः, अर्जुनः, ( ५ पु ), 'अर्जुन वृक्ष'  
के ५ नाम हैं ॥

३ राजादनः ( + न ), फलाध्यक्षः ( २ पु ), क्षारिका ( स्त्री ),  
'क्षारिनीके पेड़' के ३ नाम हैं ॥

४ इङ्गुदी ( स्त्री पु ), तापसतरुः ( पु ), 'इङ्गुदी इङ्गुआके पेड़' के २ नाम हैं ॥

५ भूर्जः ( + भृजः ), चमी ( = चमिन् ), मृदुत्वक् ( = मृदुत्वच् ।  
+ मृदुच्छदः । ३ पु ), भोजपत्रके पेड़' के ३ नाम हैं ॥

६ पिच्छिला, पूरणी, मोचा ( + मोचनी । ३ स्त्री ), स्थिरायुः  
( = स्थिरायुस्, पु ), शास्मलिः ( + शास्मली, शास्मलः । स्त्री पु ),  
'सेमलके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

७ पिच्छा ( स्त्री ), शास्मलीवेष्टः ( भा० दी० पु ), 'मोचरस' के २ नाम हैं ॥

८ रोचनः, कूटशास्मलिः ( + कुशास्मलिः । २ पु ), 'काला सेमर' के  
३ नाम हैं ॥

९ चिरबिल्वः ( + चिरिबिल्वः ), नक्तमालः ( + रक्तमालः, स्त्री० स्वा० ),  
करजः, करज्जकः ( ४ पु ), 'करज' के ४ नाम हैं ॥

१. 'शाले तु सर्जकार्याश्वकर्णकाः सस्यशंवरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'चिरिबिल्वो रक्तमालः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'षष्ठिवर्षसहस्राणि वने जीवति शास्मलिः' इत्युक्तेरस्य स्थिरायुद्वमित्यन्वर्थे नामेत्य-  
वधेयम् ॥

- १ प्रकीर्यः पूतिकरजः 'पूतिकः कलिमारकः ।
- २ करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥
- ३ रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।
- ४ गायत्री 'बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥
- ५ अरिमेदो विट्खदिरे ६ कदरः खदिरे सिते ।  
सोमवल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥  
एरण्ड उरुवूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।

१ प्रकीर्यः पूतिकरजः ( + पूतिकरजः, पूतिकरजः ) पूतिकः ( + पूतिकः ), कलिमारकः ( + कलिकारकः । ४ पु ), 'काँटेदार करञ्जके पेड़' के ४ नाम हैं ॥

२ षड्ग्रन्थः ( पु ), मर्कटी, अङ्गारवल्लरी ( २ स्त्री ) 'करञ्जके भेद' का १-१ नाम है ॥

३ रोही ( = रोहिन् ), रोहितकः ( रोहितः ) प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः ( + रक्तपुष्पकः । ४ पु ) 'गुलनार या लाल करञ्ज' के ४ नाम हैं ॥

४ गायत्री ( स्त्री । गायत्री = गायत्रिन्, पु ), बालतनयः ( + बालपुत्रः ) खदिरो दन्तधावनः ( ४ पु ) 'कट्या, खैर' के ४ नाम हैं ॥

५ अरिमेदः ( + परिमेदः, अहिमेदः, अहिमारः ), विट्खदिरो ( २ पु ) 'बदवू करनेवाले कट्ये' के २ नाम हैं ॥

६ कदरः सोमवल्कः ( २ पु ), 'सफेद कट्ये' के २ नाम हैं ॥

७ व्याघ्रपुच्छः ( + व्याघ्रदलः ) गन्धर्वहस्तकः, एरण्डः, उरुवूकः ( + रुवुः, रुवुः, रुवूकः रुवुकः उरुवूकः उरुवुकः, ) रुचकः, चित्रकः, चम्बुः, पञ्चा-

१. 'पूति ( ती ) कः कलिकारकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपुत्रश्च जिह्वाश्लयः क्षितिक्षमः' ॥१॥

इत्युक्त्वा 'बालपुत्र' शब्दस्य 'खदिरयवासे' त्वर्थयोरभिमतत्वेन 'बालपुत्र' भ्रान्त्या ग्रन्थकारोऽतत्र 'बालतनय' शब्दमुक्तवान् । तस्मादत्र 'बालपुत्रश्च खदिरो' इति पाठः समीचीन इति ।

- चञ्चः पञ्चाङ्गुलो <sup>१</sup>मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥
- १ अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ।
- २ <sup>२</sup>पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
- शल्यश्च मदने ४ शक्रपादपः पारिभद्रकः ।
- भद्रदारु द्रुक्लिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
- पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यपथ द्वयोः ।
- पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥
- कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी ६ श्यामा तु महिलाह्वया ।
- लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥
- विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।

ङ्गुलः मण्डः ( आमण्डः, अमण्डः आदण्डः ), वर्द्धमानः, व्यडम्बकः ( + व्य-  
डम्बरः । + व्यडम्बनः स्वा० । ११ पु ), 'परण्ड, रेड' के नाम हैं ॥

१ शमीरः ( पु ) 'छोटी शमी' का १ नाम है ॥

२ शमी, सक्तुफला ( + शक्तुफली ), शिवा ( ३ स्त्री ) 'शमी' के ३ नाम हैं ॥

३ पिण्डीतकः मरुवकः ( + मरुवकः ), श्वसनः, करहाटकः ( + करहाटः ),  
शल्यः, मदनः ( ६ पु ) 'मयनफल' के ६ नाम हैं ॥

४ शक्रपादपः, पारिभद्रकः ( + पारिभद्रः । २ पु ) भद्रदारु ( + पु )  
द्रुक्लिमम्, पीतदारु, दारु ( + २ पु ) पूतिकाष्ठम्, देवदारु ( ६ न )  
'देवदारु' के ८ नाम हैं ॥

५ पाटलिः ( + पाटली । स्त्री पु ) पाटला, मोघा ( + अमोघा ),  
काचस्थाली ( + काकस्थाली, + काला, स्थायी, २ स्त्री० स्वा० ), फलेरुहा,  
कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी ( ६ स्त्री ), 'पादुर' के ७ नाम हैं ॥

६ श्यामा, महिलाह्वया, लता, गोवन्दनी ( + गौः = गौः, वन्दनी ),  
गुन्द्रा, प्रियङ्गुः, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारम्भा ( ११ स्त्री ),  
प्रियकः ( पु ), 'ककुनी, टाँगुन' के १२ नाम हैं ॥

१. 'मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'पिण्डीतको मरुवकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. काला स्थाली फलेरुहा' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'वन्दनी पुष्पशोभना । गन्धप्रियङ्गुः कारम्भा लता गौर्वर्णभेदिनी' इतीन्द्रकृतेः ॥

- १ मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गदुण्डुकाः ॥ ५६ ॥  
 २ श्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।  
 ३ शोणकश्चारलौ २ तिण्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥  
 अमृता च वयस्था च ३ त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः ।  
 नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥  
 ४ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।  
 हरीतकी हैमवति चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥  
 ५ पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाऽथ ६ द्रुमोत्पलः ।  
 कर्णिकारः परिग्याधो ७ लकुचो लिङ्कुचो डहुः ॥ ६० ॥

१ मण्डूकपर्णः, पत्रोर्णः, नटः, कट्वङ्गः, दुण्डुकः ( + दुन्दुक ), श्योनाकः, ( + श्योनाकः ), शुकनासः, ऋक्षः दीर्घवृन्तः, कुटन्नटाः, शोणकः ( + शोणकः, स्त्री० स्वा ) भरलुः ( + भरदुः । १२ पु ), 'सोनापाठा' के १२ नाम हैं ॥

२ तिण्यफला, आमलकी ( + आमला । त्रि ) - अमृता, वयस्था ( + कायस्था स्त्री० स्वा० । शेष स्त्री ) 'आँवले' के ४ नाम हैं ॥

३ बिभीतकः ( त्रि ), अक्षः ( बिभीतकाक्षः ) तुषः, कर्षफलः, भूता-वासः ( भूतवासः ), कलिद्रुमः ( ५ पु ), 'बहेड़ा' के ६ नाम हैं ॥

४ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था ( + वयस्था ), पूतना, अमृता, हरीतकी हैमवती, चेतकी, श्रेयसी शिवा ( ११ स्त्री ) 'हर' के ११ नाम हैं ॥

५ पीतद्रुः, सरलः ( २ पु ) पूतिकाष्ठम् ( न ), 'सरलनामक काष्ठ ( वृक्ष )-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

६ द्रुमोत्पलः कर्णिकारः, परिग्याधः ( ३ पु ) 'कठचम्पा' के ३ नाम हैं ॥

७ लकुचः लिङ्कुचः डहुः ( + डहूः । ३ पु ), 'बड़हर' के ३ नाम हैं ॥

१. 'मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गदुण्डुकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'श्योनाकशुकनास'..... इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'श्योनाकश्चारलौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तिण्यं मङ्गस्थं फलं यस्याः सा तिण्यफला । तत्त्वज्ञास्याः—

'नित्यमामलके रुक्षमीनित्यं हरितगोमये । निरयं शंखे च पद्मे च नित्यं शुक्ले च वाससि' ॥  
 इत्युत्तेरित्यवधेयम् ॥

- १ 'पनसः कण्टकिफलो २ निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।  
 ३ काकोदुम्बरिका 'फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥  
 ४ अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ।  
 'पिचुमन्दश्च निम्बेऽप्यथ पिच्छिलाऽगुरुशिशपा ॥ ६२ ॥  
 ६ कपिला भस्मगर्भा सा—

१ पनसः ( + पणसः, दुर्गं मतसे; + फलसः ) कण्टकिफलः ( + कण्टक-फलः । २ पु ), 'कटहल' के २ नाम हैं ॥

२ निचुलः ( + निचोळः ), हिज्जलः ( + इज्जल ), अम्बुजः ( ३ पु ), भा० दी० मतसे 'स्थलर्बेत' के स्त्री० स्वा० तथा महे० मतसे 'जलर्बेत' के और अन्य मतसे 'समुद्रफल' के ३ नाम हैं ॥

३ काकोदुम्बरिका, फल्गुः, मलयूः ( + मलपूः मलापूः ) जघनेफला ( ४ स्त्री ), 'कटूमर कालागूलर' के ४ नाम हैं ॥

४ अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, हिङ्गुनिर्यासः, मालकः, पिचुमन्दः ( + पिचुमर्दः स्त्री० स्वा० ) निम्बः ( १ पु ) 'नीम' के ६ नाम हैं ॥

५ पिच्छिला, 'अगुरु ( न ), शिशपा ( + अगुरुशिशपा, स्त्री० स्वा० । शेष स्त्री ), भा० दी० मतसे 'शीशम' के ३ नाम हैं ॥

६ कपिला ( भा० दी० ने इसे विशेषण माना है, पर्याय नहीं ) भस्मगर्भा ( २ स्त्री ), 'कपिलवर्णवाले शीशम' के २ नाम हैं । ( महे० ने पिच्छिला, अगुरुशिशपा, कपिला, भस्मगर्भा । ४ स्त्री ), इन चारोंको पर्याय-वाचक कहा है ) ॥

१. 'पणसः कण्टकिफलः निचुल इज्जलोऽम्बुजः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'फल्गुर्मलयूर्जघनेफला' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'पिचुमर्दश्च' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'अगुरु, शिशपा' इति नामद्वयम् 'गुरु क्लीबेशिशपायां जोङ्गके लघुनि त्रिषु' इति रुद्रः । अगुरुसारा शिशपा इत्येकमेव नामेति स्त्री० स्वा० महे० च । अत्र रुद्र भा० दी० 'अगुरु क्लीबं जोङ्गकशिशपयोर्वाच्यबलघुनि ( मेदि० पृ० १४१ श्लो० १४१ ) इति रान्त-वर्गे मेदिन्युक्तेः—अगुरुस्त्वगुरौ लघौ शिशपायां—' (अने० सं० ३।५२० ) इति हेमचन्द्रा-चार्योक्तेश्च विरोधेऽपि स्त्रीलिङ्गयोः पिच्छलशिशपा'शब्दयोर्मध्ये क्लीबस्य 'अगुरु' शब्दस्य भा० दी० मतेऽङ्गीकारेण 'भेदाख्यानाय—' ( १।१४ ) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोध इत्ययथेयम् ॥

—१ शिरीषस्तु कपीतनः ।

भण्डिलोऽप्यरथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

३ एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ।

बकुलो य वज्जुलोऽशोके द समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥

७ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।

८ जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

९ श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ।

जयो—

१ शिरीषः, कपीतनः, भण्डिलः ( + भण्डरः भण्डीलः, भण्डी = भण्डिन् । ३ पु ), 'सिरस' के ३ नाम हैं ॥

२ चाम्पेयः, चम्पकः, हेमपुष्पकः ( ३ पु ) 'चम्पा' के ३ नाम हैं ॥

३ गन्धफली ( स्त्री ), 'चम्पाकी कली' का १ नाम है ॥

४ केसरः ( + केशरः ), बकुलः ( + वकुलः । २ पु ), 'मौलसर' के २ नाम हैं ॥

५ वज्जुलः, अशोकः ( २ पु ), 'अशोक' के २ नाम हैं ॥

६ करकः, दाडिमः ( + दाडिम्बः, दालिमः, डालिमः । २ ), 'अनार' के २ नाम हैं ॥

७ चाम्पेयः, केसरः, नागकेसरः, काञ्चनाह्वयः ( + 'सोनेके वाचक सब नाम' । ४ पु ), 'नागचम्पा पुष्पवृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

८ जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ( ५ स्त्री ), 'जाही, अरणी या गनियार' के ५ नाम हैं ॥

९ श्रीपर्णम् ( न ), अग्निमन्थः, कणिका, गणिकारिका ( २ स्त्री ), जयः ( शेष पु ), भा० दी० 'जयपर्ण' के ५ नाम हैं । ( 'जया.....१० नाम 'अरणी' के हैं, यह स्त्री० स्वा० का मत है' ) ॥

१. 'बकुलो वज्जुलोऽशोके' इति पाठान्तरम् ॥

२. एतन्मते 'जयादि वैजयन्तिका' वधि खील्लिङ्गशब्दानुक्त्या मध्ये क्लीब'श्रीपर्ण' शब्दस्य पुल्लिङ्ग 'अग्निमन्थ' शब्दस्य च कथनान्तरं खील्लिङ्गस्य 'कणिका'दिशब्दद्वयस्य ततश्च भूयो-  
ऽपि पुल्लिङ्ग 'जय'शब्दस्योक्तत्वेन लिङ्गसाङ्ख्यात् 'भेदाख्यानाय—(१।१।४)' इत्यादिग्रन्थकार-  
प्रतिशामङ्गापत्तिवारणाय भानुजीदीक्षितः पञ्च नामानि पृथक्चकार । क्षीरस्वामी तु वनौषधिवर्गे



- १ ऽथ कुटजः शक्रो वत्सकी गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥  
 २ एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ।  
 ३ कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥  
 ४ कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके ।  
 १सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

१ कुटजः, शक्रः, वत्सकः ( ३ पु ), गिरिमल्लिका ( स्त्री ) 'कौरैया' के ४ नाम हैं ॥

२ कलिङ्गम् ( + पु स्त्री ) इन्द्रयवम्<sup>२</sup> ( + पु ), भद्रयवम्<sup>३</sup> ( + ए । ३ न ), 'इन्द्रयव' के ३ नाम हैं ॥

३ कृष्णपाकफलः, अविग्नः ( + आविग्नः ), सुषेणः, करमर्दकः ( ४ पु ), 'करौदा, करवन' के ४ नाम हैं ।

४ कालस्कन्धः, तमालः, तापिच्छः ( + तापिञ्जः, तापिच्छः । ३ पु ), 'सूर्ती' के ३ नाम हैं ॥

५ सिन्दुकः ( + सिन्धुकः ), सिन्दुवारः, इन्द्रसुरसः ( + इन्द्रसुरिसः । ३ पु ) निर्गुण्डी ( + निर्गुण्ठी ), इन्द्राणिका ( २ स्त्री ) 'सिन्धुआर' के ५ नाम हैं ॥

लिङ्गसाङ्ख्यदोषस्थानादुत्तरेम दशानामपि नाम्नामेकपर्यायतामाह, तत्र प्रमापकवचनानि चोपन्यस्तानि । तथथा—

यदिन्दुः—'अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कार्यरणिको जयः ।

अरणिः कणिका सैत्र तपनो वैजयन्तिकः' ॥ १ ॥ इति ॥

चन्द्रनन्दनश्चाह—

'अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कारी वैजयन्तिका ।

बह्निमन्थोऽरणिः केतुर्जयः पावकमन्थनः ॥

तर्कारी वैजयन्ती च बह्निनिर्मन्थनी जया ॥' इति च ।

अत एव—'अग्निमन्थो जयः स स्याच्छीपणीं गणिकारिका ।

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका' ॥ १ ॥

इति वचनसंगतिः' इत्यवधेयम् ॥

१. 'सिन्दुवारेन्द्रसुरिसौ' इति पाठान्तरम् ॥

२-३. इन्द्रयवं कुटजफलम्, भद्रयवं कुटजबीजम् । यदाह—  
 फलानि तस्येन्द्रयवं बीजं भद्रयवास्तथा' इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।
- २ श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी ३ 'तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥  
भूपदी शीतभीरुश्च ४ सैवास्फोटा वनोद्भवा ।
- ५ शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
- ६ सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य ७ य मागधी ।  
गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा ८ सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
- ९ अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

१ वेणी, खरा, गरी ( + खरागरी, गरा, अगररी, गरागरी । ३ स्त्री ), देवताडः ( + देवतालः ), जीमूतः ( २ पु ), 'देवताल' अर्थात् 'बन्दाजी, एक तरहके गुजराती वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

२ श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ( २ स्त्री ), 'एक तरह के शाक-विशेष' के २ नाम हैं । ( 'उसके पत्ते हाथीके कान-जैसे बड़े २ होते हैं' ) ॥

३ तृणशून्यम् ( + तृणशून्यम् । न ), मल्लिका, भूपदी, शीतभीरुः ( + शतभीरुः । स्त्री ), 'छोटी बेला' के ४ नाम हैं ॥

४ आस्फोटा ( + आस्फोता । स्त्री ), 'जङ्गली बेला' का १ नाम है ॥

५ शेफालिका ( + शीफालिका ), सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका, ( ४ स्त्री ), 'काली नेवारी' के ४ नाम हैं ॥

६ श्वेतसुरसा, भूतवेशी ( २ स्त्री ) 'सफेद फूलवाली नेवारी' के २ नाम हैं ॥

७ मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा ( ४ स्त्री ), 'जूही' के ४ नाम हैं ॥

८ हेमपुष्पिका ( स्त्री ), 'पीले फलवाली जूही' का १ नाम है ॥

९ अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः ( + मण्डकः । २ पु ), वासन्ती, माधवी, लता, ( + माधवीलता । २ स्त्री ), 'बसन्त ऋतुमें फूलनेवाले कुन्द-विशेष, या माधवी' के ४ नाम हैं । ( 'अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः' ये दो 'मल्लिकाके भेद हैं' यह भी किसी २ का मत है' ) ॥

१. 'खरागरी, गरागरी' इति पाठान्तरे ॥ २. 'तृणशून्यम्' इति पठान्तरम् ॥

३. 'भूपदी शतभीरुश्च सैवास्फोता वनोद्भवा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सुमना मालतीः जातिः २ सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
- ३ माष्यं कुन्दं ४ रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
- ५ सहा कुमारी तरणि ६ रम्भानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
- ७ तत्र शोणे कुरबक ८ स्तत्र पीते कुरण्टकः ।
- ९ 'नीली क्षिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥
- १० 'सैरेयकस्तु क्षिण्टी स्यात्—

१ सुमनाः ( = सुमनस् । + सुमना = सुमना ), मालती, जातिः ( ३ स्त्री ), 'चमेली' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, नवमालिका ( + नवमालिका । २ स्त्री ), 'वसन्ती नेवारी' के ३ नाम हैं ॥

३ माष्यम्, कुन्दम् ( पु । + २ पु न ), 'कुन्द' के २ नाम हैं ॥

४ रक्तकः, बन्धूकः ( + बन्धुकः ), बन्धुजीवकः ( ३ पु ), 'दुपहरिया-नामक पुष्पवृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

५ सहा, कुमारी, तरणिः ( ३ स्त्री ), 'घीकुमार' के ३ नाम हैं ॥

६ रम्भानः ( पु ), महासहा ( स्त्री ), 'कटसरैया' के २ नाम हैं । ( 'यह काँटेदार होती है' ) ॥

७ कुरबकः ( + कुरवकः, कुरुवकः, कुरुषकः । पु ), 'लाल फूलवाली कटसरैया' का १ नाम है ॥

८ कुरण्टकः ( + कुरण्डकः, कुरुण्डकः । पु ), 'पीले फूलवाली कटसरैया' का १ नाम है ॥

९ बाणा, ( + बाणा । पु स्त्री ), दासी ( स्त्री ), आर्तगलः । ( + अन्तर्गलः । पु ), 'काली कटसरैया' के ३ नाम हैं ॥

१० 'सैरेयकः ( + सैरीयकः । पु ), क्षिण्टी ( स्त्री ), 'कटसरैया' के २ नाम हैं ॥

१. 'नीला क्षिण्टीद्वयोर्बाणा' इति पाठान्तरम् । अत्र सामान्यतः क्षिण्टया विवरणम्-  
जुस्त्वा विशेषनीत्यादेर्मेदकथनस्य सकलसरणिगिरुद्धत्वात्पूर्वं 'सैरेयकस्तु .....रुणे' इत्यस्य  
ततश्च 'नीली क्षिण्टी ... सा' इत्यस्य पाठस्योचित्यं प्रतिमालीत्यवधेयम् ॥

२. 'सैरीयकस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सैरीयकः सहचरः सैरेयश्च सहचरः ॥

पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुम्भैस्तं विभावयेत् ॥ १ ॥

—१ तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।

- २ पीता कुरण्टको शिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥  
 ३ ओडूपुष्पं जपापुष्पं ४ वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।  
 ५ प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥  
 करवीरे ६ करीरे तु क्रकरप्रन्थिलावुभौ ।  
 ७ उन्मत्तः कितवो धूर्तो<sup>१</sup> धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥  
 मातुलो मदनश्चा ८ स्य फले मातुलपुत्रकः ।  
 ९ फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥  
 १० समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ।

१ कुरवकः ( + कुरवकः । पु ), 'लाल कटसरैया' का १ नाम है ॥

२ कुरण्टकः ( कुरण्टकः । पु ), सहचरी ( स्त्री पु ), 'पीली कटसरैया' के २ नाम हैं ॥

३ ओडूपुष्पम्, जपापुष्पम् ( + जपापुष्पम् । २ न ), 'ओड़ुल, गुड़हल' के २ नाम हैं ।

४ वज्रपुष्पम् ( न ), 'तिलके फूल' का १ नाम है ॥

५ प्रतिहासः ( + प्रतीहासः ), शतप्रासः, चण्डातः, हयमारकः, करवीरः ( ५ पु ), 'कनइल, कनेर पुष्प-वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

६ करीरः, क्रकरः, प्रन्थिलः ( ३ पु ), 'करील' के ३ नाम हैं । ( इनमें पत्ता नहीं होता है<sup>२</sup> ) ॥

७ उन्मत्तः, कितवः धूर्तः, धत्तूरः, ( + धुस्तूरः धुस्तूरः, धूस्तूरः, धुतूरः ), कनकाह्वयः ( स्वर्णके वाचक सब शब्द ), मातुलः, मदनः ( ७ पु ), 'धतूरे' के ७ नाम हैं ॥

८ मातुलपुत्रकः ( पु ), 'धतूरेके फल' का १ नाम है ॥

९ फलपूरः, बीजपूरः, रुचकः, मातुलुङ्गकः ( ४ पु ); 'बिजौरा नीबू' के ४ नाम हैं । ('फलपूरः, बीजपूरः' ये दो नाम उक्तार्थक तथा 'रुचकः, मातुलुङ्गकः' ये दो नाम 'मातुलुङ्गक' के हैं, यह भा० दी० का मत है ) ॥

पीतः कुरण्टको श्रेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः ।

नील आतर्गको दासी बाण ओदनपाक्यपि ॥ २ ॥ इत्युक्तेरित्यवधेयम् ॥

१. 'जपापुष्पम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'धत्तूरः काञ्चनाह्वयः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'मरुवकः' इति पाठान्तरम् ॥

४. तथा च उक्तम्—'पत्रं नैव यदा करीरविद्ये'..... इति ॥

- जम्बीरोऽप्य १ थ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥  
 २ सितेऽर्जकोऽत्र ३ पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।  
 ४ अर्काद्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥  
 मन्दारश्चार्कपर्णौ ५ ऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।  
 ६ शिवमल्ली पाशुपत एकाष्टीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥  
 ७ वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकाेत्यपि ।  
 ८ वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥  
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

( + जम्बीरः ! ५ पु ), 'मरुवा' के ५ नाम हैं ॥

१ पर्णासः, कठिञ्जरः, कुठेरकः ( ३ पु ), 'पर्णास, या बवई' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्जकः ( पु ), 'सफेद बवई' का १ नाम है ॥

३ पाठी ( = पाठिन् ), चित्रकः, वह्निसंज्ञकः ( अग्नि के वाचक सब नाम ।  
 ३ पु ), 'चीत' के ३ नाम हैं ॥

४ अर्काद्वः ( सूर्य के वाचक सब नाम ), वसुकः ( + वसूकः ), आस्फोटः  
 ( + आस्फोटः ), गणरूपः, विकीरणः ( + विकिरणः ), मन्दारः, अर्कपर्णः  
 ( ७ पु ), 'एकवन, आक, मन्दार' के ७ नाम हैं ॥

५ अलर्कः, प्रतापसः ( २ पु ), 'सफेद फूलवाले एकवन' के २ नाम हैं ।

६ शिवमल्ली ( = शिवमल्लिन् ), पाशुपतः, एकाष्टीलः, बुकः ( + बुकः ),  
 वसुः ( ५ पु ), 'गुम्मा' के ५ नाम हैं ॥

७ वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा ( + वृक्षरोहा ), जीवन्तिका ( + जीवन्ती ।  
 ४ स्त्री ), 'वन्दा, बाँदा' के ४ नाम हैं ॥

८ वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची ( + गुडूची ), तन्त्रिका, अमृता, जीवन्ति-  
 का ( + जीवन्ती ), सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ( ९ स्त्री ), 'गिलोय,  
 गुडूच' के ९ नाम हैं ॥

१. अर्काद्ववसुकास्फोटगणरूपविकीरणाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बुको वसुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. बुकं बिल्वं सधत्तूरं सुमना पाटला तथा । पदममुत्पलमोसूर्यमष्टौ पुष्पाणि शङ्करे ॥१॥  
 इत्युक्तत्वाच्छिवप्रिया मल्ली 'शिवमल्ली' इति नामेत्यवधेयम् ॥

- १ मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी खुवा ॥ ८३ ॥  
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
- २ पाठाऽम्बष्टा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥  
एकाष्टीला पापचेली प्राचीना वनतिक्रिका ।
- ३ कटुः 'कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥  
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादिनी ।
- ४ 'आत्मगुप्ताजहान्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥  
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
- ५ 'चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शंवरी वृषा ॥ ८७ ॥  
प्रत्यक्षेत्रणी सुतश्रेणी 'रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

१ मूर्वा ( + मूर्वी ), देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, खुवा ( + खवा )  
मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ( १० स्त्री ) 'मूर्वा' अर्थात् 'चिनार,  
चुरनहार, धनुषके लिये उपयोगी लताविशेष' के १० नाम हैं ॥

२ पाठा, अम्बष्टा, विद्धकर्णी ( + अविद्धकर्णी ), स्थापनी, श्रेयसी, रसा,  
एकाष्टीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिक्रिका ( १० स्त्री ) 'पाठा या पादर'  
के १० नाम हैं ।

३ कटुः, कटम्भरा ( + कटंवरा, कटम्बरा ), अशोकरोहिणी ( + अशोकः,  
रोहिणी ), कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी ( + कृष्णभेदा ), चक्राङ्गी, शकु-  
लादिनी ( ८ स्त्री ), 'कुटकी' के ८ नाम हैं ॥

४ आत्मगुप्ता ( + स्वयंगुप्ता ), अजहा ( स्त्री० स्वा०, महे० । + जहा  
भा० दी० ), अव्यण्डा, कण्डुरा ( + कण्डूरा ), प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशि-  
म्बिः, कपिकच्छुः ( + कपिकच्छुः ) मर्कटी ( ९ स्त्री ), 'केषाँव' के ९ नाम हैं ॥

५ चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शंवरी ( + शम्भरी ), वृषा, प्रत्य-  
क्षेत्रणी, सुतश्रेणी, रण्डा ( + चण्डा ), मूषिकपर्णी ( + मूषिकाह्वया । १० स्त्री )  
'मूसाकर्णी' के १० नाम हैं ॥

१. कटम्भ(टंव राशोकरोहिणी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'आत्मगुप्ताजहान्यण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चित्रोपचित्रा.....शम्भरी वृषा' इति पाठान्तरम् । अत्र इत्यया द्रवन्तीभ्रमाद्  
ग्रन्थकारः 'उपचित्रा'माह इति स्त्री० स्वा० ॥

४. 'चण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अपामार्गः शैस्त्रिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥  
प्रत्यक्षपर्णी' केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।
- २ 'हजिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥  
अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्धरवर्धकाः ।
- ३ मज्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा 'कालमेषिका ॥ ९० ॥  
मण्डूकपर्णी 'मण्डीरी मण्डी योजनवल्ग्वपि ।
- ४ यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥  
रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
- ५ पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी 'चित्रपर्ण्यङ्घ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥

१ अपामार्गः, शैस्त्रिकः ( + शिखरी ), धामार्गवः ( + अधामार्गवः ), मयूरकः ( ४ पु ), प्रत्यक्षपर्णी ( + प्रत्यक्षपुष्पी ), केशपर्णी ( + कीशपर्णी ), किणिही, खरमञ्जरी ( ४ स्त्री ), 'चिचिढा' के ८ नाम हैं ॥

२ हजिका ( + फजिका ), ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी ( + शृगुला ), ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली ( १ स्त्री ), बालेयशाकः, वर्धरः, वर्धकः ( ३ पु ), 'ब्रह्मनेटी, भारङ्गी' के ९ नाम हैं ॥

३ मज्जिष्ठा, विकसा ( + विकषा ), जिङ्गी, समङ्गा, कालमेषिका ( + कालमेषिका ), मण्डूकपर्णी, मण्डीरी ( + मण्डीरी ), मण्डी, योजनवल्ग्वपि ( + योजनपर्णी । ९ स्त्री ), 'मञ्जीठ' के ९ नाम हैं ॥

४ यासः, यवासः, दुःस्पर्शः, धन्वयासः ( + धनुर्यासः ), कुनाशकः ( ५ पु ), रोदनी ( + चोदनी ), कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभा ( + दुरालम्भा । ५ स्त्री ), 'जवासा' के १० नाम हैं ॥

५ पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अङ्घ्रिवल्लिका ( + अङ्घ्रिपर्णिका मुकु० ),

१. 'कीशपर्णी' इति पाठान्तरम् । २. 'फजिका' इति मुकुटसंमतं पाठान्तरम् ॥

३. 'कालमेषिका' इति पाठान्तरम् । ४. मण्डीरी मण्डी योजनपर्ण्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका' इति पाठान्तरम् ॥

- क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी <sup>१</sup>कलशिर्धानिर्गुहा ।  
 १ <sup>२</sup>निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥  
 प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।  
 २ नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥  
 रञ्जनी श्रीफली तुत्या द्रोणी दोला च नीलिनी ।  
 ३ अवल्गुजः सोमराजी सुवलिः सोमवल्हिका ॥ ९५ ॥  
 कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।  
 ४ कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥  
<sup>३</sup>उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽ५ थ करिपिप्पली ।  
 कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी <sup>४</sup>वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी ( + सिंहपुच्छकः, पु ), कलशिः ( + कलशी ), धावनिः ( + धावनी ), गुहा ( ९ स्त्री ), 'पिठिवन' के ९ नाम हैं ॥

१ निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री, बृहती, कण्टकारिका ( + कण्टकारी ), प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका ( १० स्त्री ), 'भटकटैया, रँगनी' के १० नाम हैं ॥

२ नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका ( + मधुपर्णी ), रञ्जनी ( + रजनी ), श्रीफली, तुत्या, द्रोणी ( + तूणी ), दोला ( + मेला ), नीलिनी ( ११ स्त्री ), 'नील' के ११ नाम हैं ॥

३ अवल्गुजः ( पु ), सोमराजी, सुवलिः, सोमवल्हिका ( + सोमवल्ली ), कालमेषी ( + कालमेशी ), कृष्णफला, बाकुची ( + बागुची, मुकुं ), पूतिफली ( ६ स्त्री ), 'बाकुची, बकुची' के ८ नाम हैं ॥

४ कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी, चपला, कणा, उषणा ( + ऊषणा ), पिप्पली ( + पिप्पलिः ), शौण्डी, कोला ( १० स्त्री ), 'पीपरि' के १० नाम हैं ॥

५ करिपिप्पली ( + करिपिप्पलिः ), कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी ( ४ स्त्री ), वशिरः ( + वसिरः । पु ), 'गजपीपरि' के ५ नाम हैं ॥

१. 'कलशी धावनी गुहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बृहती तु निदिग्धिका' इति भागुरिवाक्यादत्र ग्रन्थकृद्भ्रान्तः, यपोऽमयोर्महान् भेद' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'ऊषणा पिप्पली' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'वसिरः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥



- १ 'चव्यं' तु चविका २ काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ।  
 ३ पलङ्कषा तिवश्रुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥  
 गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।  
 ४ विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ॥ ९९ ॥  
 शृङ्गी 'महौषधं' चा ५ य क्षीरावी दुग्धिका समे ।  
 ६ शतमूली बहुसुताऽभीरुः इन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥  
 ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्नी नारायण्यः शतावरी ।  
 अहेरु—

१ चव्यम् ( न । + स्त्री ), चविका ( स्त्री । + न, पु, ) 'चाभ, चव्य' के २ नाम हैं । ( 'ये दो नाम भी पूर्वार्थक हैं, यह भी किसी २ का मत है' ) ॥

२ काकचिञ्ची ( + काकचिञ्चिः, काकचिञ्चा ), गुञ्जा, कृष्णला ( + र-सिका । ३ स्त्री ), 'गुंजा, लाल घुंघुची, करेजनी' के ३ नाम हैं ॥

३ पलङ्कषा, इष्टुगन्धा, श्वदंष्ट्रा ( ३ स्त्री ), स्वादुकण्टकः, गोकण्टकः, गोक्षुरकः, वनशृङ्गाटः ( ४ पु ), 'गोखरू' के ७ नाम हैं ॥

४ विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी ( ७ स्त्री ), महौषधम् ( न ), 'अतीस' के ८ नाम हैं ॥

५ क्षीरावी, दुग्धिका ( २ स्त्री ), 'दुधिया घास' के २ नाम हैं ॥

६ शतमूली, बहुसुता, अभीरुः, इन्दीवरी, वरी ( + वरा ), ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्नी, नारायणी, शतावरी, अहेरुः ( १० स्त्री ), 'शतावर' के १० नाम हैं ॥

१. 'चव्यं तु चविकं काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला' इति पाठभेदः । चन्द्रनन्दनस्तु सामान्येनाह, करिपिप्पल्या एव पर्यायतामाहेत्यर्थस्तथा हि—

'चव्या कोलाऽथ चविका श्रेयसी गजपिप्पली ।

ज्यवना कोलवली तु चव्यं कुञ्जरपिप्पली' ॥ १ ॥ इति

एतन्मते त्वन्तस्य पूर्वान्वयित्वप्रसक्त्या 'चव्यं च' इति पाठः समीचीन इत्यवधेयम् ॥

२. 'महौषधं' तु विषं नातिविषा । चव्यं तु हि महौषधं ( विषं ) शुण्ठी कशुनं चेति विषा(ष)शब्दं बुद्ध्वा आन्तोऽयम्' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'वरा' इति पाठान्तरम् । ४. 'चव्यं च' इति पठतां मतेनेदमित्यवधेयम् ॥

— १ रथ पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

दार्वी पचम्पचा दारु हरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

२ वचोग्रन्धा षडग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

३ शुक्ला हैमवती ४ वैद्यमातृसिंहौ तु वाशिका ।

वृषोऽटरुषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

५ आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्ताऽपराजिता ।

६ इक्षुगन्धा तु काण्डेश्चकोकिलाक्षेश्चरुधुराः ॥ १०४ ॥

७ शालेयः स्याच्छीतशिवश्छन्ना मधुरिका मिसिः ।

मिश्रेयाऽप्य ८ य सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥

१ पीतद्रुः, कालीयकः ( + कालेयकः ), हरिद्रुः ( ३ पु ) दार्वी, पचम्पचा ( + पचम्पचा ) दारुहरिद्रा, पर्जनी ( ४ स्त्री ), 'दारुहल्दी' के ७ नाम हैं ॥

२ वचा, उग्रग्रन्धा, षडग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका ( ५ स्त्री ), 'घुड़बच या बच' के ५ नाम हैं ॥

३ हैमवती ( स्त्री ), 'खुरासानी बच' का १ नाम है ॥

४ वैद्यमाता ( = वैद्यमातृ ), सिंहौ, वाशिका ( + वासिका । १ स्त्री ), वृषः, अटरुषः ( + अटरुषः ), सिंहास्यः, वासकः, वाजिदन्तकः ( ५ पु ), 'अड्डसा, वासक' के ८ नाम हैं ॥

५ आस्फोटा ( + आस्फोता ), गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता ( ४ स्त्री ) 'अपराजिता' के ४ नाम हैं ॥

६ इक्षुगन्धा ( स्त्री ), काण्डेश्चः, कोकिलाक्षः, इक्षुरः, क्षुरः ( ४ पु ), 'तालमखाना' के ५ नाम हैं ॥

७ शालेयः, शीतशिवः ( ६ पु ), छन्ना, मधुरिका, मिसिः, ( + मिसी, मिशिः, मिशी ), मिश्रेया ( + मिश्रेयः, पु । ४ स्त्री ), 'सोआ या वनसौफ' के ६ नाम हैं ॥

८ सीहुण्डः ( + सिहुण्डः, शीहुण्डः ), वज्रः ( + वज्रदुः । २ पु ), स्नुक् ( = स्नुह् ), स्नुही ( + स्नुहा ) गुडा, समन्तदुग्धा ( ४ स्त्री ) 'सेहुड' के

१. 'पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'अस्फोता' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'मिश्रेयोऽप्यथ सीहुण्डो वज्रदुः स्नुक् स्नुही गुडा' इति पाठान्तरम् ॥

समन्तदुग्धाऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।

तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुन्नपुंसकम् ॥ १०६ ॥

२ 'बला वाट्यालका ३ घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

४ मृद्धीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

५ सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।

त्रिभण्डी रोचनी ६ श्यामापालिन्धी तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥

काला मसूरविदलाऽर्द्धचन्द्रा कालमेषिका ।

७ मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

६ नाम हैं ॥

१ वेल्लम् ( न ), अमोघा ( + मोघा ), चित्रतण्डुला ( २ स्त्री ), तण्डुलः ( + तन्तुलः, मुकु० ), कृमिघ्नः ( + कृमिघ्नी, स्त्री । २ पु ) विडङ्गम् ( पु न ), 'वायविडङ्ग' के ६ नाम हैं ॥

२ बलः ( + बला ) वाट्यालका ( + वाट्यालकः, । २ स्त्री ), 'बरियारा' ( औषधविशेष ) के २ नाम हैं ।

३ घण्टारवा, शणपुष्पिका ( २ स्त्री ), 'सन, सनई' के २ नाम हैं ॥

४ मृद्धीका, गोस्तनी ( + गोस्तना ), द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा ( ५ स्त्री ) 'दाख, मुनका' के ५ नाम हैं ॥

५ सर्वानुभूतिः, सरला ( + सरणा, सरदा ) त्रिपुटा ( त्रिपुटी, ब्रज्जा ) त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी ( + रेचनी । ७ स्त्री ), 'सफेद निशोथ' के ७ नाम हैं ॥

६ श्यामा, पालिन्धी ( + पालिन्धी ), सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्द्धचन्द्रा, कालमेषिका ( ७ स्त्री ) 'काला निशोथ' के ७ नाम हैं ॥

७ मधुकम्, क्लीतकम्, यष्टिमधुकम् ( + यष्टीमधुकम् । ३ न ) मधुयष्टिका ( स्त्री ), 'मुलहठी, जेठीमधु' के ४ नाम हैं ॥

१. 'बला वाट्यालको घण्टारवा' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'सरणा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'रेचनी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ विदारी क्षीरशुक्लेऽभ्रगन्धा 'क्रोष्ट्री च या सिता ।
- २ अन्या क्षीरविदारी 'स्यान्महाभ्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
- ३ लाङ्गली शारवी तोषपिप्पली शकुल्लादनी ।
- ४ खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

१ विदारी, क्षीरशुक्ला, ह्रस्वगन्धा, क्रोष्ट्री ( ४ स्त्री ), भा० दी० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के ४ नाम हैं ॥

२ क्षीरविदारी, महाभ्वेता, ऋक्षगन्धिका ( + ऋष्यगन्धिका । ३ स्त्री ), भा० दी० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' के ३ नाम हैं ।

३ लाङ्गली, शारदी, तोषपिप्पली, शकुल्लादनी ( ४ स्त्री ), 'जलपीपरि' के ४ नाम हैं ॥

४ खराश्वा, कारवी ( २ स्त्री ), दीप्यः, मयूरः, लोचमस्तकः ( + लोचमस्तकः । ३ पु ), 'अजमोदा' के ५ नाम हैं ॥

१. 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति 'याऽसिता' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'स्यान्महाभ्वेतर्क्षगन्धिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. या असिता = कृष्णा इतिच्छेदं कृत्वा 'विदारी, ...' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य, अन्या सिता = शुक्ला 'क्षीरविदारी, ...' ३ शुक्लभूकूष्माण्डस्य' इत्युक्त्वा—'या सिता = शुक्ला 'विदारी, ...' ४ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य' तथा 'अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी, ...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इति मुकुटोक्तं चिन्त्यमिति भा० दी० । क्षी० स्वा० तु 'विदारी...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डं प्रादेशेषु विख्यातम्', ततः 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति पाठमुरीकृत्य 'या सिता=शुक्ला सा 'क्रोष्ट्री' इत्युक्त्वा अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी, ...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्येवं विभागत्रयं कृतम् । तत्रेदमवधेयम्—'क्षीरमिव शुक्ले'ति स्वयं प्रदक्षितस्य 'क्षीरशुक्ला' शब्दविग्रहस्य, 'क्रोष्ट्री शृगालिकाक्षीरविदारीलाङ्गलीषु च' ( मेदि० पृ० १३४ स्तो० २० ) इति मेदिन्युक्तेः 'क्रोष्ट्री क्षीरविदारिका' ( अने० संग्र० २।४०६ ) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च विरोधात् मुकुटोक्तिरेव समीचीना । अत्र च क्षी० स्वा० सम्मतः 'क्रोष्ट्री तु याऽसिता' इति पाठः भा० दी० सम्मतः 'याऽसिता' इति च्छेदश्च समीचीनः प्रतिभाति । एवं सति 'विदारी, ...' ३ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य', 'क्रोष्ट्री...' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्यायातम् । अधिकन्तवन्त्यत्र द्रष्टव्यम् ॥

- १ गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।
- २ योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ ३ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥
- ४ कदली वारणबुसा रम्भा मोचांऽशुमत्फला ।  
काष्ठीला ५ मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
- ६ वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।
- ७ नाकुली 'सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥  
नकुलेष्टा भुजङ्गाकी छत्राकी सुवहा च सा ।

१ गोपी ( + गोपा ), श्यामा, शारिवा ( + सारिवा ), अनन्ता ( + चन्दना ), उत्पलशारिवा ( ५ स्त्री ) 'शारिवा, ग्वार' के ५ नाम हैं ॥

२ योग्यम् ( न ), ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः ( ३ स्त्री ), 'सिद्धिनामक औषध-विशेष' के ४ नाम हैं ॥

३ वृद्धिः ( स्त्री ), पूर्वोक्त ( योग्यम्, ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः ) चार शब्द 'वृद्धिनामक औषध-विशेष' के ५ नाम हैं । ( 'किसीके मतमें 'योग्यम्, ... वृद्धिः' पाँचों शब्द एक ही पर्याय हैं' ) ॥

४ कदली ( + कदला, स्त्री, कदलः, पु ), वारणबुसा ( + वारणबुसा ), रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला ( + भानुफला ), काष्ठीला ( ६ स्त्री ), 'केला' के ६ नाम हैं ॥

५ मुद्रपर्णी, काकमुद्रा, सहा ( ३ स्त्री ), 'मूंगपर्णी, मुंगौनी, वनमूंग' के ३ नाम हैं ॥

६ वार्ताकी ( + वार्ताकुः, वार्ता, वार्ताकः ), हिङ्गुली, सिंही, भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ( + दुष्प्रधर्षिणी । ५ स्त्री ), 'घनभण्टा' के ५ नाम हैं ॥

७ नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा ( + नागसुगन्धा ), 'गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाकी, छत्राकी, सुवहा ( ९ स्त्री ) 'रास्ना, रासना' के ९ नाम हैं ॥

१. 'सुरसा नागसुगन्धा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वैद्यास्तु 'नाकुलीगन्धनाकुल्योर्भेदमुररीकुर्वन्ति । तद्यथा—

'नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगगन्धिका । सैव सर्पसुगन्धेति' इति ।

'अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ।

सर्पाक्षी नकुलेष्टा च छत्राकी विषमर्दिनी' ॥ १ ॥ इति चेति ॥

- १ विदारिगन्धांश्शुमती 'शालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
- २ तुण्डिकेरी समुद्रान्ता 'कर्पासी बदरेति च ।
- ३ भारद्वाजी तु सा घन्या षष्ठ्यी तु 'ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
- ५ गाङ्गेरुकी नागबला क्षपा ह्रस्वगवेषुका ।
- ६ धामार्गवो घोषकः स्याद् ७ महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥
- ८ 'ज्योत्स्नी पटोलिका जाली ९ नादेयी भूमिजम्बुका ।
- १० स्यात्लाङ्गलिक्यग्निशिखा-

१ विदारिगन्धा ( + विदारीगन्धा ), अंशुमती, शालपर्णी ( + शालपर्णी ), स्थिरा, ध्रुवा ( ५ स्त्री ), 'सरिवन' के ५ नाम हैं ॥

२ तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कर्पासी ( + कर्पासी ), बदरा ( + बदरा । ४ स्त्री ), 'कपास' के ४ नाम हैं ॥

३ भारद्वाजी ( + भद्रा । स्त्री ), 'वनकपास या नर्मा' का १ नाम है ॥

४ ऋष्यी ( स्त्री ), ऋषभः ( + वृषभः ), वृषः ( २ पु ), 'काकरासिगी' के ३ नाम हैं ॥

५ गाङ्गेरुकी, नागबला, क्षपा, ह्रस्वगवेषुका ( ४ स्त्री ), 'गँगेरन' के ४ नाम हैं ॥

६ धामार्गवः, घोषकः ( २ पु ), 'सफेद फूलवाली तरौई' के २ नाम हैं ॥

७ महाजाली ( स्त्री ), 'पीले फूलवाली तरौई' का १ नाम है ॥

८ ज्योत्स्नी ( + ज्योत्स्नी, जोत्स्नी ), पटोलिका, जाली ( ३ स्त्री ), 'चिचिदानामक तरकारी' के ३ नाम हैं ॥

९ नादेयी, भूमिजम्बुका ( २ स्त्री ), 'भुंइ जामुन' के २ नाम हैं ॥

१० लाङ्गलिकी, अग्निशिखा ( + अग्निमुखा, अग्निज्वाला । २ स्त्री ), 'करिहारी' के २ नाम हैं ॥

१. 'शालपर्णी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कर्पासी बदरेति च' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'वृषभो वृषः' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका' इति पाठान्तरम् । अत्र 'नादेयी भूमिजम्बुके'त्युक्त्वाऽपि भ्रान्त्या पुनरत्रोक्तेति स्त्री० स्वा० ॥

—१ काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥

२ गोधापदी तु सुवहा ३ मुसली तालमूलिका ।

४ अजशृङ्गी विषाणी स्यात् ५ 'गोजिह्वादर्विके समे ॥ ११९ ॥

६ ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लीप्य ७ थ द्विजा ।

हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥

८ 'एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।

वालुकं चा ९ थ पालङ्क्या मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥

१० 'बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

१ काकाङ्गी ( + काकजहा ), काकनासिका ( २ स्त्री ), 'कौवाठोठी' के २ नाम हैं ॥

२ गोधापदी ( + हंसपदी ), सुवहा ( २ स्त्री ), 'लजालू' के २ नाम हैं ॥

३ मुसली, तालमूलिका ( २ स्त्री ) 'मुसलीकुन्द' के २ नाम हैं ॥

४ अजशृङ्गी, विषाणी ( २ स्त्री ), 'मेढासीङ्गी' के २ नाम हैं ॥

५ गोजिह्वा, दर्विका ( + दर्विका । २ स्त्री ), 'गोभी' के २ नाम हैं ॥

६ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ( ३ स्त्री ), 'नागबेल, पान' के ३ नाम हैं ॥

७ द्विजा, हरेणुः, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी ( + भस्मगन्धा, भस्मगर्भा । ६ स्त्री ), 'रेणुकाबीज' के ६ नाम हैं ॥

८ एलावालुकम् ( + एलवालुकम् ), ऐलेयम्, सुगन्धि (= सुगन्धिन् ) हरिवालुकम्, वालुकम् ( ५ न ), 'एलुआ' के ५ नाम हैं । ( यह सीतलचीनी की तरह होता है और इसमें कूठ-सा गन्ध होता है ) ॥

९ पालङ्की ( स्त्री ), मुकुन्दः, कुन्दः ( + कुन्दुः ), कुन्दुरुः ( + कुन्दरः । ३ पु ), 'पालक' के ४ नाम हैं ॥

१० बालम् ( + वालम् । + न पु ), ह्रीवेरम् ( + ह्रीवेरम् ), बर्हिष्ठम्, उदीच्यम्, केशाम्बुनाम ( = केशाम्बुनामन् । 'केश और जलके पर्यायवाचक सब शब्द' । ५ न ), 'नेत्रबाला' के ५ नाम हैं ॥

१. 'गोजिह्वादर्विके समे' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एला(वा)लुकमैलेयम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥  
 शैलेयं २ तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।  
 गन्धिनी ३ गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥  
 महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी 'ह्लादिनीति च ।  
 ४ अग्निज्वालासुभिक्षे तु 'घातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥  
 ५ पृथ्वीका 'चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुला ६ ५थ सा ।  
 सूक्ष्मोपकुञ्जिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा शुटिः ॥ १२५ ॥  
 ७ व्याधिः कुष्ठं 'पारिभाष्यं वाष्यं पाकलमुत्पलम् ।

१ कालानुसार्यम्, वृद्धम्, अश्मपुष्पम्, शीतशिवम्, शैलेयम् ( ५ न ), 'सिलाजीत' के ५ नाम हैं ॥

२ तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ( ५ स्त्री ), 'मुरा, समो-  
 रफली' के ५ नाम हैं ॥

३ गजभक्ष्या ( + गजभक्षा ), सुवहा ( + सुखवा ), सुरभी ( + सुरभिः );  
 रसा ( + सुरभीरसा ), महेरणा ( + महेरणा ), कुन्दुरुकी, सल्लकी ( + शल्लकी,  
 लिङ्गकी ), ह्लादिनी ( + ह्लादा । ८ स्त्री ), 'सल्लई' के ८ नाम हैं ॥

४ अग्निज्वाला, सुभिक्षा, घातकी ( + धातुकी ), धातुपुष्पिका ( + धातु-  
 पुष्पिका । ४ स्त्री ), 'धव' के ४ नाम हैं ॥

५ पृथ्वीका, चन्द्रबाला ( + चन्द्रवाला ), एला, निष्कुटिः ( + निष्कुटी ),  
 बहुला ( ५ स्त्री ), 'बड़ी इलायची' के ५ नाम हैं ॥

६ उपकुञ्जिका, तुत्था, कोरङ्गी, त्रिपुटा, शुटिः ( + शुटी । ५ स्त्री ), 'छोटी  
 इलायची' के ५ नाम हैं ॥

७ व्याधिः ( पु ), कुष्ठम्, पारिभाष्यम् ( + पारिभाष्यम् ), वाष्यम्  
 ( व्याप्यम्, आप्यम् ), पाकलम्, उत्पलम्, ( ५ न ), 'कूठ' ( औषधि-  
 विशेष ) के ६ नाम हैं ॥

१. 'ह्लादिनीति च' इति पाठान्तरम् ॥ २. धातुकी 'धातुपुष्पिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चन्द्रबालैला' इत्यसमीचीनः पाठः । स्त्री० स्वा० भा० दी० व्याख्यानोक्तस्य चन्द्र-  
 बाळेवेति विग्रहस्यैवोचितर्यात् ॥

४ 'पारिभाष्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम्' इति पाठान्तरम् ॥



- १ शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्य २ थ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥  
 झटामलाञ्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।  
 ३ प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यं ४ मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥  
 'कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो ५ ५ थ राक्षसी ।  
 चण्डा धनहरी 'क्षेमदुष्पत्त्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥  
 ६ व्याढायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।  
 ७ 'सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥  
 ८ धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हृदविलासिनी ।

१ शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी ( ३ स्त्री ), 'शङ्खाहुलीनामक लताविशेष' के ३ नाम हैं ॥

२ वितुन्नकः ( पु ), झटामला ( + झटा, भमला ), अञ्झटा ( + भमला-ञ्झटा ), ताली, शिवा, तामलकी ( ५ स्त्री ), 'भुई आँवरा, छोटा आँवरा' के ६ नाम हैं ॥

३ प्रपौण्डरीकम्, पौण्डर्यम् ( + पुण्डर्यम् । २ न ), 'पुण्डरीय वृक्ष' के २ नाम हैं ॥

४ तुन्नः, कुबेरकः, कुणिः ( + तुणिः ), कच्छः, कान्तलकः, नन्दिवृक्षः ( + नान्दिवृक्षः । ६ पु ), 'तून, तूणी' के ६ नाम हैं ॥

५ राक्षसी, चण्डा, धनहरी ( ३ स्त्री ), क्षेमः, दुष्पत्त्रः ( + दुष्पुत्रः ), गणहासकः ( + गणः, हासकः । ३ पु ), 'चोरानामक गन्धद्रव्य' के ६ नाम हैं ॥

६ व्याढायुधम् ( + व्यालयुधम् ), व्याघ्रनखम्, करजम्, चक्रकारकम् ( ४ न ), 'व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य, घघनखा' के ४ नाम हैं ॥

७ सुषिरा ( + शुषिरा ), विद्रुमलता, कपोताङ्घ्रिः, नटी, नली ( ५ स्त्री ), भा० दी० मतसे 'मालकाँगनी' के ५ नाम हैं ॥

८ धमनी, अञ्जनकेशी, हनुः, हृदविलासिनी ( ४ स्त्री ), भा० दी० मतसे 'अञ्जनकेशी' के ४ नाम हैं ॥

१. 'तुणिः कच्छः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'क्षेमदुष्पुत्रगणहासकाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'व्यालयुधम्' इति पाठान्तरम् ॥ ४ 'शुषिरा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख २ मथाढकी ॥ १३० ॥  
 काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।  
 ३ कुटञ्जटं 'दाशपुरं' वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥  
 प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ।  
 ४ ग्रन्थिपर्णं 'शुकं' बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे ॥ १३२ ॥  
 ५ मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।

१ शुक्तिः ( खा ), शङ्खः, खुरः ( २ पु ), कोलदलम् , नखम् ( + नखी २ न ), भा० दी० मतसे 'नखनामक गन्धद्रव्य' के ५ नाम हैं । ( महे० मतसे 'सुविरा.....' ७ नाम 'मालकाङ्कनो' के और 'हनुः.....' ७ नाम 'नखनामक गन्धद्रव्य' के हैं ) ॥

२ आढकी, काक्षी, मृत्स्ना ( + मृत्सा ), तुवरिका ( + तूवरिका । ३ खी ), मृत्तालकम् ( + मृत्तालकम् ), सुराष्ट्रजम् ( २ न ), 'रहर, अरहर' ( तूर ) के ६ नाम हैं ॥

३ कुटञ्जटम् ( + पु न ), दाशपुरम् ( + दशपुरम् , दशपूरम् ), वानेयम् ( + वन्यम् ) परिपेलवम् , प्लवम् , गोपुरम् , गोनर्दम् , कैवर्तीमुस्तकम् ( + कैवर्तीमुस्तकम् , कैवर्तमुस्तकम् । ८ न ), 'छोटा नागरमोथा, कैवर्ती-मुस्तक, जलमोथा' के ८ नाम हैं ॥

४ ग्रन्थिपर्णम् , शुकम् , बर्हम् ( + बर्हिः । + शुकबर्हम् स्त्री० स्वा० ), पुष्पम् ( + बर्हपुष्पम् ), स्थौणेयम् , कुङ्कुरम् ( ६ न ) 'कुकरौन्हा या गठिवन' के ६ नाम हैं ॥

५ मरुन्माला, पिशुना, स्पृक्का ( + पृक्का ), देवी, लता, लघुः, समुद्रा-

१. 'दशपुरम्' इति 'दाशपूरम्' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'शुकं बर्हपुष्पम् , शुकबर्हपुष्पम् , शुकं बर्हिपुष्पम्' इति पाठान्तराणि ॥

३. ये तु—'स्पृक्का तु ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लता लघुः ।

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिका मरुत् ॥ १ ॥

मुनिर्माल्यवती माला मोहना कुटिला मता' ।

इति वाचस्पत्युक्त्याऽत्रापि 'मरुत्, माला' इति पृथक् नामनी'त्याहुस्तच्चिन्त्यम् । तथा सति स्वन्तरेण मरुच्छब्दस्यासंग्रहापत्तेरित्यवश्यम् ॥

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

१ तपस्विनी जटामांसी जटिला 'लोमशा मिसी ।

२ त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

३ कर्चूरको द्राविडकः 'कार्पको वेधमुख्यकः ।

४ ओषधी जातिमात्रे स्युः ५ रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

६ शाकाख्यं 'पत्रपुष्पादि ७ तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

न्ता, वधूः ( + वधूः ), कोटिवर्षा, लङ्कोपिका ( १० स्त्री ), 'असवरग, स्पृका, अस्यरक एक तरहका शाक-विशेष' के १० नाम हैं ॥

१ तपस्विनी, जटामांसी, जटिला, लोमशा, मिसी ( + मिसिः, मिषिः, मिषी, मसिः, मषिः, मषो, मसी, आमिषी । ५ स्त्री ), 'जटामांसी' के ५ नाम हैं ॥

२ त्वक्पत्रम् ( + त्वक् = त्वच्, पत्रम् ), उत्कटम्, भृङ्गम्, त्वचम्, चोचम्, वराङ्गकम् ( ६ न ), 'दालचीनी के ६ नाम हैं ॥

३ कर्चूरकः ( + कर्चूरकः ), द्राविडकः, कार्पकः ( कार्पकः ), वेध-मुख्यकः ( ४ पु ), 'कर्चूर' के ४ नाम हैं ॥

४ ओषधी ( स्त्री ), 'जातिमात्र' अर्थात् 'ग्रोहि' ( धान्य ), यव, चना आदि' के अर्थ में प्रयुक्त होता है ॥

५ औषधम् ( न ) 'जातिसे भिन्न' अर्थात् 'दवा आदि' के अर्थमें प्रयुक्त होता है ॥

६ शाकम् ( न ), 'साग' अर्थात् 'जिससे फल, फूल आदि ( 'जड़, शाखा, कन्द...' ) का बोध हो, उसका १ नाम है । जड़ १, पत्ता २, अङ्कुर ३, अग्रभाग ४, फल ५, शाखा ६, अधिकरुढ ७, छाल ८, फूल ९ और कवक १० ये 'दस प्रकारके 'शाक' होते हैं ॥

७ तण्डुलीयः, अल्पमारिषः ( २ पु ), 'चौराईके शाक' के २ नाम हैं ॥

१. 'लोमशा मिषो, लोमशा मिशी' इति पाठान्तरे ॥

२. 'कार्पको वेधमुख्यकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पत्रमूलादि' इति पाठान्तरम् ॥

४. तदुक्तम्—

'मूलपत्रकरीर्राग्रफलकाण्डाधिरुढकम् ।

त्वक्पुष्पं कवकं चैव 'शाकं दशविधं' स्मृतम्' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥
- २ 'स्यादक्षगन्धा छगलान्धावेगी वृद्धदारकः ।  
जुहो ३ ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्या सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥
- ४ पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।
- ५ हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥
- ६ 'तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

१ विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पिका ( ५ स्त्री ), 'अग्निशिखा, इन्द्रपुष्पी' के ५ नाम हैं ॥

२ ऋक्षगन्धा ( + वृक्षगन्धा, ऋष्यगन्धा ), छगलान्त्रां ( + छगलाङ्गो, छगलाण्डी, छगलाङ्गो. छगला, अन्त्री, ), आवेगी ( ३ स्त्री ), वृद्धदारकः, जुहः ( २ पु ), 'विधारा' के ५ नाम हैं ॥

३ ब्राह्मी, मत्स्याक्षी, वयस्या, सोमवल्लरी ( + सोमवल्लरिः । ४ स्त्री ), 'ब्राह्मी' के ४ नाम हैं ॥

४ पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी ( + स्वर्णवती ), हिमावती ( ४ स्त्री ), 'मकोय' के ४ नाम हैं ॥

५ हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, महासहा ( ४ स्त्री ), 'माषपर्णी वनउड्' के ४ नाम हैं ॥

६ तुण्डिकेरी ( + तुण्डिकेरी, तुण्डिकेशी ), रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी ( ४ स्त्री ), 'कुनुरुन, कुन्दरु' के ४ नाम हैं ॥

तत्र १ मूलम्—मूलकविषादेः, २ पत्रम्—वास्तूकनिम्बादेः, करीरम्—वंशाङ्कुरादेः, ४ अग्रम्—वेत्रादेः, ५ फलम्—कूष्माण्डवार्ताक्यादेः ६ काण्डम्—कमलादेर्नालम्, ७ अधिरूढकम्—'तालास्थिमज्जेति, गौडः' 'क्षेत्रोद्भूतं तस्य फलमूलादेः सेकान्नबोद्धिशाङ्कुरा अधिरूढम्' इति क्षी० स्वा०; ८ र्वक्—मातुलुङ्गादेः, ९ पुष्पम्—तिन्तिडीकोविदारादेः, कवकम्—छत्राकम् इति । केचित्तु—

'पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा । शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विषाद्यथोत्तरम् ॥१॥

इत्युक्तेः षड्विधं शाकमामनन्ति । तत्र संस्वेदजं भूमिच्छत्रम्, अन्ये प्रागुक्ता बोध्याः ॥

१. 'स्याद् वृक्षगन्धा, स्यादृष्यगन्धा' इति तत्रैव 'छगलाण्ध्यावेगी' इति च पाठान्तराणि ॥

२. 'तुण्डिकेरी' इति 'तुण्डिकेशी' इति च पाठान्तरे ॥

- १ 'वर्बरा कवरी तुङ्गी खरपुग्पाजगन्धिका ॥ १३९ ॥
- २ पलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।
- ३ चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाऽम्बष्टाम्बल्लोणिका ॥ १४० ॥
- ४ सहस्रवेधी चुक्रोऽम्बल्लवेतसः शतवेध्यपि ।
- ५ नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥
- ६ जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।
- ७ कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

१ वर्बरा ( + बर्बरा, धर्वरा ), कवरी ( + कवरी ), तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका ( ५ स्त्री ), 'पचई, बचई' नामक शाकविशेष' के ५ नाम हैं ॥

२ पलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा ( ४ स्त्री ), पलापर्णी' के ४ नाम हैं ॥

३ चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्टा, अम्बल्लोणिका ( + अम्बल्लोणिका, अम्बल्लोलिका । ५ स्त्री ), 'नोनी, चूक' ( शाकविशेष ) के ५ नाम हैं ॥

४ सहस्रवेधी ( = सहस्रवेधिन् ), चुक्रः, अम्बल्लवेतसः ( + अम्बल्लवेतसः ), शतवेधी ( = शतवेधिन् । ४ पु ), 'अमल्लवेत' के ४ नाम हैं । ( 'चाङ्गेरी, आदि ९ शब्द एक पर्याय हैं, यह भी किसी-किसी का मत है ) ॥

५ नमस्कारी, गण्डकारी ( + गण्डकाली ), समङ्गा, खदिरा ( + खदिरी । ४ स्त्री ), 'लजालू, छुईमुई' के ४ नाम हैं ॥

६ जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा ( + मधुः, स्रवा । ५ स्त्री ), 'जीवन्ती' के ५ नाम हैं ॥

७ कूर्चशीर्षः, मधुरकः, शृङ्गः, ह्रस्वाङ्गः, जीवकः ( ५ पु ), 'जीवक' के ५ नाम हैं । ( 'जीवन्ती आदि १० शब्द एक पर्यायवाचक हैं, यह भी किसी-किसी का मत है' ) ॥

१. 'वर्बरा कवरी इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दन्तशठाम्बष्टाम्बल्लोणिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चुक्रोऽम्बल्लवेतसः' इति पाठान्तरम् ॥ ४. 'गण्डकाली समङ्गा खदिरीत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'मधुःस्रवा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ किरातत्तिको भूनिम्बोऽनार्यत्तिको २ ऽथ सप्तला ।  
 'विमला सातला भूरिकेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥  
 ३ वायसोली स्वादुरसा वयस्था ४ ऽथ मकूलकः ।  
 निकुम्भो दन्तिका प्रत्यकश्रेण्युदुम्बरपर्यपि ॥ १४४ ॥  
 ५ अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।  
 ६ मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥  
 ७ अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

१ किरातत्तिकः ( + चिरात्तिकः, चिरत्तिकः, चिरात्तिकः, किरातः, कैरातः),  
 भूनिम्बः, अनार्यत्तिकः ( ३ पु ), 'चिगायता' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, विमला, सातला ( + शातला ), भूरिकेना, चर्मकषा ( ५ स्त्री ),  
 'सेहुद, थूहर' के ५ नाम हैं ॥

३ वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था ( ३ स्त्री ), 'काकोली' के ३ नाम हैं ॥

४ मकूलकः ( + मुकूलकः ), निकुम्भः ( २ पु ), दन्तिका ( + दन्तिना ),  
 प्रत्यकश्रेणी, उदुम्बरपर्णी ( + तदुम्बरपर्णी, उदुम्बरपर्णी । ३ स्त्री ), 'दन्तिनामक  
 औषध' के ५ नाम हैं ॥

५ अजमोदा, तूग्रगन्धा, ब्रह्मदर्भा, यवानिका ( + यमानिका । ४ स्त्री ),  
 'अजमोदा अजवाइन' के ४ नाम हैं । ( 'यद्यपि 'यवानिका' को पहले कह  
 चुके हैं, तथापि शास्त्रभेदमें यहाँ पुनः कहते हैं' ) ॥

६ पुष्करम् , काश्मीरम्, पद्मपत्रम् ( + पद्मवर्णम् । ३ न ), 'पुष्करमूल'  
 के ३ नाम हैं ॥

७ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी ( ५ स्त्री ), 'पद्मचारिणी,  
 स्थलकमलिनी' के ५ नाम हैं ॥

१. 'विमला शातला' इति पाठान्तरम् ॥ २. मुकूलकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'यमानिका' इति पाठान्तरम्, \* अत्र 'यवानिका' पुनरुक्ताऽपि, शास्त्रभेदात्पुनरुक्ता,  
 यवानोति मत्वा ग्रन्थकृद् भ्रान्तो वा' इति स्त्री० स्वा० ॥

४. 'पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि' अत्र 'पद्मवर्णे'त्यत्र 'पद्मपर्णे'ति लिपिभ्रान्त्या ग्रन्थकारः  
 'पद्मपत्रे'त्याह' इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ काम्पिलयः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥  
 २ प्रपुष्पाडस्त्येडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ।  
 पष्पाट उरणाख्यश्च ३ पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥  
 ४ लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते ५ ऽथ महौषधम् ।  
 लशुने गृजनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥  
 ६ पुनर्नवा तु शोथघ्नी ७ वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

१ काम्पिलयः ( + काम्पिलः ), कर्कशः, चन्द्रः, रक्ताङ्गः ( ४ पु ), रोचनी ( + रेचनी । स्त्री ), 'कवीला' के ५ नाम हैं ॥

२ प्रपुष्पाडः ( + प्रपुष्नालः, प्रपुनालः, प्रपुनाडः, प्रपुन्नडः ), एडगजः ( + एलागजः ), दद्रुघ्नः ( + दद्रुघ्नः, दद्रुहरः ), चक्रमर्दकः, पष्पाटः, उरणाख्यः ( 'उरण' अर्थात् मेषके वाचक सत्र नाम । + उरणाक्षः । ६ पु ), 'चक्रवट' के ६ नाम हैं ॥

३ पलाण्डुः, सुकन्दकः ( २ पु ), 'प्याज' के २ नाम हैं ॥

४ लतार्कः, दुद्रुमः ( २ पु ), 'द्वरे प्याज' के १ नाम हैं । ( 'धन्वन्तरि ने इन दोनों को पलाण्डु ( प्याज ) से अभिज्ञा माना है' ) ॥

५ महौषधम्, लशुनम् ( + लशूनम् । + पु । २ न ), गृजनः, अरिष्टः, महाकन्दः, रसोनकः ( ४ पु ), 'लहसुन' के ६ नाम हैं । ( 'सुश्रुतकारने इन्हें भी पलाण्डु ( प्याज ) की जाति माना है' ) ॥

६ पुनर्नवा, शोथघ्नी ( २ स्त्री ) 'गदहपुनी' के २ नाम हैं ॥

७ वितुन्नम्, सुनिषण्णकम् ( २ न ), 'विस खपरिया' के २ नाम हैं ॥

१. काम्पिलः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि' इति पाठान्तरम्

२. 'उरणाक्ष' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा चोक्तं धन्वन्तरिणा—

'पलाण्डुर्भ(यं)वनेष्टश्च मुकुन्दो मुखदूषकः ।

हरिणोऽन्यपलाण्डुस्तु लतार्को दुद्रुमश्च सः ॥ १ ॥ इति क्षी० स्वा० ॥

४. तदाह सुश्रुते—

'लशुनो दीर्घपत्रश्च पिच्छान्धो महौषधम् । फरणश्च पलाण्डुश्च लवतर्कोऽपराजितः ॥ १ ॥

गृजनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः । इति क्षी० स्वा० ॥

- १ स्याद्वातकः 'शीतलोऽपराजिता शणपण्यपि ॥ १४९ ॥
- २ पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।
- ३ वार्षिकं त्रायमाणा स्यान्नायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥
- ४ विष्वक्सेनप्रिया 'गृष्टि' वाराही बदरेत्यपि ।
- ५ मार्कवो भृङ्गराजः स्यात् ६ काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥
- ७ शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।  
अवाक्पुष्पी कारवी च ८ 'सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥  
तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

१ वातकः, शीतलः ( + शीतलवातकः, १ धन्व० २ पु ), अपराजिता, शणपर्णी ( + सनपर्णी, असनपर्णी, आसनपर्णी । २ स्त्री ), 'पटुआ, पटसन' के ४ नाम हैं ॥

२ पारावताङ्घ्रिः ( + पारावताङ्घ्रिः ), कटभी, पण्या, ज्योतिष्मती ( + ज्योतिष्का ), लता, ( ५ स्त्री ), 'मालकांगनी' के ५ नाम हैं ॥

३ वार्षिकम् ( न ) त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका ( ३ स्त्री ), 'त्राय-माणा' के ४ नाम हैं ॥

४ विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टिः ( + गृष्टिः ) वाराही, बदरा ( ४ स्त्री ), 'वाराही कन्द' के ४ नाम हैं ॥

५ मार्कवः, भृङ्गराजः ( + भृङ्गरजाः = भृङ्गरजस् ; भृङ्गरजः = भृङ्गरज । २ पु ), 'भेंगराज' के २ नाम हैं ॥

६ काकमाची ( + काचमाची ) वायसी ( २ स्त्री ), 'मकोथ, काकप्रिया' के २ नाम हैं ॥

७ शतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसिः ( + मिसी ), अवाक्पुष्पी, कारवी ( ७ स्त्री ), 'सौफ' के ७ नाम हैं । ( 'अन्तवाले २ नाम 'ऊँचावली' के हैं, यह भी किसी किसी का मत है' ) ॥

८ सरणा ( + सरणी ), प्रसारिणी, कटम्भरा ( + कटम्भरा ), राजबला, भद्रबला, ( ५ स्त्री ) 'आकाशबेल' ( बंवर ) के ५ नाम हैं ॥

१. शीतलोऽपराजिताशनपण्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

'गृष्टि' वाराही बदरेत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सरणी' इति तु युक्तः पाठः' इति क्षी० स्वा० ॥



- १ जनी जतूका <sup>१</sup>रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥  
 संस्पर्शा २ ऽथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।  
 कर्चूरोऽपि पलाशो ३ ऽथ कारवेल्लः <sup>४</sup>कठिल्लकः ॥ १५४ ॥  
 सुषवी चा ४ थ कुलकं पटोलस्तित्तकः पटुः ।  
 ५ कूष्माण्डकस्तु <sup>६</sup>कर्कारु ६ उर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥  
 ७ इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात् ८ तुम्ब्यलावूरुभे समे ।

१ जनी ( + जनिः ), जतूका ( + जतुका ), रजनी ( जननी ), जतुकृत्, चक्रवर्तिनी, संस्पर्शा ( ६ स्त्री ) 'चक्रवत्' के ६ नाम हैं ॥

२ शटी, गन्धमूली ( + गन्धमूला ), षड्ग्रन्थिका ( ३ स्त्री ), कर्चूरः ( + कर्चूरः, कर्चूरः ), पलाशः ( २ पु ), 'आमोदहृदी' के ५ नाम हैं ॥

३ कारवेल्लः, कठिल्लक ( + कठिल्लकः । २ पु ), सुषवी ( सुसवी, सुशवी । स्त्री ), 'करैला' के ३ नाम हैं ॥

४ कुलकम् ( न ), पटोलः, तित्तकः, पटुः ( ३ पु ), 'परवल' के ४ नाम हैं ॥

५ कूष्माण्डकः ( + कूष्माण्डकः, कूष्माण्डः, कुष्माण्डः ), कर्कारुः ( २ पु ) 'कदीमा, तरकारीवाले कोहड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ उर्वारुः ( + ईवारुः, इर्वारुः, ईवालुः, एर्वारुः, ), कर्कटी ( + कर्कटिः । २ स्त्री ), 'ककड़ी, कांकर' के २ नाम हैं ॥

७ इक्ष्वाकुः, कटुतुम्बा ( २ स्त्री ) 'तितलीकी, तीता कदू' के ३ नाम हैं ॥

८ तुम्बी ( + तुम्बिः, तुम्बा, तुम्बः ), अलावूः, ( + आलावूः, आलाबुः, अलाबुः, लाबुः, लावूः, लाबुका । २ स्त्री ) 'कदू, लीकी' के २ नाम हैं ॥

१. 'जननी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कठिलकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कर्कारुर्वारुः' इति 'कर्कारुरीवारुः' इति च पाठान्तरे । 'एर्वारुः' कटुचिमेंटी, 'उर्वारुमिव बन्धनाद्—' इति श्रुतेः 'उर्वारुकं स्वादुचिमेंटीमादुः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. तद्भेदानाह बृहस्पतिः—

'अलावूः स्त्री पिण्डफला तुम्बिस्तुम्बी महाफला ।

तुम्बा तु वतुलाऽलावूनिम्बे तुम्बी तु लाबुका' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा २ विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥  
 ३ अशोऽन्नः 'सूरणः' कन्दो ४ गण्डीरस्तु समष्टिला ।  
 ५ 'कलम्ब्युपोदिका'ऽस्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥  
 'वास्तुकं' शाकभेदाः स्युः ६ दूर्वा तु शतपर्विका ।  
 सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता ७ ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥  
 गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली 'शकुलाक्षका' ।

१ चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा ( ३ स्त्री ), 'जेठुई काँकर' के ३ नाम हैं ॥

२ विशाला, इन्द्रवारुणी ( २ स्त्री ), 'इनारुन' के २ नाम हैं ॥

३ अशोऽन्नः, सूरणः ( + शूरणः ), कन्दः ( ३ पु ), 'ओल, सूरन' के ३ नाम हैं ॥

४ गण्डीरः ( पु ), समष्टिला ( स्त्री ), 'गांडरनामक शाक-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कलम्बी, उपोदिका ( + उपोदका, अपोदका ), मूलकम्, ( न पु ), हिलमोचिका, वास्तुकम् ( + वास्तूकम् । न । शेष स्त्री ), 'करमी या करेमुआँ, पोई, मूली या मुरई, हिलसाल और बथुआके साग' का क्रमशः १-१ नाम है । ( 'यहाँ तक शाक-भेदका वर्णन है' ) ॥

६ दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ( ६ स्त्री ), 'दूब' के ६ नाम हैं ॥

७ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका ( + पु । ४ स्त्री ), 'सफेद दूब' के ४ नाम हैं, यह भा० दी० का मत है । ( प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम 'दूबके भेद-विशेष' के हैं, यह स्त्री० स्वा० का मत है ) ॥

१. 'सूरणः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कलम्ब्युपोदका' इति भा० दी० पाठः, 'कलम्ब्युपोदका' इति क्षी० स्वा० पाठः, मूलस्थस्तु महे० सम्मत इत्यवधेयम् ॥

३. 'वास्तूकम्' इति पाठान्तरम् । अत्र निर्णयसागरीय व्या० सु० पुस्तके 'वास्तुकम्' इति मूलपाठश्चिन्त्यस्तत्र 'वल्लकादयश्च' ( उ० सू० ४।४१ इति 'वास्तुक' शब्दस्य सिद्ध्युक्तेः, पुनर्हंस्वमध्यस्य 'वास्तुक' शब्दस्य प्रकारान्तरेण सिद्ध्युक्तेश्च स्वोक्तिविरोधात् ॥

४. 'शकुलाक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥  
 २ स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा ३ चूडाला चक्रलोच्चटा ।  
 ४ वंशे त्वक्सारकर्मारत्नचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥  
 शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।  
 ५ वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥  
 ६ ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी ७ गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।  
 ८ नडस्तु धमनः पोटगलो ९ ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥  
 इक्षुगन्धा पोटगलः—

१ कुरुविन्दः, मेघनामा ( = मेघनामन् । + मेघके वाचक सब नाम । २ पु), मुस्ता ( स्त्री ), मुस्तकम् ( न पु ), 'मोथा' के ४ नाम हैं ॥

२ भद्रमुस्तकः ( पु । + भद्रम् , मुस्तकम् ; २ न ), गुन्द्रा ( स्त्री ), 'नागरमोथा' के २ नाम हैं । ( 'धन्वन्तरिने 'गुन्द्रा और भद्रमुस्तक' में अभेद' माना है' ) ॥

३ चूडाला, चक्रला, उच्चटा ( ३ स्त्री ), 'चूडाला, एक प्रकारके मोथा घास' के ३ नाम हैं ॥

४ वंशः, त्वक्सारः, कर्मारः, त्वचिसारः, तृणध्वजः, शतपर्वा ( = शतपर्वन् ), यवफला, वेणुः, मस्करः, तेजनः ( १० पु ), 'बाँस' के १० नाम हैं ॥

५ कीचकः ( पु ), 'छिद्रमें हवाके प्रवेश करनेपर बजनेवाले बाँस' का १ नाम है ॥

६ ग्रन्थिः ( पु ), पर्व ( = पर्वन् ), परुः ( = परुस् । + परु = परुः । २ स्त्री न ), 'बाँस आदिके गाँठ या पोर' के ३ नाम हैं ॥

७ गुन्द्रः, तेजनकः, शरः ( + शरः । ३ पु ), 'सरकण्डा, सरई' के ३ नाम हैं ॥

८ नडः ( + नलः ), धमनः, पोटगलः ( ३ पु ), 'नरसल, नरकट, नरई' के ३ नाम हैं ॥

९ काशः ( + कासः । पु न ), इक्षुगन्धा ( स्त्री ), पोटगलः ( पु ), 'काशनामक तृण-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

१. धन्वन्तरिरभेदमाह—'मुस्तमम्बुधरो मेघो घनो राजकशेरुकः ।

भद्रमुस्तो वराहोऽब्धो गार्ज्जयः कुरुविन्दकः' ॥ १ ॥

इति क्षी० स्वा० ॥

—१ पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

२ रसाल इक्षु ३ स्तब्धेष्वाः पुण्ड्रकान्तरकादयः ॥ १६३ ॥

४ स्याद्वीरणं वीरतरं ५ मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

६ नडादयस्तृणं गर्मुच्छयामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

१ बल्वजाः ( पु निथ्य व० व० । + ए० व० ) 'बगई' का १ नाम है ।

( 'काशः, ...' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी किसीका मत है ) ॥

२ रसालः, इक्षुः ( २ पु ), 'ईख, गन्ना, ऊख' के २ नाम हैं ॥

३ पुण्ड्रः ( + पौण्ड्रः ), कान्तारकः ( २ पु ), आदि ( 'आदि शब्दसे 'रसालः, कर्कटकः ( २ पु ) 'का संग्रह है' ) ये 'ऊखके 'भेद-विशेष' हैं ॥

४ वीरणम्, वीरतरम् ( २ न ), 'गाँडर घास' के २ नाम हैं । ( 'इसीके जड़को 'खश' कहते हैं' ) ॥

५ उशीरम् ( न पु ), अभयम्, नलदम्, सेव्यम्, अमृणालम् ( + मृणालम् ), जलाशयम्, लामज्जकम्, लघुलयम् ( + लघु, लयम् ) अवदाहम्, इष्टकापथम् ( + अवदाहेष्टम्, । ९ न ) 'खश' के १० नाम हैं ॥

६ 'नडा' आदि और 'गर्मुत्', श्यामाकः ( + श्यामकः । २ पु ), अर्थात् क्रमशः 'एक तृण-विशेष और साँवा' और 'प्रमुख' शब्दसे नीवारः, कोद्रवः ( २ पु ), अर्थात् क्रमशः 'तेनी या तीनी और कोदो' ये 'तृणधान्य' हैं ॥

१. 'लघु लयमवदाहेष्टकापथे' इति । इष्टकापथेत्यत्र 'ग्रन्थकृत्तु सेव्यामृणालमृणालयोर्नलदोशी-  
रैकार्थत्वाद् भ्रान्तः' इति क्षी. स्वा. ॥ २. 'एको बल्वज' इति पातञ्जलमहाभाष्योत्तरित्यवधेयम् ॥

३. इक्षुभेदा यथा— इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारो वेणुनिःसृतः ।

इक्षुगन्धः पौण्ड्रकश्च रसालः सुकुमारकः ॥ १ ॥

अन्यः करङ्कशालिः स्यादिक्षुयोनीक्षुबालिका ।

तथान्य इक्षुगन्धा स्यादिक्षुलः कोकिलाक्षकः ॥ २ ॥ इति ॥

निषण्ठी त्वन्य एवेक्षुभेदा उक्तास्ते यथा—

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ १ ॥

नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकः । श्वेता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥ २ ॥ इति ॥

- १ अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्र २ मथ कत्तृणम् ।  
 पौरसौगन्धिक्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥  
 ३ छत्राऽतिच्छत्रपालघ्नौ ४ मालातृणकभूस्तृणे ।  
 ५ शष्पं बालतृणं ६ घासो यवसं ७ तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥  
 ८ तृणानां संहतिस्तृण्या ९ नड्या तु नडसंहतिः ।  
 १० तृणराजाद्वयस्तालो ११ नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥  
 १२ घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो १३ ऽस्य तु ।  
 फलमुद्वेगम्—

१ कुशम् ( पु न ), कुथः, दर्भः ( २ पु ), पवित्रम् ( न ), 'कुशा' के ४ नाम हैं ॥  
 २ कत्तृणम्, पौरम्, सौगन्धिकम्, ध्यामम्, देवजग्धकम्, रौहिषम् ( ६ न ), 'रौहिषनामक सुगन्धित घास' के ६ नाम हैं ॥

३ छत्रा ( स्त्री ), अतिच्छत्रः, पालघ्नः ( २ पु ), 'पानीमें होनेवाले तृण-विशेष' के ६ नाम हैं ।

४ मालातृणकम्, भूस्तृणकम् ( २ न ), 'वचके समान रूप तथा पानीमें होनेवाले तृण-विशेष' के २ नाम हैं । ( 'यह भा० दी० का मत है । महे० और स्त्री० स्वा० के मतसे 'छत्रा, 'भूस्तृण' ५ शब्द एकार्थक हैं' ) ॥

५ शष्पम् ( + शस्यम् ), बालतृणम् ( २ न ), 'नई और कोमल घास' के २ नाम हैं ॥

६ घासः ( पु ), यवसम् ( न ), 'गवत' अर्थात् 'बैल, घोड़ा, आदि पशुओंके खाने योग्य भूसा-घास' के २ नाम हैं ॥

७ तृणम्, अर्जुनम् ( २ न ), 'तृणमात्र' के २ नाम हैं ॥

८ तृण्या ( स्त्री ), 'घासकी ढेरी' का १ नाम है ॥

९ नड्या ( स्त्री ), 'नड-समूह' का १ नाम है ॥

१० तृणराजः, तालः ( + तलः । २ पु ), 'ताड़' के २ नाम हैं ॥

११ नालिकरः ( + नारिकेरः, नारिकेलः, नाडिकेरः, नारीकेलः, ४ पु०; नारिकेलिः, नारीकेली; २ स्त्री ), लाङ्गली ( = लाङ्गलिन् । + लाङ्गली = लाङ्गली, स्त्री । २ पु ), 'नारियल' के २ नाम हैं ॥

१२ घोण्टा ( स्त्री ), पूगः, क्रमुकः, गुवाकः ( + गूवाकः ), खपुरः ( ४ पु ), 'सुपारी, कसैलीके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

१३ उद्वेगम् ( न ), 'सुपारीके फल' का १ नाम है ।

—१ एते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥

खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

### ५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

३ 'कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः' ( ८ )

पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः' ( ९ )

४ शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे ५ तरश्वस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

६ वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री 'किरिः किटिः ।

१ हिन्तालः ( पु ) के सहित पूर्वोक्त तीन शब्द ( नारिकेल, ताल, घोण्टा ) और खर्जूरः ( पु ), केतकी, ताली, खर्जूरी ( ३ स्त्री ) को तृणद्रुमः ( पु ) अर्थात् 'तृणद्रुम' कहते हैं ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

### ५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहः, मृगेन्द्रः, पञ्चास्यः, हर्यक्षः, केसरी ( = केसरिन् । + केशरी = केशरिन् ), हरिः ( ६ पु ), 'सिंह' के ६ नाम हैं ॥

३ [ कण्ठीरवः मृगरिपुः, मृगदृष्टिः, मृगाशनः, पुण्डरीकः, पञ्चनखः, चित्रकायः, मृगद्विषः । ८ पु ), 'सिंह' के ८ नाम हैं ] ॥

४ शार्दूलः, द्वीपी ( = द्वीपिन् ), व्याघ्रः ( ३ पु ), 'बाघ' के ३ नाम हैं ॥

५ तरश्वः ( + तरश्वः ) मृगादनः ( २ पु ) 'चिता या तेंदुआ बाघ' के २ नाम हैं ( 'मुकु० मतसे 'वृक' अर्थात् 'हुँकार भेंड़िया' = ये २ नाम हैं ) ॥

६ वराहः, सूकरः ( + शूकरः ), घृष्टिः ( + गृष्टिः ), कोलः, पोत्री ( = पोत्रिन् ), किरिः, ( + किरः ) किटिः, दंष्ट्री ( = दंष्ट्रिन् ), घोणी ( घोणिन् )

१. 'किरः, किटिः' इति पाठान्तरम् ॥

- दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥  
 १ कपिप्लवङ्गप्लवगशाखासृगवलीमुखाः ।  
 मर्कटो वानरः कीशो वनौका २ अथ भल्लुके ॥ ३ ॥  
 ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका ३ गण्डके खड्गखड्गिनौ ।  
 ४ लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥  
 ५ स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुसृगधूर्तकाः ।  
 शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवज्रम्बुकाः ॥ ५ ॥  
 ६ ओतुविडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।  
 ७ त्रयो गौधारगौधेरगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

स्तब्धरोमा (=स्तब्धरोमन्), क्रोडः, भूदारः (१२ पु), 'सूअर' के १२ नाम हैं ॥

१ कपिः, प्लवङ्गः (+ प्लवङ्गमः), प्लवगः, शाखासृगः, वलीमुखः ( बली-  
 मुखः, बलिमुखः ) मर्कटः, वानरः, कीशः, वनौकाः ( = वनौकस् । ९ पु ),  
 'वन्दर' के ९ नाम हैं ॥

२ भल्लुकः, ऋक्षः, अच्छभल्लः (+ अच्छः, भल्लः ), भल्लूकः (+ भाल्लूकः,  
 भालुकः, भालूकः । ४ पु), 'भालू' के ४ नाम हैं ।

३ गण्डकः, खड्गः, खड्गी ( = खड्गिन् । ३ पु ) 'गैडा' के ३ नाम हैं ॥

४ लुलायः (+ लुलापः), महिषः, वाहद्विषन् ( = वाहद्विषत् । + वाहद्विट्=  
 वाहद्विष् ), कासरः, सैरिभः ( ५ पु ), 'भैंसा' के १२ नाम हैं ॥

५ शिवा ( नि० स्त्री ), भूरिमायः, गोमायुः, सृगधूर्तकः, शृगालः  
 ( + सृगालः ), वञ्चकः ( + वञ्चुकः ), क्रोष्टा ( = क्रोष्टु ), फेरुः, फेरवः  
 ( + फेरण्डः ), जम्बुकः ( + जम्बूकः । ९ पु ) 'स्यार, शृगाल' के  
 १० नाम हैं ॥

६ ओतुः, विडालः (+ विडालः, विलाळः ), मार्जारः, वृषदंशकः, आखुभुक्  
 ( = आखुभुज् । ५ पु ), 'बिलाव' के ५ नाम हैं ॥

७ गौधारः, गौधेरः, गौधेयः ( ३ पु ), 'गोहरा, चन्दनगोह' अर्थात्  
 'काले सौंप से गोह में पैदा होनेवाला जीवविशेष' 'विसखपरा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'ऋक्षाच्छभल्लभालूका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लुलापो महिषः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सृगालो वञ्चकः क्रोष्टु' इति पाठान्तरम् ॥

- १ श्वावित्तु शल्य २ स्तल्लोम्नि शलली शललं शलम् ।  
 ३ वातप्रमीर्वातमृगः ४ कोकस्त्वौहामृगो वृकः ॥ ७ ॥  
 ५ मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।  
 ६ ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य ७ मेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥  
 ८ कदली कन्दली चीनश्चमूखप्रियकावाप ।  
 समूश्चेति ९ हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

१ श्वावित् ( = श्वाविध् ), शल्यः ( २ पु ), 'साही' के २ नाम हैं ॥

२ शलली ( स्त्री ), शललम्, शलम् ( २ न ), 'साही के काँटे' के ३ नाम हैं ॥

३ वातप्रमीः ( + स्त्री ), वातमृगः ( २ पु ), 'बहुत तेज दौड़नेवाले मृग-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ कोकः, ईहामृगः, वृकः ( ३ पु ), 'भेंड़िया, हुंडार' के ३ नाम हैं ॥

५ मृगः, कुरङ्गः, वातायुः ( वानायुः; ची० स्वा०; वनायुः ), हरिणः, अजिनयोनिः ( ५ पु ), 'मृग, हरिण' के ५ नाम हैं ॥

६ ऐणेयम् ( त्रि ), 'मृगी के चमड़े, सींग आदि' का १ नाम है ॥

७ ऐणम् ( त्रि ), 'मृगके चमड़े सींग आदि' का १ नाम है ॥

८ कदली, कन्दली ( २ स्त्री । ची० स्वा० मतसे कदली = कदलिन्, कन्दली = कन्दलिन्; २ पु ), चीनः, चमूरः, प्रियकः, समूरः ( ४ पु ), 'मृगविशेष' के ६ नाम हैं ॥

९ 'कदली, आदि ६ शब्द और आगे कहे जानेवाले 'कृष्णसार' आदिको अजिनयोनिः ( पु ) 'अजिनयोनि' कहते हैं । ( इनके चमड़े का उपयोग होता है ) ॥

१. 'कोक ईहामृगो वृकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. कदली हरिणान्तरे । रम्माया वैजयन्त्या च—' ( अने० सं० ३।६७० इति, 'शिरोऽस्थनि कन्दलन्तु नवाळकुरे करध्वनौ ।

उपरान्ते मृगभेदे कलाये कन्दलीद्रुमे' ॥ १ ॥ ( अने० सं० ३।६६८ )

इति च त्रिस्वरलान्तवर्गे हेमचन्द्रोक्तेः,

कन्दलं त्रिषु कपालेऽप्युपरान्ते नवाळकुरे । कलध्वनौ कन्दली तु मृगगुल्मप्रभेदयोः ॥ १ ॥

कदला कदली पृश्न्या कदली कदली पुनः । रम्मावृक्षेऽप्य कदली पताकामृगभेदयोः ॥ २ ॥

( मे० श्लो० ६९—७१ ) इति लान्तवर्गे मेदिन्युक्तेश्च विरहमेतत् ॥



- १ 'कृष्णसाररुक्म्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ।  
गोकर्णपृषतैणश्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥
- २ गन्धर्वः शरभो रामः सुमरो गवयः शशः ।
- ३ इत्याद्यो मृगेन्द्राद्याः गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥
- ४ 'अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंश्वज उन्दुरः' ( १० )
- ५ उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखु ६ गिरिका बालमूषिका ।
- ७ 'छुलुन्दरी गन्धमुखी दीर्घतुण्डी दिवान्धिका' ( ११ )

१ कृष्णसारः ( + कृष्णशारः ), रुक्मः, न्यङ्कुरः, रङ्कुः, शम्बरः ( + संवरः, शंवरः ), रौहिषः ( + रोहिषः ), गोकर्णः, पृषतः, ऋश्यः ( + ऋष्यः ), रोहितः ( + लोहितः ), चमरः ( १२ पु ), ये १२ 'मृगके भेद' हैं ॥

२ गन्धर्वः ( + गन्धर्वः ), शरभः, रामः, सुमरः, गवयः, शशः ( ६ पु ), क्रमशः 'गन्धयुक्त मृगविशेष, लङ्गीसरा या एक प्रकारका बन्दर-विशेष, सुन्दरजातीय मृग-विशेष, बहुत भागनेवाला मृग विशेष, नीलगाय या खरहा' का १-१ नाम है ॥

३ ये छ ( पूर्वोक्त 'मृगेन्द्र' आदि ) और वच्यमाण (आगे कहे जानेवाले) 'गो, महिष' आदि पशुजातिः ( स्त्री ), 'पशुजाति' हैं अर्थात् इनकी पशुजाति में गणना होती है ॥

४ [ अधोगन्ता ( = अधोगन्तु ), खनकः, वृकः, पुंश्वजः, उन्दुरः ( ५ पु ), 'चूहा, मूस' के ५ नाम हैं ] ॥

५ उन्दुरुः, मूषकः ( + मुषकः ), आखुः ( ३ पु ), 'चूहा मूस' के ३ नाम हैं ॥

६ गिरिका, बालमूषिका ( १ स्त्री ) 'मुसरी छोटी चूहिया' के २ नाम हैं ॥

७ [ छुलुन्दरी, गन्धमुखी, दीर्घतुण्डी, दिवान्धिका ( ३ स्त्री ), 'छुलुन्दर' के ४ नाम हैं ] ॥

१. कृष्णशाररुक्म्यङ्कुरङ्कुसंवररौहिषाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. छुलुन्दरी... 'दिवान्धिका' इत्यंशः क्षी० स्व० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

- १ सरटः कृकलासः स्यात् २ मुसली 'गृहगोधिका' ॥ १२ ॥  
 ३ लूता स्त्री 'तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।  
 ४ नीलजुस्तु कृमिः ५ कर्णजलौकाः शतपद्युमे ॥ १३ ॥  
 ६ वृश्चिकः शूककीटः स्यादभलिद्रुणौ तु वृश्चिके ।  
 ८ पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशादनः ॥ १४ ॥  
 पत्र्नी श्येनः—

- १ सरटः, कृकलामः ( + कृकलाशः, कृकलासः । २ पु ) 'गिरिगिट' के २ नाम हैं ॥  
 २ मुसली ( + मुसली ), गृहगोधिका ( + गृहगोलिका । २ स्त्री ),  
 'बिलुतिभा, छिपकिली' के २ नाम हैं ॥  
 ३ लूता ( स्त्री ), तन्तुवायः ( + तन्त्रवायः ), ऊर्णनाभः, मर्कटकः ( ३ पु ),  
 'मकड़ी' के ४ नाम हैं ॥  
 ४ नीलजुः ( + नीलजुः ), कृमिः ( + क्रिमिः । २ पु ), 'छोटे २ कीड़ों'  
 के २ नाम हैं ॥  
 ५ कर्णजलौकाः ( = कर्णजलौकस् । + कर्णजलौका = कर्णजलौका ),  
 शतपदी ( २ स्त्री ), 'गोजर, कनकजुरा' के २ नाम हैं । ( 'यह वृश्चिकका  
 भेद है' ) ॥  
 ६ वृश्चिकः, शूककीटः ( २ पु ), 'ऊनी वल्लको काटनेवाले कीड़े'  
 के २ नाम हैं ॥  
 ७ भलिः ( + भालिः, भाली ), द्रुणः ( + द्रोणः ), वृश्चिकः ( ३ पु ),  
 'बिच्छू' के ३ नाम हैं ॥  
 ८ पारावतः ( + पारापतः ), कलरवः, कपोतः ( ३ पु ), 'कबूतर' के  
 ३ नाम हैं । ( 'क्षी० स्वा० मतसे 'प्रथम नाम' 'घरेलू कबूतर' के और अन्य  
 २ नाम 'जङ्गली कबूतर' के हैं' ) ॥  
 ९ शशादनः, पत्र्नी ( = पत्रिन् ), श्येनः ( ३ पु ), 'बाज पक्षी' के  
 ३ नाम हैं ।

१. 'गृहगोलिका इति सभ्यः पाठ' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'तन्त्रवायोर्णनाभमर्कटकाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नीलजुस्तु क्रिमिः कर्णजलौका शतपद्युमे' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'पारापतः' इति पाठान्तरम् ॥

१२ अ०

—१ उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ ।

- २ 'दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः' ( १२ )  
 ३ व्याघ्राटः स्यान्नरद्वजः ४ खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥  
 ५ लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्याददृश्य चापः किकीदिविः ।  
 ७ कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा ८ अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥  
 दार्वाघाटोऽथ 'सारङ्गः स्तोककश्चातकः समाः ।  
 १० कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥  
 ११ चटकः कलविङ्कः स्यात् १२ तस्य स्त्री चटका १३ तयोः ।  
 पुमपत्ये चाटकैरः—

१ उलूकः, वायसारातिः, पेचकः ( ३ पु ), 'उलू' के ३ नाम हैं ॥

२ [ दिवान्धः, कौशिकः, घूकः, दिवाभीतः, निशाटनः ( ५ पु ), 'उलू' के ५ नाम हैं ] ॥

३ व्याघ्राटः, भरद्वजः ( २ पु ), 'भर्दूल, भारद्वज पक्षी' के २ नाम हैं ॥

४ खञ्जरीटः, खञ्जनः ( २ पु ), 'खंड़रिच पक्षी' के २ नाम हैं ॥

५ लोहपृष्ठः, कङ्कः ( २ पु ), 'सफेद चील' अर्थात् 'कंठहवा पक्षी, जिसके पंख को बाण में लगाते हैं, उसके' २ नाम हैं ॥

६ चापः ( + चासः ), किकीदिविः ( + किकीदीविः, किकिदिविः, किकिदिविः, किकीदिविः, किकीदिवः, किकिः, दिवः । २ पु ), 'चास (नीलकण्ठ) पक्षी' के २ नाम हैं ॥

७ कलिङ्गः, भृङ्गः, धूम्याटः ( ३ पु ), 'भुवेङ्गा पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

८ शतपत्रकः, दार्वाघाटः ( २ पु ), 'कठझोलवा, कठफोरवा पक्षी' के २ नाम हैं ॥

९ सारङ्गः ( + शारङ्गः ), स्तोककः ( + तोककः ), चातकः ( ३ पु ) 'चातक पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

१० कृकवाकुः, ताम्रचूडः, कुक्कुटः, चरणायुधः ( ४ पु ), 'मुर्गा' के ४ नाम हैं ॥

११ चटकः, कलविङ्कः ( २ पु ), 'गधरा, चटक पक्षी' के २ नाम हैं ।

( 'यह नर होता है' ) ॥

१२ चटका ( स्त्री ), 'गधरैया, चटका पक्षी' का १ नाम है । ( 'यह मादा होती है' ) ॥

१३ चाटकैरः ( पु ) 'गधरा और गधरैयाके पुत्र' का १ नाम है ॥

१. 'शारङ्गस्तोककश्चातकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ स्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

२ कर्करेटुः करेटुः स्यात् ३ कृकणककरी समौ ।

४ वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

५ काके तु करटारिष्वलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।

ध्वङ्गुः आत्मघोषपरभृद्वलिभुगवायसा अपि ॥ २० ॥

६ 'स एव च चिरञ्जीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः' (१३)

७ द्रोणकाकस्तु काकोलः ददात्यूहः कालकण्ठकः ।

९ 'आतापिचिल्लौ १० दाक्षाय्यगृध्रौ १ कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥

१ चटका ( स्त्री ), 'गवरा और गवरैया की पुत्री' का १ नाम है ॥

२ कर्करेटुः ( + कर्कराटुः ), करेटुः ( + काटुः । २ पु ), 'अशुभ बोलनेवाले पक्षि-विशेष, या टिटिहिरी' के २ नाम हैं ॥

३ कृकणः, ककरः, ( २ पु ), ये २ 'अशुभ बोलनेवाली पक्षीके भेद-विशेष' हैं ॥

४ वनप्रियः, परभृतः, कोकिलः, पिकः, ( ४ पु ), 'कोयल' के ४ नाम हैं ॥

५ काकः, करटः, अरिष्टः, बलिपुष्टः, सकृत्प्रजः, ध्वङ्गुः आत्मघोषः, परभृद्वलिभुक् ( = बलिभुज् ), वायसः ( १० पु ), 'कौआ' के १० नाम हैं ॥

६ [ चिरञ्जीवी ( = चिरञ्जीविन् ), एकदृष्टिः, मौकुलिः ( ३ पु ), 'कौआ' के ३ नाम हैं ] ॥

७ द्रोणकाकः ( + दग्धकाकः, वृद्धकाकः ), काकोलः ( २ पु ), 'डोम-कौआ' के २ नाम हैं ॥

८ दात्यूहः ( + दात्यौहः ), कालकण्ठकः ( २ पु ), जलकौआ, धूप-सा रंगवाला कौआ' के २ नाम हैं ॥

९ आतापी ( = आतापिन् । + आतापी = आतापिन् ), चिल्लः ( २ पु ), 'चिल' के २ नाम हैं ॥

१० दाक्षाय्यः, गृध्रः ( + गृध्रः । २ पु ), 'गीध' के २ नाम हैं ॥

११ कीरः, शुकः ( २ पु ), 'तोता, सुग्गा' के २ नाम हैं ॥

१. 'स एव...मौकुलिः' इत्यंशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायां वर्तते ॥

२. 'आतापिचिल्ली' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कुब्जः 'कौञ्चो' २५थ बकः कङ्कः ३ पुष्कराद्भस्तु सारसः ।  
 ४ कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाद्वयनामकः ॥ २२ ॥  
 ५ कादम्बः कलहंसः स्याद्दुष्कोशकुररौ समौ ।  
 ७ हंसास्तु श्वेतवेगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥  
 ८ राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।  
 ९ मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते १० धार्तराष्ट्राः सितेतैः ॥ २४ ॥  
 ११ शरारिराटिराडिश्च—

१ कुब्ज ( = कुञ्ज ), कौञ्चः ( + कुञ्चः । २ पु ), 'कौञ्च, कराकुल पक्षी' के २ नाम हैं ॥

२ बकः, कङ्कः ( + कङ्कः २ पु ), 'बगुला' के २ नाम हैं ॥

३ पुष्कराद्भः ( 'कमलके पर्यायवाचक सब शब्द' ), सारसः ( २ पु ), 'सारस' के २ नाम हैं ॥

४ कोकः ( + कुकः ), चक्रः, चक्रवाकः, रथाङ्गः ( 'रथाङ्ग अर्थात् पहियेके वाचक सब शब्द' । ४ पु ), 'चक्रवा' के ४ नाम हैं ।

५ कादम्बः, कलहंसः ( २ पु ), 'बत्ख पक्षी' के २ नाम हैं ॥

६ दुष्कोशः, कुररः ( २ पु ), 'कुरर पक्षी' के २ नाम हैं ॥

७ हंसः, श्वेतगरुत, चक्राङ्गः, मानसौकाः ( = मानसौकस् । ४ पु ), 'हंस' के ४ नाम हैं ॥

८ राजहंसः ( पु ), 'सफेद शरीर और लाल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

९ मल्लिकाक्षः ( + मल्लिकाक्ष्यः । पु ), 'सफेद शरीर और धूपके समान धूमिल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

१० धार्तराष्ट्रः ( पु ), 'सफेद शरीर और काले रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

११ शरारिः ( + शरारिः, शरालिः, शराली, शराटिः, शराडिः ), आटिः ( + आतिः, आटी ) आडिः ( + आडी । ३ स्त्री ), 'आड्डी पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'कुञ्चोऽथ बकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'मलिनैर्मल्लिकाख्यास्ते' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'शरारिराटिराडिश्च' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बलाका बिसकण्डिका ।

२ हंसस्य योषिद्वरटा ३ सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥

४ जनुकाऽजिनपत्रा स्यात् ५ परोष्णी तैलपायिका ।

६ वर्वणा मक्षिका नीला ७ सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

८ पतङ्गिका पुत्तिका स्यात् ९ दंशस्तु वनमक्षिका ।

१० दंशीज्जातिरल्पास्यात् ११ गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

१ बलाका, त्रिकण्डिका ( + बिसकण्डिका, स्त्री० स्वा० । २ स्त्री ), 'बगुला-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ वरटा ( + वरला । स्त्री ), 'हंसकी स्त्री' अर्थात् 'हंसिनी' का १ नाम है ॥

३ लक्ष्मणा ( + लक्षणा । स्त्री ), 'सारसी' अर्थात् 'सारसकी स्त्री' का १ नाम है ॥

४ जनुका ( + जतुका ), अजिनपत्रा ( २ स्त्री ), 'चमगादड़, नादुर' के २ नाम हैं ॥

५ परोष्णी ( + परोष्ठी ), तैलपायिका ( २ स्त्री ), 'चपड़ानामक कीटविशेष तैलचटा' के २ नाम हैं ॥

६ वर्वणा ( + बर्वणा ), मक्षिका ( + मक्षीका ), नीला ( ३ स्त्री ), 'नीले रंग की मक्खी' के ३ नाम हैं । ( भा० दी० के मतसे प्रथम शब्द वक्तार्थक है और अन्तवाले दो शब्द विशेषण हैं ) ॥

७ सरघा, मधुमक्षिका ( २ स्त्री ), 'मधुमक्खी' के २ नाम हैं ।

८ पतङ्गिका, पुत्तिका ( २ स्त्री ), 'एक तरहकी 'मधुमक्खी' के २ नाम हैं ॥

९ दंशः ( पु ), वनमक्षिका ( स्त्री ), 'दंश, डँस, बड़े मच्छड़' के २ नाम हैं ॥

१० दंशी ( स्त्री ), 'मस, छोटे मच्छड़' का १ नाम है ॥

११ गन्धोली ( स्त्री ), वरटा ( + वरटी । पु स्त्री ) 'बरे, भिरे, बिर्हिनी, गन्धयुक्त मक्खी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१. यथैतेषां नामभेदपूर्वकं मधुवर्णमाह निमिः—

'माक्षिकं तैलवर्णं स्यादधुतवर्णं तु पैत्तिकम् ।

आमरन्तु भवेच्छुक्लं क्षीरं तु कपिलं भवेत् ॥ १ ॥ इति ॥

- १ भृङ्गारी<sup>१</sup>भीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः ।  
 २ समौ पतङ्गशलभौ ३ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥  
 ४ मधुवतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ।  
 द्विरेफपुष्पलिङ्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥  
 ५ मयूरो बहिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।  
 शिखाबलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥  
 ६ केका वाणी मयूरस्य ७ समौ चन्द्रकमेचकौ ।  
 ८ शिखा चूडा ९ शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके ॥ ३१ ॥

१ भृङ्गारी, भीरुका ( + क्षीरिका, क्षिरुका, क्षिरिका, क्षिरीका, चीरुका ),  
 चीरी, झिल्लिका ( + झिल्लीका, झिल्लका, चिलिका, चिरुका । ४ स्त्री ) 'झींगुर'  
 के ४ नाम हैं ॥

२ पतङ्गः, शलभः ( २ पु ), 'फतिंगा, पतंग' के २ नाम हैं ॥

३ खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः ( २ पु ), 'जुगनू' के २ नाम हैं ॥

४ मधुवतः, मधुकरः, मधुलिट् ( = मधुलिह् ), मधुपः, अली ( = अलिन् ),  
 द्विरेफः, पुष्पलिट् ( = पुष्पलिह् ), भृङ्गः, षट्पदः, भ्रमरः, अलिः ( ११ पु ),  
 'भौरा, भ्रमर' के ११ नाम हैं ॥

५ मयूरः ( + मयुरः<sup>२</sup> ), बहिणः, बर्ही ( = बहिन् ), नीलकण्ठः, भुजङ्ग-  
 भुक् ( = भुजङ्गभुज् ), शिखाबलः, शिखी ( = शिखिन् ), केकी ( = केकिन् ),  
 मेघनादानुलासी ( = मेघनादानुलासिन् । ९ पु ), 'मोर' के ९ नाम हैं ॥

६ केका ( स्त्री ), 'मोरकी घोली' का १ नाम है ॥

७ चन्द्रकः, मेचकः<sup>३</sup> ( २ पु ), 'मोरकी पूँछमें स्थित नेत्राकार  
 चमकदार चिह्न' के २ नाम हैं ॥

८ शिखा, चूडा ( २ स्त्री ), 'मोरके शिरकी कलंगी या मुकुट' के  
 २ नाम हैं ॥

९ शिखण्डः ( पु ), पिच्छम्, बर्हम् ( १ न ), 'मोरके पंख' के ३ नाम हैं ॥

१. 'चीरुका' इति पाठान्तरम् ॥

२. '—मयूरो मयुरो मतः' इति ( श्लो० ५ ) शब्दभेदप्रकाशकेः ॥

३. 'बहिण्कण्ठसमं वर्णं मेचकं ब्रूवते बुधाः' इति कात्यः ॥

१ खगे विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसः ।

शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥

पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ।

नगौकोवाजिविकिरविविक्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥

नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।

२ तेषां विशेषा द्दारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥

तित्तिरिः कुकुभो लावो जीवजीवश्चकोरकः ।

१ खगः, विहङ्गः, विहगः, विहङ्गमः, विहायाः (= विहायस्), शकुन्तिः, पक्षी (= पक्षिन्), शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजः, पतञ्जरी (= पतस्त्रिन्), पत्नी (= पत्निन्), पतगः, पतन् (= पतत्), पत्ररथः, अण्डजः, नगौकाः (= नगौकस्), वाजी (= वाजिन्), विकिरः, विः, विक्किरः, पतस्त्रिः, नीडोद्भवाः, गरुत्मान् (= गरुत्मत्), पित्सन् (= पित्सत्), नभसङ्गमः ( २७ पु ), 'पक्षी, चिड़िया' के २७ नाम हैं ॥

२ द्दारीतः (+ हरितः), मद्गुः, कारण्डवः, प्लवः, तित्तिरिः (+ तित्तिरः), कुकुभः, लावः, जीवजीवः (+ जीवजीवः, जीवाजीवः), चकोरकः, कोयष्टिकः (+ कोयष्टिः, क्षी० स्वा० पाठ), टिट्टिमकः (+ टिट्टिमकः, टिट्टिमः + टिट्टिमः, कोकः; क्षी० स्वा० पाठ), वर्तकः (+ ककरः; क्षी० स्वा० पाठ) वसिकः (+ वर्तकः; क्षी० स्वा० पाठ । १३ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'शारिका' कपिञ्जलः, .....), ये 'पक्षि-विशेष' हैं । (उनमें क्रमशः 'हारिल, जलमुर्गा, करडुआ (कौवेके समान काले रङ्गके बड़े २ पैरवाला वृत्तस्वविशेष), जलकौवा,

१. पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः' इति पाठान्तरम् । अत्र 'पतेरत्रिः' ( उ० सू० ) इति भ्रान्त्या ग्रन्थकृदिदन्तमिमं मन्यत इति क्षी० स्वा० ॥

२. नभसमाकाश गच्छतीति विग्रहे 'गमश्च' ( पा० सू० ३।४.४७ ) इति उपत्यये 'नभसङ्गमः' शब्दस्य सिद्धिः । 'नभसं खं मेघवर्त्म विहायसम्' इति निगमात् 'अत्यविचमिनमिर-मिलमिनमितपिपतिपनिपणिमहिष्योऽसच्' ( उ० सू० ३९७ ), इत्यनेन सिद्धोऽदन्तोऽपि 'नभस' शब्दोऽस्तीत्यवधेयम् । सान्तः 'नभः' शब्दपक्षे तु नभसा गच्छतीति विग्रहे 'गमेः सुपि वाच्यः' ( वार्तिकः २०११ ) इति ख्वि 'वाच्यंमपुरन्दरौ च' ( पा० सू० ६।१।६९ ) इति चकारादमागमे 'नभसङ्गम' शब्दसिद्धिर्बोध्या ॥



‘कोयष्टिकष्टिष्टिमको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

१ गरुपञ्चछदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।

२ स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं ३ चञ्चुः खोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥

४ प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।

५ ‘पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं ६ कुलायोनीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥

७ पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।

तीतर. वनमुर्गा, लावा या लवा, मोरके तुल्य पंख वाला पक्षि-विशेष, चकोर, पक्षी-विशेष, टिटिहरी और वत्तख का १-१ नाम तथा ‘बटेर’ के २ नाम हैं । ‘प्राचीनों के मतसे ‘वर्तकः (पु), वर्तिका (स्त्री), मानकर ‘बटेर और बटेरकी स्त्री’ का क्रमशः १-१ नाम है’ ॥

१ गरुत्, पत्रः, छदाः ( + न । ३ पु ), पत्रम्, पतत्रम्, तनूरुहम् ( ३ न ), ‘पंख’ के ६ नाम हैं ॥

२ पक्षतिः ( + पक्षती । स्त्री ), पक्षमूलम् ( न ), ‘पंखकी जड़’ के २ नाम हैं ॥

३ चञ्चुः ( + चञ्चूः ), खोटिः ( + तुण्डम् । २ स्त्री ), ‘चोंच’ टोर’ के २ नाम हैं ॥

४ प्रडीनम्, उड्डीनम्, संडीनम् ( ३ न ), ये ३ ‘पक्षियोंकी चालें हैं’ इनमें ‘तिरछा या अत्यन्त उड़नेका, ऊपर उड़नेका, मिलकर उड़ने’ का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ पेशी ( पेशिन्, पु + पेशी = पेशी, स्त्री ), कोशः ( + कोषः पु न । + पेशीकोशः, पेशीकोषः; स्त्री० स्वा० ), अण्डम् ( न ), ‘अण्डा’ के ३ नाम हैं ॥

६ कुलायः ( पु ), नोडम् ( न पु ), ‘खोता, घोसला’ के २ नाम हैं ॥

७ पोतः, पाकः, अर्भकः, डिम्भः, पृथुकः, शावकः, शिशुः ( ७ पु ), ‘बच्चा’ के ७ नाम हैं ॥

१. ‘कोयष्टिकष्टिष्टिमः कोकः क्रकरो वर्तकादयः’ इति स्त्री० स्वा० सम्मतः पाठः । अत्र मूलोक्तपाठं मत्वा ‘वदीचां तु स्त्रियामित्वम्, प्राचां न ( वा० ७।३।४५ ) इति स्त्रियां रूप-द्वयप्रदर्शनाय ‘वर्तिका’ ग्रहणम्’ इति प्राञ्चः । वस्तुतस्तु ‘वृतेस्तिकन्’ ( उ० सू० ३।१।४६ ) इति तिकन्तन्तस्य मूषिकवत्पुंस्यपि ‘वर्तिकः’ इति रूपकथनमिदम्’ इति भा० दी० । पूर्वोक्त स्त्री० स्वा० सम्मते पाठे तु नैव रूपद्वयप्रदर्शनमित्यवधेयम् ॥

२. ‘पेशीकोशो’ इति ‘कोषो’ इति च पाठान्तरम् ॥

१ स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं २ युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३८ ॥

३ समूहो निबद्धव्यूसंदोहविसरवजाः ।

स्तोमौघनिकरवातवारसंघातसञ्चयाः ॥ ३९ ॥

समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः ।

स्त्रियां तु संहितवृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

४ वृन्दभेदाः ५ समैर्धर्माः ६ संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।

७ सजातीयैः कुलं ८ यूथं तिरश्चां पुत्रपुंसकम् ॥ ४१ ॥

१ स्त्रीपुंसौ (भा० दी० मतसे । नित्य द्विव० पु), मिथुनम्, द्वन्द्वम् (२ न), 'स्त्री और पुरुषकी जोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

२ युग्मम्, युगलम्, युगम् (३ न), 'जोड़ा, सम' के ३ नाम हैं ॥  
( 'मुकुटने 'द्वन्द्व' शब्दको भी इसीका पर्याय मानकर ४ नाम' कहा है ) ॥

३ समूहः, निबद्धः, व्यूहः, संदोहः, विसरः, वजः, स्तोमः, ओघः, निकरः, वातः, वारः, संघातः, सञ्चयः, समुदायः, समुदयः, समवायः, चयः, गणः, ( १८ पु ), संहितः ( स्त्री ), वृन्दम्, निकुरम्बम्, कदम्बकम् ( ३ न ), 'समूह' के २२ नाम हैं ॥

४ अब समूहोंके भेद-विशेष कहते हैं ॥

५ वर्गः ( पु ), 'एकजातीय प्राणियों या अप्राणियोंके समूह' का १ नाम है । ( जैसे—मनुष्यवर्गः, ब्राह्मणवर्गः, शैलवर्गः, ..... ) ॥

६ 'संघ' सार्थः ( २ पु ), एकजातीय या भिन्नजातीय प्राणि-मात्रके समूह' के २ नाम हैं । ( जैसे—पशुसङ्घः, पक्षिसङ्घः, वाणिकसङ्घ'..... ) ॥

७ कुलम् ( न ), एकजातीय केवल प्राणियोंके समूह' का १ नाम है । ( जैसे—ब्राह्मणकुलम्, ऋषिकुलम्, गोकुलम्, ..... ) ॥

८ 'यूथम् ( न पु ), 'एक जातिके तिर्यग्जातीय' ( पशुपक्षी आदिके ) समूह'

१. 'द्वन्द्व' शब्दस्य 'युग्म' पर्यायत्वमनुचितम् । तथा सति '—द्वन्द्वमाहवे । रहस्ये मिथुने युग्मे—' ( अने० सं० ३।५२३—५२४ ) इति हेमाच 'द्वन्द्वं रहस्ये कलहे तथा मिथुन-युग्मयोः' ( मेदिनी पृ० १७२ श्लो० १० ) इति मेदिन्याश्चाविरोधेऽपि 'स्वन्तायादि न....' ( १।१।४ ) इत्यादिग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधात् । 'द्वन्द्वयुग्मे तु' इति पाठे तु ग्रन्थकारप्रतिज्ञा-विरोधान्मुकुटमतस्य सामञ्जस्यमपीत्यवधेयम् ॥

२-३-४. सङ्घसङ्घातपुञ्जीवसार्थयूथकदम्बकाः' इति ।

- १ पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ।  
 स्यान्निकायः ४ पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥  
 ५ कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्रूपे ।  
 ६ गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥  
 इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

का १ नाम है । जैसे—मृगयूथम् , गजयूथम् , बर्हिषूथम् , ..... ॥

१ समजः ( पु ), 'केवल पशुओं के समूह' का १ नाम है । ( जैसे—गोसमजः, ..... ) ॥

२ समाजः ( पु ) पशुसे भिन्न जातिवालों के समूह' का १ नाम है ।  
 ( 'जैसे—'श्रोत्रियसमाजः, ब्राह्मणसमाजः, ..... ' ) ॥

३ निकायः ( पु ), 'एक जातिवालों के समूह' का १ नाम है ।  
 ( 'जैसे—ब्राह्मणनिकायः, गोनिकायः, श्रमणनिकायः, ..... ' ) ॥

४ पुञ्जः ( + पिञ्जः ), राशिः ठूकर ( ३ पु ) कूटम् ( न पु ), 'अन्न  
 इत्यादिकी ढेरी' के ४ नाम हैं । ( 'जैसे—धान्यराशिः, तृणराशिः, ..... ' ) ॥

५ कापोतम् , शौकम् , मायूरम् , तैत्तिरम् ( ४ न ), आदि ( 'आदिसे—  
 कौक्कुटम् , काकम् , ..... ' ), 'कवूतर, सुग्गा, मोर और तीतर' आदि  
 ( 'आदिसे—मुर्गा और कौआ, ..... ' ) के समूह' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ छेकः, गृह्यकः ( २ पु ), 'पालतू पशु-पक्षी' अर्थात् 'जलमें पाले हुए  
 तोता, मोर, मैना आदि पक्षी और मृग आदि पशुओं' के २ नाम हैं ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

'निकरनिकायविसरत्रजपुञ्जसमूहसञ्चयाः समुदयसार्थयूथनिकुरम्बकदम्बकपूगराशयः ।  
 चवसमवायवृन्दसन्दोहसमाजवितानसंहतिप्रकरणनौषसंघसंघातव्रातकुलोत्तराः स्मृताः' ॥  
 (अमि० रत्न० ४।१) इति चोक्त्वा भागुरिदलायुधौ सङ्घसार्थयूथपुञ्जानां पर्यायता-  
 माहृतुः' इत्यवधेयम् ॥

## ६. अथ मनुष्यवर्गः ।

- १ मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
- २ स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
- ३ 'स्त्री योषिदवला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।  
प्रतीपदशिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥
- ४ विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।  
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥  
सुन्दरी रमणी रामा ५ कोपना सैव भामिनी ।
- ६ वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

## ६. अथ मनुष्यवर्गः ।

१ मनुष्यः, मानुषः, मर्त्यः, मनुजः मानवः, नरः ( ६ पु ) भा० दी० मतसे 'मनुष्यमात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ पुमान् ( = पुंस ), पञ्चजनः, पुरुषः, पूरुषः, ना ( = नृ । ५ पु ), भा० दी० मतसे 'पुरुष' अर्थात् 'मर्द' के ५ नाम हैं । ( 'महे० मतसे मनुष्यः, ... ना' ये ११ नाम 'मनुष्य' के हैं ) ॥

३ स्त्री, योषित् ( + जोषित्, योषिता, जोषिता ), अवला ( + अवला ), योषा ( + जोषा ), नारी, सीमन्तिनी, वधूः प्रतिपदशिनी, वामा, वनिता, महिला ( महेला, महला । ११ स्त्री ), 'औरत, जनाना' के ११ नाम हैं ॥

४ अङ्गना, भीरुः ( + भीरुः भीलुः भीलुः ) कामिनी, वामलोचना, प्रमदा, मानिनी, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी ( + सुन्दरा ), रमणी ( + रमणा ), रामा ( १२ स्त्री ) ये १२ 'स्त्रियोंके भेद-विशेष' हैं ॥

५ कोपना, भामिनी ( २ स्त्री ), 'क्रोध करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ वरारोहा, मत्तकाशिनी ( + मत्तकासिनी ), उत्तमा, 'वरवर्णिनी' ( ४ स्त्री ), 'गुणवती स्त्री' के ४ नाम हैं ॥

१. 'स्त्री योषिदवला योषा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वरवर्णिनीलक्षणं यथा—

'शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे वा सुखशीतला ।

मर्तृभक्ता च वा नारी विज्ञेया वरवर्णिनी ॥ १ ॥ इति ॥

- १ कृताभिषेका महिषी २ भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
- ३ पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥  
भार्याजायाऽथपुंभूमिदाराः४स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
- पुरन्ध्री ५ सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
- ६ कृतसापत्निकाऽध्यूढाऽधिविज्ञाऽथ स्वयंवरा ।  
पतिवरा च वर्याऽऽथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥
- ९ कन्या कुमारी—

१ महिषी (स्त्री), 'पटरानी' का १ नाम है । ( 'जैसे-वासवदत्ता, ...' ) ॥

२ भोगिनी ( स्त्री ), 'पटरानियोंसे भिन्न रानियो' का १ नाम है ।  
( 'जैसे-पद्मावती, ...' ) ॥

३ पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी ( + सहर्मिणी, सहचरी ),  
भार्या, जाया ( ६ स्त्री ), दाराः ( = दार, पु नि० व० व० । + दारा =  
स्त्री ), 'ब्याही हुई स्त्री' के ७ नाम हैं ॥

४ कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री ( + पुरन्धिः, सु० ), 'पति-पुत्रवाली स्त्री' के  
२ नाम हैं ॥

५ सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ( ४ स्त्री ) 'पतिव्रता स्त्री' के  
४ नाम हैं ॥

६ कृतसापत्निका ( + कृतसापत्निका ), अध्यूढा, अधिविज्ञा ( ३ स्त्री )  
अनेक विवाह किये हुए पुरुषकी पहली स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

७ स्वयंवरा, पतिवरा, वर्या ( ३ स्त्री ) 'जिसके लिये स्वयंवर किया  
गया हो उस कन्या' के ३ नाम हैं ॥

८ कुलस्त्री, कुलपालिका ( २ स्त्री ) 'कुलीन स्त्री' के २ नाम हैं ॥

९ कन्या, कुमारी ( २ स्त्री ) 'प्रथम अवस्थावाली या काँरी लड़की'  
के २ नाम हैं ॥

१. कृतसापत्निकाऽध्यूढा—' इति पाठान्तरम् ॥

२. जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः' इति मनुः ॥

३. कोडा दारा तथा दारा त्रय एते यथाक्रमम् ।

कोडे दारे च दारेषु शब्दाः प्रोक्ता मनीषिभिः' ॥ १ ॥ शत्रुकेः ॥

१ गौरी तु नम्रिकाऽनागतात्वा ।

२ स्यान्मध्यमा दृष्टरजाश्चरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥

४ 'समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु स्ववासिनी ।

१ 'गौरी, 'नम्रिका ( + लम्रिका ) अनागतात्वा ( ३ स्त्री ), 'जिसे रजोधर्म नहीं हुआ हो उस स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

२ मध्यमा, दृष्टरजाः ( = दृष्टरजस् । २ स्त्री ), 'जिसे पहली बार रजोधर्म हुआ हो उस स्त्री' २ नाम हैं ॥

३ तरुणी ( + तलुनी ), युवतिः ( + युवती । ३ स्त्री ) 'जवान स्त्री' के २ नाम हैं । (स्त्री १६ वर्षकी अवस्थातक 'बाला' १७ से ३० वर्षकी अवस्थातक 'तरुणी', ३१ से ५५ वर्ष की अवस्थातक 'प्रौढा' और उसके बाद 'वृद्धा' कहलाती है; यह वृद्धा रतिमें श्याड्य है' । यह अवस्थाकथन जब मनुष्य स्वस्थ एवं पूर्णायु होते थे, उस समयके अनुसार उचित प्रतीत होता है ) ॥

४ स्नुषा, जनी ( + जनिः ) वधूः ( ३ स्त्री ), 'पतोहू' अर्थात् 'पुत्र, भतीजा या शिष्य आदिकी स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

५ चिरिण्टी ( + चिरण्टी, चरण्टी, चरिण्टी ), स्ववासिनी ( + सुवासिनी । २ स्त्री ), 'जिसे जवानीके चिह्न कुछ-कुछ मालूम पड़ रहे हों ऐसी विवाहिता स्त्री' के २ नाम हैं ॥

१. 'समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी' इति पाठान्तरम् ॥

२-३. अथ प्रसङ्गात्स्त्रीणां संज्ञाविशेषा उच्यन्ते—

'बालेति गीयते नारी यावदवर्षाणि षोडश ।

गौरी स्वसंजातरजाः श्यामा षोडशवर्षिकी' ॥ १ ॥ इति ॥

'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला' ॥ १ ॥

इति संवत्सरस्मृति १।६६ ॥

अत्र 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नवमे नम्रिका भवेत्' इति स्मार्तो विशेषो नादृत इति स्त्री० स्वा० ॥

४. अवस्थाभेदेन स्त्रीणां संज्ञा आह—

'यावत्षोडशसंख्यमब्दमुदिता बाला ततस्त्रिंशतं तावत्स्यात्तरुणीति षाण्विंशैः संख्या तु तावद्भवेत् ।

सा प्रौढेत्यभिधीयते कविवरैर्वृद्धा तदूर्ध्वं स्मृता

'निष्ठा कामकलाकलापविधु स्यान्वा सदा कामिभिः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ इच्छावती कामुका स्याद् २ वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥  
 ३ कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।  
 ४ पुंश्चली धर्विणी बन्धक्यसतो कुलटेत्वरी ॥ १० ॥  
 स्वैरिणी पांशुला च स्याद्दशिश्वी शिशुना विना ।  
 ६ अवीरा निष्पतिसुता ७ विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥  
 ८ आलिः सखी वयस्याऽथ ९ पतिवत्नी सभर्तृका ।

१ इच्छावती, कामुका ( २ स्त्री ), 'किसी पदार्थको चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ वृषस्यन्ती, कामुकी ( २ स्त्री ) 'बैल-घोड़े की तरह अधिक मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ 'अभिसारिका (स्त्री), 'इतिके लिये अपने पति या जारके संकेत किये हुए स्थानपर जानेवाली या जार वा पतिको संकेत-स्थानपर बुलानेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

४ पुंश्चली, धर्विणी ( + चर्षणी, धर्षणी, कर्षणिः ) बन्धकी, असती, कुलटा, इत्वरी, स्वैरिणी, पांशुला ( + व्यभिचारिणी । ८ स्त्री ), 'व्यभिचारिणी स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

५ अशिशी ( स्त्री ) 'वंशहीन स्त्री' का १ नाम है ॥

६ अवीरा ( स्त्री ) 'पति और पुत्रसे हीन स्त्री' का १ नाम है ॥

७ विश्वस्ता, विधवा ( २ स्त्री ) 'विधवा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ आलिः, सखी, वयस्या ( ३ स्त्री ) 'सहेली' के ३ नाम हैं ॥

९ पतिवत्नी, सभर्तृका ( ३ स्त्री ) 'सववा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

१. 'चर्षणी' इति धर्षणी इति च पाठान्तरम् ॥

२. अभिसारिकाया लक्षणान्याहुः । तद्यथा—

'द्वित्वा लज्जामये श्लिष्टा मदनेन मदेन च ।

अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥ १ ॥ इति भरतः ॥

'कामार्ताभिसरेत्कान्तं सारयेद्वाऽभिसारिका' ॥ दशरूपक २।३७ इति ॥

अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा ।

स्वयं वाऽभिसारत्येषा धीरैवक्ताऽभिसारिका' ॥ १ ॥ सा० द० ३।११८ इति ॥

- १ वृद्धा पलिकनी २ प्राज्ञी तु प्राज्ञा ३ प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
- ४ शूद्री शूद्रस्य भार्या स्यात्पच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
- ६ आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥
- ७ अर्याणी स्वयंभर्या स्यात् ८ क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
- ९ उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी १० स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
- ११ आचार्यानी तु पुंयोगे १२ स्यादर्यो—

१ वृद्धा, पलिकनी ( २ स्त्री ), 'वृद्ध या पके हुए बालवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ प्राज्ञी, प्रज्ञा ( २ स्त्री ), 'किसी विषयको अच्छी तरह स्वयं जाननेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ प्राज्ञा, धीमती ( + बुद्धिमती । स्त्री ), 'चतुर स्त्री' के २ नाम हैं ॥

४ शूद्री ( स्त्री ), किसी भी वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी स्त्री' का १ नाम है ॥

५ शूद्रा ( स्त्री ), 'शूद्र वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी या अन्य किसी जातिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

६ आभीरी, महाशूद्री ( २ स्त्री ), 'ग्वालिन या गोपकी स्त्री, महाशूद्र-कुलमें उत्पन्न किसी भी जातिकी स्त्री, अन्य वर्णमें उत्पन्न महाशूद्रकी स्त्री, के २ नाम हैं ॥

७ अर्याणी, अर्या ( २ स्त्री ), 'वैश्य कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ क्षत्रिया, क्षत्रियाणी ( २ स्त्री ), 'क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

९ उपाध्याया, उपाध्यायी ( २ स्त्री ), 'स्वयं पढ़ानेवाली स्त्री' का २ नाम हैं ॥

१० आचार्या ( स्त्री ), 'मन्त्रोंकी स्वयं व्याख्या करनेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

११ आचार्यानी ( + आचार्याणी । स्त्री ), 'आचार्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१२ अर्यो ( स्त्री ), 'किसी भी जातिमें पैदा हुई वैश्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥



—१ क्षत्रियी तथा ।

- २ उपाध्यायान्युपाध्यायी ३ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ १५ ॥  
 ४ वीरपत्नी वीरभार्या ५ वीरमाता तु वीरसूः ।  
 ६ जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥  
 ७ स्त्री नग्निका 'कोटवी' स्याद् ८ दूतीसंचारिके समे ।  
 ९ कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या 'कषायवसनाऽधवा' ॥ १७ ॥  
 १० 'सैरन्ध्री' परवेशमस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।

१ क्षत्रियी ( स्त्री ), किसी भी जातिमें उत्पन्न हुई क्षत्रियकी स्त्री' का १ नाम है ॥

२ उपाध्यायानी, उपाध्याया ( २ स्त्री ), 'पढ़ानेवालेकी स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ पोटा ( स्त्री ), 'स्तन और दाढ़ी ( स्त्री-पुरुषके इन दो लक्षणों ) से युक्त स्त्री या नपुंसक स्त्री' का १ नाम है ।

४ वीरपत्नी, वीरभार्या ( २ स्त्री ), 'शूरवीरकी पत्नी' के २ नाम हैं ॥

५ वीरमाता (= वीरमातृ ), वीरसूः ( २ स्त्री ), 'शूरवीरकी माता' के २ नाम हैं ॥

६ जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका ( ४ स्त्री ) 'प्रसूति' अर्थात् 'जिसे सन्तान पैदा किये थोड़े दिन बीते हों' उस 'जच्चा' स्त्री के ३ नाम हैं ॥

७ नग्निका ( भा० दी० ), कोटवी ( + कोटवी, कौटवी । २ स्त्री ) 'नंगी स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ दूती, संचारिका ( २ स्त्री ), 'दूती' के २ नाम हैं ॥

९ कात्यायनी ( स्त्री ), 'अधवृद्ध, गेरुआ कपड़ा पहनी हुई विधवा स्त्री' का १ नाम है ॥

१० ४ सैरन्ध्री ( + सैरन्ध्री । स्त्री ) 'जो दूसरेके घर रहे, स्वतन्त्र

१. 'कोटवी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कषायवसनाऽधवा' इति पाठान्तरम् ॥

३ 'सैरन्ध्री' इति पाठान्तरम् ॥

४ सैरन्ध्रीलक्षणं यथा—

चतुःषष्टिकलाऽभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी ।

प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता ॥ १ ॥ इति कात्यः ।

स्त्री० स्वा० तु 'परिकीर्तिता' इत्यत्र 'स्ववशेति च' इति पाठमाह ॥

- १ असिकनी स्याद्वृद्धा या प्रेक्ष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
- २ वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ।  
सत्कृता वारमुख्या स्यात् ४ कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥
- ५ विप्रश्निका स्त्रीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।  
स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥  
ऋतुमत्यप्युदक्यापि ७ स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

हो और केश झाड़ना-गूथना आदि शिल्पकार्य करती हो उस स्त्री' का १ नाम है । ( जैसे—राजा विराटके यहाँ अज्ञातवास करती हुई द्रौपदी सरस्त्री का कार्य करती थी ) ॥

१ असिकनी ( स्त्री ) 'जो वृद्धा नहीं हो, आज्ञा पाकर कहीं आया जाया करे और रनिवासमें रहे उस स्त्री' का १ नाम है ॥

२ वारस्त्री, गणिका, वेश्या ( + वेष्या ), रूपाजीवा ( + पण्यस्त्री, पणस्त्री । ४ स्त्री ), 'वेश्या' के ४ नाम हैं ॥

३ वारमुख्या ( स्त्री ), 'सौन्दर्य और गान आदि से बड़े लोगोंके द्वारा प्रतिष्ठा पानेवाली वेश्या' का १ नाम है ॥

४ कुट्टनी, शम्भली ( + सम्भली । २ स्त्री ), 'कुट्टनी' के २ नाम हैं ।

५ विप्रश्निका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ( ३ स्त्री ), 'हाथ-पैर आदिकी रेखाओं को देखकर शुभाशुभ लक्षणों को जानने या कहनेवाली स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

६ रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अविः ( + अवी ), आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती ( + पुष्पिता ), ऋतुमती, उदक्या ( ८ स्त्री ) 'रजस्वला स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

७ रजः ( = रजस् ), पुष्पम्, आर्तवम् ( ३ न ), 'स्त्रियोंके रज' के ३ नाम हैं ॥

१. 'वेष्या' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्त्रीधर्मिण्यपि चात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि' इति स्वा० पाठः । 'अवितृस्तृतन्विभ्य ईः' ( उ० सू० ३।१५८ ) इति ईप्रत्ययेन सिद्धयुक्तेस्तदग्रे च 'अवि स्त्रीधर्मिणी विद्यात्' इति कात्याय 'सर्वधातुभ्य इन्' ( उ० सू० ४।११८ ) इति इन्प्रत्यये ह्रस्वान्ताऽपि अविः इति भानुजिः शिक्तेन स्वयमुक्तत्वान्मुके 'स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी' इति ह्रस्वान्त 'अवि' शब्दपाठः संशोधकप्रमादज एव । व्याख्यातुर्दीर्घान्तस्यैव 'अवि' शब्दस्य प्रथमं साधित्वेन तत्रैव स्वास्थाप्रदर्शनात् ॥

३. 'असिकनी स्याद्वृद्धा या प्रेक्ष्याऽन्तःपुरयोषिता' इति मुनिः ॥

१३ अ०

- १ अद्भालुर्दोहदवती २ निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥  
 ३ आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।  
 ४ गणिकादेस्तु गाणिक्यं गर्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥  
 ५ पुनर्भूर्दीधिषूढा द्विद्विस्तस्या<sup>१</sup> दिधिषुः पतिः ।  
 ७ स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

१ अद्भालुः, दोहदवती ( २ स्त्री ), 'गर्भ रहनेपर किसी वस्तु या कार्य को चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ निष्कला ( + निष्कला ), विगतार्तवा ( २ स्त्री ), 'रजोधर्मसे हीन ( जिसे रजोधर्म कभी में होता हो या वृद्धावस्था के कारण समाप्त हो गया हो ) स्त्री' के २ नाम हैं ।

३ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी ( + गुर्वी ) अन्तर्वत्नी, गर्भिणी ( गर्भवती । ४ स्त्री ), 'गर्भवती स्त्री' के ४ नाम हैं ॥

४ गाणिक्यम्, गर्भिणम्, यौवतम् ( ३ न ), 'वेश्याओं युवतियों और गर्भिणियों के समूह' का क्रमशः १-१ नाम है ।

५ 'पुनर्भूः, दीधिषूः ( + दिधिषूः, दिधिषुः, अग्रेदिधिषुः । २ स्त्री ), 'दो बार व्याही हुई स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ दिधिषुः ( + दिधिषूः, स्वा० म० । पु० ), 'दो बार व्याही स्त्री के पति' का १ नाम है ॥

७ अग्रेदिधिषूः । ( + अग्रेदिधिषुः । पु ), 'दो बार व्याही हुई स्त्री के द्विजाति ( ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ) वर्णवाले पति' का १ नाम है ॥

१. 'दिधिषूः पतिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्ये—

'अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूर्दिधिषूः पुनः' इति याज्ञ० १। ६७ ॥

'ज्येष्ठायां यथनूदायां कन्यायामुद्यतेऽनुजा ।

सा चाग्रेदिधिषुर्जया पूर्वा तु दिधिषुर्मेता' ॥ १ ॥ इति ॥

'दिधिषूस्तत्पुनर्भूर्दिधूढा स्याद्विधिषुः पतिः ।

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूर्यस्य स्यात्सैव गेहिनी' ॥ १ ॥

अभि० चिन्ता० ३।१८९ इति ॥

- १ कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।  
 सौभागिनेयः स्यात् ३ पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥  
 ४ पैतृवसेयः स्यात्पैतृवस्त्रीयश्च पितृवसुः ।  
 सुतो ५ मातृवसुश्चैवं ६ वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥  
 ७ अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।  
 कौलटेरः कौलटेयो ८ भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥  
 तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।  
 ९ आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः १० स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥  
 आहुर्दुहितरं सर्वं—

१ कानीनः ( पु ), 'कांरी स्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ( 'जैसे—व्यास, कर्ण,.....' ) ॥

२ सुभगासुतः, सौभागिनेयः ( १ पु ), 'सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

३ पारस्त्रैणेयः ( पु ), 'परस्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ॥

४ पैतृवसेयः, पैतृवस्त्रीयः ( २ पु ), 'पूआका पुत्र अर्थात् फुफेरे भाई' के २ नाम हैं ॥

५ इसी प्रकार 'मौसीका लड़का अर्थात् मौसरे भाई' के मातृवसेयः, मातृवस्त्रीयः ( २ पु ), २ नाम हैं ॥

६ वैमात्रेयः ( + वैमात्रः ), विमातृजः ( १ पु ), सौतेली माँका लड़का' अर्थात् 'मैभावत भाई' के २ नाम हैं ।

७ बान्धकिनेयः, बन्धुलः, असतीसुतः, कौलटेरः, कौलटेयः ( ५ पु ), 'व्यभिचारिणी स्त्रीके पुत्र' के ४ नाम हैं ॥

८ कौलटिनेयः, कौलटेयः, ( १ पु ), 'भीख माँगनेके लिये घर २ घूमने-वाली सदाचारिणी स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

९ आत्मजः, तनयः, सूनुः, सुतः, पुत्रः ( ५ पु ), 'पुत्र' के ५ नाम हैं ॥

१० दुहिता ( = दुहितृ । स्त्री ) और 'आत्मज' आदि ५ शब्द स्त्रीलिङ्ग होने पर (आत्मजा, तनया, सूनुः, सुता, पुत्री । ५ स्त्री), 'लड़की, पुत्री' के ५ नाम हैं ॥

—१५पत्यं तोकं तयोः समे ।

- २ स्वजाते त्वौरसोरस्यौ ३ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥  
 ४ जनयित्री प्रसूमाता जननी ५ भगिनी स्वसा ।  
 ६ ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नपत्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥  
 ८ भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।  
 ९ प्रजावती भ्रातृजाया १० मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

१ अपत्यम्, तोकम् ( २ न ), 'सन्तान' अर्थात् 'लड़के या लड़की' के २ नाम हैं ॥

२ औरसः, १ उरस्यः ( + औरस्यः । २ पु ), 'अपने खास लड़के' के २ नाम हैं ॥

३ तातः, जनकः, पिता ( = पितृ । ३ पु ), 'पिता' के ३ नाम हैं ॥

४ जनयित्री ( + जनित्री ), प्रसूः, माता ( = मातृ ), जननी ( + जननिः । ४ स्त्री ), 'माता' के ४ नाम हैं ॥

५ भगिनी, स्वसा ( = स्वसृ । २ स्त्री ), 'बहन' के २ नाम हैं ॥

६ ननान्दा ( = ननान्द । + ननान्दा = ननन्द, नन्दिनी । स्त्री ), 'ननन्द' अर्थात् 'पतिकी बहन' का १ नाम है ॥

७ नपत्री, पौत्री, सुतात्मजा ( भा० दी० । ३ स्त्री ), 'नातिन' अर्थात् 'पुत्रकी या पुत्रीकी लड़की' के ३ नाम हैं ॥

८ याता ( = यातृ, स्त्री ), 'गोतिनी' अर्थात् 'पतिके भाइयोंकी स्त्री' का १ नाम है ॥

९ प्रजावती, भ्रातृजाया ( २ स्त्री ), 'भाईकी स्त्री भौजाई' के २ नाम हैं ॥

१० मातुलानी, मातुली ( + मातुला । २ स्त्री ), 'मामी' अर्थात् 'मामा ( पिताका साला ) की स्त्री' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्दि यम् । तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकस्थितम्' ॥  
 मनुः १।१६६ ॥

इति वचनात्परभार्यायामपि स्वस्माज्जाते पुत्रे नातिव्याप्तिः शङ्क्या । 'औरस १ क्षेत्रज २ दत्तक ३ कृत्रिम ४ गृहोत्पन्न ५ अपविद्ध ६ कानीन ७ सहोद ८ क्रीत ९ पौनर्भव १० स्वयंदत्त ११ शौद्र ( पाराश्व ) १२' इति दायादादावादवाभ्वरूपदादशविषयपुत्रलक्षणं मनुस्मृतौ ( १।१६६-१७८ ) द्रष्टव्यम् ॥

- १ पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः २ श्वशुरस्तु पिता तयोः ।  
 ३ पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यात् ४ मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥  
 ५ श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः ६ स्वामिनो देवृदेवरौ ।  
 ७ स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्यात् ८ जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥  
 ९ पितामहः पितृपिता १० तत्पिता प्रपितामहः ।  
 ११ मातुर्मातामहाद्येवं १२ सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

- १ श्वश्रूः ( स्त्री ), 'सास' अर्थात् 'पति या स्त्रीकी माता' का १ नाम है ।  
 २ श्वशुरः ( पु ), 'ससुर' अर्थात् 'पति या स्त्रीके पिता का १ नाम है ॥  
 ३ पितृव्यः ( पु ), 'चाचा' अर्थात् 'पिताके भाई' का १ नाम है ॥  
 ४ मातुलः ( पु ), 'मामा' अर्थात् 'माताके भाई' का १ नाम है ॥  
 ५ श्यालः ( + श्यालः । पु ), 'साला' अर्थात् 'स्त्रीके भाई' का १ नाम है ॥  
 ६ देवा ( = देवृ ), देवरः ( २ पु ), 'देवर' अर्थात् 'पतिके 'छोटे भाई' के २ नाम हैं ॥

७ स्वस्त्रीयः ( + स्वस्त्रियः, स्वस्त्रेयः ), भागिनेयः ( २ पु ), 'भांजा' अर्थात् 'बहनके लड़के' के २ नाम हैं ॥

८ जामाता ( = जामातृ. पु ), 'दामाद, जमाई' का १ नाम है ॥

९ पितामहः, पितृपिता ( = पितृपितृ । २ पु ), 'पिताके पिता, दादा, बाबा' के २ नाम हैं ॥

१० प्रपितामहः ( पु ), 'परदादा' अर्थात् पितामहके पिता' का १ नाम है ॥

११ मातामहः ( पु ), 'नाना' अर्थात् 'माताके पिता' का १ नाम है ।  
 ( "इसी तरह 'प्रमातामहः ( पु ), 'परनाना' अर्थात् 'नानाके पिता' का १ नाम है" ) ॥

१२ सपिण्डः, सनाभिः ( २ पु ) 'सात पुस्त ( पीढ़ी ) के भीतरव्याले परिवार' के २ नाम हैं ॥

१. युक्तमिदं स्त्री० स्वा० महे० मतम् । ग्रंथकारमते तु 'पत्युर्भ्रातृमात्रस्ये'मे नामनी ।  
 'पत्युर्ज्येष्ठो भ्राता श्वशुर एवेति सुभृत्यादयः' इति मा० दी० आह ॥

२. तदुक्तं मनुना—“सपिण्डता पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते” इति, मनुः ५ । ६० ॥

- १ समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।  
 २ सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥  
 ३ ज्ञातेयं ४ बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।  
 ५ धवः प्रियः पतिर्भर्ता ६ जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥  
 ७ अमृते जारजः कुण्डो ८ मृते भर्तरि गोलकः ।  
 ९ आश्रीयो आतृजो १० आतृभगिन्यौ आतरावुभौ ॥ ३६ ॥

१ समानोदर्यः, सोदर्यः ( + सोदरः, सहोदरः ), सगर्भ्यः, सहजः ( ४ पु ), 'सहोदर भाई' अर्थात् 'एक मातामे उत्पन्न भाई' के ४ नाम हैं ॥

२ सगोत्रः, बान्धवः, ज्ञातिः, बन्धुः, स्वः ( यह सर्वनाम-संज्ञक है ), स्वजनः ( ६ पु ), 'सगोत्र, अपने खास खान्दान' के ६ नाम हैं ॥

३ ज्ञातेयम् ( न ), 'जातियोंके धर्म या भाव' का १ नाम है ॥

४ बन्धुता ( स्त्री ), 'बन्धुओंके समूह' का १ नाम है ॥

५ धवः, प्रियः, पतिः, भर्ता ( = भर्ता । ४ पु ), 'पति' के ४ नाम हैं ॥

६ जारः, उपपतिः ( २ पु ), 'जार' अर्थात् 'अप्रधान पति' के २ नाम हैं ॥

७ 'कुण्डः ( पु ), 'पतिके जीते रहनेपर जारसे पैदा हुए लड़के' का १ नाम है ॥

८ 'गोलकः ( पु ), 'पतिके मरनेपर जारसे पैदा हुए लड़के' का १ नाम है ॥

९ आश्रीयः ( + आतृभ्यः ), आतृजः ( २ पु ), 'भर्ताजा' अर्थात् भाईके लड़के का १ नाम है ॥

१० आतृभगिन्यौ ( भा० दी० मत से ), अतरौ ( = आतृ । २ पु नि० द्विव० ), 'भाई-बहन' के २ नाम हैं । ( "जब भाई और बहनको एक साथ कहना हो तब इसका प्रयोग होता है । इसी तरह "भार्यावती च तौ" ( २ । ६ । ३८ ) तक जानना चाहिये" ) ॥

१-२. तदुक्तम् — "परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ ।

पत्यौ जीवति कुण्डः स्वामृते भर्तरि गोलकः" ॥ १ ॥ इति मनुः ३।१७४

- १ मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।
- २ श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुरौ ३ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
- ४ दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ ।
- ५ गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च ६ कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
- ७ सूतिमासो वैजननो ८ गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।
- ९ तृतीयाप्रकृतिः शण्डः क्लीबः षण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

१ मातापितरौ ( = मातापितृ ), पितरौ ( = पितृ ), मातरपितरौ ( = मातरपितृ ), प्रसूजनयितारौ ( = प्रसूजनयितृ । ४ पु, नि० द्विव० ), 'माता और पिताके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

२ श्वश्रूश्चशुरौ, श्वशुरौ ( २ पु, नि० द्विव० ), 'सास और ससुरके समुदाय' के २ नाम हैं ॥

३ पुत्रौ ( पु० नि० द्विव० ) 'लड़का और लड़कीके समुदाय' का १ नाम है ।

४ दम्पती, जम्पती ( + २ स्त्री ), जायापती, भार्यापती ( ४ पु, नि० द्विव० ), 'पति और पत्नीके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

५ गर्भाशयः, जरायुः ( २ पु ), उल्बम् ( + उल्बम् । न ), 'गर्भाशय' अर्थात् 'जिसमें गर्भ लिपटा रहता है, उस चर्म' के २ नाम हैं ॥

६ कललः ( पु न ), 'वीर्य और शोणितके समुदाय' का १ नाम है । ( 'किसीके मतसे 'गर्भाशय' आदि २-२ नाम उन अर्थोंमें हैं, और किसीके मतसे ४ नाम एकार्थक हैं' ) ॥

७ सूतिमासः, वैजननः ( २ पु ), 'सन्तान पैदा होनेवाले ( नवें या दशवें ) महीने' के २ नाम हैं ॥

८ गर्भः भ्रूः ( २ पु ), 'गर्भ या गर्भस्थ जीव' के २ नाम हैं ॥

९ तृतीयाप्रकृतिः ( + तृतीयप्रकृतिः । स्त्री ), शण्डः ( + षण्डः, शण्डः,

१. 'नपुंसकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शश्वमली मथिली मैत्री दम्पती जम्पती च सा' इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

३. तदुक्तं महर्षिणा याज्ञवल्क्येन—

'नवमे दशमे वापि प्रबलैः सूतिमासतैः ।

निसार्यते बाण इव यन्त्रच्छिद्रेण सत्वरः' ॥ १ ॥ याज्ञ० स्मृ० ३।८३ इति ।

मा० दी० तु अस्य तुरीयपादं 'जन्तुश्छिद्रेण सत्वरः' इत्येवमाह ॥



- १ शिशुत्वं शैशवं बाल्यं २ तारुण्यं यौवनं समे ।  
 ३ स्यात्स्थायिरं तु वृद्धत्वं ४ वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥  
 ५ पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ ६ विस्त्रसा जरा ।  
 ७ स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥  
 ८ बालस्तु स्यान्माणवको—

षण्डः<sup>२</sup>) क्लीबः, पण्डः ( ३ पु ), नपुंसकम् ( न । + पु ), 'नपुंसक, हिजड़ा' के ५ नाम हैं ॥

१ शिशुत्वम्, शैशवम्, बाल्यम् ( ३ न ), 'लड़कपन, बाल्यावस्था' के ३ नाम हैं ॥

२ तारुण्यम्, यौवनम् ( २ न ), 'जवानी, युवावस्था' के २ नाम हैं ॥

३ स्थायिरम्, वृद्धत्वम् ( + वार्द्धकम्, वार्द्धक्यम् । २ न ), 'बुढ़ापा' के २ नाम हैं ॥

४ वृद्धसंघः ( भा० दी० मतसे । पु ) वार्द्धकम् ( + वार्द्धक्यम् । न ), 'वृद्धसमूह' के २ नाम हैं ॥

५ पलितम् ( न ), 'बाल पकने' अर्थात् 'बुढ़ापा आदिसे दाढ़ी-मूँछ आदिके बालके सफेद होने' का १ नाम है ॥

६ विस्त्रसा, जरा ( २ स्त्री ), 'बुढ़ाती' के २ नाम हैं ॥

७ उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनन्धयी ( ४ त्रि ), 'दूध पीनेवाली लड़की' के ४ नाम हैं । ( 'स्त्रीलिङ्गमे रूपप्रदर्शनं केलिये स्त्रीत्वको कहा गया है, स्त्रीत्व विवक्षित नहीं है । अतः पुलिङ्ग में—उत्तानशयः, डिम्भः, स्तनपः, स्तनन्धयः, ( ४ पु ), 'दूध पीनेवाले लड़के' के ४ नाम हैं; नपुंसकलिङ्गमें 'उत्तानशयम्, .....' हाता है । इसी तरह आगे जानना चाहिये' ) ॥

८ बालः, माणवकः ( + माणवः । २ त्रि ), 'छाटे बच्चे' के २ नाम हैं ॥

१. 'डिम्भ' शब्दः प्राक् ( २।५।३८ ) पक्षिकनेपोक्तोऽप्यत्र मानुषकमेण पुनरुक्तः ॥

२. 'पण्डः शण्डे—' (अने० सं० २।१२२) इति, 'षण्डः कानन इवरे' (अने० सं० २।१२९) इति —षण्डौ तु सौविदौ । बन्धपुंसीङ्वरे क्लीबे—' (अने० सं० २।१३०-१३१) इति च हेमचन्द्राचार्योक्तैरित्यवधेयम् ॥

३. 'अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरीत्सगिकः स्मृतः ।

नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्धयति माणवः' ॥ १ ॥

एवमुक्तीत्या निष्पन्नामाणवशब्दात्स्वार्थे कनि 'माणवक' शब्दसिद्धिर्बोधा ॥

## —१ वयस्थस्तरुणो युवा ।

२ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

३ वर्षीयान् दशमी ज्यायान् ४ 'पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

५ जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजः ॥ ४३ ॥

६ अमांसो दुर्बलश्छातो ७ बलवान्मांसलोऽसलः ।

८ 'तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

१ वयस्थः, तरुणः, युवा ( = युवन् । + युवकः । ३ त्रि ), 'नौजवान युवा' के ३ नाम हैं ।

२ प्रवयाः ( = प्रवयस् ), स्थविरः, वृद्धः, जीनः, जीर्णः जरन् (=जरत् । ६ त्रि ), 'बूढ़े' के ६ नाम हैं ॥

३ वर्षीयान् ( = वर्षीयस् ), दशमी ( = दशमिन् ), ज्यायान् ( = ज्यायस् । ३ त्रि ), 'बहुत बूढ़े' के ३ नाम हैं ॥

४ पूर्वजः, अग्रियः (अग्रियः, अग्रयः, अग्रामः, अग्रिमः), अग्रजः (३ त्रि), 'बड़े भाई या अपनेसे पहले जन्म हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ जघन्यजः, कनिष्ठः ( + कनीयान् = कनीयस् ), यवीयान् ( = यवीयस् । + यविष्ठः ), अवरजः, अनुजः ( ५ त्रि ), 'छोटे भाई या अपनेसे पीछे जन्म हुए' के ५ नाम हैं ॥

६ अमांसः, दुर्बलः, छातः ( = शतः । ३ त्रि ), 'दुर्बल, कमजोर' के ३ नाम हैं ॥

७ बलवान् ( = बलवत् ), मांसलः, असलः ( ३ त्रि ), 'बलवान्, मजबूत या मोटे' के ३ नाम हैं ॥

८ तुन्दिलः ( = तुण्डिलः, तुन्दिलः, तुण्डितः, तुन्दिकः, उदरिलः ), तुन्दिभः ( = तुण्डिभः ), तुन्दी ( = तुन्दिन् । = तुण्डी = तुण्डिन् ), बृहत्कुक्षिः, पिचण्डिलः ( = पिचिण्डिलः । ५ त्रि ), 'तोंदवाले, बड़े पेटवाले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः' इति पाठभेदः । किन्त्वग्रजस्तुन्दोऽपि वर्तते ॥

२. 'दुर्बलश्छातः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'तुन्दिकस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।  
 २ केशवः केशिकः केशी ३ वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥  
 ४ विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः ५ खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।  
 ६ खरणाः स्यात्खरणसो ७ विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥  
 ८ खुरणाः स्यात्खुरणसः ९ प्रज्जुः प्रगतजानुकः ।

१ अवटीटः, अवनाटः, अवभ्रटः, नतनासिकः ( ४ त्रि ), महे० मतसे 'नकचिपटा' अर्थात् 'चिपटी नाकवाले' के ३ नाम हैं । 'भा० दी० मतसे 'नतनासिकः' शब्दका पर्याय नहीं होने से ३ ही नाम हैं' ) ॥

२ केशवः ( = केशवान् = केशवत् ), केशिकः, केशी ( = केशिन् । ३ त्रि ), 'सुन्दर केशवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ बलिनः, वलिभः ( २ त्रि ), 'जिसका चमड़ा सिकुड़ गया हो उस' के २ नाम हैं ॥

४ विकलाङ्गः, अपोगण्डः ( = पोगण्डः ! २ त्रि ), 'कम या अधिक अङ्गवाले' के २ नाम हैं ॥

५ खर्वः ( = खर्वः, निखर्वः ), ह्रस्वः, वामनः ( ३ त्रि ), 'बौना, वामन' के ३ नाम हैं ॥

६ खरणाः ( खरणस् ), खरणसः ( २ त्रि ) 'नुकीली नाकवाले' के २ नाम हैं ॥

७ विग्रः ( + विखुः, विखः, विख्यः, विख्वः, विखुः ), गतनासिकः ( = विनासिकः । २ त्रि ), 'नकटा' के २ नाम हैं ॥

८ खुरणाः ( = खुरणस् ), खुरणसः ( २ त्रि ), 'पशुके खुरके समान नाकवाले' के २ नाम हैं ॥

९ प्रज्जुः ( + प्रज्जुः<sup>२</sup> ), प्रगतजानुकः ( २ त्रि ) 'रोगसे या स्वभावतः विरल जङ्घावाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'विकलाङ्गस्तु पोगण्डः खर्वो' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं भानुजिदीक्षितेन—

'प्रज्जुः संघतजानुः स्यात्प्रज्जोऽन्यत्रैव दृश्यते ॥' इति साहसार्द्धः, इति ॥

१ ऊर्ध्वश्च ऊर्ध्वजानुः स्यात् २ संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

३ स्यादेडे बधिरः ४ कुब्जे गडुलः ५ कुकरे कुणिः ।

६ पृश्निरल्पतनौ ७ श्रोणः पङ्क्तौ ८ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

९ वलिरः केकरे १० खोडे खञ्ज ११ खिषु जराऽवराः ।

१२ जडुलः कालकः पिप्लुः—

१ ऊर्ध्वजुः ( + ऊर्ध्वजः<sup>१</sup> ), ऊर्ध्वजानुः ( २ त्रि ), 'बैठनेपर जिसकी जङ्घा ऊपरको उठी रहती हो उस' के २ नाम हैं ॥

२ संज्ञुः ( + संज्ञः<sup>२</sup> ), संहतजानुकः ( २ त्रि ), 'सटे हुए जङ्घा वाले' के २ नाम हैं ॥

३ एडः, बधिरः ( २ त्रि ), 'बहरा' के २ नाम हैं ॥

४ कुब्जः ( + न्युब्जः ), गडुलः ( + गडुः । २ त्रि ), 'कुबड़ा' के २ नाम हैं ॥

५ कुकरः, कुणिः ( + कूणिः । २ त्रि ), 'टेढ़े हाथवाले' के २ नाम हैं ,

६ पृश्निः ( + पृष्णिः ), अल्पतनुः ( २ त्रि ) छोटे शरीरवाले, नाटा' के २ नाम हैं ॥

७ श्रोणः, पङ्क्तुः ( २ त्रि ), 'पङ्क्तु' के २ नाम हैं ॥

८ मुण्डः, मुण्डितः ( २ त्रि ), 'मुण्डन कराये हुये' के २ नाम हैं ॥

९ वलिः ( + बलिरः ), केकरः ( + काचरः, कावरः । २ त्रि ), 'पेंचकर देखनेवाले' अर्थात् 'एक भौंको ऊचा और एक भौं को नीचाकर देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० खोडः ( + खोलः, खोरः ), खञ्जः ( २ त्रि ), 'लँगड़ा' के २ नाम हैं ॥

११ 'जरा' ( २।१।४१ ) शब्दके बादसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ( 'उनमें ग्रन्थकारके कथनानुसार सब शब्दोंको प्रायः पुंलिङ्गमें देकर लिङ्गनिर्देश में त्रिलिङ्ग लिखा गया है, अतः खोलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके रूपको स्वयं समझ लेना चाहिये' ) ॥

१२ जडुलः ( + जडुलः ), कालकः, पिप्लुः ( ३ पु ), 'लहसन' अर्थात् 'जन्म-कालसे ही उत्पन्न शरीरके चिह्न-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

१-२. अत्र मा० दी०—

'संज्ञुः संहतजानौ च भवेत्संज्ञोऽपि तत्र हि ।

ऊर्ध्वजुर्ऊर्ध्वजानुः स्यादूर्ध्वजोऽप्यूर्ध्वजानुके' ॥ १ ॥ इति साहसङ्गः, इति ॥

—१ तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

- २ अनामयं स्यादारोग्यं ३ चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।  
 ४ भेषजौषधभेषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥  
 ५ स्त्री रुग्णजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।  
 ६ क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च ७ प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥  
 ८ स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि ९ कासस्तु क्ष्वथुः पुमान् ।  
 १० शोफस्तु श्वयथुः शोथः ११ पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥  
 १२ किलाससिध्मे—

१ तिलकः, तिलकालकः ( २ पु ), 'तिल' अर्थात् 'काली तिलके समान देहके चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ अनामयम् , आरोग्यम् ( २ न ), 'नीरोग' के २ नाम हैं ॥

३ चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया ( २ स्त्री ), 'चिकित्सा' अर्थात् 'रोगको दूर करनेके लिये दवा आदिके सेवन करने' के २ नाम हैं ॥

४ भेषजम् , औषधम् , भेषज्यम् ( ३ न ), अगदः, जायुः ( २ पु ), 'दवा' के ५ नाम हैं ॥

५ रुक् ( = रुज् ), रुजा ( १ स्त्री ), उपतापः, रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः ( + आमः । ५ पु ), 'रोग' के ७ नाम हैं ॥

६ क्षयः, शोषः, यक्ष्मा ( = यक्ष्मन् । + राजयक्ष्मा = राजयक्ष्मन् । ३ पु ), 'राजयक्ष्मा ( T. B. ) रोग' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रतिश्यायः ( + प्रतिश्या ), पीनसः ( + आपीनसः । २ पु ), 'पीनस रोग' के २ नाम हैं ॥

८ क्षुत् ( स्त्री ), क्षुतम् ( न ), क्षवः ( पु ), 'छींक' के ३ नाम हैं ॥

९. कासः ( काशः ), क्ष्वथुः ( २ पु ), 'खाँसी' के २ नाम हैं ॥

१० शोफः, श्वयथुः, शोथः ( ३ ), 'शोथ, सूजन' के ३ नाम हैं ॥

११ पादस्फोटः ( पु ), विपादिका ( स्त्री ), 'बिवाय' अर्थात् 'पैरके तलवेमें फटनेवाले रोग-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१२ किलासम् , सिध्मम् ( + सिध्मली । ३ न ), 'सेहूँआ, सिहुला' के २ नाम हैं ॥

१. 'काशस्तु क्ष्वथुः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कच्छां तु पामा पामा विचर्चिका ।

- २ कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया ३ विस्फोटः 'पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥  
 ४ व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे ५ नाडीव्रणः पुमान् ।  
 ६ कोठो मण्डलकं ७ कुष्ठश्चित्रे ८ दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥  
 ९ आनाहस्तु विबन्धः स्याद् १० ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।  
 ११ प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥

१ कच्छूः, पामा (= पामन्, + न), पामा, विचर्चिका ( ४ स्त्री ), 'गीली खुजली या खसरा' के ४ नाम हैं ॥

२ कण्डूः ( + कण्डूः ), खर्जूः, कण्डूया ( ३ स्त्री ), 'खाज या खुज-लाइट' के ३ नाम हैं ॥

३ विस्फोटः, पिटकः ( २ पु स्त्री । स्त्री० में 'विस्फोटा, पिटिका । + विटि-का । + २ त्रि ), 'फोड़ा' के २ नाम हैं ॥

४ व्रणः ( पु न ), ईर्मरु, अरुः (= अरुस् । २ न ), 'घाव या व्रण' के ३ नाम हैं ॥

५ नाडीव्रणः ( पु ), 'सहन' अर्थात् 'सर्वदा पीब बहानेवाले व्रण-विशेष' का १ नाम है ॥

६ कोठः ( पु ), मण्डलकम् ( न ) भा० दी० मतसे 'गजकर्ण रोग' अर्थात् 'जिससे शरीरमें गोले २ चकत्ते पड़ जायें उस रोग' के २ नाम हैं ॥

७ कुष्ठम्, चित्रम् ( २ न ), भा० दी० मतसे 'सफेद कोढ़' अर्थात् 'चरक फूटने' के २ नाम हैं । ( 'महे० मतसे 'कोठः, ...' ४ नाम 'सफेद कोढ़' ही के हैं ) ॥

८ दुर्नामकम्, अर्शः ( = अर्शस् । + अर्श । २ न ), 'बवासीर' के २ नाम हैं ॥

९ आनाहः, विबन्धः ( + विबन्धः । २ पु ), 'जिसमें मल और मूत्र रुक जायें उस रोग' के २ नाम हैं ॥

१० ग्रहणी ( + ग्रहणिः, ग्रहणीरुक्, = ग्रहणीरुज् ) प्रवाहिका ( २ स्त्री ), 'संग्रहणी' के २ नाम हैं ॥

११ प्रच्छर्दिका, वमिः ( + वमी, स्त्री; वमः, पु । २ स्त्री ), वमथुः ( पु ), 'वमन या उल्टी' के ३ नाम हैं ॥

१. "पिटकस्त्रिषु" इति भा० दी० स्त्री० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

- १ व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री उवरमेहभगन्दराः ।  
 २ 'श्लीपदं पादवलमीकं ३ केशघ्नस्तिवन्द्रलुप्तकः' ( १४ )  
 ४ अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् ५ पूर्वं शुकावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥  
 ६ रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।  
 ७ 'वार्तो निरामयः कल्य ८ उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

१ विद्रधिः ( स्त्री ), उवरः, मेहः ( + प्रमेहः ), भगन्दरः ( ३ पु ), 'पेट आदि कोमल स्थानमें होनेवाला फोड़ा, उवर, प्रमेह और भगन्दर' ( गुदाके बगलमें होनेवाला घण विशेष ) का क्रमशः १—१ नाम है । ये सब 'व्याधि भेद' हैं ।

२ [ श्लीपदम्, पादवलमीकम् ( २ न ), 'पीलपांव' अर्थात् 'जिसमें पैरके छुटनेके नीचेका हिस्सा फूलकर बहुत मोटा हो जाय, उस रोग' के २ नाम हैं ] ॥

३ [ केशघ्नः, इन्द्रलुप्तकः ( २ न ), 'टुनकी लगना' अर्थात् 'जिसमें शिर आदिके बाल झड़कर गिर जाय, उस रोग' के २ नाम हैं ] ॥

४ अश्मरी ( स्त्री ), मूत्रकृच्छ्रम् ( न ), 'मूत्रकृच्छ्र' अर्थात् 'जिससे पेशाब करनेमें अत्यन्त कष्ट हो, उस रोग' के २ नाम हैं ॥

५ यहाँसे आगे 'शुकम्' ( २।६।६१ ) के पहलेवाले सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

६ रोगहारी ( = रोगहारिन् ), अगदङ्कारः, भिषक् ( = भिषज् ), वैद्यः, चिकित्सकः ( ५ पु ), 'वैद्य डाक्टर, कविराज, हकीम आदि दवा करने वाले' के ५ नाम हैं । ( "बी० स्वा० मतसे 'रोगहारी, अगदङ्कारः' ये २ नाम 'औषध' के भी हैं" ) ॥

७ वार्तः ( + वान्तः ), निरामयः, कल्यः ( + नीरोगः । ३ त्रि ), महे० मतसे 'नीरोग' के ३ नाम हैं ॥

८ उल्लाघः ( त्रि ), महे० मतसे 'रोगसे शीघ्र ही छुटे हुए' का १ नाम है । ( "भा० दी० मतसे 'वार्तः, .....' ४ नाम 'नीरोग' के ही हैं" ) ॥

१. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'वान्तो निरामयः' इति पाठान्तरम् । अत्र मूलपाठ एव युक्तः, अत्रे ( नानार्थवर्गो ) 'वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिषु' ( ३।३।७६ ) इति स्वयं वक्ष्यमाणत्वात्, '—वार्तं स्वारोग्यारोग-फल्यु' ( अने० संग्र० २।१९४ ) इति हेमोक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

- १ ग्लानग्लान्नु २ आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।  
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः ३ समौ पामनकच्छुरी ॥ ५८ ॥
- ४ दद्रुणो दद्रुरोगी स्यात् ५ दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।
- ६ वातकी वातरोगी स्यात् ७ सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
- ८ स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।
- ९ उन्मत्त उन्मादवति १० श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

१ ग्लानः, ग्लान्नुः ( २ त्रि ), 'रोगसे खिन्न' के २ नाम हैं ॥

२ आमयावी ( = आमयाविन् ), विकृतः, व्याधितः, अपटुः, आतुरः, अभ्यमितः, अभ्यान्तः ( + रोगी = रोगिन् । ७ त्रि ), 'रोगी' के ७ नाम हैं ॥

३ पामनः ( + पामरः ), कच्छुरः ( २ त्रि ), 'गीली खुजलीवाले या कसरारोगवाले' के २ नाम हैं ॥

४ दद्रुणः ( + दद्रूणः, दद्रूणः, दद्रूणः ), दद्रुरोगी ( = दद्रुरोगिन् । + दद्रुरोगी = दद्रुरोगिन् । २ त्रि ), 'दाद रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

५ अर्शोरोगयुतः ( भा० दी० ), अर्शसः ( २ त्रि ), 'बवासीर रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

६ वातकी ( + वातकिन् ), वातरोगी ( = वातरोगिन् । २ त्रि ), 'वात रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

७ सातिसारः, अतिसारकी ( = अतिसारकिन् । + अतीसारकी = अतीसारकिन् । २ त्रि ), 'अतिसार रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

८ क्लिन्नाक्षः ( महे० ), चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, ( ४ त्रि ), 'कीचरसे युक्त आँखवाले, के ४ नाम हैं । प्रथम 'क्लिन्नाक्ष' शब्दको छोड़कर शेष ३ नाम ( चुल्लम्, चिल्लम्, पिल्लम् ; ३ न ), 'कीचरसे युक्त आँख' के हैं । ( 'चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, ३ त्रि ), 'आँखसे कीचर निकलनेवाले रोग-विशेष' के भी ३ नाम हैं ) ॥

९ उन्मत्तः, उन्मादवान् ( = उन्मादवत् । + उन्मादी = उन्मादिन् । २ त्रि ), 'पागल, उन्मादके रोगी' के २ नाम हैं ॥

१० श्लेष्मलः, श्लेष्मणः, कफी ( = कफिन् । ३ त्रि ), 'कफवाले रोगी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'चुल्लः चक्षुरोगविशेषः, तद्योगाच्चुल्लं चक्षुः । चुल्लचक्षुश्चुल्लः पुरुषोऽपीत्यवधेयम् ॥



- १ न्युब्जो भुग्ने रुजा २ वृद्धनाभौ 'तुण्डिलतुण्डिभौ ।  
 ३ किलासी सिष्मलोऽन्धोऽदृक् मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥  
 ६ शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।  
 ७ मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा ९ स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥  
 १० पिशितं तरसं मांसं पल्लवं कव्यमामिषम् ।  
 ११ उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्दूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

१ न्युब्जः ( त्रि ), 'शेगसे कुबड़ा' का १ नाम है ॥

२ वृद्धनाभिः, तुण्डिलः ( + तुन्दिलः ), तुण्डिभः ( + तुन्दिभः । ३ त्रि ),  
 'ढोंढर' अर्थात् 'कब्ज आदिके कारण बड़े हुए नाभियाँ' के ३ नाम हैं ॥

३ किलासी ( = किलासिन् ), सिष्मलः ( २ त्रि ), 'मिहुला, सेंहुआ  
 या पपड़ीवाले रोगी' के २ नाम हैं ॥

४ अन्धः, अदृक् ( = अदृश् । २ त्रि ), 'अन्धा, सूर' के २ नाम हैं ॥

५ मूर्च्छालः, मूर्त्तः, मूर्च्छितः ( ३ त्रि ), 'मूर्च्छा या मृगो रोगवाले'  
 के ३ नाम हैं ॥

६ शुक्रम्, तेजः ( = तेजस् ), रेतः ( = रेतस् ), बीजम् ( + बीजम् ),  
 वीर्यम्, इन्द्रियम् ( ६ न ), 'वीर्य' अर्थात् 'मनुष्यके शरीरस्थ स्निग्ध तथा  
 श्वेतवर्ण धातु' के ६ नाम हैं ॥

७ मायुः ( पु ), पित्तम् ( न ), 'पित्त' के १ नाम हैं ॥

८ कफः, श्लेष्मा ( = श्लेष्मन् । २ पु ), 'कफ' के २ नाम हैं ॥

९ रक् ( = रक्च् । + रक्चः, पुः + रक्चा, स्त्री ), असृग्धरा ( + असृ-  
 ग्धारा । २ स्त्री ), 'चमड़ा' के २ नाम हैं ॥

१० पिशितम्, तरसम्, मांसम्, पल्लवम्, कव्यम्, आमिषम् ( ६ न ),  
 'मांस' के ६ नाम हैं ॥

११ उत्तमम्, शुष्कमांसम् ( २ न ), वल्दूरम् ( + वल्दूरम् । त्रि ), 'सूखे  
 मांस' के ३ नाम हैं ॥

१. 'तुन्दिलतुन्दिभौ' इति पाठान्तरम् । अत्र मूलपाठ एव समोचीनः, यतः 'तुण्डिरुज-  
 तनाभिस्तुन्दिस्तु जठरः' इति क्षी० स्वा० उक्त्या वृद्धनाभिमुक्तस्यैव पर्यायतौचित्यप्रतीतिः ॥

२. अत्र नैरुक्ताः—'मांसं स भक्षयितामुन्नयस्य मांसमिहाद्यद्म् ।

यत्तन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मुनिरब्रवीत्' ॥ १ ॥ इति क्षी० स्वा० ॥

- १ रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।  
 २ बुक्काऽग्रमांसं ३ हृदयं हृद् ४ मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥  
 ५ पश्चाद् ग्रीवाशिरा मन्या ६ नाडी तु धमनिः शिरा ।  
 ७ तिलकं क्लोम ८ मस्तिष्कं गोर्दं ९ किट्टं मलम् ॥ ६५ ॥

१ रुधिरम् , असृक् ( = असृज् ), लोहितम् , अस्त्रम् , रक्तम् , क्षतजम् , शोणितम्. ( ७ न ), 'रक्त, खून' के ७ नाम हैं ॥

२ बुक्का ( स्त्री । + बुक्का = बुक्कन् , पु । + बुक्का, वृक्का; २ स्त्री ), अग्रमांसम् ( न । + बुक्काग्रमांसम्, न ) 'कलेजा' अर्थात् 'हृदयके भीतरवाले कमलके समानाकार मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ हृदयम् , हृत् ( = हृद् । २ न ), 'हृदय' के २ नाम हैं । ( "बुक्का....." ३ ४ नाम 'हृदय' के हैं, किसीका यह भी मत है" ) ॥

४ मेदः ( = मेदस् । + मेदः । न ) वपा, वसा ( २ स्त्री ), 'चर्बी' के २ नाम हैं ॥

५ मन्या ( स्त्री ), 'गर्दनके पीछेवाली नस' का १ नाम है ॥

६ नाडी, धमनिः ( = धमनी ), शिरा ( + सिरा । ३ स्त्री ), 'नस के ३ नाम हैं ॥

७ तिलकम् , क्लोम ( = क्लोमन् । २ न ), 'पेटमें जल रहनेके स्थान' के २ नाम हैं ॥

८ मस्तिष्कम् ( + मस्तिष्कम् ), गोर्दम् ( + गोर्दः, पु । २ न ), 'दिमाग, मस्तिष्क, माइण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ किट्टम् ( न ), मलम् ( पु न ), 'नाक, कान आदिके 'बारह मल' के २ नाम हैं ॥

१. "सिरा" इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—“पञ्चकोशप्रतीकाशं रुचिरं चाप्यधोलुखम् ।

हृदयं तद्विज्ञानीयाद्विश्रयायतनं महत्” ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'पञ्चकोशप्रतीकाशम्....' इत्यनुरोधादिदमेव समीचीनं प्रतिभाति ॥

४. तदुक्तं मनुना—'वसा शुक्रमसृग्मज्जा मूत्रविड् घ्राणकर्णविट् ।

इलेष्माश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः' ॥ १ ॥ इति मनुः ५।११५

- १ अन्त्रं पुरीतव् २ गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्य ३ थ वस्नसा ।  
 स्नायुः स्त्रियां ४ कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥  
 ५ सृणिका स्यन्दिनी लाला ६ दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।  
 ७ 'नासामलं तु सिङ्घाणं ८ पिक्वूषः कर्णयोर्मलम्' ( १५ )  
 ९ मूत्रं प्रस्त्राव १० उच्चारवस्करौ शपलं शकृत् ॥ ६७ ॥  
 'पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ ।

१ अन्त्रम् ( + आन्त्रम् ), पुरीतव् ( २ न ), 'अँत' के १ नाम हैं ॥

२ गुल्मः, प्लीहा ( = प्लीहन् । + प्लीहा = प्लीहा, स्त्री । २ पु ),  
 'गुल्म रोग' अर्थात् 'हृदय को दायाँ कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के  
 २ नाम हैं ॥

३ वस्नसा, स्नायुः ( २ स्त्री ), 'प्रत्येक अङ्ग-उपाङ्गके जोड़की नस'  
 के २ नाम हैं ॥

४ कालखण्डम् ( + कालखण्डम् ), यकृत् ( २ न ), 'यकृत्' अर्थात्  
 'हृदयकी दाहिनी कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ सृणिका ( + सृणीका ), स्यन्दिनी, लाला ( ३ स्त्री ), 'लार' के  
 ३ नाम हैं ॥

६ दूषिका ( + दूषीका । स्त्री ), 'कीचर' का १ नाम है ॥

७ [ नासामलम्, सिङ्घाणम् ( २ न ), 'नकटी, नेटा' अर्थात् 'नाककी  
 मैल' के २ नाम हैं ] ॥

८ [ पिक्वूषम् ( न ), 'खोंट' अर्थात् 'कानकी मैल' का १ नाम है ॥ ]

९ मूत्रम् ( न ), प्रस्त्रावः ( पु ), 'पेशाब' के २ नाम हैं ॥

१० उच्चारः, अवस्करः ( २ पु ), शमलम्, शकृत्, पुरीषम् ( ३ न ),

अत्र मा० दी० तु 'कर्णविण्मूत्रविण्मखाः' इत्येवं तद्विज्ञमेव द्वितीयचरणमाहेश्वरवधेयम् ॥  
 प्रसङ्गादेतेषां निर्गमस्थानानि गरुडपुराणोक्तानि लिख्यन्ते—

“द्वारेर्दादशभिर्मित्रं किट्टं देहाद्रहिः सवेत् ।

कर्णाक्षिनासिका जिह्वा दन्ता नाभिर्नखा गुदम् ॥

पुष्पं शिरा वपुर्लोम मलस्थानानि चक्षते ॥ इति ग० पु० १५ । ६०-६१ ॥

१. “पुरीषं गूथं वर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ” इति “गूथं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ  
 स्त्रियौ” इति च क्रमः ही० स्वा० मा० दी० सम्मते पाठान्तरे ॥

- १ स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री २ कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥  
 ३ स्याच्छरीरास्थि न कङ्कालः ४ पृष्ठास्थि न तु कशेरुका ।  
 ५ शिरोऽस्थि न करोटिः स्त्री ६ पार्श्वास्थि न तु पर्शुका ॥ ६९ ॥  
 ७ अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो ८ ऽथ कलेवरम् ।  
 गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्म विग्रहः ॥ ७० ॥  
 कायो देहः कर्त्तापुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।  
 ९ पादाग्रं प्रपदं १० पादः 'पदोऽभिधरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

गूयम्, वर्चस्कम् ( २ पु न ), विष्ठा, विट् (=विश् + विट् = विष् + स्त्री ),  
 'विष्ठा, पाखाना' के ९ नाम हैं ॥

१ कर्परः ( पु ), कपालः ( पु न ) 'कपाल' के २ नाम हैं ॥

२ कीकसम्, कुल्यम्, अस्थि ( ३ न ), 'हड्डी' के ३ नाम हैं ॥

३ ( + शरीरास्थि न ), कङ्कालः ( + कङ्कः । पु ), 'कङ्काल' ठठरी  
 का १ नाम है ॥

४ ( + पृष्ठास्थि न ), कशेरुका ( + कशेरुका । स्त्री ), 'रीढ़' अर्थात्  
 'पीठके बीचकी हड्डी' का १ नाम है ॥

५ ( + शिरोऽस्थि न ), करोटिः ( + करोटी । स्त्री ), 'खोपड़ी' का  
 १ नाम है ॥

६ ( + पार्श्वास्थि, न ), पर्शुका ( + पर्शुः । स्त्री ), 'पँजड़ी' का १ नाम है ॥

७ अङ्गम् ( न ), प्रतीकः, अवयवः, अपघनः ( ३ पु ), 'शरीरके अङ्ग'  
 के ४ नाम हैं । ( 'जैसे—हाथ, पैर, शिर, मुख,.....' ) ॥

८ कलेवरम्, गात्रम्, वपुः ( = वपुष् ), संहननम्, शरीरम्, वर्म  
 ( = वर्मन् । ३ न ), विग्रहः, कायः ( २ पु ), देहः ( पु न ), मूर्तिः, तनुः  
 ( + तनुः = तनुस् ), तनूः ( ३ स्त्री ), 'शरीर, देह' के १२ नाम हैं ॥

९ पादाग्रम्, प्रपदम् ( २ न ), 'पैरका चौवा' अर्थात् 'पैरके आगेवाले  
 हिस्से' के २ नाम हैं ॥

१० पादः, पद ( = पद् + पदः ), अङ्घ्रिः ( ३ पु ), चरणः ( पु न ),  
 'पैर' के ४ नाम हैं ॥

१. 'पदोऽभिधरणोऽस्त्रियाम्' इति स्त्री० स्वा० व्याख्यानानुसारि पाठान्तरम् ॥

- १ तदग्रन्थी घुटिके गुल्फौ २ पुमान्पार्णिस्तयोरधः ।  
 ३ जङ्घा तु प्रसृता ४ जानूरुपर्वाऽष्टीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥  
 ५ सक्थि क्लीवे पुमानूरु ६ स्तत्सन्धिः पुंसि वङ्कणः ।  
 ७ गुदं त्वपानं पायुर्ना ८ वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥  
 ९ कटो नाश्रोणिफलकं १० कटिः श्रोणिः ककुब्जती ।  
 ११ पश्चाच्चितम्बः स्त्रीकट्याः १२ क्लीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥  
 १३ कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयद्वा ने कुकुन्दरे ।

१ घुटिका ( स्त्री ), गुल्फः ( पु ), 'पैरकी घुट्टी' के २ नाम हैं ॥

२ पार्णिः ( पु ), 'पैरकी घुट्टीके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥

३ जङ्घा, प्रसृता ( २ स्त्री ), 'जंघा' के २ नाम हैं ॥

४ जानु, ऊरुपर्वा ( = ऊरुपर्वन् । २ न ), अष्टीवत् ( पु न । भा० दी० मतसे ३ पु न ), 'घुटना, टेहुन' के ३ नाम हैं ॥

५ सक्थि ( = सक्थिन् न ), ऊरुः ( पु ), 'घुटनेके ऊपरवालो हिस्से' के २ नाम हैं ॥

६ वङ्कणः ( पु ), 'घुटना तथा उसके ऊपरके जोड़' का १ नाम है ॥

७ गुदम्, अपानम् ( २ न ), पायुः ( पु ), 'पाखानाके रास्ता' के २ नाम हैं ॥

८ वस्तिः ( पु स्त्री ) 'मूत्राशय' का १ नाम है ॥

९ कटः ( पु ), श्रोणिफलकम् ( न, भा० दी० ), कमरके दोनों बगल' के २ नाम हैं ॥

१० कटिः ( + कटी ), श्रोणिः ( + श्रोणी ), ककुब्जती ( ३ स्त्री ), 'कमर' के ३ नाम हैं । ( 'अन्याचार्योक्तं मतसे 'कटः, ...' ५ नाम 'कमर' के हैं ) ॥

११ नितम्बः ( पु ) 'स्त्रियों के चूतड़' का १ नाम है ॥

१२ जघनम् ( न ), 'स्त्रियोंकी जंघा' का १ नाम है ॥

१३ + कूपकः ( पु ), कुकुन्दरम् ( + ककुन्दरम् । न ) 'चूतड़पर पृष्ठ-वंशके नीचेवाले गढ़े' के २ नाम हैं ॥

१ स्त्रियां स्फिचौ 'कटिप्रोथाऽवुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

३ भगं योनिर्द्वयोः ४ शिशनो मेढो 'मेहनशेफसी ।

५ मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः ६ पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

७ 'पिचण्डकुक्षी जठरादरं तुन्दं ८ स्तनौ कुचौ ।

९ 'चूचुकं तु कुचाग्रं स्याद् १० न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

१ स्फिक् ( = स्फिच्, स्त्री ) कटिप्रोथः ( + कटोप्रोथः, कटिः ) प्रोथः, प्रोहः । पु ), 'कुल्हा' अर्थात् 'कमरमें होने वाले मांस-पिण्ड के २ नाम हैं ॥

२ उपस्थः ( पु न ) 'भग और लिंग' अर्थात् 'स्त्री या पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' का १ नाम है ॥

३ भगम् ( न ), योनिः ( पु स्त्री ) 'स्त्रीके पेशाब करनेके रास्ता' के २ नाम हैं ॥

४ शिशनः, मेढः ( २ पु ), मेहनम्, शेफः ( = शेफस् । शेपः = शेपस्, शेफः = शेफ, शेपः = शेप' । २ न ), 'शिशन, पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' के ४ नाम हैं ॥

५ मुष्कः, अण्डकोशः ( + अण्डकोषः ), वृषणः ( ३ पु ), 'अण्डकोश, फोता' के ३ नाम हैं ॥

६ त्रिकम् ( न ), 'पीठकी रीढ़के आधारपर तीन हड्डियोंके जोड़वाले स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

७ पिचण्डः ( + पिचिण्डः ), कुक्षिः ( २ पु ), जठरम् ( + पु ), उदरम्, तुन्दम् ( ३ न ), 'पेट' के ५ नाम हैं ॥

८ स्तनः, कुचः ( + पयोधरः वक्षोजः । २ पु ), 'स्तन' के २ नाम हैं ॥

९ चूचुकम् ( + चुचुकम् । + पु ), कुचाग्रम् ( २ न ) 'स्तनके ऊपर वाले काले भाग' के २ नाम हैं ॥

१० क्रोडम् ( न स्त्री ), भुजान्तरम् ( + अङ्गम् । न ), 'गोदी' के २ नाम हैं ॥

१. 'कटिप्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् । पृथङ् नामद्वयमिति मते तु 'कटी प्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'मेहनशेपसी' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पिचिण्डिकुक्षी' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'चुचुकं तु' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'शेफशेप' शब्दद्वयोरदन्तत्वादेव 'शेपपुच्छलाङ्गुलेषु शुनः' (वा० ३९०२) इति वार्तिकसङ्गतिरन्यथा सान्तरत्वे मध्ये विसर्गस्यापि वक्तुमौचित्यम् ॥

- १ उरो वत्सं च वक्षश्च २ पृष्ठं तु चरमं तनोः ।  
 ३ स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री ४ सन्धौ तस्यैव जनुणी ॥ ७८ ॥  
 ५ बाहुमूले उभे कक्षौ ६ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।  
 ७ मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री ८ द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥  
 भुजबाहू प्रवेष्टा दोः स्यात् ९ कफोणिस्तु कूर्परः ।

१ उरः ( = वरस ), वरसम्, वक्षः ( = वक्षस् । ३ न ), 'छाती' के ३ नाम हैं । ( 'क्रोडम्, ..... ' ५ नाम 'छाती' के हैं, यह अन्य आचार्यों का मत है ) ॥

२ पृष्ठम् ( न ), 'पीठ' का १ नाम है ॥

३ स्कन्धः ( पु ), भुजशिरः ( = भुजशिरस्, न ), अंसः ( पु न ), 'कन्धे' के ३ नाम हैं ॥

४ जनु ( न ) 'कन्धे के जोड़' का १ नाम है ॥

५ बाहुमूलम् ( न ), कक्षः ( + कषयः । पु ), 'काँख' के २ नाम हैं ॥

६ पार्श्वम् ( न पु ), 'कोख' अर्थात् 'काँखके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ मध्यमम्, अवलग्नम् ( + विलग्नम् । २ न ), मध्यः ( पु न । + ३ पु न ) 'शरीरके मध्य भाग' के ३ नाम हैं ॥

८ भुजः, बाहुः ( + बाहः । २ पु स्त्री ), प्रवेष्टः, दोः ( = दोस् । + दोषा, स्त्री भागु० । २ पु ), 'बाँह' के ४ नाम हैं ॥

९ कफोणिः ( + कफणिः, कपोनिः । पु स्त्री ) कूर्परः ( + कर्परः । पु ) 'केहुनी' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्यात्कफोणिस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. —'मध्यमो मध्यजेऽन्यवत् । पुमान् स्वरे मध्यदेशेऽप्यवलग्नं तु न लिख्यात्' (मेदि० पृ० ११८ श्लो० ४९-५०) इति 'अवलग्नोऽस्त्रिया मध्ये त्रिषु स्याल्लग्नमात्रके' (मेदि० पृ० १०० श्लो० ५०) इति मेदिन्युक्ते 'अस्त्री' इत्यस्य त्रिभिः सम्बन्धः समीचीनः प्रतिभातीत्यवधेयम् ॥

३. 'कफोणिः कफणिर्द्वयोः' इति शब्दान्तरात् 'कफणिः कूर्परः स्मृतः' (अभि० रत्न० २ ३७८) इति इत्याद्युपाच्येत्यवधेयम् ॥

- १ अस्योपरि प्रगण्डः स्यात् २ प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥  
 ३ मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।  
 ४ पञ्चशाखः शयः पाणि ५ स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥  
 ६ अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः ७ पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।  
 मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥  
 ८ पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।  
 ९ प्रादेश—

- १ प्रगण्डः ( पु ) 'केहुनीके ऊपरवाले भाग' का १ नाम है ॥  
 २ प्रकोष्ठः ( पु । + न ), 'केहुनीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥  
 ३ करभः ( पु ), 'हाथकी कलाईसे कनिष्ठातकवाले बाहरी मांसल भाग' का १ नाम है ॥  
 ४ पञ्चशाखः, शयः ( + शमः, शवः ), पाणिः ( ३ पु ), 'हाथ' के ३ नाम हैं ॥  
 ५ तर्जनी, प्रदेशिनी ( + प्रदेशनी । २ स्त्री ), 'तर्जनी' अर्थात् 'अँगूठेके पासवाली अंगुली' के २ नाम हैं ॥  
 ६ अङ्गुली ( + अङ्गुलिः, अङ्गुरिः, २ स्त्री; अङ्गुलः, पु ), करशाखा ( २ स्त्री ), 'अङ्गुली' के २ नाम हैं ॥  
 ७ अङ्गुष्ठः ( पु ), प्रदेशिनी ( + प्रदेशनी ), मध्यमा, 'अनामिका, कनिष्ठा ( ४ स्त्री ), अँगूठेसे लेकर कनिष्ठा तकवाली प्रत्येक अङ्गुली' का क्रमशः १-५ नाम है ॥  
 ८ पुनर्भवः ( + पुनर्भवः ), कररुहः ( २ पु ), नखः, नखरः ( + त्रि । २ पु न ), 'नाखून' नैह' के ४ नाम हैं ॥  
 ९ प्रादेशः ( पु ), 'फैलाये हुए तर्जनी और अँगूठे बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१. 'शमः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी' इति पाठान्तरम् । नाममाणा तु 'पाणिः शयः शमी इस्तः' इत्युभयं पपाठ' इति क्षी० स्वी० ॥

२. 'पुनर्भवः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अनया ब्रह्मणश्चरश्छेदनादविप्ररवेन नामग्रहणायोभ्यतया 'अनामिका' इति नाम्नः प्रसिद्धिः । अत एव ब्रह्मावसरैऽस्यां दर्भमयं परित्रं धार्यत इत्यवधेयम् ॥



—१ तालरगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

- ३ अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।  
 ४ पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥ ८४ ॥  
 ५ द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।  
 ६ पाणिनिङ्गुजः प्रसृति ७ स्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥  
 ८ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो ९ मुष्ट्या तु बद्धया ।  
 सरलिः स्या १० दरलिस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

१ तालः ( पु ), 'फैलाये हुए मध्यमा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गोकर्णः ( पु ), 'फैलाये हुए अनामिका और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

३ वितस्तिः ( पु स्त्री ), द्वादशाङ्गुलः ( भा० दो०, पु ), 'विस्तार' अर्थात् फैलाये हुए कनिष्ठा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ चपेटः ( + चर्पटः, पु, + चपेटा, चपेटिका; २ स्त्री ), प्रतलः ( + तलः, तालः ), प्रहस्तः ( ३ पु ), 'थपड़, चटकन, के ३ नाम हैं ॥

५ सिंहतलः ( + संहतलः, सिंहतालः ), प्रतलः ( २ पु ) 'अङ्गुली फैलाये हुए दोनों हाथोंको सटाने' के २ नाम हैं ॥

६ प्रसृतिः ( स्त्री । + प्रसृतः, पु ), 'टेंटे किये ( समेटे ) हुए हाथ' का १ नाम है ॥

७ अज्जलिः ( पु ), 'अज्जलि' का १ नाम है ॥

८ हस्तः ( पु ) 'एक हाथ' अर्थात् 'दा' विस्तार या चौबीस अङ्गुलके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

९ रलिः ( + सरलिः, पु स्त्री ), 'निमूड ( मुठ्ठेका बाँधकर ) हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१० अरलिः ( स्त्री पु ), 'कनिष्ठा अङ्गुलीको फैलाये हुए मुठ्ठे बाँधकर हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१. द्वौ संहतौ सिंहतलः प्रतली' इति मुकु० सम्मतं पाठान्तरम् । 'द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतली' इति च पाठान्तरम् ॥ २. 'पाणिनिङ्गुजः' हरयपपाठः' इति श्री० स्वा० ॥

- १ व्यामो बाह्योः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।
- २ ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥
- ३ कण्ठो गलो ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।
- ५ कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा ऽवदुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
- ७ वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।
- ८ क्लीबे घ्राणं गन्धवद्वा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
- ९ ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

१ व्यामः ( पु ), 'दोनों तरफ दोनों हाथोंको फैलाकर नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ पौरुषम् ( त्रि ), 'पोरसासे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है । ( 'खड़े होकर हाथको ऊपर उठानेपर जो प्रमाण होता है, उसे 'पोरसा' कहते हैं, यह ४३ हाथका होता है' ) ॥

३ कण्ठः, गलः, ( २ पु ), 'कण्ठ' के २ नाम हैं ॥

४ ग्रीवा, शिरोधिः, कन्धरा ( ३ स्त्री ), 'गर्दन' के ३ नाम हैं ॥

५ कम्बुग्रीवा ( स्त्री ), 'शङ्खके समान तीन रेखावाली गर्दन' का १ नाम है ॥

६ अवदुः, घाटा, कृकाटिका ( ३ स्त्री ), 'घाँटी' के ३ नाम हैं । ( 'भा० शू० मतसे 'गर्दनके ऊपरवाले भाग' के और स्वा० सु० मतसे 'गर्दनके पीछेवाले भाग' के ये ३ नाम हैं' ) ॥

७ वक्त्रम्, आस्यम्, वदनम्, तुण्डम्, आननम्, लपनम्, 'मुखम् ( ७ न ), 'मुखके बिल' के और उपचारसे 'मुखमात्र' के ७ नाम हैं ॥

८ घ्राणम् ( न ), गन्धवद्वा, घोणा, नासा ( + ऋसा, नस्या ), नासिका ( + कुर्या, सिद्धाणी । ४ स्त्री ), 'नाक' के ५ नाम हैं ॥

९ ओष्ठः, अधरः, रदनच्छदः ( ३ पु ), दशनवासः ( = दशनवासस्, न ), 'ओठ' के ४ नाम हैं ॥

१. मुखशब्दस्य साधुत्वप्रकारी निरुक्ते प्रोक्तस्तथा हि—

'प्राक्खनो मुहुदात्तश्च ततोऽच्च प्रत्ययो भवेत् ।

प्रजासृजा यतः खार्तं तस्मादाहुर्मुखं कुधाः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अधस्ताच्छिबुकं २ गण्डौ कपोलौ ३ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥  
 ४ रदना दशना दन्ता रश्ना ५ तालु तु काकुदम् ।  
 ६ रसज्ञा रसना जिह्वा ७ प्रान्तावोष्ठस्य\* सूक्ष्मिणी ॥ ९१ ॥  
 ८ ललाटमलिकं गोधि ९ कर्ध्वे हृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।  
 १० कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं ११ तारकाऽक्षः कनीनिका ॥ ९२ ॥  
 १२ लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुराक्षणी ।  
 हृग्दृष्टी—

- १ चिबुकम् (न), 'आँठ और ठुड्ढीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥  
 २ गण्डः, कपोलः ( + कटः । २ पु ), 'गाल' के २ नाम हैं ॥  
 ३ हनुः ( स्त्री ), 'दाढ़ी, ठुड्ढी' का १ नाम है ॥  
 ४ रदनः, दशनः, दन्तः ( + दष्टः, स्त्री ), रदः ( ४ पु ), 'दाँत' के ४ नाम हैं ॥  
 ५ तालु, काकुदम्. ( २ न ), 'तालु' के २ नाम हैं ॥  
 ६ रसज्ञा, रसना ( + रशना । + न ), जिह्वा ( + लोला । ३ स्त्री ) 'जीभ' के ३ नाम हैं ॥  
 ७ सूक्ष्मिणी ( = सूक्ष्मिणी स्त्री । + सूक्ष्मिणी = सूक्ष्मिणी स्त्री; सूक्ष्मि = सूक्ष्मिन्, = सूक्ष्मि; सूक्ष्म = सूक्ष्मन्; सूक्ष्मम् = सूक्ष्म, सूक्ष्मि = सूक्ष्मिन्, = सूक्ष्मि; सूक्ष्म = सूक्ष्मन्; सूक्ष्मम् = सूक्ष्म; ८ न ), 'आँठके दोनों किनारों' का १ नाम है ॥  
 ८ ललाटम्, अलिकम् ( = अलीकम्, मालम् । २ न ), गोधिः ( पु ), 'ललाट' के ३ नाम हैं ॥  
 ९ भ्रुः ( स्त्री ), 'भौंह' का १ नाम है ॥  
 १० कूर्चम् ( न पु ), 'दोनों भौंहके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥  
 ११ तारका, कनीनिका ( भा० दो०, स्त्री० स्वा० । २ स्त्री ) 'आँखकी पुतली' के २ नाम हैं ॥  
 १२ लोचनम् ( + विलोचनम् ), नयनम्, नेत्रम्, ईक्षणम्, चक्षुः ( = चक्षुस् ), अक्षि ( ६ न ), दृक् ( = दृश् ), दृष्टिः ( २ स्त्री ), 'आँख' के ८ नाम हैं ॥

१. सूक्ष्मिणी” इति पाठान्तरम् ॥

२. यथाऽऽह श्रीवर्षः—“पित्तेन दूने रसने....” इति नैषधः ॥ ३।१४४ ॥

—१ चास्र नेत्राम्बु रोदनं चास्रमधु च ॥ ९३ ॥

२ अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ ३ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

४ कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं भ्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

५ उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना नामस्तकोऽस्त्रियाम् ।

६ चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

७ तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य ८ मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।

९ तैललाटे अमरकाः १० काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

१ अस्र, नेत्राम्बु, रोदनम्, अस्रम्, अश्रु ( + बाष्पम् । ५ न ), 'आँसू' के ५ नाम हैं ॥

२ अपाङ्गः ( पु ), 'आँसू'के किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ कटाक्षः ( पु ), ( + अपाङ्गदर्शनम्, न ), 'कटाक्ष' का १ नाम है ॥

४ वर्णः, शब्दग्रहः ( २ पु ), श्रोत्रम्, भ्रुतिः ( स्त्री ) श्रवणम्, श्रवः ( = श्रवस् । शेष ३ न ), 'कान' के ६ नाम हैं ॥

५ उत्तमाङ्गम् ( + वराङ्गम् ), शिरः ( = शिरस् । + शिरः = शिरः<sup>१</sup> पु ), शीर्षम् ( ३ न ), मूर्ध्ना ( = मूर्धन्, पु ); मस्तकः ( पु न ), 'सिर' मस्तक' के ५ नाम हैं ॥

६ चिकुरः ( + चिकूरः, चिहुरः<sup>२</sup> ), कुन्तलः, बालः ( + बालः ), कचः, केशः, शिरोरुहः ( + शिरसिजः, मूर्धजः । ६ पु ), 'केश, बाल' के ६ नाम हैं ॥

७ कैशिकम्, कैश्यम् ( २ न ), 'केशके समूह' का १ नाम है ॥

८ अलकः, चूर्णकुन्तलः ( २ पु ), 'अँगूठिया बाल' के २ नाम हैं ॥

९ अमरकः ( पु ), 'काकुल' अर्थात् 'बुलबुली यानी ललाटपर लटके हुए बाल' का १ नाम है ।

१० काकपक्षः, शिखण्डकः ( + शिखाण्डकः । २ पु ), 'काकपक्ष' अर्थात् 'लडकोका जूड़ा, जुलुफी, शिखा-सामान्य के २ नाम हैं ॥

१. 'शिरोवाची शिरोऽङ्गन्तो रजोवाची रजस्तथा' इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

२. 'कुन्तला मूर्धजाः शस्ताश्चिकुराश्चिहुरास्तथा' इति दुर्गोक्तेः । किन्तु 'चिहुर'शब्दस्य प्राकृत एव बाहुल्येन प्रयोग उपलभ्यते न तु संस्कृत इत्यवधेयम् ॥

३. 'क्षत्रियाणां चूडा 'काकपक्ष' इति गौडः इति क्षी० स्वा० ॥

- १ 'कवरी केशवेशोऽ २ थ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।  
 ३ शिखा चूडा केशपाशी ४ 'व्रतिनस्तु जटा सटा ॥ ९७ ॥  
 ५ वेणिः प्रवेणी ६ शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।  
 ७ पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्याः कचात्परे ॥ ९८ ॥  
 ८ तनूरुहं रोम लोम ९ तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।  
 १० आकल्पवेधौ नेपथ्यम्—

१ कवरी ( + कवरी । स्त्री ), केशवेशः ( + केशवेषः । पु ), 'बालके रचना-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ धम्मिल्लः ( पु ), 'पटिया, जूड़ा' अर्थात् 'बाँधे हुए खियोंके बालके रचना-विशेष' का १ नाम है ॥

३ शिखा, चूडा, केशपाशी ( ३ स्त्री ), 'शिखा, चुटिया, चुन्नी' के ३ नाम हैं ॥

४ जटा, सटा ( २ स्त्री ), 'जटा' अर्थात् 'भापसमें सटे हुए बाल या ऋषियोंकी जटा या जटामात्र' के २ नाम हैं ॥

५ वेणिः ( + वेणी ), प्रवेणी ( + प्रवेणिः । २ स्त्री ), 'बालकी गुथी हुई चोटी' के २ नाम हैं ॥

६ शीर्षण्यः, शिरस्यः ( २ पु ), 'निर्मल बाल' के २ नाम हैं ॥

७ पाशः, पक्षः, हस्तः ( ३ पु ), ये तीन शब्द 'कच' शब्दसे परे रहने पर अर्थात् 'कचपाशः, कचपक्षः, कचहस्तः, ( ३ पु ), या कच ( केश ) के पर्याय-वाचक शब्दसे परे रहने पर अर्थात् केशपाशः, केशपक्षः, केशहस्तः, बालपाशः, बालपक्षः, बालहस्तः ( ३ पु ), इत्यादि नाम 'केश-समूह' के हैं ॥

८ तनूरुहम्, रोम ( = रोमन् ), लोम ( = लोमन् । ३ न ), 'रोम' के ३ नाम हैं ॥

९ श्मश्रु ( + स्मश्रु । न ), 'दाढ़ीके बड़े हुए बाल' का १ नाम है ॥

१० आकल्पः, वेधः ( + वेधः । २ पु ), नेपथ्यम् ( न । + पु ), 'आभूषण आदिसे उत्पन्न शोभा' के ३ नाम हैं ॥

१. "कवरी केशवेशोऽथ" इति पाठान्तरम् ॥

२. "व्रतिनः सा जटा सटा" इति पाठान्तरम् । अत्र 'सा' शब्दः केशार्थकः ।

३. "स्मश्रु पुंमुखे" इति पाठान्तरम् ॥

—१ प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

- २ दशैते त्रिष्व ३ लङ्कृताऽलङ्कुरिण्यश्च ४ मण्डितः ।  
प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥१००॥
- ५ विभ्राड्भ्राजिण्युरोचिण्यु ६ भूषणं स्यादलङ्क्रिया ।
- ७ अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥१०१॥  
मण्डनं चा ८ य 'मुकुटं किरीटं पुन्नपुंसकम् ।
- ९ चूडामणिः शिरोरत्नं—

१ प्रतिकर्म ( + प्रतिकर्मन् ), प्रसाधनम् ( २ न ), 'तिलक, फूल आदिसे सँवारने' के २ नाम हैं । 'आकल्पः' ..... ५ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्यों का मत 'है' ) ॥

२ यहाँ से लेकर आगेवाले दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ अलङ्कृता ( + अलङ्कृतं ), अलङ्कुरिण्युः ( + मण्डनः । २ त्रि ), 'अलङ्कृत ( सुशोभित ) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ मण्डितः, प्रसाधितः, अलङ्कृतः, भूषितः, परिष्कृतः ( + परिष्कृतः । ५ त्रि ), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित' के ५ नाम हैं ॥

५ विभ्राट् ( + विभ्राज् ), भ्राजिण्युः, रोचिण्युः ( ३ त्रि ), 'आभूषण इत्यादिसे अधिक शोभनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ भूषणम् ( न । + भूषा, स्त्री ), अलङ्क्रिया ( स्त्री ), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित करने' के २ नाम हैं ॥

७ अलङ्कारः, आभरणम्, परिष्कारः ( + परिष्कारः । १ ला और ३ रा पु ), विभूषणम् ( + भूषणम् ), मण्डनम् ( शेष ३ न ), 'आभूषण, गहना, के ५ नाम हैं ॥

८ मुकुटम् ( + मकुटम् । न ), किरीटम् ( पु न ), 'मुकुट' के २ नाम हैं ॥

९ चूडामणिः ( + शिरोमणिः । पु ), शिरोरत्नम् ( न ), 'शिरोमणि' के २ नाम हैं ॥

१. मुकुटं किरीटं' इति पाठान्तरम् ॥

२. इदमसत्—वेधो हि वस्त्रालङ्करणप्रसाधनैरङ्गशोभा । प्रसाधनं तु समाङ्गमनं तिलक-पत्रभङ्गादिना ( अङ्गशोभा ) इति धौ० स्वा० ॥

—१ तरली द्वारमध्यगः ॥ १०२ ॥

- २ बालपाश्या पारितथ्या ३ पत्रपाश्या ललाटिका ।  
 ४ कर्णिका तालपत्रं स्यात् ५ कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥  
 ६ ग्रैवेयकं कण्ठभूषा ७ लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।  
 ८ स्वर्णैः प्रालम्बिका ९ श्वोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥  
 १० द्वारो मुक्तावली ११ देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

१ तरलः ( + नायकः । पु ) 'द्वारका सुमेरु' अर्थात् 'द्वार या माला के बीचवाले बड़े दाने' का १ नाम है ॥

२ बालपाश्या ( + बालपाश्या ), पारितथ्या ( २ स्त्री ), 'स्त्रियोंकी चोटी या जूड़ामें लगानेके लिये सोने आदिकी पट्टी' ( भूषण-विशेष ) के २ नाम हैं ॥

३ पत्रपाश्या, ललाटिका ( १ स्त्री ), 'बन्दी, वेना आदि ललाटके भूषण' के २ नाम हैं ॥

४ कर्णिका ( स्त्री ), तालपत्रम् ( + तालपत्रम् । न ), 'कनफूल, पेरन, तरकी, झूमक आदि कानके भूषण' के २ नाम हैं ॥

५ कुण्डलम्, कर्णवेष्टनम् ( २ न ), 'कुण्डल' के २ नाम हैं । ( 'कुण्डल' और 'कर्णिका'में यह भेद है कि 'कुण्डल'को स्त्री-पुरुष दोनों पहनते हैं और 'कर्णिका' को केवल स्त्रियाँ ही पहनती हैं ) ॥

६ ग्रैवेयकम् ( + ग्रैवेयम्, ग्रैवम्, । न ), कण्ठभूषा ( स्त्री ), 'हँसुली, कण्ठा, टीक आदि गलेके आभूषण' के २ नाम हैं ॥

७ लम्बनम् ( न ), ललन्तिका ( स्त्री ), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकने-वाले भूषण' के २ नाम हैं ॥

८ प्रालम्बिका ( स्त्री ), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकनेवाले सुवर्णके भूषण ( सोनेकी हलकी सिरुदी आदि )' का १ नाम है ॥

९ श्वोरःसूत्रिका ( स्त्री ), 'मोतीके द्वार' का १ नाम है ॥

१० द्वारः ( पु ), मुक्तावली ( स्त्री ), 'द्वार' के २ नाम हैं ॥

११ देवच्छन्दः ( पु ), शतयष्टिका ( स्त्री । भा० दी० ) 'सौ लड़ीवाले द्वार' के २ नाम हैं ॥

१ हारभेदा' यष्टिभेदाद् गुच्छगुच्छार्द्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

अर्द्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।

२ सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

३ आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।

१ गुच्छः ( + गुलः, गुल्मः ), गुच्छार्द्धः ( + गुल्मार्द्धः गुल्मार्द्धः ), गोस्तनः, अर्द्धहारः, माणवकः ( ५ पु ), एकावली, एकयष्टिका, ( २ स्त्री ), ये ७ 'हारोंके भेदविशेष' हैं । ( 'इन्हें वत्ताप लक्षोंके हारका गुच्छ, चौबीस लक्षोंके हारका गुच्छार्द्ध, चार लक्षोंके हारका गोस्तन, बारह लक्षोंके हारका अर्द्धहार, बीस लक्षोंके हारका माणवक और एक लक्षोंके हारका एकावली, एकयष्टिका 'नाम है' ) ॥

२ नक्षत्रमाला ( स्त्री ), 'सत्ताइस मोतियोंके हार' का १ नाम है ॥

३ आवापकः, पारिहार्यः ( २ पु ), कटकः, वलयः ( २ पु न ), 'पहुँची, कड़ा आदि हाथके भूषण' के ४ नाम हैं ॥

१. 'यष्टिभेदाद् गुल्मगुल्मार्द्धगोस्तनाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अत्र स्त्री० स्वा०—'अन्ये स्वाख्यन्—'द्वाविंशत्यो गुच्छो गुच्छार्द्धकत्वात् । चत्वारिंशत्यो गोस्तनो लम्बमानत्वात्, गोपुच्छोऽपि । चतुःपञ्चाशत्योऽर्द्धहारो देवच्छन्दार्द्धत्वात् । विंशत्यो माणवकोऽस्तत्वात्' इति' इत्याह ॥ अभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यपादैरुक्ता हारभेदाः प्रसङ्गादुच्यन्ते—

'देवच्छन्दः शतं सार्धं त्विन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ।

तदर्द्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ॥ १ ॥

अर्द्धं रश्मिः कलापोऽस्य द्वादश त्वर्द्धमाणवः ।

दिर्द्वादशार्द्धगुच्छः स्यात्स्वञ्च हारफलं कृताः ॥ २ ॥

अर्द्धहारश्चतुःषष्टिगुच्छमाणवमन्दराः ।

अपि गोस्तनगोपुच्छावर्द्धमर्द्धं यथोत्तरम् ॥ ३ ॥

इति हारयष्टिभेदादेकावल्येकयष्टिका ।

कण्ठिकाऽप्यथ नक्षत्रमाला तत्संख्यमौक्तिकैः' ॥ ४ ॥

इति अभि० चिन्ता० ३।३२२—३२६

अन्ये त्वेवमाहुः—'चतुःषष्टितो हारोऽथाष्टहीना यथोत्तरम् ।

रश्मिः कलापो माणवकोऽर्द्धहारोऽर्द्धगुच्छकः ॥ १ ॥

कलापच्छन्दो मन्दरः स्याद् गुच्छः सप्तयष्टिकः' । इति ।

अत्र केचित् 'रश्मिकलापो' इति वा पठित्वैकं नामेत्याहुः । मुकुभतवाऽवगमाय चर्क इत्यम् ॥



## विविधमतेन हाराणां संज्ञाया यष्टिसंख्यायाश्च बोधकचक्रम्

क्रमगतसंख्या	हारसंज्ञाः	हेमोक्तयष्टि- संख्याः	भा० दी० उक्ताः यष्टिसंख्याः	महे० संज्ञाः यष्टिसंख्याः	श्री० स्था० नदि अन्योक्ता यष्टि- संख्याः	अन्योक्ताः यष्टिसंख्याः
१	देवच्छन्दः	१००	❀	❀	१०८	❀
२	इन्द्रच्छन्दः	१००८	❀	❀	❀	❀
३	विजयच्छन्दः	५०४	❀	❀	❀	❀
४	हारः	१०८	३४	❀	❀	६४
५	रश्मिकपाकः	५४	❀	❀	❀	❀
६	अर्द्धमाणवः	१२	❀	❀	❀	❀
७	अर्द्धगुच्छः	२४	२४	२४	❀	२४
८	हारफलम्	५	❀	❀	❀	❀
९	अर्द्धहारः	६४	❀	१२	५४	३२
१०	गुच्छः	३२	३२	३२	३२	७०
११	माणवः	१६	२०	२०	२०	४०
१२	मन्दारः	८	❀	❀	❀	८
१३	गोस्तनः	४	४	४	४०	❀
१४	गोपुच्छः	२	❀	❀	४०	❀
१५	एकावली	१	१	१	१	❀
१६	नक्षत्रमाळा	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	❀
१७	रश्मिः	❀	❀	❀	❀	५६
१८	कक्षापः	❀	❀	❀	❀	४८
१९	कक्षापच्छन्दः	❀	❀	❀	❀	१६

- १ केयूरमङ्गदं तुल्ये २ अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥  
 ३ साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा स्यात् ४ कङ्कणं करभूषणम् ।  
 ५ स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥  
 कलीवे सारसनं चाऽथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।  
 ७ पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जारी नूपुरोऽस्त्रयाम् ॥ १०९ ॥  
 हंसकः पादकटकः ८ किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।  
 ९ त्वक्फलकिमिरोमाणि वस्त्रयोनिः—

१ केयूरम् , अङ्गदम् ( २ न ), 'विजायठ, बाजूसन्द, बहरबूटा' के २ नाम हैं ॥

२ अङ्गुलीयकम् ( + अङ्गुलीयकम् । न । + पुं ), उर्मिका ( स्त्री ), 'अँगूठी' के २ नाम हैं ॥

३ अङ्गुलिमुद्रा ( स्त्री ), 'नाम खुदी हुई अँगूठी' का १ नाम है ॥

४ कङ्कणम् , करभूषणम् ( २ न ), 'कङ्कण, ककना' के २ नाम हैं ॥

५ मेखला, काञ्ची, सप्तकी, रशना ( + रशना, सिम्पनी । ४ स्त्री ), सारसनम् ( न ), 'स्त्रियोंकी करधनी' के ५ नाम हैं । ( यद्यपि १ लक्ष्मीवाली करधनीकी 'काञ्ची', ८ लक्ष्मीवालीकी 'मेखला', १६ लक्ष्मीवालीकी 'रशना' और २५ लक्ष्मीवालीकी 'कलाप' संज्ञा अन्य ग्रन्थोंमें कही गयी है, तथापि यहाँ उक्त भेदविशेषका आश्रय नहीं किया गया है ) ॥

६ शृङ्खलम् ( त्रि ), 'पुरुषोंकी करधनी' का १ नाम है ॥

७ पादाङ्गदम् ( न ) तुलाकोटिः ( + तुलाकोटी । स्त्री ), मञ्जरीः ( + मञ्जरीलः ), नूपुरः ( २ पुं न ), हंसकः, पादकटकः ( २ पुं ), 'पावजेब' के १ नाम हैं ॥

८ किङ्किणी ( + किङ्किणिः, कङ्किणी ), क्षुद्रघण्टिका ( १ स्त्री ), 'घूघूर' के २ नाम हैं ॥

९ वस्त्रयोनिः ( स्त्री ), 'जिनके कपड़े बनते हों उन छाता, फल, कुमि और रोंएं' का १ नाम है । ( 'तीसी, केला आदि के बालसे, कपास

१. 'किङ्किणी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'अयं मैथिल्यमिहानं राखवस्याङ्गुलीयकः' ( अट्टि ८।११८ ) इत्युक्तेरिति मुकुटः ॥

३. 'एकयष्टिमंवेरकाञ्ची मेखला त्वष्टयष्टिका ।

रशना षोडश हेया कलापः पञ्चविंशकः' ॥ १ ॥

इत्युक्ता भेदास्त्वह नाभिता हत्यवधेयम् ॥

१ दश त्रिषु ॥ ११० ॥

२ वाक्कं क्षौमादि ३ फालं तु कार्पासं वादरं च तत् ।

४ कौशेयं कृमिकोशोत्थं ५ राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

आदिके फटसे, रेशमवाले कृमि ( कीड़े ) के कोएसे और भेंड़, दुग्मा भेंड़ा, मृग आदिके रोएँसे कपड़े बनते हैं; अतः 'ऊन छाल, फल्ल, कृमि और रोएँ' का 'वस्त्रयोनिः ( स्त्री ), यह १ नाम है" ॥

१ यहाँसे दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ('वाक्कम्, क्षौमम्, फालम्, कार्पासम्, वादरम्, कौशेयम्, राङ्गरम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम्' स्त्री० स्वा० भा० दी० मतसे ये १० शब्द त्रिलिङ्ग हैं । वाक्कम् क्षौमम् ( न' ) फालम्, कार्पासम्, वादरम्, कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम्, राङ्गवम्, मृगरोमजम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् ( 'च' शब्दसे इसका संग्रह हुआ है ), सुभूनि और महेश्वरके मतसे शेष ११ शब्द त्रिलिङ्ग हैं" ) ॥

२ वाक्कम्, क्षौमम् ( + न । २ त्रि ), 'तिसीवट या केले आदिके छालसे बने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ फालम्, कार्पासम्, वादरम् ( + वादरम् । ३ त्रि ), 'कपास इत्यादि-के फलसे बने हुए कपड़े' अर्थात् 'सूती कपड़े' के ३ नाम हैं ॥

४ कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम् ( भा० दी०, स्त्री० स्वा० । + कृमिकोशोत्थम् । २ त्रि ), 'पीताम्बर आदि रेशमी कपड़ा' अर्थात् 'रेशमवाले कीड़ों के कोएके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

५ राङ्गवम्, मृगरोमजम् ( भा० दी०, स्त्री० स्वा० । २ त्रि ), 'दुशाला, शाल, अलवान, कम्बल आदि ऊनी कपड़ा' अर्थात् 'मृग ( भेंड़ा आदि पशु ) के रोएँके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के या 'रङ्गनामक मृग-विशेषके रोएँके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

१. 'क्षौमं दुकूलं स्याद् द्वे तु' ( २.६।११३ ) इत्यत्र 'दुकूल'शब्दसादृचयात् 'क्षौम' क्लीबमेवेत्याशयः । अत एव 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्दयोरपि पर्यायता, 'तन्त्रक'शब्द-स्यैकादशसङ्ख्यकता च सिध्यति । स्वा० भा० दी० मते तु 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्द-योरन्य पर्यायता, 'क्षौम' शब्दश्च त्रिलिङ्ग एव, अत एव 'दश त्रिषु' इति ग्रन्थकारोक्तिः संगच्छते इति बोध्यम् ॥

- १ अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।
- २ तस्यादुद्गमनीयं यद्भौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥११२॥
- ३ पत्रोर्णं धौतकौशेयं ४ बहुमूल्यं महाधनम् ।
- ५ क्षौमं दुकूलं स्याद् ६ द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥११३॥
- ७ स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य 'दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः ।
- ८ दैर्घ्यमायाम् आरोहः—

१ अनाहतम् ( + अहतम् ), निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् ( भा० दी० स्त्री० स्वा० । ३ त्रि ), नवाम्बरम् ( न ), भा० दी० स्त्री० स्वा० के मतसे 'जो पहना, धुलाया या फटा हुआ नहीं हो उस कपड़े' के और महेश्वरके मतसे 'कोरे कपड़े' के ४ नाम हैं ॥

२ उद्गमनीयम् ( न ), 'धुलाये हुए कपड़े' का नाम है । ( 'भौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्' यहाँ पर 'युग' शब्द अविवक्षित है ) ॥

३ पत्रोर्णम् ( न ), धौतकौशेयम् ( भा० दी० । २ न ), 'धुलाये हुए रेशमी कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ बहुमूल्यम्, महाधनम् ( भा० दी० । २ न ), 'वेशकीमती वस्तु' के २ नाम हैं ॥

५ क्षौमम् ( त्रि । + न ), दुकूलम् ( न ), 'पीताम्बर' के २ नाम हैं ॥

६ निवीतम् ( + निवृत्तम् ), प्रावृतम् ( २ न ), 'ढके हुए वस्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ दशाः ( स्त्री नि० ब० व० ), वस्तयः ( भा० दी० । स्त्री पु नि० ब० व० । + वर्तयः ; २ एक व० भी हैं ), 'कपड़ेकी किनारी, धारी, दुस्सो' के २ नाम हैं ॥

८ दैर्घ्यम् ( न ), आयामः, आरोहः ( + आनाहः । २ पु ), 'कपड़े आदि की

१. 'दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'आनाहः' इति पाठान्तरम् ॥

३. युगशब्दस्याविवक्षायां लक्ष्यं यथा—

'गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा' । कुमारसम्भव ७।११ इति ॥

'धौतमुद्गमनीयं च —' इति इलायुधश्च ( अमि० रत्न० २।३९६ ) ॥

'वर्तिवस्ति' शब्दयोरेकवचनत्वञ्चापि । तथा हि इलायुधः—'वर्तिवस्तिर्दशाः सिचः' ( अमि० रत्न० २।३९६ ) इति ॥

—१ परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

२ पटच्चरं जीर्णवस्त्रं ३ समौ नक्तककर्पटौ ।

४ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

५ सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्द्वराशिः स्थूलशाटकः ।

लम्बाई' के ३ नाम हैं ॥

१ परिणाहः ( पु ), विशालता ( स्त्री ), 'कपड़े आदिकी चौड़ाई' के २ नाम हैं ॥

२ पटच्चरम्, जीर्णवस्त्रम् ( २ न ), 'पुराने कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ नक्तकः ( + लक्तकः ), कर्पटः ( २ पु ), सुकु० महे० मतसे 'पुराने कपड़ेके टुकड़े' के, भा० दी० मतसे 'कमाल' अर्थात् 'पसीना आदिको पोछने-वाले छोटे वस्त्र' के और स्त्री० स्वा० मतसे 'दूध, पानी आदिको छाननेवाले कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः ( = वासस् ), चैलम् ( + चेलम् ), वसनम्, अंशुकम् ( + चीरम्, प्रोतः । ६ न ), 'कपड़ामात्र' के ६ नाम हैं ॥

५ सुचेलकः ( पु ), पटः ( पु न । + पु स्त्री स्त्री० स्वा० <sup>१</sup> ), 'अच्छे कपड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वराशिः ( + वरासिः । + पु ), स्थूलशाटकः ( २ त्रि ), 'मोटे कपड़े' के २ नाम हैं । ( 'सुचेलकः, .....' ४ शब्द एकार्थक हैं, यह भी आचार्यों का मत है ) ॥

१. 'लक्तककर्पटौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पटोऽस्त्री ना वराशिः' इति । ३. 'पटोऽस्त्री ना वरासिः' इति च काचित्कं पाठान्तरम् ॥

४. पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः' इति रभसोक्तेः, 'पटश्चित्रपटे वस्त्रेऽस्त्री, प्रियालद्भुमे पुमान्' ( मेदि० पृ० ३६ श्लो० १९ ) इति मेदिन्युक्तेश्च 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, द्वयो-रदर्शनात्' इति स्त्री० स्वा० वचसश्चिन्त्यत्वमुक्तम् भा० दी० । स्त्री० स्वा० तु 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, द्वयोर्दर्शनात्' इत्येवोक्तत्वात् 'अपटीक्षेपेण' इति लक्ष्याच्च भा० दी० उक्तेरेव चिन्त्यत्वम् । 'अभ्रमंशुकमुक्तं वस्त्रं सिचयः पटः पोटः' ( अभि० रत्न० २।३९३ ) इति ह्रस्वायुषोक्त्या तु 'पट' शब्दस्य पुंस्त्वमात्रमेवायातीत्यवधेयम् ॥

- १ निचोलः प्रच्छदपटः २ लघौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥
- ३ अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधौऽशुकौ ।
- ४ द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥  
संव्यानमुत्तरीयं च ५ चोलः कूर्पासकौऽस्त्रियाम् ।
- ६ नीशारः स्यात्प्रावरणे द्विमात्रितनिवारणे ॥ ११८ ॥
- ७ अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकप्रस्त्रियाम् ।
- ८ स्यात्त्रिधाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
- ९ अस्त्री वितानमुखोचो—

१ निचोलः ( + निचुलः । त्रि ), प्रच्छदपटः ( २ पु ), 'महे० भा० दी० मतसे 'पालकी आदिके ओहार या सारङ्गी, सितार आदिके गिलाफ' ( खोली ) के, ली० स्वा० मतसे 'रजाई, तोसक, तकिया आदिकी खोली' के और अन्याचार्योंके मतसे 'बुर्का' अर्थात् 'यवन आदिकी स्त्रियाँ पर्वेके वास्ते जिसको ओढ़कर पूरे शरीरको छिपाकर बाहर निकलती हैं उस वस्त्र-विशेष'-के २ नाम हैं ।

२ रल्लकः, कम्बलः ( २ पु ), 'कम्बल' के २ नाम हैं ॥

३ अन्तरीयम्, उपसंव्यानम्, परिधानम्, अर्धोऽशुकम् ( ४ न ), 'कमर-से नीचे पहने जानेवाले धोती, पायजामा, साड़ी आदि कपड़ों' के ४ नाम हैं ॥

४ प्रावारः ( + प्रावरः ), उत्तरासङ्गः ( २ पु ), बृहतिका ( स्त्री ), संव्यानम्, उत्तरीयम् ( २ न ), 'कमरसे ऊपर धारण करने योग्य दुपट्टा, चादर, पगड़ी आदि कपड़ों' के ५ नाम हैं ॥

५ चोलः ( + चोली, स्त्री ), कूर्पासकः ( पु न ), 'स्त्रियोंकी चोली, कुर्ती आदि' के २ नाम हैं ॥

६ नीशारः ( पु ), 'रजाई, दुलाई या शीतसे बचनेके लिये ओढ़े जानेवाले वस्त्रमात्र' का १ नाम है ॥

७ अर्धोरुकम् ( न ), चण्डातकम् ( न पु ), 'लहंगा' के २ नाम हैं ॥

८ आप्रपदीनम् ( त्रि ), 'पैरतक लटकनेवाले कपड़े' का १ नाम है ॥

९ वितानम् ( न पु ), उल्लोचः ( पु ), 'चूँदवा' के २ नाम हैं ॥

१ दृश्याद्यं वस्त्रवेशमनि ।

२ प्रतिसीरा 'जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

३ 'परिकर्माङ्गसंस्कारः स्याध्ममार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

५ उद्धर्तनोत्सादने द्वे समे ६ आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥

स्नानं ७ चर्चा तु चार्चिक्यं स्यासकोऽथ प्रबोधनम् ।

अनुबोधः ९ पत्रलेखा १० पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

१ दृश्यम् ( + दृश्यम् । न ), आदि ( 'आदि' शब्दसे 'पटकुटी' ( स्त्री ), पटवासः ( = पटवासस् ), पटगृहम्, पटकुड्यम् ( ३ न ), इत्यादिका संग्रह है ), 'कपड़ेके घर, डेरा, रावटी, तम्बु आदि' का नाम है ॥

२ प्रतिसीरा, जवनिका ( + यमनिका ), तिरस्करिणी ( + तिरस्कारिणी, तिरस्करणी । ३ स्त्री ), 'कनात, पर्दा' के ३ नाम हैं ॥

३ परिकर्म ( = परिकर्मन् । + प्रतिकर्म = प्रतिकर्मन् । न ), अङ्गसंस्कारः ( पु ), 'कुङ्कुम आदिसे शरीरके संस्कार करने' के २ नाम हैं ॥

४ मार्ष्टिः, मार्जना, मृजा ( ३ स्त्री ) 'झाड़ पोंछकर शरीरको साफ करने' के ३ नाम हैं ॥

५ उद्धर्तनम्, उत्सादनम् ( + उच्छादनम् । २ न ), उबटन, वेशन, सावुन आदिसे शरीरको मलने' के २ नाम हैं ॥

६ आप्लावः, आप्लवः ( १ पु ), स्नानम् ( न ), 'स्नान करने' के ३ नाम हैं ॥

७ चर्चा ( स्त्री ), चार्चिक्यम् ( न ), स्थासकः ( पु ), शरीरमें चन्दन आदि लगाने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रबोधनम् ( न ), अनुबोधः ( पु ), 'निकले हुए गन्धको फिरसे लाने' के २ नाम हैं । ( 'जैसे—'कस्तूरीके गन्धके निकल जानेपर मदिरा छोड़नेसे उसका गन्ध फिर आ जाता है' ) ॥

९ पत्रलेखा, पत्राङ्गुलिः ( २ स्त्री ), 'कस्तूरी, केसर, मेंहदी या चन्दन आदिसे गाल या स्तनादिपर पत्ते, फूल आदिकी चित्रकारी करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'यमनिका' इति पाठान्तरम् । २. प्रतिकर्माङ्गसंस्कारः इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पत्राङ्गुलिरिमे स्त्रियौ' इति पाठान्तरम् ॥

- १ तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।  
 द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियाश्मथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥  
 काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ।  
 रक्तसंकोचपिशुनं 'वीरं' लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥  
 ३ लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो दुमामयः ।  
 ४ लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञायथ जायकम् ॥ १२५ ॥  
 'कालायकं च कालानुसार्य चादथ समार्थकम् ।  
 'वंशिकागुरुराजाहलोहकि (कृ) मिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

- १ तमालपत्रम्, तिलकम्, चित्रकम्, विशेषकम् ( २ रा ४ था पु न । शेष न), 'कस्तूरी, चन्दन, भस्म आदिसे टीका (तिलक) लगाने' के ४ नाम हैं ॥  
 २ कुङ्कुमम्, काश्मीरजन्म ( = काश्मीरजन्मन् ), अग्निशिखम्, वरम्, बाह्लीकम् ( + बाह्लिकम्, बह्लीकम्, बह्लिकम् ), पीतनम्, रक्तम् ( + अश्व-  
 कसंज्ञम् ; खूनके पर्यायवाचक नाम ), संकोचम्, पिशुनम्, वीरम् ( + वीरम् )  
 लोहितचन्दनम् ( ११ न ) 'केसर, कुङ्कुम' के ११ नाम हैं ॥  
 ३ लाक्षा, राक्षा ( + रक्षा । २ स्त्री ), जतु (न), यावः, अलक्तः, दुमा-  
 मयः ( ३ पु ), लाही, लाक्षा, लाख, महावर' के ६ नाम हैं ॥  
 ४ लवङ्गम्, देवकुसुमम्, श्रीसंज्ञम् ( श्री अर्थात् लक्ष्मीके पर्यायवाले  
 सब नाम । ३ न ), 'लौंग' के ३ नाम हैं ॥  
 ५ जायकम्, कालायकम् ( + कालेयकम् ), कालानुसार्यम् ( ३ न ),  
 'पीला चन्दन, जायकनामक गन्धद्रव्य' के ३ नाम हैं ॥  
 ६ वंशिकम् ( + वंशिकम् ), अगुरु ( + पु । + अगुरु ), राजाहम्,  
 लोहम् ( + पु ), कि(कृ) मिजम्, जोङ्गकम् ( ६ न ), आ० दी० मतसे 'अगर'  
 के ६ नाम हैं ॥

१. 'वी(धी)रलोहितचन्दनम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कालेयकं च' इति पाठान्तरम् ॥  
 ३. 'वंशिकागुरुराजाहलोहकि(कृ)मिजजोङ्गकम्' इति पाठान्तरम् ॥  
 ४. धन्वन्तरिस्त्वेवमाहुः—

'लाक्षा पलङ्कण राक्षा दीक्षित कुम्भिजं जतु ।

कृतज्ञानङ्गमाता च दुमभ्याधिरलक्तकः' ॥ १ ॥ इति ॥



- १ 'कालागुर्वगुरु २ स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।  
 ३ यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि १२७ ॥  
 बहुरूपोऽप्यथ वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ ।  
 ५ तुरुष्कः पिण्डकः सिल्लो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥  
 श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।  
 ७ मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च—

१ कालागुरु, अगुरु ( + अगुरु । २ न ), भा० दी० मतसे 'काला अगुरु' के २ नाम हैं : ('महे० मतसे 'वांशकम्, .....', ७ नाम 'अगुरु' के हैं) ॥

२ मङ्गल्या ( स्त्री ), 'बेला'के फूलके समान सुगन्ध देनेवाले अगुरु का १ नाम है ॥

३ यक्षधूपः ( + धूपः ), सर्जरसः, रालः ( + राला, स्त्री, अरालः ), सर्वरसः, बहुरूपः ( ५ पु ), 'राल, धूप' के ५ नाम हैं ॥

४ वृक्षधूपः, कृत्रिमधूपः ( २ पु ), 'अनेक सुगन्धित पदार्थोंको मिलाकर बनाये हुए धूप' के २ नाम हैं ॥

५ तुरुष्कः, पिण्डकः, सिल्लः (सिल्लः), यावनः ( ४ पु ), 'लोहवान' के ४ नाम हैं ॥

६ पायसः, श्रीवासः ( + श्रीः ), वृक्षधूपः ( + वृक्षः ), श्रीवेष्टः ( + श्री-पिष्टः ) सरलद्रवः ( ५ पु ), 'सरल देवशर्कराके गोंदसे बने हुए सुगन्धित द्रव्य विशेष' के ५ नाम हैं ॥

७ मृगनाभिः ( + नाभिः ), मृगमदः ( + मृगः, मदः ६ । २ पु ), कस्तूरी ( स्त्री ), 'कस्तूरी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'कालागुर्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या' इति पाठान्तरम् । अत्र पक्षे यन्मल्लिगन्धि अगुरु तत्तु 'मङ्गल्या' स्यादित्येव सम्बन्धो ज्ञेयः, तत्र मूलपाठ एव समीचीन इत्यवधेयम् ॥

२. 'सिल्लो यावनोऽप्यथ' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'श्रीपिष्टसरलद्रवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'मुख्यराट्क्षत्रियये नाभिः पुंसि प्राण्यक्तके द्वयोः ।

चक्रमध्ये प्रधाने च स्त्रियां कस्तूरिकामदे' ॥ १ ॥

इति रभसोक्तेः नाभिश्चन्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

५. 'मृगनाभिर्मृगमदः मृगः कस्तूरिकापि च' इत्युक्तेर्मृग शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

६. 'मदो रेतसि कस्तूरी गर्वे इषेभदानयोः' ( मेदिनी पृ० ७९ श्लो० १२ ) इत्युक्तेः मृगशब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

१—अथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

ककोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः 'सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

३ गन्धसारो मलयजो भद्रशीश्चन्द्रनोऽस्त्रियाम् ।

४ तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

५ तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।

कुचन्दनं चादथ जातीकोपजातीफले समे ॥ १३२ ॥

१ कोमलम् ( + कोरकम् ), कककोलकम्, कोशफलम् ( + कोषफलम् ।

३ न ) 'कङ्कोल' के ३ नाम हैं ॥

२ कर्पूरम् ( पु न ), घनसारः, चन्द्रसंज्ञः ( चन्द्रमाके पर्यायवाचक सब शब्द ), सिताभ्रः ( + सिताभ्रः । ३ पु ), हिमवालुका ( छी ), 'कर्पूर' के ५ नाम हैं ॥

३ गन्धसारः, मलयजः ( २ पु ), भद्रशीः ( छी ), चन्द्रनः ( पु न ), 'मलयागिरि चन्दन' के ४ नाम हैं ॥

४ तैलपर्णिकम्, गोशीर्षम्, ( २ न ); हरिचन्दनम् ( पु न ), 'सफेद ठण्डा चन्दन, कमलके समान गन्धवाले चन्दन और कणिल या पोले वर्ण-वाले चन्दन' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

५ तिलपर्णी ( छी ), पत्राङ्गम् रञ्जनम्, रक्तचन्दनम्, कुचन्दनम् ( ४ न ), 'लाल चन्दन' के ५ नाम हैं ॥

६ जातीकोषम् ( + जातिकोशम्, जातीकोषः, कोषः<sup>१</sup> ), जाती-फलम् ( + फलम्<sup>२</sup> । २ न ) 'जायफल' के २ नाम हैं ॥

१. 'सिताभ्रो हिमवालुका' इति पाठान्तरम् ॥

२. '—कोशः कोष इवाण्डजे कुड्मले चषके दिव्येऽर्थचये यं निश्चिन्वयोः । जाती-कोशोऽसिपिधाने—' ( अने० संग्र० २।५४६—५४७ ), इति, '—अथ जनिषु जातिः सामान्यग्रात्रयोः ॥ मालत्यामामलक्यां च चुक्ष्यां कम्पिलजन्मनोः । जातीफले छन्दसि च' ( अने० संग्र० २।१६८—१६९ ) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेः जाति-कोष-कोशशब्दानां पर्यायतत्त्ववधेयम् ॥

३. 'फलं हेतुफले जातीफले फलकस्ययोः' ( अभि० चिन्ता० २।४९९ ) इति हेमचन्द्रा-चार्योक्त्या 'फल' शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

- १ कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकर्मः ।
- २ गात्रानुलेपनी वर्त्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥
- ३ चूर्णानि वासयोगाः स्युः४भाषितं वासितं त्रिषु ।
- ५ संस्कारो गन्धमात्राद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥
- ६ माल्यं मालास्रजौ मूर्त्ति—

१ 'यक्षकर्मः' ( पु ), 'कर्पूर, अगूर, कस्तूरी और कङ्कोल; इन चारोंको बराबर-बराबर देकर बनाये हुए लेप-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गात्रानुलेपनी, वर्त्तिः ( २ स्त्री ), वर्णकम् , विलेपनम् ( २ न ), 'लेप करनेके लिये पीसे या धिसे हुए गन्धद्रव्य विशेष' के ४ नाम हैं । ( 'ही० स्वा० मत से दो-दो शब्द एकार्थक हैं' ) ॥

३ चूर्णम् ( न ), वासयोगः ( पु ), 'कपड़े आदिको सुवासित करनेके योग्य चूर्ण किये हुए गन्धद्रव्य-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ भाषितम्, चाषितम् ( २ त्रि ), 'सुवासित कपड़ा आदि' के २ नाम हैं । ( 'ही० स्वा० मतसे गन्धद्रव्य अर्थात् इतर आदिसे सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'भाषित' और केतकी, केवड़ा या गुलाब आदि से सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'वासित' कहते हैं' ) ॥

५ अधिवासनम् ( न ), 'गुलाबजल या सुगन्धित फूल आदिसे पान, तिल आदिका सुवासित करने' का १ नाम है ॥

६ माल्यम् ( न ), माला, स्रज् ( = स्रज् । २ स्त्री ), 'शिरसे धारण की हुई माला' के ३ नाम हैं । ( 'यहाँ 'मूर्त्ति' शब्दके अविवक्षित होनेसे

१. तदुक्तं व्याहिना—

'कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलपुसणानि च ।

एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकर्म इष्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

बन्वन्तरिस्तु भिन्नमेवाह । तद्यथा—

'कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा ।

महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्षकर्मः ॥ १ ॥ इति ॥

२. गात्रानुलेपनी वर्त्तिर्विगन्धय विलेपनम् ।

वर्णकञ्जाथ विच्छिन्तिः स्त्री कषायोऽङ्कुरागके' ॥ १ ॥

इति रभसोक्तिमनुसृत्येदमित्यवधेयम् ॥

—१ केशमध्ये तु गर्भकः ।

२ प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि ३ पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

४ प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् ५ कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ।

यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि ६ शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

७ रचना 'स्यात्परिस्थन्द' ८ आभोगः परिपूर्णता ।

९ उपधानं तूपबर्हः १० शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥

शयनं ११ मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया समाः ।

‘मालामात्र’ के भी ये ३ नाम हैं ) ॥

१ गर्भकः ( पु ), ‘केशके बीचमें लगायी हुई माला’ का १ नाम है ॥

२ प्रभ्रष्टकम् ( न ), ‘शिखा या चोटीसे लटकती हुई माला’ का

१ नाम है ॥

३ ललामकम् ( न ), ‘ललाटपर धारण की हुई माला, मुण्डमाला’ का १ नाम है ॥

४ प्रालम्बम् ( न ), ‘गलेमें सीधे लटकती हुई माला’ का १ नाम है ॥

५ वैकक्षिकम् ( न ), ‘जनेऊकी तरह तिछी पहनी हुई माला’ का १ नाम है ॥

६ आपीडः, शेखरः ( १ पु ), ‘शिखामें रक्खी हुई माला’ के २ नाम हैं ॥

७ रचना ( स्त्री ), परिस्थन्दः ( + परिस्थन्दः । पु ), ‘माला आदि को बनाने ( गूथने )’ के २ नाम हैं ॥

८ आभोगः ( पु ), परिपूर्णता ( स्त्री ), ‘सेवा-शुश्रूषा आदि सब प्रकारके उपचारोंसे परिपूर्ण होने’ के २ नाम हैं ॥

९ उपधानम् ( न ), उपबर्हः ( पु ), ‘तकिया’ के २ नाम हैं ॥

१० शय्या ( स्त्री ), शयनीयम्, शयनम् ( २ न ), ‘शय्या, बिछोना’ के ३ नाम हैं । ( ‘भा० द्वी० मतसे ‘तोसक आदि’ के ये ३ नाम हैं ) ॥

११ मञ्चः, पर्यङ्कः, पल्यङ्कः ( ३ पु ), खट्वा ( स्त्री ), ‘पलंग, खटिआ आदि’ के ४ नाम हैं । ( किसी २ के मतसे ‘मञ्च’ यह १ नाम ‘मचान या

१. ‘स्यात्परिस्थन्दः’ इति पाठान्तरम् ॥

- १ गेन्दुकः कन्दुको २ दीपः प्रदीपः ३ पीठमासनम् ॥ १३८ ॥  
 ४ समुद्रकः संपुटकः ५ प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।  
 ६ प्रसाधनी कङ्कतिका ७ पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥  
 ८ दर्पणे 'मुकुरादर्शो' ९ व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

ऊँचे 'लिहासन आदि' का और 'पर्यङ्कः, पश्यङ्कः' ये २ नाम 'पल्लंग, मसहरी आदि' के तथा 'खट्वा' यह एक नाम 'खटिया' का है ) ॥

१ गेन्दुकः ( + गिन्दुकः, गेण्डुकः, गण्डुकः ), कन्दुकः ( २ पु ), 'गेन्द' के २ नाम हैं ॥

२ दीपः, प्रदीपः ( + स्नेहाशः, कज्जलध्वजः, दशेन्धनः, गृहमणिः, श्लोषातिलकः शिखातरुः, दीपवृक्षः, ज्योत्स्नावृक्षः ;<sup>१</sup> ४ पु । २ पु ) 'चिराग' के २ नाम हैं ॥

३ पीठम्, आसनम् ( २ न ), 'आसन' के २ नाम हैं ॥

४ समुद्रकः, संपुटकः ( २ पु ), 'डब्बा संपुट' के २ नाम हैं ॥

५ प्रतिग्राहकः ( वै० प्रतिग्रहः ), पतद्ग्रहः ( २ पु ), 'उगलदान, पिक-दान' के २ नाम हैं ॥

६ प्रसाधनी, कङ्कतिका ( २ स्त्री ), 'कङ्की' के २ नाम हैं ॥

७ पिष्टातः, पटवासकः ( २ पु ), 'बुक्का' के २ नाम हैं ॥

८ दर्पणः, मुकुरः ( + मकुरः, मङ्कुरः ), आदर्शः ( + आरमदर्शः । ३ पु ), 'शीशा-आइना' के २ नाम हैं ।

९ व्यजनम्, तालवृन्तकम् । ( + तालवृन्तम् । २ न ), 'पंखा' के २ नाम हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

१. 'मुकुरादर्शो' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं त्रिकाण्डशेषे—“दीपस्तु स्नेहाशः कज्जलध्वजः ।

दशेन्धनो गृहमणिः श्लोषातिलक इत्यपि ॥ १ ॥

शिखातरुर्दीपवृक्षो ज्योत्स्नावृक्षोऽयम्—” इति ॥

### ७ अथ ब्रह्मवर्गः ।

- १ सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।  
वंशोऽन्ववायः सन्तानो २ वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥
  - ३ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।
  - ४ 'राजबीजी राजवंश्यो ५ बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥
  - ६ 'महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
  - ७ ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
- आश्रमोऽस्त्री—

### ७. अथ ब्रह्मवर्गः ।

- १ सन्ततिः ( स्त्री ), गोत्रम् , जननम् , कुलम् ( ३ न ), अभिजनः, अन्वयः, वंशः, अन्ववायः, सन्तानः ( ५ पु ), 'वंश, कुल, खान्दान' के १ नाम हैं ॥
- २ वर्णः ( पु ), 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ४ 'वर्ण' हैं ॥
- ३ चातुर्वर्ण्यम् ( न ), 'ब्राह्मण आदि पूर्वोक्त चार वर्णोंके समुदाय' का १ नाम है ॥
- ४ राजबीजी (= राजबीजिन् ), राजवंश्यः ( २ पु ), 'राजकुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥
- ५ बीज्यः, कुलसंभवः ( २ पु ), 'कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥
- ६ महाकुलः ( + माहाकुलः ), कुलीनः ( + कुल्यः, कौलेयकः ), आर्यः, सभ्यः, सज्जनः, साधुः ( १ पु ), 'सज्जन, उत्तम कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के ६ नाम हैं ॥
- ७ ब्रह्मचारी ( = ब्रह्मचारिन् ), गृही ( = गृहिन् ), वानप्रस्थः, भिक्षुः ( ४ पु ), ये चार 'आश्रम' शब्दवाच्य हैं अर्थात् आश्रमः ( पु न ), 'ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमः ( ४ पु न ), ये ४ 'आश्रम' हैं ।

१. राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'महाकुलकुलीनार्य—' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—

'ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाच्यस्यो द्विधाः' । इति याज्ञ० १।१० ॥

—१ द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

२ विद्वान् विपश्चिदोषज्ञः सन् सुधीः कोविदो बुधः ।

धीरो मनीषी 'ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः ॥ ५ ॥

धीमान् सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।

दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

१ द्विजातिः ( + द्विजः ), <sup>२</sup>अग्रजन्मा ( = अग्रजन्मन् ), भूदेव ( + महीसुरः, भूपुरः, ... ), वाडवः, विमः, ब्राह्मणः ( ६ पु ), 'ब्राह्मण' के ६ नाम हैं ॥

२ षट्कर्मा ( = षट्कर्मन्, पु ), 'यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, यज्ञ कराना, पढ़ाना और दान लेना; इन' ६ कर्मोंसे युक्त ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

३ विद्वान् ( = विद्वस् ), विपश्चित्, दोषज्ञः, सन् ( = सत् ); सुधीः, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी ( = मनीषिन् ), ज्ञः, प्राज्ञः ( + प्रज्ञः ), संख्यावान् ( = संख्यावत् ), पण्डितः, कविः, धीमान् ( = धीमत् ), सूरिः ( + सूरि = सूरिन् ), कृती ( = कृतिन् ), कृष्टिः, लब्धवर्णः, विचक्षणः, दूरदर्शी ( = दूरदर्शिन् । + दूरदृक् = दूरदृश् ), दीर्घदर्शी ( + दीर्घदर्शिन् । २१ पु ), 'विद्वान्' के २२ नाम हैं ॥

१. 'ज्ञः प्रज्ञः' इति पाठान्तरम् ॥

२. ब्राह्मणोऽस्य सुखमासीत्' इति श्रुतेरित्यवधेयम् ॥

३. तदुक्तम्—'इत्याऽध्ययनदानानि याजनाध्यापनं तथा ।

प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

४ ब्राह्मणानां षट् कर्माण्याह मनुः—

'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा ।

दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामव्ययम्' ॥ १ ॥ इति मनुः १।८८

—१ श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

२ 'मीमांसको जैमिनीये ३ वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ( १६ )

४ वैशेषिके स्यादौलूक्यः ५ सौगतः शून्यवादिनि ( १७ )

६ नैयायिकस्त्वक्षपादः—

१ श्रोत्रियः, छान्दसः ( २ पु ), 'वेद पढ़नेवाले ब्राह्मण' के २ नाम हैं ॥

२ [ मीमांसकः, जैमिनीयः ( २ पु ), 'मीमांसक' अर्थात् 'मीमांसा शास्त्र को जाननेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

३ [ वेदान्ती ( = वेदान्तिन् ), ब्रह्मवादी ( = ब्रह्मवादिन् । २ पु ), 'वेदान्ती' अर्थात् 'वेदान्त शास्त्र जाननेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

४ [ वैशेषिकः, औलूक्यः ( २ पु ), 'क्षणादिसम्मत द्रव्य आदि ( 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव' ) "सात पदार्थोंका माननेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

५ [ सौगतः शून्यवादी ( = शून्यवादिन् । २ पु ), 'संसारका कारण शून्य ( कोई नहीं ) है, इस सिद्धान्तका माननेवाले नास्तिक' के २ नाम हैं ] ॥

६ [ नैयायिकः, अक्षपादः ( + आक्षपादः । २ पु ), 'गौतमसम्मत प्रमाण आदि ( 'प्रमेय, संशय, प्रयाजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय,

१. 'मीमांसको.....साङ्ख्यकापिली' इत्येष क्षेत्रकांशः क्षौ० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'नैयायिकस्त्वक्षपादः' इति पाठः क्षौ० स्वा० व्याख्योक्तः ॥

३. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डस्य तृतीयप्रकरणे —

'एकां शाखां सकल्पां वा षडभिरङ्गैरधीत्य वा ।

षट्कर्मनिरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मवित्' ॥ १ ॥

इति च० चिन्ता० पृ० २७ ॥

४. तथा चाह विश्वनाथः—

'द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं च विशेषकम् ।

समवायस्तथाऽभावः पदार्थाः सप्त कीर्तिताः ॥ १ ॥

इति सिद्धा० मुक्ता० १११ ॥



—१ स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः ( १८ )

२ चार्वाकलौकायतिकौ ३ 'सत्कार्ये' साङ्ख्यकापिलौ ( १९ )

४ उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः ।

वाद, अक्षप, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान' ) 'सोलह पदार्थोंको माननेवाले नैयायिक' के २ नाम हैं ॥

१ [ स्याद्वादिकः, आर्हकः ( + आर्हतः । २ पु ), 'मोक्ष है तो हो और नहीं है तो न हो इस सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ चार्वाकः, लौकायतिकः ( २ पु ), 'बौद्ध' अर्थात् 'बुद्धदेवके मतानुयायी' के २ नाम हैं ] ॥

३ [ साङ्ख्यः, कापिलः ( २ पु ), 'कपिलमुनिसम्मत सांख्यशास्त्रके सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

४ ३ उपाध्यायः, अध्यापकः ( २ पु ), 'उपाध्याय' अर्थात् 'वेदके एकदेशको वा वेदाङ्गोंको वृत्तिके लिये पढ़ानेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ ४ गुरुः ( पु ), 'गुरु' अर्थात् 'निषेकादि संस्कारको सविधि करके अष्टादिसे पाकन करते हुए पढ़ानेवाले' का १ नाम है ॥

१. 'सत्कार्यो' इति पाठः क्षी० स्वा० व्याख्योक्तः ॥

२. तदुक्तम्—'प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनकृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादनस्पवितण्डा-हेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानाग्निःश्रेयसाधिगमः' इति न्या० ४० १ । १ ॥

३. उपाध्यायकक्षणमुक्तं मनुना—

'एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः ।

योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते' ॥ १ ॥ इति मनुः १।१४१ ॥

गुरुकक्षणमुक्तं मनुना—

'निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि ।

सम्भावयति ज्ञानेन स विप्रो गुरुकथ्यते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४२ ॥

- १ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य २ 'आदेशा त्वच्चरे व्रती ॥ ७ ॥  
 यथा च यजमानश्च ३ स सोमवति दीक्षितः ।  
 ४ इज्याशीलो यायजूको ५ यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥  
 ६ 'स गीर्षतीष्ट्या स्थपतिः ७ सोमपीथी तु सोमपाः ।  
 ८ सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

१ 'आचार्यः ( पु ), 'आचार्य' अर्थात् 'मन्त्रोंकी व्याख्या करनेवाले या शिष्यका यज्ञोपवीत संस्कारकर कसप और रहस्यके सहित वेदको पढ़ानेवाले ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

२ व्रती ( = व्रतिन् ), यथा ( यष्टृ ), यजमानः ( पु ), 'यजमान' अर्थात् 'यज्ञ करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ दीक्षितः ( पु ), 'सोमवत्' ( अग्निष्टोमादि ) यज्ञमें ऋत्विजोंको आदेश देनेवाले यजमान' का १ नाम है ॥

४ इज्याशीलः, यायजूकः ( २ पु ), 'बारबार यज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ यज्वा ( = यज्वन् पु ), 'विधिपूर्वक यज्ञ किये हुए' का १ नाम है ॥

६ स्थपतिः ( पु ), 'बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले' का १ नाम है ॥

७ सोमपीथी ( = सोमपीथिन् । + सोमपीथी = सोमपीतिन् ), सोमपाः ( + सोमपः । २ पु ), 'सोमयज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ सर्ववेदाः ( = सर्ववेदस् पु ), 'यज्ञमें सर्वस्व दक्षिणा देनेवाले' का १ नाम है । ( 'विश्वजित् आदि यज्ञोंमें सर्वस्व दक्षिणा दी जाती है, जैसे—

१. 'आदिष्टी इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स तु गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः' इति पाठान्तरम् ॥

आचार्यलक्षणमुक्तं मनुना—

'उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विषः ।

सकस्यं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४० ॥

- १ अनूचानः प्रवचने साङ्गोऽधीती २ गुरोस्तु यः ।  
 लब्धानुष्ठः समावृत्तः ३ सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥  
 ४ छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये ५ शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।  
 ६ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥  
 ७ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवः श्रितवानग्निमग्निचित् ।

‘रघुने विश्वजित् यज्ञकर सर्वस्व दक्षिणा दी यी । विश्वजित् आदि यज्ञका यह नाम है, यह भा० दी० का मत चिन्मय है’ ॥

१ अनूचानः ( पु ), ‘ठ्याकण्ण आदि ६ अङ्गोंके सहित वेदको पढ़नेवाले’ का १ नाम है ॥

२ समावृत्तः ( पु ), ‘गुरुकी आज्ञा पाकर गृहस्थाश्रममें रहनेके लिये गुरुकुलसे लौटे हुए ब्रह्मचारी’ का १ नाम है ॥

३ सुत्वा ( सुत्वन् पु ), ‘यज्ञके अन्तमें अवभृथनामक स्नान किये हुए’ का १ नाम है ॥

४ छात्रः, अन्तेवासी ( = अन्तेवासिन् ), शिष्यः ( ३ पु ), ‘शिष्य, छात्र’ के ३ नाम हैं ॥

५ शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः ( २ पु । बहुवचन अविवक्षित होनेसे एकवचन भी होता है । ) ‘अध्ययनको प्रथम आरम्भ किये हुए ब्रह्मचारी आदि’ के २ नाम हैं ॥

६ सब्रह्मचारिणः ( = सब्रह्मचारिन्, पु ) ‘आपसमें समान वेद, समान व्रत और समान आचारवाले ब्रह्मचारियों का १ नाम है ॥

७ सतीर्थ्यः, एकगुरुः ( भा० दी० । २ ), ‘सहपाठी, एक गुरुसे पढ़नेवाले’ के २ नाम हैं ॥

८ अग्निचित् ( पु ), ‘अग्निहोत्री’ का १ नाम है ॥

१. यथाऽऽह रघुवंशे कविकुलकमदिकाकरः काण्डिदासः—

‘स विश्वजितमाहुः यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम्’ इति रघुवंशः ४ । ८६ ॥

२. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानकण्डस्य परिभाषाख्ये तृतीयप्रकरणे—

‘वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः शुद्धात्मा पापवर्जितः ।

शेषं ओत्रियवत्प्राप्तः स्त्रीऽनूचान इति स्मृतः’ ॥ १ ॥

इति चतु० चिन्ता० दा० खं० पृ० २८ ॥

- १ परम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥  
 २ उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात् ३ ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।  
 ४ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥  
 ५ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।  
 ६ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

१ ऐतिह्यम् ( न ), इतिह ( अव्य० ), 'परम्परागत उपदेश' के १ नाम हैं ॥

२ उपज्ञा ( स्त्री ), 'गुरुपदेशके विना उत्पन्न सर्वप्रथम ज्ञान' का १ नाम है । ( 'जैसे—वाल्मीकिकी उपज्ञा 'रामायण' है और पणिनि की उपज्ञा 'अष्टाध्यायी सूत्रपाठ' है' ) ॥

३ उपक्रमः ( पु ), 'गुरु आदिसे ज्ञान प्राप्तकर आरम्भ करने'-का १ नाम है ॥

४ यज्ञः, सवः, अध्वरः, यागः, सप्ततन्तुः, मखः, क्रतुः ( ७ पु ), 'यज्ञ' के ७ नाम हैं ॥

५ पाठः ( पु ), 'वेदादिपाठ करने'को 'ब्रह्मयज्ञः' ( पु ); होमः ( पु ), 'हवन करने'को 'देवयज्ञः' ( पु ); अतिथीनां सपर्या, ( स्त्री ), 'भस्म, जलपान, शय्यादि देकर अतिथियोंके सत्कार करने'को 'नृत्ययज्ञः' ( पु ); तर्पणम् ( न ), 'भस्म, जल, पिण्डदान, आद्य, आदिसे पितरोंको सन्तुष्ट करने'को 'पितृयज्ञः' ( पु ); बलिः ( पु ), 'बलिवैश्वदेव अर्थात् काकादिको बलि देने या बलिदान करने'को 'भूतयज्ञः' ( पु ), कहते हैं ॥

६ ये ( ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ ) ५ महायज्ञः ( पु ), अर्थात् 'पञ्चमहायज्ञ' हैं ॥

१. तदुक्तं मनुना—अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।

होमो देवो बलिर्भूतो नृष्यश्चोऽतिथिपूजनम् ॥ १ ॥

पञ्चैतान्यो महायज्ञान्—'

इति मनुः १।७०—७१ ॥

- १ समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।  
 आस्थानी ह्यीषमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥  
 २ प्राग्वंशः प्राग्वविर्गोहात् ३ सदस्या विधिदर्शिनः ।  
 ४ सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥  
 ५ अभ्यर्यूद्रातृहोतारो यजुःसामग्विदः क्रमात् ।

१ समज्या, परिषत् ( = परिषद् । + पर्षत् = पर्षद् ), गोष्ठी, सभा, समितिः, संसत् ( = संसद् ), आस्थानी ( ७ स्त्री ), आस्थानम् ( न ), सदः ( = सदस् न स्त्री ), 'सभा' के ० नाम है । ( 'सम्प्रति सभा शब्दका सामान्यतः व्यवहार किया जाता है' ) ॥

२ प्राग्वंशः ( पु ), 'हवनशालाके पूर्व तरफ यजमानको बैठनेके लिये बनाये हुए स्थान या गृह-विशेष'का १ नाम है ॥

३ सदस्यः ( पु ), 'यज्ञमें न्यूनाधिक विधिको देखनेवाले ऋत्विग-विशेष' का १ नाम है ॥

४ सभासत् ( = सभासद् ), सभास्ताराः, सभ्याः, सामाजिकः ( ४ पु ), 'सभासद्' के ४ नाम हैं ॥

५ अभ्यर्युः, उद्राता ( = उद्रातृ ), होता ( = होतृ । ३ पु ), 'यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद जाननेवाले' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

महर्षियाज्ञवल्क्येनाप्युक्तम्—

'बलिकर्मस्वशाहोमस्वाध्यायातिथिसत्क्रियाः । भूतपित्रमरब्रह्ममनुष्याणां महामखाः' ॥ १ ॥  
 इति याज्ञ० स्मृतिः २।१०२ ॥

यथा वा—'पाठो होमश्चातिथीनां सपर्यां तर्पणं बलिः ।

पते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः' ॥ १ ॥ इति ॥

२. यथाऽऽह समाकक्षणं मनुः—

'यस्मिन्देष्टे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्यः ।

राक्षसाधिकृतो विद्वान् ब्राह्मणस्तां सर्वां विदुः' ॥ १ ॥ इति मनुः ८।११॥

- १ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
- २ वेदिः परिष्कृता भूमिः ३ समे स्थण्डिलचत्वरः ।
- ४ चषालो यूषकटकः ५ कुम्भा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥
- ६ यूषाग्रं तर्म ७ निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
- ८ दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

१ आग्नीध्र, ऋत्विक् (= ऋत्विज्), याजकः (३ पु), यज्ञ करनेवाला यजमान धन आदिसे जिसका चरण करे उन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु, ..... १७<sup>३</sup>) यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों के ३ नाम हैं ॥

२ वेदिः ( + वेदी । स्त्री ), 'यज्ञके लिये डमरु-तुल्याकार बनाई हुई या साफ की हुई भूमि' का १ नाम है ॥

३ स्थण्डिकम्, चत्वरम् ( २ न ), 'यज्ञके लिये साफ किये गये स्थान-विशेष' के २ नाम हैं । ( 'सम्प्रति चत्वर शब्दको चबूतरा के अर्थमें भी प्रयुक्त किया जाता है' )

४ चषालः, यूषकटकः ( भा० दी० । २ ), 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपर बलयाकार ( गोल ) बनाये हुए काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कुम्भा ( स्त्री ), 'चण्डाल, अन्त्यज आदि यज्ञको न देखा सकें, इस निमित्तसे यज्ञभूमिके चारों तरफ बनाये हुए घेरे का १ नाम है ॥

६ यूषाग्रम्, तर्म ( = तर्मन् । २ न ) 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपरी भाग' के २ नाम हैं ॥

७ अरणिः ( पु स्त्री ) 'जिसको परस्परमें रगड़कर यज्ञार्थ अग्नि निकाली जाय, उस काष्ठ-विशेष' का १ नाम है ॥

८ दक्षिणाग्निः, गार्हपत्यः, आहवनीयः ( ३ पु ), ये ३ 'अग्निके भेद' हैं ॥

१. 'कचित्तु त्रयाणां द्वन्द्वः पठ्यत' इति भा० दी० ॥

२. तथा हि कात्यः—'वृताः कुर्वन्ति ये यज्ञमृत्विजस्ते—' इति ॥

३. 'आद्यशब्दात् 'पीतृतप्रशास्तुब्राह्मणाच्छंस्यच्छावाग्नावस्तुदब्रह्ममैत्रावरुणप्रतिप्रत्यातु-प्रतिहन्तृनेष्टनेतृसुब्रह्मण्याः' इत्थं सप्तदशत्विजः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. ब्राह्मणसर्वस्वे इत्याद्युधेन पञ्चाशय उक्तास्तथा हि—

'आवसथ्याहवनीयौ दक्षिणाग्निस्तथैव च ।

अन्वाहार्यौ गार्हपत्य इत्येते एव च ब्रह्मण्यः ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अग्नित्रयमिदं त्रेता २ प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।  
 ३ समूहः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥  
 ४ यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।  
 तस्मिन्नानाय्यो ५ ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया ॥ २१ ॥  
 ६ ऋक्सामिधेनी धायया च या स्यादग्निसमिन्धने ।  
 ७ गायत्रीप्रमुखं छन्दो—

१ त्रेता ( स्त्री ), 'दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीन अग्नियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

२ प्रणीतः ( पु ), 'मन्त्रसे संस्कृत अग्नि' का १ नाम है ॥

३ समूहः, परिचाय्यः उपचाय्यः ( ३ पु ), 'यज्ञ-सम्बन्धी अग्निका स्थान-विशेष, या स्थान विशेषकी अग्नि' के ३ नाम हैं ॥

४ आनाय्यः ( पु ), 'गार्हपत्यनामक अग्निसे लाकर मन्त्रसे संस्कृत दक्षिणाग्नि' का १ नाम है ॥

५ अग्नायी, स्वाहा, हुतभुक्तिप्रया ( + अग्निप्रिया । ३ स्त्री ), 'अग्निकी स्त्री, स्वाहा' के ३ नाम हैं ॥

६ सामिधेनी, धायया ( २ स्त्री ), 'अग्निमें समिधा (लकड़ी) छोड़कर अग्निको जलानेमें प्रयोग किये जानेवाले मन्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ छन्दः ( = छन्दस्, न ), 'गायत्री आदि छन्द' का १ नाम है ।  
 उक्ता १, अत्युक्ता २, मध्या ३, प्रतिष्ठा ४, सुप्रतिष्ठा ५, गायत्री ६, उष्णिक् ७, अनुष्टुप् ८, बृहती ९, पङ्क्ति १०, त्रिष्टुप् ११, जगती १२, अतिजगती १३, लक्ष्मी १४, अतिलक्ष्मी १५, अष्टि १६, अत्यष्टि १७, धृति १८ अतिधृति १९, कृति २०, प्रकृति २१, आकृति २२, विकृति २३, संस्कृति २४, अतिकृति २५, उत्कृति २६, ये छन्दोऽसि 'छन्द होते हैं । किसी २ ने 'गायत्री.....उत्कृति' तक २१ ही छन्द माने हैं' ) ॥

१. वृत्तरत्नाकरे केदारेण छन्दोलक्षणमुक्तम् । तथा हि—

'आरभ्यैकाक्षरात्पादादेकैकाक्षरवर्द्धितैः ।

पृथक् छन्दो भवेत्पादैर्वावत्पङ्क्तिर्गति गतम्' ॥ १ ॥ इति वृ० २० १।१७

१ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥

२ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्वियोगतः ।

३ 'धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥

४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।

६ हव्य ७ कव्ये<sup>३</sup>दैवपिज्ये अन्ने—

१ चरुः ( पु ), 'अग्निमें हवन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥

२ आमिक्षा ( + आमीक्षा सु० । स्त्री ), 'औटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़नेपर उत्पन्न विकार-विशेष या छौंछ' का १ नाम है ॥

३ धुवित्रम् ( + धवित्रम् । न ), 'यज्ञ में आग सुलगाने के वास्ते मृगचर्मके बने हुए पंखे' का १ नाम है ॥

४ पृषदाज्यम् ( + पृषातकम् । न ) 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥

५ परमान्नम् , पायसम् ( २ न ), 'क्षीर, हविष्य' के २ नाम हैं ॥

६ हव्यम् ( न ), 'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

७ कव्यम् ( न ), 'पिड्यान्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

तेषां नामानि च तेनैवोक्तानि । तथा हि—

'उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।

गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पञ्क्तिरेव ॥ १ ॥

त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।

शकरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यस्यष्टी ततः स्मृते ॥ २ ॥

धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिरात्कृतिः ।

विकृतिः संस्कृतिश्चापि तथाऽतिविकृतिरुत्कृतिः' ॥ ३ ॥

इति वृत्तरत्नाकरः १।१९-२१ ॥

गङ्गादासदछन्दोमञ्जर्यान्तु 'उक्ता-अत्युक्ता-शकरी'णां स्थाने 'उक्ता' अत्युक्ता, शकरी' इत्येवं नामान्याह ॥

१. 'धवित्रं—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दैवपित्र' इति पाठान्तरम् ॥



—१ पात्रं सुवाधिकम् ॥ २४ ॥

- २ भ्रुवोपभृज्जुह १ नां तु सुवो भेदाः 'सुवः स्त्रियः ।  
 ४ उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥  
 ५ परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।  
 ६ वाच्यल्लिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥  
 ७ साक्षाद्यं हवि ८ रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।  
 ९ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे १० तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥

१ पात्रम् ( न ), 'सुवा आदि ( चमस, प्रोक्षणी, प्रणीता, सूर्य, व्यजन, उल्लखल, मुसल, ग्रह, ..... ) वर्तन' का १ नाम है ॥

२ भ्रुवा, उपभृत्, जुहः ( ३ स्त्री ), ये ३ 'सुवाके भेद' हैं ॥

३ + सुवः ( पु ), सुक् ( = सुच् । + सुः । स्त्री ), 'सुवा' अर्थात् 'अग्निमें की ढाकनेवाले काष्ठनिर्मित यज्ञ-पात्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ उपाकृतः ( पु ), 'वेदमन्त्रसे अभिमन्त्रित कर यज्ञमें मारे हुए पशु' का १ नाम है ॥

५ परम्पराकम्, शमनम् ( + शसनम्, ससनम् ), प्रोक्षणम् ( ३ न ), 'यज्ञमें पशुको मारने' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रमीतः, उपसंपन्नः, प्रोक्षितः ( ३ त्रि ), 'यज्ञमें मारे हुए पशु' के ३ नाम हैं ॥

७ साक्षाद्यम्, हविः ( = हविष्, भा० दी० । २ न ), 'हवन करने योग्य हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

८ हुतम् ( भा० दी० ), वषट्कृतम् ( २ त्रि ), 'अग्निमें हवन किये हुए हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

९ अवभृथः ( पु ), 'यज्ञके अन्तमें किये जानेवाले यज्ञ-समाप्ति-सूचक स्नान-विशेष' का १ नाम है ॥

१० यज्ञियम् ( त्रि ), 'यज्ञके योग्य पदार्थ' का १ नाम है । ('जैसे—'ब्राह्मण, हविष्यादि अन्न, स्थान.....') ॥

१. 'सुवः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शसनम्' इति दुर्लभः पाठः इति स्त्री० स्वा० । 'ससनम्' इत्यन्य इति मा० दी० ॥

- त्रिष्वथ क्रतुकर्मैष्टं २ पूर्तं स्नातादि कर्म यत् ।  
 ३ अमृतं ४ विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥  
 ५ स्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।  
 विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥  
 प्रादेशनं निर्वपण-प्रपवर्जनमंहतिः ।

- १ 'इष्टम् ( न ), 'यज्ञ कार्य, दान देने' का १ नाम है ॥  
 २ 'पूर्तम् ( न ), 'बाष्पली, कुआँ, तालाब आदि खुदवाने तथा औषधालय, देवालय आदि बनवाने' का १ नाम है ॥  
 ३ 'अमृतम् ( न ), 'यज्ञसे बचे हुए द्रव्य' का १ नाम है ॥  
 ४ 'विघसः ( पु ), 'ब्राह्मण, अतिथि आदिके भोजनके बाद बचे हुए अन्न' का १ नाम है ॥  
 ५ स्यागः ( पु ), विहापितम्, दानम्, उत्सर्जनम् ( + उत्सर्गः, पु ), विसर्जनम्, विश्राणनम्, वितरणम्, स्पर्शनम्, प्रतिपादनम्, प्रादेशनम्, निर्वपणम्, अपवर्जनम् ( ११ न ) अंहतिः ( स्त्री ), 'दान देने' के ११ नाम हैं ॥

१. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्कोकमिष्टलक्षणं यथा—

'अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनम् । आतिथ्यं वैषदेवं च दृष्टमित्यभिधीयते ॥ १ ॥  
 एकामिकादौ यत्कर्म त्रेतायां यच्च हूयते । अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते ॥ २ ॥  
 इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥

२. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्कोकं पूर्त्तलक्षणम्—

'रोगिणां परिचर्या च पूर्त्तमित्यभिधीयते' । इति  
 व्यासोक्तम्—'पुष्करिण्यस्तथा वाप्यो देवतायतनानि च ।  
 अन्नदानमथारामाः पूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ १ ॥ इति ।

नारदोक्तम्—

'ग्रहोपरागे यद्दानं सूर्यसंक्रमणेषु च ।  
 द्वादश्यादौ तु यद्दानं तदेतत्पूर्त्तमुच्यते' ॥ १ ॥ इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥  
 ३-४. अमृतविघसयोर्लक्षणं मनुराह । तद्यथा—  
 'विघसाशो भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः ।  
 विघसो मुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम्' ॥ १ ॥ इति मनुः ३ । २८५ ॥

- १ मृतार्थं 'तद्वद्दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ३० ॥  
 २ पितृदानं निषापः स्यात् ३ श्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।  
 ४ अन्वाहार्यं मासिकं ५ ऽशोऽष्टमोऽहः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥  
 ६ पर्येषणा परीष्टिश्चा ७ न्वेषणा च गवेषणा ।

१ और्ध्वदैहिकम् ( + और्ध्वदैहिकम् । न ) 'मरे हुएके उद्देश्यसे मरने के दिनसे एकादशाह तक दिये हुए पिण्ड-दान आदि' का १ नाम है ॥

२ पितृदानम् ( न ), निषापः ( पु ), 'सपिण्डीकरणके बाद पितरोंके उद्देश्यसे दिये हुए पिण्ड-दान' का १ नाम है ॥

३ श्राद्धम् ( न ), 'श्राद्ध' अर्थात् 'पितरोंके उद्देश्यसे शास्त्रानुसार किये जानेवाले पिण्डदान आदि कार्य' का १ नाम है ॥

४ 'अन्वाहार्यम् ( न ), मासिकः ( पु, भा० दी० ); 'अमावस्याको किये जानेवाले मासिक श्राद्ध' के २ नाम हैं ॥

५ 'कुतपः ( + कुतपः । पु न ), 'दिनका आठवाँ हिस्सा, सप्तम मुहूर्त ( १४ घटी ) के उपरान्त तथा नवम मुहूर्त ( १७-१८ घटी ) के मध्यका श्राद्ध योग्य समय विशेष' का १ नाम है ॥

६ पर्येषणा, परीष्टिः ( २ स्त्री ), महे० मतसे 'श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी सेवा करने' के २ नाम हैं ॥

७ अन्वेषणा, गवेषणा ( २ स्त्री ), महे० मतसे 'धर्मान्वेषण करने' के २ नाम हैं । ( 'भा० दी० मतसे 'पर्येषणा.....' ४ नाम 'धर्मादिके खोज करने' के हैं' ) ॥

१. 'तद्वद्दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदाह मनुः—'पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चेदुक्षयेऽस्मिन् ॥

पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम् ॥ १ ॥

पितॄणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्मुखाः ।

तर्क्षामिषेण कर्तव्यं प्रशस्तेन प्रयत्नतः' ॥२॥ इति मनुः २।१२२-१२३॥

३. कुतपलक्षणं यथा—

'मुहूर्तात्सप्तमादूर्ध्वं मुहूर्तान्नवमादधः । स कालः कुतपो ज्ञेयः.....' इति ॥

'दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति आस्करे ।

स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम्' ॥ १ ॥ इति स्मृतिरिति । क्षी० स्वा०॥

- १ सनिस्त्वव्येषणा २ 'याज्जाऽभिषस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
- ३ षट् तु त्रिष्व ४ व्यमर्घार्थे ५ पाद्यं पादाय वारिणि ।
- ६ क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
- ८ स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृह्यागते ।
- ९ "प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च—

१ सनिः, अव्येषणा ( २ स्त्री ), 'गुरु' पिता, माता आदि श्रेष्ठ जनोकी सेवा करने और प्रार्थनापूर्वक गुरु आदि श्रेष्ठ जनोको किसी काममें प्रवृत्त करने' के २ नाम हैं ॥

२ याज्जा, अभिषस्तिः ( + अभिषस्तिः ), याचना, अर्थना ( ४ स्त्री ), 'याचना करने, माँगने' के ४ नाम हैं ॥

३ यहां से ६ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ अवर्घम् ( त्रि ), 'अर्घ ( अर्घ्य देने ) के लिये जल' का १ नाम है ॥

५ पाद्यम् ( त्रि ), 'पाद्य ( पैर धोने ) के लिये जल' का १ नाम है ॥

६ आतिथ्यम् ( त्रि ), 'अतिथियों के निमित्त वस्तु' का १ नाम है ॥

७ आतिथेयम् ( त्रि ), 'अतिथियोंके विषयमें सज्जन ( अच्छा व्यवहार करनेवाले ), का १ नाम है ॥

८ आवेशिकः, आगन्तुः ( २ त्रि ), अतिथिः ( + अतिथिः पु; अतिथी स्त्री ), 'अतिथि' के ३ नाम हैं ॥

२ [ प्राघूर्णिकः, प्राघुणकः ( + आवेशिकः । २ पु ), 'अभ्यागत' के २ नाम हैं ] ॥

१. 'याज्जाऽभिषस्ति—' इति पाठान्तरम् ॥

२. प्राघूर्णिकः.....गौरवम्' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

३. अतिथिलक्षणान्युच्यन्ते—

तिथिपूर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना ।

सोऽतिथिः सर्वभूतानां शेषानभ्यागतान्विदुः' ॥ १ ॥ इति यमः ॥

कचित् —'शेषः प्राघुणिकः स्मृतः' इति तुरीयपादः ॥

'दूराच्चोपगतं आन्तं वैश्वदेव उपस्थितम् ।

अतिथिं तं विज्ञानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः' ॥ १ ॥ इति व्यासश्च ॥

'अध्वनीनोऽतिथिर्जैयः ओत्रियो वेदपारगः' इति याज्ञ० १।१११ ॥

—१ अभ्युत्थानं तु गौरवम् ( २० )

२ पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥

३ वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।

४ व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं ५ चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥

६ उपस्पर्शस्त्वाचमन ७ मथ मौनमभाषणम् ।

८ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ( २१ )

वाल्मीकिश्च ९ थ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ( २२ )

१ [ अभ्युत्थानम् , गौरवम् ( २ न ), 'अभ्युत्थान' अर्थात् 'बड़े लोगों के आनेपर उठकर अगवाना करने' के २ नाम हैं ] ॥

२ पूजा, नमस्या, अपचितिः, सपर्या, अर्चा, अर्हणा ( ६ स्त्री ), 'पूजा' के ६ नाम हैं ॥

३ वरिवस्या, शुश्रूषा, परिचर्या ( + उपचर्या, परेष्टिः ), उपासना ( + न । ४ स्त्री ), 'शुश्रूषा करने' के ४ नाम हैं ॥

४ व्रज्या, अटाट्या ( + अटा, अट्या, महे० । २ स्त्री ), पर्यटनम् ( + भ्रमणम् । न ), 'घूमने' के ३ नाम हैं ॥

५ चर्या ( + ईर्या मुनि० । स्त्री ), 'ध्यान' मौन इत्यादि योगमार्गोंमें स्थित होने' का १ नाम है ॥

६ उपस्पर्शः ( पु ), आचमनम् ( न ), 'आचमन करने' के २ नाम हैं ॥

७ मौनम् , अभाषणम् ( २ न ), मौन या चुप रहने' के २ नाम हैं ॥

८ [ प्राचेतसः, आदिकविः, मैत्रावरुणिः ( मैत्रावरुणः ), वाल्मीकिः ( + वाल्मीकिः, वल्मीकः, वल्मिकः । ४ पु ), 'वाल्मीकि मुनि' के ४ नाम हैं ] ॥

९ [ गाधेयः, विश्वामित्रः, कौशिकः ( + कौषिकः । ३ पु ), 'विश्वामित्र मुनि' के ३ नाम हैं ] ॥

१. 'परिचर्याप्युपासनम्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'प्राचेतसः.....सुतः' अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते ॥

३. 'वाल्मीकिश्च' इति पाठान्तरम् ॥

- १ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः' ( २३ )
- २ आनुपूर्वी स्त्रियां 'वावृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥  
पर्यायश्चा ३ तिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्त्ययः ।
- ४ नियमो व्रतमस्त्री ५ तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
- ६ औपवस्तं तूपवासो ७ विवेकः पृथगात्मता ।
- ८ स्याद् ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनार्धिं ९ रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥  
पाठे ब्रह्माञ्जलिः—

१ [ व्यासः, द्वैपायनः, पाराशर्यः, सत्यवतीसुतः ( ४ पु ), 'व्यास मुनि' के ४ नाम हैं ॥

२ आनुपूर्वी ( स्त्री । + आनुपूर्व्यम् ), आवृत् , परिपाटी ( + परिपाटिः । २ स्त्री ), अनुक्रमः, पर्यायः ( २ पु ) 'क्रम' अर्थात् 'सिलसिला' के ५ नाम हैं ॥

३ अतिपातः, पर्ययः, उपात्त्ययः, ( ३ पु ), 'विना क्रम' अर्थात् 'बेसिल-सिला' के ३ नाम हैं ॥

४ नियमः ( पु ), व्रतम् ( न पु ), 'नियम या व्रत' के २ नाम हैं ॥

५ पुण्यकम् ( न ), 'उपवासादि ( सान्तपन, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्राजापत्य, चान्द्रायण आदि ) शास्त्र-विहित व्रत' का १ नाम है ॥

६ औपवस्तम् ( + औपवस्त्रम्, उपवस्तम् । न ), उपवासः ( + उपोषितम्, उपोषणम् । पु ), 'उपवास, उपास' के २ नाम हैं ॥

७ विवेकः ( पु ), पृथगात्मता ( भा० दी०, स्त्री ), 'प्रकृति और पुरुषके भेद-ज्ञान वा भावोंके पृथक् स्वरूप-ज्ञान' के २ नाम हैं ॥

८ ब्रह्मवर्चसम् ( न ), वृत्ताध्ययनार्धिः ( भा० दी०, स्त्री ) 'ब्रह्मवर्चस' अर्थात् 'सदाचार और वेदाभ्यासकी वृद्धि या सम्पत्ति' के २ नाम हैं ॥

९ ब्रह्माञ्जलिः ( पु ), 'वेदादि पढ़नेके पहले और अन्तमें

१. 'वावृत्परिपाटिरनुक्रमः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'औपवस्त्रम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. यथाऽऽह मनुः—'ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा ।

संहृत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः ॥ १ ॥

व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः ।

सन्ध्येन सन्ध्यः स्पष्टम्यो दक्षिणेन च दक्षिणः' ॥ २ ॥ इति मनुः २।७१-७२

—१ पाठे 'विप्रो ब्रह्मविन्द्वः ।

२ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं ३ कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३६ ॥

४ मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो ५ अनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।

२ संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

७ समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।

व्यस्त हाथसे (दहने हाथसे दहिना और बायें हाथसे बायाँ) गुरुके पैरको छूकर प्रमाण करने' का १ नाम है ॥

१ ब्रह्मविन्दुः ( पु ), 'वेदादि पढ़नेके समय मुखसे निकले हुए जल-कण ( थूकमिश्रित जल की छोटी २ बूँद )' का १ नाम है ॥

२ ब्रह्मासनम् ( न ) 'ध्यान और योगके आसन' का १ नाम है ॥

३ कल्पः, विधिः, क्रमः ( ३ पु ) 'शास्त्रोक्त विधि' के ३ नाम हैं ॥

४ मुख्यः ( पु ), 'शास्त्रोक्त प्रधान विधि' का १ नाम है ॥

५ अनुकल्पः ( पु ), 'शास्त्रोक्त गौण ( अप्रधान, अभाव पक्षीय ) विधि' का १ नाम है ॥

५ उपाकरणम् ( न ), 'संस्कारके साथ २ वेदको ग्रहण करने' का १ नाम है ॥

७ पादग्रहणम् , अभिवादनम् ( २ न ), 'अपने नामको कहते हुए प्रणाम करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'विप्रो ब्रह्मविन्द्वः' इति पाठान्तरम् ॥

२. यथा 'व्रीहिर्मियजेत' इति श्रुतौ व्रीहिश्रवणात् 'व्रीहिभिरेव यजेत नान्येन द्रव्येण' इति श्रुत्यर्थात् व्रीहिकरणमुपादानं प्रधानमतो व्रीहिर्मियोगकरणं मुख्यः कल्पः ॥

३. व्रीहिणाभावात् नित्यनैमित्तिकादिविधिष्वयो मा भूदित्यतो 'इति श्रुत्या नीवारेणापि यागो विधीयत इति नीवारकरणकमुपादानमप्रधानमतो नीवारेण यागकरणमनुकल्पः ॥

४. तदाह मनुः—

'अभिवादात्परं विप्रो ज्यायासमभिवादेयत् ।

असौ नामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत्' ॥ २ ॥ इति मनु २।१२२ ॥

१ भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

२ तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी ३ वाचंयमो मुनिः ।

४ तपःक्लेशसहो दान्तो ५ वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥

६ ऋषयः सत्यवचसः—

१ भिक्षुः, परिव्राट् ( = परिव्राज् । + परिव्राजकः ), कर्मन्दी ( = कर्मन्दिन् ), पाराशरी ( = पाराशरिन् ), मस्करी ( = मस्करिन् । ५ पु ), 'संन्यासी' के ५ नाम हैं ॥

२ तपस्वी ( = तपस्विन् ), तापसः, पारिकाङ्क्षी ( = पारिकाङ्क्षिन् । ३ पु ), 'तपस्वी' के ३ नाम हैं ॥

३ वाचंयमः, मुनिः ( २ पु ), 'मुनि' के २ नाम हैं । ( 'किसी किसी के मतसे ये २ नाम भी 'संन्यासी' के ही पर्याय हैं ) ॥

४ तपःक्लेशसहः ( भा० दी० ), दान्तः ( २ पु ), 'तपस्या के क्लेश-को सहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ वर्णी ( = वर्णिन् ), 'ब्रह्मचारी ( = ब्रह्मचारिन् ), 'ब्रह्मचारी' के २ नाम हैं ॥

६ ऋषिः, सत्यवचः ( = सत्यवचस् । २ पु ), 'ऋषि-सामान्य' के २ नाम हैं । ( श्रुतर्षि १, काण्डर्षि २, परमर्षि ३, महर्षि ४, राजर्षि ५, ब्रह्मर्षि ६ और देवर्षि ७; ये 'सात ऋषियोंके भेद' हैं ) ॥

‘आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च । श्रेयस्कामो न गृह्णीयाज्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः’ ॥१॥

इति वचनेन यद्यपि श्रेयस्कामुकस्यात्मनामग्रहणं निषिद्धन्तथापि जन्मदादशे दिने तत्पि-त्रादिकृतनाक्षत्रनामपरम् । विस्तरतस्तु वैयाकरणलघुमञ्जूषायां स्मृत्यन्तरे वा प्रपञ्चितमत्र विस्तरभयान्न किञ्चित्मिति तत् एवावधार्यम् ॥

१. तदुक्तम्—‘कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थास्तु सर्वदा ।

सर्वथा मैथुनस्यागः ब्रह्मचर्यं तदुच्यते’ ॥ १ ॥

एतत्कर्मसंग्रहो ‘ब्रह्मचारी’ भवति ।

२. ऋषयः सप्तविधाः । ते यथा—श्रुतर्षिः पवित्रकथादिश्रवणकर्ता १, काण्डर्षिः वेदानां प्रधानकाण्डस्योपदेष्टा २, परमर्षिः मुनिभेदप्रभृतयः ३, महर्षिः व्यासादयः ४, राजर्षिः विश्वामित्रादयः ५, ब्रह्मर्षिः बसिष्ठादयः ६, देवर्षिः नारदादयः ७ इति ॥



—१ 'स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ।

२ ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥

३ यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाख्यसौ ।

स्थाण्डिलश्चा ४ थ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥

५ पवित्रः प्रयतः पूतः ६ 'पाखण्डः सर्वलिङ्गिनः ।

१ स्नातकः, आप्लुतः, ( + आप्लवव्रती = आप्लवव्रतिन्, आप्लुतव्रती = आप्लुतव्रतिन् । पु), 'स्नातक' अर्थात् 'वेदव्रतको समाप्त होनेपर गुरुकी आज्ञासे समाप्ति-सूचक स्नान-विशेष ( समावर्तन ) किये हुए ब्रह्मचारी' के २ नाम हैं । ( 'स्नातक'के ३ भेद हैं—वेदको समाप्तकर और व्रतको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला विद्यास्नातक १, व्रतको समाप्तकर और वेदको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला व्रतस्नातक २, तथा वेद और विद्या दोनों को समाप्तकर समावर्तन संस्कारवाला विद्याव्रतस्नातक ३<sup>३</sup> ) ॥

२ निर्जितेन्द्रियग्रामः ( भा० दी० ), यती (= यतिन् ), यतिः ( ३ पु ), 'जितेन्द्रिय' के ३ नाम हैं ॥

३ स्थण्डिलशाखी ( = स्थण्डिलशायिन् ), स्थाण्डिलः ( २ पु ), 'स्थ-ण्डिल ( विना साफ सुथरा की हुई अकृत्रिम भूमि ) पर सोनेवाले व्रती' के २ नाम हैं ॥

४ विरजस्तमाः ( = विरजस्तमस् ), द्वयातिगाः ( २ पु ), 'सस्वगुणी' के २ नाम हैं ॥

५ पवित्रः, प्रयतः, पूतः ( ३ पु ), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

६ 'पाखण्डः ( + पाषण्डः ), सर्वलिङ्गी ( = सर्वलिङ्गिन् । २ पु ), 'पाखण्डी' अर्थात् 'दुष्ट शास्त्रमें स्थित बौद्ध आदि छपणक ( संन्यासी )' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्नातकस्त्वाप्लवव्रती' इति 'स्नातकस्त्वाप्लुतव्रती' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'पाषण्डः' इति पाठान्तरम् ॥

३. एतत्सर्वं याशवल्क्यस्मृतावाचाराध्याये ( १११० ) मिताक्षरायां सुस्पष्टम् ॥

४. तदुक्तम्—'पाळनाच्च त्रयीधर्मः पाशब्देन निगद्यते ।

तं खण्डयन्ति ते यस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ पालाशो दण्ड आषाढो वते २ रामभन्तु वैणवः ॥ ४५ ॥
- ३ अस्त्री कमण्डलुः कुण्डो ४ व्रतिनामासनं 'वृषी ।
- ५ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री ६ भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
- ७ स्वाध्यायः स्वाजपः—

१ आषाढः ( आषाढकः, आषाढः । पु ), 'ब्रह्मचर्यावस्थामे ब्राह्मणसे धारण किये हुए पल्लवके दण्ड' का १ नाम है ॥

२ रामः ( पु ), 'ब्रह्मचर्यावस्थामे धारण किये हुए बाँसके दण्ड' का १ नाम है ॥

३ कमण्डलुः ( पु न ), कुण्डो ( स्त्री ), 'कमण्डलु' के २ नाम हैं ॥

४ वृषी ( + वृसी । स्त्री ), 'ब्रह्मचारी आदि व्रतियोंके आसन' का १ नाम है ॥

५ अजिनम्, चर्म ( = चर्मन् । २ न ), कृत्तिः ( स्त्री ), 'मृगादिके चमड़े' के ३ नाम हैं ॥

६ भैक्षम् ( त्रि ), 'भिक्षामे मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ॥

७ स्वाध्यायः, जपः ( २ पु ), 'नियमसे वेदादिके अभ्यास करने' के २ नाम हैं । 'जप ३ प्रकारका होता है—वाचिक १, उपांशु २ और मानस ३ । इनको उत्तरोत्तर श्रेष्ठ<sup>३</sup> कहा गया है' ) ॥

१. 'वृसी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ब्राह्मणो वैश्वपालाशौ क्षत्रियो वटखादिरौ ।  
पैलवौदुम्बरो वैश्या दण्डानर्हन्ति धमेतः' ॥ १ ॥

इति मनुः २।४५॥

३. शरीतोक्ता जपभेदास्तेषां लक्षणानि चात्र प्रदर्शयन्ते—

.....त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य तत्त्वं निबोधत ॥

वाचिकश्चाप्युपांशुश्च मानसश्च त्रिधाऽकृतिः । त्रयाणामपि यद्गानां श्रेष्ठः स्यादुत्तरोत्तरः ॥  
वदुच्चनीचोच्चरितैः शब्दैः स्पष्टपदाक्षरैः । मन्त्रमुच्चारयेद्वाचा जपयज्ञस्तु वाचिकः ॥

१७ अ०

—१ सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ।

२ सर्वैरसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वयमर्षणम् ॥ ४७ ॥

३ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पशान्तयोः पृथक् ।

४ शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत् कर्म तथमः ॥ ४८ ॥

५ नियमस्तु स तत् कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ।

१ सुत्या ( स्त्री ), अभिषवः ( पु ), सवनम् ( न ), 'सोमलता ( यज्ञो-  
षधि ) का कूटने' के १ नाम हैं ॥

२ अयमर्षणम् ( त्रि ), 'सब पापोंको नाश करनेवाले जप' ( ऋचा  
आदि ) का १ नाम है ॥

३ दर्शः, पौर्णमासः ( २ पु ), 'अमावास्या और पूर्णिमाको होने-  
वाले यज्ञ' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

४ यमः ( पु ), 'जीवनभर शरीरसे करने योग्य संयम' का १ नाम  
है । ( 'अहिंसा १, सत्य २, अस्तेय ( किसीकी कोई वस्तु बिना दिये या पूछे  
न लेना ) ३, ब्रह्मचर्य ( 'आठ प्रकारके मैथुनका त्याग ) ४ और अपरिग्रह  
( हिंसादि अनेक दोषोंको देखकर दान नहीं लेना ५ ) ये पाँच यम' हैं' ) ॥

५ नियमः ( पु ), 'नियम' अर्थात् 'जो कार्य जीवन पर्यन्त नहीं हो सके  
किन्तु विशेष २ समयपर किया जाय उस कार्य' का १ नाम है । ( 'शौच अर्थात्

शनैश्चचारयेन्मन्त्रं किञ्चिदंष्ट्रौ प्रचालयेत् । किञ्चिच्छूययोग्यः स्यात्स उपांशुर्जपः स्मृतः ॥  
धिया पदाक्षरश्रेण्या अवर्णमपदाक्षरम् । शब्दार्थचिन्तनाभ्यां तु तदुक्तं मानसं स्मृतम् ॥  
इति शरीरस्मृतिः ४।४०-४४

१. अष्टाङ्गमैथुनलक्षणं यथा—

'स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं युष्ममापणम् ।

संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिवृत्तिरेव च ॥ १ ॥

एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः' । इति ॥

२. 'तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'तन्नाहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा' इति  
योग सू० २।१० ॥

१ 'क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु' ( २४ )

२ उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

३ प्राचीनावीतमन्यस्मिन् ४ निवीतं कण्ठलम्बितम् ।

मिट्टी जल आदिसे बाहरी और पञ्चगव्य-पान आदिसे भीतरी पवित्रता १, सन्तोष २, तप ( चान्द्रायण, वृक्ष, सान्त्वयन आदि व्रत ) ३, स्वाध्याय ( वेदादिका अध्ययन ) ४, ईश्वरप्रणिधान ( परमेश्वरकी पूजा आदि ) ५, 'ये पाँच नियम' हैं ) ॥

३ [ क्षौरम् , भद्राकरणम् , मुण्डनम् ( ३ न ), वपनम् ( त्रि ), 'मुण्डन कराने' के ४ नाम हैं ] ॥

२ उपवीतम् , ब्रह्मसूत्रम् ( भा० दी० । × यज्ञसूत्रम् २ न ) 'बायें कन्धेके ऊपरसे दाहिने तरफ नीचेकी ओर लटकते हुए जनेऊ' के २ नाम हैं । ( 'उपवीत जनेऊको धारण करनेवालेका २ उपवीती ( = उपवीतिन् पु ), यह १ नाम है' ) ॥

३ प्राचीनावीतम् ( न ), 'दाहिने कन्धेके ऊपरसे बायीं तरफ नीचेकी लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ( 'प्राचीनावीत जनेऊका धारण करनेवालेका प्राचीनावीती ( = प्राचीनावीतिन् पु ) यह १ नाम है' ) ॥

४ निवीतम् ( न ) 'मालाकी तरह गर्दनसे सीधे नीचे की ओर लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ( 'निवीत जनेऊको धारण करनेवालेका निवीती ( = निवीतिन् पु ) यह १ नाम है' ) ॥

१. तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा' इति यो० सू० २। ३२ ॥

२-३-४. उपवीति-प्राचीनावीति-निवीतिनां कृष्णमाह मनुस्तथा—

'उद्धृते दक्षिणे पाणानुपवीत्युच्यते द्विजः ।

सन्ध्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसजने' ॥ १ ॥ मनुः २। १६ ॥

छन्दोगपरिशिष्टे च—

'ब्रह्मसूत्रेऽत्र सन्ध्येऽस्ते स्थिते यज्ञोपवीतिता ।

प्राचीनावीतिताऽसन्ध्ये कठस्थे तु निवीतिता' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं २ स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥  
 ३ मध्यङ्गुष्ठाङ्गुल्योः 'पिङ्गं' ४ मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ।  
 ५ भ्याश्च ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥  
 ६ देवभूमीदिकं तद्वत् ७ कृच्छ्रं सान्त्तपनादिकम् ।  
 ८ संन्यासवत्यनशने पुमान् प्रायोऽप्यथ वीरहा ॥ ५० ॥  
 नष्टाग्निः—

१ दैवम् ( न ), 'दैवतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी अङ्गुलियोंके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ कायम् ( न ), 'कायतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी कनिष्ठा अङ्गुलीके नीचेवाले भाग' १ नाम है ॥

३ पिङ्गम् ( + पैङ्गम् , पैङ्गम् । न ), 'पितृतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठे और तर्जनी अङ्गुलीके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

४ ब्राह्मम् ( न ), 'ब्रह्मतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठेके मूलभाग' का १ नाम है ॥

५ ब्रह्मभूयम् , ब्रह्मवम् , ब्रह्मसायुज्यम् ( न ), 'मोक्ष' अर्थात् ब्रह्ममें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ॥

६ देवभूयम् ( न ) आग्नि ( देवत्वम् , देवसायुज्यम् ; २ न ), 'देवतामें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ।

७ कृच्छ्रम् ( न ) 'सान्त्तपन आदि ( चान्द्रायण, पराक और प्राजापत्य आदि ) व्रत' का १ नाम है ॥

८ प्रायः ( पु ), 'संन्यास-पूर्वक भोजनको छोड़ने' का १ नाम है ॥

९ वीरहा ( = वीरहन् । + विरहा=विरहन् ), नष्टाग्निः ( २ पु ), 'प्रमादसे जिस अग्निहोत्रीकी आग बुझ गयी हो उस अग्निहोत्री'के २ नाम हैं

१. 'पैङ्गम्' इति पाठान्तरम् ॥

२-३-४-५. ब्राह्म-काय-दैव-पिङ्ग-तीर्थानां लक्षणाभ्याम् मनुः । तथा हि—

'अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्म-तीर्थं प्रचक्षते ।

कायमङ्गुलिमुलेऽग्रे दैवं पिङ्गं तयोरधः' ॥ १ ॥ इति मनुः २।५९ ॥

६. भेदपुरःसरकृच्छ्रभेदास्तद्विशिष्य याज्ञवल्क्यस्मृतौ ( ३।३१५—३२५ ), मनुस्मृतौ २।१२१—२२५ ) च द्रष्टव्याः ।

—१ कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ।

२ वात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥

४ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिपरवकीर्णी अतवतः ।

६ सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥

अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।

७ परिवेत्ताऽनुतोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

१ कुहना ( छी ), 'दम्भसे ध्यान-मौनादि धारण करने, धनलाभ-से मिथ्या धर्माचरण करने' का १ नाम है ॥

२ 'वात्यः, संस्कारहीनः ( भा० दी० । २ पु ), 'यथोचित समयपर यज्ञोपवीत संस्कारसे हीन द्विजाति ( ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य )' के २ नाम हैं ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्यका गर्भाधानसे क्रमशः १६, २२ और २४ वर्षकी अवस्थातक यज्ञोपवीत नहीं होने पर उन्हें 'वात्य' कहते हैं ) ॥

३ अस्वाध्यायः ( भा० दी० ), निराकृतिः ( २ पु ), 'वेदको नहीं पढ़नेवाले' के २ नाम हैं । ( 'वात्यः, .....' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्योंका मत है ) ॥

४ धर्मध्वजी ( = धर्मध्वजिन् ), लिङ्गवृत्तिः ( २ पु ), 'भिक्षा आदि मिलनेके लिये जटा-भस्मादि धारणकर झूठा साधु बनने' के २ नाम हैं ॥

५ अवकीर्णी ( = अवकीर्णिन् ), अतवतः ( भा० दी० । २ पु ), 'नियम-से चलनेवाला ब्रह्मचर्यादि व्रत जिसका बोझ ही मैं भग्न हो गया हो उस ब्रह्मचारी आदि व्रती' के २ नाम हैं ॥

६ अभिनिर्मुक्तः, अभ्युदितः ( २ पु ), 'जिसके सोते रहनेपर सूर्योदय हो और जिसके सोते रहने पर सूर्यास्त हो उस'का क्रमशः १-१ नाम है ॥

७ परिवेत्ता ( = परिवेत्, पु ), 'बड़े भाईके अविवाहित ( बिना व्याह किये हुए ) रहनेपर विवाहित ( व्याह किये हुए ) छोटे भाई' का १ नाम है ॥

१. वात्यलक्षणमाह मनुस्तथा—

'आषोडशादब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ।

आर्द्धाविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ १ ॥

अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः ।

सावित्रीपतिता ब्राह्म्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥ २ ॥ इति मनुः २।३८—२९

- १ परिवृत्तिस्तु तज्ज्यायान् २ विवाहोपयमौ समौ ।  
 तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥  
 ३ व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।  
 ४ त्रिवर्गो धर्मकामार्थश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥  
 ६ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं ७ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ।  
 इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१ 'परिवृत्तिः ( पु ), 'जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ॥

विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः ( ५ पु ), पाणिपीडनम् ( + पाणिग्रहणम्, करपीडनम्, '.....' । न ) 'विवाह' के ६ नाम हैं ॥

३ व्यवायो, ग्राम्यधर्मः ( २ पु ), मैथुनम्, निधुवनम्, रतम् ( ३ न ), 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सम्भोग करने'के ५ नाम हैं ॥

४ त्रिवर्गः ( पु ), 'अर्थ, धर्म और काम के समुदाय' का १ नाम है ॥

५ चतुर्वर्गः ( पु ), 'अर्थ, धर्म और काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

६ चतुर्भद्रम् ( न ), 'सुखदुःख, अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

७ जन्याः ( पु ), 'समान अवस्थावाले वर ( दुग्धा ) के प्रेमी या वधूकी पालकी होनेवाले' का १ नाम है ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१. 'व्यवायो ग्राम्यधर्मश्च रतं निधुवनं च सा' इति केचित्पठन्ति' इति महेश्वरः ॥

२. परिवेत्तुपरिविस्त्योर्लक्षणं यथा—

येऽग्रजेष्वकलत्रेषु कुर्वन्ते दारसंग्रहम् । श्रेयास्ते परिवेत्तारः परिविस्त्यस्तु पूर्वजः ॥१॥ इति ॥

## ८. अथ क्षत्रियवर्गः ।

- १ मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
- २ राजा राट् पार्थिवश्चामभृषभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥
- ३ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्वाधीश्वरः ।
- ४ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपः—

## ८ अथ क्षत्रियवर्गः ।

१ मूर्द्धाभिषिक्तः ( + मूर्द्धावपिक्तः ), राजन्यः, 'बाहुजः, क्षत्रियः, विराट् ( = विराज् । ५ पु ), 'क्षत्रिय' के ५ नाम हैं ॥

२ राजा ( = राजन् ), राट् ( = राज् ), पार्थिवः चामभृत् ( + चामभृक् = चामभुज, महीभृक् = महीभुज, ..... ), नृपः, भूषः ( + महीपः, भूपतिः, भूपाळः, महीपतिः, महीपालः..... ), महीक्षित ( + अधिपः, नराधिपः, नरेशः..... । ७ पु ), 'राजा' के ७ नाम हैं ॥

३ अधीश्वरः ( = अप्रतिरथः । ५ पु ), 'सब तरफके राजाओंको वशमें करनेवाले राजा'का १ नाम है ॥

४ चक्रवर्ती ( = चक्रवर्तिन् ), सार्वभौमः ( २ पु ), चक्रवर्ती राजा' अर्थात् 'समुद्र-पर्यन्त पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले राजा' के २ नाम हैं । ( '१ भरत २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत्कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्धु, ७ अर ( ये तीनों जिन थे ), ८ कार्तवीर्य, ९ पद्म, १० हरिषेण, ११ जय और १२ ब्रह्मदत्त, ये बारह राजा भारतवर्षमें चक्रवर्ती हुए हैं, ये सब इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न थे' ) ॥

१. 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कुतः—' इति श्रुतेः ॥

२. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'चक्रवर्ती सार्वभौमस्ते तु द्वादश भारते ॥

आर्यभिर्भरतस्तत्र सगरस्तु सुमित्रभूः । मघवा वैजयिरथाश्वसेननृपनन्दनः ॥

सनत्कुमारोऽथ शान्तिः कुन्धुरो जिना अपि । सुभूमस्तु कार्तवीर्यः पद्मः पद्मोत्तरात्मजः ॥

हरिषेणो हरिस्तुतो जयो विजयनन्दनः । ब्रह्मसूनुर्ब्रह्मदत्तः सर्वपीक्ष्वाकुवंशजाः ॥

[ अभि० चिन्ता० १।३५५-३५८ ॥



—१ अन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

२ येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।

शास्ति यश्चाक्षया राज्ञः स सम्राडश्च राजकम् ॥ ३ ॥

४ राजन्यकं च नृपतिश्च त्रियाणां गणे क्रमात् ।

५ मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽभ्याये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

१ मण्डलेश्वरः ( पु ), 'मण्डल ( इसके 'बारह' प्रकृति अर्थात् भेद होते हैं ) या देशको शासन करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

१ सम्राट् ( = सम्राज्, पु ) भा० दी० मतसे 'जिसने राजसूय यज्ञ किया हो, मण्डल ( इसकी बारह प्रकृतियां होती हैं ) का स्वामी हो और सब राजाओंको जीतकर अपने वशमें कर लिया हो उस राजा' का और किसी २ के मतसे पूर्वोक्त १-१ गुणोंसे भी युक्त राजा' का १ नाम है ॥

३ राजकम् ( न ), 'राजसमूह' का १ नाम है ॥

४ राजन्यकम् ( न ), 'क्षत्रियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

५ मन्त्री ( = मन्त्रिन् ), धीसचिवः अमात्याः ( + सामवायिकः । ३ पु )

'मन्त्री' अर्थात् 'बुद्धिविषयक सहायता देनेवाले मन्त्री' के ३ नाम हैं ॥

६ कर्मसचिवः ( पु ) 'प्रत्येक काममें सहायता देनेवाले मन्त्री' का १ नाम है ॥

१. मण्डलस्य द्वादश प्रकृतयो भवन्ति । ता यथा—१ विजेत्रुमभ्युद्यतो विजिगीषुः  
२ सहज-कृत्रिम-स्वभूम्यनन्तरि विविधोऽरिः, ३ असंहतयोररिविजिगीष्वोर्निग्रहे समर्थो मध्यमः,  
४ अरिविजिगीषुमध्यमानामसंहतानां निग्रहे समर्थ उदासीनः, ५ विजिगीषुमित्रम्, ६ अरि-  
मित्रम्, ७ विजिगीषुमित्रमित्रम्, ८ अरिमित्रमित्रम्, ९ पार्ष्णिग्राहः, १० आक्रन्दः,  
११ पार्ष्णिग्राहासारः, १२ आक्रन्दासारश्चेति । सविस्तरमेतद्विवरणं वीरमित्रोदयस्य राज-  
नीतिप्रकाशे द्वादशराजमण्डलप्रकरणस्य ३२० तमे पृष्ठे द्रष्टव्यम् ॥

एत एव द्वादश राजमण्डलभेदाः क्षीरस्वामिभिरुक्तास्तथा हि—

'अरिमित्रमरेमित्रं मित्रमित्रमतः परम् ।

तथाऽरिमित्रमित्रञ्च विजिगीषोः पुरः स्मृताः ॥ १ ॥

पार्ष्णिग्राहस्तथाऽऽक्रन्द आसारश्च तयोः पृथक् ।

मध्यमोऽप्युदासीन इति द्वादश राजकम् ॥ २ ॥ इति ॥

१ महामात्राः प्रधानानि २ पुरोधास्तु पुरोहितः ।

३ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विपाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

१ महामात्रः ( पु ), प्रधानम् ( न । + पु ) 'प्रधान मन्त्री, राजाके खास सलाहकार' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'कर्मसचिवः' आदि ३ नाम 'काममें सहायता देनेवाले मन्त्रि' के ही हैं' ) ॥

२ पुरोधाः ( = पुरोधस् ), पुरोहितः ( + सौवस्तिकः । २ पु ) 'पुरोहित' के २ नाम हैं ॥

३ 'प्राड्विपाकः, अक्षदर्शकः ( + आक्षदर्शकः, अक्षपटलिकः । २ पु ), 'व्यवहार ( मुकदमे ) को देखनेवाले' अर्थात् 'न्यायाधीश' के २ नाम हैं । ( 'व्यवहारके 'प्रधान अट्टारह भेद होते हैं' )

१. नानामतेन प्राड्विपाकलक्षणाच्युन्ते—

'विवादानुगतं पृष्ठा पूर्ववाक्यं प्रयत्नतः ।

विचारयति येनासौ प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

कचित्—ससम्भ्यस्तत्प्रयत्नतः' इत्येवं द्वितीयः पादः ॥

अन्यच्च—'विवादे पृच्छति प्रदनं प्रतिप्रदनं तथैव च ।

नयपूर्वं प्राग्बदति प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ २ ॥ इति ॥

२. मनुरष्टादश व्यवहारानाह—

'तेशामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः ।

सम्भूय च समुत्थानं दत्तस्थानपकर्म च ॥ १ ॥

वेतनस्यैव चादानं संप्रिदश्च व्यतिक्रमः ।

कयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः ॥ २ ॥

सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके ।

स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहणमेव च ॥ ३ ॥

स्त्रीपुंभर्मो विभागश्च धूतमाह्वय एव च ।

पादान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविद्' ॥ ४ ॥

इति मनुः ८।४-७ ॥

'एषामेव प्रभेदोऽन्यः शतमष्टोत्तरं भवेत् ।

क्रियाभेदानुस्यूतां शतशाखं निगद्यते' ॥ १ ॥

इति नारदोक्त्याऽस्यानेकधा भेदास्ते इह विस्तरमयाग्नोच्यन्ते ॥

- १ 'प्रतीहारो द्वारपालद्वास्थद्वास्थितदर्शकाः ।  
 २ रक्षिर्वर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥  
 ४ स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे ५ गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।  
 ६ 'भौरिकः कनकाध्यक्षो ७ रूप्याध्यक्षस्तु नैषिकः ॥ ७ ॥  
 ८ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः ।  
 ९ सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥  
 १० 'शण्डो वर्षवरस्तुत्यौ—

१ प्रतीहारः ( + प्रतिहारः ), द्वारपालः, द्वास्थः ( + द्वाःस्थः ), द्वास्थितः ( + द्वाःस्थितः ), दर्शकः ( + द्वास्थितदर्शकः द्वास्थोपस्थितदर्शकः, दौवारिकः ५ पु ), 'द्वारपाल, ड्योढीदार' के ५ नाम हैं ॥

२ रक्षिर्वर्गः, अनीकस्थः ( २ पु ), 'राज आदिके अङ्गरक्षक' के २ नाम हैं ॥

३ अध्यक्षः, अधिकृतः ( २ पु ), 'अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

४ स्थायुकः ( पु ), 'एक ग्रामके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

५ गोपः ( पु ), 'बहुत ग्रामोंके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

६ भौरिकः ( + हैरिकः ) कनकाध्यक्षः ( २ पु ), 'सुवर्णके अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

७ रूप्याध्यक्षः नैषिकः ( २ पु ), 'टंकखाल' ( रुपया आदि सिक्का ढालनेके कारखाने ) के अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

८ अन्तर्वेशिकः ( + अन्तर्वेशिकः १ पु ), 'रनियालमें नियुक्त पुरुष' का १ नाम है ॥

९ सौविदल्ला, कञ्चुकी ( + कञ्चुकिन् ), स्थापत्याः, सौविदः ( ४ पु ), 'कञ्चुकी' अर्थात् 'राजाओंके पासमें या रनियालमें बाहरी रक्षाके लिये बैठकी पतली छड़ी लिये हुए आने-जानेवाले कुछ पुरुष' के ४ नाम हैं ॥

१० शण्डः ( + षण्डः ), 'वर्षवरः ( २ पु ), 'नपुंसक, जनखा' के २ नाम हैं ॥

१. प्रतिहारो द्वारपालो द्वास्थोपस्थितदर्शकः इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हैरिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. षण्डो इति पाठान्तरम् ॥

४. वर्षवरलक्षणं यथा—

## —१ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

२ विषयानन्तरो राजा शत्रुर्दमित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

४ उदासीनः परतरः ५ पाणिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

६ रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

द्विद्विषपक्षाहितामित्रद्वस्त्युशान्नवशत्रवः ।

अभिघातिपरारातिप्रत्यथिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

७ वयस्यः स्निग्धः सवया ८ अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

१ सेवकः, अर्थी ( = अर्थिन् ), अनुजीवी ( = अनुजीविन् । + अनुचरः ३ पु ), 'सेवक, नौकर' के ३ नाम हैं ॥

२ शत्रुः ( पु ), 'अपने देश ( राज्य ) के समीपवाले देशके राजा का १ नाम है ॥

३ मित्रम् ( न ), 'पूर्वोक्तसे भिन्न राजा' का १ नाम है ॥

४ उदासीनः ( पु ), 'उदासीन' अर्थात् 'पूर्वोक्त शत्रु और मित्रके लक्षणसे भिन्न राजा' का १ नाम है ॥

५ पाणिग्राहः ( पु ), 'राजाके युद्धादि-यात्रामें पीछेसे किलेपर चढ़ाई करनेवाले या योद्धाके पीछेसे रक्षा करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

६ रिपुः, वैरी ( = वैरिन् ), सपत्नः, अरिः, द्विषन् ( = द्विषत् ), द्वेषणः, दुर्हृदः, द्विद् ( = द्विप् ), विपक्षः, अहितः, अमित्रः, दस्त्युः, शान्नवः, शत्रुः, अभिघाती ( = अभिघातिन् । + अभिघातिः ), परः, अरानिः, प्रत्यर्थी ( = प्रत्यर्थिन् ), ( परिपन्थी ( = परिपन्थिन् । १९ पु ), 'वैरी' के १९ नाम हैं ॥

७ वयस्यः, स्निग्धः, सवयाः ( = सवयत् । ३ पु ), 'समान अवस्था-वाले मित्र' के ३ नाम हैं ॥

८ १ मित्रम् ( न ), २ सखा ( = सखि ), ३ सुहृत् ( = सुहृद् । + सा-सपदीनः । २ पु ), 'मित्र, दोस्त' के ३ नाम हैं ॥

'ये त्व रूपसत्त्वाः प्रथमाः ह्रीबाश्च स्त्रीस्वभाविनः ।

जात्या न दुष्टाः कार्येषु ते वै वर्षवराः स्मृताः' ॥ १ ॥ इति ॥

१-२-३. अत्यागसहनो बन्धुः सदैवानुगतः सुहृत् ।

एकक्रियं भवेन्मित्रं समप्राणः सखा स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ सख्यं सामपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥  
 २ यथार्हदर्णः 'प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।  
 चारश्च गूढपुरुषश्चाऽसप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥  
 ५ सांवत्सरं ज्यौतिषिको देवज्ञगणकावपि ।  
 स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥  
 ६ तान्त्रिकी ज्ञातासिद्धान्तः ७ सत्री गृहपतिः समौ ।  
 ८ लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥  
 ९ लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिखिबिभे स्त्रियौ ।

१ सख्यम्, सामपदीनम् ( + सौहृदम्, सौहार्दम्, सौहृदीयम्, आज-  
 र्यम्, मैत्री । २ न ), 'दास्ती, मित्रता' के २ नाम हैं ॥

२ अनुरोधः ( पु ), अनुवर्तनम् ( न ), 'अनुकूल रहने' के २ नाम हैं ॥

३ यथार्हदर्णः, प्रणिधिः, अपसर्पः ( + अवसर्पः ), चरः, स्पशः, चारः, गूढ-  
 पुरुषः ( ७ पु ), 'गुप्तचर, खौफिया' के ७ नाम हैं ॥

४ आसः, प्रत्ययितः ( २ लि ), 'विश्वासपात्र पुरुषादि' के २ नाम हैं ॥

५ सांवत्सरः, ज्यौतिषिकः ( + ज्योतिषिकः ), देवज्ञः, गणकः, मौहूर्तिकः,  
 मौहूर्तः, ज्ञानी ( = ज्ञानिन् ), कार्तान्तिकः ( ८ पु ), 'ज्यौतिषि' के ८ नाम हैं ॥

६ तान्त्रिकः, ज्ञातसिद्धान्तः ( २ पु ), 'सिद्धान्तको ठीक २ जानने-  
 वाले' के २ नाम हैं ॥

७ सत्री ( = सस्त्रिन् ), गृहपतिः ( २ पु ), 'अन्नादिको सर्वदा दान-  
 करनेवाले गृहस्थ' के २ नाम हैं ॥

८ लिपिकारः ( + लिपिकरः, लिबिकरः, लिपिङ्करः, लिबिङ्करः ), अक्षरचणः,  
 अक्षरचुञ्चुः, लेखकः, ( ४ पु ), 'लेखक, कातिब' के ४ नाम हैं ॥

९ लिपिः ( + लिपी ), लित्रिः ( स्त्री ), 'लिखे हुए अक्षर चित्रादि'  
 के २ नाम हैं । ( 'मह० के मतसे 'लिखितम्, अक्षरसंस्थानम् ( + लिखिता-  
 क्षरसंस्थानम्, अक्षरविन्यासः । २ न ), इन शब्दोंके भी पर्याय होने से ४  
 नाम उक्तार्थक हैं ) ॥

१. 'प्रणिधिरवसर्पश्चरः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लिपिकरः' इति 'लिपिङ्करः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'लिखिताक्षरसंस्थाने' इति पाठान्तरम् ॥

१ स्यात्संदेशहरो दूतो २ दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥

३ अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

४ 'स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥

राज्याङ्गानि प्रकृतयः ५ पौराणां श्रेणयोऽपि च ।

६ सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

षड्गुणाः—

१ संदेशहरः, दूतः ( २ पु ), 'दूत, संदेश पहुँचानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ दूत्यम् ( + दौत्यम् । न ), 'दूतके काम या भाव' का १ नाम है ॥

३ अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः ( ५ पु ), 'पथिक' राही, मुसाफिर' के ५ नाम हैं ॥

४ स्वामी (=स्वामिन्), अमात्यः, सुहृत् (=सुहृद्), कोशः ( + कोषः । ४ पु ), राष्ट्रम्, दुर्गम्, बलम् ( ३ न ), 'राजा, मन्त्री, मित्र, अजाना, राज्य, किला और सेना' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है, इन सातोंके 'राज्याङ्गम् ( न ), प्रकृतिः ( स्त्री )' ये २ नाम हैं अर्थात् राजा आदि, ...७१ 'राज्याङ्ग और प्रकृति' कहलाते हैं ॥

५ पौराणां श्रेणयः ( स्त्री ), अर्थात् 'नगरवासियोंको भी राज्याङ्ग और प्रकृति' कहते हैं; इस तरह 'राज्याङ्ग या प्रकृति' के ८ भेद हैं ॥

६ सन्धिः, विग्रहः, यानम्, आसनम्, द्वैधम् ( ३ न ), आश्रयः ( शेष ३ पु ), ये ६ 'नीति जाननेवालोंके गुण' हैं । ( 'प्रसङ्गवश इनके

१. अयमेव श्लोको हेमचन्द्राचार्यरचितेऽभिधानचिन्तामणौ ( ३।३७८ ) समुपलभ्यते ॥

२. राज्याङ्गस्य सप्ताङ्गत्वं कामन्दक उक्तम् । तथा हि—

'स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोषो बलं सुहृत् ।

परस्परपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'अमात्याणांश्च पौराण्यं सन्निः प्रकृतयः स्मृताः' । इति कात्यायन राजसूयब्राह्मण-मपि सिद्धयति ॥

४. षड्गुणा मनुना उक्तास्तथा हि—

'सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च ।

द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणाश्चिन्तयेत्सदा' ॥ १ ॥ इति मनुः, ७।१६०॥

‘लक्षण कहते हैं—सुवर्णादि, धन, हाथी, घोड़ा आदि देकर वैरीसे मेठ करनेको सन्धि १, शत्रुके राज्यादिको लूटने या अग्नि आदि लगाकर वैर या युद्ध करनेको विग्रह २, जीतनेकी इच्छासे चढ़ाई या युद्धयात्रा करनेको यान ३, अपने पक्षके दुर्बल होनेसे किला आदिको पुष्ट तथा सुरक्षितकर चुप-चाप बैठ जानेको आसन ४, बलवान्के साथ मित्रता और दुर्बलके साथ वर करनेको या आधी सेनाके साथ चढ़ाई करनेको द्वैध ५, तथा शत्रुने पीड़ित होकर अपनी रक्षाके लिये उदासीन या मध्यम रात्राके शरणमें जानेको आश्रय ६ कहते हैं; इनके भी अनेक भेद होते हैं’ ) ॥

१. एतेषां लक्षणानि वीरमित्रोदयरय राजनीतिप्रकाश उक्तानि । तथा हि—

‘पणवन्धः स्मृतः’ सन्धिरपकारस्तु विग्रहः ।

जिगीषोः शत्रुविषये यानं यात्राऽभिधीयते ॥ १ ॥

विग्रहेऽपि स्वके देशे स्थितिरासनमुच्यते ।

बलार्द्धेन प्रयाणं तु द्वैधीभावः स उच्यते ॥ २ ॥

उदासीने मध्यमे वा संश्रयात्संश्रयः स्मृतः’ ।

इति वीरमित्रोदयः पृ ३२४ ।

२. सन्ध्यादीनां भेदानाह मनुस्तथा हि—

‘सन्धि तु द्विविधं विद्याद्राजा विग्रहमेव च ।

उभे यानासने चैव द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ १ ॥

समानयानकर्मा च विपरीतस्तथैव च ।

तदास्वायतिसंयुक्तः सन्धिर्ज्ञेयो दिल्क्षणः ॥ २ ॥

स्वयंकृतश्च कार्यार्थमकाले काल एव वा ।

मित्रस्य चैवापकृते द्विविधो विग्रहः स्मृतः ॥ ३ ॥

एकाकिनश्चात्यधिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया ।

संहतस्य च मित्रेण द्विविधं यानमुच्यते ॥ ४ ॥

क्षीणस्य चैव क्रमज्ञो दैवात्पूर्वकृतेन वा ।

मित्रस्य चानुरोधेन द्विविधं स्मृतमासनम् ॥ ५ ॥

बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्यार्थसिद्धये ।

द्विविधं कीर्त्यते द्वैधं षाड्गुण्यगुणवेदिभिः ॥ ६ ॥

अर्थसम्पादनार्थं च पीड्यमानस्य शत्रुभिः ।

साधुषु व्यपदेशार्थं द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ ७ ॥

इति मनुः ७ १६२-१६८ ॥

विस्तरमिषाऽन्यत्रोक्ता एतेषां भेदोपभेदा नोच्यन्त इति तेऽन्यतो द्रष्टव्याः ॥

१—शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।

२ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

३ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कौषदण्डजम् ।

४ भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

१ शक्तिः ( छा ), 'शक्ति' अर्थात् 'सामर्थ्य' 'प्रभाव, उत्साह और मन्त्र ( गुप्त सलाह )' से होती है अर्थात् प्रभावज, उत्साहज और मन्त्रज' ये ३ शक्तियाँ हैं । ( 'कौष और दण्ड बल प्रभावज शक्ति १, विक्रम-बल उत्साहज शक्ति २, और सन्धि आदि षड्गुण तथा सामादि उपायका यथावत् प्रयोग मन्त्रज शक्ति ३, है' ) ॥

२ क्षयः ( पु ), स्थानम् ( न ), वृद्धिः ( छा ), क्रमशः कृषि आदि 'अष्टवर्ग'की कमी होनेको क्षय, सामान्य रहने ( कमी-बेसी नहीं होने ) को स्थान और बढ़नेको वृद्धि कहते हैं । ये ही तीनों ( क्षयः, स्थानम्, वृद्धिः ), नीति जाननेवालोंका त्रिवर्ग है; त्रिवर्गः ( पु ), है ॥

३ प्रभावजः, प्रतापः ( २ पु ), 'प्रताप' अर्थात् 'खजाने तथा शासनसे उत्पन्न तेज' के १ नाम हैं ॥

४ भेदः, दण्डः ( पु ), साम ( = सामन् ), दानम् ( २ न ), क्रमशः वैरीके मन्त्री आदिको गुप्तचर आदिके द्वारा फाँदकर अपने पक्षमें लाकर शत्रुको वशमें करनेको भेद १, अपराधियोंके शासन करनेको दण्ड २, माँटे वचन या अन्यान्य उपायोंसे क्रोध दूर करनेको साम ३ और किसी वस्तुके देनेको दान ४ कहते हैं । ये ही चारो ( भेदः, दण्डः, साम दानम् ), नीति जाननेवालों के उपाय हैं, उपायः ( पु ) है । ( '१ भेदके तीन, २ दण्डके दो चार,

१. अष्टवर्गो यथा—कृषिर्वणिक्पथो दुर्गः सेतुः कुञ्जरबन्धनम् ।

खन्याकरबलादानं शून्यानां च विवेचनम् ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—

'उपायाः साम दानं च भेदो दण्डस्तथैव च ॥ इति याज्ञ० स्मृ० १।३४६ ।

मनुं प्रति मत्स्येनोपायस्य सप्तविधत्वंमुक्तं तथा हि—

'साम भेदस्तथा दानं दण्डश्च मनुजैश्चर । उपेक्षा च तथा माया इन्द्रजालं च पार्थिव ॥ १ ॥

प्रयोगाः कथिताः सप्त तन्मे निगदतः शृणु' वीर० राज० प्रक० पृ० २८० ॥



१ साहसं तु दमो दण्डः २ साम शान्तत्वश्मथो समौ ।

भेदोपजापः उपधा

धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥

३ साम के चार और ४ क्षात्रके पाँच भेद होते हैं १ )

१ साहसम् ( न ) दण्डः, दमः ( २ पु ) 'दण्ड' के ३ नाम हैं ॥

२ साम ( = सामम् ), शान्तम् ( २ न ), 'साम शान्त करने' के २ नाम हैं ॥

३ भेदः, उपजापः ( २ पु ), 'भेद' के २ नाम हैं ॥

४ उपधा ( स्त्री ), 'मन्त्री आदिके धर्म, धन काम और भयादिको जाननेके लिये उनकी राजाद्वारा परीक्षा करने' का १ नाम है ॥

१. भेदविधा तथा हि—

स्नेह्रागापनयनं संदर्पोत्पादनं तथा ।

संतर्जनं च भेदोभेदस्तु त्रिविधो मतः ॥ १ ॥ इति ॥

नारदेन दण्डस्य द्वैविध्यं मनुना च चतुर्विधत्वमुक्तम् । तत् क्रमशः प्रदर्श्यते—

'शारीरश्चायं दण्डश्च दण्डश्च द्विविधो मतः ।

शारीरस्ताडनादिस्तु मरणान्तः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥

काकिन्यादिस्त्वर्थदण्डः सर्वस्वान्तस्तथैव च' । इति नारदोक्तम् ।

'वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्विदण्डं तदनन्तरम् ।

तृतीयं धनदण्डं तु वधदण्डमतः परम्' ॥ १ ॥ इति मनुः ८।१२९ ॥

अग्निपुराणे साम्बश्चतुर्विधत्वमुक्तं तथा हि—

'चतुर्विधं स्मृतं साम उपकारानुकीर्तनम् ।

मित्रः सम्बन्धकथनं मृदुपूर्वं च भाषणम् ॥ १ ॥

आयतेर्दर्शनं वाचा तत्रा (वा) इमिति चार्पणम् । इति ॥

दानस्य पञ्चविधमुक्तमग्निपुराणे, तथा हि—

'यः संप्राप्तवनोत्सर्गं उत्तमाधममध्यमः ।

प्रतिदानं तदा तस्य गृहीतस्यानुमोदनम् ॥ १ ॥

द्रव्यदानमपूर्वं च तथैवेष्टप्रवर्त्तनम् ।

देयं च प्रतिमोक्षश्च दानं पञ्चविधं स्मृतम्' ॥ २ ॥

एतेषामुपायानां प्रयोगकाणादिकं विविधसम्मतभेदप्रकाराश्चात्र ग्रन्थविस्तरमिया नोद्धि-  
क्षिताः । ते वीरमिश्रोदयस्य राजनीतिप्रकाशे पृ० २७८ तमे द्रष्टव्याः ॥

- १ पञ्च त्रिष्व २ षडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।
- ३ विविक्तविजनच्छन्ननिशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥  
रहश्चोपांशु चालिङ्गे ४ रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
- ५ 'समौ विश्रम्भविश्वासौ ६ भ्रेषो भ्रंशो वथोचितात् ॥ २३ ॥
- ७ अभ्रेषन्यायकत्वास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।
- ८ युक्तमौपायकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥  
न्याय्यं च त्रिषु पट् ९ संप्रधारणा तु सन्नर्थनम् ।
- १० अववावस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥  
शिष्टिश्चाज्ञा च—

१ यहाँसे ५ शब्द मिले हैं ॥

२ अपषडक्षीणः ( त्रि ), 'केवल दो आदिमियोंकी की हुई गुप्त सलाह' का १ नाम है ॥

३ विविक्तः, विजनः, छन्नः, निशलाकः ( ४ त्रि ), रहः ( = रहस् न ), रहः ( = रहः ), उपांशु ( २ अव्य० ), 'एकान्त' के ७ नाम हैं ॥

४ रहस्यम् ( त्रि ), 'रहस्य, छिपाने योग्य, सलाह आदि' का १ नाम है ॥

५ विश्रम्भः ( + विश्रम्भः ), विश्वासः ( २ पु ), 'विश्वास' के २ नाम हैं ॥

६ भ्रेषः ( पु ), 'अनुचित' का १ नाम है ॥

७ अभ्रेषः, न्यायः, कल्पः ( ३ पु ), देशरूपम्, समञ्जसम् ( २ न ), 'न्याय' के ५ नाम हैं ॥

८ युक्तम्, औपयिकम्, लभ्यम्, भजमानम्, अभिनीतम्, न्याय्यम् ( ६ त्रि ) 'न्याययुक्त कार्य या द्रव्यादि' के ६ नाम हैं ॥

९ संप्रधारणा ( स्त्री ), समर्थनम् ( न ), 'रक्षित और अनुचितका विचारकर निश्चय करने' के २ नाम हैं ॥

१० अववावः, निर्देशः, निर्देशः, ( ३ पु ), शासनम् ( न ), शिष्टिः, आज्ञा ( २ स्त्री ), 'आज्ञा, हुक्म' के ६ नाम हैं ॥

१. 'समौ विश्रम्भविश्वासौ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।

१ आगोऽपराधो मन्तुश्च ३ समे तूद्धानबन्धने ॥ २६ ॥

४ द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो ५ भागधेयः करो बलिः ।

६ घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री ७ प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

८ उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।

९ यौतकादि तु यदेयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

१० तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।

१ संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थितिः ( ४ स्त्री ), 'उचित मार्गपर रहने' के ४ नाम हैं ॥

२ आगः ( = आगस् न ), अपराधः, मन्तुः ( २ पु ), 'अपराध, कसूर' के ३ नाम हैं ॥

३ तूद्धानम्, बन्धनम् ( २ न ), 'बाँधने या कैद करने' के २ नाम हैं ॥

४ द्विपाद्यः ( पु ), 'द्विगुने दण्ड' का १ नाम है ॥

५ भागधेयः, करो, बलिः ( ३ पु ) 'कर मालगुजारी' के २ नाम हैं ॥

६ शुल्कः ( पु न ), 'घाट जङ्गल और नदी आदिकी आमदनीसे दिये जानेवाले राज-भाग ( देवम् )' का १ नाम है ॥

७ प्राभृतम्, प्रदेशनम् ( २ न ), 'मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

८ उपायनम्, उपग्राह्यम् ( २ न ), उपहारः ( पु ), उपदा ( स्त्री ), भा० दी० मतसे 'राजाको दिये जानेवाले भेंट, नजराना' के ४ नाम हैं । प्राभृतम्, ..... 'देवता, राजा, मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले भेंट' के ६ नाम हैं ॥

९ यौतकम् ( + यौतकम् । न ), सुदायः ( पु ) हरणम् ( न ), 'यज्ञोपवीत आदिमें दी हुई भिक्षा या दामाश्को दिये जानेवाले दक्षेज' के ३ नाम हैं ॥

१० तत्कालः ( पु ), तदात्वं ( न ), 'वर्तमान काल, वातते हुए समय' के २ नाम हैं ॥

११ आयतिः ( स्त्री ), 'आनेवाले समय, भविष्यत्काल' का १ नाम है ॥

१. 'यौतकादि' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सांघटिकं फलं सद्य २ उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥
  - ३ अदृष्टं वह्नितोयादि ४ दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
  - ५ महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
  - ६ प्रक्रिया त्वधिकारः स्या ७ चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
  - ८ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं ९ सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
- हैमं १० छत्रं त्वातपत्रं—

१ सांघटिकम् ( न ), 'व्यापार आदिके बाद शीघ्र मिलनेवाले फल' का १ नाम है ॥

२ उदर्कः ( पु ), 'भविष्यमें होनेवाले फल' का १ नाम है ॥

३ अदृष्टम् ( न ), 'आगसे जलने, पानीसे बह जाने आदि' ( आदि पदसे 'व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, बहुत वर्षा, सूखा, मृग, मूषक' का संग्रह है ) के भय' का १ नाम है ॥

४ दृष्टम् ( न ), 'अपने राज्यमें चोर, जङ्गल आदिका भय तथा दूसरे राज्यसे दाह और चढ़ाई आदिके भय' का १ नाम है ।

५ अहिभयम् ( न ), 'अपने पक्ष ( मन्त्री आदि ) से होनेवाले राजा आदिके भय' का १ नाम है । ( 'पक्ष ७ भेद है' ) ॥

६ प्रक्रिया ( स्त्री ), अधिकारः ( पु ), 'व्यवस्थाको ठीक करने' के १ नाम हैं ॥

७ चामरम् ( + चमरम् ; चमरः पु, चापरा स्त्री ), प्रकीर्णकम् ( २ न ), 'चौवर' के २ नाम हैं ॥

८ नृपासनम्, भद्रासनम् ( २ न ), 'मणि आदिके बने हुए राजाके आसन' के २ नाम हैं ॥

९ सिंहासनम् ( न ), 'सुवर्णके बने हुए राजाके सिंहासन' का १ नाम है ॥

१० छत्रम्, भातपत्रम् ( २ न ), 'छाता' के २ नाम हैं ॥

१. पक्षः सप्तधा, तथा हि—

'निजोऽय मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्यसमुद्भवश्च ।

मृश्या गृहीतो विविधोपचारैः पञ्चं बुधाः सप्तविधं वदन्ति' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ राजस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

२ भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो ३ भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

४ निवेशः शिविरं घण्टे ५ सज्जनं तूपरक्षणम् ।

६ हस्त्यश्वरथपादात् सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ३३ ॥

७ दन्ती दन्तावली हस्ती द्विरदोऽनेकपः द्विपः ।

मत्तङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारुणः करी ॥ ३४ ॥

इभः स्तम्बेरमः पद्मी ८ यूथनाथस्तु यूथपः ।

१ नृपलक्ष्म (= नृपलक्ष्मन्, न ), 'राजाके छाते' का १ नाम है ॥

२ भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः ( २ पु ), 'मङ्गलके लिये जलसे भरे हुए घड़े' के २ नाम हैं ॥

३ भृङ्गार ( पु ), कनकालुका ( स्त्री ), 'भारी, हथहर ( स्वर्णके पात्र-विशेष ), के २ नाम हैं ॥

४ निवेशः ( पु ), शिविरम् ( = शिविरम् । न ), 'सेनाके ठहरनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

५ सज्जनम्, उपरक्षणम् ( २ न ), 'सेनाकी रक्षाके वास्ते नियम किये हुए पहरे' के २ नाम हैं ॥

६ सेनाङ्गम् ( न ), 'हाथी, रथ, घोड़ा और पैदल ये ४ सेनाके' अङ्ग' हैं । ( 'नाव, जहाज आदिका रथमें, किरात, मज्जाह आदिका पैदलमें और बैसा आदिका हाथी में अन्तर्भाव होनेसे उनका पृथक् ग्रहण नहीं किया गया है' )

७ दन्ती ( = दन्तिन् ), दन्तावली, हस्ती ( = हस्तिन् ), द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मत्तङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरः, वारुणः, करी ( = करिन् ), इभः, स्तम्बेरमः, पद्मी ( = पद्मिन् । + सामञ्जः, सिन्धुरः, कुम्भी = कुम्भिन् । १५ पु ), 'हाथी' के १५ नाम हैं । ( 'यहांमें श्लो० ४३ तक गजप्रकरण है' ) ॥

८ यूथनाथः, यूथपः ( २ पु ), 'झुण्डके स्वाभी' के २ नाम हैं ॥

१. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'गजो वाजो रथः पत्तिः सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम्' ॥

इति अभि० चिन्ता० ३।४१५ ॥

- १ मदोत्कटो मदकलः २ कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥  
 ३ प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः ४ समाबुद्धान्तनिर्मदौ ।  
 ५ ‘राजवाह्यस्वौपवाह्यः ६ सन्नाह्यः समरोचितः’ (२५)  
 ७ हास्तिकं गजता वृन्दे ८ करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥  
 ९ गण्डः कटो १० मदो दानं ११ वमथुः करशीकरः ।  
 ११ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः—

१ मदोत्कटः, मदकलः ( २ पु ), ‘मतवाले हाथी’ के २ नाम हैं ॥

२ कलभः ( + करभः ), करिशावकः ( पु ), ‘तीस वर्षसे कम उम्रवाले हाथीके बच्चे’ के २ नाम हैं ॥

३ प्रभिन्नः, गर्जितः, मत्तः ( ३ पु ), ‘जिसका मद गिर रहा हो उस हाथी’ के ३ नाम हैं ॥

४ उद्धान्तः, निर्मदः ( २ पु ), ‘जिसका मद गिरकर समाप्त हो गया हो उस हाथी’ के २ नाम हैं ॥

५ [ राजवाह्यः, औपवाह्यः ( + उपवाह्यः । २ पु ), ‘राजाके चढ़ने योग्य हाथी’ के २ नाम हैं ] ॥

६ [ सन्नाह्यः, समरोचितः ( २ पु ), ‘लड़ाईके योग्य हाथी’ के २ नाम हैं ] ॥

७ हास्तिकम् ( न ), गजता ( स्त्री ), ‘हाथियोंके झुण्ड’ के २ नाम हैं ॥

करिणी, धेनुका, वशा ( ३ स्त्री ), ‘हथिनी’ के ३ नाम हैं ॥

९ गण्डः ( भा० दी० ), कटः ( २ पु ), ‘हाथीके गाल’ के २ नाम हैं ॥  
 ( ‘उपलक्षण होनेसे प्राणिमात्रके गालके भी ये दो नाम हैं’ ) ॥

१० मदः ( पु ), दानम् ( न ), ‘हाथीके मद’ के २ नाम हैं ॥

११ वमथुः, करशीकरः ( २ पु ), ‘हाथीके सूँडसे निकले हुए पानीके छींटे’ के २ नाम हैं ॥

१२ कुम्भः ( पु ), ‘हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डों’ का १ नाम है ॥

१. नयं क्षेपकांशः क्षीरस्वामिव्याख्याने दृश्यते ॥

—१ तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

२ अवग्रहो ललाटे' स्याद्विषिका त्वक्षिकूटकम् ।

४ अपाङ्गदेशो निर्याणं ५ कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥

६ अधः कुम्भस्य चाहित्थं ७ प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।

८ आसनं स्कन्धदेशः स्यात् ९ पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

१ 'विदुः ( पु ), 'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांसपिण्डोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ अवग्रहः ( + अवग्रहः । पु ), 'हाथीके ललाट' का १ नाम है ॥

३ ईषिका ( + ईषीका, इषिका, इषीका । स्त्री ), अक्षिकूटकम् ( न ) 'हाथीकी आँखके गोलाकार भाग' के २ नाम हैं ॥

४ निर्याणम् ( न ), 'हाथीकी आँखके किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

५ चूलिका ( स्त्री ), 'हाथीकी कनपट्टी' ( कानकी जड़वाले भाग ) का १ नाम है ॥

६ चाहित्थम् ( न ), 'हाथीके शिरके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्ड-के नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ प्रतिमानम् ( न ), हाथीके दोनों दाँतोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

८ आसनम् ( न ), 'हाथीका कन्धा' अर्थात् 'हाथीवानके बैठनेकी जगह' का १ नाम है ॥

९ पद्मकम् , बिन्दुजालकम् ( भा० दी० । + बिन्दुजालकम् । २ न ), 'हाथियोंके मुखमें कमलाकारछोटे २ लाल चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्याद्विषीकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. यदाह पालकाप्यः—

‘तत्र रक्षाविताने द्वे विदू द्वौ अवगणे गतौ ।

प्राक्च पश्चाच्च तिर्यक्च षड्भेदात्कुक्षवारणा’ ॥ १ ॥

‘तत्रारक्षाविताने’ इत्येवं पाठभेदः अमि० चिन्ता० ( ४।२९२ ) व्याख्यानं समुपलभ्यते ॥

- १ पक्षभागः पार्श्वभागो २ दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।  
 ३ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे कमात् ॥ ४० ॥  
 ४ 'तोत्रं वेणुक ५ मालानं बन्धस्तम्भे ६ ऽथ शृङ्खले ।  
 अन्दुको निगडोऽस्त्री स्याद्वकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥  
 ८ दृष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात् ९ कल्पना सज्जना समे ।  
 १२ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

१ पक्षभागः, पार्श्वभागः ( भा० दी० । २ पु ), 'हाथीके पार्श्वभाग' ( बगल ) के २ नाम हैं ॥

२ दन्तभागः ( पु ), 'हाथीके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ गात्रम् , अवरम् , ( + अवरम् , अपरम् । २ न ), 'हाथीके आगेवाले जङ्घा आदि पूर्वार्द्ध शरीर और पीछेवाले जङ्घा आदि परार्द्ध शरीर' के १—१ नाम हैं ॥

४ तोत्रम् , वेणुकम् ( + वेणुकम् । २ न ), 'हाथीको मारनेवाले डण्डे या चाबुक आदि' के २ नाम हैं ॥

५ मालानम् ( न ), 'हाथीको बाँधनेवाले खूँटे' का १ नाम है ॥

६ शृङ्खलम् ( त्रि<sup>२</sup> ), अन्दुकः ( + अन्दूः स्त्री । पु ), निगडः ( पु न ), 'हाथीकी बेड़ी' ( बाँधनेवाली सिकड़ी ) के ३ नाम हैं ॥

७ अङ्कुशः ( पु न ), सृणिः ( + शृणिः । स्त्री ), 'अङ्कुश' के २ नाम हैं ॥

८ दृष्या ( + चूष्या, चूषा सुकु० ), कक्ष्या, वरत्रा ( ३ स्त्री ), 'हाथीके कसनेवाले रस्से' के ३ नाम हैं ॥

९ कल्पना, सज्जना ( स्त्री ), 'गेरु आदिसे हाथीकी सजावट करने' के २ नाम हैं ॥

१० प्रवेणी ( + प्रवेणः । स्त्री ), आस्तरणम् ( न ), वर्णः, परिस्तोमः ( + वर्णपरिस्तोमः । २ पु ), कुथः ( पु स्त्री ), 'हाथीके झूले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खला' इति पाठान्तरम् ॥

२. तथा च मेदिनी—'शृङ्खला पुंरकटीवक्रबन्धे च निगडे त्रिषु' इति मे० पृ० १६८ ॥



- १ वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं २ वारी तु गजबन्धनी ।  
 ३ घोटके 'वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥  
 वाजिवाहार्चगन्धर्वहयसैन्धवसत्तयः ।  
 ४ आजानेयाः कुलीनाः स्युः ५ विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥  
 ६ 'वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।  
 ७ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो ८ जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

१ वीतम् ( न ) 'लङनेमें असमर्थ हाथी-घोड़े' का १ नाम है ॥

२ वारी, गजबन्धनी ( भा० दी० । २ स्त्री ), 'हाथीखाना' अर्थात् 'हाथी बाँधनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

३ घोटकः ( + घोटः ), वीतिः ( + पीतिः ), तुरगः, तुरङ्गः, अश्वः, तुरङ्गमः, वाजी ( = वाजिन् ), वाह, अर्वा ( = अर्धन् ), गन्धर्वः, हयः, सैन्धवः, सत्तिः ( १३ पु ), 'घोड़े' के १३ नाम हैं । ( 'यहाँसे श्लो० ५० तक 'अश्वप्रकरण' है' ) ॥

४ 'आजानेयः ( पु ), 'अच्छे घोड़े' का १ नाम है ॥

५ विनीतः, साधुवाही ( + साधुवाहिन् भा० दी० । २ पु ); 'अच्छी २ चालसे शिक्षित घोड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वनायुजः ( + वानायुजः ), पारसीकः, काम्बोजः, बाह्लिकः ( + बाह्लिकः, बाह्लोकः, बाह्लोकः । ४ पु ) 'वनायु, पारस, काम्बोज और बाह्लिक देशोंमें पैदा होनेवाले घोड़े' के क्रमशः १-१ नाम हैं । ( किसी-किसी के मतसे प्रथम दो नाम 'पारसी घोड़े' के और अन्तवाले दो नाम उक्तार्थक हैं ) ॥

७ ययुः, अश्वमेधीयः ( भा० दी० । २ पु ), 'अश्वमेध यज्ञमें छोड़े जानेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

८ जवनः ( + प्रजवी = प्रजविन् ), जवाधिकः ( भा० दी० । २ पु ), 'बहुत तेज चलनेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

१. पीतितुरग—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'वानायुजः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अश्वशास्त्रे आजानेयकक्षणमुक्तन्तथा हि—

'शक्तिमिभिन्नहयाः स्वकन्तश्च पदे-पदे ।

आजानन्ति यतः संभामाजानेयास्ततः स्मृताः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ पृष्ठयः स्थौरी २ सितः कर्को ३ रथ्यो वोढा रथस्य यः ।  
 ४ बालः किशोरो ५ वाङ्मथा वडवा ६ वाडवं गणे ॥ ४६ ॥  
 ७ त्रिप्लाश्वीनं यदश्वेन दिननैकेन गम्यते ।  
 ८ कश्यं तु मध्यमश्वानां ९ हेषा हेषा च निस्वनः ॥ ४७ ॥  
 १० निगालस्तु गलोद्देशो ११ वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।  
 १२ आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वलितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

१ पृष्ठयः, स्थौरी (= स्थौरिन् । २ पु ), 'अन्न आदि जिसपर लादा जाय उस घोड़े' के २ नाम हैं ॥

२ कर्कः ( पु ), 'सफेद घोड़े' का १ नाम है ॥

२ रथ्यः ( पु ), 'रथमें चलनेवाले घोड़े' का १ नाम है ॥

४ किशोरः ( पु ), 'बछेड़ा' अर्थात् 'बच्चे घोड़े' का १ नाम है । ( 'उप-लक्षणतया 'किशोर' शब्द मनुष्यादिके बालकका भी वाचक है' ) ॥

५ वामी, अश्वा, वडवा ( ३ स्त्री ), 'घोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

६ वाडवम् ( न ), 'घोड़ियोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ आश्वीनम् ( त्र ), 'एक दिनमें घोड़ेसे चलने योग्य रास्ता या देशादि' का १ नाम है ॥

८ कश्यम् ( न ), 'घोड़ेके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

९ हेषा, हेषा ( २ स्त्री ), 'दिनदिनाहट, घोड़ेकी बोली' के २ नाम हैं ॥

१० 'निगालः, गलोद्देशः ( भा० दी० । २ पु ), 'घोड़ेकी गर्दनके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

११ अश्वीयम् ( + आश्वीयम् ), आश्वम् ( २ न ), 'घोड़ोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ आस्कन्दितम् ( + उत्तेरितम्, उपकण्ठम् ), धौरितकम् ( + धौरित-कम्, धोरितम्, धौर्यम्, धारणम् ), रेचितम् ( + उत्तेजितम् ) वलितम्,

१. 'धोरितकं' इति पाठान्तरम् ॥

२. अश्वशास्त्रे निगाललक्षणमुक्तं यथा—

घण्टाबन्धसमीपस्थो निगालः कथ्यते बुधैः इति ॥

- गतयोऽमः पञ्च धारा १ घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।  
 २ कविका तु खलीनोऽस्त्री ३ शफं कलीवे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥  
 ४ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले ५ वालहस्तश्च वालधिः ।  
 ६ त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

प्लुतम् ( ५ न ), घोड़ोंके सरपट दौड़ने, दुलकी चलने, पोइया चलने, उछाल मारकर चलने और चौकड़ी मारकर चलने का क्रमशः १-१ नाम है । 'धारा' ( स्त्री ) 'घोड़ोंके पूर्वोक्त पांच 'चालों' का १ नाम है ॥

१ घोणा ( स्त्री ), प्रोथम् ( पु न ), भा० दी० मतसे 'घोड़ेके चक्कर लगाने' के २ नाम हैं और महे० मतसे 'घोड़ेकी नाक' का 'प्रोथम्' यह १ नाम है ॥

२ कविका ( + कवी, कवियम् न । स्त्री ), खलीनः ( पु न ), 'घोड़ेकी लगाम' के २ नाम हैं ॥

३ शफम् ( न ), खुरः ( + छुरः । पु ), 'घोड़ेकी सूम' ( खुर ) के २ नाम हैं ॥

४ पुच्छः ( पु न ), लूमम्, लाङ्गूलम् ( + लाङ्गुलम् । २ न ), 'घोड़ेकी डुम ( पूछ )' के ३ नाम हैं ॥

५ वालहस्तः, वालधिः ( २ पु ), 'घोड़ेकी पूंछके वालवाले अगले भाग' के २ नाम हैं ॥ ( यद्यपि 'शफ आदि शब्द अश्वप्रकरणमें कथित है, तथापि इन ( शफम्, ..... वालधिः ) शब्दों का प्रयोग गौ आदि पशुओंके भी खुर आदि अर्थत्रयमें होता है ) ॥

६ उपावृत्तः, लुठितः ( २ त्रि ), 'थकावट दूर करनेके लिए जमीनपर लोटे हुए घोड़े' के २ नाम हैं ॥

१. अत्र क्षी० स्वा० 'क्रमस्त्वन्यथा । यथाहुः—

धोरितं वलितं धारा प्लुतमुत्तेजितं क्रमात् । उत्तेरितं चेति षष्ठं शिक्षयेत्तुरगं गतम् ॥ १ ॥  
 धोरितं गतिमात्रे यद्योजितं वलितं पुरः । अग्रकायसमुल्लासात्कुञ्चितास्यं नतत्रिकम् ॥ २ ॥  
 पूर्वापरोजनमतः क्रमादारोपणं प्लुतम् । उत्तेजितं मध्यवेगं योजनं श्लथवल्गया ॥ ३ ॥  
 उत्तेरितेति वेगान्धो न शृणोति न पश्यति' इति ॥

इत्याह 'हेमचन्द्राचार्यैरप्यन्यथैव क्रमो लिखितः' सोऽभिधानचिन्तामणौ ( ४।३११-३१५ ) द्रष्टव्यः ॥

'शिशुपालवध'स्य व्याख्यायां 'सर्वङ्गषा' यां मल्लिनाथेन—'अश्वशास्त्रे तु संज्ञान्तरेणोक्ताः—'गतिः पुला चतुष्का च तद्वन्मध्वजवा परा । पूर्णवेगा तथा चान्या पञ्च धाराः प्रकीर्तिताः' एकेका त्रिविधा धारा इयशिक्षाविधौ मता । लघ्वी मध्या तथा दीर्घा ज्ञात्वेता योजयेत् क्रमात्' इति । 'अव्याकुलं'—( ५।६० ) श्लोकस्य व्याख्यानेऽश्वगतीनां भिन्नानि नामानि ।

- १ याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
- २ असौ 'पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
- ३ कर्णिरथः प्रचवर्णं दयनं च समं त्रयम् ।
- ४ क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद् ५ गन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥
- ६ शिबिका याप्ययानं स्याद् ७ दोला प्रेङ्गादिका स्त्रियाम् ।
- ८ उभौ तु द्वैपवंयाघ्नौ द्वीपिचर्मवृते रथे ॥ ५३ ॥
- ९ पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
- १० रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

१ शताङ्गः, स्यन्दनः, रथः ( ३ पु ), 'लड़ाईके रथ' के ३ नाम हैं ।  
( 'यहांसे आगे श्लोक ६१ तक 'रथ-प्रकरण' है' ) ॥

२ पुष्परथः ( + पुष्परथः । ), 'यात्रा, उत्सव आदि में चढ़नेके लिये बनाये हुए रथ' का १ नाम है ॥

३ कर्णिरथः ( पु ), प्रचवर्णम्, दयनम् ( + हयनम् । २ न ), 'स्त्रियोंके चढ़नेके लिये पर्दा आदिसे आड़ किये हुए रथ' के ३ नाम हैं ॥

४ अनः ( = अनस्, न ), शकटः ( पु न ), 'गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

५ गन्त्री ( स्त्री ), कम्बलिवाहकम् ( भा० दी० । + गन्त्रीकम्, बलिवाहकम् । न ), 'छोटी गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

६ शिबिका ( + शीबिका । स्त्री ), याप्ययानम् ( न ), 'पालकी' के २ नाम हैं ॥

७ दोला ( + दोली ), प्रेङ्गा, आदि ( 'शयनरुट्वा, ..... । २ स्त्री ), 'झूला, हिंडोला' के २ नाम हैं ॥

८ द्वैपः, वैयाघ्रः ( २ त्रि ), 'बाघके चमड़ेसे मढ़े हुए रथ' के २ नाम हैं ॥

९ पाण्डुकम्बली ( + पाण्डुकम्बलिन्, त्रि ), 'पाण्डु ( धूसर ) कम्बल-से मढ़े या ढके हुए रथ' का १ नाम है ॥

१० काम्बलः, वास्त्रः ( २ त्रि ), आदि 'कम्बल और कपड़े आदिसे ढके हुए रथ' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

१. 'पुष्परथश्चक्रयानं' इति पाठान्तरम् ॥

- १ त्रिषु द्वेपादयो २ रथ्या रथकट्या रथवज्रे ।  
 ३ धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं ४ स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥  
 ५ चक्रं रथाङ्गं ६ तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।  
 ७ पिण्डका नाभि ८ रक्षाग्रकीलके तु द्वयारणिः ॥ ५६ ॥  
 ९ रथगुप्तिर्वरुणो ना १० कूबरस्तु युगन्धरः ।  
 ११ अनुकर्षो दार्दधस्थं—

१ 'द्विप' ( २।८।५३ ) आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

२ रथ्या, रथकट्या ( २ स्त्री ), रथवज्रम् ( भा० दो०, पु न ), 'रथोंके समूह' के ३ नाम हैं ॥

३ धूः ( = धुर, स्त्री ), यानमुखम् ( न ), 'रथके धूरा' के २ नाम हैं ॥

४ रथाङ्गम् ( न ), अपस्करः ( पु ), 'रथके 'अवयव' के २ नाम हैं ॥

५ चक्रम्, रथाङ्गम्, ( २ न ), 'रथ, गाड़ी आदिके पहिये' के २ नाम हैं ॥

६ नेमिः ( + नेमी । स्त्री ), प्रधिः ( पु ), 'हाल, रथके पहियेके ऊपर चाले परिधि' के २ नाम हैं ॥

७ पिण्डका ( + पिण्डी ), नाभिः ( + नाभी । २ स्त्री ), 'पहियेके बीचवाले भाग ( जिसमें चारों तरफ से काठ जुड़े रहते हैं )' के २ नाम हैं ॥

८ अणिः ( पु स्त्री ), 'धूरामें लगानेवाली किल्ली' का १ नाम है ॥

९ रथगुप्तिः ( स्त्री ), वरुणः ( पु ), 'लड़ाईमें शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये रथमें लगाये हुए लोहा आदिक पदों' के २ नाम हैं ॥

१० कूबरः, युगन्धरः ( २ पु ), 'जुआ, फड़, रथमें घोड़ा आदि जोते जानेवाले काष्ठ या जुपके काठको बांधे जानेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

११ अनुकर्षः ( + अनुकर्षा = अनुकर्षन् । पु ), 'रथके नीचेवाले काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

२. इयं महेश्वरोक्तिमुकुरानुरोधेन । सामान्येन रथाङ्गस्वाक्षयुगचक्रादिकमपस्करः, इति । अग्रे रथाङ्गत्वेन गतार्थस्यापि 'चक्रम्' इति विशेषतो नामान्तरप्रतिपादनाय 'तस्यान्ते नेमिः' इत्युक्तये च रथाङ्गस्यानुवादः' इति चोक्तवान् । मानुजिदीक्षितस्तु 'रथारम्भकं चक्रादन्यत्' इति क्षीरस्वामिग्रन्थानुरोधात् 'चक्रमिन्नस्य रथारम्भकवक्रस्य' इमे द्वे नामनो'त्युक्तवान् ॥

—१ प्रासङ्गो ना 'युगाद्युगः ॥ ५७ ॥

२ सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्मं पत्रं च धोरणम् ।

३ परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

४ आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

५ नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥

सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।

६ रथिनः स्यन्दनारोहा—

१ प्रासङ्गः ( प्रसङ्गयः पु ), महे० मतसे 'रथ आदिके जुआठ, फड़' का और भा० दी० मतसे 'नये बछवाको पहले पहल शिक्षा देनेके लिये उसके कन्धेपर रखे जानेवाले काष्ठ' का १ नाम है ॥

२ वाहनम् , यानम् , युग्मम् , पत्रम् , धोरणम् ( ५ न ) 'वाहनमात्र' अर्थात् 'हाथी, घोड़ा, इत्यादि ( श्लो० ३३ ) से लेकर देला ( श्लो ५३ ) तक सब' के ५ नाम हैं ॥

३ वैनीतकम् ( + प्राबन्धिकम् । न पु ), 'परम्परावाली सवारी, कहर आदिके द्वारा भारी २ से ढोई जानेवाली पालकी, डोली आदि' का १ नाम है ॥

४ आधोरणः, हस्तिपकः, हस्त्यारोहः, निषादी ( = निषादिन् । ४ पु ) 'हाथीवान' के ४ नाम हैं । ('किसी २ के मत से २-२ शब्द एकार्थक हैं') ॥

५ नियन्ता ( = नियन्तृ ), प्राजिता ( प्राजितृ ), यन्ता ( = यन्तृ ), सूतः, क्षत्ता ( = क्षत्तृ ), सारथिः, सव्येष्टः ( सव्येष्टा = सव्येष्टृ ), दक्षिणस्थः ( ८ पु ), 'रथके परिवार' अर्थात् 'रथ हाँकनेवाला ड्राइवर, काँचवान, गाड़ीवान, वगैरवान, पक्कावान और पीछे चढ़नेवाले-जो दौड़कर आगेकी भीड़को हटाकर फिर पीछे चढ़ जाते हैं, इत्यादि' के ८ नाम हैं ॥

६ रथी ( = रथिन् ), स्यन्दनारोहः ( २ पु ) 'रथपर चढ़कर लड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'युगान्तरम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'सव्येष्टदक्षिणस्थौ' इति पाठान्तरम् ॥

३. इत्थं भा० नुजिदीक्षितोक्तिः 'युगान्तरम्' इति पाठमङ्गीकृत्येत्यवधेयम् ॥

—१ अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥

- २ भटा योधाश्च योद्धारः ३ सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।  
 ४ सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥  
 ५ बलिनां ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।  
 ६ परिधिस्थः परिचरः ७ सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥  
 ८ कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री ९ यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।  
 बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥  
 शीर्षण्यं च शिरस्त्रे—

१ अश्वारोहः, सादी ( = सादिन् । २ पु ), 'घुड़सवार' के १ नाम हैं ॥  
 २ भटा, योधा, योद्धा ( = योद्ध । ३ पु ), 'लड़नेवाले वीर' के ३ नाम हैं ॥  
 ३ सेनारक्षः, सैनिकः ( २ पु ), 'सेनाके पहरेदार' के २ नाम हैं ॥  
 ४ सैन्यः, सैनिकः ( २ पु ), 'सैनिक' अर्थात् 'सेनामें रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ साहस्रः, सहस्री ( = सहस्रिन् । २ पु ), 'एक हजार योद्धाओंवाले सूबेदार आदि' के २ नाम हैं ॥

६ परिधिस्थः, परिचरः ( २ त्रि ), 'अपराधी सैनिकोंको दण्ड देनेके लिये राजा से नियुक्त पुरुष' के २ नाम हैं ॥

७ सेनानीः, वाहिनीपतिः ( २ पु ), 'सेनापति' के २ नाम हैं ॥

८ कञ्चुकः ( पु ), वारबाणः ( पु न ), 'शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये लोहे आदिके बनाये हुए सन्नाह, झूल' के दो नाम हैं ॥

९ सारसनम् ( न ), अधिकाङ्गः ( + अधिपाङ्गः, विपाङ्गः । पु ), 'झूल ( कवच ) को स्थिर रहनेके लिये कमरमें कसनेकी पट्टी आदि' के २ नाम हैं ॥

१० शीर्षकम्, शीर्षण्यम्, शिरस्त्रम् ( ३ ), 'लड़ाई के समय पहने जानेवाले टोप, या टोपीमात्र' के ३ नाम हैं ॥

१. 'तत्सारसनमधिपाङ्गोऽथ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अथ तनुव्रं वर्म दंशनम् ।

उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

२ आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

३ सन्नद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

४ त्रिष्वामुक्तादयो ५ वर्मभृतां कावचिकं गणे ।

६ 'पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥

पद्मश्च पदिकश्चाथ पादातं पत्तिसंहतिः ।

८ शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठाद्युधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

१ तनुव्रम्, वर्म (= वर्मन् ), दंशनम् ( ३ न ), उरश्छदः, कङ्कटकः, जगरः ( + जागरः । ३ पु ), कवचः ( पु न ), 'कवच' के ७ नाम हैं ॥

२ आमुक्तः, प्रतिमुक्तः, पिनद्धः, अपिनद्धः, ( ४ त्रि ), भा० दी० महे० आदिकं मतसे 'पहने हुए कवच' के और मु० मतसे 'पहनेहुए वस्त्रादि' के ४ नाम हैं ॥

३ सन्नद्धः, वर्मितः, सज्जः, दंशितः, व्यूढकङ्कटः ( ५ त्रि ), 'कवच आदिको पहनकर लड़ाईके लिये तैयार मनुष्य' के ५ नाम हैं ॥

४ 'आमुक्त' आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

५ कावचिकम् ( न ), 'कवच पहने हुए पुरुषादिके झुण्ड' का १ नाम है ॥

६ पदातिः ( + पदातः, पादातिः, पादातः ), पत्तिः, पदगः, पादातिकः ( + पादातिगः, पादाविकः ), पदाजिः, पद्मः, पदिकः ( ७ पु ), 'पैदल' के ७ नाम हैं ॥

७ पादातम् ( न ), पत्तिसंहतिः ( भा० दी०, स्त्री ), 'पैदलके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्राजीवः, काण्डपृष्ठः ( + काण्डपृष्ठः मु० ), आयुधीयः, आयुधिकः ( ४ त्रि ), 'हथियारकी नौकरीसे जीविका चलानेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. पदातिपत्तिपदगपादाविकपदाजयः' इति पाठान्तरम् ॥



- १ कृतहस्तः सुप्रयोगविशिक्षः कृतपुङ्गवत् ।
- २ अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्चयुतसायकः ॥ ६८ ॥
- ३ धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ।
- ४ स्यात्काण्डवान्स्तु काण्डीरः ५ शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥
- ६ याष्टीकपारश्वधिकौ 'यष्टिपश्वरहेतिकौ' ।
- ७ नैस्त्रिशिकोऽसिहेति स्यात् ८ समी प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥
- ९ चर्मौ फलकपाणिः स्यात्—

१ कृतहस्तः, सुप्रयोगविशिक्षः, कृतपुङ्गवः ( ३ त्रि ), 'बाण चलानेमें निपुण' के ३ नाम हैं ॥

२ अपराद्धपृषत्कः ( त्रि ), 'निशाना खुके हुए' का १ नाम है ॥

३ धन्वी ( = धन्विन् ), धनुष्मान् ( = धनुष्मत् ), धानुष्कः, निषङ्गी ( = निषङ्गिन् ), अस्त्री ( = अस्त्रिन् । + शस्त्री = शस्त्रिन् ), धनुर्धरः ( ६ त्रि ), 'धनुष धारण करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

४ काण्डवान् ( = काण्डवत् ), काण्डीरः ( २ त्रि ), 'बाण धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ शाक्तीकः, शक्तिहेतिकः ( २ त्रि ), 'शक्तिनामक शस्त्र धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ याष्टीकः, पारश्वधिकः ( २ त्रि ), 'लाठी और फरसा धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

७ नैस्त्रिशिकः, असिहेतिः ( भा० दी० । २ त्रि ), 'तलवार धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ प्रासिकः, कौन्तिकः ( २ त्रि ) 'प्रास और कुन्त ( भाटा ) धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है । ( 'प्रास' के मतसे दोनों शब्द एकार्थक हैं ) ॥

९ चर्मौ ( = चर्मिन् ), फलकपाणिः ( २ त्रि ), 'चर्मनामक हथियार ( डाक ) धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'पश्वरः परशौ न दृष्टः, अतः 'यष्टिपश्वरहेतिकौ' इति काश्मीराः पठन्ति' इति क्षी० स्वा० । किन्तु—कुठारस्तु परशुः पशुं पश्वर्यधौ । पश्वर्यधः स्वधितिश्च' ( अग्नि० चिन्ता० ३ ४५० ) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेरुक्तहेतुदानमविश्रिकरम् ॥

—१ पताकी वैजयन्तिकः ।

२ अनुप्लव 'सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ॥ ७१ ॥

३ पुरोगाग्रेसर-प्रष्टा-प्रतःसर-पुरःसराः ।

पुरोगमः पुरोगामी ४ मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

५ जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ ६ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ।

७ तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

८ जय्यो यः शक्यते जेतुं ९ जेयो जेतव्यमात्रके ।

१ पताकी ( = पताकिन् ), वैजयन्तिकः ( २ त्रि ), 'पताका धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अनुप्लवः, सहायः, अनुचरः, अभिसरः ( + अभिचरः । ४ त्रि ), 'अनुचर' के ४ नाम हैं ॥

३ पुरोगः, अग्रेसरः ( + अग्रसरः ), प्रष्टः, अग्रतःसरः, पुरःसरः, पुरोगमः, पुरोगामी ( = पुरोगामिन् । ७ त्रि ), 'आगे चलनेवाले' के ७ नाम हैं ॥

४ मन्दगामी ( = मन्दगामिन् ), मन्थरः ( २ त्रि ) 'धीरे २ चलने वाले' के २ नाम हैं ॥

५ जङ्घालः ( + जङ्घलः ), अतिजवः ( + अतिबलः । २ त्रि ), 'बहुत तेज चलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ जङ्घाकरिकः, जाङ्घिकः ( २ त्रि ), 'दौड़ाहा, डाँक देनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ तरस्वी ( = तरसिन् ), त्वरितः, वेगी ( = वेगिन् ), प्रजवी ( = प्रजविन् ), जवनः, जवः ( ६ त्रि ), 'शीघ्रता करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

८ जय्यः ( त्रि ) 'जीते जा सकनेवाले' का १ नाम है । ( 'जैसे-रामेण रावणो जय्यः' अर्थात् 'राम रावणको जीत सकते हैं' इस वाक्यमें रामका रावण जय्य हुआ, '.....' ) ॥

९ जेयः ( त्रि ), 'जीतने योग्य' का १ नाम है । ( 'जैसे—'जेयं मनः इन्द्रियं वा' अर्थात् 'मन वा इन्द्रिय जीतने योग्य है' इस वाक्यमें मन और इन्द्रिय जेय हैं '.....' ) ॥

१. 'सहायश्चानुचरोऽभिचरः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ जैत्रस्तु जेता २ यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७३ ॥  
 सोऽभ्यमिष्योऽभ्यमित्रीयाऽभ्यम्यमित्रीण इत्यपि ।  
 ३ ऊर्जस्वतः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥  
 ४ स्यादुरस्वानुरसिला ५ रथिको रथिरो रथी ।  
 ६ कामङ्गम्यनुकामीनो ७ ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥  
 ८ शूरो वीरश्च विक्रान्तो ९ जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

१ जैत्रः, जेता (=जेतृ । २ त्रि), 'विजयशाल, जीतनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यमिष्यः, अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्रोणः (३ त्रि), 'अपने पराक्रमसे शत्रुका सामना करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ ऊर्जस्वतः, ऊर्जस्वी ( = ऊर्जस्विन् । २ त्रि ), 'बहुत बलवान्' के २ नाम हैं ॥

४ उरस्वान् ( = उरस्वत् ), उरसिलः ( २ त्रि ), 'चौड़ी छातीवाले' के २ नाम हैं ॥

५ रथिकः ( + रथिनः ), रथिरः, रथी ( = रथिन् । ३ त्रि ), 'रथके स्वामी' के ३ नाम हैं ॥

६ कामङ्गामी ( = कामङ्गायिन् । + कामगामी = कामगामिन् ), अनुकामीनः ( ३ त्रि ), 'मतलब भर ( यथेष्ट ) चलने वाले' के ३ नाम हैं । ( महे० मतसे पहले शब्दका पर्यायवाचक नहीं होनेसे १ ही नाम है ) ॥

७ अत्यन्तीनः ( त्रि ), 'अत्यन्त चलनेवाले' का १ नाम है ॥

८ शूराः, वीरः, विक्रान्तः ( ३ त्रि ), 'पहलवान, बहादुर' के ३ नाम हैं ॥

९ जेता ( = जेतृ ), जिष्णुः, जित्वरः ( ३ त्रि ), 'सर्वदा विजय करनेवाले' के ३ नाम हैं । ( 'जैसे—रामचन्द्र, इन्द्र और अर्जुन आदि' ) ॥

१. 'ऊर्जातिशयान्वितः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'रथिनो रथिको रथी' इति मा० दी० महे० सम्मतः पाठः । मूलस्थः स्त्री० रथा० मुकु० सम्मतः । 'रथिन इत्यपवाठ' इति च स्त्री० रथा० आङ्गः ॥

१ सांयुगीनो रणे साधुः २ राजाजीवादयन्निषु ॥ ७७ ॥

३ ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।

वरुथिनी यत् सैन्यं यत् चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥

४ व्यूहस्तु बलविन्यासो ५ भेदा दण्डादयो युधि ।

६ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः ७ सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

१ सांयुगीनः ( त्रि ), 'लड़ाईमें व्यतुर' का १ नाम है ॥

२ 'राजाजीव' शब्द ( श्ल० ६७ ) से यहाँ तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना, पृतना, अनीकिनी, चमूः, वरुथिनी (७ स्त्री), बलम्, सैन्यम्, चक्रम् ( ३ त ), अनीकम् ( न पु ), 'सेना, पलटन' के ११ नाम हैं ॥

४ 'व्यूहः ( पु ), 'व्यूह' अर्थात् आदि 'लड़ाईमें सेनाको रखनेके कायदे, मोर्चाबन्दी' का १ नाम है ॥

५ दण्डः ( पु ) आदि ( 'भोग, मण्डल, असंहत, डरसन्न, अचल, दृढ, चक्रव्यूह, मकर, पताका, सर्वतोभद्र, ... का संग्रह है' ), 'व्यूह' अर्थात् 'लड़ाईमें सेनाको रखने के कायदे मोर्चाबन्दी' के पृथक् १-१ नाम हैं ॥

६ प्रत्यासारः ( + प्रत्यासरः ), व्यूहपार्ष्णिः ( २ पु ), 'व्यूहके पीछे-वाले सेना-भाग' के २ नाम हैं ॥

७ सैन्यपृष्ठः ( महे० ), प्रतिग्रहः ( + ररिग्रहः, पतद्गृहः । २ पु ), 'सेनाके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

१. व्यूहलक्षणं यथा—

'सुखे रथा हयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः ।

पार्श्वयोश्च गजाः कार्या व्यूहाऽयं परिकीर्तितः ॥ १ ॥ इति ॥

२. व्यूहस्य कतिचिद्भेदान् सलक्षणमाह कामन्दकिस्तथा हि—

'तिर्यग्वृत्तिस्तु दण्डः स्याज्जोगोऽन्नावृत्तिरेव च ।

मण्डलः सर्वतो वृत्तिः पृथग्वृत्तिरसंहतः' ॥ १ ॥ इति ।

श्री० स्वा० व्यूहनामान्याह । तथा हि—यदाहुः—

'दण्डो मण्डलभोगो चाप्युत्सन्नश्चापलो दृढः ।

व्यूहास्तेषां विशेषाः स्युश्चक्रव्यूहादयोऽपि च' ॥ १ ॥ इति' इति ॥

- १ एकैकैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।  
 २ पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥  
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।  
 अनीकिनी ३ दशानीकिन्यक्षौहिणी—

१ 'पत्तिः ( स्त्री ), 'पत्ति' अर्थात् जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों उस सेना-विशेष' का १ नाम है ॥

२ सेनामुखम् ( न ), गुल्मः, गणः ( २ पु ), वाहिनी, पृतना, चमूः, अनीकिनी ( ४ स्त्री ), 'पत्ति आदि ( सेनामुखं, गुल्मः, ..... ) के तिगुना करनेपर सेनामुख आदि ( गुल्मः, गणः, ..... अनीकिनी ) संज्ञा सेना-विशेषकी होती है' अर्थात् १ पत्ति ( ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल ), को सेनामुखः; ३ सेनामुख ( ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल ) को गुल्मः; ३ गुल्म ( २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल ) को 'गण' कहते हैं । इसी प्रकार 'वाहिनी, पृतना, चमू और अनीकिनी' में भी तिगुना समझना चाहिये ॥

३ 'अक्षौहिणी ( स्त्री ), भा० दी० स्त्री० स्वा० आदिके मतसे 'दस अनी-

१. भारतोक्तं पत्तिलक्षणं यथा—

'एको गजो रथश्चैको नराः पञ्च पदातयः । त्रयश्च तुरगारतञ्चैः पत्तिरित्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

यद्वा—'एको इस्ती एकश्च रथवरख्य एव च तुरङ्गाः ।

पञ्चैव च पदातय एषा पत्तिर्ज्ञातव्या' ॥ २ ॥ इति ॥

२. अक्षौहिणीप्रमाणं यथा—

'अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तस्या द्वाष्टमिः शतैः ।

संयुक्तानि सङ्ख्याणि गजानामेकविंशतिः ॥ १ ॥ ( २१८७० गजाः )

एवमेव तु संख्यानां रथानां कीर्तितं बुधैः । ( २१८७० रथाः )

पञ्चषष्टिसङ्ख्याणि षट् शतानि दशैव तु ॥ २ ॥

संख्यातास्तुरगास्तञ्जैर्विना रथतुरङ्गमैः । ( ६५६१० अश्वा रथाश्चान् विना )

नृणां शतसङ्ख्याणि सङ्ख्याणि तथा नव ॥ ३ ॥

शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चाशच्च पदातयः' ( १०९३५० पदातयः ) इति ॥

किनी ( २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल ) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है । ( 'महे० ने तो-दशानीकिनी' ( स्त्री ), तीन अनीकिनी ( ६५६१ हाथी, ६५६१ रथ, १९६८३ घोड़े और ३२८०५ पैदल ) संख्यावाले सेना-विशेष'का १ नाम और 'अक्षौहिणी' ( स्त्री ) 'तीन दशानीकिनी ( १९६८३ हाथी, १९६८३ रथ, ५९०४९ घोड़े और ९८४१५ पैदल ) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है, ऐसा कहा है । किन्तु टिप्पणीमें लिखे हुए भरतादि-वाक्यप्रमाण-विरुद्ध होनेसे महे० का मत' ठीक नहीं है ।<sup>१</sup> 'महाक्षौहिणी' ( स्त्री ), 'हाथी, रथ, घोड़े और पैदलको मिलाकर १३२१२४९०० संख्यावाली सेना विशेष'का एक नाम है । पत्तिसे लेकर महाक्षौहिणीतक सबके अलग २ प्रमाण स्पष्टतया<sup>३</sup> चक्र में देखिये' ) ॥

भारतेऽक्षौहिणी मानं यथा —

‘अक्षौहिण्याः प्रमाणन्तु खाङ्गाष्टैकद्विकैर्गजैः ॥

रथैरेतेर्ह्यैस्त्रिघ्नेः पञ्चघ्नेश्च पदातिभिः’ ॥ १ ॥ इति ॥

‘अङ्कानां वामतो गतिः’ इत्यभियुक्तोक्तेः २१८७० गजाः, इयन्मिता एव रथाश्च, पत-  
त्रिगुणिताः ( २१८७० × ३ = ६५६१० ) अश्वाः, गजसंख्यापञ्चगुणिताः ( २१८७० × ५ =  
१०९३५० ) पदातयः’ इति भारताशयः । हेमचन्द्राचार्यैरप्यक्षौहिणीमानं पूर्वोक्तसंख्याकमे-  
वाङ्गीकृतम्, किन्तु पत्त्यादिकमो भिन्नस्तथा —

‘एकैमेकरथा ऽश्वा-पत्तिः पञ्चपदातिका । सेना सेनामुखं गुरुमो वाहिनी पृतना चमूः ॥ १ ॥  
अनीकिनी च पत्तेः स्यादिभायैस्त्रिगुणैः क्रमात् ॥ दशानीकिन्यक्षौहिणी—’ ॥ २ ॥

इति अमि० चिन्ता ३ । ४१२ — ४१३ ॥

१. भानुजिदीक्षितमतमेवात्र समीचीनम्, ‘अक्षौहिण्या.....पदातयः’ इति स्वटीकार्या  
प्रमाणत्वेनोपन्यस्तसार्द्धत्रयश्लोकविरोधेन व्याघातात्, भरतहेमचन्द्राचार्योक्तिविरोधाच्च ॥

२. महाक्षौहिणीप्रमाणं यथा—

‘खट्वायं निधिवेदाक्षिचन्द्राक्ष्यग्निहिमांशुभिः ।

महाक्षौहिणिका प्रोक्ता संख्यागणितकोविदैः’ ॥ १ ॥ इति ॥

३. सकलनिष्कर्षोऽत्र चक्रं द्रष्टव्यः—

चम्पूरामायणे ‘अलक्षत स.....’ ( युद्धकाण्डे श्लो० ७९ ) इत्यन्यनन्तरं ‘तत्क्षण.....  
यातुधानपतिः’ इति गद्यस्य टीकार्या लिखितमक्षौहिणीप्रमाणमन्यदेव, तथा —

‘प्रयुतं नवसाहस्रं पञ्चाशत्त्रिंशतं मटाः । पादातं षट्साहस्रं षट्छती दश वाजिनः ॥  
एकविंशतिसाहस्र-शतानामेकसप्ततिः । द्विरदाः स्यन्दना यत्र साक्षौहिण्युच्यते नृपैः ॥ इति ॥

मङ्गलकोषे स्वेवमुक्तम्—

‘नवनागसहस्राणि नागे नागे शतं रथाः । रथे-रथे शतं चाश्वा अभे-अभे शत नराः ॥’ इति ॥

—१ अथ संपत्ति ॥ ८१ ॥

संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

१ संपत् ( = संपद् । + सम्पदा ), सम्पत्तिः, श्रीः, लक्ष्मीः ( ४ स्त्री ),  
'सम्पत्ति' के ४ नाम हैं ॥

पर्यादिसेनाविशेषे गजरथादिसंख्याबोधकचक्रम् ।

क्रमिकसंख्या	सेना- विशेषसंज्ञाः	अमर- विशेषसंज्ञाः	गजसंख्या	रथसंख्या	अश्वसंख्या (रथाश्वा- न्विहाय )	पदातिसंख्या	सर्वसङ्कलनं
१	पत्तिः	पत्तिः	१	१	३	५	१०
२	सेना	सेनामुखम्	३	३	९	१५	३०
३	सेनामुखम्	गुरुमः	९	९	२७	४५	९०
४	गुरुमः	गणः	२७	२७	८१	१३५	२७०
५	वाहिनी	वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
६	पृतना	पृतना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
७	चमूः	चमूः	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
८	अनीकिनी	अनीकिनी	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
९	*	दशानीकि० (महेश्वरम- तेनेदम्)	६५६१	६५६१	१९६८३	३२८०५	६५६१०
१०	*	अक्षौहिणी (महेश्वरम- तेनेदम्)	१९६८३	१९६८३	५९०४९	९८४१५	१९६८३०
११	अक्षौहिणी	अक्षौहिणी (मानुजिदी- क्षितमतेनेदं)	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००
१२	*	महाक्षौहिणी ( महेश्वर- व्याख्योक्ता)	५३२९१४९०	५३२९२४९०	३९६३७४५०	६६०६१४५०	५३२९२४९००

—१ विपत्त्यां विपदापदौ ।

- २ आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथाल्लियौ ॥ ८२ ॥  
 धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।  
 हृत्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥  
 ५ कपिष्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुन्नपुंसकौ ।  
 ६ कोटिरस्याटनी ७ गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥  
 ६ लस्तकस्तु धनुर्मध्यं ९ मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।  
 १० स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

१ विपत्तिः, विपत् ( = विपद् + विपदा ), आपत् ( = आपद् + आपत्तिः, आपदा । ३ स्त्री ), 'आपत्ति' के ३ नाम हैं ॥

२ आयुधम्, प्रहरणम्, शस्त्रम्, अस्त्रम् ( ४ न ), 'हथियार' के ४ नाम हैं ॥

३ धनुः ( = धनुस् + धनुः पु, धनूः स्त्री ), चापः ( २ पु न ), धन्व ( = धन्वन् + धन्वम् ), शरासनम्, कोदण्डम्, कार्मुकम् ( ४ न ), हृत्वासः ( + आसः । पु ), 'धनुष' के ७ नाम हैं ॥

४ कालपृष्ठम् ( न ), 'कर्णके धनुष' का १ नाम है ॥

५ गाण्डीवः, गाण्डिवः ( २ पु न ), 'अर्जुनके धनुष' के २ नाम हैं ॥

६ कोटिः ( + कोटी ), अटनी ( + अटनिः । २ स्त्री ), 'धनुषके दोनों छोर ( किनारे ), के २ नाम हैं ॥

७ गोधा ( स्त्री ), तलम् ( न ), 'दस्ताना' अर्थात् 'धनुषकी तांतके चोटसे बचनेके लिये हाथमें पहिननेके लिए जो चमड़े आदि का बनाया जाता है उसके' २ नाम हैं ॥

८ लस्तकः ( पु ), धनुर्मध्यम् ( भा० दी० न ), 'धनुषके बीचवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

९ मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी ( ३ स्त्री ), गुणः ( पु ), 'धनुषकी डोरी, या तांत' के ४ नाम हैं ॥

१० प्रत्यालीढम्, आलीढम् ( २ न ), आदि ( 'आदिसे 'समपादम्,



- १ लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च २ शराभ्यास उपासनम् ।  
 ३ पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥  
 'कलम्बमार्गणशराः पञ्ची रोप इषुर्द्वयोः ।  
 ४ प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः ५ पक्षो वाजस्त्रिषूक्षरे ॥ ८७ ॥  
 ६ निरस्तः प्रहिते बाणे—

विशाखम्, मण्डलम् (३ न), का संग्रह है) 'धनुषधारियोंके बैठनेके पांच आसन विशेष (तरीके), हैं । ( 'इनमें—बांये जङ्घेको आगे बढ़ाकर ठठाने और दाहिनी जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेको प्रत्यालीढ १, दहने जङ्घेको आगे बढ़ाकर ठठाने और बांये जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेका आलीढ २, दोनों पैरोंको बराबर रखनेको समपाद ३, दोनों पैरोंको फैलानेको वैशाख ४ और दोनों पैरोंको गोलाई के समान रखनेको मण्डल ५, कहते हैं' ) ॥

१ कचम्, लघयम्, शरव्यम् ( ३ न ), 'निशाने' के ३ नाम हैं ॥

२ शराभ्यासः ( पु ), उपासनम् ( न ), 'बाण चलानेका अभ्यास करने' के २ नाम हैं ॥

३ पृषत्कः, बाणः, विशिखः, अजिह्मः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, शरः ( + सरः ), पञ्ची ( = पत्त्रिन् ), रोपः ( ११ पु ), इषुः ( पु स्त्री ), 'बाण' के १२ नाम हैं ॥

४ प्रक्ष्वेडनः ( + प्रक्ष्वेदनः ), नाराचः ( २ पु ), 'लोढ़के बाण' के २ नाम हैं ॥

५ पक्षः, वाजः, ( २ पु ), 'बाणमें लगे हुए पङ्ख ( कङ्कपत्र ), के २ नाम हैं ॥

६ निरस्तः ( त्रि ), 'धनुषसे छोड़े हुए बाण' का १ नाम है ॥

१. 'कलम्बमार्गणशराः' इति पाठान्तरम् ॥

२. भरते ( रभसे ) न तु धनुर्भराणां षट् स्थितिप्रकारा उक्तास्तथा हि—

'वैष्णवं समपादं च वैशाखं मण्डलं तथा ।

प्रत्यालीढमयालीढं स्थानान्वेतानि षण्णृणाम्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. पृषक् षट्कमस्येति विग्रहः । ते च षट् धनुर्वेद उक्तास्तथा हि—

'पङ्कः शरस्तथा शर्यं पङ्कस्नायुजतूनि च' । इति ॥

## —१ विषाक्ते दिग्धलितकौ ।

- २ तूणोपासकतूणीर-निषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥  
 तूण्यां ३ खङ्गे तु निखिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।  
 कौक्षेयको मण्डलाग्रः १ करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥  
 ४ रसरुः खङ्गादिमुष्टौ स्याद् ५ मेखलातन्निबन्धनम् ।  
 ५ फलकोऽस्त्री फलं चर्म ७ संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥  
 ८ द्रुघणो मुद्गरघनौ ९ स्यादीली करवालिका ।

१ विषाक्ते दिग्धः, लितकः ( ३ त्रि ), 'विषमे बुझाये हुए बाण' के ३ नाम हैं ॥

२ तूणः, उपासकः, तूणीरः, निषङ्गः ( ३ पु ), इषुधिः ( पु स्त्री ), तूणी ( स्त्री ), 'तरकस' अर्थात् 'चमड़े आदिके बने हुए अनुषधारियोंके पीठपर बाँधे-जानेवाले, बाण रखनेके थैले' के ३ नाम हैं ॥

४ खङ्गः, निखिंशः, चन्द्रहासः, असिः, रिष्टिः ( + ऋष्टिः ), कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः, करवालः ( + करपालः ), कृपाणः ( ९ पु ), 'तलवार' के ९ नाम हैं ॥

४ रसरुः ( पु ), 'तलवार आदिकी मूठ' का १ नाम है ॥

५ मेखला ( स्त्री ), 'तलवारको लटकानेके लिये चमड़े आदिकी बनी हुई कमरमें कसी जानेवाली पेट्टी, लड़ाईमें तलवार हाथसे छूट न जाय इस वास्ते कलाईपर बाँधे हुए चमड़े आदि या तलवार के ग्यान' का १ नाम है ॥

६ फलकः ( पु न ), फलम्, चर्म ( = चर्मन् । २ न ), 'ढाल' के २ नाम हैं ॥

संग्राहः ( पु ) 'ढालकी मूठ' का १ नाम है ॥

८ द्रुघणः ( + द्रुघनः ), मुद्गरः, घनः ( ३ पु ), 'मुद्गर' के ३ नाम हैं ॥

९ ईली ( + इलिः, ईलिः, इली ), करवालिका ( + करपालिका । २ स्त्री ), एक तरफ धारवाली छोटी तलवार या गुप्ती के २ नाम हैं ॥

१. 'करपालः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्यादिलिः करवालिका' इति 'करपालिका' इति च पाठान्तरे ॥

- १ भिन्दिपालः सुगस्तुल्यौ २ परिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥  
 ३ द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।  
 ४ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च च्छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥  
 ५ वा पुंसि शल्यं ६ शङ्कुर्ना ७ सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।  
 ७ प्रासस्तु कुन्तः ८ कोणस्तु स्त्रियः पाल्यभ्रिकोटयः ॥ ९३ ॥  
 १ सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।

१ भिन्दिपालः ( + भिन्दिपालः ), सुगः ( २ पु ), 'नलिका नामक हथियार और गुल्लेख' अर्थात् 'छोटे २ पत्थर या कंकड़ फेंकनेके वास्ते रखे या चमड़ेके बने हुए साधन विशेष, या डेलवांस' के २ नाम हैं ॥

२ परिघः, परिघातनः ( २ पु ), 'लोहा मढ़ी हुई लाठी' के २ नाम हैं ॥

३ कुठारः ( पु स्त्री ), स्वधितिः, परशुः, परश्वधः ( + परस्वधः, पश्वधः । ३ पु ) 'फड़सा, कुल्हाड़ी' के ४ नाम हैं ।

४ शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका ( + छुरिका ), असिधेनुका ( ४ स्त्री ), 'छुरी' के ४ नाम हैं ॥

५ शल्यम् ( न पु ), शङ्कुः ( पु ), 'बाण के नोक ( अगले भाग )' के २ नाम हैं ॥

६ सर्वला ( + शर्वला । स्त्री ), तोमरः ( पु न ) 'तोमर, गुर्ज या गड़ाँसे' के २ नाम हैं ॥

७ प्रासः ( + प्राशः ), कुन्तः ( २ पु ), 'भाला' के २ नाम हैं ॥

८ कोणः ( पु ), पालिः ( + पाली ), अश्रिः ( + अश्री ), कोटिः ( + कोटी । ३ स्त्री ), 'तलवार आदि हथियारोंके किनारे या नोक' के ४ नाम हैं ॥

९ सर्वाभिसारः, सर्वौघः ( २ पु ), सर्वसंनहनम् ( न ), 'चतुरङ्गिणी मेना को तैयार करने' के ३ नाम हैं ॥

- १ 'लोहाभिसारोऽस्त्रभृतः राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥
- २ यत्सेनयाऽभिगमनमरी तदभिषेगनम् ।
- ३ यात्रा वज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
- ४ स्यादासारः प्रसरणं ५ प्रचक्रं चलितार्थकम् ।
- ६ अद्वितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

१ 'लोहाभिसारः ( + लोहाभिहारः । पु ), 'लड़ाईके लिये तैयार शस्त्रधारियों या राजाओंकी आरती या आरतीके बादवाले कृत्य-विशेष या युद्धयात्राके पहले की जानेवाली हथियारोंकी पूजा' का १ नाम है ॥

२ अभिषेगनम् ( न ), 'वैरीके सामने सेना-सहित जाने' का १ नाम है ॥

३ यात्रा, वज्या ( २ स्त्री ), अभिनिर्माणम्, प्रस्थानम्, गमनम् ( ३ न ), गमः ( पु ), 'यात्रा, प्रस्थान, जाने' के ३ नाम हैं ॥

४ आसारः ( पु ), प्रसरणम् ( + प्रसरणी, प्रसरणिः । न ) 'सेनाके सब तरफ फैल जाने' के २ नाम हैं । ( किसी २ के मतसे 'पीछेसे आने-वाली सेना' को आसारः और 'घास, भूसा, जल, अन्न और इन्धन आदि इकट्ठा करनेके लिये सेनासे बाहर फैलनेको प्रसरणम् कहते हैं ' ॥

५ प्रचक्रम्, चलितम् ( २ न ), 'यात्रा की हुई सेना' के २ नाम हैं ॥

६ अभिक्रमः ( + अतिक्रमः । पु ), 'निडर होकर वैरीके सामने योद्धाके गमन करने' का १ नाम है ॥

१. 'लोहाभिहारो' इति 'नीराजनो विधिः' इति 'नीराजनाद्विधिः' इति च पाठान्तराणि ।

२. 'प्रसरणी' इति पाठान्तरम् ॥

३. विधिर्लोहाभिसारस्तु राज्ञां नीराजनोत्तरः' इत्युक्तेर्नीराजनादनन्तरं कर्मलोहाभिसारः, इति मुनिः । 'लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजनान्मृपैः' इति दगोडिपि तथैव । अत एव 'नीराजनाद्विधिः' इत्येके पठन्ति' इति स्त्री० स्वा० ॥

४. अनयोमिन्नाथैवादेव—

'निरुद्धकीवधासारप्रासारा इव गा व्रजम्' इति माघः ( २।६४ )' इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ वैतालिका 'बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।  
 ३ स्युर्मागधास्तु 'मगधा ४ बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥  
 ५ संशसकास्तु समयत्संग्रामादनिवर्तिनः ।  
 ६ रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥  
 ७ चूर्णे क्षोदः ८ समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

१ वैतालिकः, बोधकरः ( १ पु ), 'राजाको जगानेके लिये प्रातः काल या विशिष्ट अवसरों पर राजाके स्तुतिपाठ करनेवाले बन्दी, भाट' के १ नाम हैं ॥

२ चाक्रिकः ( + चक्रिकः ), 'घाण्टिकः ( + घटिकः । २ पु ), 'घण्टा बजानेवाले या घड़ियारी नामक राजाको बजानेवाले बन्दी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ मागधः, मगधः ( + मधुकः मु० । १ पु ), 'राजाकी वंशावलीको वर्णन करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं ॥

४ बन्दी ( = बन्दिन् ), स्तुतिपाठकः ( १ पु ), 'राजाकी स्तुति करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं । ( श्री० स्वा० के मतसे 'मागधः, .....' ४ नाम एकार्थक अर्थात् 'बन्दीमात्र' के हैं ॥

५ संशसकः ( पु ), 'शपथ देने या स्वयं प्रतिज्ञा करनेके कारण लड़ाईसे नहीं लौटनेवाले योद्धा' का १ नाम है ॥

६ रेणुः ( पु स्त्री ), धूलिः ( + धूली । स्त्री ), पांशुः ( + पांसुः । पु ), रजः ( = रजस् न ), 'धूल' के ४ नाम हैं ॥

७ चूर्णम् ( न । + पु ), क्षोदः ( पु ), 'महीन धूल' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'रेणुः, .....' ६ नाम 'धूलमात्र' के हैं ) ॥

८ समुत्पिञ्जः, पिञ्जलः ( २ पु ), 'अधिक व्याकुल सेना' के २ नाम हैं ॥

१. 'बाधकराश्चाक्रिका घटिकार्थकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'मधुका' इति मुकुटसम्भवं पाठान्तरम् ॥

३-४. तदुक्तम्—

'वैतालिकाश्च कथ्यन्ते कविभिः सौखशायिकाः ।

राजः प्रबोधसमये वण्डाश्चिन्तास्तु वाण्टिकाः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ पताका वज्रयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
- २ सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।
- ३ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥
- ४ आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सम्भावनाऽऽत्मनि ।
- ५ अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहङ्कारः ॥ १०१ ॥
- ६ द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।  
शक्तिः पराक्रमः प्राणो ऽ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥
- ८ वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।
- ९ युद्धमायोधनं जन्यं प्रघनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

१ पताका, वैजयन्ती ( २ स्त्री ), केतनम् ( न ), ध्वजम् ( न पु ), 'पताका, झण्डे' के ४ नाम हैं । ( किसीके मतसे प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम 'पताकाके दण्ड' के हैं ) ॥

२ वीराशंसनम् ( न ), 'लड़ाईके अत्यन्त भयङ्कर मैदान' का १ नाम है ॥

३ अहंपूर्विका ( स्त्री ), 'मैं पहले पहुँचा-मैं पहले पहुँचा ऐसे कहते हुए स्पर्धासे योद्धाओंके दौड़ने' का १ नाम है ॥

४ आहोपुरुषिका ( स्त्री ), 'अभिमानपूर्वक अपनेमें सामर्थ्यका प्रकट करने' का १ नाम है ॥

५ अहमहमिका ( स्त्री ), 'आपसमें अहङ्कार करने' का १ नाम है ॥

६ द्रविणम् , तरः ( = तरस् ), सहः ( = सहस् । + सहः = सह पु, सहा स्त्री ), बलम् , शौर्यम् , स्थाम ( = स्थामन् ), शुष्मम् ( + शुष्मा = शुष्मन्, पु न । ७ न ), शक्तिः ( स्त्री ), पराक्रमः, प्राणः ( + भोजः = भोजस्, ऊर्जः = ऊर्जस् । २ पु ), 'पराक्रम, बल' के १० नाम हैं ॥

७ विक्रमः ( पु ), अतिशक्तिता ( स्त्री ), 'अधिक बल' के २ नाम हैं ॥

८ वीरपानम् ( + वीरपाणम् । न ), 'लड़ाईमें जानेके समय या लड़ाईसे लौटनेपर उत्साह को बढ़ानेके लिये मदिरादि-पान करने' का १ नाम है ॥

९ युद्धम् , आचोषनम् , जम्बम् , प्रघनम् , प्रविदारणम् , मृषम् ,

मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं 'सांपरायिकम् ।

अस्त्रिधां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

'संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।

१ नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

२ श्वेडा तु सिंहनादः स्यात् ४ करिणां घटना घटा ।

५ क्रन्दनं योधसंरावो ६ वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

आस्कन्दनम्, संख्यम्, समीकम्, सांपरायिकम् ( + संपरायिकम् । १० न ),  
समरः, अनीकः, रणः ( ३ पु न ), कलहः, विग्रहः, संप्रहारा, अभिसंपातः,  
कलिः, संस्फोटः ( + संस्फोटः, संफेदः ), संयुगाः, अभ्यामर्दः ( + अभिमर्दः ),  
समाघातः, संग्रामः, आहवः, समुदायः ( १३ पु ), संयत् ( + पु ), समितिः,  
आजिः, समित्, युत् ( = युध् । ५ स्त्री ), 'लड़ाई, युद्ध' के ३१ नाम हैं ॥

१ नियुद्धम्, बाहुयुद्धम् ( १ न ), 'कुस्ती, दक्कल' के २ नाम हैं ॥

२ तुमुलम्, रणसंकुलम् ( भा० दी० । २ न ), 'खूब जमकर लड़ाई  
होने या व्याकुल होने' के २ नाम हैं ॥

३ श्वेडा ( + श्वेला । स्त्री ), सिंहनादः ( पु ), 'लड़ाईमें सिंहके समान  
गर्जने' के २ नाम हैं ॥

४ घटना ( भा० दी० ), घटा ( २ स्त्री ), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

५ क्रन्दनम् ( न ), योधसंरावः ( भा० दी०, पु ), 'स्पर्द्धासे प्रतिपक्ष-  
वाले योद्धाओंको ललकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

६ वृंहितम्, करिगर्जितम् ( २ न ), 'हाथियोंके गर्जने' के २ नाम हैं ॥

१. 'संपरायिकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः' इति युक्तः पाठः इति स्त्री० त्वा० । 'संफेदः'  
इति तु भरत' इति ॥

- १ विस्फारो घनुषः स्थानः २ पटहाडम्बरौ समौ ।
  - ३ प्रसभं सु बलारकारो हठोऽय स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥
  - ५ अजन्यं यत्कीचुरपात उपसर्गः सप्त त्रयम् ।
  - ६ मूर्च्छा त कश्मलं मोहोऽप्यवगर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
  - ८ अवयवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं ९ विलसो जयः ।
  - १० वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
  - ११ प्रद्रावोद्द्रावोऽद्रावोऽद्रावो विद्रवो द्रवः ।
- अपकमोऽपयानं च—

- १ विस्फारः ( पु ), 'घनुषके टङ्कार' का १ नाम है ॥
- २ पटहा, आडम्बरः ( २ पु ), 'गंगाड़ा या दमदमा' के २ नाम हैं ॥
- ३ प्रसभम् ( न ), बलारकारः, हठः ( २ पु ) 'जबर्दस्ती करने' के २ नाम हैं ॥
- ४ स्खलितम्, छलम् ( २ न ), 'कपट करने' अर्थात् युद्धके नियमको तोड़कर' छल करने के २ नाम हैं ॥
- ५ अजन्यम् ( न ), उत्पातः, उपसर्गः ( २ पु ), उत्पात' के ३ नाम हैं ॥
- ६ मूर्च्छा ( स्त्री ), कश्मलम् ( न ), मोहः ( पु ), 'बेहोशी, मूर्च्छा' के ३ नाम हैं ॥
- ७ अवगर्दः ( पु ), पीडनम् ( न ), 'अन्नादिसे परिपूर्ण देशको राजा-के शत्रु द्वारा पीड़ित करने' के २ नाम हैं ॥
- ८ अवयवस्कन्दनम् ( + अवस्कन्दनम् ), अभ्यासादनम् ( + धाटि, धाटी । २ न ) भा० दी० के मतसे 'मारकर शक्तिहीन' करने के और महे० के मतसे 'छापा मारने' अर्थात् कपटसे एकाएक आक्रमण करने' के २ नाम हैं । ( ' + लौकिकम् ( न ) 'रातमें छापा मारने' का १ नाम है' ) ॥
- ९ विलसः, जयः ( २ पु ), 'जीतने' के २ नाम हैं ॥
- १० वैरशुद्धिः ( स्त्री ), प्रतीकारः ( पु ) वैरनिर्यातनम् ( न ), शत्रुताको दूर करने' के ३ नाम हैं ॥
- ११ प्रद्रावः, उद्द्रावः, संद्रावः, सद्रावः, विद्रवः, द्रवः, अपकमः ( ७ पु ), अपयानम् ( न ), लड़ाईमें पीठ दिखाने ( भागने )' के ८ नाम हैं ॥



—१ रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

२ पराजितपराभूतौ त्रिषु ३ नष्टतिरोहितौ ।

४ प्रमापणं निवर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ १११ ॥

प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिसनम् ।

निर्वासनं संक्षपनं निर्ग्रन्थनप्रपासनम् ॥ ११३ ॥

निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।

निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥

उद्धासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।

आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

५ 'व्यापादनं विशसनं कदनं च निशुम्भनम्' ( २६ )

१ भङ्गः ( ३भा० दी०, ) पराजयः ( २ पु ), 'हारने' के २ नाम हैं ॥

२ पराजितः ( + जितः ), पराभूतः ( + परिभूतः, अभिभूतः । २ त्रि ), 'लड़ाईमें हारे हुए' के २ नाम हैं ॥

३ नष्टः, तिरोहितः ( २ त्रि ), 'लड़ाईसे भागकर छिपे हुए' के २ नाम हैं ॥

४ प्रमापणम्, निवर्हणम् ( + निवर्हणम् ), निकारणम्, विशारणम् ( + विशारणम्, निशारणम् ), प्रवासनम्, परासनम्, निषूदनम् ( + निषूदनम् ), निर्हिसनम्, निर्वासनम्, संक्षपनम्, निर्ग्रन्थनम् ( + निर्ग्रन्थनम् ), अपासनम्, निस्तर्हणम्, निहननम्, क्षणनम्, परिवर्जनम्, निर्वापणम्, विशसनम्, मारणम्, प्रतिघातनम् ( + प्रतिघातनम् ), उद्धासनम्, प्रमथनम्, क्रथनम्, उज्जासनम् ( २४ न ), आलम्भः, पिञ्जः, विशरः, घातः, उन्माथः ( + उन्मथः ), वधा ( १ पु ), 'मारने' के ३० नाम हैं ॥

५ [ व्यापादनम्, विशसनम्, कदनम्, निशुम्भनम् ( ४ न ) 'मारने' के ४ नाम हैं ] ॥

१. 'आलम्भपिञ्जविशरघातोन्मथवधा' इति पाठान्तरम् ॥

२. अयमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपक्रम्यते इति क्षेत्रकरूपेणात्र निहितः ॥

३. 'अङ्ग' इत्यस्य रणेऽन्वयित्वादिवमस्य ॥

- १ स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।  
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽन्नियाम् ॥ ११६ ॥
- २ 'प्रमयोऽस्त्री दीर्घनिद्रा हिंसा संस्था प्रमीलनम्' ( २७ )
- ३ परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।  
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते ४ चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
- ४ कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
- ६ श्मशानं स्यात्पितृवनं ७ कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥
- ८ प्रग्रहोपग्रहौ बन्धा—

१ पञ्चता ( + पञ्चत्वम् न । स्त्री ), कालधर्मः ( + कालः ), दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः ( ६ पु ), मृत्युः ( पु स्त्री ), मरणम् ( न ), निधनः ( पु न ), 'मृत्यु' के १० नाम हैं ॥

२ [ प्रमयः ( पु न ), दीर्घनिद्रा, हिंसा, संस्था ( ३ स्त्री ), प्रमीलनम् ( न ), 'मरणे' के ५ नाम हैं ] ॥

३ परासुः, प्राप्तपञ्चत्वः, परेतः, प्रेतः, संस्थितः, मृतः, प्रमीतः ( ७ त्रि ), 'मरे हुप' के ७ नाम हैं ॥

४ चिता, चित्या, चितिः ( ३ स्त्री ), 'चिता' के ३ नाम हैं ॥

५ कबन्धः ( + रुण्डः । पु न ), 'घड़, बिना शिरके शरीर' का १ नाम है ॥

६ श्मशानम्, पितृवनम् ( + पितृकाननम्, प्रेतवनम्, करवीरम् । २ न ), 'श्मशान' के २ नाम हैं ॥

७ कुणपः ( पु ), शवः ( पु न ), 'मुर्दे' के २ नाम हैं ॥

८ प्रग्रहः, उपग्रहः ( २ पु ), बन्दी ( + वन्दी । स्त्री ), महे० मतसे 'कैदी, बंधुआ, गिरफ्तार' के और भा० दी० मतसे 'बन्दीगृह ( कोत, हवा-कात ), के ३ नाम हैं । ( यहाँ महे० का मत ठीक प्रतीत होता है' ॥

१. अयमंशः स्त्री० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते इति क्षेपकरूपेणात्र निहितः ॥

२. कबन्धलक्षणं यथा—

'युद्धे योद्धृषु शरेषु सहस्रं कृतमूर्द्धसु ।

तदावेशात्कबन्धः स्यादेको मूर्द्धा क्रियान्वितः' ॥ १ ॥ इति ॥

उपचारात्सामान्यतः शिरोहीनकलेवरेऽपि कबन्धशब्दव्यवहार इत्यवधेयम् ॥

—१ कारा स्याद्वन्धनालये ।

२ पुंलि भूम्यसवः प्राणाश्चैव ३ जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

४ आयुर्जीवितकालो ना ५ जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति चर्द्धिप्रवर्गः ॥ ८ ॥

—१२०—

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

७ आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

१ कारा ( स्त्री ), बन्धनालयम् ( भा० दी०, न ), 'जेल' के १ नाम हैं ॥

२ असवः ( = असु ), प्राणाः ( १ पु नित्य ब० व० ) 'प्राण' के २ नाम हैं ॥

३ जीवः ( पु ), असुधारणम् ( भा० दी०, न ), 'जीने, प्राणको धारण करने' के २ नाम हैं ॥

४ आयुः ( = आयुस् न ), जीवितकालः ( भा० दी०, पु ), 'उम्र, आयु' के २ नाम हैं ॥

५ जीवातुः ( पु न ), जीवनौषधम् ( भा० दी०, न ), 'जिलानेवाली दवा' के २ नाम हैं । ( जैसे—लक्ष्मणजीके लिये संजीवनी वृक्ष…… ) ॥

इति चर्द्धिप्रवर्गः ॥ ८ ॥

—१२१—

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्यः, ऊरुजः, अर्यः, वैश्यः, भूमिस्पृक् ( = भूमिस्पृश् ), विक् ( = विश् । ६ पु ), 'वैश्य' के ६ नाम हैं ॥

७ आजीवः ( पु ), जीविका, वार्ता, वृत्तिः ( ३ स्त्री ), वर्तनम् ( + वेतनम् ), जीवनम् ( २ न ), 'जीविका वेतन' के ६ नाम हैं ॥

१. 'जीवातुर्जीवनौषधम्' इत्युपाध्यायः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'वृत्तिर्वर्तनजीवने' इति पाठान्तरम् ॥

३. ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृत ऊरू तद्वक्ष्य यद्वैश्यः' इति श्रुत्युक्तेः ॥

- १ खियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।
- २ 'सेवा श्ववृत्तिश्चैरनृतं कृषिः उच्छिष्टशिलं स्मृतम् ॥ २ ॥
- ५ द्वे याचितायाचितयोर्व्यासमुद्यं स्मृतमृते ।
- ६ सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात्—

१ कृषिः ( स्त्री ), पाशुपाल्यम्, वाणिज्यम् ( + वाणिज्यम्, वणिज्या, कृषीदम् । न ), 'खेती, पशुपालन और व्यापार' ये ३ 'वृत्तिः' ( स्त्री ) 'वैश्योकी वृत्तियाँ' हैं ॥

२ सेवा ( भा० दी० ), 'श्ववृत्तिः' ( २ स्त्री ), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥

३ अनृतम् ( + प्रमृतम् । भा० दी०, न ) 'कृषिः' ( स्त्री ), 'खेती' के २ नाम हैं ॥

४ उच्छिष्टशिलम् ( + उच्छिः, शिलम्, शिलोच्छिष्टम् ), ऋतम् ( २ न ), 'गृहस्थके अलिहान या खेतसे सब अन्न उठाकर ले जानेके बाद १-१ दाना चूंगने ( बीनने ), के २ नाम हैं ॥

५ स्मृतम्, 'अमृतम्' ( २ न ), 'याचना करनेपर और बिना याचना किये मिली हुई वस्तु' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ 'सत्यानृतम्, वणिग्भावः' ( भा० दी० न । + वाणिज्यम्, वणिज्यम्; वणिज्या । पु ), 'व्यापार' के २ नाम हैं ॥

१. 'ऋतामृताभ्यां जीवेत्तु मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपि वा न श्रुत्या कदाचन ॥१॥

इति मनूक्ताः ( ४।४ ) षड् वृत्तीरुपक्रम्याह—सेवेति ।

२. 'प्रमृतम्' इति सभ्यः पाठः इति क्षी० स्वा० ।

३. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णेन—

'कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावज्ञम्' इति गीता १८।४४ ॥

४. तदुक्तम्—'शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गदितं तद् दिग्गमनाम् ।

हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते' ॥ १ ॥ इति ।

'सेवा श्ववृत्तिराख्याता तस्मात्तां परिवर्जयेत्' इति मनुः ४। ६ ॥

५-६-७. तदुक्तं मनुना—

ऋतमुच्छिष्टशिलं वेयममृतं स्यादयाचितम् ।

—१ ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।

३ याचजयाऽऽप्तं याचितकं ४ नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

५ उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।

६ कुसीदिको वार्धुषिको वृद्धयाजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

७ क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।

८ क्षेत्रं व्रैह्यशालेयं व्रीहिशात्युद्भवो हि यत् ॥ ६ ॥

यद्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत् ।

१ ऋणम्, पर्युदञ्चनम् ( २ ), उद्धारः ( पु ), 'कर्ज' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्थप्रयोगः ( पु ), कुसीदम् ( + कुषीदम्, कुशीदम् । न ), वृद्धिजीविका ( स्त्री ), 'व्याज, सूद' के ३ नाम हैं ॥

३ याचितकम् ( न ), 'याचना करनेसे मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ॥

४ आपमित्यकम् ( न ), 'बदलेमें मिले हुए' का १ नाम है ॥

५ उत्तमर्णः, अधमर्णः ( २ त्रि ), 'कर्ज देनेवाले और लेनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ कुसीदिकः ( + कुशीदिकः, कुषीदिकः ) वार्धुषिकः, वृद्धयाजीवः, वार्धुषिः ( + वार्धुषी = वार्धुषिन् । ४ त्रि ), 'कर्ज देकर सूदसे जीविका चलाने-वाले' के ४ नाम हैं ॥

७ क्षेत्राजीवः, कर्षकः ( + कर्षकः ), कृषिकः, कृषीवलः ( ४ त्रि ), 'किसान गृहस्थ' के ४ नाम हैं ॥

८ व्रैह्यम्, शालेयम्, यव्यम्, यवक्यम्, षष्टिक्यम् ( ५ त्रि ), 'व्रीही, शालि ( एक प्रकारका उत्तम धान ), टूंडवाला जौ, विना टूंडवाला जौ और साठी ( साठ दिनमें तैयार होनेवाला धान-विशेष ) के पैदा होने योग्य खेतों' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

मृणं तु याचितं भैक्षं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम् ॥ ९ ॥

सत्यानृतं तु बाणिज्यं तेन चैवापि जीव्यते ॥ इति मनुः ४ । ५-६ ॥

१. 'व्रीहिशात्युद्भवक्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हितम्' इत्युपाध्यायः इति क्षी० स्वा० ॥

- १ तिल्यं तैलीनचरन्माषोमाणुभङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥
- २ मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।
- ४ 'शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्' ( २८ )
- ५ बीजाकृतं 'तूपकृष्टे ६ सीत्यं कृष्टं च दृश्यवत् ॥ ८ ॥
- ७ त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिदृश्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
- ८ द्विगुणाकृते तु सर्वे पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

१ तिर्य्यम्, तैलीनम् (२ त्रि), 'तिल पैदा होने योग्य खेत' के २ नाम हैं ॥

२ + माष्यम्, + माषीणम् ; + उग्र्यम्, + औमीनम् ; + अणश्यम्, + आणवीनम् ; + भङ्ग्यम्, + भङ्गीनम् ( ८ त्रि ), 'उड़द्, तीसी' ( अलसी ), 'चीना और सनई पैदा होने योग्य खेत' के क्रमशः २-२ नाम हैं ॥

३ मौद्गीनम्, कौद्रवीणम् (२ त्रि), आदि ( + गोधूमीनम्, काकायीनम्, कौलथीनम्, प्रैयङ्गवीणम्, चाणकीनम् ( ५ त्रि ) '.....', 'मूंग और कोदो आदि ( गंहु, मटर, कुरयो, चीना और चना, ... ) पैदा होने योग्य खेत' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

४ [ शाकशाकटम्, शाकशाकिनम् ( २ त्रि ), 'साग पैदा होने योग्य खेत आदि ( देश, स्थान, समय आदि )' के २ नाम हैं ] ॥

५ बीजाकृतम्, उपकृष्टम् ( भा० दी० । + उपकृष्टम् २ त्रि ), 'बीज खोनेके बाद जोते हुए खेत' के २ नाम हैं ॥

६ सीत्यम् ( + सीत्यम् ), कृष्टम्, दृश्यम् ( ३ त्रि ), 'जोते हुए खेत' के ३ नाम हैं ॥

७ त्रिगुणाकृतम्, तृतीयाकृतम्, त्रिदृश्यम्, त्रिसीत्यम् ( + त्रिशीत्यम् । ४ त्रि ), 'तीन बार जोते हुए खेत' के ४ नाम हैं ॥

८ द्विगुणाकृतम्, द्वितीयाकृतम्, द्विदृश्यम्, द्विसीत्यम् ( + द्विशीत्यम् ), शम्बाकृतम् ( ५ त्रि ), 'दो बार जोते हुए खेत' के ५ नाम हैं । ( 'किसीके

१. 'तूपकृष्टम्' इति पाठान्तरम् ।

- १ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
- २ खारीवापस्तु खारीक ३ उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
- ५ पुन्नपुंसकयोर्वप्रः कैदारः क्षेत्रमस्य तु ।  
कैदारकं स्वात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
- ६ लोष्टानि लेष्टवः पुंसि ङकोटिशो लोष्टभेदनः ।
- ८ प्राजनं तोदनं तोत्रं ९ खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥
- १० दात्रं लवित्रम्—

मतसे 'शम्बाकृतम्' यह १ नाम 'अच्छी तरह सीधा जोतनेके बाद तिछाँ जोते हुए खेत' का नाम है' ) ॥

१ द्रौणिकः, आढकिकः ( २ त्रि ), आदि ( प्रास्थिकः, कौडविकः; २ त्रि ), 'एक द्रोण और एक आढक आदि ( एक प्रस्थ ( सेर ) एक कुडव ( छटाक ) आदि ) खोने आदिके योग्य खेत आदि ( उतना पकाने या रखने योग्य वर्तन या उतना खाने योग्य मनुष्यादि, '.....' ) का क्रमशः १-१ नाम है ॥

२ खारीकः ( खारीवापः भा० दी० ) ( त्रि ), 'एक खारी खोनेके योग्य खेत' का १ नाम है ॥

३ 'उत्तमर्ण' ( श्लो० ५ ) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ वप्रः ( पु न ), कैदारः ( पु ), क्षेत्रम् ( न ), 'खेत, क्यारी' के ३ नाम हैं ॥

५ कैदारकम् ( + कैदारम् ), कैदार्यम्, क्षेत्रम् ( भा० दी० + क्षेत्रम् महे० ), कैदारिकम् ( ४ न ), 'खेतोंके समूह' के ४ नाम हैं ॥

६ लोष्टम् ( न । + पु ), लेष्टुः ( पु ), 'ढेला' के २ नाम हैं ॥

७ कोटिशः ( + कोटीशः ), लोष्टभेदनः ( २ पु ), 'ढेलोंको फोड़ने-वाली मुंगरी के या हेंगा' अर्थात् 'काष्ठ या दो बोंसोंसे बनाये गये पटेला' के २ नाम हैं ॥

८ प्राजनम् ( + प्रवयणम् ), तोदनम्, तोत्रम् ( ३ न ), 'खाबुक-पैना' के ३ नाम हैं ॥

९ खनित्रम्, अवदारणम् ( २ न ), 'खन्ता' अर्थात् 'कुदाल, फरसा, शमा, गैता आदि जमीन खोदनेवाके हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० दात्रम्, लवित्रम् ( २ न ) 'हँसुआ' के २ नाम हैं ॥

१. 'क्षेत्रम्' इति महेपरसम्मतं पाठान्तरम् ॥

—१ आबन्धो योजं योक्त्रमथो' फलम् ।

१ निरीशं कूटकं फालः कृषको ३ लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥

गोदारणं च सीरोष्ठय शम्भ्या स्त्री युगकीलकः ।

५ ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात् ६ सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

७ पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।

८ आशुव्रीहिः पाटलः स्यात्—

१ आबन्धः ( पु ) योजस्, योक्त्रम् ( २ न ), 'जोती, जोता' अर्थात् 'जुवामें बांधी जानेवाली रस्सी' के २ नाम हैं ॥

२ फलम्, निरीशम् ( + निरीशम् ), कूटकम् ( + कूटकम् । ३ न ), फालः, कृषकः ( + कृषिकः पु, कृषिका स्त्री । २ पु ), 'फार' के ५ नाम हैं । ( 'किसीके मतसे प्रथमवाले ३ नाम जिसमें फारको गाढ़ा जाता है उस काष्ठके और अन्त-वाले २ नाम उक्तार्थक हैं' ) ॥

३ लाङ्गलम्, हलम् ( + हालः ), गोदारणम् ( ३ न ), सीरः ( + शी-रः । पु ), 'हल' के ४ नाम हैं ॥

४ शम्भ्या ( स्त्री ), युगकीलकः ( पु ), 'सहला, जुमाठकी कील' के २ नाम हैं ॥

५ ईषा ( ईशा । स्त्री ), लाङ्गलदण्डः ( भा० दी०, पु ), 'हरिश' के २ नाम हैं ॥

६ सीता ( + शीता ), लाङ्गलपद्धतिः ( भा० दी० । स्त्री ), 'हराई' अर्थात् 'हलके चलानेसे पड़ी हुई लकीर' के २ नाम हैं ॥

७ मेधिः ( + मेधिः । पु ), खलेदारु ( भा० दी० पु न ) 'मैंह' अर्थात् 'दूबनी करनेके समय बैलोंके रस्सी बांधे जानेवाले बड़े खँटू' के २ नाम हैं ॥

८ आशुः ( + न ) व्रीहिः ( + आशुव्रीहिः पु ), पाटलः ( + पाटलिः । १ पु ), 'साठी' अर्थात् 'साठ दिनमें तैयार होनेवाले धान' के ३ नाम हैं ॥

१. अत्र 'हलम्' इति पाठमुक्त्वा 'इतो हलप्रकरणमारब्धमित्यर्थः' इति स्त्री० स्मा० आहुः ॥

२. 'निरीशं कूटकं फालः कृषिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'मेधिः' इति पाठान्तरम् ॥



—१ 'शितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

२ तोक्मस्तु तत्र हरिते ३ कलायस्तु सतीनकः ।  
हरेणुखण्डिकौ चास्मिन् ४ कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

५ मङ्गल्यको मसूरोऽथ ६ मकुष्ठकमयुष्टका ।  
वनमुद्गे ७ सर्षपे तु द्वौ ८ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

८ सिद्धार्थस्त्वेष धवला ९ गोधूमः सुमनः समौ ।

१० स्याद्यावकस्तु ११ कुलमाषः १२ चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

१ शितशूकः ( + शितशूकः ), यवः ( २ पु ), 'जौ' के २ नाम हैं ॥

२ तोक्मः ( पु ), 'हरे जौ' का १ नाम है ॥

३ कलायः, सतीनकः ( + सातीनकः ), हरेणुः, खण्डिकः ( ४ पु ), 'मटर, कबिलि' के ४ नाम हैं ॥

४ कोरदूषः, कोद्रवः ( + काद्रवः । २ पु ), 'कोदो' के ३ नाम हैं ॥

५ मङ्गल्यकः, मसूरः ( + मसुरः, मसूरा, मसुरा; २ स्त्री । २ पु ), 'मसूर' के २ नाम हैं ॥

६ मकुष्ठकः ( + मकुष्ठकः, मकुष्ठः, सुकुष्ठः, मकुष्ठकः, सुकुष्ठकः ), मयुष्टका ( + मयुष्टकः, मयष्टकः, मयष्टकः, मयष्टः, मयुष्टकः, मयुष्टः ) वनमुद्गः ( ३ पु ), 'धनमूंग या मोठ नामक अन्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ सर्षपः ( + सरिषपः ), तन्तुभः ( + तुन्तुभः ), कदम्बकः ( ३ पु ), 'सरसों' के ३ नाम हैं ॥

८ सिद्धार्थः ( + रक्षोघ्नः, भूतनाशनः । पु ), 'सफेद सरसों' का १ नाम है ॥

९ गोधूमः सुमनः ( २ पु ), 'गेहूँ' के २ नाम हैं ॥

१० यावकः कुलमाषः ( + कुलमासः । २ पु ), 'अधसूखे जौ' के और रचितके मतसे 'बिना टूँड़वाले जौ' के २ नाम हैं ॥

११ चणकः, हरिमन्थकः ( + हरिमन्थः, हरिमन्थजः । २ पु ), 'चना' के २ नाम हैं ॥

१ शितशूकयवौ इति पाठान्तरम् ॥

२ मकुष्ठकमयुष्टकौ इति पाठान्तरम् ॥

३ 'तन्तुभकदम्बकौ' इति पाठान्तरम् ॥

४ 'कुलमासश्चणकः' इति मुकुटपाठः इति भा० दी० ॥

- १ द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।
- २ क्षवः<sup>१</sup> क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥
- ३ स्त्रियौ कङ्कुप्रियङ्गू द्वे ४ अतसी स्यादुमा क्षुमा ।
- ५ मातुलानी तु भङ्गायां ६ व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥
- ७ किशारुः<sup>३</sup> सस्यशूकं स्यात् ८ कणिशं सस्यमञ्जरी ।
- ९ धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

१ तिलपेजः, तिलपिञ्जः ( + जर्तिलः । २ पु ), 'विना तेलवाली तिल' के २ नाम हैं ॥

२ क्षवः, क्षुताभिजननः ( + क्षुधाभिजननः । २ पु ), राजिका, कृष्णिका ( + कृष्णका ), आसुरी ( + सुरी, असुरी । ३ स्त्री ), 'राई' काला सरसो' के ५ नाम हैं ॥

३ कङ्कुः ( + कङ्कुः, कङ्कुः कङ्गू ), प्रियङ्गुः ( २ स्त्री ), 'ककुनी' अर्थात् 'टांगुन' के २ नाम हैं ॥

४ अतसी, उमा, क्षुमा ( ३ स्त्री ), 'तीसी, अलसी' के ३ नाम हैं ॥

५ मातुलानी, भङ्गा ( २ स्त्री ), 'भांग' के २ नाम हैं ॥

६ अणुः ( पु ), 'चीना' का १ नाम है ॥

७ किशारुः ( पु ), सस्यशूकम् ( + शस्यशूकम् । भा० दी०, न । + पु मुकुं ), 'टूंड' के २ नाम हैं ॥

८ कणिशम् ( + कणिशम् । न । + पु ), सस्यमञ्जरी ( + शस्यमञ्जरी । भा० दी०, स्त्री, 'धान आदिके बाल' के २ नाम हैं ॥

९ धान्यम् ( न ), व्रीहिः, स्तम्बकरिः ( २ भा० दी० । २ पु ), 'धान्य-मात्र' के ३ नाम हैं । ( 'धान्य' 'सत्रह प्रकारके होते हैं' ) ॥

१. क्षुधाभिजननः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शस्यशूकं स्यात्कणिशं शस्यमञ्जरी' इति पाठान्तरम् ॥

३. स्त्री० स्वा० व्याख्याने सप्तदश धान्यान्युक्तानि, तथा हि—

'व्रीहिर्यत्रो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः ।

अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमयुष्टकाः शलिराढक्यः ॥ १ ॥

द्वौ च कुलायकुल्यौ शणः सप्तदशानि धान्यानि' ॥ इति ॥

—१ स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

२ नाडी नालश्च काण्डोऽस्य ३ पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

४ 'कडङ्गरो वुसं ह्रीवे ५ धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

६ शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णात्रे ७ शमी' शिम्बा ८ त्रिपुत्तरे ।

'क्रद्धमावसितं धान्यं ९ पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

१ स्तम्बः, गुच्छः ( भा० दी० । २ पु ), 'तृण यवादिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥

२ नाडी ( स्त्री ), नालम् ( न ), 'यवादिके डण्ठल' के २ नाम हैं ॥

३ पलालः ( पु न ), 'पुआल' का १ नाम है ॥

४ कडङ्गरः ( + कडङ्करः । पु ), वुसम् ( + वुपम् । न ), 'पुआले आदिके भूसे' के २ नाम हैं ॥

५ धान्यत्वक् ( = धान्यत्वच्, भा० दी०, स्त्री ), तुषः ( पु ), 'धानके भूसे' के २ नाम हैं ॥

६ शूकः ( पु न ), 'धान्य या तृण आदिके चिकने और नुकीले टूंड आदि' का १ नाम है । ( 'धान्य-तृणसे पृथक् विच्छ्र आदिके षड्ङ्का भी यह वाचक है, अत एव इसका किंशारु ( श्लो० २१ में उक्त ) शब्दसे अलग निर्देश है ) ॥

७ शमी ( + शमिः ), शिम्बा ( + शिम्बिः, शिम्बी, सिम्बा, सिम्बिः, सिम्बी । २ स्त्री ), 'छीमी, फली' अर्थात् 'मटर, केराव आदिकी हेंदी' के २ नाम हैं ॥

८ श्लक्ष्णम् ( + श्लक्ष्म ), आवसितम् ( + अवसितम् । २ त्रि ), 'हवा-में ओसाकर इकट्ठा करने योग्य धान आदि अन्न' के २ नाम हैं ॥

९ पूतम्, बहुलीकृतम् ( २ त्रि ), 'ओसाये हुए धान आदि अन्नकी राशि' के २ नाम हैं ॥

१. 'कडङ्करः' इति हरदत्तपाठः इति महे० भा० दी० ॥

२. 'सिम्बा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'रिद्धमावसितं' इति पाठान्तरम् ॥

- १ माषादयः शमीधान्ये २ शूकधान्ये यवादयः ।  
 ३ शालयः कलमाद्याश्च पष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥  
 ४ तृणधान्यानि नीवाराः ५ स्त्री ' गवेधुर्गवेधुका ।  
 ६ 'अयोग्रं' मुसल्लोऽस्त्री ७ स्यादुदूखलमुदूखलम् ॥ २५ ॥  
 ८ प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री ९ चालनी तितडः पुमान् ।  
 १० 'स्यूतप्रसेवौ—

१ ' शमीधान्यम् ( न ), 'उरद आदि ( मसूर, मूंग,..... ) अन्न' का १ नाम है ॥

२ शूकधान्यम् ( न ), 'टूँडवाले जौ आदि ( गेहू, धान,... ), अन्न' का १ नाम है ॥

३ शालिः ( पु ), 'कलम ( जड़हन धान ), साठी आदि धान' का १ नाम है ॥

४ तृणधान्यम् ( न ), नीवारः ( पु ) 'तीनी, सांवा, कोदो आदि' का १ नाम है ॥

५ गवेधुः ( + गवेधुः, मुकु० ), गवेधुका ( २ स्त्री ), 'मुनियोंके अन्न विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ अयोग्रम् ( + अयोनिः ), मुसलः ( २ पु न ) 'मुसल' के २ नाम हैं ॥

७ उदूखलम्, उदूखलम् ( २ न ), 'ओखली' के २ नाम हैं ॥

८ प्रस्फोटनम् ( न ), शूर्पम् ( + शूर्पम् । पु न ), 'सूप' के २ नाम हैं ॥

९ चालनी ( स्त्री । + चालनम् न ), तितडः ( पु । + न ), 'चालनी' के २ नाम हैं ॥

१० स्यूतः ( + स्योनः मुकु० ), प्रसेवः ( २ पु ), 'बोरा या कपड़े आदिके थैले' के २ नाम हैं ॥

१. 'गवेधु—' इति मुकुटः ॥ २. 'अयोनिः' इत्येके पेटुः' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'स्योनप्रसेवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तथा च रत्नकोषः—'माषो मुद्गो राजमाषः कुक्ष्यश्चणकस्तिलः ।

काकाण्डक्षीवर इति शमीधान्यगणः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ 'कण्डोलपिटौ २ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

समानौ ३ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।

४ पौरोगवस्तद्व्यञ्जः ५ सूपकारस्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥

६ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।

७ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार ८ इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

९ अश्मन्तमुद्धानमधिभ्रयणी चुल्लिरन्तिका ।

१० अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥

हसन्त्यपि—

१ कण्डोलः, पिटः ( + पिटकः; पिण्डः स्त्री० स्वा० । २ पु ), 'बाँस या बेंत आदिके बने हुए दौरी, डाली, ओड़ा आदि' के २ नाम हैं ॥

२ कटः, किलिञ्जकः ( २ पु ), 'बाँसकी बनी हुई झाँपी आदि' के २ नाम हैं ॥

३ रसवती ( स्त्री ), पाकस्थानम्, महानसम् ( २ न ), 'रसोइया घर, पाकशाला' के ३ नाम हैं ॥

४ पौरोगवः ( त्रि ), 'पाकशालाके मालिक' का १ नाम है ॥

५ सूपकारः, बल्लवः ( २ त्रि ), स्त्री० स्वा० के मतसे 'व्यञ्जन' ( तरकारी, कहीं आदि ) बनानेवाले रसोइयादार' के २ नाम हैं ॥

६ आरालिकः, आन्धसिकः, सूदः, औदनिकः, गुणः ( ५ त्रि ), स्त्री० स्वा० के मतसे 'रसोइयादार, पाक' के ५ नाम हैं । भा० दी० महे० आदिके मतसे 'सूपकारः' आदि ७ नाम 'रसोइयादर' के ही हैं ॥

७ आपूपिकः, कान्दविकः, भक्ष्यकारः ( + भक्षकारः, भक्ष्यङ्कारः । ३ त्रि ), 'पुआ, पुड़ी, कचौड़ी आदि बनानेवाले, हलवाई' के ३ नाम हैं ॥

८ 'पौरोगव' ( स्त्री० २७ ) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

९ अश्मन्तम् ( + अस्वन्तः, पु ), उद्धानम्, ( उष्मानम्, उद्धानम्, उद्दा-  
बम् । २ न ), अधिभ्रयणी, चुल्लिः ( + चुल्ली ), अन्तिका ( + अन्दिका,  
अन्ती । ३ स्त्री ), 'चुल्ही' के ५ नाम हैं ॥

१० अङ्गारधानिका ( + अङ्गारधानी, अङ्गारपात्री ), अङ्गारशकटी, हसन्ती  
( + हसन्तिका ), हसनी ( ४ स्त्री ), 'बोरसी, 'अँगोठी' के ४ नाम हैं ॥

१. 'कण्डोलपिण्डौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'अस्वन्त उष्मानं' इति 'अश्मन्तमुद्धानं' इति च पाठान्तरे ॥

—१ अथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।

२ वल्लीवेऽम्बरीषं आष्टो ३ ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

४ अलिञ्जरः स्यान्मणिकः ५ कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

६ पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं ७ कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटनिपा ८ वस्त्री शरावो वर्धमानकः ।

९ ऋजीषं पिष्टपचनं—

१ अङ्गारः ( पु न ), अलातम्, उल्मुकम् ( २ न ), भा० दी० के मतसे 'अङ्गार' के ३ नाम हैं । तथा मुकु० और महे० के मतसे पहला नाम 'अङ्गार' का और अन्तवाले दो नाम 'लुआठ' के हैं ॥

२ अम्बरीषम् ( न । + पु ), आष्टः ( पु ), 'खापर' अर्थात् 'चना आदि-को भूँजनेके वर्तन' या भाङ् 'भंसार' के २ नाम हैं ॥

३ कन्दुः ( + कन्दुः । पु स्त्री ), स्वेदनी ( स्त्री ), 'मदिरा बनानेके वर्तन या भट्टी' के २ नाम हैं ॥

४ अलिञ्जरः ( + अलिञ्जरः ) मणिकः ( २ पु ), 'कुण्डा, भाँड़' के ३ नाम हैं ॥

५ कर्करि, आलुः ( + आलुः ), गलन्तिका ( + गलन्ती । ३ स्त्री ), 'गड़आ, हथहर या झंझरा' के ३ नाम हैं ॥

६ पिठरः ( पु । + न ), स्थाळी, उखा ( + उषा २ स्त्री ), कुण्डम् ( न ), 'तसला' बटुआ, बटखोही' के ४ नाम हैं ॥

७ कलशः ( + कलसः । त्रि ), घटः ( पु स्त्री ), कुटः, निपाः ( २ पु न ) 'घड़े' के ४ नाम हैं ॥

८ शरावः ( + सरावः । पु न ), वर्धमानकः ( पु ), 'ढकना, कसोरा' के २ नाम हैं ॥

९ ऋजीषम् ( + ऋजीषम् ), पिष्टपचनम् ( २ न ), 'तावा' के २ नाम हैं ॥

१. 'अलिञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्थाल्युषा कुण्डं कलसस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सरावः' इति वन्धादिरपि—' इति मुकुटः' इति भा० दी० ॥

४. 'ऋजीषं' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

२ कुत्ः कुत्तेः स्नेहपात्रं ३ सैषाख्या कुतुपः पुमान् ।

४ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रमम्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

५ दर्विः कम्बिः खजाका च ६ 'स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' ।

७ अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुं रस्य तु नालिका ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च—

१ कंसः ( पु न ), पानभाजनम् ( + कोशिका, पारी, मल्लिका, चपकः । न ), 'दूध आदि पीनेका प्याला, ग्लास आदि' के २ नाम हैं ।

२ कुत्ः ( स्त्री ), स्नेहपात्रम् ( भा० दी०, न ), 'कुप्पा' अर्थात् 'तेल रखने-के लिये चमड़ेके बने हुए बड़े बर्तन' के २ नाम हैं ॥

३ कुतुपः ( पु ), 'कुप्पी' अर्थात् 'तेल रखनेके लिये चमड़ेके बने हुए छोटे बर्तन' का १ नाम है ॥

४ आवपनम्, भाण्डम्, पात्रम्, अम्रम्, भाजनम् ( ५ न ), 'बर्तन' के ५ नाम हैं ॥

५ दर्विः ( + दर्वी ), कम्बिः ( + कम्बी ), खजाका ( १ स्त्री ), 'कलजुज' के ३ नाम हैं ॥

६ तर्दुः ( + तन्दुः । स्त्री ), दारुहस्तकः ( पु ), 'डब्बू' अर्थात् 'भात-दाह आदि परोसनेके उपयोगी बर्तन' के २ नाम हैं ॥

७ शाकम् ( न पु ), हरितकम् ( न ), शिग्रुः ( पु ) 'भाजी, साग' के ३ नाम हैं ॥

८ नालिका ( + नाडिका, नाली । 'मुकु० स्त्री ) कलम्बः, कडम्बः ( पु ), 'सागके डंठल' के ३ नाम हैं ॥

१. 'स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पञ्चापि (दर्व्यादयो दारुहस्तकान्ताः) पर्यायाः । उक्तद्वेमा ( 'दर्वी पणतर्द्वीः' ) नुरो-  
णात्' इति भा० दी० । किन्तु हेमवन्द्रकृतेऽनेकार्थसंग्रहे '—दर्वी पणतर्द्वीः' ( अने० संग्र०  
२।५२४ ) इत्युक्तमात्र, तेनैव विरचितेऽभिधानचिन्तामणौ 'कम्बिः दर्विः खजाकाऽप्य-  
स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' ( अभि० चिन्ता० ४८७ ) इत्युक्तेषु तदसदित्यवधेयम् ॥

३. 'नालं काण्डे मृगाके च नाड्यो शाके कलम्बके' ( अने० संग्र० २।४९४ ) इति

## —१ 'वैसवार उपस्करः ।

२ तिन्निडीकं च चुकं च वृक्षाम्लश्च वेल्जम् ॥ ३५ ॥

मरीचं कोलकं कृष्णमुषणं धर्मपत्तनम् ।

४ जीरको जरणोऽजाजी कणा ५ कुणो तु जीरके ॥ ३६ ॥

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।

६ आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्या ७ दथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

१ 'वैसवारः' ( + वैषवारः ), उपस्करः ( २ पु ), 'छौक देनेके लिये जीरा आदि फोरन या मसाला' के २ नाम हैं ॥

२ तिन्निडीकम् , चुकम् , वृक्षाम्लम् ( + वृक्षाम्लम् । ३ न ), 'चूक, अमचुर' के ३ नाम हैं ॥

३ वेल्जनम् , मरीचम् ( + मरिचम् ), कोलकम् , कृष्णम् , ऊषणम् , ( + उषणम् ), धर्मपत्तनम् ( + धर्मपत्तनम् । ६ न ) 'मिर्च' के ६ नाम हैं ॥

४ जीरकः, जरणः ( २ पु ), अजाजी, कणा ( २ स्त्री ), 'सफेद जीरा' के ४ नाम हैं ॥

५ सुषवी, कारवी, पृथ्वी ( + पृथ्वीका ), पृथुः, काला, ( + कालिका, उपकालिका ), उपकुञ्चिका, ( + कुञ्चिका, कुञ्ची । ६ स्त्री ), 'काला जीरा' के ६ नाम हैं ॥

६ आर्द्रकम् , शृङ्गवेरम् , ( २ न ), 'अदरक, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ छत्रा ( स्त्री ), वितुन्नकम् , कुस्तुम्बुर ( + कुस्तुम्बुरी ), धान्याकम्

हेमोक्तेः 'नाला न ना पद्मदण्डे च नाली शाककडम्बके' इति (मेदि० पृ० १५९ । श्लो० २८) मेदिन्युक्तेष्वेत्यवधेयम् ॥

१. 'वैषवारः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कृष्णमुषणं धर्मपत्तनम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कणा कृष्णा तु पिप्पली' इत्येके पेठुः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. तदुक्तमात्रेयसंहितायाम् —

'चित्रकं पिप्पलीमूलं पिप्पलीचव्यनागः ॥

धान्याकं रजनीश्चेततण्डुलाश्च समांशकाः ॥ १ ॥

वैसवार इति ख्यातः शाकादिषु नियोजयेत् ॥ इति ॥

अथवा—'२० पलानि हरिद्रायाः, १० पलानि धान्याकस्य, ५ पलानि शुद्धजीरकस्य, २३ पलानि मेथिकायाः, एतच्चतुष्टयं भजितमेव ग्राह्यम् ; ३ पलानि मरीचस्य, ३ पलं रामठस्य । एतत्सर्वमेकत्र संमदितं वैसवार इत्युच्यते' इत्यन्ये' इति महे० भा० दी० ॥



कुस्तुम्बुरु च<sup>१</sup> धान्याकश्मथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वमेषजम् ॥ ३८ ॥

२ आरनालकसौवीरकुलमाषाभिषुतानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च<sup>२</sup> काञ्जिके ॥ ३९ ॥

३ सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ।

४ तत्पत्नी कारवी पृथ्वी बाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

५ निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवणिनी ।

६ सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

( + धान्याकम् , धान्यकम् , धन्यम् , धनीयकम् , धनेयकम् , धन्या । ३ ),  
'धनियाँ' के ४ नाम हैं ॥

१ शुण्ठी ( + शुण्ठिः । स्त्री ), महौषधम् , विश्वम् ( न स्त्री ), नागरम् ,  
विश्वमेषजम् ( शेष न ), 'सोंठ' के ५ नाम हैं ॥

२ आरनालकम् ( + आरनालम् ) सौवीरम् , कुलमाषम् , अभिषुतम् ( + कु-  
लमाषाभिषुतम् ), अवन्तिसोमम् , धान्याम्लम् ( + धान्याम्लम् ), कुञ्जलम् ,  
काञ्जिकम् ( + काञ्जिकम् । ८ न ), 'कांजी' के ७ नाम हैं ॥

३ सहस्रवेधि ( = सहस्रवेधिन् ), जतुकम् , बाह्लीकम् ( + बह्लिकम् ),  
हिङ्गु, रामठम् ( ५ न ), 'हींग' के ५ नाम हैं ॥

४ + स्वपत्नी, कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका ( + वाष्पिका ), कवरी ( + क-  
वरी ), पृथुः ( ६ स्त्री ), 'हींगके पेड़के पत्ते' के ६ नाम हैं ॥

५ निशाख्या ( + 'निशा' अर्थात् रातके वाचक सब नाम ), काञ्चनी,  
पीता, हरिद्रा, वरवणिनी ( ५ स्त्री ), 'हल्दी' के ५ नाम हैं ॥

६ अक्षीवम् ( + अक्षिवम् ), वशिरम् ( + वसिरम् ) 'समुद्री नमक' के  
२ नाम हैं ॥

१. 'धान्यकमथ' इति भा० दी० 'धन्यक' इति मुकु० सम्मते पाठान्तरे ॥

२. 'काञ्जिके' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'स्वपत्नी कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'सिर' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सैन्धवोऽस्त्री' शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
- २ रौमकं 'वसुकं ३ पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥
- ४ सौवर्चलेऽक्षरकके ५ तिलकं तत्र मेनके ।
- ६ मत्स्यण्डी फाणितं ७ खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
- ८ कूचिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाळा तु माजिता ।

१ सैन्धवः ( पु न ), शीतशिवम् ( + सितशिवम् ), माणिमन्थम् ( + माणिबन्धम् ), सिन्धुजम् ( ३ न ), 'सैन्धा नमक, या सिन्धुदेशमें पैदा होनेवाले नमक' के ४ नाम हैं ॥

२ रौमकम्, वसुकम् ( + वस्तकम् । ३ न ), 'साँभर नमक' के २ नाम हैं ॥

३ पाक्यम्, विडम् ( + विडम् । ३ न ), 'खारा नमक या खरिया नमक' के २ नाम हैं ।

४ सौवर्चलम्, अक्षम्, रुतकम् ( ३ न ), 'सोचर नमक' के ३ नाम हैं ॥

५ तिलकम् ( न ), 'काला नमक' का १ नाम है ॥

६ मत्स्यण्डी ( स्त्री ), फाणितम् ( न ), 'राव' के २ नाम हैं ॥

खण्डविकारः ( पु ), शर्करा, सिता ( २ स्त्री ), 'मिश्री, चीनी, शकर' के ३ नाम हैं । ( 'भा० दी० मतसे 'मत्स्यण्डी, .....' ३ नाम 'राव' के और 'शर्करा, सिता' ये २ नाम 'चीनी आदि' के हैं । अन्याचार्यों के मतमें 'मत्स्य-ण्डी, .....' ५ नाम एकार्थक हैं ) ॥

८ कूचिका, क्षीरविकृतिः ( भा० दी० । + किलाटी । २ स्त्री, 'माधा, खोवा' के २ नाम हैं ॥

९ रसाळा, माजिता ( + शिखरिणी । २ स्त्री ), 'दही, खांड (चीनी), घी, मिर्च और सौंठसे बनाई हुई चटनी' के २ नाम हैं, इसे गुजराती लोग 'सिखरन या सिकरन' कहते हैं ) ॥

१. 'सितशिवं माणिबन्धं' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वस्तकं पाक्यं विडं' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा च सूद ( पाक ) शास्त्रम्—

'अर्धाढकः सुचिरपशुषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य ।

सर्पिः पलं मधु पलं मरिचं द्विकर्षं शुण्ठ्याः पलादमपि चार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥ १ ॥

सूक्ष्मे पटे ललनया मृदुपाणिघृष्टा कर्पूरधूलिसुरभीकृतपात्रसंस्था ।

एषा वृकोदरकृता सरसा रसाळा यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन' ॥ २ ॥ इति ॥

- १ स्यात्सेमनं तु निष्ठानं २ त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
- ३ शूलाकृतं भट्टित्रं स्याच्छूल्यश्मुख्यं तु पैठरम् ।
- ५ 'संस्कृतं सर्पिषा दध्ना सापिष्कं दधिकं क्रमात् ( २९ )
- ६ उदलावणिकं तत्स्याद्यत्सिद्धं लवणाम्भसा' ( ३० )
- ७ प्रणीतमुपसम्पन्नं ८ प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥
- ९ स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं १० संमृष्टं शोधितं समे ।

१ तेमनम्, निष्ठानम् ( २ न ), 'दही-बारा, कढ़ी आदि' के २ नाम हैं ।  
 २ यहाँसे आगे 'वासित' (श्लो० ४६) शब्द तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥  
 ३ शूलाकृतम्, भट्टित्रम्, शूल्यम् ( ३ त्रि ), 'लोहे के छड़ से पकाये हुए मांस' के ३ नाम हैं ॥

४ उख्यम्, पैठरम् ( २ त्रि ), 'बटुएमें पकाये हुए भात आदि' के २ नाम हैं ॥

५ [ सापिष्कम्, दाधिकम् ( १ त्रि ), 'घी और दही में बनाये हुए पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है ] ॥

६ [ उदलावणिकम् ( त्रि ), 'पानी और नमक में बनाये हुए पदार्थ' का १ नाम है ] ॥

७ प्रणीतम्, उपसम्पन्नम् ( २ त्रि ), 'रस आदिमें बनाये हुए रसिआव आदि पदार्थ या तैयार भोजनमात्र' के २ नाम हैं ॥

८ प्रयस्तम् सुसंस्कृतम् ( २ त्रि ) 'परिश्रमसे पकाये ( बनाये ) हुए उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

९ पिच्छिलम्, विजिलम् ( + विजिजलम्, विज्जलम्, विजिविलम्, विजि-  
 पिलम्, विज्जनम्, । २ त्रि ), 'रसदार तरकारी, पतली दही आदि' के २ नाम हैं ॥

१० संमृष्टम्, शोधितम् ( २ त्रि ), 'केश, कीड़ा आदि चुनकर साफ किये हुए अन्नादि' के २ नाम हैं ॥

१. 'संस्कृतं.....लवणाम्भसा' इत्ययमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने 'शूल्योख्य' शब्दयोर्मध्ये एव पठ्यते इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकरूपेण स्थापितः ॥

- १ चिकणं मसृणं स्निग्धं २ तुल्ये भावितवासिने ॥ ४६ ॥
- ३ आपकं पौलिरभ्यूषा ४ लाजाः पुंभूमिनि चाक्षताः ।
- ५ पृथुकः स्याच्चिपिटको ६ धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥
- ७ पूषोऽपूषः पिष्टकः स्यात् ८ करम्भो दधिसक्तवः ।
- ९ भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥
- १० भिस्सटा दग्धिका—

१ चिकणम्, मसृणम्, स्निग्धम् (३ त्रि), 'चिकने पदार्थ' के ३ नाम हैं ।

२ भावितम्, वासितम् ( २ त्रि ), 'हीन आदिसे सुवासित व्यञ्जनादि' के २ नाम हैं ॥

३ आपकवम् ( न ), पौलिः, अभ्यूषः ( + अभ्योषः, अभ्युषः । २ पु ), 'होरहा, मुरमुरा, ऊमी, हाबुस आदि अधपके ( तताये हुए ) पदार्थ' के ३ नाम हैं ॥

४ लाजाः ( + स्त्री ), अक्षताः ( २ पु नि० व० व० ), 'लावा, खोल' अर्थात् 'भूजे हुए धान आदि' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'लाजाः' यह १ नाम उक्तार्थक है और 'अक्षताः' यह १ नाम 'देवताओं को चढ़ाने के योग्य चावल' का है' ) ॥

५ पृथुकः, चिपिटकः ( + चिपिटः । २ पु ), 'चिउड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ धानाः ( स्त्री नि० व० व० ), 'भुने हुए जौ' अर्थात् 'फरुही या बहुरी' का १ नाम है ॥

७ पूषः, अपूषः, पिष्टकः ( ३ पु ), 'पूषा, मालपूषा आदि' के ३ नाम हैं ॥

८ करम्भः ( + करम्भः । पु ), दधिसक्तवः ( भा० दी०, नि० व० व० ), 'दहीसे युक्त सत्तू' के २ नाम हैं ॥

९ भिस्सा ( स्त्री ), भक्तम्, अन्धः ( = अन्धस् ), अन्नम् ( ३ न ), ओदनः ( पु न ), दीदिविः ( पु । + स्त्री ), 'भात' के ६ नाम हैं ॥

१० भिस्सटा, दग्धिका ( २ स्त्री ), 'जले हुए भात आदि' के २ नाम हैं ॥

१. 'नाक्षतम्' इति मुकुटः' इति मा० दी० ॥

२. 'भृष्टयवे' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।

- २ 'मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥  
 ३ यवागूर्वाणिका धाणा विलेपी तरला च सा ।  
 ४ 'म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं ५ कृसरस्तु तिलौदनः' ( ३१ )  
 ६ गव्यं त्रिषु गवां सर्वे ७ गोषिट् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥  
 ८ तत्तु शुण्कं करीषोऽस्त्री ९ दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।  
 १० पयस्यमाज्यवध्यादि ११ द्रव्यं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

१ सर्वरसाम्रम् ( मा० दो० ), मण्डम् ( २ पु ), 'माड्' के २ नाम हैं ॥  
 २ मासरः, आचामः, निस्त्रावः ( + विस्त्रावः मुकु० । ३ पु ), 'भातके माड्' के ३ नाम हैं ॥

३ यवागूः, उष्णिका, धाणा, विलेपी, तरला ( ५ स्त्री ), 'लपसी, हलुआ' के ५ नाम हैं । ( थोड़े गर्मपानी में पकाये गये चावल को 'अन्न', चौगुने पानी में 'विलेपी', चौदहगुने पानी में 'मण्ड', छगुने पानी में 'यवागू', और अठारहगुने पानी में 'यूप' रंजाएँ 'मैषज्यरनावली' में कही गयी है; तथापि उक्त मेद यहाँ विवक्षित नहीं हैं ) ॥

[ म्रक्षणम्, अभ्यञ्जनम्, तैलम् ( ३ न ), 'तैल' के ३ नाम हैं ] ॥

५ [ कृसरः ( + कृशरः, त्रिसरः २ पु । २ स्त्री ), + तिलौदनः ( २ पु ), 'तिलयुक्त अन्न या तिलदी' के २ नाम हैं ] ॥

६ गव्यम् ( त्रि ), 'गायके दूध, दही, घी, गोबर आदि' का १ नाम है ॥

७ गोषिट् ( = गोविष् स्त्री ), गोमयम् ( न पु ), 'गोबर' के २ नाम हैं ॥

८ करीषः ( पु न ), 'सूखे गोबर' अर्थात् 'गोहरी, गोहरा, गोहठा, उपला, कंकरा आदि' का १ नाम है ॥

९ दुग्धम्, क्षीरम् पयः ( = पयस् । + गोरसः, कधस्यम्, सोमजम्, स्तन्यम् । ३ न ), 'दूध' के ३ नाम हैं ॥

१० पयस्यम् ( त्रि ) 'दूधसे बने हुए दही, जोवा, मक्कन, घी आदि पदार्थ' का १ नाम है ॥

११ द्रव्यम् ( + द्रव्यम्, त्रय्यम्, पञ्चमम् ), 'पतले दही' का १ नाम है ॥

१. मासराचामनिस्त्रावा' इति मुकुटः' इति मा० दो० ॥

२. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने मूलरूपेणोपलभ्यते ॥

३. 'त्रय्यम्' इति मुकुटः' इति मा० दो० ॥

४. तदुक्तं मैषज्यरत्नावल्यां सप्तचत्वारिंशत्पृष्ठे चौ० सं० पुस्तकाकथमुद्रिते 'अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी च चतुर्गुणे । मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽमसि ॥ अष्टादशगुणे तोये यूषः शार्ङ्गधरेरितः ॥' इति ॥

- १ घृतमाख्यं हविः सर्पिर्नवनवीतं नवोद्धतम् ।
- २ तत्तु हैयङ्गवीनं यद्धयो गोदोहोद्धतं घृतम् ॥ ५२ ॥
- ४ दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।
- ५ तक्रं दुग्धमथितं पादाम्बुधाम्बु निजलम् ॥ ५३ ॥
- ६ मण्डं दधिभवं मस्तु ७ पीयूषोऽभिनवं पथः ।

१ घृतम्, आख्यम्, हविः ( = हविस् + हविष्यम् ), सर्पिः ( = सर्पिस् + न ), 'घी' के ४ नाम हैं ॥

२ नवनवीतम्, नवोद्धतम् ( २ न ), 'मक्खन' के २ नाम हैं ॥

३ हैयङ्गवीनम् ( न ), 'नैनू' अर्थात् 'एक दिनके बासी दूधसे निकाले हुए मक्खन' का १ नाम है ॥

४ दण्डाहतम्, कालशेयम्, अरिष्टम् ( ३ न ), गोरसः ( पु ), 'मथनीसे महे ( मथन किये ) हुए गोरस' के ३ नाम हैं ॥

५ तक्रम्, उदधितम् ( + उदधितम् ), मथितम् ( ३ न ), 'चौथाई पानी, आधा पानी और बिना पानीवाले दही' के क्रमशः १—१ नाम हैं । ( 'धन्वन्तरिने 'दुगुने पानीवाले दहीका 'श्वेतरसम्', आधे पानीवाले दहीका 'उदधितम्', तिहाई पानीवाले दहीका 'तक्रम्' और बिना पानीवाले दहीका 'मथितम्' नाम है' ऐसा कहा है ) ॥

६ मस्तु ( न ), भा० दी० के मतसे 'कपड़ेमें बांधकर निकाले हुए दहीके पानी' का और महे० के मतसे 'दहीकी छालही' ( जमे हुए दहीकी, मलाई, उपरी भाग ) का १ नाम है ॥

७ पीयूषः ( + पेयूषम् । पु । + न ), 'थोड़े दिनकी या 'सात दिन तककी ग्याई हुई गायके दूध' अर्थात् 'फेनुस' का १ नाम है ॥

१. तदुक्तं धन्वन्तरिणा—'द्विगुणाम्बु श्वेतरसमद्वौदकमुदधितम् ।

तक्रं त्रिमासमिन्नाम्बु केवलं मथितं स्मृतम्' ॥ १ ॥ इति ॥

२. 'पीयूषं सप्तदिवसावधि क्षीरे तथाऽमृते' ( मेदि० पृ० १८६ श्लो० ४१ ) इति मेदिन्युक्तेः, तथैव विश्वकोषोक्ते 'सप्त दिवसावधि प्रसूताया गोः पयसः 'पीयूष' संज्ञा; अतः परन्तु क्षीरादिसंज्ञैव । इत्यायुषस्तु 'ऊषस्यं क्षीरं स्याद् दुग्धं स्तन्यं पयश्च पीयूषम्' ( अमि० रत्न० २।११९ ) इति 'पीयूष' शब्दस्य सामान्यतः क्षीरपर्यायतामेवाहस्त्ववधेयम् ॥

- १ अनशाया बुभुक्षा क्षुद् १ आसस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥  
 ३ सपीतिः स्त्री तुल्यपानं ४ सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।  
 ५ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो ६ जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥  
 जेमनं क्लेष्ट आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।  
 ७ सौहिर्यं तर्पणं तृतिः ८ फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥  
 ९ कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।  
 १० गोपे गोपालगोसङ्ख्यगोधुगाभीरवल्गवाः ॥ ५७ ॥

१ अनशाया, बुभुक्षा, क्षुद् ( = क्षुध् । + क्षुधा, पसा । ३ स्त्री ), 'भूख' के ३ नाम हैं ॥

२ आसः, कवलः ( २ पु ), 'आस, कौर' के २ नाम हैं ॥

३ सपीतिः ( स्त्री ), तुल्यपानम् ( न ), 'साथ में पान करने' के २ नाम हैं ॥

४ सग्धिः ( स्त्री ), सहभोजनम् ( न ), 'साथ में भोजन करने' के २ नाम हैं ॥

५ उदन्या, पिपासा, तृट् ( = तृष् । + तृषा, तृष्णा । ३ स्त्री ), तर्षः ( पु ) 'प्यास' के ४ नाम हैं ॥

६ जग्धिः ( स्त्री ), भोजनम्, जेमनम् ( + जमनम्, जवनम् । २ न ), क्लेष्टः ( + क्लेपः ), आहारः, निघासः ( + निघसः ), न्यादः ( + अभ्यवहारः पु, ग्रस्यवसानम्, खादनम्, अशनम्, भक्षणम् । ४ पु ), 'भोजन' के ७ नाम हैं ॥

७ सौहिर्यम्, तर्पणम् ( २ न ), तृतिः ( स्त्री ), 'तृप्ति, अघाने' के ३ नाम हैं ॥

८ फेला ( + फेली, पिण्डोलिः । स्त्री ), भुक्तसमुज्झितम् ( न ), 'आकर छोड़े हुए जूटे' के २ नाम हैं ॥

९ कामम्, प्रकामम्, पर्याप्तम्, निकामम्, इष्टम्, यथेप्सितम् ( ६ क्रि याविशेषण ), 'इच्छानुसार, काफी, मतलबभर' के ६ नाम हैं ॥

१० गोपः, गोपालः, गोसङ्ख्यः, गोधुक् ( = गोदुह् । + गोदुहः ), आभीरः ( + अभीरः ), वल्गवः ( १ पु ), 'अहीर, गोप, ग्वाला' के ६ नाम हैं ॥

• 'क्लेष्ट आहारो निघासो' इति पाठान्तरम् ॥

- १ गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं २ द्वौ गवीश्वरे ।  
गोमान्गोमी ३ गोकुलं तु गोधनं स्याद् गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
- ४ त्रिष्वाशितङ्गवीनं तद् गायो यत्राशिताः पुरा ।
- ५ उक्षा भद्रो बलीवर्दः ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥  
अनडवान्सौरभेयो गौर्दक्षणां संदतिरौक्षकम् ।
- ७ गव्या गोत्रा गवां ८ वात्सकेन्योवात्सकधैनुके ॥ ६० ॥
- ९ 'वृषो महान्महोक्षः स्याद् १० वृद्धोक्षस्तु जरद्रवः ।
- ११ उत्पद्य उक्षा जातोक्षः १२ सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

१ पादबन्धनम् ( न ), 'गाय, भैरु, घोड़े, गददे, आदि बांधे जाने वाले पशुओं' का १ नाम है ॥

२ गवीश्वरः, गोमान् ( = गोमत् ), गोमी ( गोमिन् । ३ पु ), 'साँड़' के ३ नाम हैं ॥

३ गोकुलम्, गोधनम् ( २ न ), 'गौओंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

४ आशितङ्गवीनम् ( त्रि ), गौओंके चराने या खिलानेके पुराने स्थान' का १ नाम है ॥

५ उक्षा ( = उच्चन् ) भद्रः, बलीवर्दः ( + बलीवर्दः, वलीवर्दः ), ऋषभः, वृषभः, वृषः, अनडवान् ( = अनडुव् ), सौरभेयः, गौः ( = गो । + शकरः, शाकरः, शाङ्करः, ककुष्मन् = ककुक्षत् । ९ पु ), 'बैल' के ९ नाम हैं ॥

६ औक्षकम् ( न ), 'बैलोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ गव्या, गोत्रा ( २ स्त्री ), 'गायोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ वात्सकम्, धैनुकम् ( २ न ), 'बछवों तथा धेनुओं (नई व्याई हुई गायों) के झुण्ड' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

९ महोक्षः ( पु ), 'बड़े डीलवाले बैल' का १ नाम है ॥

१० वृद्धोक्षः, जरद्रवः, ( २ पु ), 'बूढ़े बैल' के २ नाम हैं ॥

११ जातोक्षः ( पु ), 'बछवेकी अवस्थाको छोड़कर जवान हुए बैल' का १ नाम है ॥

१२ तर्णकः ( पु ), 'शीघ्र पैदा हुए बछवे' का १ नाम है ॥

१. 'उक्षा महान्' इति पाठान्तरम् ॥



- १ शकृत्करिस्तु वत्सः स्यादहम्यवत्सतरौ समौ ।  
 २ आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः ४ षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥  
 ५ स्कन्धदेशे त्वस्य वहः ६ सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 ७ स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः ८ प्रष्ठवाङ् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥  
 ९ युगादीर्णा तु घोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।  
 १० जनति तेन तद्धाढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

१ शकृत्करिः, वत्सः ( २ पु ), 'छोटे बछवे' के २ नाम हैं ॥

२ दग्ग्यः, वत्सतरः ( २ पु ), 'जीतने के योग्य तैयार हुए बछवे' के २ नाम हैं ॥

३ आर्षभ्यः ( पु ) 'साँड़ बनाने योग्य बछवे' का १ नाम है ॥

४ षण्डः ( + षण्डः ), गोपतिः, इट्चरः ( + इट्चरः । ३ पु ), 'स्व-छलन्द धूमनेवाले साँड़' के ३ नाम हैं ॥

५ वहः ( पु ), 'बैलके कन्धे' का १ नाम है ॥

६ सास्ना ( स्त्री ), गलकम्बलः ( पु ), 'लार' अर्थात् गाय-बैलों के गलेमें लटकनेवाले चमड़े' के २ नाम हैं ॥

७ नस्तितः, नस्योतः ( + नस्तोतः । २ पु ), 'नाथे हुए गौ आदि' के २ नाम हैं ॥

८ प्रष्ठवाङ् ( = प्रष्ठवाह् । + पष्ठवाङ् = पष्ठवाह् ), युगपार्श्वगः ( २ पु ), 'पहले पहल बछवेको हलमें चलना सिखलानेके लिये जुआठमें बाँधे हुए काठ' के २ नाम हैं ॥

९ युग्यः, प्रासङ्ग्यः, शाकटः ( ३ पु ), 'जुआठको ढोनेवाले बैल, दमन करने (हलमें चलना सिखलाने) के लिये पहले पहल कन्धे पर रखे हुये काठको ढोनेवाले बैल और गाड़ीको खींचनेवाले बैल' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

१० हालिकः, सैरिकः ( २ पु ), 'हलसे खोदे जानेवाले, हलको ढोने-वाले, हलवाहा (हलको चलानेवाला) हलमें चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

१. 'गोपतिरिट्चरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्कन्धप्रदेशस्तु' इति 'स्कन्धदेशस्त्वस्य' इति च पाठान्तरम् ॥

३. 'नस्तोतः पष्ठवाङ्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरन्धराः ।
- २ उभावेकधुरीणैरुधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
- ३ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
- ४ माहेयी सौरभेयी गौरुक्ता माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥  
अर्जुन्यध्व्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषुर्जनैचिकी ।
- ६ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
- ७ द्विहायनी द्विवर्षा गौरैकाब्दा त्वेकहायनी ।

१ धूर्वहः धुर्यः, धौरेयः, धुरीणाः, धुरन्धरः ( ५ पु ), 'धुरा ( भार ) को डोनेवाले बैल' के ५ नाम हैं ॥

२ एकधुरीणः, एकधुरः, एकधुरावहः ( ३ पु ), 'सिर्फ एक तरफ ( दहने या बायें ) 'चलनेवाले बैल' के ३ नाम हैं ॥

३ सर्वधुरीणः, सर्वधुरावहः ( भा० दी० । २ पु ), 'दहने और बायें दोनों तरफ चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

४ माहेयी ( + मही ), सौरभेयी ( + सुरभिः ), गौः ( + गो ), उक्ता, माता ( = मातृ ), शृङ्गिणी, अर्जुनी, अध्व्या, रोहिणी ( ९ स्त्री ), 'गाय' के ९ नाम हैं ॥

५ नैचिकी ( + नीचिकी । स्त्री ), 'उत्तम गाय' का १ नाम है ॥

६ शबली, धवला ( २ स्त्री ), आदि ( 'कृष्णा, कपिला, पाटला; ३ स्त्री, ..... ) 'वर्ण' ( रंग ) आदि ( प्रमाण और शरीर आदि ) के भेदसे 'चितकबरी, धावर, आदि ( काली, कपिल या कहल और पाटक या लाल, ..... ) 'गायों' का क्रमशः १—१ नाम है । ( 'प्रमाण भेदसे जैसे—'दीर्घा, ह्रस्वा, खर्वा ( ३ स्त्री ), ..... । शरीर-भेदसे जैसे—पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी, तीक्ष्णशृङ्गी, ( ३ स्त्री ), ..... ) ।

७ द्विहायनी, द्विवर्षा ( भा० दी० ), एकाब्दा ( भा० दी० ), एकहायनी, चतुराब्दा ( भा० दी० ), चतुर्हायणी, त्र्यब्दा ( भा० दी० ), त्रिहायणी ( ८ स्त्री ),

• 'नीचिकी' इति पाठान्तरम् ॥

- चतुरन्वा चतुर्हायण्येवं ज्यन्वा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥  
 १ वशा बन्ध्या २ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा ३ऽथ सन्धिनी ।  
 आक्रान्ता वृषभेणा ४ऽथ वेहद्गर्भोपवातिनी ॥ ६९ ॥  
 ५ कात्यायसर्पा वजने ६ \* प्रष्टौही बालगर्भिणी ।  
 ७ स्यादचण्डी तु सुकरा ८ बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥  
 ९ चिरप्रसूता वष्कयिणी—

‘दो वर्ष, एक वर्ष, चार वर्ष और तीन वर्षकी उम्रवाली गौ’ के क्रमशः २—२ नाम हैं ॥ ( उपलक्षणसे मानवादि के लिए भी इन शब्दोंका प्रयोग होता है ) ॥

१ वशा, बन्ध्या ( + वन्ध्या । २ स्त्री ), ‘बाँझ ( बच्चा नहीं पैदा करनेवाली ) गौ आदि’ के २ नाम हैं ॥

२ अवतोका ( + वतोका ), स्रवद्गर्भा ( २ स्त्री ), ‘अकस्मात् जिसका गर्भ गिर गया हो उस गौ आदि’ के २ नाम हैं ॥

३ सन्धिनी ( स्त्री ), बाढ़ी ( साँड़के साथ संगम की ) हुई गाय’ का १ नाम है ॥

४ वेहद् (= वेहत), गर्भोपवातिनी ( भा० दी० । + वृषोपगा । २ स्त्री ), ‘साँड़के साथ संयोगकर गर्भको नष्ट की हुई गाय’ के २ नाम हैं ॥

५ कात्या ( अन्य मतसे ), उपसर्पा ( २ स्त्री ), ‘उठी हुई ( साँड़के साथ मैथुन करनेकी इच्छा करनेवाली ) ‘गाय’ के २ नाम हैं ॥

६ प्रष्टौही ( + पष्टौही ), बालगर्भिणी ( भा० दी० । २ स्त्री ), ‘आँकर ( पहले पहल गर्भ धारण की हुई ), ‘गाय’ के २ नाम हैं ॥

७ अचण्डी, सुकरा ( + सुशकरी । २ स्त्री ), सूधी गाय’ के २ नाम हैं ॥

८ बहुसूतिः, परेष्टुका ( २ स्त्री ), ‘बहुत बच्चा पैदा की हुई गाय’ के २ नाम हैं ॥

९ चिरप्रसूता, वष्कयिणी ( + वष्कयणी, वष्कयणी । २ स्त्री ) ‘बकेना ( बहुत दिनों की ध्याई हुई ) गाय’ के २ नाम हैं ॥

\* ‘पष्टौही’ इति पाठान्तरम् ॥

—१ धेनुः स्यान्नवसूतिका ।

- २ सुवता सुखसंदोह्या ३ पीनोष्ठी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥  
 ४ द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा ५ धेनुष्या बन्धके स्थिता ।  
 ६ समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥  
 ७ ऊधस्तु क्लीबमापीनं ८ समा शिवककीलकौ ।  
 ९ न पुंसि दाम संदानं १० पशुरञ्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

१ धेनुः, नवसूतिका ( + नवसूतिः । २ स्त्री ), 'थोड़े दिनोंकी व्याई हुई गाय' के २ नाम हैं ॥

२ सुवता, सुखसंदोह्या ( + सुखसंदुह्या । २ स्त्री ), 'बिना झंझट किये दूही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं । ( 'इसी तरह 'दुःखदोह्या, करटा ( २ स्त्री ), 'दुःख ( मुश्किल ) से दूही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं' ) ॥

३ पीनोष्ठी, पीवरस्तनी ( २ स्त्री ), 'मोटे २ स्तनवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

४ द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा ( २ स्त्री ), 'एक द्रोण ( २५६ पल = १०२४ भर करीब १३ सेर तथा आयुर्वेदिक तौलसे १६ सेर ) दूध देनेवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

५ धेनुष्या ( + पीतदुग्धा । स्त्री ), 'बंधक रक्खी हुई गाय' का १ नाम है ॥

६ समांसमीना ( स्त्री ), 'घनपुरही' ( प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली ) गाय' का १ नाम है ॥

७ ऊधः ( = ऊधस् ), आपीनम् ( २ न ), 'गायके थन' के २ नाम हैं ॥

८ शिवकः, कीलकः ( २ पु ), गौओंको बांधनेके खूँटे के २ नाम हैं ॥

९ दाम ( = दामन् न स्त्री ), संदानम् ( न ), भा० दी० के मतसे 'नोय' अर्थात् 'दूहनेके समय गायोंके पैरको बांधनेवाली रस्सी' के और महे० के मतसे 'पगड़ा' के २ नाम हैं ॥

१० पशुरञ्जुः, दामनी ( + बन्धनी । २ स्त्री ), भा० दी० के मतसे 'पगड़ा' अर्थात् 'पशुको बांधनेकी रस्सी के और महे० के मतसे 'दँवरी' अर्थात् 'घान आदिकी दँवनीके समय अनेक पशुओंको बांधनेवाली रस्सी—जिसका एक छोर मेंह में लगे रहनेसे चारो ओर घूमा करता है'—के और अन्य आचार्योंके मतसे 'पशुओंके छान' अर्थात् 'पैर बांधनेकी रस्सी' के २ नाम हैं ॥

१. 'बन्धनी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
- २ 'कुठरो दण्डविष्कम्भो ३ मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
- ४ उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः ५ करभः शिशुः ।
- ६ करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
- ७ अजा छागी ८ 'शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।
- ९ मेढोरभोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
- १० उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

१ वैशाखः, मन्थः, मन्थानः, मन्थाः ( = मथिन् ), मन्थनदण्डकः ( + खजकः, जुब्धः । ५ पु ), 'मथनीके डण्डे' के ५ नाम हैं ॥

२ कुठरः ( + कुटरः ), दण्डविष्कम्भः ( २ पु ), 'जिसमें मथनीके डण्डेको बांधकर दही महा जाता है उस खम्भे आदि' के २ नाम हैं ॥

३ मन्थनी, गर्गरी ( + कलशी । २ स्त्री ), 'कहतरी' अर्थात् 'जिसमें दहीको महा जाता है उस पात्र' के २ नाम हैं ॥

४ उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः, महाङ्गः ( + दासेरकः, दाशेरः, दीर्घजङ्घः, दीर्घ-ग्रीवः, रवणः, धूम्रकः, कण्टकाशनः । ४ पु ), 'ऊँट' के ४ नाम हैं ॥

५ करभः ( पु ), 'ऊँटके तीन वर्षतकके उम्रवाले बच्चे' का १ नाम है ॥

६ शृङ्खलकः ( पु ), लकड़ीकी बनी हुई सिकड़ीसे बांधे हुए ऊँटके बच्चे' का १ नाम है ॥

७ अजा, छागी ( २ स्त्री ) 'बकरी, छेर' के २ नाम हैं ॥

८ शुभः ( + स्तभः, तुभः ), छागः ( छागः ), वस्तः ( + वस्तः ), छगलकः ( + छगलः ), अज्रः ( ५ पु ), 'बकरा, खसती' के ५ नाम हैं ॥

९ मेढूः ( + मेण्डकः ), उरभ्र, उरणः, ऊर्णायुः, मेषाः, वृष्णिः, एडकः, ( + डहुः, हुडः । ७ पु ) 'भैंड़े' के ७ नाम हैं ॥

१० औष्ट्रकम्, औरभ्रकम्, आजकम् ( ३ न ), 'ऊँटों, भैंड़ों और बकरों-के झुण्ड' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

१. 'कुटरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शुभच्छागवस्तच्छगलका' इति 'स्तमच्छगवस्तच्छगलका' इति पाठान्तरे ॥

- १ चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥
- २ वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिकः ।  
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥
- ३ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः ४ क्रयविक्रयिकौ समौ ।
- ५ वाणिज्यं तु वणिज्या स्यादन्मूल्यं वस्नोऽप्यक्षक्रयः ॥ ७९ ॥
- ७ नीवी परिपणो मूलधनं ८ लाभोऽधिकं फलम् ।
- ९ परिदानं परीवर्त्तो नैमेयनिमयावधि ॥ ८० ॥

१ चक्रीवान् ( = चक्रीवत् ), बालेयः ( + बालेयः ), रासभः, गर्दभः, खरः ( + क्रूरः, शङ्खकर्णः, वैशाखनन्दनः । ५ पु ), 'गर्दहे' के ५ नाम हैं ॥

२ वैदेहकः, सार्थवाहः, नैगमः ( + निगमः ), वाणिजः, वणिक् ( = वणिज् ), पण्याजीवः, आपणिकः, क्रयविक्रयिकः ( ८ पु ), 'बनियाँ, व्यापारी' के ८ नाम हैं ॥

३ विक्रेता ( = विक्रेतु ), विक्रयिकः ( २ पु ), 'बेचनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ क्रयकः, क्रयिकः ( + क्रेता = क्रेतु । २ पु ), 'खरीददार' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिज्यम् ( न ), वणिज्या ( स्त्री ), 'व्यापार' के २ नाम हैं ॥

६ मूल्यम् ( न ), वस्नः, अवक्रयः ( २ पु ), 'कीमत, दाम' के ३ नाम हैं ॥

७ नीवी ( + नीविः । स्त्री ), परिपणः, मूलधनम् ( न ) 'व्यापार-में लगाये हुए मूलधन' के ३ नाम हैं ॥

८ लाभः ( पु ), अधिकम्, फलम् ( १ भा० दी० । २ न ), 'मुनाफा, फायदा, लाभ' के २ नाम हैं ॥

९ परिदानम् ( + प्रतिदानम् । न ), परीवर्त्तः ( + परिवर्त्तः ) नैमेयः ( + वैमेयः ), निमयः ( + विमयः । ३ पु ), 'किसी पदार्थादिको बदल-बदल करने' के ४ नाम हैं ॥

१. 'प्रतिदानम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ पुमानुपनिधिर्न्यासः २ प्रतिदानं तदर्पणम् ।  
 ३ क्रये प्रसारितं क्रय्यं ४ क्रयं केतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥  
 ५ विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं ६ क्रय्यादयस्त्रिषु ।  
 ७ क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥  
 ८ विपणो विक्रयः ९ संख्याः सङ्ख्येये ह्यादश त्रिषु ।

१ उपनिधिः, न्यासः ( + निक्षेपः । २ पु ), 'थाती, धरोद्वर रक्षने' के २ नाम हैं ॥

२ प्रतिदानम् ( न ), 'धरोद्वर ( थाती ), को वापस करने' का १ नाम है ॥

३ क्रय्यम् ( त्रि ), 'सौदा' अर्थात् 'ग्राहकोंको खरीदनेके लिये दूकानपर फैलाई हुई वस्तु' का १ नाम है ॥

४ क्रयम् ( त्रि ), 'खरीदने योग्य वस्तु' का १ नाम है ॥

५ विक्रेयम्, पणितव्यम्, पण्यम् ( ३ त्रि ), 'बेचने योग्य वस्तु' के ३ नाम हैं ॥

६ 'क्रय आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ सत्यापनम् ( + सत्यापना स्त्री । न ), सत्यङ्कारः ( पु ), सत्याकृतिः ( स्त्री ), 'साई, बयाना, एडवान्स, पेशगी' के ३ नाम हैं ॥

८ विपणः, विक्रयः ( २ पु ), 'बेचने' के २ नाम हैं ॥

९ 'एकः, द्वौ, त्रयः, ... नवदश' भा० द्वी० के मतसे 'एक, दो, तीन, ... नवदश ( उन्नीस ) संख्या' का, और 'एकः, द्वौ, त्रयः, ... अष्टादश' महे०, मुकु०, क्षी० रवा० आदिके मतसे 'एक दो, तीन, ... अष्टादश तक संख्या' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है । ये (एक, द्वि, ...) शब्द गिने जानेवाले वस्तुके वाचक रहने-पर त्रिलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम्; द्वौ ब्राह्मण्यौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे; ...', इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्द क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' हैं । अत एव 'एक और द्वि' शब्दका भी क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है । मूलमें 'द्वि' शब्द के अवधारणार्थक होनेसे सामानाधिकरण्य ( एको ब्राह्मणः, द्वौ ब्राह्मणौ, त्रयो ब्राह्मणाः; एका ब्राह्मणी, द्वे ब्राह्मण्यौ, तिस्रो ब्राह्मण्यः

## १ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः सङ्ख्येयसङ्ख्ययोः ॥ ८३ ॥

एकं वस्त्रम्, द्वे वस्त्रे, त्रीणि वस्त्राणि; '.....' ) से ही व्यवहार होता है; वैय-  
धिकरण्य ( 'एको ब्राह्मणस्य, द्वौ ब्राह्मणयोः, त्रयो ब्राह्मणानाम्; एका ब्राह्म-  
ण्याः, द्वे ब्राह्मण्योः, तिस्रो ब्राह्मणीनाम्; एकं वस्त्रस्य, द्वे वस्त्रयोः, त्रीणि वस्त्रा-  
णाम्, .....' ) से व्यवहार नहीं होता है' । इसमें भी 'एकः' द्वौ, त्रयः, चत्वारः'  
अर्थात् 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' (एक, दो, तीन और चार संख्याके वाचक)  
शब्दोंके तीनों लिङ्गोंमें भिन्न २ रूप होते हैं और 'पञ्च, षट्, ...अष्टादश' अर्थात्  
'पञ्चन्' षष्, .....अष्टादशन्' ( पांच, छः, .....अठारह संख्याके वाचक )  
शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमें एक समान होते हैं । ( क्रमशः उदाहरण ।  
पहला (तीनों लिङ्गोंमें भिन्न रूपवाले शब्द) जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी,  
एकं वस्त्रम्, द्वौ ब्राह्मणौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे; त्रयो ब्राह्मणाः, तिस्रो ब्राह्मण्यः,  
त्रीणि वस्त्राणि; चत्वारो ब्राह्मणाः, चतस्रो ब्राह्मण्यः, चत्वारि वस्त्राणि' इन वाक्योंमें  
'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक  
लिङ्ग' होनेसे 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' शब्दोंका क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग  
और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है' । दूसरा (तीनों लिङ्गोंमें समान लिङ्गवाले  
शब्द ) जैसे—'पञ्च ब्राह्मणाः, पञ्च ब्राह्मण्यः, पञ्च वस्त्राणि, .....'; इन  
वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और  
नपुंसकलिङ्ग' होनेपर भी 'पञ्चन्' शब्दका प्रयोग तीनों लिङ्गोंमें समान ही हुआ  
है, भिन्न २ नहीं; इसी तरह 'षट्, सप्तन्, ...अष्टादश' ( छ, सात, .....  
अठारह' संख्याके वाचक ) शब्दोंके भी तीनों लिङ्गोंमें समान ही रूप होते हैं ।  
विशेषः—ये सब लिङ्ग भेद केवल संस्कृतमें ही होते हैं, हिन्दी आदिमें नहीं' ॥

१ 'एकोनविंशतिः, विंशतिः, ..... परार्द्धम्' ( 'उन्नीस, बीस; ..... परार्द्ध'

१. 'दश ( अष्टादश ) न्तसंख्यावाचिनः शब्दाः प्रायः संख्येयवचना एव, कवित्तेषां  
संख्यावाचकत्वमपि । यथा—'द्वयेकयोदिवचनैकवचने' ( पा० सू० १ । ४ । २२ ) इति 'बहुषु  
बहुवचनम्' ( पा० सू० १ । ४ । २१ ) इति च । 'कयोर्द्वयाः, केषां बहूनाम्' ( पात०  
भाष्य १ । ४ । २१ ) इति पातञ्जलभाष्यात्कचिदवृत्तावपि; किन्तु सत्यपि प्रयोगे तत्रापि  
( अवृत्तावपि ) संख्येयगतद्विवादि संख्यायामारोप्य संख्यावाचकेभ्योऽपि द्विवचनाद्येव,  
उक्तभाष्यानुरोधादिति सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः काशीनाथशास्त्रिचरणाः ॥



१ सङ्ख्यार्थे द्विवहुत्वे स्तरस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।

२ पङ्क्तेः शतसहस्रादि कमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

संख्याके वाचक) शब्द संख्या (गिनती) और संख्येय ( गिनी जानेवाली वस्तु ) के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर एकवचन ही होते हैं । ( 'कमशः उदाहरण । पहला ( संख्या अर्थमें ) जैसे—'ब्राह्मणानां विंशतिः, शतम्, सहस्रं, .....वा' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्दके बहुवचन रहनेपर भी 'विंशति, शत, सहस्र, .....' शब्दका एकवचनमें ही प्रयोग हुआ है । दूसरा (संख्येय अर्थात् गिनने योग्य वस्तुके अर्थमें ) जैसे—'एकोनविंशतिः, शतं, सहस्रं, लक्षं वा ब्राह्मणाः, .....' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्द के बहुवचन होनेपर भी 'एकोनविंशति, शत, सहस्र, लक्ष, .....' शब्दों का 'एकवचन' में ही प्रयोग हुआ है; बहुवचनमें नहीं ) ॥

१ 'एकोनविंशतिः, ..... परार्द्धम्' ( 'अर्धोऽस्रं' ..... परार्द्ध'—तक संख्याके वाचक ) शब्द संख्याके अर्थमें 'द्विवचन और बहुवचन' भी होते हैं । ( 'जैसे—'द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः; एकं शतम्, द्वे शते, त्रीणि शतानि; .....' इन वाक्योंमें 'विंशति और शत' शब्दका तीनों वचन ( एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ) में प्रयोग हुआ है । इसी तरह अन्यान्य ( एकविंशति, द्वाविंशति, ... शत, सहस्र, ... परार्द्ध ) शब्दोंके विषयमें भी जानना चाहिये' ) ॥

२ 'विंशतिः, ..... नवनवतिः' ( बीस, ..... निन्नानवे' तक संख्या-वाचक ) शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं । ( जैसे— विंशत्या पुरुषैः कृतम्, सप्ततिर्वस्त्राणि, नव-रत्ना नदीनां जलम्, .....' इन वाक्योंमें 'पुरुष, वस्त्र और नदी' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग' होनेपर भी विंशति ( बीस ), सप्तति ( सत्तर ), नवति, ( नब्बे )' शब्दोंका प्रयोग केवल 'स्त्रीलिङ्ग' में ही हुआ है, अन्य लिङ्गों ( नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग ) में नहीं' ॥

३ पङ्क्तिः ( स्त्री ), शतम्, सहस्रम् ( २ न ), आदि ( 'आदि पदसे 'अयुतम् ( न पु ), लक्षम् ( न स्त्री ), प्रयुतम् ( न पु ), कोटिः ( स्त्री ), अर्बु-क्षम् ( न पु ), अब्जम् ( + वृन्दम् ), सर्वम्, निखर्वम्, महापद्मम् ( + महा-वृक्षम् ), शङ्कुः ( पु स्त्री ), जलधिः ( + वार्द्धिः, वारिधिः, ..... । पु ),

## १ यौतवं द्रुवयं पाययमिति मानार्थकं त्रयम् ।

अन्यम् , मध्यम् , परार्द्धम् ( शेष न ), का संग्रह है' ), 'दहाई ( दश ), सैकड़ा और हजार आदि ( आदिसे 'दश हजार' लाय, दश लाख, करोड़, दश करोड़, अरब, दश अरब, खर्ब, दश खर्ब, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, शङ्ख, दश शङ्ख' ) संख्या (गिनती)' का क्रमशः १-३ नाम है । ये क्रमशः उत्तरोत्तर ( पहलेकी अपेक्षा दूसरे ) दशगुने होते हैं । ( जैसे—दश पङ्क्ति = शतम् ( सौ ), दश शत = सहस्रम् ( हजार ), इत्यादि समझना चाहिये' ) ॥

१ यौतवम् ( + पौतवम् ), द्रुवयम्, पाययम्, मानम् ( भा० दी० । ४ न ), 'नापना, तौलना, प्रमाण' के ४ नाम हैं । ( 'यह 'तुला (तराजू), अङ्गुलि ( हाथ, फूट, गज, बाँस आदि ), प्रस्थ ( पौवा, सेर, पसेरी आदि ) के भेदसे तीन प्रकार' का होता है; उनमेंसे १-३ का क्रमशः 'ठन्मानम्, परिमाणम्, प्रमाणम्, ( ३ न )' यह १-३ नाम है । 'हेमचन्द्राचार्यने तो

### १. तदुक्तं भास्करीयलीलवत्याम्—

'एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ।

अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्खवस्तस्मात् ॥ १ ॥

अकचिश्रान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तरं संज्ञाः ।

संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः' ॥ २ ॥

श्री० स्वा० तु स्वव्याख्यायां प्रयुत-लक्ष'शब्दयोः, 'अर्बुद-कोटि'शब्दयोश्च परस्पर परोक्षतां 'अन्यं मध्यं परार्द्धम्' इत्यत्र 'मध्यम् अन्यं परार्द्धम्, इति व्यत्यासं चाहुस्तथा—

'एकदशशतसहस्राण्ययुतं प्रयुताख्यलक्षमथ नियुतम् ।

अर्बुदकोटिन्यर्बुदपदमं खर्वं निखर्वमिति दशभिः ॥ १ ॥

गुणान्महापद्मशङ्खसमुद्रमध्यान्तमथ परार्द्धं च ।

स्वहृतं परार्द्धमिति तत्स्वहृतं पूर्यते संख्या' ॥ २ ॥ इति ॥

एतद्विषये मतान्तरदिदृशुभिः चतुर्वर्गेचिन्तामणेर्दानखण्डस्य १२८ पृष्ठे हेमचन्द्राचार्यविरचितेऽभिधानचिन्तामणौ ( ३ । ५३७—५३८ ) च द्रष्टव्यम् ॥

### २. तदुक्तम्—

ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः ।

आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः' ॥ १ ॥ इति ॥

मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थौर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

२ ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री ३ पलं कर्षवतुष्टयम् ।

४ सुवर्णविस्तौ हेक्कोऽक्षे ५ कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

६ तुला स्त्रियां पलशतं ७ भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।

८ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

शौतवम्, दुवयम्, पाययम्, ( ३ न ) 'तराजूसे तौलने' का, 'सेर-पौवा, छटाक आदिसे तौलने' का, और 'हाथ, अङ्गुल, गज, फूट आदिसे नापने' का क्रमशः १-१ नाम है' ऐसा कहा है' ) ॥

१ आद्यमाषकः ( पु ), पाँच गुञ्जा ( रत्ती )' अर्थात् 'एक आना भर' का १ नाम है ॥

२ अक्षः ( पु ), कर्षः ( पु न ), 'सोलह आद्यमाषक ( आनाभर )' अर्थात् 'एक रुखा भर' के २ नाम हैं ॥

३ पलम् ( न ), 'चार कर्ष ( रुखा ) भर' का १ नाम है ॥

४ सुवर्णः ( + न ) विस्तः ( २ पु ), 'एक मोहर' अर्थात् 'अस्सी रत्ती भर या १६ आने भर सुवर्ण' के २ नाम हैं ॥

५ कुरुविस्तः ( पु ), 'एक पल ( चार मोहर भर या तीन सौ बीस रत्ती भर ) सुवर्ण' का १ नाम है । ( उपचारसे सुवर्णसे भिन्न अर्थमें भी 'पल, .....' शब्दोंका प्रयोग होता है ) ॥

६ तुला ( स्त्री ), 'सौ पल' अर्थात् '४०० रुखा भर या नम्बरी एक पसेरी भर' का १ नाम है ॥

७ भारः ( पु ), 'बीस तुला' अर्थात् '२० पसेरी या दाईं मन' का १ नाम है । ( 'यही एक आदमीका बोझ होता है' ) ॥

८ आचितः ( पु । + न ) 'दश भार अर्थात् '२५ मन' का १ नाम है । यह एक गाड़ीका बोझ होता है ॥

१. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यशब्देः—

'तुलायैः पौतवं मानं द्रवयं कुडवादिभिः पाठ्यं इत्यादिभिः—' इति १।५४७ ॥

१ कार्षापणः कार्षिकः स्यात् २ कार्षिके ताम्रिके पणः ।

४ अस्त्रियाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्जकः ॥ ८८ ॥

‘कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

१ कार्षापणः, कार्षिकः ( २ पु ), ‘रुपये’ के २ नाम हैं ॥

२ पणः (पु) ‘पैसे’ का १ नाम है । ( ‘श्लो० ८५ से यहाँ तक ‘तुलामान’ कहा गया, पड़ते ( २१।८३-८७ ) में ‘अङ्गुलिमान’ कह चुके हैं; अब क्रम-प्रारंभ ‘प्रस्थमान’ कह रहे हैं’ ) ॥

३ आढकः, द्रोणः ( २ पु न ), खारी ( + खारः पु । खा ), वाहः, निकु-  
ञ्जकः, कुडवः ( + कुटपः मुकुं०; कुडपः ), प्रस्थः ( ४ पु ), इत्यादि ( मानो,  
भविका, प्रवर्तः, सूर्यः, ... ), ‘आढक आदि तौल-विशेष’ का क्रमशः १-१  
नाम है । ( ‘इसका सविस्तर वर्णन’ दिव्यगी और चक्र में स्पष्ट है’ ) ॥

१. ‘कुटपः’ इत्यपीति मुकुटः’ इति भा० दी० ॥

२. शाङ्गधरसंहितायां तुलामानविवरणं विस्तरतो निर्दिष्टमिदं प्रदर्शयते —

‘न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां ज्ञायते कश्चिद् ॥

अतः प्रयोगकार्थं मानमत्रोच्यते यथा ।

असरेणुः बुधे प्रोक्तः त्रिशता परमाणुभिः ॥ १ ॥

असरेणुस्तु पञ्चाशन्नाम्ना वंशी निगद्यते ।

ज्जान्तरगते भानो यस्सुप्तं दृश्यते रजः ॥ २ ॥

तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स कथ्यते ।

ज्जान्तरगतेः सूर्यकरैर्वंशी विभज्यते ॥ ३ ॥

वट्वंशीभिर्मरीचि स्यात्ताभिः बट्मिस्तु राजिका ।

तिसृमी राजिकाः सप्त सर्षपः प्रोच्यते बुधेः ॥ ४ ॥

यवोऽष्टसर्वपैः भाको गुग्गुला स्यात्तच्चतुष्टयम् ।

वट्मिस्तु रत्निकाभिः स्यात्तन्माषको हेमभान्यको ॥ ५ ॥

मासेश्चतुभिः क्षाणः स्याद्वरणः स निगद्यते ।

टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ॥ ६ ॥

क्षुद्रको वटकश्चैव द्रवणः स निगद्यते ।

कोलद्वयं च कर्षं स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका ॥ ७ ॥

अक्षः पितुः पाणितलं किञ्चिद्वानिश्च तिन्दुकम् ।

विहाकपदकं चैव तथा षोडशिका मता ॥ ८ ॥

करमध्यं हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः ।  
 लटुम्बरं च पर्यायैः कर्षं एव निगद्यते ॥ ९ ॥  
 स्यात्कार्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा ।  
 शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिरात्रं चतुर्थिका ॥ १० ॥  
 प्रकुञ्चः षोडशो बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते ।  
 पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतश्च निगद्यते ॥ ११ ॥  
 प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोर्दंशरावकः ।  
 अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका ॥ १२ ॥  
 शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्येयमत्र विचक्षणैः ।  
 शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्प्रस्थैस्तथादकम् ॥ १३ ॥  
 माजनं कंसपात्रं च चतुःषष्टिपलं च तत् ।  
 चतुर्भिरादकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोर्मणः ॥ १४ ॥  
 लन्मानश्च षटो राशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकाः ।  
 द्रोणाभ्यां शूर्पकुम्भौ च चतुष्पष्टिशरावकाः ॥ १५ ॥  
 शूर्पाभ्यां च भवेद् द्रोणी वाही गोणी च सा स्मृता ।  
 द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः ॥ १६ ॥  
 चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा ।  
 पलानां द्विसहस्रं च भारः एकः प्रकीर्तितः ॥ १७ ॥  
 तुला पलशतं ज्ञेया सर्वत्रैवैष निश्चयः । इति ।

माषादि खार्यन्तं मानं श्लोकेनैकेनोपसंहरति—

माषटङ्काक्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमादकम् ॥

राशिर्गोणी खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः । इति च शाङ्ग० सं० १।१।२४-३२

तेनैवोक्तरीत्या मागधमानमुक्त्वा कालिङ्गमानमुक्तम् । तथा—

‘यवो द्वादशभिर्गौरिसर्धपैः प्रोच्यते बुधैः ।

यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो बल्ल उच्यते ॥ १ ॥

माषो गुञ्जामिरष्टमिः सप्तमिर्वा भवेत्क्वचित् ।

स्याच्चतुर्माषकैः शाणः स निष्कष्टङ्क एव च ॥ २ ॥

गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषकः ।

चतुष्कर्षैः फलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः ॥ ३ ॥

चतुष्पलेश्च कुडवं प्रथाद्याः पूर्ववन्मताः । इति—

एतयोः ( मागध-कलिङ्गमानयोः ) मागधमानस्य प्राशस्त्यं निर्दिशति—

‘कालिङ्गं मागधं चेति द्विविधं मानमुच्यते ।

कालिङ्गमागधं श्रेष्ठं मानं मानविदो विदुः । इति च शाङ्ग० सं० १।१।२५-४३

अथ तुल्यमानबोधकचक्रम् ।

अथ मागधमानम् ।

१	१ परमाणुः	३० त्रसरेणुः	१३	२ शुक्ती	१ पलम् ( ४ भरी )
२	३० परमाणवः	१ त्रसरेणुः	१४	२ पले	१ प्रसृतिः
३	६ त्रसरेणवः	१ मरीचिः	१५	२ प्रसृती	१ कुडवः ( ३ सेर )
४	६ मरीचयः	१ राजिका (राई)	१६	२ कुडवौ	१ मानिका ( ३ सेर )
५	१ राजिकाः	१ सर्पपः (सरसो)	१७	२ मानिके	१ प्रस्थः ( १ सेर )
६	८ सर्पपाः	१ यवः ( जौ )	१८	२ प्रस्थाः	१ आढकः
७	४ यवाः	१ गुञ्जा ( रत्ती )	१९	४ आढकाः	१ द्रोणः
८	६ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	२०	२ द्रोणी	१ शूर्पः
९	४ माषाः	१ शानः	२१	२ शूर्पौ	१ द्रोणी
१०	२ शानी	१ कोलः	२२	४ द्रोण्यः	१ खारी
११	२ कोलौ	१ कर्षः (रुपया)	२३	२००० पलानि	१ मारः ( २३ मन )
१२	२ कर्षौ	१ शुक्तिः	२४	१०० पलानि	१ तुळा (पसेरी=५५ सेर )
अथ कलिङ्गमानम् ।					
१	११ श्वेतसर्पपाः	१ यवः	६	६ माषाः	१ गद्याणः ( ३ तोळा )
२	२ यवौ	१ गुञ्जा	७	१० माषाः	१ कर्षः ( १ भरी )
३	२ गुञ्जाः	१ वल्लः	८	४ कर्षाः	१ पलम्
४	८ वा ७ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	९	४ पलानि	१ कुडवः
५	४ माषाः	१ शानः	शेषं सर्वं मागधमानवद्विबोधम् ।		

देशादिभेदेनैतन्मानस्य विविधा भेदाः सन्ति । ते चात्र विस्तारमयान्नोल्लिखितस्तद्विदुः-  
 क्षुभिः 'मनुस्मृतौ ( ८।१३१-१३७ ), याज्ञवल्क्यस्मृतौ ( १।३६२-३६४ ), चतुर्वर्गचिन्तामणौ  
 ( हेमाद्रौ ) दानखण्डे ( पृ० १२६-१३० ), विष्णु-कात्यायन-नारद-भगस्ति-विष्णुगुप्त-जैमि-  
 ण्यपुराणविष्णुधर्मोत्तर-वराहपुराण-पद्मपुराण-गोपब्रह्मण-स्कन्दपुराणोक्ता मानभेदा द्रष्टव्याः ।

- १ पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
- २ द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।  
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविमवा अपि ॥ ९० ॥
- ३ \* स्यात्कोशश्च हिरण्यं च द्वेमरूप्ये कृताकृते ।
- ४ ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं च रूप्यं तद्वयमादृतम् ॥ ९१ ॥
- ५ गारुतमतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ।
- ६ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागः—

१ पादः ( पु ), 'चौथाई भाग' का १ नाम है ॥

२ अंशः, भागः, वण्टकः ( ३ पु ), 'भाग, हिस्सा' के ३ नाम हैं ॥

३ द्रव्यम्, वित्तम्, स्वापतेयम्, रिक्थम्, ऋक्थम्, धनम्, वसु, हिरण्यम्, द्रविणम्, द्युम्नम् ( १० न ), अर्थः, राः (= रै । + पु स्त्री), विमवाः ( ३ पु ), 'धन' के १३ नाम हैं ॥

४ कोशः ( + कोषः । पु ), हिरण्यम् ( न ), 'सोना-चांदी' अर्थात् 'सिका बने हुए और बिना सिका बने हुए सोना-चांदीमात्र' के २ नाम हैं ॥

५ कुप्यम् ( न ), 'सोना-चांदीसे भिन्न तांबा आदि धातु' का १ नाम है ॥

६ रूप्यम् ( न ), 'सिका बने हुए सोना, चांदी, तांबा, गिल्टी आदि' का १ नाम है । ( सोना जैसे—असर्फी गिल्ली आदि । चांदी जैसे—रुपया, अटली, आदि । तांबा जैसे—पैसा, धेला, पाई आदि । गिल्टी जैसे—चवली, दुअली, एकली ) ॥

७ गारुतमतम्, मरकतम् ( २ न ), अश्मगर्भः, हरिन्मणिः ( २ पु ), 'पद्मा या मरकत मणि' के ४ नाम हैं ॥

८ शोणरत्नम् ( न ), लोहितकः, पद्मरागः ( २ पु ) 'पद्मराग मणि, लाल' के ३ नाम हैं ॥

—१ अथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ताऽऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुन्नपुंसकम् ।

३ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

४ स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

१ मौक्तिकम् ( न ), मुक्ता ( स्त्री ), 'मोती' के २ नाम हैं ॥

२ विद्रुम ( पु ), प्रवालः ( पु न ), 'मूँगे' के २ नाम हैं ॥

३ रत्नम् ( न ), मणिः ( + मणी । पु स्त्री ), 'रत्न, मणि' अर्थात् 'पद्मा, लाल, हीरा, मोती आदि अवाहरात' के २ नाम हैं । ( 'सोना १, चाँदी २, मोती ३, लाजावर्त ४ और मूंगा ५, अथवा—'सोना १, हीरा २, नीलमणि ३, पद्मराग ( लाल ) ४ और मोती ५, ये 'पञ्चरत्न' हैं । मोती १, सोना २, वैदूर्यमणि ( सूर्यकान्त ) ३, पद्मरागमणि ( लाल ) ४, पुष्कराज ५, गोमेदमणि ६, नीलमणि ७, पद्मा ८ और मूंगा ९, ये नव 'महारत्न' हैं । 'हीरा १, मोती २, सोना ३ चाँदी ४, चन्दन ५, शङ्ख ६, चर्म ७ और वस्त्र ८, ये आठ 'रत्नकी जातियाँ' हैं' ) ॥

४ स्वर्णम् , सुवर्णम् , कनकम् , हिरण्यम् , हेम ( = हेमन् ). हाटकम् ,

१. तदुक्तम्—

'सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम् ।

रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥' १ ॥ इति ॥

अथवा—

'कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ।

एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः' ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तम्—

'मुक्ताफलं हिरण्यं च वैदूर्यं पद्मरागकम् ।

पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुडमतं तथा ॥ १ ॥

प्रवालथुक्तान्थुक्तानि महारत्नानि चैव नव' ॥ इति ॥

३. तदुक्तं वाचस्पतिना—

'हीरकं मौक्तिकं स्वर्णं रजतं चन्दनानि च ।

शङ्खचर्म च वस्त्रं चैत्यष्टौ रत्नस्य जातयः' ॥ १ ॥ इति ॥



तपनीयं<sup>१</sup> शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥

चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥

१ अलङ्कारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।

२ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥

३ रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथऽताम्रकम् ।

शुक्लं म्लेच्छमुक्लं द्व्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

तपनीयम्, शातकुम्भम् ( शातकौम्भम् ),<sup>१</sup> गाङ्गेयम्, भर्म ( = भर्मन् । + भर्मः = भर्म पु ), कर्बुरम् ( + कर्बुरम् ), चामीकरम्, जातरूपम्, महारज-  
तम्, काञ्चनम्, रुक्मम्, कार्तस्वरम्, <sup>२</sup>जाम्बूनम् ( १८ न ), अष्टापदः  
( पु न । + कलधौतम्, अर्जुनम्, कल्याणम्, भूतम् ४ न... ), 'सुवर्ण' के  
१९ नाम हैं ॥

१ शृङ्गीकनकम् ( + शृङ्गी स्त्री, शृङ्गि = शृङ्गि, कनकम् ; १ न । न ),  
'भूषण बने हुण सोने' का १ नाम है ॥

२ दुर्वर्णम्, रजतम्, रूप्यम् ; खर्जूरम् ( + खर्जूरम् ), श्वेतम् ( + कल-  
धौतम्, तारम् ; हंस, चन्द्रमा और कुमुदके पर्यायवाचक सब शब्द । ५ न ),  
'चांदी' के ५ नाम हैं ॥

३ रीतिः ( + रीती, रिरि, रीरी । स्त्री ), आरकूटः ( पु न ), 'पीतल' के  
२ नाम हैं ॥

४ ताम्रकम् ( + ताम्रम् ), शुक्लम् ( + शुक्लम् ), म्लेच्छमुक्लम्,  
द्व्यष्टम्, चरिष्टम्, उदुम्बरम् ( + औदुम्बरम्, रक्तम् । ६ न ), 'तांबा' के ६  
नाम हैं ॥

१. 'शातकौम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयम् । तदुक्तं वायुपुराणे—

‘यं गर्भं सुपुत्रे गङ्गा पावकादीप्ततेजसम् ।

तदुत्वं पर्वते न्यस्तं हिरण्यं समपद्यत’ ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—‘तीरमृच्छदं प्राप्य मुखनायुविशोषिता ।

जाम्बूनदास्यं भवति सुवर्णं सिद्धभूषणम्’ ॥ १ ॥ इति ॥

- १ लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।  
अश्मसारोऽथ मण्डूरं<sup>१</sup> सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
- २ सर्वं च तैजसं लोहं<sup>२</sup> विकारस्त्वयसः कुशी ।
- ५ क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च<sup>३</sup> पारदे ॥ ९९ ॥
- ७ गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले ।

१ लोहः ( + लौहः । पु न ), शस्त्रकम् ( + शस्त्रम् ), तीक्ष्णम्, पिण्डम्, कालायसम् ( + कुष्णायसम्, कृष्णामिषम् ), अयः (= अयस् । ५ न ), अश्मसारः ( + गिरिसारम्, शिलासारम् । पु । + न ), 'लोहे' के ७ नाम हैं ॥

२ मण्डूरम्, सिंहाणम् ( + सिंहाणम्, सिंघानम्, सिंघाणम् । २ न ), 'मण्डूर' अर्थात् 'लोहेकी मैठ' के १ नाम हैं ॥

३ लोहम् ( + लौहम् । न ), 'सब तरह के धातु ( तैजस पदार्थ )' का १ नाम है । ( 'सुवर्ण १, चाँदी २, तौबा ३, पीतल ४, काँसा ५, रौंसा ६, सीसा ७ और लोहा ८, ये आठ 'लोहेके भेद' होते हैं' ) ॥

४ कुशी ( स्त्री ), लोहेके बने हुए हथियार, बर्तन आदि वस्तु या फार' का एक नाम है ॥

५ क्षारः, काचः ( २ पु ), 'काँच' के २ नाम हैं ॥

६ चपलः, रसः, सूतः, पारदः ( + पारतः । ४ पु ), 'पारा' के ४ नाम हैं ॥

७ गवलम् ( न ), 'भैंसे की सींग' का १ नाम है ॥

८ अभ्रकम्, गिरिजामलम् ( + गिरिजम्, अमलम् । २ न ), 'अभ्रक' के २ नाम हैं ॥

१. सिंघानमपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पारते' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तम्—'सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कास्यं तथा त्रयम् ।

सीसं कालायसं चैवमष्टौ लोहानि चक्षते' ॥ १ ॥

४. पारतस्तु मनाक् पाण्डुः सूतस्तु रक्षितो मलात् ।

पारदस्तु मनाक् शीतः सर्वे तुल्यगुणाः स्पृताः' ॥ १ ॥

इति शब्दार्णवोक्तभेदाविवक्षयोक्तिरियमित्यवधेयम् ॥

१ स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

२ तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।

३ कर्परी<sup>१</sup> दार्विका काथोज्झवं तुत्थं<sup>२</sup> रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं—

१ स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, कापोताञ्जनम् ( + कापोतम् ), यामुनम् ( ३ न ), 'सुर्मा' के ३ नाम हैं ॥

२ तुत्थाञ्जनम् ( + तुत्थम् ), शिखिग्रीवम्, वितुन्नकम्, मयूरकम् ( ४ न ), 'तूतिया' के ४ नाम हैं ॥

३ कर्परी, दार्विका ( २ स्त्री ), तुत्थम् ( + तुन्नम् । न ), 'घिसकर तैयार किये हुये अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

४ रसाञ्जनम्, रसगर्भम्, तार्क्ष्यशैलम् ( ३ न ), 'रसाञ्जन' अर्थात् 'नेत्रमें लगाने के अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं । ( 'महे० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्, ..... कर्परी' 'तूतिया' के ५ नाम और 'रसाञ्जनम्, ..... दारुहल्दीके काथ (काढा) के समभाग बकरीके दूधमें तूतियाको घिसकर तैयार किये हुए अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं । स्त्री० स्वा० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्, ..... 'तूतिया' के ५ नाम और 'दार्विकाथोज्झवम्, तुत्थरसाञ्जनम्, .....' ४ नाम ( मा० दी० के कथनानुसार ५ नाम ) द्वितीय अर्थमें हैं । धन्वन्तरि और हेम-चन्द्राचार्यके<sup>२</sup> तो भिन्न ही क्रम हैं' ) ॥

१. 'दार्विकाकाथोज्झवं तुत्थरसाञ्जनम्' इति क्षी० स्वा०, 'दार्विकाकाथोज्झवं तुत्थं रसाञ्जनम्' इति महे० सम्मतः पाठः, मूलस्थो मा० दी० सम्मतः पाठः ॥

२. तथा च धन्वन्तरिः—

'अञ्जनं मेचकं कृष्णसौवीरं स्यात्सुवीरजम् । कापोतकं यामुनं च स्रोतोऽञ्जनमुदाहृतम् ॥ १॥ इति ॥ तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैरभिधानचिन्तामणौ—

'अथ तुत्थं शिखिग्रीवं तुत्थाञ्जनमयूरके । मूषातुत्थं कांश्यनीलं हेमतारं वितुन्नकम् ॥ १ ॥ स्यात्तु कर्पूरिकातुत्थममृतासङ्गमञ्जनम् । रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं तुत्थे दार्वीरसोज्झवे' ॥ २ ॥

इति अभि० चिन्ता० ४।११८-११९ ॥

—१ गन्धाश्मनि तु 'गन्धिकः ।

सौगन्धिकश्च २ चक्षुष्याकुल्याद्व्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥

३ रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

४ पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥

५ गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।

६ बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥

७ द्विण्डीरोऽब्धिकफः फेनः ८ सिन्दूरं नागसंभवम् ।

९ नागसीसकयोगेष्टवप्राणि—

१ गन्धाश्मा ( = गन्धाश्मन् ), गन्धिकः ( + गन्धिकः ), सौगन्धिकः ( ३ पु ), 'गन्धिक' के ३ नाम हैं ॥

२ चक्षुष्या, कुलाकी, कुलत्थिका ( ३ स्त्री ), 'काला सुर्मा' के ३ नाम हैं ॥

३ रीतिपुष्पम्, पुष्पकेतु, पुष्पकम् ( + पौष्पकम् ), कुसुमाञ्जनम् ( + पुष्पाञ्जनम् । ४ न ), 'तपाये हुप पीतलसे निकली हुई मैल के द्वारा बनाये हुप सुर्मे' के ३ नाम हैं ॥

४ पिञ्जरम्, पीतनम् ( + पीतकम्, गौरम् ), तालम्, आलम् ( + अलम् ), हरितालकम् ( + हरितालम् । ५ न ), 'हरताल' के ५ नाम हैं ॥

५ गैरेयम्, अर्थ्यम्, गिरिजम्, अश्मजम्, शिलाजतु ( ५ न ), 'शिला-जीत' के ५ नाम हैं ॥

६ बोला, गन्धरसः ( + रसगन्धः ) प्राणः, पिण्डः ( + पिष्टः ), गोपरसः ( + गोपः, रसः, गोसः सुकु० । ५ पु ), 'गन्धरस' के ५ नाम हैं ॥

७ द्विण्डीरः ( + द्विण्डीरः, द्विण्डिरः ), अब्धिकफः, फेनः ( ३ पु ), 'स-मुद्रफेन' के ३ नाम हैं ॥

८ सिन्दूरम्, नागसंभवम् ( + नागजम्, शृङ्गारभूषणम्, चीनपिष्टम् । २ न ), 'सिन्दूर' के २ नाम हैं ॥

९ नागम्, सीसकम् ( + सीसम् सीसपत्रम् ), योगेष्टम्, वपम् ( + वध्रम् सुकु० । ४ न ), 'सीसा' के ४ नाम हैं ॥

१. 'गन्धिकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'गोसरसाः' इति मुकुटः इति भा० दी० ॥

३. 'द्विण्डीरोऽब्धिकफः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ त्रपु पिच्छटम् ॥ १०५ ॥

१ रङ्गवङ्गे २ अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ।

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिलं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

४ मेषकम्बल उर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।

६ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि ७ मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

८ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।

९ नैपाली कुनटी गोला—

१ त्रपुः पिच्छटम्, रङ्गम्, वङ्गम् (+ मृदङ्गम्, आलानम् । ४ न), 'रांगा' के ४ नाम हैं ॥

२ पिचुः, तूलः (+ पिचुतूलः, पिचुकः । २ पु), 'ऊई कपास' के २ नाम हैं ॥

३ कमलोत्तरम्, कुसुम्भम्, वह्निशिलम्, महारजनम् ( ४ न ), 'कुसुम ( बरें ) के फूल' के ४ नाम हैं ॥

४ मेषकम्बलः, उर्णायुः ( २ पु ) 'मैङ्गके बालके कम्बल' के २ नाम हैं ॥

५ शशोर्णम्, शशलोम ( = शशलोमन् । २ न ), 'सरगोश के रोंए' के २ नाम हैं ॥

६ मधु, क्षौद्रम्, माक्षिकम्, आदि ( + आमरम्, वाटकम्, पौत्तिकम्, सारधम्, ... । ३ न ), 'मधु शब्द' के ३ नाम हैं ॥

७ मधूच्छिष्टम्, सिक्थकम् ( २ न ), 'शब्दसे निकाले हुए मोम' के २ नाम हैं ॥

८ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा, नागजिह्विका ( + नागजिह्वा, शिला । ४ स्त्री ), 'मनसिल' के ४ नाम हैं ॥

९ नैपाली ( + शिला ), कुनटी, गोला ( ३ स्त्री ), 'नेपाली मैनसिल' के ३ नाम हैं । ( 'भा० दो० आदिके मतसे 'मनःशिला' ..... ' ७ नाम 'मैनसिल' के ही हैं' ॥

१. रङ्गवङ्गेऽथ पिचुलः' इत्यत्र पाठे तु 'इदृदेद्विवर्जनं प्रगृह्यम्' ( पा० सू० १।१।११ ) इति प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या —' ( पा० सू० ६।१।१२५ ) इति प्राप्तप्रकृतिभावभावो गजनिमीलिकयेत्यवधेयम् ॥

२. माक्षिकं तेलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।

विशेषं अमरं इवेतं क्षौद्रं तु कपिलं स्मृतम् ॥ १ ॥

इति निम्नुक्तभेदाविवक्षयेयमुक्तिरित्यवधेयम् ॥

—१ यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयोऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

३ सौवर्चलं स्याद्रुचकं ४ त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

५ शिग्रुजं श्वेतमरिचं ६ मोरटं मूलमैश्वरम् ।

७ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

८ गोलोमी भूतकेशो ना ९ पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

१० त्रिकटुः श्यूषणं व्योषं ११ त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

१ यवक्षारः, यवाग्रजः, पाकयः ( ३ पु ) 'जवाक्षार' के ३ नाम हैं ॥

२ सर्जिकाक्षारः, कापोतः, सुखवर्चकः ( ३ पु ) 'सजीक्षार' के ३ नाम हैं ॥

३ सौवर्चलम्, रुचकम् ( २ न ), 'क्षार-भेद या सोचरक्षार' के २ नाम हैं । 'भा० दी० आदिके मतसे 'सर्जिकाक्षारः, .....' ५ नाम 'सजी-क्षार' के ही हैं' ) ॥

४ त्वक्क्षीरी ( + तुकाक्षीरी, तुकाशुभा, बांशी ), वंशरोचना ( + वंशलो-चना, वंशजा । २ स्त्री ), 'वंशलोचन' के २ नाम हैं ॥

५ शिग्रुजम्, श्वेतमरिचम् । २ न ), 'सहिजनके बीज' के २ नाम हैं ॥

६ मोरटम् ( न ), 'ऊख ( गन्ने ) की जड़' का १ नाम है ॥

७ ग्रन्थिकम्, पिप्पलीमूलम्, चटकाशिरः ( = चटकाशिरस् । + चटका स्त्री, शिरः = शिर पु । ३ न ), 'पिप्पलीमूल' के ३ नाम हैं ॥

८ गोलोमी ( स्त्री ), भूतकेशः ( पु ), 'जटामाँसी' के २ नाम हैं ॥

९ पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम् ( २ न ), 'रक्तसार' अर्थात् 'लाल चन्दनके समान एक काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० त्रिकटुः, श्यूषणम् ( + श्यूषणम् ), व्योषम् ( ३ न ), 'त्रिकटु' अर्थात् 'पिपल, लोठ और मिर्चके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

११ त्रिफला ( + तृफला, धरा । स्त्री ), फलत्रिकम् ( न ) 'त्रिफला' अर्थात् 'आंवला, हरे और बहेड़े के समुदाय' के २ नाम हैं ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

## १०. अथ शूद्रवर्गः ।

- १ शूद्रश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।  
 २ आचण्डःलात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥  
 ३ शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विज्जन्मनाः ।  
 ५ शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो ६ मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥  
 ७ माहिष्योऽर्थाक्षत्रिययोः ८ क्षत्ताऽर्थाशूद्रयोः सुतः ।

## १०. अथ शूद्रवर्गः ।

१ शूद्रः, अवरवर्णः, 'वृषलः', जघन्यजः ( + पयः, पजः । ४ पु ), 'शूद्र' के ४ नाम हैं ॥

२ संकीर्णः ( + वर्णसङ्कर । पु ), 'वर्णसङ्कर' अर्थात् 'भिन्न २ जातिवाले माता-पिताके संश्लेषसे उत्पन्न 'अम्बष्ठ, करण' आदि जाति-विशेष' का १ नाम है ॥

३ करणः ( पु ), 'शूद्रवर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ अम्बष्ठः ( पु ), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और ब्राह्मण वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

५ उग्रः ( पु ), 'शूद्र वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

६ मागधः ( पु ), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

७ माहिष्यः ( + माहिषः । पु ), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

८ क्षत्ता (= चतु पु ), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'बढ़ई' का १ नाम है ॥

१. उदुक्तं नारदेन—

'ब्रह्मो हि भगवान् धर्मस्तस्य यः कुरुते ऊचम् । बृषलं तं विजानोवाच—' इति ॥

मनुरपि ( ८।१६ ) 'ऊच' स्थाने 'ऊकम्' इति पठित्वा लदेवाद् ॥

२. '—रुद्रया शूद्रो भजायत' इति श्रुत्युक्तेरित्यवेषेयम् ॥

१ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥

२ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः ।

४ स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

१ सूतः ( पु ), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'सारथिका काम करनेवाले' का १ नाम है ॥

२ वैदेहकः ( वैदेहः, विदेहः । पु ), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

३ रथकारः ( पु ), 'करणी स्त्री ( शूद्र वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न कन्या ) और माहिष्य जातिके पुरुष ( वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न पुत्र ) से उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ चण्डालः ( + चाण्डालः । पु ) 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'चाण्डाल' का १ नाम है । ( 'इन सब ( श्लो० २-४ के 'प्रमाण टिप्पणी में स्पष्ट हैं और सुगमतया जाति-ज्ञानके लिये चक्र देखिये' ) ॥

१. याज्ञवल्क्यस्मृतौ पूर्वोक्ता भन्याश्च सङ्करजातय उक्तास्तथा हि—

'विप्रान्मूर्धावसिक्तस्तु क्षत्रियायां विशः क्षियाम् ।

अम्बष्ठः शूद्र्यां निषादो जातः पाराशवोऽपि वा ॥ १ ॥

वैश्याशूद्रयोस्तु राजन्यान्माहिष्योग्रौ सुतौ स्मृतौ ।

वैश्यास्तु करणः शूद्र्यां वित्रास्वेष विधिः स्मृतः ॥ २ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहिकस्तथा ।

शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मोद्विक्तः ॥ ३ ॥

क्षत्रिया मागधं वैश्याच्छूद्राश्चत्तारमेव च ।

शूद्रादाथोगवं वैश्या जनयामास वै सुतम् ॥ ४ ॥

माहिष्येण करण्यां तु रथकारः प्रजायते ।

असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिक्रामानुलोमजाः' ॥ ५ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० १ । ११-१५ ॥

पतञ्जिनानां वर्णसङ्कराणामुत्पत्तिमूलं कर्माणि च मनुस्मृतौ ( १० । ८-५२ ), जोष-  
नसीस्मृतौ, गौतमस्मृतेश्चतुर्थाध्याये, वसिष्ठस्मृतेरष्टादशध्याये च सविस्तरं द्रष्टव्यम् ॥



## ९ कारः शिल्पी २ संहतस्त्वैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।

१ कारः, शिल्पी (= शिल्पिन् । २ पु ), 'कारीगर' के २ नाम हैं ।  
( 'बर्दई १, लुकाटा २, नाई ३, घोडी ४ और जमार ५ ये पांच'  
'शिल्पी' हैं ) ॥

२ श्रेणिः ( पु स्त्री ), 'एक जातिके कारीगरोंके समूह' का १ नाम है ॥

अनुलोमज-प्रतिकोऽजजातुत्पत्तिबोधचक्रम् ।			
संख्या	पितृजातेः	मातृजातौ जातः	पुत्रजातिः
१	विप्रात्	क्षत्रियायाम्	मूर्धावसिक्तः
२	"	वैश्यायाम्	अम्बष्ठः
३	"	शूद्रायाम्	निषादःपाराशवो वा
४	क्षत्रियात्	वैश्यायाम्	माहिष्यः
५	"	शूद्रायाम्	उग्रः
६	वैश्यात्	"	करणः
७	क्षत्रियात्	ब्राह्मण्याम्	मृतः
८	वैश्यात्	"	वेदेहकः
९	शूद्रात्	"	चण्डालः
१०	वैश्यात्	क्षत्रियायाम्	मागधः
११	शूद्रात्	"	क्षत्ता
१२	"	वैश्यायाम्	आयोगवः
१३	माहिष्यात्	करणायाम्	रथकारः

## १. तदुक्तम्—

'तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा।

पञ्चमश्वर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ 'कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी २ मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
- ३ कुम्भकारः कुलालः स्यात् ४ पलगण्डस्तु लेपकः ।
- ५ तन्तुवायः कुविन्दः स्यात् ६ तुल्लावायस्तु सौखिकः ॥ ६ ॥
- ७ रङ्गाजीवचित्रकरः ८ शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
- ९ पादुकचर्मकारः स्यात् १० व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
- ११ नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।

१ कुलकः ( + कुलिकः ), कुलश्रेष्ठी ( = कुलश्रेष्ठिन् । २ पु ), 'बान्दाने ( कुलीन ) कारीगर' के २ नाम हैं ॥

२ मालाकारः, मालिकः ( २ पु ), 'माली' के २ नाम हैं ।

३ कुम्भकारः, कुलालः ( २ पु ), 'कुम्हार' के २ नाम हैं ।

४ पलगण्डः, लेपकः ( २ पु ), 'मकान आदिमें चूना आदि लगाने वाले जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ तन्तुवायः ( + तन्त्रवायः, तन्त्रवापः ), कुविन्दः ( + कुपिन्दः २ पु ), 'जुलाहा' अर्थात् 'कपड़ा बुननेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ तुल्लावायः, सौखिकः ( २ पु ), 'दर्जी' के २ नाम हैं ॥

७ रङ्गाजीवः, चित्रकरः ( २ पु ), 'रंगसाज' अर्थात् 'कपड़ेको रंगने वा क्रापकर चित्रकारी आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्रमार्जः असिधावकः ( २ पु ), 'साथ खटानेवाले या शस्त्रों की सफाई और मरम्मत आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ पादुकृत ( + पादकृत, पादुकाकृत ), चर्मकारः ( २ पु ), 'चमार' के २ नाम हैं ॥

१० व्योकारः, लोहकारकः ( + लोहकारः, अयस्कारः, अयस्करः । २ पु ) 'लुहार' के २ नाम हैं ॥

११ नाडिन्धमः, स्वर्णकारः, कलादः, रुक्मकारकः ( + रुक्मकारः, मुष्टिका, हेममुष्टिकः । ४ पु ), 'सुनार' के ४ नाम हैं ॥

१. 'कुलिकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'तन्त्रवायः' इति 'तन्त्रवापः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः २ शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥  
 ३ तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।  
 ४ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः ५ कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥  
 ६ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्तिनापितान्तावसायिनः ।  
 ७ निर्णेजकः स्याद्रजकः ८ शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥  
 ९ जाबालः स्यादजाजीवो—

१ शाङ्खिकः, काम्बविकः ( २ पु ), 'शाङ्खकी चूड़ी आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शौल्विकः ताम्रकुट्टकः ( २ पु ) 'तमेड़ा' अर्थात् 'तांबेके वर्तन आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ तक्षा ( = तक्षन् ), वर्धकिः, स्वष्टा ( = स्वष्टृ ), रथकारः काष्ठतट् ( = काष्ठतत् । + स्थपतिः । ५ पु ), 'बढ़ई' के ५ नाम हैं ॥

४ ग्रामाधीनः ( भा० दी० ), ग्रामतक्षः ( २ पु ), 'गांवके बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

५ कौटतक्षः, अनधीनकः ( भा० दी० । २ पु ), 'स्वतन्त्र बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

६ क्षुरी ( = क्षुरिन् । + क्षुरमदी = क्षुरमदिन् ), मुण्डी ( = मुण्डिन् । + मुण्डिः, मुण्डकः ), दिवाकीर्त्तिः, नापितः, अन्तावसायी ( = अन्तावसायिन् । + चण्डिलः । ५ पु ) 'हजाम' के ५ नाम हैं ॥

७ निर्णेजकः, रजकः ( २ पु ), 'घोबो' के २ नाम हैं ॥

८ शौण्डिकः मण्डहारकः ( + सुराजीवी = सुराजीविन्, कल्पपालः, पानवणिक = पानवणिज्, ध्वजः, वारिवासः । २ पु ), 'कलवार या मद्य बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ जाबालः, अजाजीवः ( २ पु ), 'गँडेरिये या भेंड़िहारे' के २ नाम हैं ॥

१. 'रथकारस्तु' इति पाठान्तरम्, अत्र पाठे 'भ्वन्ताथादि न पूर्वभाक्' ( १ । १ ५ ) इति पूर्वप्रतिज्ञाविरोधात् 'रथकार' शब्दस्य 'तक्षणः' पर्यायता न स्यादित्यवधेयम् ॥

—१ 'देवाजीवस्तु देवलः ।

२ स्याम्माया शाम्बरी ३ मायाकारस्तु 'प्रतिहारकः ॥ ११ ॥

४ शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।

भरता इत्यपि नटा ५ आरणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

६ मार्दङ्गिका मौरजिकाः ७ पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

८ वेणुधमाः स्युर्वैणविका ९ वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥

१० जीधान्तकः शाकुनिको ११ द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

१ देवाजीवः ( + देवाजीवी = देवाजीविन् ), देवलः, ( २ पु ), 'पण्डा, पुजारी आदि' के २ नाम हैं ॥

२ माया, शाम्बरी ( २ स्त्री ), 'जादू' के २ नाम हैं ॥

३ मायाकारः, प्रतिहारकः ( + प्रतिहारकः, प्रातिहारिकः । २ पु ), 'जादूगर' के २ नाम हैं ॥

४ शैलाली ( = शैलालिन् ), शैलूषः, जायाजीवः, कृशाश्वी ( = कृशाश्विन् ), भरतः ( + भारतः ), नटः ( ६ पु ), 'नट' के ६ नाम हैं ॥

५ आरणाः, कुशीलवः ( २ पु ) 'कथक' के २ नाम हैं ॥

६ मार्दङ्गिकः मौरजिकः ( २ पु ), 'मृदङ्ग बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ पाणिवादः, पाणिघः ( २ पु ), 'हाथकी ताली बजाकर मृदङ्ग, तबला आदि बाजाओंके अनुकरणको करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ वेणुधमः, वैणविकः ( २ पु ), 'वंशी या मुरली बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ वीणावादः, वैणिक ( २ पु ), 'वीणा बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० जीधान्तकः, शाकुनिकः ( २ पु ), 'बहेलिये या चिड़ियोंको मारने वाले' अर्थात् 'चिड़ीमार' के २ नाम हैं ॥

११ वागुरिकः, जालिकः ( २ पु ), 'जालसे पशु-पक्षी, मछली आदि-को फँसानेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'देवाजीवी तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रातिहारकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. यथाह बृहस्पतिः—'कृशाश्वेन च यत्प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते ।

रत्नावतारी शैलूषो नटो भरतभारती' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥
- २ भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।
- ३ वार्तावहो वैवधिको ऽ भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥
- ५ विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।  
'निहीनोऽपसदो जालमः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥
- ६ भृत्ये 'दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।  
नियोज्याकिङ्करप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥
- ७ 'पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।
- ८ मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

१ वैतंसिकः, कौटिकः, मांसिकः ( १ पु ), 'मांस बेचनेवाले वधिक आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ भृतकः, भृतिभुक् ( = भृतिभुज् ), कर्मकरः, वैतनिकः ( ४ पु ), 'मजदूर या वेतन लेनेवाले नौकर' के ४ नाम हैं ॥

३ वार्तावहः, वैवधिकः ( + विवधिकः, वीवधिकः । २ पु ), 'काँवर या बहंगी ढोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ भारवाहः, भारिकः ( + भारी = भारिन् । २ पु ), 'बोझ ढोनेवाले कुली आदि' के २ नाम हैं ॥

५ विवर्णः, पामरः, नीचः, प्राकृतः, पृथग्जनः, निहीनः, अपसदः ( + अपसादः ), जालमः, क्षुल्लकः ( + क्षुल्लकः ), इतर ( १० पु ), 'नीच' के १० नाम हैं ॥

६ भृत्यः, दासेरः, दासेयः, दासः ( + दाशः ), गोप्यकः, चेटकः ( + चेडकः ), नियोज्यः, किङ्करः, प्रैष्यः ( + प्रेष्यः ), भुजिष्यः, परिचारकः ( ११ पु ), 'नौकर, भृत्य' के ११ नाम हैं ॥

७ पराचितः, परिस्कन्दः ( + परिस्कन्दः, परिस्कन्धः, परिस्कन्धः ), परजातः ( + पराजितः ), परैधितः ( ४ पु ), 'दूसरेके द्वारा पालित' के ४ नाम हैं ॥

८ मन्दः, तुन्दपरिमृजः ( + तुन्दपरिमाजः, ) आलस्यः, शीतकः, अलसः ( + आलसः ), अनुष्णः ( ६ पु ), 'आलसी' के ६ नाम हैं ॥

१. 'निहीनोऽपसदो' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दासेरदासेयदाश'— इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पराचितपरैधिताः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूथान उष्णश्च ।
- २ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्त्तिजनङ्गमाः ॥ १९ ॥  
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।
- ३ भेदाः किरातशबरपुलिन्दः म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥
- ४ व्याधो मृगवधाजीवा मृगयुर्लुब्धकाऽपि सः ।
- ५ कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरी मृगदंशकः ॥ २१ ॥  
शुनको भषकः श्वा स्याद्वनर्कस्तु स यागितः ।
- ७ श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः ८ सरमा शुनी ॥ २२ ॥

१ दक्षः, चतुरः, पेशलः, पटुः, सूथानः, उष्णः ( + निरालसः । ६ पु ), 'चालाक, चतुर' के ६ नाम हैं ॥

२ चण्डालः, प्लवः, मातङ्गः, दिवाकीर्त्तिः, जनङ्गमः ( + जलङ्गमः ), विषादः, 'श्वपचः ( + श्वपाकः ), अन्तेवासी ( = अन्तेवासिन् ), चाण्डालः, पुक्कसः ( + पुक्कसः, वृक्कसः । १० पु ), 'चाण्डाल' के १० नाम हैं ॥

३ किरातः, शबरः ( + शबरः ), पुलिन्दः ( + पुलिङ्कः । १ पु ), वे तीन 'म्लेच्छजातिः ( स्त्री ), <sup>१</sup> 'म्लेच्छ (चाण्डाल) के जाति-विशेष' हैं ॥

४ व्याधः, मृगवधाजीवः, मृगयुः, लुब्धकः ( ४ पु ), 'व्याध' के ४ नाम हैं ॥

५ कौलेयकः, सारमेयः, कुक्कुरः ( + कुक्कुरः, कुक्कुरः ), मृगदंशकः ( + मृग-दंशः ), शुनकः ( + शुनः, शुनिः ), भषकः, श्वा ( = श्वन् । + श्वानः, कपिलः, शिवारिः, मण्डलः, कृतज्ञः । ७ पु ), 'कुत्ते' के ७ नाम हैं ॥

६ अलर्कः ( पु ), 'पागल या रोगी कुत्ते' का १ नाम है ॥

७ विश्वकद्रुः ( पु ), 'शिकारी कुत्ते' का १ नाम है ॥

८ सरमा, शुनी ( स्त्री ), 'कुतिया' के २ नाम हैं ॥

१. 'श्वपचो ढोम्भः तुक्कसो मृतपः' इत्यवान्तरभेदोऽत्र न विवक्षित इत्यवधेयम् ॥

२. तदुक्तम्—'गोमांसभक्षको यस्तु लोकबाधं च भाषते ।

सर्वाचारविहीनोऽसौ म्लेच्छ इत्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ विट्चरः सूकरो ग्राम्यो २ वर्करस्तरुणः पशुः ।
- ३ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥
- ४ दक्षिणारुर्लब्धयोगारक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।
- ५ चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोक्षकाः ॥ २४ ॥  
प्रतिरोधिपरान्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।
- ६ चौरिका स्तैन्यचौर्यं च स्तेयं ७ लोभ्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥
- ८ वीतसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।
- ९ उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद् १० वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

१ विट्चरः ( पु ), 'ग्रामके सूअर' का १ नाम है ॥

२ वर्करः ( पु ); 'जवान पशु' का १ नाम है ॥

३ आच्छोदनम् , मृगव्यम् ( + मृगव्या स्त्री । २ न ), आखेटः ( पु ), मृगया ( + पापद्धिः । स्त्री ), 'शिकार' के ४ नाम हैं ॥

४ दक्षिणेर्मा ( = दक्षिणेर्मन् पु ), 'व्याधके मारनेसे बहने भागमें घाववाले मृग आदि पशु, का १ नाम है ॥

५ चौरः ( + चोरः, चोरदः ), ऐकागारिकः, स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोक्षकः, प्रतिरोधी ( = प्रतिरोधिन् । + प्रतिरोधकः ), परास्कन्दी ( = परास्कन्दिन् ), पाटच्चरः, मलिम्लुचः ( + पारिपन्थिकः, रात्रिचरः । १० पु ), 'चोर' के १० नाम हैं ॥

६ चौरिका ( + चोरिका । स्त्री ), स्तैन्यम् , चौर्यम् , स्तेयम् ( ३ न ), 'चोरी' के ४ नाम हैं ॥

७ लोभ्रम् ( + लोभ्रम् , लोतम् , चोरितम् । न ), 'चोरीके धन या वस्तु आदि' का १ नाम है ॥

८ वीतंसः ( + वितंसः । पु ) 'फन्दा' अर्थात् 'पशु-पक्षियोंको फँसानेके लिये जाल आदि साधन-विशेष' का १ नाम है ॥

९ उन्माथः ( पु ), कूटयन्त्रम् ( + पाशयन्त्रम् । न ), 'पशु-पक्षियोंको फँसानेवाले यन्त्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० वागुरा, मृगबन्धनी ( २ स्त्री ), 'पशु या मृगको फँसानेके जाल-विशेष' के २ नाम हैं ॥

- १ 'शुक्लं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।
- २ उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलांद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥
- ३ पुंसि वेमा वायदण्डः ४ सूत्राणि नरि तन्तवः ।
- ५ वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये ६ पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥
- ७ पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।
- ८ 'स्यात्सालभञ्जिका स्तम्भे—

१ शुक्लम् ( + सुगम् , शुभम् , शुम्भम् , ३ न; शुक्ला, सुक्वी, २ स्त्री ), वराटकम् ( + वटाकरः । + पु । २ न ), रज्जुः ( स्त्री ), वटी ( त्रि । + स्त्री ), गुणः ( + वटीगुणः त्रि । पु ), 'रम्सी' के २ नाम हैं ॥

२ उद्धाटनम् ( + उद्धातनम् ), घटीयन्त्रम् ( २ न ), 'कुएँसे पानी निकालेवाले पुरवट मोट, रँहट आदि साधन' के २ नाम हैं ॥

३ वेमा ( = वेमन् । + न ), वायदण्डः ( + वापदण्डः । २ पु ), 'जुलाहोंके शास्त्र-विशेष' अर्थात् 'जिससे कपड़ा बुनते समय सूत बराबर किया जाता है उस हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ सूत्रम् ( न ), तन्तुः ( पु । + सूत्रतन्तुः ), 'सूत' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिः, व्यूतिः ( + व्युतिः । २ स्त्री ), 'कपड़े आदिको बुनने' के २ नाम हैं ॥

६ 'पुस्तम् ( न ), 'मिट्टी, कपड़े या चमड़े आदिसे लीपने या पुतली बनाने' का १ नाम है ॥

७ पाञ्चालिका ( + पञ्चालिका ), पुत्रिका ( २ स्त्री ), 'हाथी-दाँत या कपड़े आदिकी पुतली' के २ नाम हैं ॥

८ [सालभञ्जिका ( + सालभञ्जी । स्त्री ), 'लकड़ीकी पुतली' का १ नाम है] ॥

१. 'शुक्लं वराटकः' इति 'सुग्यं वटाकरः' इति च पाठान्तरे, द्वितीयं पाठान्तरं 'स्वामि' सम्मतमिति मा० दी० । परन्तेन तथा पाठान्तरानुक्ते मा० दी० चिन्त्यः ।

२. 'वापदण्डः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पञ्चालिका' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'स्यात्सालभञ्जिका'.....'त्रिषु' इत्ययमंशः मा० दी० स्त्री० स्वा० मूले नोपलभ्यते, किन्तु स्त्री० स्वा० व्य.ख्याने मूलरूपेणोपलभ्यते । 'जतुत्रपु'.....'त्रिषु' इत्युत्तरार्द्धं तु महे० व्य.ख्याने मूले चोपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

५. तदुक्तम्—'मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्मणा ।

लोहरतैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते' ॥ २ ॥ इति ॥



—१ लेप्येनाञ्जलिकारिका ( ३२ )

२ जतुप्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ( ३३ )

३ पिटकः पेटकः 'पेटा मञ्जूषाऽऽथ 'विहङ्गिका ॥ २९ ॥

भारयष्टिपस्तदात्मिष शिक्यं काचोऽऽथ पादुका ।

पादूरुपानत्स्त्री ७ सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥

८ नध्री वध्री वरत्रा स्याऽदश्वदेस्ताडनी कशा ।

१२ चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी । ३१ ॥

१ [ अञ्जलिकारिका ( स्त्री ), 'लेप्यमयी पुतली' का १ नाम है ] ॥

२ जातुषम्, त्रापुषम् ( २ त्रि ), 'लोह और राँगेकी पुतली' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

३ पिटकः, पेटकः ( २ पु ), पेटा ( + पेटा मुकु०, पीडा स्त्री० स्वा० ), मञ्जूषा ( २ स्त्री ), 'पेटी, झुँपोली, बक्स आदि' के ४ नाम हैं । 'स्त्री० स्वा०' के मतसे पहलेवाले २ नाम 'छोटी झाँपी' के और अन्तवाले २ नाम 'बड़े झाँपी, बक्स आदि' के हैं ॥

४ विहङ्गिका ( + विहङ्गमा ), भारयष्टिः ( २ स्त्री ), 'बहँगीके डण्डे' के २ नाम हैं ॥

५ शिक्यम् ( न ) काचः ( पु ), 'बहँगीके डण्डेमें लटकते हुए सिकहर' के २ नाम हैं ॥

६ पादुका, पादूः, उपानत् ( = उपानह । + पादत्राणम् ३ स्त्री ), 'जूता खड़ाऊँ, बूट, सिलेपड़, चटकी आदि' के ३ नाम हैं ॥

७ अनुपदीना ( स्त्री ) 'पैताबा या पूरे पैरके जूते'(बूट)'का १ नाम है ॥

८ नध्री, वध्री, वरत्रा ( ३ स्त्री ), 'चमड़ेकी रस्सी' के ३ नाम हैं ॥

९ कशा ( स्त्री ) 'कोड़ा या चाबुक' का १ नाम है ॥

१० चाण्डालिका ( + चण्डालिका ), कण्डोलवीणा ( + कण्डोलवीणा, कण्डोली ), चण्डालवल्लकी ( ३ स्त्री ), 'चण्डाल आदि नीचोंके किंगरी नामक बाजा' के ३ नामक हैं ॥

२. 'पाडा' इति 'पेटा' इति च क्रमशः स्त्री० स्वा० मुकु० संमतं पाठान्तरम् ॥

२. 'विहङ्गमा' इति मुकुटसंमतं पाठान्तरम् ॥ ३. 'कण्डोलवीणा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ नाराची स्यादेषणिका २ शाणस्तु निकषः कषः ।
- ३ वृश्चनः 'पत्रपरशु ४ रीषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥
- ५ तैजसावर्तनी मूषा ६ भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
- ७ 'आस्फोटनी वेधनिका ८ कृपाणी कर्त्तरी समे ॥ ३३ ॥
- ९ वृक्षादनी वृक्षभेदी १० टङ्कः 'पाषाणदारणः ।
- ११ ककचोऽस्त्री करपत्रम्—

१ नाराची, एषणिका ( १ स्त्री ), 'सोना-चाँदी तोलनेवाले काँटे' के २ नाम हैं ॥

२ शाणः, निकष, कषः ( ३ पु ), 'कसौटी या सान' के ३ नाम हैं ॥

३ वृश्चनः ( + वृश्चनः ), पत्रपरशुः ( २ पु ), 'सोना-चाँदी आदि काटनेकी छेनी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ रीषिका ( + एषिका, इषिका, हषीका ), तूलिका ( + तुलिः । २ स्त्री ), 'कूँची, बिज्रमें रंग भरनेकी कलम' के २ नाम हैं ॥

५ तैजसावर्तनी ( + आवर्तनी ), मूषा ( + मूषी, मुषा, मुषी । २ स्त्री ), 'सोना-चाँदी गलानेकी घरिया ( मिट्टीके पात्र-विशेष )' के २ नाम हैं ॥

६ भस्त्रा, चर्मप्रसेविका ( + चर्मप्रसेवकः पु । २ स्त्री ), 'भाथी' के २ नाम ॥

७ आस्फोटनी ( + लास्फोटनी ); वेधनिका ( + वेधनी । २ स्त्री ), 'मोती-मणि आदि छेदनेवाली बर्मी' के २ नाम हैं ॥

८ कृपाणी, कर्त्तरी ( १ स्त्री ), 'सांना चाँदी आदि काटनेवाली कैंची' के २ नाम हैं ॥

९ वृक्षादनी ( स्त्री ), वृक्षभेदी ( = वृक्षभेदिन् पु ), 'काष्ठ काटनेवाले वसूला, घटाली आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० टङ्कः ( + तङ्कः । पु न ), पाषाणदारणः ( + पाषाणदारकः । पु ), 'पाषाण तोड़नेवाले टांकी, छेनी, धन आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

११ ककचः ( पु न ), करपत्रम् ( न ), 'लकड़ी चीरनेवाले आरा, शाह या आरी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

१. 'पत्रपरशुरेषिका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लास्फोटनी' इति मुकुटः इति मा० दी० ॥

३. 'पाषाणदारकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ आरा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

२ सूर्मि स्थूणायःप्रतिमा ३ शिल्पं कर्म कलादिकम् ।

४ प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियानना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥

प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधि ५ रुपमोपमानं स्यात् ।

६ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृशः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥

साधारणः समानश्च ७ स्युरुत्तरपदे त्वमी ।

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥

८ कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ।

१ आरा, चर्मप्रभेदिका ( २ स्त्री ), 'चमड़ा काटनेवाले हथियार' के १ नाम हैं ॥

२ सूर्मि ( + सूर्मिः ), स्थूणा, अयःप्रतिमा ( ३ स्त्री ), 'लोहेकी मूर्ति' के ३ नाम हैं ॥

३ शिल्पम् ( न ), 'कला ( कारीगरी ) आदि कौशलके काम' का १ नाम है ॥

४ प्रतिमानम् , प्रतिबिम्बम् ( १ न ), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृतिः, अर्चा ( ५ स्त्री ), प्रतिनिधिः ( पु ), 'प्रतिमा, फोटो, तस्वीर' के ८ नाम हैं ॥

५ उपमा ( स्त्री ), उपमानम् ( न ), 'उपमा, मिसाल' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'प्रतिमानम्', '...' ७ नाम एकार्थक हैं' ) ॥

६ समः, तुल्यः, सदृशः; सदृशः, सदृक् ( = सदृश् ), साधारणः, समानः ( ७ त्रि ), 'सदृश, समान, बराबर' के ७ नाम हैं ॥

७ निभः, संकाशः, नीकाशः, प्रतीकाशः, उपमा, आदि ( + भृतः, रूपः, वक्षः, देशः, देशीयः । ५ त्रि ), ये, ५ शब्द किसी शब्दके उत्तरमें रहनेपर उसके सदृश अर्थको कहते हैं' । ( 'जैसे—'राजनिभः, राजसंकाशः', '.....' अर्थात् 'राजाके समान' । उत्तरपद शब्द समासमें रुढ़ है, अत एव 'चन्द्रेण निभः' यहाँपर यद्यपि 'चन्द्र' शब्दके उत्तरमें 'निभ' शब्द है, तथापि सदृश अर्थका बोध नहीं करता' ) ॥

८ कर्मण्या ( + भर्मण्या ), विधा, भृत्या, भृतिः ( ४ स्त्री, ) भर्म (= भ-

भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

१ सुरा हलिप्रिया हाला परिस्तुद्वरुणात्मजा ।  
गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्तुता ॥ ३९ ॥

मदिरा कश्यमद्ये चाप्यखदंशस्तु भक्षणम् ।

३ शुण्डा पानं मदस्थानं ४ मधुवारा मधुकमाः ॥ ४० ॥

५ मध्वासवो माधवको मधु<sup>१</sup> माध्वीकमद्वयोः ।

६ मैरेयमासवः सीधुः—

मन् ), वेतनम्, भरण्यम्, भरणम्, मूल्यम् ( ५ न ), निर्वेशः, पणः ( १ पु ),  
'वेतन तनखाह या मजदूरी' के ११ नाम हैं ॥

१ सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्तुत, वरुणात्मजा ( + वारुणी ), गन्धो-  
त्तमा, प्रसन्ना इरा, कादम्बरी, परिस्तुता ( + परिस्तुता ), मदिरा ( + मद्विष्टा,  
स्वादुरसा । ११ स्त्री ), कश्यम्, मद्यम् ( + कश्यम्, हारहूरम्, कपिषायनम् ।  
१ न ), 'मदिरा, शराब' के १३ नाम हैं ॥

२ अवदंशः ( + उपदंशः, चक्षुणम्, चर्वणम् । पु ), 'मदिरा पीनेके  
समय रुचि बढ़नेके लिये नमकीन चना आदि चबाने' का १ नाम है ॥

३ शुण्डा ( स्त्री ), पानम् ( + शुण्डापानम् ), मदस्थानम् ( १ न ),  
'मदिरा पीनेके स्थान' के ३ नाम हैं ॥

४ मधुवारः, मधुकमः ( १ पु ), 'मदिरा पीनेके बारी' के २ नाम हैं ॥

५ मध्वासवः, माधवकः ( १ पु ), मधु, माध्वीकम् ( + माद्वीकम् ।  
२ न ), 'महुएके शराब' के ४ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे प्रथम २ नाम  
उक्तार्थक और अन्तवाले १ नाम 'दाखके शराब' के हैं ॥

६ 'मैरेयम् ( न ), असवः ( पु ), सीधुः ( + शीधुः । पु न ), ऊखा  
( गङ्गा ) के रस या शाक आदिसे बने हुए मदिरा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'माद्वीकमद्वयोः' इति भा० दी० सम्मतं 'माद्वीकमद्ययोः' इति च स्त्री० स्वा० सम्मतं  
पाठान्तरम् । 'अत्र 'मद्य'स्योक्तत्वात् 'अद्वयोः' इत्येवं पाठः' इत्ययुक्तम्, सामान्यविशेषरूपस्वे-  
नादोषात्' इति स्त्री० स्वा० ॥

२. 'शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् । मैरेयं घातकीपुष्पगुडधानाम्बुसंहितम्' ॥१॥  
इति माधवोक्तभेदाविवक्षयेयमुक्तिः ॥

—१ मेदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥

२ सन्धानं स्यादभिषवः ३ किण्वं पुंसि तु' नम्रहः ।

४ 'कारोत्तरः सुरामण्ड ५ आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

६ चषकोऽस्त्री पानपात्रं ७ सरकोऽप्यनुतर्षणम् ।

८ 'धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्त्तो द्यूतकृतसमाः ॥ ४३ ॥

९ स्युर्लभकाः प्रतिभुवः १० सभिका द्यूतकारकाः ।

१ मेदकः, जगलः ( २ पु ), 'मदिराके काढ़े या मदिरा बनानेके लिये पीसे हुए पदार्थ विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ सन्धानम् ( न ), अभिषवः ( पु ) 'मदिरा बनाने' के २ नाम हैं ॥

३ किण्वम् ( न ), नम्रहः ( + नम्रहुः । पु ), 'चावल आदिको उबाल ( औट ) कर तैयार किये हुए मदिराके बीज' के २ नाम हैं ॥

४ कारोत्तरः ( + कारोत्तमः ), सुरामण्डः ( भा० दी० । २ पु ), मदिराके माँड़ ( ऊपरी हिस्सा ) के २ नाम हैं ॥

५ आपानम् ( न ), पानगोष्ठिका ( + पानगोष्ठी । स्त्री ), 'मदिरा पीनेके जमाव ( अङ्ग ), के २ नाम हैं ॥

६ चषकः ( पु न ), पानपात्रम् ( न ), 'मदिरा पीनेके प्याले के २ नाम हैं ॥

७ सरकः ( पु न ), अनुतर्षणम् ( न ), 'मदिरा पीने या परोसने ( बाँटने ), के २ नाम हैं । 'मुकु० के मतमे 'चषकः, .....' ४ नाम 'मदिरा पीनेके प्याले' के ही हैं' ) ॥

८ धूर्त्तः ( + धार्त्तः ), अक्षदेवी ( = अक्षदेविन् ); कितवः, अक्षधूर्त्तः, द्यूतकृत ( ५ पु ), 'जुवाड़ी या जुवा खेलनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ लभकः, प्रतिभूः ( २ पु ), 'मध्यस्थ, बीचवान, जामिनदार' के २ नाम हैं ॥

१० सभिकः, द्यूतकारकः ( २ पु ), 'नालदार' अर्थात् 'जुवा खेलानेवाले के २ नाम हैं ॥

१. 'नम्रहुः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कारोत्तमः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'धात्तोऽक्षदेवी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ द्यूतोऽस्त्रियामभवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥
- २ पणोऽक्षेषु ग्लहोऽश्नास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।
- ४ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥
- ५ अष्टापदं शारिकलं ६ प्राणिद्युतं समाह्वयः ।
- ७ उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥

१ द्यूतः ( पु न ), अवती ( स्त्री ), कैतवम् ( न ), पणः ( पु ), 'जुआ' के ४ नाम हैं ॥

२ पणः, ग्लहः ( २ पु ), 'जुएमें दावपर रक्खे हुए रुपया आदि' के २ नाम हैं ॥

३ अश्वः, देवनः, पाशकः ( + प्राशकः । ३ पु ), 'पाशा' के ३ नाम हैं ॥

४ परिणायः ( पु न ), 'शारी ( गोटी ) को चलाने' के २ नाम हैं ॥

५ अष्टापदम् ( पु न ), शारिकलम् ( न ), 'बिसात' अर्थात् 'गोटियोंको रखने ( खेलनेके समय बिछाने ) के लिये कपड़े या काष्ठके बने हुए आधार—विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ प्राणिद्युतम् ( भा० दी० । न ), 'समाह्वयः ( पु ), 'बाजी रखकर पशु-पक्षियों ( मुर्गा, तीतर, भैंडा आदि ) को लड़ाने' के २ नाम हैं ॥

७ ग्रन्थकार 'उक्ता—' इस श्लोकसे सब लिङ्गवाले शब्दोंके सब लिङ्गोंके नहीं कहनेके दोषका निवारण करते हैं । इस 'शुद्धवर्ग' में अवयवार्थक ( मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि ) शब्द काव्य, दूराण और कोषोंमें प्रायः पुंलिङ्गमें ही उपलब्ध होनेके कारण यहाँ भी वे पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे ( मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि ) शब्द उसके धर्म और योग आदिके वशसे अन्य जातिमें वृत्ति होने पर तदनुसार ( वृत्तिके अनुसार ) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक भी होते हैं, ऐसा जानना चाहिये । और अवयवार्थको छोड़कर समुदायमें शक्त ( कुम्भकार, कुलाल, करण आदि ) जो शब्द यहाँ ( शुद्धवर्गमें ) केवल पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे ( कुम्भकार, कुलाल, करण आदि ) शब्द शुद्ध आदि शब्दोंके समान

## १. तदुक्तम्—

'अप्राणिभिः कृतं यत्तु लोके तद् व्युत्पद्यते ।

प्राणिभिः क्रियते यत्तु स विवेकः समाह्वयः' ॥ १ ॥ इति ॥

तादृश्यादन्यतो वृत्तावृद्ध्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ।

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ 'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना'परपर्यायके

अमरकोषे' द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

स्त्रीवाचक होनेपर स्त्रीलिङ्गमें और नपुंसकमें वृत्ति होनेपर नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं, ऐसा समझना चाहिये । ( 'उदाहरण क्रमशः । यौगिक शब्द, तीनों लिङ्गमें जैसे—मार्दङ्गिकः पुरुषः, मार्दङ्गिका स्त्री, मार्दङ्गिकं कुलम् ; मौर-जिकः पुरुषः, मौरजिकी स्त्री, मौरजिकं कुलम् ; ..... रुढ शब्द, तीनों लिङ्गों में जैसे—कुम्भकारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलम् ; कुलालः पुरुषः, कुलाली स्त्री, कुलालं कुलम् , करणः पुरुषः, करणी स्त्री, करणं कुलम् ; ..... इसी प्रकार अन्यान्य शब्दोंके उदाहरणको समझना चाहिये' ) ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ श्री अमरसिंहके बनाये हुए नाम ( भूः, भूमिः, अचला..... ) और लिङ्ग ( पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशासन' अर्थात् 'अमरकोष' नाम इस ग्रन्थमें 'भूमि आदि ( 'आदि शब्दसे पुर, झील, वनोपधि, आदि १० वर्गोंका संग्रह है' ) वर्गवाला यह दूसरा काण्ड ( भाग ) अङ्ग ( मृत् , शाखा, नगर, आदि और उपाङ्ग मृत्सा आदि ) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री 'रामस्वार्थमिश्र' तनुजश्री 'हरगोविन्दमिश्र' विरचितायां 'मणिप्रभा'क्या 'अमरकोष' व्याख्यायां द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

१. अयं श्लोकश्लोकः स्त्री० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, महे० भा० दी० पुस्तकयोर्मूल-मात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'आतेरस्त्रीविषयाद्योपपाद ( पा० सू० ४।१। ६१ ) इत्यनेनेति श्रेयम् ॥

## अथ तृतीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये 'वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

१ सर्वसाधारण होनेसे 'सामान्यकाण्ड' नामक इस प्रकरणमें विशेष्य ( स्त्री, दारा, कलत्र आदि पहले कहे हुए शब्द ) के अधीन लिङ्ग और वचन-वाले 'सुकृती साधु.....' शब्दोंसे विशेष्यनिघ्नवर्ग १, आपसमें भिन्न-जातीय अर्थवाले 'कर्मपरायण,.....' शब्दोंसे संकीर्णवर्ग २, अनेक अर्थवाले 'नाक, लोक,.....' शब्दोंसे नानार्थवर्ग ३, 'आङ्,.....' अव्यय शब्दोंसे अव्ययवर्ग ४, और प्रत्यय अर्थात् 'टाप्, डीप्, घञ, क्त,.....' के द्वारा लिङ्गबोधक शब्दोंसे लिङ्गादिसंग्रहवर्ग ५, कहता हूँ। विशेष्यनिघ्न आदि ५ वर्गोंके क्रमशः उदाहरण । १ विशेष्यनिघ्नवर्ग जैसे—'सुकृतिनी साध्वी पुण्यवती वा स्त्री,.....' । २ संकीर्णवर्ग जैसे—'कर्मपरायण,.....' आदि शब्दोंसे 'कारीगरी, आदि किसी काममें लगे हुएका बोध होता है । ३ नानार्थ-वर्ग जैसे—'नाक, लोक,.....' यहाँ पहलेवाले 'नाक, शब्दके 'स्वर्ग और आकाश' तथा दूसरे 'लोक' शब्दके 'संसार और जन' ये २-२ अर्थ हैं । ४ अव्ययवर्ग जैसे—'आङ्' के 'योङ्' मर्यादा और वाक्य, ये २ अर्थ हैं । ५ लिङ्गादिसंग्रहवर्ग जैसे—'मेकालिजा, अजा,.....' शब्दोंमें 'टाप्' आदि प्रत्ययोंसे स्त्रीलिङ्गाका बोध होता है' ) । इन ५ वर्गोंके पूर्वोक्त स्वर्गादि वर्ग ही संश्रय हैं अर्थात् ये विशेष्यनिघ्न आदि वर्ग स्वतन्त्र नहीं हैं। अथवा—हेतुभूत विशेषणादिले से ५ वर्ग इस सामान्यकाण्डमें अवान्तरवर्ग (जैसे—नानार्थवर्गमें कान्तादिवर्ग, अव्ययवर्गमें—अनेकार्थ एकार्थवर्ग, और लिङ्गादिसंग्रहवर्गमें—स्त्री-लिङ्गादिवर्ग) का संश्रय करते हैं ॥

१. 'वर्गसंग्रह' इत्येके पेटुः । सामान्यकाण्डे ये पञ्च वर्गाः स 'वर्गसंग्रह' इति योजना' इति क्षी० स्वा० ॥



परिभाषा—

१ 'स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।  
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

२ सुकृती पुण्यवान् धन्यो—

१ जिस प्रकार स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग आदिके सहित (स्त्री, दारा, कलत्र, ..... शब्द ) पदोंसे स्त्री, दारा, कलत्र आदि जो विशेष्य हैं, उनके भेदक गुण ( सुकृती, साधु, ..... ) द्रव्य (दण्ड, ..... ) और क्रिया ( पढ़ना, पढ़ाना, पकाना, बोलना, ..... ) से युक्त शब्द वैसे ही होते हैं अर्थात् प्रथम काण्डमें प्रायः रूप आदिके भेदसे लिङ्गका ज्ञान होता है, किन्तु इस (सामान्य) काण्डमें जो शब्द कहे गये हैं, वे शब्द 'गुण, द्रव्य और क्रिया' से युक्त विशेष्योंके अधीन हैं । ( 'तीनोंके क्रमशः उदाहरण । १ गुणयुक्त जैसे—सुकृतिनी, साध्वी पुण्यवती वा स्त्री; सुकृतिनः, साधवः, पुण्यवन्तो वा दाराः ; सुकृति, साधु, पुण्यवत् वा कलत्रम् ; ..... । २ द्रव्ययुक्त जैसे—दण्डिनी स्त्री, दण्डिबो दाराः, दण्डि कलत्रम् ; ..... । ३ क्रियायुक्त जैसे—'अध्यापिका स्त्री, अध्यापका दाराः, अध्यापकं कलत्रम् ; ..... । इन उदाहरणोंमें 'स्त्री, दारा और कलत्र' शब्दोंके क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' होनेसे गुणयुक्त 'सुकृती, साधु, .....' शब्द, द्रव्ययुक्त 'दण्डि, .....' शब्द और क्रियायुक्त 'अध्यापिका, .....' शब्द भी क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग'में ही प्रयुक्त होते हैं । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये' ) ॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

१ सुकृती ( = सुकृतिन् ), पुण्यवान् ( पुण्यवत् ), धन्यः ( ३ त्रि ), भाग्यवान् के ३ नाम हैं ॥

१. 'दारावत्' इति पाठो युक्तः । 'स्त्रीदाराद्यैरित्येके, स्त्रीपुन्नपुंसकैरित्यर्थ' इति स्त्री० स्वा० ।

—१ महच्छस्तु महाशयः ।

२ हृदयालुः \* सुहृदयो ३ महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

४ प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

५ पूजः प्रतीक्ष्यः ६ सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

७ 'दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

८ 'स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

९ जैवात्कः स्यादायुष्मान् —

१ महच्छः, महाशयः ( २ त्रि ), बड़े एवं उन्नत अभिप्रायवाले के २ नाम हैं ।

२ हृदयालुः ( + हृदयिकः ), सुहृदयः ( सुहृदयः । २ त्रि ), 'अच्छे स्वभाववाले' के २ नाम हैं ॥

३ महोत्साहः, महोद्यमः ( + उद्यमवान् = उद्यमवत् । २ त्रि ), 'उद्यमी' के २ नाम हैं ॥

४ प्रवीणः, निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः, शिक्षितः, वैज्ञानिकः ( + विज्ञानिकः ), कृतमुखः, कृती ( = कृतिन् ), कुशलः ( + कृतकर्मा = कृत-कर्मन्, कृतार्थः, कृतकृत्यः, कृतहस्तः । १० त्रि ), 'शिक्षित, ज्ञानी, लोक-चतुर' के १० नाम हैं ॥

५ पूज्यः, प्रतीक्ष्यः ( २ त्रि ), 'पूजा करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

६ सांशयिकः, संशयापन्नमानसः ( २ त्रि ), 'सन्देहयुक्त' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणीयः ( + दक्षिण्यः ), दक्षिणार्हः, दक्षिण्यः ( + दक्षिण्यः । १ त्रि ), 'दक्षिणा देने योग्य ब्राह्मणादि' के १ नाम हैं ॥

८ वदान्यः ( + वदन्यः ), स्थूललक्ष्यः ( + स्थूललक्षः ), दानशौण्डः, बहुप्रदः ( ४ त्रि ) 'बहुत दान करने वाले' के ४ नाम हैं ॥

९ जैवात्कः, आयुष्मान् ( = आयुष्मत् । २ त्रि ), 'बहुत उम्रवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'सहृदयः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दक्षिणीयो दक्षिणः वस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डाः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

- २ परीक्षकः कारणिको ३ वरदस्तु \* समर्थकः ।  
 ४ हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमत्ता हृष्टमानसः ॥ ७ ॥  
 ५ दुर्मना विप्रना अन्तर्मनाः ६ स्यादुत्क उन्मत्ताः ।  
 ७ दक्षिणे सरलोदारौ ८ सुकलो दातृभोक्तृ ॥ ८ ॥  
 ९ तत्परः प्रसितासक्ता १० विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

१ अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् ( = शास्त्रविद् । २ त्रि ), 'शास्त्र पढ़े हुए' के २ नाम हैं ॥

२ परीक्षकः, कारणिकः ( आचरतलिकः । २ त्रि ), 'परीक्षा करने-वाले या मठादिमें ब्राह्मण आदिकी परीक्षाकर दान आदि दे-वाले दानाध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

३ वरदः, समर्थकः ( + समर्थकः । २ त्रि ), 'वर देने वाले' के २ नाम हैं ॥

४ हर्षमाणः, विकुर्वाणः, प्रमत्ताः ( = प्रमत्तस् ), हृष्टमानसः ( ४ त्रि ), 'प्रसन्न चित्तवाले' के ४ नाम हैं ।

५ दुर्मनाः ( = दुर्मनस् ), विप्रनाः ( = विप्रनस् ), अन्तर्मनाः ( = अन्तर्मनस् । ३ त्रि ), 'उदास चित्तवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ उत्कः, उन्मत्ताः ( = उन्मत्तस् । + सोत्कण्ठः, उत्कण्ठितः, उत्सुकः । २ त्रि ), 'उत्सुक' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणः, सरलः, उदारः ( ३ त्रि ), 'सरल स्वभाववाले' के ३ नाम हैं ॥

८ सुकलः ( त्रि ), 'दिल खोलकर देने और खानेवाले' का १ नाम है ॥

९ तत्परः, प्रसितः आसक्तः ( ३ त्रि ), 'तैयार, काममें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१० इष्टार्थोद्युक्तः, उत्सुकः ( २ त्रि ), 'अपने इष्टसिद्धिके लिये काममें लगे हुए' के २ नाम हैं । ( 'अन्याचार्योके मतसे 'तत्परः,.....' ५ नाम एकार्थक हैं । पाठभेदसे 'तत्परः,.....' ३ और 'आविष्टः' ये ४ नाम पूर्वार्थक और 'उद्युक्तः, उत्सुकः' ये २ नाम 'उत्सुक' के हैं ) ॥

- १ प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥
- २ गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणआहतलक्षणौ ।
- ३ इभ्य आढयो धनी ४ स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥  
अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।
- ५ अधिकर्द्धिः समृद्धः स्याद् ६ कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥  
स्याद्भ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।
- ७ वराङ्गकपोपेतो यः सिद्धसंहननो हि सः ॥ १२ ॥
- ८ निर्धार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सरवसम्पदा ।

१ प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः ( + विख्यातः, प्रसिद्धः ), वित्तः, विज्ञातः, विश्रुतः ( १ त्रि ), 'मशहूर, प्रसिद्ध' के ६ नाम हैं ॥

२ कृतलक्षणः, आहतलक्षणः ( आहितलक्षणः । २ त्रि ), 'विद्या, शिल्प आदि किसी गुणसे प्रसिद्ध' के २ नाम हैं ॥

३ इभ्यः, आढयः, धनी ( = धनिन् + धनिकः । १ त्रि ), 'धनी' के ३ नाम हैं ॥

४ स्वामी ( = स्वामिन् ), ईश्वरः, पतिः, ईशिता ( ईशितृ ), अधिभूः, नायकः, नेता ( = नेतृ ), प्रभुः ( विभुः ), परिवृढः, अधिपः ( १० त्रि ), 'स्वामी, मालिक' के १० नाम हैं ॥

५ अधिकर्द्धिः, समृद्धः ( २ त्रि ), 'बहुत समृद्धिवाला' के २ नाम हैं ॥

६ कुटुम्बव्यापृतः, अग्रागारिकः ( २ त्रि ), वाराधिः ( नि० पु ), 'परिवारके पालन-पोषणमें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ सिद्धसंहननः ( त्रि ), 'सुडौल तथा सुन्दर शरीरवाले' का १ नाम है ॥

८ निर्धार्यः ( निर्धार्यः । त्रि ), 'सरवसंपत्ति ( सुख-दुःखमें बराबर सहसाह ) से काम में लगनेवाले' का १ नाम है ॥

१. 'निर्धार्यः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'व्यसनेऽभ्युदये वापि धार्ष्ट्ये सदा मनः ।

तच्च सरवमिति प्रोक्तं नयविशिष्टैः क्रिक्' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अवाचि मूकोऽथ<sup>१</sup> मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥  
 ३ सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।  
 ४ लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् ५ स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥  
 ६ दयालुः कारुणिकः कृपालुः सुरतः समाः ।

१ अवाक्: ( = अवाच् ), मूकः ( २ त्रि ), 'गूंगे' के २ नाम हैं ॥

३ मनोजवसः ( + मनोजवः, मनोजवाः = मनोजवस् ), पितृसन्निभः ( २ त्रि ), 'ज्ञान, पद या अवस्थादिके कारण पिताके समान पूज्य व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥

४ कूकुदः ( + कुकुदः । त्रि ), 'कन्याको भूषण वस्त्रादिसे अलङ्कृतकर विद्यान् धरको बुलाकर कन्यादान करनेवाले' का १ नाम है । ( 'इस तरह 'ब्राह्म-विवाह' में होता है । ब्राह्म १, दैव २, अर्ध ३, प्रजापत्य ४, आसुर ५, गान्धर्व ६, राक्षस ७ और पैशाच ८, ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं' ) ॥

४ लक्ष्मीवान् ( = लक्ष्मीवत् ), लक्ष्मणः, श्रीलः ( + रलीलः ), श्रीमान् ( = श्रीमत् । ४ त्रि ), 'श्रीमान्' के ४ नाम हैं ॥

५ स्निग्धः, वत्सलः ( २ त्रि ), 'स्नेह करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ दयालुः, कारुणिकः, कृपालुः, सुरतः ( + सुरतः । ४ त्रि ), 'दया करनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. 'मनोजवः स' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं मनुना—'ब्राह्मो दैवस्तथैवार्धः प्रजापत्यस्तथासुरः ।

गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽपमः ॥ १ ॥

तत्र 'ब्राह्मविवाह'लक्षणम्—

आकलाप्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् ।

आहूय दानं कन्याया ब्राह्मं धर्मं प्रचक्षते ॥१॥ इति च मनुः ॥१२१, २७॥

अधिकं द्रष्टमिच्छुकैर्मनुस्मृतौ ( १।२१-२४ ), इक्ष्वाकुस्मृतौ ( ४।२-३ ), याज्ञवल्क्यस्मृतौ ( १।५८-६१ ), चतुर्वर्गचिन्तामणौ ( हेमद्रेः ) दानकाण्डे ( पृ० ६४५-६४८ ) च द्रष्टव्यम् ॥

- १ स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥
- २ परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।
- ३ अधीनो निम्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥
- ४ खलपूः स्याद्वहुकरो ५ दीर्घसूत्राभिरक्रियः ।
- ६ जाह्नमोऽसमीक्ष्यकारी स्यात् ७ कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
- ८ कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः ९ क्रियावान् कर्मसूयतः ।
- १० स कामः कर्मशीलो यः—

१ स्वतन्त्रः, अपावृतः, स्वैरी ( = स्वैरिन् । स्वैरः ) स्वच्छन्दः, निरवग्रहः ( + निर्यन्त्रणः, निरङ्कुशः, स्वाधीनः, यथाकामो = यथाकामिन् । ५ त्रि ), 'स्वतन्त्र' के ५ नाम हैं ॥

२ परतन्त्रः, पराधीनः, परवान् ( = परवत् ), नाथवान् ( = नाथवत् । ४ त्रि ), 'पराधीन' के ४ नाम हैं ॥

३ अधीनः, निम्नः, आयत्तः, अस्वच्छन्दः, गृह्यकः ( ५ त्रि ), 'चरा' अश्वीन' के ५ नाम हैं । ( 'एक आचार्यके मतसे 'परतन्त्रः, .....' ९ नाम 'पराधीन' के ही हैं' ) ॥

४ खलपूः बहुकरः ( २ त्रि ), 'खलिहान या जमीनको साफ करने-वाले' के २ नाम हैं ॥

५ दीर्घसूत्रः ( + दीर्घसूत्री = दीर्घसूत्रिन् ), विरक्रियः ( २ त्रि ), 'दीर्घ-सूत्री' अर्थात् 'काममें बहुत देर लगानेवाले, के २ नाम हैं ॥

६ जाह्नमः, असमीक्ष्यकारी ( = असमीक्ष्यकारिन् । २ पु ), 'बिना वि-चारे काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ कुण्ठः ( त्रि ), 'थोड़ा काम करनेवाले' अर्थात् 'काम करनेमें मन्द' का १ नाम है ॥

८ कर्मक्षमः, अलङ्कर्मिणः ( २ त्रि ), 'काम करनेमें समर्थ' के २ नाम हैं ॥

९ क्रियावान् ( = क्रियावत् । त्रि ), 'काममें लगे या तैयार रहनेवाले' का १ नाम है ॥

१० कामः, कर्मशीलः, ( २ त्रि ), महे० के मतसे 'सर्वदा काममें लगे रहनेवाले' के और भा० दो० के मतसे 'बिना फलको इच्छा किये काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

—१ कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

२ 'भरण्यभुक्कर्मकरः ३ कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

४ अपस्नातो मृतस्नात ५ आमिषाशी तु शौक्लः ॥ १९ ॥

६ बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

७ पराजः परपिण्डादो ८ भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

९ आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।

१० उभौ त्वात्मम्भरिः कुक्षिम्भरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

१ कर्मशूरः, कर्मठः ( २ त्रि ), 'आरम्भ किये हुए कामको यत्नपूर्वक पूरा करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ 'भरण्यभुक्' ( = भरण्यभुज् । + कर्मण्यभुक् = कर्मण्यभुज् ), कर्मकरः ( २ त्रि ), 'मजदूर या मूल्य लेकर काम करनेवाले नौकर आदि' के २ नाम हैं ॥

३ कर्मकारः ( त्रि ), 'बिना वेतन आदि लिये काम करनेवाले' का १ नाम है । ( जैसे—स्वयंसेवक, श्रमदानी, ..... ) ॥

४ अपस्नातः, मृतस्नातः ( २ त्रि ), 'मरे हुए परिवार आदिके उद्देश्यसे स्नान किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ आमिषाशी ( = आमिषाशिन् ), शौक्लः ( + शाक्लः, शुक्लः । २ त्रि ), 'मांस खानेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ बुभुक्षितः क्षुधितः, जिघत्सुः, अशनायितः ( ४ त्रि ), 'भूखे हुए' के ४ नाम हैं ॥

७ पराजः, परपिण्डादः ( २ त्रि ), 'दूसरेके अन्नको खाकर जीनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ भक्षकः, घस्मरः, अन्नरः ( ३ त्रि ), 'बहुत खानेवाले' के ३ नाम हैं ॥

९ आद्यूनः, औदरिकः ( २ त्रि ), 'अत्यन्त भूखे हुए' के २ नाम हैं ॥

१० आत्मम्भरिः, कुक्षिम्भरिः ( + उदरम्भरिः । २ त्रि ), 'पेट' अर्थात् 'अपने पेट भरनेसे मतलब रखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'कर्मण्यभुक्कर्मकरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अर्थं प्राक् ( २।१०—१५ ) उक्तोऽपि पर्यायान्तरकथनायेद् पुनरप्युक्तः ॥

- १ सर्वाज्ञीनस्तु सर्वाज्ञभोजी २ गृध्नुस्तु गर्धनः ।  
 लुब्धोऽभिलाषुकरतृष्णक् ३ समी लोलुपलोलुभी ॥ २१ ॥  
 ४ सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।  
 ६ मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबः ७ कामुकं कामिताऽनुकः ॥ २३ ॥  
 कम्प्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।  
 ८ छेको विदग्धे ९ व्यसनिपञ्चभद्रावुपप्लुते ( १ )

१ सर्वाज्ञानः, सर्वाज्ञभोजी ( = सर्वाज्ञभोजिन् । १ त्रि ), 'सर्व जातिके अन्नको खानेवाले औद्यङ् परमहंस आदि' के १ नाम हैं । ( ऐसा पदके होता था, किन्तु वर्तमानमें तो स्पर्शस्पर्शका विचार अत्यन्त सिध्द होने से ऐसे ही व्यक्तियोंकी संख्या अधिक हो गयी है ) ॥

२ गृध्नुः ( + गृध्नः ), गर्धनः, लुब्धः, अभिलाषुकः, तृष्णक् ( = तृष्णज् । + तृष्णकः । ५ त्रि ), भा० दी० के मतसे 'लोभी' के ५ नाम हैं । ( 'अहे० आदि' के मतसे गृध्नुः, ..... २ नाम 'आकाङ्क्षा करनेवाले' के और 'लुब्धः, ..... ३ नाम 'अभिलाष करनेवाले' के हैं ) ॥

३ लोलुपः, लोलुभः ( २ त्रि ), 'अत्यन्त लोभी' के २ नाम हैं ॥

४ सोन्मादः ( + उन्मदः, सून्मदः ), उन्मदिष्णुः ( २ त्रि ), 'पागल' के २ नाम हैं ॥

५ अविनीतः, समुद्धतः ( + निर्मर्यादः । २ त्रि ), 'उद्धत' के २ नाम हैं ॥

६ मत्तः, शौण्डः, उत्कटः ( + उद्रिक्तः ), क्षीबः ( + क्षीबा = क्षीबन् ।

४ त्रि ), 'मतवाले' के ४ नाम हैं ॥

७ कामुकः, कामिता ( = कामित् ), अनुकः, वम्प्रः, कामयिता ( = कामयित् ), अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः ( ९ त्रि ), 'कामी' के ९ नाम हैं ॥

८ [ छेकः, विदग्धः ( २ त्रि ), 'विदग्ध, चतुर' के २ नाम हैं ] ॥

९ [ व्यसनी ( = व्यसनिन् ), पञ्चभद्रः, उपप्लुतः ( + विप्लुतः । ३ त्रि ), 'व्यसनी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'गृध्नुस्तु' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'उन्मदस्तून्मदिष्णुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः इति क्षी० स्वा० ॥

४. 'छेको.....विटः' इत्ययं श्लेषकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमुपलभ्यते, इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयात्र श्लेषकरूपेण मया निहितः ॥



- १ वेश्यापतिर्भुजङ्गः स्यात् २ विक्लः पल्लविको विटः' ( २ )  
 ३ विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रयः ॥ २४ ॥  
 ४ वश्यः प्रणेयो ५ निभृतविनीतप्रभिताः समाः ।  
 ६ धृष्टे 'धृष्णवियातश्च ७ प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥  
 ८ स्यादधृष्टे तु शालीनो ९ विलक्षो विस्मयान्विते ।  
 १० अधीरे कातरः ११ अस्तः भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

१ [ वेश्यापतिः ( + गणिकापतिः ), भुजङ्गः ( १ पु ), 'वेश्याके पति' अर्थात् 'रणडीबाज' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ विक्लः, पल्लविकः ( + पल्लवकः ), विटः ( + न । ३ पु ), 'विट' के ३ नाम हैं ] ॥

३ विधेयः, विनयग्राही ( = विनयग्राहिन् ), वचनेस्थितः, आश्रयः ( ४ त्रि ), 'आज्ञाकारी' के ४ नाम हैं । ( किसी २ आचार्यके मतसे प्रथम दो नाम मिले विनय सिखलाया जाय उसके तथा अन्तवाले दो नाम आज्ञाकारीके हैं ) ॥

४ वश्यः, प्रणेयः ( २ त्रि ), 'वशमें रहनेवाले' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'विधेयः, .....' ६ नाम एकार्थक हैं ' ) ॥

५ निभृतः, विनीतः, प्रभितः ( ३ त्रि ), 'विनीत' के ३ नाम हैं ॥

६ धृष्टः, धृष्णक् ( = धृष्णज् । + धृष्णुः ) वियातः ( ३ त्रि ), 'ढीठ' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रगल्भः, प्रतिभान्वितः ( २ त्रि ), 'प्रतिभाशाली' ( नवीन २ बुद्धिवाले २ ) के २ नाम हैं ॥

८ अधृष्टः, शालीनः ( २ त्रि ), 'सलज्ज' अर्थात् 'जो ढीठ नहीं हो उस' के २ नाम हैं ॥

९ विलक्षः, विस्मयान्वितः ( २ त्रि ), 'आश्चर्यसे युक्त' के २ नाम हैं ॥

१० अधीरः, कातरः ( २ त्रि ) 'भूख, प्यास या भय आदिसे व्याकुल' के २ नाम हैं ॥

११ अस्तः ( = अस्तुः ), भीरुः, भीरुकः, भीलुकः ( + वरितः । ४ त्रि ), 'डरे हुए या डरनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. 'धृष्णवियातश्च' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'प्रज्ञा नवनयोर्मेषशालिनी प्रतिभा मता' ॥ इति ॥

- १ आशंसुराशंसितरि २ गृहयालुग्रहीतरि ।
- ३ भञ्जालुः भञ्जया युक्ते षपतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥
- ५ लज्जाशीलेऽपन्नपिण्डु ६ वर्न्दाकरभवाद्के ।
- ७ शराकघातुको द्विजः ८ स्याद्वर्षिण्यस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥
- ९ उत्पत्तिण्यस्तुत्पतिता १०ऽलङ्कुरिण्यस्तु मण्डनः ।
- ११ भूण्युर्भविण्युर्भविता १२ वर्तिण्युर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥
- १३ निराकरिण्युः क्षिण्युः स्यात्—

१ आशंसुः, आशंसिता ( = आशंसितृ । २ त्रि ), 'अपने मनोरथको पूरा करनेकी इच्छावाले' के १ नाम हैं ॥

२ गृहयालुः, ग्रहीता ( = ग्रहीतृ । २ त्रि ), 'लेने ( ग्रहण करने ) वाले' के २ नाम हैं ॥

३ भञ्जालुः, ( त्रि ), 'भञ्जा करनेवाले' का १ नाम है ॥

४ पतयालुः, पातुकः ( २ त्रि ), 'गिरनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ लज्जाशीलः, अपन्नपिण्डुः ( २ त्रि ), लज्जाकरनेवाले के २ नाम हैं ॥

६ वर्न्दाकः, अभिवादकः ( २ त्रि ), 'प्रणाम ( वन्दगी आदि ) करने-वाले' के २ नाम हैं ॥

७ शराकः, घातुकः, द्विजः ( २ त्रि ), 'हिंसा करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ वर्षिण्युः, वर्धनः ( २ त्रि ), 'बढ़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ उत्पत्तिण्युः, उत्पतिता ( = उत्पत्ति । २ त्रि ), 'उत्पन्ननेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० अलङ्कुरिण्युः, मण्डनः ( २ त्रि ), 'अलंकृत करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ भूण्युः, भविण्युः, भविता ( = भवितृ । २ त्रि ) 'होनहार' के २ नाम हैं ॥

१२ वर्तिण्युः, वर्तनः ( २ त्रि ), 'वर्तने ( व्यवहारमें काने ) वाले' के २ नाम हैं ॥

१३ निराकरिण्युः, क्षिण्युः ( + क्षिण्युः । २ त्रि ), 'निराकरणे या बहिष्कार करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

## —१ सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।

- २ ज्ञाता तु विदुरो विन्दुरविकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥  
 ४ विस्वरः विस्मरः प्रसारी च विसारिणि ।  
 ५ सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥  
 ६ क्रोधनोऽमर्षणः कोपी च चण्डस्त्यन्तकोपनः ।  
 ८ जागरूको जागरिता ९ घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥  
 १० स्वप्नश्चयालुनिद्रालु ११ निद्राणश्चित्ती समी ।

१ सान्द्रस्निग्धः ( सा० द्रा० ), मेदुरः ( २ त्रि ), 'घन, गन्धिन वा चिकने' के २ नाम हैं ॥

२ ज्ञाता ( = ज्ञातृ ), विदुरः, विदुः ( १ त्रि ), 'ज्ञानेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ विकासी ( = विकसिन् । + विकाशी = विकसिन् ), विकस्वरः ( + विकस्वरः । २ त्रि ), 'खिलने (फूलने) वाले फूल आदि' के २ नाम हैं ॥

४ विस्वरः, विस्मरः, प्रसारी ( = प्रसारिन् ), विसारी ( = विसारिन् । ४ त्रि ), 'फैलनेवाली लता आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ सहिष्णुः, सहनः, क्षन्ता ( = क्षन्तृ ), तितिक्षुः, क्षमिता ( = क्षमिन् ), क्षमी ( = क्षमिन् । १ त्रि ), 'क्षमा करनेवाले' के १ नाम हैं ॥

६ क्रोधनः ( + क्रोधी = क्रोधिन् ), अमर्षणः, कोपी ( = कोपिन् । + रोषणः, कोपनः । ३ त्रि ) 'क्रोध करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

७ चण्डः, अत्यन्तकोपनः ( २ त्रि ), 'बहुत क्रोध करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ जागरूकः, जागरिता ( = जागरितृ । २ त्रि ), 'जागनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ घूर्णितः, प्रचलायितः ( २ त्रि ), 'घूर्णित' अर्थात् निद्रा या नशा आदिसे व्याकुल होकर झूमनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० स्वप्नश्च ( = स्वप्नज् ), शयालुः ( २ त्रि ), 'सोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ निद्राणः ( + निद्रितः ), चित्ती ( + चित् । २ त्रि ) 'सोये हुए' के २ नाम हैं ॥

- १ पराङ्मुखः पराचीनः २ स्याद्वाङ्मयधोमुखः ॥ ३३ ॥
- ३ देवानश्चति देवध्रयङ् ४ विष्वध्रयङ् विष्वगश्चति ।
- ५ यः सहाश्चति सध्रयङ् स ६ स तिर्यङ् यस्तिरोऽश्चति ॥ ३४ ॥
- ७ वदो वदावदो वक्ता ८ वागीशो वाक्पतिः खमी ।
- ९ वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी १० वावदूकोतिवक्त्रिः ॥ ३५ ॥
- ११ स्याज्जपावस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।
- १२ दुर्मुखे मुखरावद्धमुखौ—

- १ पराङ्मुखः ( + विमुखः ), पराचीनः ( १ त्रि ), 'विमुख' के २ नाम हैं ॥
- २ आवाङ् ( = अवाच् ), अधोमुखः ( + अवाचीनः । २ त्रि ), 'नीचे मुख करनेवाले' के २ नाम हैं ॥
- ३ देवद्रयङ् ( = देवद्रयच् त्रि ), 'देवताओंकी पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥
- ४ विष्वद्रयङ् ( = विष्वद्रयच् । + विश्वद्रयङ् = विश्वद्रयच् । त्रि ), 'सब तरफ जाने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥
- ५ सध्रयङ् ( = सध्रयच् त्रि ), 'साथ २ चलने रहने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥
- ६ तिर्यङ् ( = तिर्यच् ), 'तिर्यङ् ( देव ) चलनेवाले' का १ नाम है ॥
- ७ वदः, वदावदः, वक्ता ( = वक्त् । ३ त्रि ), 'बहुत बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥
- ८ वागीशाः, वाक्पतिः ( २ त्रि ), 'सुन्दर बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥
- ९ वाचोयुक्तिपटुः ( + वाचोयुक्तिः, पटुः ), वाग्मी ( = वागिमन् । २ त्रि ) 'युक्तियुक्त बोलनेवाले या नैयायिक आदि' के २ नाम हैं ॥
- १० वावदूकः, अतिवक्ता ( = अतिवक्त् । २ त्रि ), 'चतुरतासे अधिक बोलनेवाले' के २ नाम हैं । ( भा० वी० के मतसे 'वाचोयुक्तिपटुः, .....' ) ४ नाम एकार्थक हैं ॥
- ११ जप्ताकः, वाचाटः, वाचाटः, बहुगर्हवाक् ( बहुगर्हवाच् । ४ त्रि ), 'निष्प्रयोजन अधिक बोलनेवाले' के ४ नाम हैं ॥
- १२ दुर्मुखः, मुखरः, अवद्धमुखः ( ३ त्रि ) 'अप्रिय बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

—१ 'शक्तः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

२ लोहलः स्यादस्फुटवाग् ३ गार्हवादी तु कव्वदः ।

४ समौ कुवादकुचरौ ५ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

६ रवणः शब्दनो ७ नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

८ जडोऽञः—

१ शक्तः ( + शक्तः, शक्तः ), प्रियंवदः ( १ त्रि ), 'प्रिय बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ लोहलः, अस्फुटवाक् ( = अस्फुटवाच् । २ त्रि ), 'अस्पष्ट बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ गार्हवादी ( = गार्हवादिन् ), कव्वदः ( + दुर्वाक् = दुर्वाच् । २ त्रि ) 'बुरा बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ कुवादः, कुचरः ( १ त्रि ), 'दोषयुक्त या दोषारोपण करते हुए बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ असौम्यस्वरः, अस्वरः ( १ त्रि ), 'कौन्हे आदिकी तरह रुखे स्वरसे बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ शब्दनः, रवणः ( १ त्रि ), 'विशेष शब्द करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ नान्दीवादी ( = नान्दीवादिन् ), नान्दीकरः ( १ त्रि ), नान्दी' (स्तुति-विशेष) को करनेवाले या नाटकके आरम्भमें मङ्गलपाठ करनेवाले पात्र' के २ नाम हैं ॥

८ जडाः, अञः ( १ त्रि ), 'जड़, मूर्ख' के २ नाम हैं ॥

१. 'शक्तः' इति स्त्री० स्वा० 'शक्नः' इति सर्वरस्य संभनः पाठः ॥

२. नान्दीलक्षणं भरत आह । तथा—

'आशीर्ववनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रवर्त्तते ।

'देवद्विबन्तृगादीनां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता' ॥ १ ॥

जडलक्षणं यथा—

'इष्टं वाऽनिष्टं वा सुखदुःखे वा न चेद् यो मोहाय ।

विन्दति परवशः स भवेदिह जडसंज्ञकः पुरुषः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ \* एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

२ तूष्णीशीलस्तु तूष्णीको ३ नग्नोऽवासा दिगम्बरे ।

४ निष्कासितोऽवकृष्टः स्यात् ५ अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥

६ 'आत्तगर्वोऽभिभूतः स्याद् ७ दापितः साधितः समौ ।

८ प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्याता निराकृतः ॥ ४० ॥

९ 'निकृतः स्याद्विप्रकृतो १० विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।

१ एडमूकः ( + अनेडमूकः । त्रि ), 'बोलने और सुननेमें अशिक्षित, बहरे, गुंगे' के २ नाम हैं ॥

२ तूष्णीशीलः, तूष्णीकः ( २ त्रि ), 'बुप रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ नग्नः, अवासाः ( = अवासस् । + विवासाः = विवासस् ), दिगम्बरः ( ३ त्रि ), 'नंगे' के ३ नाम हैं ॥

४ निष्कासितः ( + निष्कामितः ), अवकृष्टः ( २ त्रि ), 'निकाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ अपध्वस्तः, धिक्कृतः ( २ त्रि ), 'बिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आत्तगर्वः ( + आत्तगन्धः ), अभिभूतः ( २ त्रि ), 'दूटे हुए अभिमानवाले' के २ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'अपध्वस्तः, .....' ४ नाम एकार्थक हैं' ) ॥

७ दापितः ( + दायितः ), साधितः ( २ त्रि ), 'जिससे धन आदि दिलाया गया हो उसके या दिलाये हुए धन आदि' के २ नाम हैं ॥

८ प्रत्यादिष्टः, निरस्तः, प्रत्याख्यातः, निराकृतः ( ४ त्रि ), 'अनादरके साथ निकाले या हटाये हुए' के ४ नाम हैं ॥

९ निकृतः ( + निःकृतः ), विप्रकृतः ( २ त्रि ), 'अनादर पाये हुए' के २ नाम हैं ॥

१० विप्रलब्धः, वञ्चितः ( २ त्रि ), 'ठगे गये' के २ नाम हैं ॥

१. 'बडोऽनेडमूकस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'आत्तगन्धोऽभिभूतः स्वाद्धाधिकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'निःकृतः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ मनोदहतः प्रतिदहतः प्रतिबद्धो हरश्च सः ॥ ४१ ॥  
 २ अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो शब्दे कीलितसंयतो ।  
 ४ आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात् ५ कान्दिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥  
 ६ आक्षारितः क्षारितोऽभिगच्छते ७ संकसुकोऽस्थिरः ।  
 ८ व्यसनान्तोऽपरक्तो द्वौ ९ विहस्तव्याकुलो समौ ॥ ४३ ॥  
 १० विक्लवो विह्वलः ११ स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।  
 १२ कश्यः कशार्हः—

१ मनोदहतः, प्रतिदहतः, प्रतिबद्धः, दहतः ( ४ त्रि ), 'काम पूरा न होनेसे झूटे हुए मनवाले ( हतोत्साह, मनदूट )' के ४ नाम हैं ॥

२ अधिक्षिप्तः, प्रतिक्षिप्तः ( २ त्रि ), 'जिससे डाढ़' ( ईर्ष्या ) करता हो उसीके सामने तिरस्कृत' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धः, कीलितः, संयतः ( ३ त्रि ), 'रस्ती आदिसे बाँधे हुए' के ३ नाम हैं ॥

४ आपन्नः, आपत्प्राप्तः ( २ त्रि ), 'दुःखमें पड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

५ कान्दिशीकः, भयद्रुतः ( २ त्रि ), 'भयसे भागे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आक्षारितः, क्षारितः, अभिगच्छते ( ४ त्रि ), 'चोरी या मैथुन आदि बुरे कामके विषयमें झूठा ( बिना किये भी ) लोकापवाद पाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ संकसुक्तः, अस्थिरः ( २ त्रि ), 'स्थिर नहीं रहनेवाले' के २ नाम हैं ।

८ व्यसनान्तः, उपरक्तः ( २ पु ) 'व्यसनसे दुःखी' के २ नाम हैं ॥

९ विहस्तः, व्याकुलः ( २ त्रि ), 'व्याकुल' ( शोक आदिके कारण कर्तव्य ( अपने करने योग्य काम ), के निश्चयको नहीं करनेवाले ) के २ नाम हैं ॥

१० विक्लवः, विह्वलः ( २ त्रि ), 'विह्वल' ( शोकादि के कारण अपने शरीरको संभालनेमें असमर्थ ) के २ नाम हैं ॥

११ विवशः, अरिष्टदुष्टधीः ( २ त्रि ); 'मृत्युकाल समीप होनेसे अस्थिर बुद्धिवाले' के २ नाम हैं ॥

१२ कश्यः, कशार्हः ( २ त्रि ), 'कोड़ेसे मारने योग्य मनुष्य, छोड़े आदि' के २ नाम हैं ॥

—१ सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

२ द्वेष्ये त्वल्लिगतो ३ वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।

४ विष्यो विषेण यो वध्यो ५ मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥

६ 'शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा ७ चपलश्चिकुरः समौ ।

१ 'आततायी ( = आततायिन् त्रि ), 'आततायी' अर्थात् 'मारनेके लिये तैयार' का १ नाम है ॥

२ द्वेष्यः, अल्लिगतः ( १ त्रि ), 'आँखों में गड़े हुए' अर्थात् 'घेर करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

३ वध्यः, शीर्षच्छेद्यः ( २ त्रि ), 'मारने योग्य, या शिर काट लेने योग्य' के २ नाम हैं ॥

४ विष्यः ( त्रि ), 'विष खिलाकर मारने योग्य' का १ नाम है ॥

५ मुसल्यः ( त्रि ), 'मुसलसे मारने योग्य' का १ नाम है ॥

६ शिश्विदानः, अकृष्णकर्मा ( = अकृष्णकर्मन् । २ त्रि ), 'पुण्य कर्म करनेवाले' के ( तथा पाठभेदसे—'शिश्विदानः, कृष्णकर्मा ( = कृष्णकर्मन् । १ त्रि ), 'पाप कर्म करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ चपलः, चिकुरः ( २ त्रि ), 'चपल या दोषको विना विचारे ही मारनेके लिय तैयार' के २ नाम हैं ॥

३. 'शिश्विदानः कृष्णकर्मा' इति पाठान्तरम् ॥

४. वधस्थोपलक्ष्यतयाऽन्येऽपि संग्रह्यास्त आततायिनो यथा—

'अग्निदो गोरदश्चैव शस्त्राणिर्धनापहः ।

क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिनः' ॥ १ ॥ इति ॥

यथा वा—

'उद्यतासिर्विषाग्निश्च शायोद्यतकरस्तथा ।

आथर्वणेन हन्ता च विशुनश्चापि राजनि ॥ १ ॥

आर्यातिक्रमकारी च रन्ध्रान्वेषणतत्परः ।

यत्रमाद्यान्विजानीयास्तर्जानेवाततायनिः' ॥ २ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० १।२१ भिताखरा ॥



- १ दोषैकदृक्पुरोभागी २ निकृत्तस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥  
 ३ कर्णेजपः सूचकः स्यात् ४ पिशुनो दुर्जनः खलः ।  
 ५ नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो ६ धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥  
 ७ अज्ञे भूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः ।  
 ८ कदर्ये कृपणक्षुद्रकिपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥  
 ९ निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।  
 १० 'वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

१ दोषैकदृक् ( = दोषैकदृश् ), 'पुरोभागी' ( = पुरोभागिन् । २ त्रि )  
 'केवल दोषको ही देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ निकृत्तः, अनृजुः, शठः ( ३ त्रि ), 'शठ' के ३ नाम हैं ॥

३ कर्णेजपः, सूचकः ( २ त्रि ), 'चुगलखोर' के २ नाम हैं ॥

४ पिशुनः, दुर्जनः, खलः ( ३ त्रि ) 'आपसमें फूट करानेवाले' के २ नाम हैं । ( हेमचन्द्राचार्यने 'कर्णेजपः, ...' सब पर्यायोंको एकार्थक माना है ) ॥

५ नृशंसः, घातुकः, क्रूरः, पापः ( ४ त्रि ) 'क्रूर' के ४ नाम हैं ॥

६ धूर्तः, वञ्चकः ( २ त्रि ), 'ठग' के २ नाम हैं ॥

७ अज्ञः, मूढः, यथाजातः, मूर्खः, वैधेयः, बालिशः ( + मातृमुखः, मातृशा-  
 सितः, अमेधाः = अमेधस् । ६ त्रि ), 'मूर्ख' के ६ नाम हैं ॥

८ कदर्यः, कृपणः, क्षुद्रः, किपचानः, मितंपचः ( + क्रिपचः, अनमितंपचः,  
 कीनाशः, दृढमुष्टिः । ५ त्रि ), 'कृपण, कंजूस' के ५ नाम हैं ॥

९ निःस्वः, दुर्विधः, दीनः, दरिद्रः, दुर्गतः ( + दुःस्थः, अकिञ्चनः, कीकटः ।  
 ५ त्रि ) 'दरिद्र' के ५ नाम हैं ॥

१० वनीयकः ( + वनीपकः ), याचनकः, मार्गणः, याचकः, अर्थी ( = अ-  
 र्थिन् । + तर्कुः । ५ त्रि ), 'याचक, माँगनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'वनीपकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'वत्कार्यः—

'दोषैकमादिदृश्यः पुरोभागीति कथ्यते' इति क्षी० स्वा० ॥

तस्मात्—.....'कर्णेजपस्तु दुर्जनः । पिशुनः सूचको नीचो दिग्बिहो मत्सरी खलः ॥'  
 इति अमि० चि० १।४४

१ अहङ्कारवानहंयुः २ शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

३ दिव्योपपादुका देवा ४ नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

५ स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः ६ पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

७ उद्भिदस्तरुगुल्माद्याः—

१ अहङ्कारवान् ( = अहङ्कारवत् ), अहंयुः ( २ त्रि ), 'अहङ्कार ( वम-  
ण्ड ) करनैवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शुभंयुः, शुभान्वितः ( २ त्रि ) 'शुभयुक्त' के दो नाम हैं ॥

३ 'दिव्योपपादुकः ( त्रि ), 'स्वर्गीय देवता आदि' को कहते हैं ॥

४ जरायुजः ( त्रि ), 'गर्भसे उत्पन्न होनेवाले मनुष्य, गौ आदि को कहते हैं ॥

५ स्वेदजः ( त्रि ), 'पसीनेसे उत्पन्न होनेवाले खटमल, डंस, मश, चीलर आदि' को कहते हैं ॥

६ अण्डजः ( त्रि ), 'अण्डसे उत्पन्न होनेवाले पक्षी, साँप, मछली, मगर, चींटी आदि' की कहते हैं ॥

इति प्राणिवर्गः ।

७ उद्भिद् ( = उद्भिद् त्रि ), 'पेड़, लता, झाड़ी, घास, आदि' को कहते हैं । ( 'इस तरह अयोनिज १, जरायुज २ स्वेदज ३, अण्डज ४ और उद्भिज ५, ये ५ 'भूतों ( जीवों ) की सृष्टि' हैं; इनके चौदह अवान्तर भेद 'होते हैं' ) ॥

१. नरकव्यावृत्तये दिव्यपदम् । मातापित्रादिदृष्टकारणनिरपेक्षा अदृष्टसहकृतेभ्योऽणुभ्यो जाता ये देवास्ते दिव्योपपादुका उच्यन्ते' इति भा० दी० । हेमचन्द्राचार्यैः 'यथोपपादुका देवनारका' ( अभि० चिन्ता० ४४२३ ) इति देवनारकसामान्यतया 'दिव्योपपादुक'शब्द उक्तः ॥

२. 'प्राणिनां विशेष्यनिघ्नतासूचक' इति यावत् प्रोच्यमानवर्गान्तर्गतं एवायम् ॥

३. तथा च क्षीरस्वामी—'इत्थमयोनिजजरायुजस्वेदजाण्डजोद्भिज्जत्वेन पञ्चधा भूतसर्गः । एषामेवा ( वा ) न्तरभेदाच्चतुर्दशविधत्वम् । यदाहुः—

'अष्टविकल्पो दैवस्तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति ।

मानुष्य एकविधः समासाद्वैतिकः सर्गः ॥ १ ॥

पैशाचो राक्षसो याक्षो गान्धर्वः शाक्र एव च ।

सौम्यश्च प्राजापत्यश्च ब्राह्मोऽष्टौ देवयोनयः ॥ २ ॥ 'इति' ॥

—१ उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

- २ सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।  
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥
- ३ तदसेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।
- ४ अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥
- ५ निकृष्टप्रतिकृष्टार्थरेफयाप्यावमाधमाः ।

१ उद्भिद ( = उद्भिद् ), उद्भिज्जम् ( २ त्रि ), उद्भिदम् ( न ) 'पेङ्ग, लता, झाड़ी, घास आदि पौधों' के ३ नाम हैं ॥

२ सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमम्, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम् ( + मनोहरम् ), रुच्यम्, मनोज्ञम्, मञ्जु, मञ्जुलम् ( + मनोहारि = मनोहारिन्, हारि = हारिन्, वल्लु, अभिरामम्, वन्धुरम् । १२ त्रि ), 'सुन्दर, मनोहर' के १२ नाम हैं ॥

३ असेचनकम् ( + असेचनकम् । त्रि ), 'जिसके देखते रहनेसे मन तृप्त नहीं हो ऐसे अत्यन्त सुन्दर पदार्थ' का १ नाम है ॥

४ अभीष्टम्, अभीप्सितम्, हृद्यम्, दयितम्, वल्लभम्, प्रियम् ( ६ त्रि ), 'प्रिय, अभीष्ट' के ६ नाम हैं ॥

५ निकृष्टः, प्रतिकृष्टः ( + अपकृष्टः ), अर्वा ( = अर्वन् ), रेफः ( + रेपः ), याप्यः ( + याव्यः ), अवमः, अधमः, कुपूयः ( + कपूयः ), कुत्सितः, अवयः,

हेमचन्द्राचार्यैरष्टौ जीवोत्पत्तिस्थानान्युक्तानि । तथा हि —

‘अण्डजाः पक्षिर्पाद्याः पोतजाः कुञ्जरादयः ।

रसजा मयक्रीडाया नृगवाद्या जरायुजाः ॥

यूकाद्याः स्वेदजा मत्स्यादयः संमूर्च्छनोद्भवाः ।

खजनासूद्भिदोऽथोपपादुका देवनारकाः ॥

त्रयस्योनय इत्यष्टौ—’ इति अभि चिन्ता० ४।४२१—४२३ ॥

१. 'मनोहरम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तदसेचनकम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'निकृष्टप्रतिकृष्टार्थरेफयाप्यावमाधमाः' इति पाठान्तरम् ॥

कुपूयकुत्सितावद्यत्नेटगर्हाणकाः समाः ॥ ५४ ॥

- १ मलीमलं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।
- २ पूतं पवित्रं मेध्यं च ३ वीधं तु' विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥
- ४ निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
- ५ असारं फल्गु ६ शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
- ७ कर्त्तावे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।  
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥  
पराध्याग्रप्राग्रहरप्राग्रथाग्रयाग्रीयमग्रियम् ।
- ८ श्रेयाञ्छ्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

वेष्टः, गर्हाः, अगकः ( + आणकः । १३ त्रि ) 'खराय नीच' के १३ नाम हैं ॥

१ मलीमलम् , मलिनम् ( + म्लानम् ), कच्चरम् , मलदूषितम् ( + कश्म-  
लम् । ४ त्रि ), 'मैले गन्दे' के ४ नाम हैं ॥

२ पूतम् , पवित्रम् , मेध्यम् ( + पावनम् । ३ त्रि ), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

३ वीधम् , विमलार्थकम् ( + विमलात्मकम् भा० दी० । २ त्रि ), 'स्वभा-  
वतः पवित्र' के २ नाम हैं ॥ ( यथा—तीर्थजल, अग्नि, ..... ) ॥

४ निर्णिक्तम् , शोधितम् , मृष्टम् , निःशोध्यम् , अनवस्करम् ( ५ त्रि ),  
'साफ़ किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ असारम् , फल्गु ( २ त्रि ), 'निर्बल, निस्तरव. निःसार' के २ नाम हैं ॥

६ शून्यम् ( + शुन्यम् ) वशिकम् , तुच्छम् , रिक्तम् ( + रिक्तम् ४ ।  
त्रि ), 'तुच्छ खाली' के ४ नाम हैं ॥

७ प्रधानम् ( नि० न ), प्रमुखः, प्रवेकः, अनुत्तमः, उत्तमः, मुख्यः, वर्यः,  
वरेण्यः, प्रवर्हः, अनवराध्यः, पराध्यः, अग्रः, प्राग्रहरः, प्राग्रथः, अग्रथः, अग्रीयः,  
अग्रियः ( १६ त्रि ), 'मुखिया प्रधान' के १७ नाम हैं ॥

८ श्रेयान् ( = श्रेयस् ), श्रेष्ठः, पुष्कलः, सत्तमः, अतिशोभनः ( ५ त्रि )

१. विमलात्मकम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ स्युस्त्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।  
सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५६ ॥
- २ अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जनम् ।
- ३ विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥  
बडोरुविपुलं ४ पीनपीवनी तु स्थूलपीवरे ।
- ५ स्तोकाल्पश्लुकाः ६ सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

‘बहुत शोभनेवाले’ के ५ नाम हैं । ( अन्याचार्यों के मतसे प्रधानम्, .....  
२१ नाम ‘शोभन’ के हैं ) ॥

१ व्याघ्रः, पुङ्गवः, ऋषभः, कुञ्जरः, सिंह, शार्दूलः, नागः ( ७ पु ), आदि  
( + मुखः, ..... । पु, ) ‘उत्तरपद (शब्दके आगे) में रहनेपर पूर्व शब्द  
के श्रेष्ठार्थ’ को कहते हैं । ( ‘जैसे—‘नरव्याघ्रः, नरपुङ्गवः, पुरुषर्षभः, ...’ )  
यहाँपर ‘नर’ शब्दके बाद में ‘व्याघ्र और पुङ्गव’ शब्द, तथा ‘पुरुष’ शब्दके  
बाद में ‘ऋषभ’ शब्द है, अतः ‘नरमें श्रेष्ठ, पुरुषोंमें श्रेष्ठ’ यह अर्थ  
होता है’ ) ॥

२ अप्राग्र्यम् ( + उपाग्रम् । त्रि ), अप्रधानम् उपसर्जनम् ( २ नि० न ).  
‘अप्रधान’ के २ नाम हैं ॥

३ विशङ्कटम्, पृथु, बृहत्, विशालम्, पृथुलम्, महत्, बडम्, उरु, विपु-  
लम् ( ९ त्रि ), ‘बड़े विशाल’ के ९ नाम हैं ॥

४ पीनम्, पीव ( = पीवन् ), स्थूलम्, पीवरम् ( ४ न ), ‘मोटे’ के  
४ नाम हैं ॥

५ स्तोकः, अल्पः, श्लुकाः ( ३ त्रि ), ‘थोड़े’ के ३ नाम हैं ॥

६ सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, दभ्रम्, कृशम्, तनु, ( ५ त्रि ), ‘मात्रा, त्रुटिः

१. ‘श्रेष्ठार्थवाचकाः’ इति पाठान्तरम् ॥

२. ‘वर्थ प्रधानं युक्तमनुत्तमं सत्तमं प्रवर्णनं च’ इति नाममालायां ( सत्तमस्य ) । ‘अग्रं  
प्राग्रहरं श्रेष्ठं मुख्यवर्थप्रवर्णनम्’ इति त्रिकाण्डशेषे च श्रेष्ठस्य पाठात् एकविंशतिरेव शोभनस्य  
इत्यन्ये’ इति भा० दी० ॥

स्त्रियां मात्रा वृत्तिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।

१ अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

२ प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदधं बहुलं बहु ।

'पुरुहुः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

३ परः शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

४ गणनीये तु गणयेयं ५ संख्याते गणित ६ मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।

'समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

( + वृत्तिः । २ नि० स्त्री ), लवः, लेशः, कणः, अनुः ( ३ नि० पु ), 'पतले' के ११ नाम हैं । ( 'भा० दी० के मत से 'स्तोकः,.....' १४ नाम 'सूक्ष्म' के ही हैं ) ॥

१ अत्यल्पम् ( भा० दी० ), अल्पिष्ठम्, अल्पीयः ( = अल्पीयस् ) कनीयः ( = कनीयस् ), अणीयः ( = अणीयस् । ५ त्रि ), 'बहुत काम' के ५ नाम हैं ॥

२ प्रभूतम्, प्रचुरम्, प्राज्यम्, अदधम्, बहुलम्, बहु, पुरुहुः ( + पुरुहम्, पुरहम् ), पुरु, भूयिष्ठम्, स्फारम् ( + स्फिरम् ), भूयः ( = भूयस् ) भूरि ( १२ त्रि ), 'बहुत' काफो' के १२ नाम हैं ॥

३ परःशतम् ( त्रि ), आदि ( परःसहस्रम्, परोऽयुतम्, परोलक्षम्, ... ), 'सौ आदि ( हजार, दश हजार, लाख, ... ) से अधिक' का १ नाम है ॥

४ गणनीयम्, गणयेयम् ( १ त्रि ), 'गिन्ती करने योग्य पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

५ संख्यातम्, गणितम् ( २ त्रि ), 'गिने हुए' के २ नाम हैं ॥

६ समम् ( 'यह केवल इसी सम्पूर्ण अर्थ में सर्वनामसंज्ञक हैं' ) सर्वम्, विश्वम्, अशेषम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, निखिलम्, अखिलम्, निःशेषम्, समग्रम्, सकलम्, पूर्णम् ( + पूर्वम् ), अखण्डम्, अनूनकम् ( + अनूनम् । १४ त्रि ), 'सम्पूर्ण पूरे समूचे' के १४ नाम हैं ॥

१. 'पुरुहु पुरु' इति 'पुरुहं पुरु' इति च पाठान्तरे ॥

१. 'समग्रसकलाखण्डपूर्वादि स्यादनूनके' इति क्षी० स्वा० पाठान्तरम् ॥

- १ घने निरन्तरं सान्द्रं २ पेलवं विरलं तनु ।  
 ३ समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥  
 १सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।  
 २उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥  
 ४ संसक्ते ३त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।  
 ५ नेदिष्ठमन्तिकतमं ६ स्याद् दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥  
 ७ दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं ८ दीर्घमायतम् ।  
 ९ वर्तुलं निस्तलं वृत्तं—

१ घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम् ( ३ त्रि ), 'घन गङ्गिन' के ३ नाम हैं ॥

२ पेलवम्, विरलम्, तनु ( ३ त्रि ) 'विरल, फरक २ वाले' में ३ नाम हैं ॥

३ समीपः, निकटः, आसन्नः, सन्निकृष्टः, सनीडः, सदेशः, अभ्याशः ( + अभ्यासः ), सविधः, समर्यादः, सवेशः, उपकण्ठः, अन्तिकः, अभ्यर्णः, अभ्यग्रा ( १४ त्रि ), अभितः ( अव्य० ), 'समीप, नजदीक' के १५ नाम हैं ॥

४ संसक्तम्, अव्यवहितम्, अपदान्तरम् ( + अपदान्तरम् ( ३ त्रि ), 'सटे ( मिले ) हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ नेदिष्ठम् ( + नेदीयः = नेदीयस् ), अन्तिकतमम् ( २ त्रि ), 'बहुत समीपवाले' के २ नाम हैं ।

६ दूरम्, विप्रकृष्टकम् ( + विप्रकृष्टम् । २ त्रि ), 'दूरवाले' के २ नाम हैं ॥

७ दवीयः ( दवीयस् ), दविष्ठम्, सुदूरम् ( ३ त्रि ), 'बहुत दूरवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ दीर्घम्, आयतम् ( २ त्रि ), 'लम्बे' के २ नाम हैं ॥

९ वर्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम् ( ३ त्रि ), 'गोलाकार' के ३ नाम हैं ॥

१. 'सदेशाभ्याससविध—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्राभिपतिता ह्यमी' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

- २ उच्चप्रांशुन्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे ३ ऽथ वामने ।  
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्यु ४ र्वाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
- ५ अरालं वृजिनं जिह्वमूर्षिमत्कुञ्चितं नतम् ।  
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेह्लितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
- ६ ऋक्कावजिह्वप्रगुणौ ७ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
- ८ शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
- ९ स्थःस्नुः स्थिरतरः स्थेयाश्चानेकरूपतया तु यः ।  
कालव्यापी स कूटस्थः—

१ बन्धुरम् ( + बन्धूरम् ), उन्नतानतम् ( २ त्रि ), 'ऊँच-खाल, ऊँचे-नीचे' के २ नाम हैं ॥

२ उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, उदग्रः, उच्छ्रितः, तुङ्गः ( + उत्तुङ्गः, उद्धुरः । ६ त्रि ), 'ऊँचे' के ६ नाम हैं ॥

३ वामनः, न्यङ् ( = न्यच् ), नीचः, खर्वः, ह्रस्वः ( ५ त्रि ), 'वामन, नीचे, छोटे' के ५ नाम हैं ॥

४ अवाग्रम्, अवनतम्, आनतम् ( ३ त्रि ), 'नीचे की ओर झुके हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ अरालम्, वृजिनम्, जिह्वम्, ऊर्मिमत्, कुञ्चितम्, नतम्, आविद्धम्, कुटिलम्, भुग्नम्, वेह्लितम्, वक्रम् ( + भङ्गुरम् । ११ त्रि ), 'टेढ़े' के ११ नाम हैं ॥

६ ऋजुः, अजिह्वः, प्रगुणः ( ३ त्रि ), 'सीधे' के ३ नाम हैं ॥

७ व्यस्तः, अप्रगुणः, आकुलः ( ३ त्रि ), 'धबड़ाये हुए, आकुल' के ३ नाम हैं ॥

८ शाश्वतः ( + शाश्वतिकः ), ध्रुवः, नित्य, सदातनः, सनातनः ( ५ त्रि ), 'नित्य' अर्थात् 'सर्वदा स्थिर रहनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ स्थास्नुः, स्थिरतरः, स्थेयान् ( = स्थेयस् । ३ त्रि ), 'अत्यन्त स्थिर' के ३ नाम हैं ॥

१० कूटस्थः ( त्रि ), 'सदा एक समान रहनेवाले' ( आकाश, आत्मा आदि ) का १ नाम है ॥



—१ स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

- २ चरिष्णु जङ्गमचरं असमिङ्गं चराचरम् ।
- ३ चलनं कम्पनं कम्पं ४ चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥  
चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।
- ५ अतिरिक्तः समधिको ६ दृढसन्धिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥
- ७ कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।  
जरठं मूर्त्तिमन्मूर्त्तं ८ प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥
- ९ पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ।

१ स्थावरः, जङ्गमेतरः ( २ त्रि ), 'स्थावर ( नहीं चलनेवाले ) पहाड़, पेड़, लता आदि' के २ नाम हैं ॥

२ चरिष्णु, जङ्गमम् , चरम् , असम् , इङ्गम् , चराचरम् ( ३ त्रि ), 'चल ( चलने-फिरनेवाले ) मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग आदि' के ६ नाम हैं ॥

३ चलनम् , कम्पनम् , कम्पम् ( ३ त्रि ), महे० के मतसे 'काँपने (हिलने) वाले' के ३ नाम हैं ॥

४ चलम् , लोलम् , चलाचलम् , चञ्चलम् , तरलम् , पारिप्लवम् , परिप्लवम् ( ७ त्रि ), महे० के मतसे 'चल' अर्थात् 'चलनेवाले' के ७ नाम हैं । ( भा० दी० के मतसे 'चलनम् , ..... ' १० नाम 'चल' के हैं ॥

५ अतिरिक्तः, समधिकः ( २ त्रि ), 'अतिरिक्त फालतू' के २ नाम हैं ॥

६ दृढसन्धिः, संहतः ( २ त्रि ), 'अच्छी तरह मिले या जुटे हुए' के २ नाम हैं ॥

७ कर्कशम् ( + कक्खटम् , खक्खटम् ), कठिनम् , क्रूरम् , कठोरम् , निष्ठुरम् , दृढम् , जठरम् , मूर्त्तिमत् , मूर्त्तम् ( ९ त्रि ), 'कठोर, कड़े' के ९ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम् , प्रौढम् , एधितम् ( ३ त्रि ), 'बड़े हुए' के ३ नाम हैं ॥

९ पुराणम् , प्रतनम् , प्रत्नम् , पुरातनम् , चिरन्तनम् ( ५ त्रि ), 'प्राचीन, पुराने' के ५ नाम हैं ॥

१ प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥

नूतनश्च २ सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

३ अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

४ प्रत्यक्षे<sup>१</sup> स्यादैन्द्रियक ५ मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

६ 'एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥

अप्येकसर्ग एकाग्रयोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।

७ पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या—

१ प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवीनः, नूतनः, नवः, नूतनः ( ७ त्रि ), 'नवीन, नये' के ७ नाम हैं ॥

२ सुकुमारम्, कोमलम्, मृदुलम्, मृदु ( ४ त्रि ), 'कोमल, मुलायम' के ४ नाम हैं ॥

३ अन्वक्, अन्वक्तम्, अनुगम्, अनुपदम् ( महे० के मतसे ४ नपुंसक तथा अव्यय और क्ली० स्वा० के मतसे 'अन्वक्, अन्वक्त, अनुपद' ये ३ अव्यय और 'अन्वक्त, अनुपद' ये २ नपुंसक ), 'बाद पीछे' के ४ नाम हैं ॥

४ प्रत्यक्षम् ( + समक्षम् ), ऐन्द्रियकम् ( २ त्रि ), 'इन्द्रियसे ग्राह्य ( ग्रहण करने योग्य )' के २ नाम हैं । ( 'जैसे—'कर्णेन्द्रियका ग्राह्य शब्द, नेत्रेन्द्रियका ग्राह्य घटपटादिका रूप, '.....' ) ॥

५ अप्रत्यक्षम् ( + अनध्यक्षम्, अत्यध्यक्षम् ), अतीन्द्रियम् ( २ त्रि ), 'इन्द्रियसे अग्राह्य ( नहीं ग्रहण करने योग्य ), के २ नाम हैं । ( 'जैसे... परमाणु, ...' ) ॥

६ एकतानः, अनन्यवृत्तिः एकाग्रः ( + एकाग्रः ), एकायनः, एकसर्गः, एकाग्रथः, एकायनगतः ( ७ त्रि ), 'एकाग्र' के ७ नाम हैं ॥

७ आदिः ( नि० पु ), पूर्वः, पौरस्त्यः, प्रथमः, आद्यः ( + आदिमः, अग्रथः, अग्रिमः, अग्रीयः । ४ त्रि ), 'पहला, प्रथम' के ५ नाम हैं ॥

१. 'स्यादैन्द्रियकमनध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति '—मत्यध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति च पाठान्तरे ॥

२. '—वृत्तिरैकाग्रैकायनावपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥

- अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।  
 २ मोघं निरर्थकं ३ स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम् ॥ ८१ ॥  
 ४ साधारणं तु सामान्य ५ मेकाकी त्वेक एककः ।  
 ६ भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥  
 ७ उच्चावचं नैकभेद ८ मुच्चण्डमविलम्बितम् ।  
 ९ अरुन्तुदं तु मर्मस्पृक्

१ अन्तः ( पु न ), जघन्यम्, चरमम्, अन्त्यः, पाश्चात्यः, पश्चिमः  
 ( + अन्तिमः । ५ त्रि ), 'अन्त ( आखीर ) वाले' के ६ नाम हैं ॥

२ मोघम्, निरर्थकम् ( २ त्रि ), 'निष्फल, बेकाम' के २ नाम हैं ॥

३ स्पष्टम् ( + विस्पष्टम् ), स्फुटम् ( + प्रस्फुटम् ), प्रव्यक्तम् ( + व्य-  
 क्तम् ), उल्वणम् ( ४ त्रि ), 'स्पष्ट' के ४ नाम हैं । ( किसीके मतसे 'स्पष्टम्,  
 स्फुटम्' ये २ नाम 'स्पष्ट' के और 'प्रव्यक्तम्, उल्वणम्' ये २ नाम 'खुलासा,  
 साफ' के हैं ) ॥

४ साधारणम्, सामान्यम् ( २ त्रि ), 'साधारण, मामूली' के  
 २ नाम हैं ॥

५ एकाकी ( = एकाकिन् ), एकः, एककः, ( + एकलः । ३ त्रि ),  
 'अकेले' के ३ नाम हैं ॥

६ भिन्नः ( भिन्नके पर्यायवाचक सब शब्द ), अन्यतरः ( + एकतरः ),  
 एकः, त्वः, अन्यः, इतरः ( ६ त्रि ), 'भिन्न, दूसरे, अलग' के ६ नाम हैं ॥

७ उच्चावचम्, नैकभेदम् ( २ त्रि ), 'अनेक प्रकारवाले' के  
 २ नाम हैं ॥

८ मुच्चण्डम्, अविलम्बितम् ( + अविलम्बयम् । २ त्रि ), 'जल्दबाज,  
 शीघ्रता करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ अरुन्तुदः, मर्मस्पृक् ( = मर्मस्पृश् । २ त्रि ), 'मर्मस्थानको पीड़ा  
 देनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'एकलः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एकतरः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बनम्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

- २ प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च ।
- ३ वामंशरीरं सव्यस्या ४ दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥
- ५ संकटं ना तु संबाधः ६ कलिलं गहनं समे ।
- ७ सकीर्णं संकुलाकीर्णं ८ मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥
- ९ ग्रन्थितं संदितं दृढम् —

१ अबाधम्, निरर्गलम् ( + उद्दामम्, उच्चृङ्खलम्, निरङ्कुशम् । २ त्रि), 'अबाध' अर्थात् 'बिना रोक-टोकवाले' के २ नाम हैं ॥

२ प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्, अपष्टु ( + अपष्टुरम्, विलोमम्, प्रतीपम्, विपरीतम् । ४ त्रि ), 'प्रतिकूल, उलटा' के ४ नाम हैं ॥

३ सव्यम् ( त्रि ), 'शरीरके वाम भाग' का १ नाम है ॥

४ अपसव्यम् ( त्रि ), 'शरीरके दाहिने भाग' का १ नाम है ॥

५ संकटम् ( त्रि ), संबाधः ( नि० पु ), 'तङ्ग रास्ता, या गली आदि' के २ नाम हैं ॥

६ कलिलम्, गहनम् ( २ त्रि ), 'दुःप्रवेश्य ( मुश्किलसे प्रवेश करने योग्य ) रास्ता, गली' जङ्गल आदि' के २ नाम हैं ॥

७ संकीर्णम् ( + कीर्णम् ), संकुलम् ( + आकुलम् ), आकीर्णम् ( ३ त्रि ), 'सभा, देवदर्शन या मेले आदिके कारण मनुष्य आदिसे उसाठस भरे हुए स्थान आदि' के ३ नाम हैं । ( 'किसी २ के मतसे 'कलिलम्, ..... ' ५ नाम और किसीके मतसे 'संकटम्, ..... ' ७ नाम एकार्थक हैं ) ॥

८ मुण्डितम्, परिवापितम् ( २ त्रि ), 'मुण्डित' अर्थात् 'मुण्डन किये हुए' के २ नाम हैं ॥

९ ग्रन्थितम् ( + गुन्थितम्, ग्रथितम् ), संदितम् ( + गुम्फितम् ), दृढम् ( ३ त्रि ), 'गुथी हुई माला आदि' के ३ नाम हैं ॥

१. अत्र—“ग्रन्थितम्” इत्यपि पाठः । ‘गुम्फितं गुम्फितं चेत्यपि पाठः’ इति महे० । “ग्रन्थितम्, इति कचित्”—इति पीयूषव्याख्या ।—‘मवितं मर्दितम्, इति पाठे ‘मृद क्षोदे’ अनेकार्थत्वाद्ग्रन्थने’ इति स्वामी, इति मुकुट” इति दाधिमथाः । किन्तु मुकुटोक्तं क्षी० स्वा० वचनं तट्टीकायां नोपलभ्यत इत्यवश्यम् ॥

—१ विस्ृतं विस्ृतं ततम् ।

- २ अन्तर्गतं विस्ृतं स्यात् ३ प्राप्तप्रणिहितं समे ॥ ८६ ॥  
 ४ वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।  
 ५ दुत्तनुत्तास्तनिष्ठयूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥  
 ६ परिक्षिप्तं तु निवृतं ७ मूषितं मुषितार्थकम् ।  
 ८ प्रवृद्धप्रसृते ९ न्यस्तनिष्ठे १० गुणिताहते ॥ ८८ ॥  
 ११ निदिग्धोपचिते १२ गूढगुप्ते १३ गुण्ठितरूपिते ।

१ विस्ृतम्, विस्ृतम्, ततम्, ( ३ त्रि ), 'फैले हुए' के ३ नाम हैं ॥

२ अन्तर्गतम्, विस्ृतम् ( २ त्रि ), 'भूले हुए' के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्तम्, प्रणिहितम् ( २ त्रि ), 'पाये हुए' के २ नाम हैं ॥

४ वेल्लितः, प्रेङ्खितः, आधूतः, चलितः, आकम्पितः, धुतः ( ६ त्रि ),  
 'थोड़ासा कँपे हुए' के ६ नाम हैं ॥

५ दुत्तः, नुत्तः, अस्त, निष्ठयूतः ( + निष्ठूतः ), आविद्धः, क्षिप्तः, ईरितः  
 ( ७ त्रि ), 'भजे या किसी काममें लगाये हुए' के ७ नाम हैं ॥

६ परिक्षिप्तम्, निवृतम् ( + वलयितम्, परिवेष्टितम्, परीतम् ।  
 ( २ त्रि ), 'खाई या दिवाल आदिसे घिरे हुए' के २ नाम हैं ॥

७ मूषितम्, मुषितम् ( मुषितके पर्यायवाचक सब शब्द । २ त्रि ),  
 'चुराए हुए' के २ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम्, प्रसृतम् ( २ त्रि ), 'पसारे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ न्यस्तम्, निष्ठम् ( २ त्रि ), 'फँके हुए' के २ नाम हैं ॥

१० गुणितम्, आहतम् ( २ त्रि ), 'गुणा किये हुए अङ्क या वटी  
 ( घरी ) हुई रस्सी आदि' के २ नाम हैं ॥

११ निदिग्धम्, उपचितम् ( २ त्रि ), 'बढ़े (पुष्ट) हुए' के २ नाम हैं ॥

१२ गूढम्, गुप्तम् ( २ त्रि ), 'गुप्त' के २ नाम हैं ॥

१३ गुण्ठितम् ( + गुण्डितम् ), रूपितम् ( २ त्रि ), 'धूल आदिमें लिपटे  
 हुए' के २ नाम हैं । (जैसे—'पदातिरन्तगिरिरेणुरूपितः' किरात १।३४) ॥

- १ द्रुतावदीर्णे २ उद्गूर्णोद्यते ३ 'काचित्शिक्षियते ॥ ८९ ॥  
 ४ घ्राणघ्राते ५ दिग्धक्षित्ते ६ समुदक्तोद्घृते समे ।  
 ७ वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥  
 ८ रुग्णं भुग्ने ९ ऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।  
 १० स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ११ ह्रीणहीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

१ द्रुतम् , अवदीर्णम् ( २ त्रि ), 'पिघले हुए' के २ नाम हैं ॥

२ उद्गूर्णम् , उद्यतम् ( २ त्रि ), 'उठाए हुए खड्ग आदि, उठाकर तौल आदि का अन्दाजा किये हुए, या लोके हुए गेंद आदि' के २ नाम हैं ॥

३ काचित् , शिक्षितम् ( २ त्रि ), 'सिक्कद्वरपर रक्खे हुए' ( पाठभेद-से—कारितम् , शिक्षितम् ( २ त्रि ), 'सिखलाये हुए' के ) २ नाम हैं ॥

४ घ्राणम् , घ्रातम् ( २ त्रि ), 'सूँधे हुए' के २ नाम हैं ॥

५ दिग्धम् , क्षितम् ( २ त्रि ), 'लिपे हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं ॥

६ समुदक्तम् , उद्घृतम् ( २ त्रि ), 'नदी, तालाब, कूँए आदिसे निकाले हुए पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वेष्टितम् , वलयितम् , संवीतम् , रुद्धम् , आवृतम् ( ५ त्रि ), 'चारो तरफसे घेरे हुए' के ५ नाम हैं ॥

८ रुग्णम् , भुञ्जम् ( २ त्रि ) 'ब्यथित या टूटे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ निशितम् ( + निशातम् ), क्ष्युतम् , शातम् ( + शितम् ), तेजितम् ( ४ त्रि ), 'सान आदि देकर तेज किए हुए तलवार, भाला, चाकू आदि' के ४ नाम हैं ॥

१० विनाशोन्मुखम् ( आ० दी० ), पक्वम् ( २ त्रि ), 'पके हुए या शीघ्र नष्ट होनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ ह्रीणः, हीतः, लज्जितः ( ३ त्रि ), 'लजाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

- १ वृत्ते तु<sup>१</sup> वृतवावृत्तौ २ संयोजित उपाहितः ।  
 ३ प्राप्यं गम्यं समासाद्यं ४ स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुतम् ॥ ९२ ॥  
 ५ संगूढः स्यात्संकलितो ६ ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।  
 ७ विविधः स्याद्वहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥  
 ८ अवरीणो<sup>२</sup> धिक्कृतश्चाप्य ९ अवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

१ वृत्त, वृतः, वावृत्तः ( + व्वावृत्तः । ३ त्रि ), 'स्वयंवर आदि में स्वीकार किये हुए घर आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ संयोजितः ( — संयोगितः ), उपाहितः ( २ त्रि ), 'जोड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्यम्, गम्यम्, समासाद्यम् ( ३ त्रि ), 'जो मिल सके उस' के ३ नाम हैं ॥

४ स्यन्नम्, रीणम्, स्नुतम्, स्नुतम् ( ४ त्रि ), 'ठपके, चूप या बड़े हुए जल आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ संगूढः, संकलितः ( २ त्रि ), 'जोड़े हुए अङ्क आदि' के २ नाम हैं ॥

६ अवगीतः, ख्यातगर्हणः ( २ त्रि ), 'संसार-प्रसिद्ध निन्दावाले' के ४ २ नाम हैं ॥

७ विविधः, बहुविधः ( + बहुरूपः ), नानारूपः ( + नानाविधः ) पृथग्विधः ( + पृथग्रूपः । ४ त्रि ), 'अनेक प्रकार के पदार्थ आदि' के नाम हैं ॥

८ अवरीणः, धिक्कृतः ( २ त्रि ) 'धिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ अवध्वस्तः ( + अपध्वस्तः ), अवचूर्णितः ( २ त्रि ) 'चूर्ण किये हुए' के २ नाम हैं ॥

१. त्रियते वृत्तः । वर्तते वृत्यते वा वृत्तः । वावृत्तः, वृतु वावृतु वरणे ( वर्तते ) इत्थम्-बुद्ध्वा 'वृतव्यावृत्तौ' इति पेटुः, लक्ष्येऽपि—ततो वावृत्तमानसेति ( माना सेति ..... ) इति भट्टिः ( ४२८ ) इति क्षी० स्वा० । किन्तु सांप्रतिके भट्टिपुस्तके 'वावृत्यमानासौ' इति पाठ उपलभ्यते । 'वृतव्यावृत्तौ' इति महे० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

२. 'धिक्कृतश्चाप्यपध्वस्तः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अनायासकृतं फाण्टं २ स्वनितं ध्वनितं समे ॥ १४ ॥
- ३ बद्धे संदानितं मूतमुदितं संदितं सितम् ।
- ४ निष्पक्वे कथितं ५ पाके श्रीराज्यद्विषां शृतम् ॥ १५ ॥
- ६ निर्वाणो मुनिवद्व्यादी ७ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।
- ८ पक्वं परिणते ९ गून् हन्ने १० मीढं तु मूत्रिते ॥ १६ ॥
- ११ पुष्टे तु पुषितं --

१ अनायासकृतम् ( आ० दी० ), फाण्टम् ( २ त्रि ), 'विना परिधम से तैयार होनेवाले त्रिफला आदिके काढ़ा विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ स्वनितम्, ध्वनितम् ( २ त्रि ), 'ध्वनिन' अर्थात् 'अव्यक्त शब्द' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धम्, संदानितम्, मूतम् ( + मूर्णम् ), उदितम् ( + उदितम् ), संदितम्, सितम् ( + यन्त्रितम्, नियमितम् । ६ त्रि ), 'बँधे हुए' के ६ नाम हैं ॥

४ निष्पक्वम्, कथितम् ( २ त्रि ), 'अच्छी तरह पकाए या उबाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ शृतम् ( त्रि ), 'पके हुए दूध, घी और हविष्य आदि या पाक-मात्र' का १ नाम है । ( जैसे — 'शृतं क्षीरम्, ..... अर्थात् 'पका हुआ दूध, .....' ) ॥

६ निर्वाणः ( त्रि ), 'मुक्तिप्राप्त मुनि या बुझी हुई अग्नि आदि' का १ नाम है ॥

७ निर्वातः ( त्रि ), 'विना द्रव्याके स्थान आदि' का १ नाम है ॥

८ पक्वम्, परिणतम् ( २ त्रि ), 'पके हुए' के २ नाम हैं ॥

९ गून्म्, हन्न्म् ( १ त्रि ), 'पाबाना किए हुए' के २ नाम हैं ॥

१० मीढम्, मूत्रितम् ( २ त्रि ), 'पेशाब किए हुए' के २ नाम हैं ॥

११ पुष्टम्, पुषितम् ( २ त्रि ), 'पाले हुए, के २ नाम हैं ॥



—१ सोढे<sup>१</sup> क्षान्त २ मुद्धान्तमुद्गते ।

- ३ दान्तस्तु दमिते ४ शान्तः शमिते ५ प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥  
 ६ जसस्तु जपिते ७ छन्नश्छादिते ८ पूजितेऽञ्जितः ।  
 ९ पूर्णस्तु पूरिते १० क्लिष्टः क्लेशिते ११ अवसिते सितः ॥ ९८ ॥  
 १२ पुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे १३ तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।  
 १४ वेधितच्छिद्रितौ विद्धे १५ विन्नविन्नौ विचारिते ॥ ९९ ॥

१ सोढम्, क्षान्तम् ( २ त्रि ), 'क्षमा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

२ उद्धान्तम् ( + उद्धानम्, उद्धानम् ), उद्गतम् ( २ त्रि ), 'वमन ( उल्टी ) किये हुये' के २ नाम हैं ॥

३ दान्तः, दमितः ( २ त्रि ) 'दमन किए हुए चरस आदि' के २ नाम हैं ॥

४ शान्तः, शमितः ( २ त्रि ), 'शान्त किये गये' के २ नाम हैं ॥

५ प्रार्थितः, अर्दितः ( २ त्रि ), 'प्रार्थना किये हुए' के २ नाम हैं ॥

६ जसः, जपितः ( २ त्रि ), 'जनाए हुये' के २ नाम हैं ॥

७ छन्नः, छादितः ( २ त्रि ), 'ढके ( छिपाये ) हुए' के २ नाम हैं ॥

८ पूजितः, अञ्जितः ( अर्चितः । २ त्रि ), 'पूजा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

९ पूर्णः, पूरितः ( २ त्रि ), 'पूरा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

१० क्लिष्टः, क्लेशितः ( २ त्रि ), 'क्लेश पाए हुए' के २ नाम हैं ॥

११ अवसितः, सितः ( २ त्रि ), 'समाप्त' के २ नाम हैं ॥

१२ पुष्टः, प्लुष्टः, उषितः, दग्धः ( ४ त्रि ), 'जले हुए' के ४ नाम हैं ॥

१३ तष्टः, त्वष्टः ( २ त्रि ), 'बसूले आदिसे छीलकर पतली की हुई लकड़ी आदि' के २ नाम हैं ॥

१४ वेधितः, छिद्रितः, विद्धः ( ३ त्रि ), 'वर्मी या सूई आदि से छेदे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१५ विन्नः, विन्नः, विचारितः ( + आलोचितः । ३ त्रि ), 'सोचे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१. 'क्षान्तमुद्धानमुद्गते' इति 'क्षान्तमुद्धानमुद्गते' इति च पाठान्तरे ।

२. 'पूजितेऽर्चितः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ निष्प्रभे विगतारोकौ २ विहीने विद्रुतद्रुतौ ।
- ३ सिद्धे निवृत्तनिष्पन्नौ ४ दारिते मिन्नमेदितौ ॥१००॥
- ५ ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंततौ ।
- ६ स्याद्वर्हिते नमस्थितनमसितमपचायिताचितापचितम् ॥१०१॥
- ७ वरिवसिते वरिवस्थितमुपासितं चोपचरितं च ।
- ८ संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥१०२॥
- ९ दृष्टे मत्तस्तुतः प्रहृष्टः प्रमुदितः प्रीतः ।

१ निष्प्रभः, विगतः, अरोकः ( ३ त्रि ), 'विना प्रभाषाले' के १ नाम है ॥

२ विहीनः, विद्रुतः, द्रुतः ( ३ त्रि ), 'स्थयं पिघले हुए बर्फ आदि' के ३ नाम हैं ॥

३ सिद्धः, निवृत्तः, निष्पन्नः ( ३ त्रि ), 'सिद्ध हुए काम आदि' के ३ नाम हैं ॥

४ दारितः, मिन्नः, मेदितः ( ३ त्रि ), 'फाड़े ( अलग किये, बिरे ) हुए लकड़ी या कपड़े आदि' के ३ नाम हैं ।

५ ऊतम्, स्यूतम्, उतम्, तन्तुसंततम्, (भा० दी० । ४ त्रि ) 'बुने हुए कपड़े, खोरे, पाट आदि' के ४ नाम हैं ॥

६ अवर्हितम्, नमस्थितम्, नमसितम्, अपचायितम्, अर्चितम्, अपचितम् ( ६ त्रि ), 'प्रणाम किये गये देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ६ नाम हैं ॥

७ वरिवसितम्, वरिवस्थितम्, उपासितम्, उपचरितम् ( ४ त्रि ), पूजित ( पूजा किये गये ) या सेवित देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ४ नाम हैं ॥

८ संतापितः, संतप्तः, धूपितः, धूपायितः, दूनः ( ४ त्रि ) 'तपाये या गर्म किए हुए सोना-चाँदी आदि' के ५ नाम हैं ॥

९ दृष्टः, मत्तः, तुतः, प्रहृष्टः, प्रमुदितः, प्रीतः ( ६ त्रि ), 'खुश सन्तुष्ट' के ६ नाम हैं ॥

- १ छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥१०३॥
- २ स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।
- ३ लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥१०४॥
- ४ अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।
- ५ आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥१०५॥
- ६ त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।
- ७ अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितञ्च परिभूते ॥१०६॥
- ८ त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।
- ९ उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥१०७॥

१ छिन्नम्, छातम्, लूनम्, कृत्तम्, दातम्, दितम्, छितम्, वृक्णम् ( ८ त्रि ), 'काटे हुए काष्ठ आदि' के ८ नाम हैं ॥

२ स्रस्तम्, ध्वस्तम्, भ्रष्टम्, स्कन्नम्, पन्नम्, च्युतम्, गलितम् ( ७ त्रि ) 'गीरे हुए' के ७ नाम हैं ॥

३ लब्धम्, प्राप्तम्, विन्नम्, भावितम्, आसादितम्, भूतम् ( ६ त्रि ), 'पाये हुए' के ६ नाम हैं ॥

४ अन्वेषितम्, गवेषितम्, अन्विष्टम्, मार्गितम्, मृगितम् ( ५ त्रि ) 'ढूँढे ( खोजे ) हुये' के ५ नाम हैं ॥

५ आर्द्रम्, सार्द्रम्, क्लिन्नम्, तिमितम्, स्तिमितम्, समुन्नम्, उत्तम् ( ७ त्रि ) 'भीगे हुए' के ७ नाम हैं ॥

६ त्राणम्, त्रातम्, रक्षितम्, अवितम्, गोपायितम्, गुप्तम् ( ५ त्रि ), 'रक्षा किये ( बचाये ) हुए' के ६ नाम हैं ॥

७ अवगणितम्, अवमताम्, अवज्ञातम्, अवमानितम्, परिभूतम् ( ५ त्रि ), 'अपमान किये हुए' के ५ नाम हैं ॥

८ त्यक्तम्, हीनम्, विधुतम्, समुज्झितम्, धूतम्, उत्सृष्टम् ( ६ त्रि ), 'छोड़े हुए' के ६ नाम हैं ॥

९ उक्तम्, भाषितम्, उदितम्, जल्पितम्, आख्यातम्, अभिहितम्, लपितम् ( ७ त्रि ), 'कहे हुए' के ७ नाम हैं ॥

- १ बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।
- २ ऊरीकृतगुरुरीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥  
'संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।
- ३ ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥  
अपि मीर्णवणितामिष्टतडितानि स्तुतार्थानि ।
- ४ 'भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवमितगलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥  
अभ्यवहृतान्नजम्बग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।
- ५ 'ब्राह्मण्यो ब्राह्मणहितो ६ वीतदम्भस्त्वकल्मषः ( ३ )

१ बुद्धम्, बुधितम्, मनितम्, विदितम्, प्रतिपन्नम्, अवसितम्, अवगतम् ( ७ त्रि ), 'माने या समझे हुये' के ७ नाम हैं ॥

२ ऊरीकृतम् ( + उरीकृतम् ), गुरुरीकृतम्, अङ्गीकृतम्, आश्रुतम् ( + प्रतिश्रुतम् ), प्रतिज्ञातम्, संगीर्णम्, विदितम् ( + संविदितम् ), संश्रुतम्, समाहितम्, उपश्रुतम्, उपगतम् ( ११ त्रि ), 'स्वीकार (मंजूर) किये हुए' के ११ नाम हैं ॥

३ ईलितम्, शस्तम्, पणायितम्, पनायितम्, प्रणुतम्, पणितम्, पनितम्, मीर्णम्, वणितम्, अमिष्टम्, ईडितम्, स्तुतम् ( १२ त्रि ), 'स्तुति ( बहाई ) किये हुए' के १२ नाम हैं ।

४ भक्षितम्, चर्वितम्, लीढम् ( + लिप्तम् ), प्रत्यवसितम्, गलितम्, खादितम्, प्सातम्, अभ्यवहृतम्, अन्नम्, जम्बम्, ग्रस्तम्, ग्लस्तम्, अशितम्, भुक्ते ( १४ त्रि ), 'खाये, चबाये, चाटे, घोंटे ( निगले ) हुए' के १४ नाम हैं ॥

५ [ ब्राह्मण्यः, ब्राह्मणहितः ( २ त्रि ), 'ब्राह्मणके लिप हित' के २ नाम हैं ]

६ [ वीतदम्भः, अकल्मषः ( २ त्रि ), 'निष्पाप, दम्भसे रहित' के २ नाम हैं ] ॥

१. 'संगीर्णं संविदितं संश्रुतं' मित्यपि क्वचिन्पाठः' इति महे० ॥

२. 'भक्षितचर्वितलिप्तप्रत्यवसित—' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'ब्राह्मण्यो.....धोमुखे' इत्यथं श्लेषकांशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च— ब्राह्मण्यो.....धोमुखे' इत्येवं मूलमात्रमुपपन्नम् । अस्य च प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले श्लेषकरत्वेन स्थापितः ॥

- १ असंमतः प्रणाययः स्या २ चक्षुष्यः प्रियदर्शनः ( ४ )  
 ३ वैरागिको विरागाहः ४ संशितस्तु सुनिश्चितः ( ५ )  
 ५ ईर्ष्यालुः कुहनो ६ गोष्ठध्वोऽन्यद्वेषा स्वगेहगः ( ६ )  
 ७ तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको जनः ( ७ )  
 ८ गेहेशूरे गृहेनर्दी पिण्डीशूरो ९ ऽथ संस्कृतः ( ८ )  
 व्युत्पन्नप्रहतक्षुण्णा १० अन्वेष्टाऽनुपदी समौ ( ९ )  
 ११ नीलीरागः स्थिरस्नेहो १२ हरिद्वारागकोऽन्यथा ( १० )  
 १३ आसीन उपविष्टः स्या १४ ऊर्ध्वस्थोऽर्ध्वदमौ स्थिते ( ११ )

- १ [ असंमतः, प्रणाययः ( २ त्रि ), 'असंमत' के २ नाम हैं । ॥  
 २ [ चक्षुष्यः, प्रियदर्शनः ( २ त्रि ), 'देखनेमें प्रिय' के २ नाम हैं ] ॥  
 ३ [ वैरागिकः, विरागाहः ( २ त्रि ), 'विराग के योग्य' के २ नाम हैं ]  
 ४ [ संशितः, सुनिश्चितः ( २ त्रि ) 'सुनिश्चित' के २ नाम हैं ] ॥  
 ५ [ ईर्ष्यालुः, कुहनः ( २ त्रि ), 'ईर्ष्या करनेवाले' के २ नाम हैं ] ॥  
 ६ [ गोष्ठध्वः ( त्रि ), 'घरबैठे दूसरेसे द्वेष करनेवाले' का १ नाम है ]  
 ७ [ आयःशूलिकः ( त्रि ), 'सरल उपायसे भी होने योग्य कामको तीक्ष्ण ( कठोर ) उपायसे करनेवाले' का १ नाम है ] ॥  
 ८ [ गेहेशूरः, गेहेनर्दी ( = गेहेनदिन् ), पिण्डीशूरः ( ३ त्रि ) 'घरमें ही बहादुर बननेवाले' के ३ नाम हैं ] ॥  
 ९ [ संस्कृतः, व्युत्पन्नः, प्रहतः, क्षुण्णः ( ४ त्रि ), 'शास्त्रादिसे संस्कृत, व्युत्पन्न' के ४ नाम हैं ] ॥  
 १० ( अन्वेष्टा ( = अनुवेष्टृ ), अनुपदा ( = अनुपदिन् । २ त्रि ), 'खोज ( अनुसन्धान ) करनेवाले' के २ नाम हैं ) ॥  
 ११ ( नीलीरागः, स्थिरस्नेहः ( २ त्रि ), 'स्थिर ( पक्के ) प्रेमवाले' के २ नाम हैं ) ॥  
 १२ [ हरिद्वारागकः ( त्रि ), 'अस्थिर ( लचके ) प्रेमवाले' का १ नाम है ] ॥  
 १३ [ आसीनः, उपविष्टः ( २ त्रि ), 'बैठे हुए' के २ नाम हैं ] ॥  
 १४ [ ऊर्ध्वस्थः, ऊर्ध्वदमः, स्थितः ( ३ त्रि ) 'खड़े या ठहरे हुये' के ३ नाम हैं ] ॥

- १ उत्पश्य उन्मुखे २ गृह्यः पक्षे ( क्षये ) न्युञ्जस्त्वधोमुखे' ( १२ )
- ४ क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥१११॥  
'क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः ।
- ५ साधिष्ठद्राधिष्ठरस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥११२॥  
बाढठ्यायतबहुगुरुधामनवृन्दारकातिशये ।
- ६ 'ग्राम्ये ग्रामेयकग्रामीणा ७ श्वाच्छिन्नो बलाद्धृतं ( १३ )
- ८ चोरितं मुषितं मुष्टं ९ स्थपुटं तु नतोन्नतम् ( १४ )
- १० उत्पादितोन्मूलितार्थमुद्धृतम्—

१ [ उत्पश्यः, उन्मुखः ( २ त्रि ), 'उन्मुख' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ गृह्यः, पक्षः ( + पचयः । २ त्रि ), 'पक्ष (तरफदार)' के २ नाम हैं ] ॥

३ [ न्युञ्जः, अधोमुखः ( १ त्रि ) 'कुबड़ा या नीचे मुखाशुकाये हुए' के २ नाम हैं ] ॥

४ क्षेपिष्ठः, क्षोदिष्ठः, प्रेष्ठः, वरिष्ठः, स्थविष्ठः, बंहिष्ठः, ( ६ त्रि ), 'बहुत जल्द, बहुत खोटा या छोटा, बहुत प्रिय, बहुत बड़ा, बहुत मोटा, और बहुत ज्यादा' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

५ साधिष्ठः, द्राधिष्ठः, स्फेष्ठः, गरिष्ठः, हसिष्ठः, वृन्दिष्ठः ( ६ त्रि ), 'बहुत भला, बहुत लम्बा, बहुत स्थिर, बहुत भारी, बहुत छोटा और बहुत प्रधान' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

६ [ ग्राम्यः, ग्रामेयकः, ग्रामीणः ( ३ ), 'देहाती' के ३ नाम हैं ] ॥

७ [ श्वाच्छिन्नः, बलाद्धृतः ( २ त्रि ), बलपूर्वक (जबर्दस्ती से) पकड़े या छिने हुए' के २ नाम हैं ] ॥

८ [ चरितम्, मुषितम्, मुष्टम् ( ३ त्रि ), 'चुराये हुए' के ३ नाम हैं ] ॥

९ [ स्थपुटम्, नतोन्नतम् ( २ त्रि ), 'ऊँचे-नीचे' के २ नाम हैं ] ॥

१० [ उत्पादितम्, उन्मूलितम्, उद्धृतम् ( ३ त्रि ), 'उखाड़े हुए' के ३ नाम हैं ] ॥

१. 'बहुरूपप्रकर्षार्थाः' इति पाठान्तरम् । 'पीवर' इति पाठस्त्वयुक्तः चन्द्रोमङ्गात् । 'पीव' इति पाठे नान्तो युक्तः' इति भा० दी० । परमत्रायार्थान्दसो लक्षणस्य सर्वथा सातु समन्वयेन चन्द्रोमङ्गाभावाच्चिन्त्येयमुक्तिः ।

२. 'ग्राम्ये.....स्फुटे' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च—'ग्राम्ये...स्फुटे' इत्येवं मूलमात्रमुपलभ्यते । अस्य च प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकरत्वेन स्थापितः ।

—१ बहिते वृढम् ( १५ )

२ आक्षितं निक्षितं ३ पूर्णं पूरितं ४ निभृते भृतम् ( १६ )

५ प्रतिक्षितं प्रविष्टं स्या ६ दन्तगंडु निरर्थकं ( १७ )

७ न्यक्षितं स्यादधःक्षिप्तं ८ क्षितमूर्ध्वमुदक्षितम् ( १८ )

९ स्पष्टेऽक्षितं १० चतुर्थं तु तुरीयं तुर्यं ११ मास्थिते ( १९ )

आकारे श्लिष्टसंपृक्तः १२ खचिते स्फुरितभूषितौ ( २० )

१३ प्रचक्षितं प्रतीष्टं १४ द्वेष्यामृष्याक्षिगताः समाः ( २१ )

१५ श्यानं शीने—

१ [ बहितम् , वृढम् ( २ त्रि ), 'बढ़े हुए' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ आक्षितम् , निक्षितम् ( २ त्रि ), 'घटे हुए' के २ नाम हैं ] ॥

३ [ पूर्णम् , पूरितम् ( २ त्रि ), 'पूरे हुए' के २ नाम हैं ] ॥

४ [ निभृतम् , भृतम् ( २ त्रि ), 'चश में रहनेवाले' के २ नाम हैं ] ॥

५ [ ५ प्रतिक्षितम् , प्रविष्टम् ( २ त्रि ), 'प्रवेश किये ( घुसे ) हुए' के २ नाम हैं ] ॥

६ [ प्रन्तगंडु, निरर्थकम् ( २ त्रि ), 'निरर्थक. बेमतलब' के २ नाम हैं ] ॥

७ [ न्यक्षितम् , अधःक्षितम् ( १ त्रि ), 'नीचे फेंके हुए' के २ नाम हैं ] ॥

८ [ उदक्षितम् ( त्रि ), 'उपर फेंके हुए' का १ नाम है ] ॥

९ [ स्पष्टम् , अक्षितम् ( २ त्रि ), 'स्पष्ट' के २ नाम हैं ] ॥

१० [ चतुर्थम् , तुरीयम् , तुर्यम् ( ३ त्रि ), 'चौथे' के ३ नाम हैं ] ॥

११ [ श्लिष्टसंपृक्तः ( त्रि ), 'स्थायी आकारवाले' का १ नाम है ] ॥

१२ [ खचितः, स्फुरितः, भूषितः ( ३ त्रि ), 'रत्न-जवाहिरात आदि से जड़े हुए भूषण आदि' के ३ नाम हैं ] ॥

१३ [ प्रचक्षितम् , प्रतीष्टम् ( २ त्रि ), 'चन्दनादि छिड़के हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं ] ॥

१४ [ द्वेष्यः, अमृष्या, अक्षिगतः ( ३ त्रि ), 'आँखमें गड़े हुए, वैरी' के तीन नाम हैं ] ॥

१५ [ श्यानम् , शीनम् , ( २ त्रि ), 'जमे हुए घी आदि' के २ नाम हैं ] ॥

१— अन्वितेऽन्वीतं २ प्रकाशप्रकटौ स्फुटौ (२२)  
इति विशेष्यनिष्कर्षः ॥ १ ॥

२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णं लिङ्गमुच्येत् ।

१ [ अन्वितम् , अन्वीतम् ( २ त्रि ), 'युक्त, सहित' के २ नाम हैं ] ॥

२ [ प्रकाशः, प्रकटः, स्फुटः ( ३ त्रि ), 'प्रकट, स्पष्ट' के ३ नाम हैं ] ॥

इति विशेष्यनिष्कर्षः ॥ १ ॥



२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ पूर्वोक्त शब्दोंके आपसमें संकीर्ण होने ( मिल जाने ) के भयसे पहले नहीं कहे हुए शब्दोंके संग्रहके वास्ते 'प्रकृति—' इस श्लोकसे द्वितीय 'संकीर्ण-वर्ग' का आरम्भ करते हैं । संकीर्ण अर्थ और संकीर्ण लिङ्गसे आरम्भ होनेके कारण 'संकीर्णवर्ग' नामके इस प्रकरणमें 'प्रकृति १, प्रत्यय २ आदि (आदि)से रूपभेद ३, साहचर्य ४, के अर्थका संग्रह है ) से लिङ्गोंको समझना चाहिये । ('प्रत्येकके क्रमशः उदाहरण । १। प्रकृत्यर्थ जैसे—अपरस्परः (त्रि), इस उदाहरणमें 'परवस्त्रिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' ( पा० सू० २।४।४६ ) इस सूत्रसे पर ( आगे ) वाले शब्दके लिङ्गका अतिदेश होनेसे यहाँ ( अपरस्पर शब्दमें ) 'पर' शब्दके त्रिलिङ्ग होनेके कारण 'अपरस्पर' शब्द भी त्रिलिङ्ग है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये । २। प्रत्ययार्थ जैसे—'शान्तिः, कृतिः, चित्तिः, विपत्तिः,.....' ( स्त्री ), 'हसितम् , हसनम् , जल्पितम् , शयनम् .....' ( ४ न ), 'आकरः, रामः, सन्धिः,.....' ( ३ पु ) इन उदाहरणोंमें 'स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और पुल्लिङ्ग' में किन्, आदि प्रत्ययोंके होनेसे ये शब्द भी क्रमशः स्त्रीलिङ्ग आदिमें प्रयुक्त होते हैं । इसी तरह अन्यान्य ( ३ रा रूपभेद और ४था साहचर्यके ) उदाहरणका भी स्वयं तर्क कर लेना चाहिये )



- १ कर्म क्रिया २ तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥  
 ३ साकस्यासङ्गवचने 'पारायणतुरायणे ।  
 ४ यदृच्छा स्वैरिता ५ हेतुशून्या<sup>२</sup> स्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥  
 ६ शमयस्तु शमः शान्ति ७ दान्तिस्तु दमथो दमः ।  
 ८ अवदानं कर्म वृत्तं—

१ कर्म ( = कर्मन् न ), क्रिया ( स्त्री ), 'काम' के २ नाम हैं ॥

२ अपरस्परम् ( १ले अर्थमें नपुं० और दूसरे अर्थमें त्रि०<sup>३</sup> ) 'लगातार काम होते रहना, और लगातार काम करनेवाला' इन दो अर्थोंमें है ॥

३ पारायणम् , तुरायणम् ( + परायणम् , + त्रि<sup>४</sup> । २ न ), 'पूर्ण कथन ( कहना, वक्तव्य ) और प्रासङ्गिक ( अवसरके अनुकूल ) कथन' का क्रमशः १—१ नाम हैं ॥

४ यदृच्छा, स्वैरिता ( २ स्त्री ), 'स्वतन्त्रता' के २ नाम हैं ॥

५ विलक्षणम् ( न ), 'विचित्र' अर्थात् 'निष्कारण ठहरने' का १ नाम है ॥

६ शमयः, शमः ( २ पु ), शान्तिः ( स्त्री ), 'शान्ति' के तीन नाम हैं ॥

७ दान्तिः ( स्त्री ), दमथः, दमः ( २ पु ) 'इन्द्रियोंको अपने वशमें करने' के ३ नाम हैं ॥

८ अवदानम् ( + अपदानम् ), कर्मवृत्तम् ( भा० दी० । २ न ) 'बीते हुए काम, अच्छे काम' के २ नाम हैं ॥

१. "परायणतुरायणे" इति "पारायणपरायणे" इति च पाठान्तरे ॥

२. "स्वास्या" इति पाठान्तरम् ॥

३. "अवदानं कर्म वृत्तं ( कर्मवृत्तं )" इति "अपदानं—" इति च पाठान्तरे ॥

४. प्रथमार्थे ( क्रियासातत्ये ) 'अपरस्पर'शब्दस्य स्त्रीत्वं यथा—'अपरस्परं गच्छन्ति स्त्रियः, पुरुषाः, कुलानि वा' । द्वितीयार्थे ( क्रियावर्ता सातत्ये ) 'अपरस्पर'शब्दस्य त्रिलिङ्गत्वं यथा—'अपरस्पराः स्त्रियः, अपरस्पराणि कुलानि, अपरस्पोऽन्यः; ....." ॥

५. 'पारायण' शब्दस्य क्लीबत्वमात्रे यथा—

"रत्नपारायणं नाम्ना लङ्घेयं मम मैथिलि" इति अट्टिः ५।८९ ॥

'परायण' शब्दस्य त्रिलिङ्गकरत्वे यथा—

"अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता" इति कु० सं० ४।१॥

—१ 'काम्यदानं प्रचारणम् ॥ ३ ॥

२ वशक्रिया संवननं ३ मूलकर्म तु कार्मणम् ।

४ विधूननं विधुवनं ५ तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

६ पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं ७ हस्तधारणमित्यपि ।

७ सेवनं सीवनं स्यूति ८ विंदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

९ आक्रोशनमभीषङ्गः १० संवेदो वेदना न ना ।

११ संमूर्च्छनमभिव्याप्तिः—

१ काम्यदानम् ( + कामदानम् ), प्रचारणम् ( + प्रचारणम् । २ न )

'मनचाहा' दान देने' के २ नाम हैं ॥

२ वशक्रिया ( स्त्री ), संवननम् ( + संवपनम्, संवदनम् । न ) 'मन्त्र-  
मणि आदिसे वशमें करने' के २ नाम हैं ॥

३ मूलकर्म ( = मूलकर्मन्, भा० दी० ), कार्मणम् ( २ न ), 'जड़ी-बूटी  
आदिसे उखाटन, मारण, मोहन आदि करने' के २ नाम हैं ॥

४ विधूननम् ( + विधुननम् ), विधुवनम् ( २ न ), 'कँपाने' के २ नाम हैं ॥

५ तर्पणम्, प्रीणनम्, अवनम् ( ३ न ), 'तृप्त करने' के ३ नाम हैं ॥

६ पर्याप्तिः ( स्त्री ), परित्राणम्, हस्तधारणम् ( + हस्तधारणम् । ३ न ),  
'मारने के लिये उद्यत ( तैयार ) को रोकने' के ३ नाम हैं ॥

७ सेवनम् ( + सेवः पु ), सीवनम् ( १ न ), स्यूतिः ( स्त्री ), 'सिलाई  
करने' के ३ नाम हैं ॥

८ विंदरः ( पु ), स्फुटनम् ( + स्फोटनम् । न ), भिदा ( स्त्री ), 'फटने  
या अलग होने' के ३ नाम हैं ॥

९ आक्रोशनम् ( न ), अभीषङ्गः ( + अभीषङ्गः । पु ), 'गाली या शाप  
देने' के १ नाम हैं ॥

१० संवेदः ( पु ) वेदना ( स्त्री न ), 'अनुभव' के १ नाम हैं ॥

११ संमूर्च्छनम् ( न ), अभिव्याप्तिः ( स्त्री ), 'व्याप्त होने' अर्थात् 'चारों  
तरफसे बढ़ने या भर जाने' के २ नाम हैं ॥

१. 'कामदानं' इति पाठान्तरम् ।

२. 'हस्तधारम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सेवस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

—१ याच्ना भिक्षाऽर्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥

२ वर्धनं छेदने ३ ऽथ द्वे 'आनन्दसभाजनै ।

आप्रच्छन्न ४ मथाग्नायः संप्रदायः ५ क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

६ ग्रहे ग्राहो ७ वशः कान्तौ ८ रक्षणस्त्राणे ९ रणः कणे ।

१० व्यधो वेधे ११ पचा पाके १२ हवो हूतौ १३ वरो वृत्तौ ॥ ८ ॥

१४ ओषः प्लोषे १५ नयो नाये—

१ याच्ना, भिक्षा, अर्थना, अर्दना ( ४ स्त्री ), 'माँगने' के ४ नाम हैं ॥

२ वर्धनम्, छेदनम्, ( २ न ), 'काटने' के २ नाम हैं ॥

३ आनन्दनम् ( + आमन्त्रणम् ), सभाजनम्, आप्रच्छन्नम् ( ३ न ), 'मित्र या गुरुजन आदिके आनेपर अभ्युत्थान ( उठकर अगधानी ), आलिङ्गन आदि और कुशल-प्रश्न आदि द्वारा उनके सत्कार करने' के ३ नाम हैं ॥

४ आग्नायः संप्रदायः ( १ पु ), रिवाज, कुलक्रमागत ( खान्दानी ) रहन-सहन या गुरु-परम्परागत उपदेश आदि' के २ नाम हैं ॥

५ क्षयः ( पु ), क्षिया ( स्त्री ), 'घटने या कम होने' के २ नाम हैं ॥

६ ग्रहः, ग्राहः ( २ पु ), 'ग्रहण करने, लेने' के २ नाम हैं ॥

७ वशः ( पु ), कान्तिः ( स्त्री ), 'चाहना इच्छा' के २ नाम हैं ॥

८ रक्षणः ( + रक्षा स्त्री ), त्राणः ( २ पु ), 'रक्षा' के २ नाम हैं ॥

९ रणः, कणः ( ८ पु ), 'शब्द करने' के २ नाम हैं ॥

१० व्यधः, वेधः, ( २ पु ), 'छेदने' के २ नाम हैं ॥

११ पचा ( + पक्तिः । स्त्री ), पाकः ( पु ), 'पकाने' के २ नाम हैं ॥

१२ हवः ( पु ), हूतिः ( स्त्री ), 'पुकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

१३ वरः ( पु ), वृत्तिः ( स्त्री ), 'घेरे या तप, सेवा आदिसे प्रसन्न होकर देवता, गुरु आदिके वरदान देने' के २ नाम हैं ॥

१४ ओषः, प्लोषः ( + प्रोषः । १ पु ), 'दाह' के २ नाम हैं ॥

१५ नयः, नायः ( २ पु ), 'नीति' के २ नाम हैं ॥

१. 'आमन्त्रणसभाजनै इति पाठान्तरम् ॥ २. 'रक्ष' इत्यपवादः' इति स्त्री० स्था० ॥

३. तथा च कात्यः—तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः स वरो मतः' । इति ॥

१—ज्यानिर्जीर्णौ २ भ्रमो भ्रमौ ।

- ३ स्फातिर्वृद्धौ ४ प्रथा ख्यातौ ५ स्पृष्टिः पृक्तौ ६ स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥  
 ७ 'एषा' समृद्धौ ८ स्फुरणे स्फुरणा ९ प्रमिती प्रमा ।  
 १० प्रसूतिः प्रसवे ११ श्रूयते प्राधारः १२ क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥  
 १३ उत्कर्षोऽतिशये १४ सन्धिः श्लेषे १५ विषय आश्रये ।

- १ ज्यानिः, जीर्णिः, ( २ स्त्री ), 'पुराना होने' के २ नाम हैं ॥  
 २ भ्रमः ( पु ), भ्रमिः ( स्त्री ), 'भ्रमण करने' के २ नाम हैं ॥  
 ३ स्फातिः, वृद्धिः ( २ स्त्री ), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥  
 ४ प्रथा, ख्यातिः, ( २ स्त्री ), 'प्रसिद्धि' के २ नाम हैं ॥  
 ५ स्पृष्टिः, पृक्तिः ( २ स्त्री ), 'स्पर्श करने' के २ नाम हैं ॥  
 ६ स्नवः, स्रवः ( २ पु ), 'धीरे-धीरे चूने' के २ नाम हैं ॥  
 ७ एषा ( + विधा ), समृद्धिः ( २ स्त्री ), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥  
 ८ स्फुरणम् ( + स्फुलनम्, स्फोरणम्, स्फारणम्, स्फरणम् : न ), स्फुरणा  
 ( स्त्री ), 'फरकने' के २ नाम हैं ॥  
 ९ प्रमितिः, प्रमा ( २ स्त्री ), 'यथार्थ ज्ञान' के २ नाम हैं ॥  
 १० प्रसूतिः ( स्त्री ), प्रसवः ( पु ), 'बच्चा जनने ( पैदा करने )' के  
 २ नाम हैं ॥  
 ११ श्रूयते, प्राधारः ( २ पु ), 'पानी आदिके धारासे चूने या बढ़ने'  
 के २ नाम हैं ॥  
 १२ क्लमथः, क्लमः ( २ पु ), 'उत्थानि, खेद' के २ नाम हैं ॥  
 १३ उत्कर्षः, अतिशयः ( २ पु ), 'उत्कर्ष, बढ़ाई' के २ नाम हैं ॥  
 १४ सन्धिः, श्लेषः ( २ पु ), 'जोड़, मेल' के २ नाम हैं ॥  
 १५ विषयः, आश्रयः ( + आश्रयः । २ पु ), 'आश्रय, अवलम्ब' के  
 २ नाम हैं ॥

१. विधा समृद्धौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'क्लमथुः' इत्यपपाठः' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'आश्रये' इति पाठान्तरम् ॥

- १ क्षिपायां क्षेपणं २ गीर्णिगिरौ ३ 'गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥  
 ४ उन्नाय उन्नये ५ श्रायः श्रयणे ६ 'जयने जयः ।  
 ७ निगादो निगदे ८ मादो मद ९ उद्वेग उद्वेगमे ॥ १२ ॥  
 १० विमर्दनं परिमलोऽ ११ अभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।  
 १२ 'निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यात्—

१ क्षिपा ( स्त्री ), क्षेपणम् ( न ), 'प्रेरणा करने, चलाने या फेंकने' के २ नाम हैं ॥

२ गीर्णिः, गिरिः ( २ स्त्री ), 'निगलने' अर्थात् 'घोंटने' के २ नाम हैं ॥

३ गुरणम् ( + गूरणम्, गोरणम् । न ), उद्यमः ( पु ), 'उद्यम, उद्योग' के २ नाम हैं ॥

४ उन्नायः, उन्नयः ( २ पु ), 'उन्नति या ऊहा' के २ नाम हैं ॥

५ श्रायः ( पु ), श्रयणम् ( न ), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥

६ जयनम् ( न ), जयः ( पु ), 'जीत, विजय' के २ नाम हैं । ( 'क्षी० स्वा० सम्मत पाठभेदसे—'जपनम् (न), जपः ( पु ), 'जप' के २ नाम हैं' ) ॥

७ निगादः, निगदः ( २ पु ), 'स्पष्ट कहने' के २ नाम हैं ॥

८ मादः, मदः ( २ पु ), 'मद, हर्ष' के २ नाम हैं ॥

९ उद्वेगः, उद्वेगः ( २ पु ), 'घबराहट' के २ नाम हैं ॥

१० विमर्दनम् ( न ), परिमलः ( पु ), 'शरीरमें कुक्कुम, चन्दन या उषटन आदिको लगाने' के २ नाम हैं ॥

११ अभ्युपपत्तिः ( स्त्री ), अनुग्रहः ( पु ) 'अनुग्रह' अर्थात् भलाई करने या बुराई से बचाने' के २ नाम हैं ॥

१२ निग्रहः ( पु ), ( + निरोधः, भा० दी० पु ), 'निग्रह' अर्थात् 'बुराई करने और भलाईसे बचाने (रोकने)' का १ नाम है । ('पाठभेदसे—'विग्रहः, विरोधः ( २ पु ), 'विरोध' ( वैर )' के २ नाम हैं' ) ॥

१. 'गूरणमुद्यमे' इति पाठान्तरम् । २. 'जपने जपः' इति क्षी० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

३. अयं पाठो महे० सम्मतः । 'निग्रहस्तु विरोधः' इति क्षी० स्वा० पुस्तकपाठः, तत्र '—निरोध' इति पाठयम् । 'विग्रहो विरोधो वा' इति क्षी० स्वा० । 'निग्रहस्तु निरोधः' इति भा० दी० पाठः समीचीनो भाति ॥

—१ अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

२ मुष्टिबन्धस्तु संप्राहो ३ डिम्बे डमरविप्लवौ ।

४ बन्धनं प्रसितिश्चारः ५ स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तः ॥ १४ ॥

६ निकारो विप्रकारः स्या ७ वाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।

८ परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

९ अपहारस्त्वपचयः १० समाहारः समुच्चयः ।

१ अभियोगः, अभिग्रहः ( २ पु ) 'युद्ध आदि में लल्लकारने' के २ नाम हैं ॥

२ मुष्टिबन्धः, संप्राहः ( २ पु ) 'मुट्टी बाँधने या प्रतिमल्ल आदिको पकड़ने' के २ नाम हैं ॥

३ डिम्बः, डमरः, विप्लवः ( ३ पु ), 'प्रलय टूटना ( बाका ), या हथियारों की लड़ाई' के ३ नाम हैं । ( जिसे बालक रस्सी लपेटकर नचाते हैं, उस 'लट्टु' अर्थमें भी 'डिम्ब' शब्द का प्रयोग श्रीहर्षने नैषधचरितमें किया है<sup>१</sup> ) ॥

४ बन्धनम् ( न ), प्रसितिः ( + प्रसृतिः । स्त्री ), चारः ( + स्वारः । पु ) 'बन्धन' के ३ नाम हैं ॥

५ स्पर्शः ( + स्पर्शः ), स्प्रष्टा ( = स्प्रष्टृ ), उपतप्ता ( = उपतप्तृ । ३ पु ), 'संतप्त या उपताप रोगसे पीड़ित' के ३ नाम हैं ॥

६ निकारः, विप्रकारः ( २ पु ), 'अपकार, बुराई' के २ नाम हैं ॥

७ वाकारः, इङ्गः ( २ पु ), इङ्गितम् ( न ), 'मतलब के अनुसार चेष्टा' के ३ नाम हैं ॥

८ परिणामः, विकारः ( २ पु ), विकृतिः, विक्रिया ( २ स्त्री ), 'विकार, स्वभावके बदलने' के ४ नाम हैं । ( 'किसी-किसी के मतसे २-२ शब्द एकर्थक हैं' ) ॥

९ अपहारः, अपचयः ( २ पु ), 'छीन लेने या घटने' के २ नाम हैं ॥

१० समाहारः, समुच्चयः ( २ पु ), 'बंदोरने इकट्ठा या ढेरी करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'प्रसृतिः स्वारः स्पर्शः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तथा—'बालेन नक्तं समयेन युक्तं रौप्यं लसद्भिम्बमिवेन्दुभिम्बम् ।'

इति नै० च० २२-५३

- १ प्रत्याहार उपादानं २ विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥  
 ३ अभिहारोऽभिग्रहणं ४ निर्हारोऽभ्यवर्षणम् ।  
 ५ अनुहारोऽनुकारः स्या ६ दर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥  
 ७ प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात् ८ प्रवहो गमनं बहिः ।  
 ९ वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥  
 १० हिंसाकर्माऽभिचारः स्यात् ११ जागर्या जागरा द्वयोः ।

१ प्रत्याहारः ( पु ), उपादानम् ( न ), 'इन्द्रियोको अपने ( इन्द्रियोंके ) विषयोंसे हटाकर वशीभूत करने' के २ नाम हैं ॥

२ विहारः, परिक्रमः ( २ पु ), 'पैदल टटलने' के १ नाम हैं ॥

३ अभिहारः ( + अभ्याहारः । पु ), अभिग्रहणम् ( न ), 'चुराने' के २ नाम हैं ॥

४ निर्हारः ( पु ), अभ्यवर्षणम् ( न ) 'पर आदिमें चुभे ( गड़े ) हुए काँटे आदिको निकालने' २ नाम हैं ॥

५ अनुहारः, अनुकारः ( १ पु ), 'अनुकरणम् ( नकल ) करने' के १ नाम हैं ॥

६ व्ययः ( पु ), 'खर्च' का १ नाम है ॥

७ प्रवाहः ( पु ), प्रवृत्तिः ( स्त्री ), 'पानी आदि तरल पदार्थोंके निरन्तर बहने' के २ नाम हैं ॥

८ प्रवहः ( पु ) 'जलादि के बाहर निकलने (बहने)' के १ नाम हैं ॥

९ वियामः, वियमः, यामः, यमः, संयामः, संयमः ( १ पु ), 'संयम' अर्थात् 'योगके संयमनामक अङ्ग-विशेष' के ६ नाम हैं । ( 'धी० स्वा० के मत से 'अनेक तरहके यम करने, उपरति (त्याग) मात्र और संयम करने' के क्रमशः १-२ नाम हैं' ) ॥

१० हिंसाकर्म ( = हिंसाकर्मन् न । भा० दी० ), अभिचारः ( पु ), 'हिंसा आदि करने' के २ नाम हैं ॥

११ जागर्या ( + जाग्रिया, जागर्तिः । स्त्री ), जागरा ( स्त्री पु ), 'जागने के १ नाम हैं ॥

- १ विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः २ स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥  
 ३ निर्वेश उपभोगः स्यात् ४ परिसर्पः परिक्रिया ।  
 ५ विधुरं तु प्रविश्लेषे ६ अभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥  
 ७ संक्षेपणं समसनं ८ पर्यवस्था विरोधनम् ।  
 ९ परिसर्या परीसारः १० स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥  
 ११ विस्तारो विग्रहो व्यासः १२ स च शब्दस्य विस्तरः ।  
 १३ संवाहनं मर्दनं स्याद्—

१ विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः ( १ पु ), 'विघ्न' के ३ नाम हैं ॥

२ उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः ( भा० दी० । २ पु ), 'समीप रहने आश्रय करने' के २ नाम हैं ॥

३ निर्वेशः, उपभोगः ( २ पु ), 'उपभोग' के २ नाम हैं ॥

४ परिसर्पः ( पु ), परिक्रिया ( स्त्री ), 'परिवार आदि इष्टजनोंसे घिरे रहने' के ४ नाम हैं ॥

५ विधुरम् ( न ), प्रविश्लेषः ( पु ), 'परिवार आदि इष्टजनों से अलग होने' के २ नाम हैं ॥

६ अभिप्रायः, छन्दः, आशयः ( ३ पु० ), 'आशय, भाव, मतलब' के ३ नाम हैं ॥

७ संक्षेपणम्, समसनम् ( २ न ), 'संक्षेप ( लाघव, थोड़ा हलका ) करने' के २ नाम हैं ॥

८ पर्यवस्था ( स्त्री ), विरोधनम् ( न ), 'विरोध करने' के २ नाम हैं ॥

९ परिसर्या ( स्त्री ), परीसारः ( + परिसारः । पु ), 'सब तरफ जाने' के २ नाम हैं ॥

१० आस्या, आसना, स्थितिः ( ३ स्त्री ), 'टिकाव या स्थिति' के ३ नाम हैं ॥

११ विस्तरः, विग्रहः व्यासः ( ३ पु ) 'फैलाव' के ३ नाम हैं ॥

१२ विस्तरः ( पु ), 'शब्द के फैलाव' का १ नाम है ॥

१३ संवाहनम् ( + संवहनम् ), मर्दनम् ( २ न ), 'शरीर को दबाने' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्यान्मर्दनं संवहनम्' इति भा० दी० संमतं पाठान्तरम् ॥



—१ विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥

- २ संस्तवः स्यात्परिचयः ३ प्रसरस्तु विसर्पणम् ।  
 ४ नीवाकस्तु प्रयामः स्यात् ५ सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥  
 ६ लवोऽभिलाषो लवने ७ निष्पावः पवने पवः ।  
 ८ प्रस्तावः स्यादवसर ९ स्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥  
 १० प्रजनः स्यादुपसरः ११ प्रश्रयप्रणयौ समौ ।

१ विनाशः ( पु ), अदर्शनम् ( न ), 'अस्तर्धान होने या छिप जाने' के २ नाम हैं ॥

२ संस्तवः, परिचयः ( २ पु ), 'परिचय' अर्थात् 'जान-पहिचान' के २ नाम हैं ॥

३ प्रसरः ( पु ), विसर्पणम् ( न ), 'घाव ( घण ) आदि के थाला' ( फैलाव ) के २ नाम हैं ॥

४ नीवाकः, प्रयामः ( २ पु ), 'धान्य आदिको एकत्रित करने' के २ नाम हैं ॥

५ सन्निधिः ( पु ), सन्निकर्षणम् ( न ), 'पास, समीप करने' के २ नाम हैं ॥

६ लवः, अभिलावः ( २ पु ), लवनम् ( न ) 'काटने' के ३ नाम हैं ॥

७ निष्पावः ( पु ), पवनम् ( न ), पवः ( पु ), 'धान आदि अन्नको ओसाने या सूप आदिसे फटककर भूसा अलग करने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रस्तावः, अवसरः ( ३ पु ), 'अवसर' प्रसक्त, प्रस्ताव' के २ नाम हैं ॥

९ त्रसरः ( + तसरः । पु ) सूत्रवेष्टनम् ( न ) 'कपड़ा चुननेके लिये जुलाहा आदी सूत लपेटने ( ताना-पाई करने )' के २ नाम हैं ॥

१० प्रजनः, उपसरः ( २ पु ), 'पहली बार गर्भ धारण करने' के २ नाम हैं ॥

११ प्रश्रयः ( + प्रसरः ), प्रणयः ( २ पु ), 'प्रेम, प्रीति' के २ नाम हैं ॥

१. प्रसरप्रणयौ इति पाठान्तरम् ॥

१ धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥

२ प्रत्युत्क्रमः<sup>१</sup> प्रयोगार्थः ४ प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।

५ स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः ६ संभ्रमस्त्वरः ॥ २६ ॥

७ प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः—

१ धीशक्तिः ( स्त्री ), निष्क्रमः ( पु ), 'बुद्धिके सामर्थ्य' के २ नाम हैं । ( 'सुननेकी इच्छा १, सुनना २, ग्रहण करना ३, धारण करना ( स्थिर अर्थात् याद रखना ) ४, ऊहा ( तर्क ) ५, अपोह ६, विज्ञान ७, और तत्त्वज्ञान ८, 'ये ८ बुद्धिके गुण<sup>२</sup> हैं' ) ॥

२ संक्रमः ( पु न ), दुर्गसंचरः ( + दुर्गसंचारः । पु ), 'किलामें जाने, दुर्ग ( किला ) के मार्ग' के २ नाम हैं ॥

३ प्रत्युत्क्रमः ( + प्रत्युत्क्रान्तिः स्त्री ) प्रयोगार्थः ( + प्रयुद्धार्थः । 'प्रयोग' ( + प्रयुद्ध ) के पर्यायवाचक सब शब्द । २ पु ), 'कार्यारम्भमें पहली बार प्रयोग करने या युद्धके लिये अच्छी तरह उद्योग करने' के २ नाम हैं ॥

४ प्रक्रमः, उपक्रमः ( २ पु ), 'पहली बार आरम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ अभ्यादानम् ( न ), उद्धातः ( + उपोद्धातः<sup>३</sup> ), आरम्भः ( १ पु ), 'आरम्भमात्र' के ३ नाम हैं । ( 'सा० दी० के मतसे 'प्रक्रमः,.....' ६ नाम 'आरम्भ' के ही हैं' ) ॥

६ संभ्रमः ( पु ), त्वरा ( + त्वरिः । स्त्री ), 'शीघ्रता, जल्दीबाजी' के २ नाम हैं ॥

७ प्रतिबन्धः, प्रतिष्ठम्भः ( १ पु ), 'कार्य आदिमें रुकावट पड़ने' के २ नाम हैं ॥

१. 'प्रयुद्धार्थः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।

कहापोहौ च विज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः' ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'उपोद्धात'लक्षणं यथा—

'चिन्ता प्रकृतिसिद्धार्थमुपोद्धातः प्रचक्षते' ॥ इति ॥

—१ अवनायस्तु <sup>१</sup> निपातनम् ।

- २ उपलम्भस्त्वनुभवः ३ समालम्भा विलेपनम् ॥ २७ ॥  
 ४ विप्रलम्भो विप्रयोगो ५ विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।  
 ६ विश्वावस्तु प्रतिख्यातिऽरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥  
 ८ निपाठनिपठौ पाठे ९ तेमस्तेमौ समुन्दने ।  
 १० आदीनवास्त्रवौ क्लेशे ११ मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥  
 १२ संवीक्षण विचयन मार्गणं <sup>२</sup>मृगणा मृगः ।

१ अवनायः ( पु ), निपातनम् ( + नियातनम् । न ), 'नाचे झुकने' के २ नाम हैं ॥

२ उपलम्भः, अनुभवः ( २ पु ), 'अनुभव प्राप्ति' के २ नाम हैं ॥

३ समालम्भः ( पु ), विलेपनम् ( न ), 'चन्दन आदि लपेटने' के २ नाम हैं ॥

४ विप्रलम्भः, विप्रयोगः ( २ पु ), 'अलग होने' के २ नाम हैं ॥

५ विलम्भः ( पु ), अतिसर्जनम् ( न ), 'बहुत देने' के २ नाम हैं ॥

६ विश्वावः ( पु ), प्रतिख्यातिः ( + प्रविख्यातिः । स्त्री ), 'बहुत प्रसिद्धि' के २ नाम हैं ॥

७ अवेक्षा ( स्त्री ), प्रतिजागरः ( पु ), 'किसी वस्तु आदिकी निगरानी ( देखभाल ) करने' के २ नाम हैं ॥

८ निपाठः, निपठः, पाठः ( ३ त्रि ), 'पढ़ने' के ३ नाम हैं ॥

९ तेमः, स्तेमः ( २ पु ), समुन्दनम् ( न ), 'पानी आदिसे भीगने' के ३ नाम हैं ॥

१० आदीनवः, आस्त्रवः ( + आश्रवः ), क्लेशः ( ३ पु ), 'दुःख' के ३ नाम हैं ॥

११ मेलकः ( + मेलः ), सङ्गः, सङ्गमः ( १ पु ), 'मेल, मिलाप' के ३ नाम हैं ॥

१२ संवीक्षणम् ( + अन्वीक्षणम्, अन्वेषणम्, गवेषणम् ), विचयनम्, मार्गणम् ( ३ न ), मृगणा ( + मृगया । स्त्री ), मृगः ( पु ), 'ढूढ़ने, ढोजने' के ५ नाम हैं ॥

१. 'नियातनम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'अन्वीक्षणमन्वेषणम्' इत्येके पेटुः' इति स्त्री०स्वा० ॥

३. 'मृगया' इति मुकुटः ॥

- १ परिश्रमः परिश्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
- २ निर्वर्णनं तु निध्यानं दशनालोकनेक्षणम् ।
- ३ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥
- ४ उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।
- ५ अतनं च ऋताया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ४२ ॥
- ६ स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।
- ७ पर्ययोऽतिक्रमस्तास्मन्नातपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
- ८ प्रषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रातशासनम् ।

१ परिश्रमः ( + परीश्रमः ), परिश्वङ्गः, संश्लेषः ( ३ पु ), उपगूहनम् ( न ), 'आलिङ्गन करने या लिपटने' के ४ नाम हैं ।

२ निर्वर्णनम्, निध्यानम्, दर्शनम्, आलोकनम्, ईक्षणम् ( + आलोकनेक्षणम् । ५ न ), 'देखने' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्याख्यानम्, निरसनम् ( २ न ), प्रत्यादेशः ( पु ), निराकृतिः ( स्त्री ), 'मना करने' के ४ नाम हैं ॥

४ उपशायः, विशायः ( २ पु ), 'पहरेदार आदिके बारी २ से सोने' के २ नाम हैं ॥

५ अतनम् ( न ), ऋतीया, हृणीया ( + हृणिया ), घृणा ( १ स्त्री ), 'घृणा' के ४ नाम हैं ॥

६ व्यत्यासः विपर्यासः व्यत्ययः, विपर्ययः ( + विपर्यायः । ४ पु ), 'उल्टा, कमरदित' के ४ नाम हैं ॥

७ पर्ययः, अतिक्रमः, अनिपातः, उपात्ययः ( ४ त्रि ), 'अतिक्रम' ( क्रम को छोड़कर आगे बढ़ने ) के ४ नाम हैं ॥

८ प्रतिशासनम् ( न ), 'नीकर आदिको बुलाकर कहीं भेजने या किसी काममें लगाने' का १ नाम है ॥

१ स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः ।

३ स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निह्न्यते ॥ ३५ ॥

४ आविधो विध्यते येन तत्र ५ विष्वक्समे निघः ।

६ उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

७ निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ।

८ आस्त्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥

निष्ठयूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिधानि ।

१ संस्तावः ( पु ), 'यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तुति करनेके लिये नियत स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

२ उद्धनः ( पु ), 'ठेढ़ा' अर्थात् 'जिस लकड़ीपर रखकर दूसरी लकड़ी छीलते हैं उस नीचेवाली लकड़ी' का १ नाम है ॥

३ स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः ( २ पु ), 'घास काटने के हथियार खुरपा आदि, या तीनीके धानको झटका देकर झाड़नेके लिये बाँस या छड़ीमें बाँधे हुए दौरी आदि वर्तन' के २ नाम हैं ॥

४ आविधः ( पु ), 'वर्मा' का १ नाम है ॥

५ निघः ( पु ), 'सब तरफ से एक समान जमे या लगाये हुए पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ उत्कारः, निकारः ( २ पु ), 'धान आदि अन्नको ओसाने या फटकने' के २ नाम हैं ॥

७ निगारः, उद्गारः, विक्षावः, उद्ग्राहः ( ४ पु ), 'निगलने' ( घोंटने ), घमन ( उष्टी, कय ) करने, छींकने और डकारने' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

८ आरतिः, अवरतिः, विरतिः ( ३ स्त्री ), उपरामः ( पु ), 'रुकने' के ४ नाम हैं ॥

९ निष्ठेवः ( पु न ), निष्ठयूतिः ( स्त्री ), निष्ठेवनम्, निष्ठीवनम् ( २ न ), 'थूकने' के ४ नाम हैं ॥

- १ जवने जूतिः २ सातिस्त्ववसाने स्याद्वथ ज्वरे जूतिः ॥ ३८ ॥  
 ४ उदजस्तु पशुप्रेरण ५ मकरणिरित्यादयः शापे ।  
 ६ गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ ३८ ॥  
 ७ आपूपिकं शाकुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ।  
 ८ माणवानां तु माणव्यं ९ सहायानां सहायता ॥ ४० ॥  
 १० हव्या हलानां ११ ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ।  
 १२ द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठयमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

१ जवनम् ( न ), जूतिः ( स्त्री ), 'ज्वेग' के २ नाम हैं ॥

२ सातिः ( स्त्री ), अवसानम् ( न ), 'समाप्ति, अन्त' के २ नाम हैं ॥

३ ज्वरः ( पु ), जूतिः ( स्त्री ), 'ज्वर, बुखार' के २ नाम हैं ।

४ उदजः ( पु ), पशुप्रेरणम् ( भा० दी०, न ), पशुओंको हाँकने  
 खल्लकारने या किसी तरह प्रेरणा करने' के २ नाम हैं ॥

५ अकरणिः ( स्त्री ), आदि ( 'आदिसे अजननिः, स्त्री; अवग्राहः,  
 निग्राहः, २ पु, .....' ), 'शाप देने' का १ नाम है ॥

६ औपगवकम् ( न ), आदि ( 'आदिसे गार्गकम्, दाक्षकम्,  
 २ न; ..... 'औपगव 'उपगु' के गोत्रमें उत्पन्न आदि' ( आदिसे 'गार्ग्य,  
 दाक्षि, .....' ) के समूह' का १ नाम है ॥

७ आपूपिकम्, शाकुलिकम् ( २ न ), आदि ( आदिसे 'साकुलिकम्,  
 चाणकम्, २ न' .....' ), 'पूआ, पुड़ी आदि ( आदिसे 'सत्तू, चना' )  
 के समूह ( ढेरी )' का १—१ नाम है ॥

८ माणव्यम् ( न ), 'लड़कोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

९ सहायता ( स्त्री ), 'सहायोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

१० हव्या ( स्त्री ), 'हलोंके समूह' का १ नाम है ॥

११ ब्राह्मण्यम्, वाडव्यम् ( २ न ), 'ब्राह्मणोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ पार्श्वम्, पृष्ठयम् ( २ न ), 'पशुओं ( पँजड़ीकी हड्डियों ) और  
 पीठोंके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है । ( इन दोनोंका यज्ञमें स्मरण  
 होता है अत एव ये दोनों यज्ञ-विषयक हैं ) ॥

- १ खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ।  
 ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥  
 अपि साहस्रकारीष्वार्मणथर्वणादिकम् ।

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ नानार्थवर्गः ।

- ३ नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिता ।  
 भूरि प्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

१ खलिनी, खल्या ( २ स्त्री ), 'खलिहानके समूह' के २ नाम हैं ॥

२ मानुष्यकम्, ग्रामता, जनता, धूम्या, पाश्या, गल्या ( ५ स्त्री ), 'साहस्रम्, कारीषम्, वार्मणम्, आथर्वणम् ( श्लो० ५ न ), आदि ( आदिसे 'वार्मणम्, अङ्गारम्, ..... ), 'मानुष्य, ग्राम, जन, धूम, पाश ( जाल ), बड़ा काश, हजार, कँडरा ( उपला या मोहरा ), कवचधारा, अथर्वण, आदि ( आदिसे चमड़ा, अङ्गार, ..... ), इनके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

### ३. अथ नानार्थवर्गः ।

३ वक्ष्यमाण ( आगे कहे जानेवाले ) इस कान्तादि ( आदिसे—खान्त, गान्त, चान्त, ..... ) वर्ग में अनेक अर्थवाले भी कई शब्द कहे गये हैं जो पहलेके पर्यायों में नहीं कहे गये हैं और पण्डित-जनोंने काव्य-प्राण आदि ग्रन्थोंमें 'पृथुक, गरुमत्, रजस्' आदि जिन शब्दों का बहुधा प्रयोग किया है वे (पृथुक, गरुमत्, रजस् आदि) शब्द पहले स्वर्गवर्ग आदिके पर्यायोंमें तथा यहाँ भी कहे गये हैं । ( 'जैसे-पृथुक शब्द 'पोतः पाकोऽर्भको विभ्रमः पृथुकः शावकः सिद्धः' ( २।५।३८ ) यहाँ 'बालक' अर्थमें और 'पृथुकः स्याच्चिपिडकः' ( २।५।३७ ) यहाँ 'चिडका' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'पृथुक-

अथ कान्ताः शब्दाः ।

## १ आकाशे त्रिदिवे नाको २ लोकस्तु भुवने जने ।

अपिटाभकौ' ( ३।३।३ ) उक्त दोनों ( बालक और चिडड़ा ) अर्थों में फिर कहा गया; 'गरुत्मत्' शब्द 'गरुत्मान्' गरुडस्तादर्थ्यो—' ( १।१।२९ ) यहाँ 'गरुड' अर्थमें और '—नीडोद्धवा गरुत्मान्तो पितृसन्तो नभसङ्गमाः' ( २।५।३४ ) यहाँ 'पक्षी' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'पक्षितादर्थ्यो गरुत्मान्तौ' ( ३।१।५८ ) उक्त दोनों ( पक्षी और गरुड ) अर्थोंमें फिर कहा गया; 'तमस्' शब्द 'तमस्तु' राहुः स्वर्भानुः—' ( १।१।२६ ) यहाँ 'राहु' अर्थमें, 'गुणाः सत्त्वं रजस्तमः' ( १।५।२९ ) यहाँ 'सत्त्वादि गुण' अर्थमें और 'अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्त्रं तिमिरं तमः' ( १।८।३ ) यहाँ 'अन्धकार' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'राहौ ध्वान्ते गुणे तमः' ( ३।१।२३१ ) उक्त तीनों ( राहु, सत्त्वादि गुण और अन्धकार ) अर्थोंमें पुनः कहा गया; इसी तरह विद्वान् जन अन्यान्य उदाहरणोंका भी तर्क कर लें ) । यद्यपि 'जम्बुक' शब्दके क्रमशः 'स्यार, वरुण' और 'बालिश' शब्दके 'मूर्ख, बालक' ये २-२ अर्थ हैं तथापि इन्हें पण्डित-जनोंने क्रमशः 'स्यार और मूर्ख' इन्हीं १-१ अर्थोंमें उक्त ( जम्बुक और बालिश ) शब्दोंका प्रयोग किया है, अन्य दो ( वरुण और बालक ) अर्थोंमें नहीं, अत एव ग्रन्थकारने भी वैसा ही किया है ( अर्थात् जैसे—'जम्बुक' शब्दको 'सृगालवज्रकक्रोष्टुफेरुफेरव-जम्बुकाः' ( १।५।५ ) यहाँपर 'स्यार' अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ' ( ३।१।३ ) 'स्यार और वरुण' दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह 'बालिश' शब्दको भी 'अजे मूढयथाज्ञातमूर्खवैधेयबालिशाः' ( ३।५।४८ ) यहाँ 'मूर्ख' अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें 'शिशवजे च बालिशाः' ( ३।१।११८ ) 'मूर्ख और बालक' दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणों का तर्क करना चाहिये ) ।

अथ कान्ताः शब्दाः ।

१ 'नाकः' ( पु ) के स्वर्ग, आकाश, २ अर्थ हैं ॥

२ 'लोकः' ( पु ) भुवन ( संसार ), जन, २ अर्थ हैं ॥



- १ पद्ये यशसि च श्लोकः २ शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥  
 ३ जम्बुकौ क्रोष्टवरुणौ ४ पृथुकौ विण्ण्टार्भकौ ।  
 ५ 'आलोकौ दर्शनद्योतौ ६ भेरीपटद्मानकौ ॥ ३ ॥  
 ७ उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः ८ कलङ्कोऽङ्कापवादयोः ।  
 ९ तक्षकौ नागवर्धकयोश्चरकः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥  
 ११ मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ।  
 १२ स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥  
 १३ उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।  
 १४ कमण्डलौ च चरकः—

- १ 'श्लोकः' ( पु ) के पद्य, यश, २ अर्थ हैं ।  
 २ 'सायकः' ( पु ) के बाण, तलवार, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'जम्बुकः' ( पु ) के स्यार, वरुण, २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'पृथुकः' ( पु ) के चिठड़ा, बालक, २ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'आलोकः' ( पु ) के दर्शन ( देखना ), प्रकाश, २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'आनकः' ( + आणकः । पु ) के भेरी, नगाड़ा, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'अङ्कः' ( पु ) के उत्सङ्ग ( झोड, गोदी ), चिह्न, २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'कलङ्कः' ( पु ) के चिह्न लाम्छन, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'तक्षकः' ( पु ), के 'तक्षक' नामका सर्प, बदई २ अर्थ हैं ॥  
 १० 'अर्कः' ( पु ) के स्फटिक मणि, सूर्य, मन्दार या एकवन ( आक नामक वौधा ), ३ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'कः' ( पु ) के हवा, ब्रह्मा, सूर्य, ३ अर्थ; 'कम्' ( न ) के शिर, पानी, २ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'पुलाकः' ( पु ) के तीनी ( नीवार ) धान या धानकी भूसी, संक्षेप, अन्न ( मात ) का अवयव, ३ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'पेचकः' ( पु ) के उल्लू, हाथीकी पूँछकी जड़ ( मांस-विण्ड-विशेष ), २ अर्थ हैं ॥  
 १४ 'चरकः' ( पु ) के कमण्डलु, बगौरी ( ओला ), २ अर्थ हैं ॥

'आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटद्मानकौ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

- २ किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च ३ शूककीटे च वृश्चिकः ।  
 ४ प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥  
 ५ स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तुणे भूस्तृणेऽपि च ।  
 ६ ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ ७ कट्फलैः ॥ ८ ॥  
 सिते च खदिरे सोमवलकः स्या ८ दध सिंहके ।  
 तिलकलके च पिण्याको ९ बाह्लिकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥  
 १० महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालप्राहिषु कौशिकः ।  
 ११ रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः १२ स्वल्पेऽपि श्लुलकस्त्रिषु ॥ १० ॥  
 १३ जैवातुकः शशाङ्केऽपि—

- १ 'विनायकः' ( पु ) के बुद्धदेव, गणेश, गरुड, गुरु, विघ्न, ५ अर्थ हैं ॥  
 १ 'किष्कुः' ( पु ) के हाथभर, विसाभर ( प्रमाण-विशेष ), २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'वृश्चिकः' ( पु ) के बिच्छू, आठवीं राशि ( लग्न ), भौरा, केकड़ा, ओषधि-विशेष, ५ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'प्रतीकः' ( त्रि ) का प्रतिकूल, १ अर्थ और 'प्रतीकः' ( पु ) का अवयव ( हिस्सा ), १ अर्थ है ॥  
 ५ 'भूतिकम्' ( न ) के चिरायता, 'रोहिस' नामक वास, भूतृण, ३ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'कोशातकी' ( स्त्री ) के चिचिड़ा, तरोई या परवल, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'सोमवलकः' ( पु ) के कायफल, दुधिया ( सफेद ) खैर २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'पिण्याकः' ( पु ) के लोहवान, तिलकी खली, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'बाह्लिकम्' ( + बाह्लीकम् । न ) के हींग, बाह्लीक देश का ( काबुली ) चोड़ा, कुंकुम, ३ अर्थ हैं ॥  
 १० 'कौशिकः' ( पु ) के इन्द्र, गुग्गुलु, वल्गु पक्षी, सँपेरा, ४ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'आतङ्कः' ( पु ) के रोग, ताप, शङ्का, मुरज बाजेका शब्द, ४ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'श्लुलकः' ( त्रि ) के छुद्र, नीच, जैनसम्प्रदायका तपस्वि-विशेष, २ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'जैवातुकः' ( पु ) का चन्द्रमा, १ अर्थ और 'जैवातुकः' ( त्रि ) के आयुष्मान् ( चिरजीवी ), कृश, भेषज, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'बाह्लीकम्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

- २ व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना ३ यथान्यामपि दापकः ॥ ११ ॥  
 ४ 'शालावृक्षाः कपिकोऽदुश्चानः' स्तवर्णेऽपि गैरिकम् ।  
 ६ पाडार्थेऽपि व्यलीक स्या ७ दलीक त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥  
 ८ शालान्वयावनूके द्वे ९ शल्के शकलवलकले ।  
 १० साष्टे शते सुवर्णाणां हेम्युगेभूषणे पले ॥ १३ ॥  
 दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री ११ कल्कोऽस्त्री शमलानसोः ।  
 दभ्येऽप्यश्वस्य पिनाकोऽम्ब्री शूलशङ्करधन्वनोः ॥ १४ ॥

- १ 'वर्तकः' ( पु ) के सुम ( घोड़े का खुर ), 'वत्तक' नामका पत्ती, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'पुण्डरीकः' ( पु ) के बाघ, आग, दिग्गज, ३ अर्थ और 'पुण्डरीकम्'  
 ( न ) के सफेद छाता, औषध-विशेष, श्वेत कमल, ३ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'दीपकः' ( + दीप्यकः । पु ) के अजमोदा जवाइन, मोरशिखा,  
 चिराग, ३ अर्थ और 'दीपकम्' ( न ) का दीपकालङ्कार, १ अर्थ है ॥  
 ४ 'शालावृक्षः' ( + शालावृक्षः । पु ) के बन्दर, स्यार, कुत्ता, ३ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'गैरिकम्' ( न ) के सुवर्ण ( सोना ), गेरू ( एक प्रकारका धातु-  
 विशेष ), २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'व्यलीकम्' ( न ) के पीडा, वैलषय, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'अलीकम्' ( न ) के अप्रिय, झूठ ( असत्य ), ललाट, ३ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'अनूकम्' ( न ) के शील, वंश, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'शल्कम्' ( न ) के खण्ड ( टुकड़ा या हिस्सा ), छिलका २ अर्थ हैं ॥  
 १० 'निष्कः' ( पु न ) के १०८ अशर्फी सोनेका बना हुआ छातीका  
 भूषण ( चन्द्रहार, सिकड़ी, हलका आदि ) सोनेका पल ( ४ भरी सोना ),  
 मोहर, ( अशर्फी ), ४ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'कल्कः' ( पु न ) के मैला ( विट् ), पाप, दम्भ, ३ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'पिनाकः' ( पु न ) के शङ्करजीका त्रिशूल, शङ्करजीका धनुष, धूलि-  
 की वर्षा, ३ अर्थ हैं ॥

- १ धेनुका तु करेष्वां च २ मेघजाले च कालिका ।
- ३ कारिका' यातनावृत्त्याः ४ कणिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥  
करिहस्तेऽङ्गुला पद्मबीजकोश्या ५ त्रिषूत्तरे ।  
वृन्दारकौ रूपमुख्याध्वेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥
- ७ स्याद्दाम्भिकः कौकुटिकां यश्चादूरेरितक्षणः ।
- ८ लालाटिकः' प्रभोर्भाषदशीं कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

१ 'धेनुका' ( स्त्री ) के हथिनी, नयी ब्याई हुई गाय, २ अर्थ और 'धेनुकः' ( पु ) का दान-विशेष, १ अर्थ है ॥

२ 'कालिका' ( स्त्री ) के मेघजाल ( बरसाती समय, मेघ-समूह, नया मेघ ), या स्वर्ण आदिका दोष ( कालिमा ), सुरा ( मदिरा ), काली देवी, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'कारिका' ( स्त्री ) के यातना ( बहुत बुरी तरहसे कष्ट भोगना ), कारिका ( जैसे—मुक्तावली, वाक्यपदीय, साहित्यदर्पण आदिमें ), नटी, कृति, नापितादिका कर्म ( हजामत आदि ), ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कणिका' ( स्त्री ) के कानका भूषण ( कनफूल, ऐरन, आदि ), हाथीकी सूँड़, हाथके बीचकी छंगुलि, कमलका छत्ता ( जिसमें कमलगट्टे रहते हैं ), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'वृन्दारकः' ( त्रि ) के मनोहर या अनेक रूप धारण करनेवाला मायावी, श्रेष्ठ, देवता, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'एकः' ( त्रि ) के प्रधान, दूसरा, केवल ( सिर्फ ), पहला अङ्क, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'कौकुटिकः' ( त्रि ) के दम्भ करनेवाला, पाससे चेष्टा आदिको देखनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

८ 'लालाटिकः' ( त्रि ) के स्वामीके ललाट ( + भाव ) को देखनेवाला ( इसलिये कि स्वामी क्या आज्ञा देते हैं, स्वामीका मेरे ऊपर कैसा भाव है, ... ) भ्रूय, काम करने में असमर्थ, २ अर्थ हैं ॥

- १ 'भूभृन्नितम्बचलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् ( २३ )
- २ सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः ( २४ )
- ३ पाकौ पक्तिशिषु ४ मध्यरत्ने नैतरि नायकः ( २५ )
- ५ पर्यङ्कः स्यात्परिकरेद्भ्याम्ब्याघ्रेऽपि च लुब्धकः ( २६ )
- ७ पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपिऽगुरौ देश्ये च देशिकः ( २७ )
- ९ खेटकौ ग्रामफलकौ १० धीवरेऽपि च जालिकः ( २८ )

१ [ 'कटकः' ( पु न ) के पहाड़ के बीचका भाग, कङ्कग ( कँगना ), चक्र, ३ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'कण्टकः' ( त्रि ) के सूई, काँटा या टूँड आदिका नोक ( आगेवाला हिस्सा ), क्षुद्र ( छोटा ) बैरी, रोमाञ्च ( रोंआका खड़ा होना ), ३ अर्थ हैं ] ॥

३ [ 'पाकः' ( पु ) के पकाना, बालक, २ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'नायकः' ( पु ) के मालाके बीचवाली मनियाँ ( सुमेरु ), नेता ( किसी कामके आगे चलनेवाला मुखिया आदि ), २ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'पर्यङ्कः' ( पु ) के परिकर ( नौकर आदि आत्मीय जन ), पङ्क या मचान, २ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'लुब्धकः' ( त्रि ) के बाघ, लोभी, २ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'पेटकः' ( त्रि ) के समूह, पिटारी ( बक्स, झपोली आदि ), २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'देशिकः' ( त्रि ) के गुरु, देशमें होनेवाला पदार्थ ( जैसे— देशिकं वासः, देशिका, पुत्तलिका, देशिकोऽश्वः, ..... ), २ अर्थ हैं ] ॥

९ [ 'खेटकः' ( त्रि ) के ग्राम, ढाल, २ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'जालिकः' ( त्रि ) के मल्लाह, ग्रामज अलि, जालकी वृत्तिसे जीविका करनेवाला, ३ अर्थ हैं ] ॥

१. 'भूभृन्नितम्ब'.....'दर्पाश्मदारणो' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० त्वा० व्याख्यानेऽमरवि-  
वेकपुस्तके च मूलमात्रमुपलभ्यते । 'मृद्भाण्डे'... 'द्रवके' ( पृ० ४२९ ) इत्येष क्षेपकांशश्च क्षी०  
त्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इत्यतोऽयमप्यंशः क्षेपकरूपेणैव मया सूके निक्षिप्त इत्यवधेयम् ॥

२. 'आर्द्रायामपि लुब्धकः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ पुष्परेणौ च किञ्जल्कः २ शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च ( २९ )  
 ३ स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका ४ वार्द्धकं भावबुन्दयोः ( ३० )  
 ५ करिण्यां चापि गणिका ६ दारकौ बालभेदकौ ( ३१ )  
 ७ अन्धेऽप्यनेडमूकः स्या ८ टड्कौ दर्पाश्मदारणौ ( ३२ )  
 ९ मृद्भाण्डेऽप्युष्ट्रिका १० मन्थे खजको रसदर्वके ( ३३ )

इति कान्ताः शब्दाः ।



अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ मयूखस्त्वट्करज्वाला १२ स्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।

१३ शङ्खो निधौ ललाटास्थिन कम्बौ न स्त्री—

१ [ 'किञ्जल्कः' ( त्रि ) के फूलका पराग, कमल-कंसर, १ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'शुल्कः' ( पु न ) के स्त्रीका धन, रुपया ( महसूल, कर, फीस आदि ), १ अर्थ हैं ] ॥

३ [ 'उत्कलिका' ( स्त्री ) के नदी आदिकी तरङ्ग, हँसी-मजाक, ठरकण्ठा, ३ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'वार्द्धकम्' ( त्रि ) के बुढ़ापा, बुढ़ोंका समूह, २ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'गणिका' ( स्त्री ) के हथिनी, वेश्या, १ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'दारकः' ( पु ) के लवका, भेद करनेवाला, १ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'अनेडमूकः' ( पु ) के अन्धा, मूर्ख ( कहने-सुननेमें अशिक्षित ), शठ, ३ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'टड्कः' ( पु ) के दर्प, पत्थरको चीरनेवाली टाँकी, १ अर्थ हैं ] ॥

९ [ 'उष्ट्रिका' ( स्त्री ) के मिट्टीका मद्य भाण्ड-विशेष, ऊटिनी, २ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'खजकः' ( पु ) के मथनीका ढण्डा, कलखुल, युद्ध, ३ अर्थ हैं ] ॥

इति कान्ताः शब्दाः ।



अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ 'मयूखः' ( पु ) के शोभा, किरण, ज्वाला, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'शिलीमुखः' ( पु ) के भौंरा, बाण, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'शङ्खः' ( पु ) के निधि ( खजाना-विशेष ), ललाटकी हड्डी, २ अर्थ

और 'शङ्खः' ( पु न ) का शङ्ख, १ अर्थ है ॥

—१ इन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥

२ घृणिञ्वाले अपि शिखे—

इति खान्ताः शब्दाः ।



अथ गान्ताः शब्दाः ।

—३ शैलवृक्षौ नगावगौ ।

४ आशुगौ वायुविशिक्षौ ५ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

६ पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च ७ पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।

८ पशवाऽपि मृगा ९ वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥

१० परागः कौस्तुभे रेणौ स्नानायादौ रजस्यपि ।

११ गजेऽपि नागमातङ्गौ—

१ 'खम्' ( न ), के इन्द्रिय, शून्य, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शिखा' ( स्त्री ) के किरण, ज्वाला, मोरकी शिखा, शिखामात्र (चोटी), ४ अर्थ हैं ॥

इति खान्ताः शब्दाः ।



अथ गान्ताः शब्दाः ।

३ 'नगः, अगः' ( २ पु ) के पहाड़, पेड़, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आशुगः' ( पु ) के वायु, बाण, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'खगः' ( पु ) के बाण, सूर्य, पक्षी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'पतङ्गः' ( पु ) के पक्षी, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'पूगः' ( पु ) के सुपारी ( कसैली ), समूह, २ अर्थ हैं ॥

८ 'मृगः' ( पु ) के पशु, हरिण, पौर्वर्त्त नक्षत्र, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वेगः' ( पु ) के प्रवाह, तेजी, २ अर्थ हैं ॥

१० 'परागः' ( पु ) के फूलका पराग, स्नान करने योग्य सुगन्धित चूर्ण ( पावडर ), धूलि, विख्याति, पर्वत, ५ अर्थ हैं ॥

११ 'नागः' ( पु ) के हाथी, साँप, नागकेसर, ३ अर्थ और 'मातङ्गः' ( पु ) के हाथी, चण्डाल, २ अर्थ हैं ॥

—१ अपाङ्गस्तिलकऽपि च ॥ २१ ॥

- २ सर्गः स्वभावनिमोक्षनिश्चयाभ्यायसृष्टिषु ।  
 ३ योगः सन्नहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥  
 ४ भोगः सुखे स्यादिभृतावद्वेष फणकाययोः ।  
 ५ चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥  
 ६ कपौ च प्लवगः ७ शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।  
 ८ यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥  
 ९ स्वर्गेषपशुवाग्वज्रदिङ्मन्त्रघृणिभूजले ।  
 लक्षदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौः० लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

१ 'अपाङ्गः' ( पु ) के तिलक, नेत्रका प्रान्त ( किनारा ), २ अर्थ हैं ॥

२ 'सर्गः' ( पु ) के स्वभाव, त्याग, निश्चय, काव्यके प्रकरण ( जैसे—वाक्यमोक्ष, नैषध, माघ, किरात, रघुवंश आदिका प्रकरण ), सृष्टि, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'योगः' ( पु ) के कवच, साम-दाम आदि उपाय, ध्यान ( चित्तको एकाग्र करना ), संगति, युक्ति, विश्वासचातक, ६ अर्थ हैं ॥

४ 'भोगः' ( पु ) के सुख, स्त्री आदिकी मजदूरी या वेतन, साँपका फण, साँपका शरीर, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'सारङ्गः' ( पु ) के चातक पक्षी, हरिण, हाथी, ३ अर्थ और 'सारङ्गः' ( त्रि ) का चितकावर, १ अर्थ है ॥

६ 'प्लवगः' ( पु ) के बन्दर, मेढक, सूर्यका सारथि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अभिषङ्गः' ( पु ) के शाप, पराभव, शपथ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'युगः' ( पु ) के रथ-गाड़ी आदिका जुआठ ( जुवा ), १ अर्थ और 'युगम्' ( न ) के युग ( सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ), जोड़ा, २ अर्थ हैं ॥

९ 'गौः' ( = गो, लक्षयानुसार पु स्त्री ) के स्वर्ग, बाण, पशु ( गाय, बैल, साँड़ आदि ), वाक् ( बोली ), वज्र, दिशा ( पूर्व, पश्चिम आदि ), आँख, सूर्य, पृथ्वी, पानी १० अर्थ हैं । ( लक्षयानुसार पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग जैसे—स्वर्ग, बाण, पशु ( बैल ) आदिके पुंलिङ्ग रहनेपर 'गो' शब्द पुंलिङ्ग; वाक्, पशु ( गाय, बाखी ), दिशा आदिके स्त्रीलिङ्ग रहनेसे 'गौ' शब्द स्त्रीलिङ्ग होना ) ॥

१० 'लिङ्गम्' ( न ) के चिह्न, लिङ्ग ( पुरुषके पेशाबका रास्ता ), २ अर्थ हैं ॥



- १ शृङ्गं प्राधान्यसान्धोश्च २ वराङ्गं मूर्द्धगुह्ययोः ।  
 ३ भगं श्रीकामभावात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्त्तिषु ॥ २६ ॥  
 इति गान्ताः शब्दाः ।

अथ धान्ताः शब्दाः ।

- ४ परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।  
 ६ मूढ्ये पूजाविधावर्घोऽहोदुःखव्यसनेऽवघम् ॥ २७ ॥  
 ८ त्रिष्विष्टेऽरूपे लघुः—  
 इति धान्ताः शब्दाः ।

१ 'शृङ्गम्' ( न ) के प्राधान्य, शिखर (पहाड़की चोटी), सींग, १ अर्थ हैं ॥  
 २ 'वराङ्गम्' ( न ) के मस्तक, गुह्येन्द्रिय या योनि ( स्त्रीके पेशाबका रास्ता ), २ अर्थ हैं ॥

३ 'भगम्' ( न ) के शोभा, इच्छा, माहात्म्य ( प्रशंसा या बढ़ाई ), सामर्थ्य, यत्न, सूर्य, यश, धर्म, ८ अर्थ और 'भगः' ( पु ) का सूर्य, १ अर्थ है ॥

इति गान्ताः शब्दाः

अथ धान्ताः शब्दाः

४ 'परिघः' ( + पल्लिघः । पु ) के 'परिघ' नामका हथियार ( लोहा मढ़ी हुई लाठी ), योग-भेद, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ओघः' ( पु ) के समूह, जलका प्रवाह, शीघ्रतासे नाचना, परम्परा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'अर्घः' ( पु ) के मूल्य ( कीमत ), पूजा-विधि ( अतिथि आदिके आनेपर या देव-पूजामें किया हुआ 'अर्घ' नामका सत्कार-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

७ 'अघम्' ( न ) के पाप, दुःख, व्यसन ( जुआ खेलने आदिकी आदत ), ३ अर्थ हैं ॥

८ 'लघुः' ( त्रि ) के इष्ट, कम, २ अर्थ हैं ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ चान्ताः शब्दाः ।

—१ काचाः शिक्यमृद्देददप्रजः ।

२ 'विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः ३ पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

४ अभिष्वङ्गेस्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ 'प्रसन्ने भल्लकेऽप्यच्छो ६ गुच्छः स्तबकहारयोः ( ३४ )

७ परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः' ( ३५ )

इति छान्ताः शब्दाः ।

अथ चान्ताः शब्दाः ।

१ 'काचः' ( पु ) के सिकहर, काच, आँखका रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'प्रपञ्चः' ( पु ) के विपर्यास (उलटा-पुलटा), शब्द का फैलाव, संस्रष्ट ३ अर्थ हैं ॥

३ 'शुचिः' ( पु ) के भाग, आषाढ मास, मन्त्रो, शृङ्गार रस, ४ अर्थ और 'शुचिः' ( त्रि ) के सफेद वस्तु, पवित्र, शुद्ध चित्तवाला, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'रुचिः' ( स्त्री ) के अभिष्वङ्ग ( राग ), स्पृहा ( चाह ), सूर्य आदि की किरण, शोभा, ४ अर्थ हैं ॥

इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ [ 'अच्छः' ( पु ) के प्रसन्न, भाल, स्फटिक मणि, ३ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'गुच्छः' ( पु ) के फूल-फल आदिका गुच्छा, ३२ या ७० लक्ष्मीका हार-विशेष, २ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'कच्छः' ( पु ) के कपड़े आदिको पहिरना, अञ्चल, २ अर्थ और 'कच्छः' ( त्रि ) का पानीका किनारा, १ अर्थ है ] ॥

इति छान्ताः शब्दाः ।

१. 'विपर्यासे च विस्तारे' इति पाठो युक्तः' इति क्षी० स्वा० ॥

अथ जान्ताः शब्दाः ।

- १ केकिताक्ष्यावह्निभुजौ २ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।  
 ३ अजा विष्णुहरच्छाया ४ गोष्ठाध्वनिवहा वजाः ॥ ३० ॥  
 ५ धर्मराजौ जिनयमौ ६ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।  
 ७ वलजे क्षेत्रपूर्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥  
 ८ समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः ९ प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।  
 २० अञ्जौ शंखशशांकौ च ११ स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ जान्ता शब्दाः ।

- १ 'अह्निभुक्' ( + अहिभुज् पु ) के मोर, गरुड २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'द्विजः' ( पु ) के दौत, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण, अण्डज ( चिड़िया, साँप, मछली, मगर आदि ), ३ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'अजः' ( पु ) के विष्णु, शिवजी, छाग ( खस्सी ), रघुके पुत्र ( 'अज' नामका रघुवंशी राजा ), ब्रह्मा, कामदेव, ६ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'वज्रः' ( पु ) के गोष्ठ ( गौओंके ठहरनेका स्थान गोशाला आदि ), रास्ता, समूह, ३ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'धर्मराजः' ( पु ) के जिन ( बुद्धदेव ), यमराज, युधिष्ठिर, ३ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'कुञ्जः' ( पु न ) के हाथी का दौत, कुज ( लता आदिसे गलीके समान बना हुआ स्थान विशेष ), २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'वलजम्' ( न ) के क्षेत्र, नगरका फाटक या द्वार, २ अर्थ और 'वलजः' ( त्रि ) का देखने में प्रिय लगनेवाला, १ अर्थ है ॥  
 ८ 'आजिः' ( स्त्री ) के बराबर ( समतल ) जमीन, युद्ध, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'प्रजाः' ( स्त्री ) के सन्तान ( पुत्र या पुत्री ), प्रजा ( रैयत ), २ अर्थ हैं ॥  
 १० 'अञ्ज' ( पु ) के शंख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, ३ अर्थ और 'अञ्जम्' ( न ) का कमल, १ अर्थ है ॥  
 ११ 'निजम्' ( त्रि ) के आत्मीय ( अपना ), नित्य, २ अर्थ हैं ॥  
 इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ जान्ताः शब्दाः ।

- १ पुंस्यात्मनि' प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः
- २ संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्वर्यसूचना ॥ ३३ ॥
- ३ 'दोषज्ञो वैद्यविद्वांसौधज्ञो विद्वान् सोमज्ञोऽपि च ( ३६ )
- ५ विज्ञौ प्रवीणकुशलौ ६ कालज्ञो ज्ञानिकुकुटौ' ( ३७ )

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

- ७ काकेभगण्डौ करटौ ८ गजगण्डकटौ कटौ ।
- ९ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चमणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

अथ जान्ताः शब्दाः ।

१ 'क्षेत्रज्ञः' ( पु ) का आत्मा, १ अर्थ और 'क्षेत्रज्ञ' ( त्रि ) का क्षेत्रज्ञ ( शरीर को जाननेवाला ज्ञानी पुरुष । + प्रधान ), १ अर्थ है ।

२ 'संज्ञः' ( स्त्री ) के चेतना ( होश, ज्ञान ), नाम हाथ-भौं आदिका इशारा, गायत्री, सूर्य की स्त्री, ५ अर्थ हैं ॥

३ [ 'दोषज्ञः' ( पु ) के वैद्य, विद्वान्, २ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'ज्ञः' ( पु ) के विद्वान्, 'बुध' नामका ग्रह, ब्रह्मा, ३ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'विज्ञः' ( पु ) के प्रवीण ( निपुण ), चतुर, २ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'कालज्ञः' ( पु ) के ज्ञानी, मुर्गा, २ अर्थ हैं ] ॥

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

७ 'करटः' ( पु ) के कौआ, हाथियोंका कपोल ( गाल ) २ अर्थ हैं ॥

८ 'कटः' ( स्त्री ) के हाथियोंका कपोल, कमर, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शिपिविष्टः' ( + शिपिविष्टः, शिपिविष्टः । पु ) के खलवाट ( रोग

१. 'प्रधाने' इति पाठान्तरम् ॥

२. दोषज्ञो.....'कुकुटौ' इत्ययं क्षेत्रज्ञांशः माहेश्वरोव्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मूले स्थापितः ॥

- १ देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा २ दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।  
 ३ रत्ने कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥  
 ४ रिष्टं क्षेमाशुभाभावेऽप्यरिष्टे तु शुभाशुभे ।  
 ६ मायानिश्रल्यन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥  
 अयोधये शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमल्लियाम् ।  
 ७ सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥  
 ८ आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो ९ मूले लग्नकचे जटा ।

आदिके कारण जिसके शिरके बाल गिर गये हों), खराब चमड़ेवाला (+ नष्टसक  
 ची० स्वा० ), शिवजी विष्णुजी, ४ अर्थ हैं ॥

१ 'त्वष्टा' ( = त्वष्टृ पु ), के विश्वकर्मा (देवताओंका बड़ई या कारीगर),  
 वारह सूर्योंमें से एक सूर्य, बड़ई, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'दिष्टम्' ( न ) का भाग्य, १ अर्थ और 'दिष्टः' ( पु ) का समय,  
 १ अर्थ है ॥

३ 'कटुः' ( पु ) का कड़ुवा, १ अर्थ; 'कटु' ( न ) का नहीं करने योग्य'  
 १ अर्थ और 'कटुः' ( त्रि ) के मत्सर ( दूसरे की भलाईसे द्वेष करना ), तीक्ष्ण,  
 १ अर्थ हैं ॥

४ 'रिष्टम्' ( न ) के कल्याण, अशुभका अभाव, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अरिष्टम्' ( पु ) के शुभ, अशुभ, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कूटम्' ( न पु ) के माया, निश्चल ( आकाशादि ), हरिना आदि  
 पँसानेका का यन्त्र-विशेष ( जाल आदि ), कपट, असत्य, गल्ला ( अन्न आदि  
 की ढेरी ), लोहेका हथौरा, पहाड़की चोटी, हलके आगेवाला भाग, ९ अर्थ हैं ॥

७ 'त्रुटि' ( स्त्री ) के चोटी इलायची, समय-भेद, न्यूनता ( कमी )  
 संशय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'कोटिः' ( स्त्री ) के धनुषके दोनों छोर, प्रकर्ष, कोण करोड़ ( संख्या-  
 विशेष ), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'जटा' ( स्त्री ) के पेड़ आदिकी जड़, जटा ( मुनि आदिके सटे हुए  
 बाल ), जटामासी, ३ अर्थ हैं ॥

- १ व्युष्टिः फले समृद्धौ च २ दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥  
 ३ इष्टिर्यागेच्छयोः ४ 'सृष्टं' निश्चिते बहुनि त्रिषु ।  
 ५ कष्टे तु कृच्छ्रगहने ६ दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥  
 पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च—  
 ७ 'पोटा दासी द्विलिङ्गा च ८ घृष्टी घर्षणसूकरौ ( ३८ )  
 ९ घटा गोष्ठ्यां हस्तिपङ्क्तौ १० कृपीटमुदरे जले' ( ३९ )  
 इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

—११ नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

- १ 'व्युष्टिः' ( स्त्री ) के फल ( प्रयोजन ), समृद्धि, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'दृष्टिः' ( स्त्री ) के ज्ञान, आँख, देखना, ३ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'इष्टिः' ( स्त्री ) के यज्ञ, इच्छा, २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'सृष्टम्' ( + सृष्टिः स्त्री । त्रि ), के निश्चित बहुत ( काफी ), छोड़ा हुआ, बनाया हुआ, ४ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'कष्टम्' ( त्रि ) के दुःख, गहन ( मुश्किलसे करने योग्य काम आदि ), २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'पटुः' ( त्रि ) के चतुर, निरालसी, रोग, ३ अर्थ हैं ] ॥  
 ७ [ 'पोटा' ( स्त्री ) के दासी, स्त्री पुरुषके चिह्नोंसे युक्त स्त्री, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ८ [ 'घृष्टिः' ( पु ) के घिसना, सूअर, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ९ [ 'घटा' ( स्त्री ) के सभा, हाथियोंकी कतार, २ अर्थ हैं ] ॥  
 १० [ 'कृपीटम्' ( न ) के पेट, पानी, २ अर्थ हैं ] ॥  
 इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः .

११ 'नीलकण्ठः' ( पु ) के शिवजी, मोर, २ अर्थ हैं ॥

१. 'सृष्टिर्निश्चिते बहुले त्रिषु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पोटा'.....जले इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यत इत्य-

तोऽयं प्रकृतोपयोगितया क्षेपकत्वेनात्र स्थापितः ॥

- १ पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुम्बलोऽन्तर्गुहं तथा ॥ ४० ॥  
 २ निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः ३ काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।  
 ४ त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि ५ कनिष्ठोऽतिगुणात्पयोः ॥ ४१ ॥  
 इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

- ६ दण्डोऽस्त्री लगुडोऽपि स्याद् ७ गुडो गोलेभ्रुपाकयोः ।  
 ८ सर्पमांसात्पशू व्याडौ ९ गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥ ४२ ॥  
 १० श्वेडा वंशशलाकापि ११ नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।

- १ 'कोष्ठः' ( पु ) के कोष्ठ ( पेटके भीतरका एक भाग ), कोठिला या बखार, घरका भीतरी भाग, ३ अर्थ हैं ॥  
 २ 'निष्ठा' ( स्त्री ), के निष्पत्ति ( सिद्धि ), नाश, आखीर, ३ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'काष्ठा' ( स्त्री ) के वृद्धि, मर्यादा, पूर्व आदि दिशा, ३ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'ज्येष्ठः' ( त्रि ) के बहुत उत्तम, बड़ा भाई आदि, वृद्ध, ३ अर्थ और  
 'ज्येष्ठः' ( पु ) का ज्येष्ठ महीना, १ अर्थ है ॥  
 ५ 'कनिष्ठः' ( त्रि ) बालक, छोटा भाई आदि, थोड़ा ३ अर्थ हैं ॥  
 इति ढान्ताः शब्दाः ।



अथ ढान्ताः शब्दाः ।

- ६ 'दण्डः' ( पु न ) के डण्डा, सजा, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'गुडः' ( पु ) के मिट्टीकी गोली, गुड, २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'व्याडः' ( पु ) के साँप, बाघ, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'इडा, इला' ( २ स्त्री ) के गौ, पृथ्वी, वचन, बुधकी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥  
 १० 'श्वेडा' ( स्त्री ) के पिंजड़ा-दौरी आदि बनाने के लिये बाँस आदिको  
 झीलकर चिकनी और पतली की हुई शलाका, सिंहकी गर्जना, २ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'नाडी' ( स्त्री ) के छः क्षण ( एक घटी या २४ मिनट ) का समय-  
 विशेष, नाडी ( नस ), नाल ( डंठल ), ३ अर्थ हैं ॥

- १ काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्धवर्गविसरवारिषु ॥ ४३ ॥
- २ स्याद्भाण्डमभ्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।
- ३ 'संघातप्रासयोः पिण्डी द्वयोः पुंसि कलेवरे ( ४० )
- ४ गण्डौकपोलविस्फोटौ ५ मुण्डकं त्रिषु मुण्डिते' ( ४१ )

इति ङान्ताः शब्दाः ।



अथ ङान्ताः शब्दाः ।

- ६ भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं ७ प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
- ८ शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

१ 'काण्डः' ( पु न ) के दण्ड, बाण, निन्दित, वर्ग ( प्रकरण, जैसे—वाल्मीकीयमें—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, ... अमरकोषमें—प्रथमकाण्ड, ... ), अवसर, पानी, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'भाण्डम्' ( न ) के घोड़ेका भूषण, बर्तन, व्यापार आदिमें लगाये हुए बनिये आदिका मूल धन, ३ अर्थ हैं ॥

३ [ 'पिण्डी' ( स्त्री पु ) के समूह, प्रास, २ अर्थ और 'पिण्डी' ( पु ) का शरीर, १ अर्थ है ] ॥

४ [ 'गण्डः' ( पु ) के गाल, विस्फोट ( फोड़ा आदि ), २ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'मुण्डकम्' ( + मुण्डम् । त्रि ) के मुण्डित, शिर, २ अर्थ हैं ] ॥

इति ङान्ताः शब्दाः ।



अथ ङान्ताः शब्दाः ।

६ 'बाढम्' ( न ) का अत्यन्त, १ अर्थ और 'बाढम्' ( अ० ) के प्रतिज्ञा, स्वीकार, २ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रगाढम्' ( न ) के अत्यन्त, कष्ट, २ अर्थ हैं ॥

८ 'दृढः' ( त्रि ) के समर्थ, मोटा या पुष्ट, अच्छी तरह, ३ अर्थ हैं ॥

'संघात'...मुण्डिते इति क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतो-  
५ योगितयाऽयं मया मूले क्षेपकत्वेन निहितः ॥



## —१ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ णान्ताः शब्दाः ।

- २ भ्रूणोऽर्भके स्त्रैण गर्भे ३ बाणो बलिमुते शरे ॥ ४५ ॥  
 ४ कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे ५ संघाते प्रमथे गणः ।  
 ६ पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥  
 ७ मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसन्ध्यादिके गुणः ।  
 ८ निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥  
 ९ वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे ।

१ 'व्यूढः' ( त्रि ) के रचित, मिला हुआ ( संहत ), २ अर्थ हैं ॥

इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ णान्ताः शब्दाः ।

- १ 'भ्रूणः' ( पु ) के बालक, स्त्रीका गर्भ, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'बाणः' ( पु ) के बलिका पुत्र ( बाणासुर ), बाण, २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'कणः' ( पु ) के अत्यन्त सूक्ष्म ( पानीकी छोटी २ बूँदें, मोतीके दाने, ... ), धान्य ( अन्न ) की खुद्दी, २ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'गणः' ( पु ) के समूह, शिवजीके दूत, सेनाकी संज्ञा-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥  
 ( देखिये—२।८।८१ की टिप्पणी )  
 ६ 'पणः' ( पु ) के जुआ आदिमें दावपर रक्खा हुआ धन आदि, वेतन या मजदूरी, कीमत, धन, ४ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'गुणः' ( पु ) के धनुषकी ताँत, रूप-रस आदि २४ गुण, सत्त्व-रजस्—  
 तमस् ३ गुण, बहादुरी, चातुर्य-पाण्डित्य आदि गुण, सन्धि-विग्रह आदि ( पृ०  
 २६९ ) ६ गुण, इन्द्रिय, ६ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'क्षणः' ( पु ) के निकम्मा होकर बैठे रहना, एक घड़ीका बारहवाँ  
 हिस्सा या ३ मिनटका समय—विशेष, उत्सव, ३ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'वर्णः' ( पु ) के ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र ये ४ जाति, सफेद-लाल-पीला  
 आदि रंग तथा स्तुति ( व्रत, गुण, गीतका ताल-विशेष, यज्ञ ) ये अर्थ और  
 'वर्णम्' ( न ) का अक्षर, १ ही अर्थ है ॥

- १ अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥
- २ स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्याधजौ रवे रणः ।
- ५ ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥
- ६ ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ।
- ७ हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥  
त्रिषु पाण्डौ च हरिणः ८ स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।
- ९ तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे १० जुगुप्साकरणे घृणे ॥ ५१ ॥
- ११ वणिक्पथे च विपणिः १२ सुरा प्रत्यक् च वारुणी ।

१ 'अरुणः' ( पु ) का सूर्य, सूर्यका सारथि, सन्ध्या समयकी लालिमा, कुष्ठ, ४ अर्थ और 'अरुणः' ( त्रि ) का लाला रङ्गवाला, १ अर्थ है ॥

२ 'स्थाणुः' ( पु ) के शिवजी, सुस्थ ( बिना डाल-पातका सूखा हुआ पेड़ ) आदि स्थिर पदार्थ, २ अर्थ है ॥

३ 'द्रोणः' ( पु ) के कौआ, द्रोणाचार्य, द्रोण ( परिमाण-विशेष ), ३ अर्थ हैं ॥

४ 'रणः' ( पु ) के लड़ाई, शब्द, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रामणीः' ( पु ) का नाई ( हजाम ), १ अर्थ और 'ग्रामणीः' ( त्रि ) के श्रेष्ठ, ग्रामका स्वामी ( सरपञ्च, डीहा ), २ अर्थ हैं ॥

६ 'ऊर्णा' ( स्त्री ) के ऊन ( भेंड़ आदिका रोंआ ), दोनों भौंहोंके बीचवाला भाग, २ अर्थ हैं ॥

७ 'हरिणि' ( स्त्री ) के मृगी, सोनेकी मूर्ति, हरे रंगवाली, ३ अर्थ और 'हरिणः' ( त्रि ) के पाण्डु ( कुष्ठ २ पीलापन लिये सफेद ) रंग, हरिना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्थूणा' ( स्त्री ) के घरका खम्भा, लोहेकी मूर्ति, रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'तृष्णा' ( स्त्री ) के स्पृहा ( अभिलाषा ), प्यास, २ अर्थ हैं ॥

१० 'घृणा' ( स्त्री ) के घृणा ( नफरत ), करुणा, २ अर्थ हैं ॥

११ 'विपणिः' ( स्त्री ) के बाजार ( कटरे ) की गली, दूकान, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'वारुणी' ( स्त्री ) के मदिरा, पश्चिम दिशा, २ अर्थ हैं ॥

१. 'भ्रुवौ' इति पाठान्तरम् ॥

- १ करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे २ द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥  
 ३ शरणं गृहरक्षित्रोः ४ श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।  
 ५ विषाभिमरतोद्देशु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥  
 ६ प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्तापप्रमातृषु ।  
 ७ करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥  
 ८ प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमृगतौ ।  
 घण्टापथेऽथ वान्तान्ने 'समुद्रिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥  
 १० अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभेदन्तयोः ।

१ 'करेणुः' ( स्त्री ) का हथिनी, १ अर्थ और 'करेणुः' ( पु ) का हाथी, १ अर्थ है ॥

२ 'द्रविणम्' ( न ) के बल, धन, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शरणम्' ( न ) के मकान ( घर ), रक्षक, २ अर्थ हैं ॥

४ 'श्रीपर्णम्' ( न ) के कमल, अरणि ( यज्ञमें रगड़कर आग पैदा करने योग्य काष्ठ-विशेष ), २ अर्थ हैं ॥

५ 'तीक्ष्णम्' ( न ) के विष, लड़ाई, लोहा, ३ अर्थ और 'तीक्ष्णम्' ( त्रि ) का तेज हथियार आदि, १ अर्थ है ॥

६ 'प्रमाणम्' ( न ) के हेतु ( जैसे—पहाड़पर अग्निका अनुमान करनेमें धुआँ हेतु है, ... ), सीमा ( हद ), शास्त्रकी इयत्ता, प्रमाता, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'करणम्' ( न ) के कामकी सिद्धिमें अत्यंत उपकारक (जैसे—मारनेमें बाण—तलवार आदि ), क्षेत्र, शरीर, इन्द्रिय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'संसरणम्' ( न ) के प्राणियोंकी उत्पत्ति, सेनाका निर्विघ्न आगे बढ़ना, राजमार्ग ( सड़क ), ३ अर्थ हैं ॥

'समुद्रिरणम्' ( + समुद्ररणम् । न ) के उल्टी ( वमन, कय ) किया हुआ अन्न आदि, किसी चीजको ऊपर खींचना या उठाना, उखाड़ना, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विषाणम्' ( त्रि ) के सींग, हाथीका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

१ प्रवणं क्रमनिम्नोर्ध्वा प्रहे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

२ संकीर्णौ 'निचिताशुद्धाश्विरिणं शून्यमूषरम् ।

४ 'सेतौ च वरणो ५ वेणी नदीभेदे कचोच्चये' (४२)

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ देवसूर्यौ विवस्वन्तौ ७ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

८ पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ ९ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।

१० अग्न्युत्पातौ धूमकेतु ११ जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

१ 'प्रवणम्' ( त्रि ) के ढालू जमीन, नम्र, २ अर्थ और 'प्रवणः' ( पु ) का चौरास्ता, १ अर्थ है ॥

२ 'संकीर्णः' ( त्रि ) के व्यास ( फैला या भरा हुआ ), अशुद्ध ( दो जातियोंका मेल ), २ अर्थ हैं ॥

३ 'इरिणम्' ( + इरणम्, ईरणम्, ईरिणम्, विरिणम् । न ) के खाली स्थान, ऊसर जमीन, २ अर्थ हैं ॥

४ [ 'वरणः' ( पु ) के पुल, बाँस या तार, काँटा आदिका घेरा, २ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'वेणी' ( स्त्री ), के नदी-विशेष केशकी चोटी २ अर्थ हैं ] ॥

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ 'विवस्वान्' ( = विवस्वत् पु ), के देवता, सूर्य हैं ॥

७ 'सरस्वान्' ( = सरस्वत् पु ) के नद ( शोणभद्र, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि ), समुद्र, २ अर्थ हैं ॥

८ 'गरुत्मान्' ( = गरुत्मत् पु ) के पक्षी, गरुड़ २ अर्थ हैं ॥

९ 'शकुन्तः' ( पु ) के गिद्ध, चिड़िया-मात्र २ अर्थ हैं ॥

१० 'धूमकेतुः' ( पु ) के आग, भविष्यमें होनेवाले उत्पातका सूचक तारा-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

११ 'जीमूतः' ( पु ) के बादल पहाड़ २ अर्थ हैं ॥

१. 'निचिताशुद्धाश्विरिणम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. सेतौ...कचोच्चये' इत्ययं श्लोकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽपि मूलमात्रमुपलभ्यते ॥

- १ हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे २ मरुतौ पवनामरौ ।  
 ३ यन्ता हस्तिपके सूते ४ भर्ता घातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥  
 ५ यानपात्रे शिशौ पोतः ६ प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।  
 ७ ग्रहभेदे ष्वजे केतुः ८ पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥  
 ९ स्थपतिः कारुभेदेऽपि १० भूभृद्भूमिधरे नृपे ।  
 ११ मूर्द्धाभिषिक्तो भूपेऽपि १२ ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥  
 १३ विष्णावप्यजिताव्यक्तौ—

- १ 'हस्तः' ( पु ) के हाथ, हस्त नामक तेरहवाँ नक्षत्र, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'मरुत्' ( पु ) के वायु, देवता, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'यन्ता' ( = यन्तृ पु ) के हाथीवान, सारथि ( कोचवान, एकावान, डाहवर आदि ), २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'भर्ता' ( = भर्तृ पु ), बह्मा, पोषण ( रक्षा ) करनेवाला, पति, ३ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'पोतः' ( पु ) के जहाज, बालक, २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'प्रेतः' ( पु ) के प्रेत ( योनि-विशेष ) मरा हुआ जीव, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'केतुः' ( पु ) के केतु नामका ग्रह, पताका २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'सुतः' ( पु ) के राजा पुत्र, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'स्थपतिः' ( पु ) के बढ़ई, कंचुकी, बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले, ६ अर्थ हैं ॥  
 १० 'भूभृत्' ( पु ) के पहाड़, राजा, २ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'मूर्द्धाभिषिक्तः' ( पु ), के राजा, प्रधान, मन्त्री, क्षत्रियमात्र ब्राह्मण जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, ५ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'ऋतुः' ( पु ) के स्त्रियोंका मासिक धर्म, हेमन्त आदि ( ११४१३ में उक्त ) छः ऋतु २ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'अजितः' ( पु ) के विष्णु, शिवजी, २ अर्थ और 'अजितः' ( त्रि ) का नहीं हारा हुआ १ अर्थ, तथा 'अव्यक्तः' ( पु ) के विष्णु, शिवजी, मूर्ख, ३ अर्थ; 'अव्यक्तम्' ( न ) महदादिक, आत्मा २ अर्थ और 'अव्यक्तम्' ( त्रि ) का अस्पष्ट, १ अर्थ हैं ॥

## १—सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।

२ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि ३ 'दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शनै ॥ ६२ ॥

४ क्षता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे<sup>१</sup> क्षत्रियायां च शूद्रजे ।

५ वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

६ आनर्त्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ।

७ कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

८ 'श्लेष्मादिरसरक्तादिमहाभूतानि तद्गुणाः ।

१ 'सूतः' ( पु ) के बड़ई, सारथि, क्षत्रिय जातिके पितासे ब्राह्मण जातिकीं मातामें उत्पन्न संतान, बन्दी, पारा, ५ अर्थ और 'सूतः' ( त्रि ) के जन्मा ( पैदा ) हुआ, प्रेरित, २ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यक्तः' ( पु ) के विद्वान्, स्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

३ 'दृष्टान्तः' ( पु ) के तर्क आदि शास्त्र, उदाहरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'क्षता' ( = क्षत्र पु ), के सारथि, द्वारपाल, शूद्र जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, वेश्या-पुत्र, नियुक्त, ब्रह्मा, ६ अर्थ हैं ॥

५ 'वृत्तान्तः' ( पु ) के प्रकरण ( अवसर ), प्रकार ( तरह, भाव, यथा-पाँच प्रकारके छः प्रकारके, ..... ) साकल्य ( पूरा २ ), बात, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'आनर्त्तः' ( पु ) के लड़ाई, नाचघर, देश-विशेष ( पश्चिम समुद्रके पासकी द्वारावती अर्थात् द्वारकापुरी ), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कृतान्तः' ( पु ) के यमराज, सिद्धान्त, भाग्य, पापकर्म, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'धातुः' ( पु ) के कफ आदि ( थूक, खखार, पित्त, आदि ), रस ( भोजन करने बाद उत्पन्न अन्नादिका विकार-विशेष ), खून आदि ( चर्बी, मज्जा, वीर्य, मांस, पीव, हड्डी आदि ), पृथ्वी आदि, ( जल तेज, वायु, आकाश ), पञ्च महाभूत, उन ( पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ) के गुण ( गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द ), इन्द्रिय ( आँख आदि पूर्वोक्त ( १।५।८ ) ११ इन्द्रिय ), हरताल, मैन्सिल, गेरू आदि पत्थरके विकारसे उत्पन्न धातुः भूः, एध,

१. 'दृष्टान्तावुभौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'वेश्यायां च' इत्यपपाठश्छन्दोमङ्गात् ।

३. 'श्लेष्मादिरस्थिरक्तादिमहाभूतानि' इति पाठान्तरम् ॥

इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

१ कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।

२ कासूसामर्थ्ययोः शक्तिश्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥

४ विस्तारवल्गयोर्वततिः खर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।

६ क्षयार्चयोरपचितिः ७ सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

८ 'अतिः' पीडाघनुषकोटयोर्जातिः सामान्यजन्मनोः ।

१० प्रचारस्यन्दयो रीतिः—

यच आदि शब्दोत्पत्तिके कारण--भूत व्याकरणशास्त्रसम्मत धातु, सोना-चाँदी-ताँबा-पीतल आदि धातु, ९ अर्थ हैं ॥

१ 'शुद्धान्तः' ( पु ) के रनिवास ( राजाका महल—जहाँ सब कोई नहीं जा सकता ऐसा राजाकी रानियोंका निवासगृह ), राजाकी स्त्रियाँ, अशौचका अन्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शक्तिः' ( स्त्री ) के बर्छी, सामर्थ्य, २ अर्थ हैं ॥

३ 'मूर्तिः' ( स्त्री ) के कठोरता, शरीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'व्रततिः' ( स्त्री ) के विस्तार, लता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'अपचितिः' ( स्त्री ) के क्षय, पूजा, खर्च, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सातिः' ( स्त्री ) के दान ( गज-मदका जल ), अन्त, २ अर्थ हैं ॥

८ 'अतिः' ( + आतिः । स्त्री ) के दुःख, घनुषका दोनोंका किनारा ( छोर ) २ अर्थ हैं ॥

९ 'जातिः' ( स्त्री ) के सामान्य अर्थात् जाति ( जैसे—गोत्व, ब्राह्मणत्व, आदि ), जन्म, मालती नामका फूल, छन्द, जातीफल, गोत्र, आँवला, ७ अर्थ हैं ॥

१० 'रीतिः' ( स्त्री ) के रिवाज ( रस्म, लोकाचार ), छन्द, धीरे २ बहना, टपकना, पीतल, लोहेकी मैल ( मण्डूर ), वैदर्भी आदि ( गौड़ी, पाञ्चाली, लाटिका ) काव्यके रसादि-संबन्धी चार<sup>२</sup> रीति, ५ अर्थ हैं ॥

१. 'आतिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं विश्वनाथेन—'पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत् ।

उपकर्त्री रसादीनां, सा पुनः स्याच्चतुर्विधा ॥

वैदर्भी चाथ गौड़ी च पाञ्चाली लाटिका तथा' ।

इति सा० द० १।६।४४-६४५ H

—१ ईतिडिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

- २ उदयेऽधिगमे प्राप्तिरेस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।  
 ४ वीणाभेदेऽपि महती ५ भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥  
 ६ नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्युद्य संगरे ।  
 सङ्गे सभायां समितिः ८ क्षयवासावपि क्षितिः ॥ ७० ॥  
 ९ रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।  
 १० जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

१ 'ईतिः' ( स्त्री ) के विप्लव ( बहुत वर्षा होना, सूखा पड़ना अर्थात् वर्षाका न होना; टिड्डी, मुसे, सुग्गेका, लगना, राजाका पास आना; ये ६ उप-द्रव ), परदेश जाना, २ अर्थ हैं ॥

२ प्राप्तिः' के उत्पत्ति, पाना, २ अर्थ हैं ॥

३ 'त्रेता' ( स्त्री ) के दक्षिण, गार्हपत्य और हवनीय नामके तीन अग्नि-विशेष, त्रेता नामक युग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'महती' ( स्त्री ) के नारद ऋषिकी वीणा, महस्वसे युक्त ( बड़ी ) स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

५ 'भूतिः' ( स्त्री ) के भस्म ( राख ), सम्पत्ति, हाथीका शृङ्गार, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भोगवती' ( स्त्री ) के दपोंकी नदी, सर्पोंकी नगरी ( पाताल ), २ अर्थ हैं ॥

७ 'समितिः' ( स्त्री ) के युद्ध, सङ्ग, सभा ३ अर्थ हैं ॥

८ 'क्षितिः' ( स्त्री ) के विनाश, निवास, पृथ्वी कालभेद, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'हेतिः' ( स्त्री ) के सूर्यकी किरण, हथियार, आगकी ज्वाला ३ अर्थ हैं ॥

१० 'जगती' ( स्त्री ) के संसार, चारह अक्षर के ( जैसे—वंशस्थ, तोटक, इन्द्रवंशा आदि ) छन्द, पृथ्वी, जन, ४ अर्थ हैं ॥

१. क्षितिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. इत्यथ पठ्य भवन्ति । ता यथा—

'अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः ।

प्रत्यासन्नाश्च राजानःपडेता ईतयः स्मृताः' ॥ इति ।

अचित्तु—स्वचक्रं पर चक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः इत्येवमुत्तरार्द्धं दृश्यते ॥



- १ 'पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं २ स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।  
 ३ पत्तिर्गतौ च ४ मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥  
 ५ प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च ६ कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।  
 ७ सिकताः स्युर्वालुकापि ८ वेदे भवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

‘पङ्क्ति’ ( स्त्री ) के दश अक्षरके ( जैसे—चम्पकमाला, मनोरमा, मत्ता आदि ) छन्द, पंक्ति ( कतार ), २ अर्थ हैं ॥

२ ‘आयतिः’ ( स्त्री ) के प्रभाव, उत्तर काल, २ अर्थ हैं ॥

३ ‘पत्तिः’ ( स्त्री ) के चलना, योद्धा, सेना-विशेष ( १० २९२ या १८१८० ) पैदल ४ अर्थ हैं ॥

४ ‘पक्षतिः’ ( स्त्री ) का पक्ष ( शुक्ल या कृष्ण ) की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपदा, चिड़िया आदिके पङ्क्तकी जड़, २ अर्थ हैं ॥

५ ‘प्रकृतिः’ ( स्त्री ) के योनि, लिङ्ग ( पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसक ), स्वभाव, शिल्पी ( कारीगर ), नागरिक-मन्त्री, आदि, गुणसाम्य, ६ अर्थ हैं ॥

६ ‘वृत्तिः’ ( स्त्री ) के कैशिकी आदि ( आरभटी, शाश्वती, भारती ) कान्य-सम्बन्धी चार ‘वृत्ति, जीविका, सूत्रादिका अर्थ हैं ॥

७ ‘सिकताः’ ( स्त्री लि० ब० व० ) के बालू, बालूसे युक्त स्थान या देश चीनी, ३ अर्थ हैं ॥

८ ‘श्रुतिः’ ( स्त्री ) के वेद ( ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ), कान, वार्ता, ३ अर्थ हैं ॥

१. पंक्तिश्छन्दो दशापि स्यात् इति पाठान्तरम् ॥

२. भारती शाश्वती चैव कैशिक्यारभटी तथा ।

चतस्रो वृत्तयश्चैताः यासु नाट्यं प्रतिष्ठितम् ॥ इति ।

दशरूपकेऽपि ‘तद्व्यापारारम्भिका वृत्तिश्चतुर्धा, तत्र कैशिकी’ ( दशरू० २।४७ ) इत्यारभ्य ‘चतुर्थी भारती सापि वाच्या नाटकलक्षणे ( दशरू० २।६० इत्यन्तेन तदभेदा ) उक्त अभ्ये च—

‘शृङ्गारे कैशिकी वीरे सात्वत्यारभटी पुनः ।

रसे रौद्रे च भीमस्ते वृत्तिःसर्वत्र भारती’ ॥ ( दशरू० २।६१ )

इत्यनेन करयाः कोपयोग इति कथितम् ॥

- १ वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।
- २ गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि ३ धृतिधारणधैर्ययोः ॥ ७३ ॥
- ४ बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे मष्ट्यपि ।
- ५ 'वासिता स्त्रीकारण्योश्च ६ वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७४ ॥
- वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्व ७ ऽप्सु च घृतामृतम् ।
- ८ कलधौतं रुप्यहेम्नो ९ निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७५ ॥
- १० श्रुतं शास्त्रावधृतयो ११ युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
- १२ अत्यादितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७६ ॥

१ 'वनिता' ( स्त्री ) के अत्यन्त प्यारी स्त्री, स्त्रीमात्र, २ अर्थ हैं ॥

२ 'गुप्तिः' ( स्त्री ) के जमीनका गढा ( गुफा या सुरङ्ग ), जेलखाना, रक्षा ३ अर्थ हैं ॥

३ 'धृतिः' ( स्त्री ) के धारण, धैर्य, योग-विशेष, यज्ञ, पुष्टि, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'बृहती' ( स्त्री ) के रेंगनी ( भटकटैया ), नव अक्षर का ( जैसे-मणिबन्ध, ... ) छन्द, बड़ी, विश्वावसुकी वीणा, वस्त्र विशेष ५ अर्थ हैं ॥

५ 'वासिता' ( + वाशिता । स्त्री ) के स्त्री, हथिनी, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वार्ता' ( स्त्री ) के जीविका, बात, २ अर्थ और 'वार्तम्' ( त्रि ) के सारहीन ( निस्तत्त्व, निर्बल ), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥

७ 'घृतम्' ( न ) के घी, पानी, २ अर्थ और 'घृतम्' ( त्रि ) का प्रदीप्त, १ अर्थ तथा 'अमृतम्' ( न ) के अमृत, पानी, घी, यज्ञ-शेष, अयाचित, मोक्ष ६ अर्थ और 'अमृतः' ( पु ) के धन्वन्तरि, देवता, २ अर्थ हैं ॥

८ 'कलधौतम्' ( न ) चाँदी, सोना, २ अर्थ हैं ॥

९ 'निमित्तम्' ( न ) के कारण, चिह्न, २ अर्थ हैं ॥

१० 'श्रुतम्' ( न ) का शास्त्र, ३ अर्थ और 'श्रुतम्' ( त्रि ) का सुना हुआ, १ अर्थ है ॥

११ 'कृतम्' ( न ) के सत्ययुग, पर्याप्त ( पूरा, काफी ); २ अर्थ हैं ॥

१२ 'अत्यादितम्' ( न ) के बड़ा भय, जीनेकी आशा छोड़कर किया हुआ बहुत बड़ा साहस, २ अर्थ हैं ॥

१. 'वाशिता' इति पाठान्तरम् ॥

- १ युक्ते क्षमादायुते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।  
 २ वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥  
 ३ महद्वाक्यं चा ४ वगीतं जन्मे स्याद् गर्हिते त्रिषु ।  
 ५ श्वेतं रूप्येऽपि ६ रजतं हेमि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥  
 ७ 'त्रिष्वतो ८ जगदिङ्गेऽपि ९ रक्तं नील्यादि राशि च ।

१ 'भूतम्' ( न ) के युक्त ( उचित ), पृथ्वी आदि ( जल, वायु, तेज और आकाश ), सत्य, ३ अर्थ और 'भूतम्' ( त्रि ) के प्राणी, बीता हुआ, सदृश, प्राप्त, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'वृत्तम्' ( न ) के श्लोक आदि पद्यमात्र ( जिनमें मात्राकी नहीं किन्तु वर्णोंकी गणना हो वह पद्यविशेष ), चरित्र, २ अर्थ और 'वृत्तः' ( त्रि ) क बीता हुआ, दृढ़ ( मजबूत ), गोलाकार, अधीत ( पढ़ा हुआ ), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'महत्' ( त्रि ) का बड़ा, १ अर्थ और 'महत्' ( न ) का राज्य, १ अर्थ है ॥

४ 'अवगीतम्' ( न ) का जनापवाद, १ अर्थ और 'अवगीतः' ( त्रि ) के सिद्धान्त, निन्दित, दुष्ट ( + दृष्ट अर्थात् देखा गया ), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'श्वेतम्' ( न ) का चाँदी १ अर्थ; 'श्वेतः' ( त्रि ) का सफेद पदार्थ, १ अर्थ; 'श्वेतः' ( पु ) के द्वीप-विशेष, पर्वत-विशेष, २ अर्थ और + 'श्वेता' ( स्त्री ) के कौड़ी, काष्ठपाटली, शङ्खिनी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'रजतम्' ( न ) सोना, चाँदी, २ अर्थ और 'रजतम्' ( त्रि ) का सफेद वर्णवाला पदार्थ १ अर्थ है ॥

७ यहाँसे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'जगत्' ( त्रि ) का जङ्गम, १ अर्थ; 'जगत्' ( न ) का संसार, १ अर्थ और 'जगत्' ( पु ) का वायु, १ अर्थ है ॥

९ 'रक्तम्' ( न ) का लाल रंग, खून, कुङ्कुम, ३ अर्थ, 'रक्तः' ( त्रि ) के अनुरक्त, रङ्गा हुआ कपड़ा आदि, २ अर्थ हैं ॥

१. 'त्रिष्वतो' इति पाठान्तरम् ॥

२. एतच्च द्रष्टव्यं छन्दोमञ्जरी 'पद्यं चतुष्पदी'

त्यादिनोक्तं प्रथमायाये ।

१ अवदातः क्षिते पीते शुद्धे २ बद्धजुनौ सितौ ॥ ८० ॥

३ युक्तेऽतिसंस्कृते मर्विण्याभिनीतो ४ ऽनन्तसंस्कृतम् ।

कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्य ५ वन्तोऽवधवधि ॥ ८१ ॥

६ ख्याते हृष्टे प्रतीतो ७ ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।

८ विविक्तौ पूतविजनौ ९ मूर्च्छितौ मूढलोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥

१० द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ ११ क्षिती अवलमेवकौ ।

१२ सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

१३ पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽप्रतः कृते ।

१ 'अवदातः' ( त्रि ) के सफेद, पीला, शुद्ध ३ अर्थ हैं ॥

२ 'सितः' ( त्रि ) बँधा हुआ, समाप्त, श्वेत, (सफेद) पदार्थ, ३ अर्थ हैं ।

३ 'अभिनीतः' ( त्रि ) के कृत्रिम ( बनापटी, नकली ), अत्युत्तम, सहनशील, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'संस्कृतम्' ( त्रि ) के बनाया ( संस्कार किया ) हुआ, उत्तम, भूषित, ३ अर्थ और 'संस्कृतम्' ( न ) का पणिन्यादि के लक्षणोंसे सिद्ध अर्थात् संस्कृत भाषा, १ अर्थ है ॥

५ 'अनन्तः' ( त्रि ) का अन्तरहित, १ अर्थ, 'अनन्तः' ( पु ) के शेष-नाग, विष्णु, २ अर्थ और 'अनन्तम्' ( न ) का आकाश, १ अर्थ है ॥

६ 'प्रतीतः' ( त्रि ) के प्रसिद्ध, प्रसन्न, जाना हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अभिजातः' ( त्रि ) के श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न ( खान्दानी ), विद्वान्, न्याययुक्त, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'विविक्तः' ( त्रि ) के पवित्र, एकान्त, विवेकवाला, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'मूर्च्छितः' ( त्रि ) के मूर्ख, वृद्धिसे युक्त, बेहोश, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'शुक्तः' ( त्रि ) के खट्टा ( काँजी ), कठोर, २ अर्थ हैं ॥

११ 'क्षिती' ( त्रि ) के सफेद, काला, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'सत्' ( त्रि ) के सत्य, साधु ( सज्जन ), विद्यमान, प्रशस्त (उत्तम), पूजित, धीर, मान्य, ७ अर्थ हैं ॥

१३ 'पुरस्कृतः' ( त्रि ) के पूजित, शत्रुसे आक्रान्त, आगे किया हुआ, श्रेष्ठ, ४ अर्थ हैं ।

- १ निवृत्तावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥  
 २ जातोन्नद्धप्रवृत्ताः स्युस्त्रिच्छ्रिता ३ उत्थितास्त्वमी ।  
 वृद्धिप्रतीचतोत्पन्ना ४ आहतौ सादराचितौ ॥ ८५ ॥  
 ५ 'कर्मविपाके ६ पि गति ६ गर्मुत्' द्वेस्त्र्युल्लवणे तृणे ( ४३ )  
 ७ क्रतुमुञ्छशिले सत्ये शोभनेऽपि विवक्षितम् ( ४४ )  
 ८ उदास्थितः प्रतीहारे चरभेदे ९ समाहितः ( ४५ )  
 ध्यानस्थे चाप्य १० 'अनीकस्थो गजलक्षणवेदिनि ( ४६ )  
 ११ श्रद्धारचनयोर्भक्तिगौण्यां वृत्तौ च सेवने ( ४७ )

१ 'निवातः' ( त्रि ) के निवासस्थान, वायुसे रहित देश-स्थान आदि, हथियारसे अभेद्य कवच, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'उच्छ्रितः' ( त्रि ) के उत्पन्न, अभिमानी, बड़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उत्थितः' ( त्रि ) के वृद्धिवाला, प्रवृत्त ( लगा हुआ, तैयार ), उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आहतः' ( त्रि ) के सत्कारसे युक्त, आदर पाया हुआ, २ अर्थ हैं ॥

५ [ 'गतिः' ( स्त्री ) के कर्म-विपाक, गमन, २ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'गर्मुत्' ( पु ) के सोना, स्पष्ट, तृण; ३ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'क्रतुम्' ( न ) के उञ्छशिल ( खेत या खलिहान आदिसे अन्नका १-१ दाना चूँगना ), सत्य, सुन्दर, ३ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'उदास्थितः' ( पु ) का प्रतीहार(द्वार), दूत-विशेष, अध्यक्ष, ३ अर्थ हैं ] ॥

९ [ 'समाहितः' ( त्रि ) के ध्यानमें मग्न, आहित, प्रतिज्ञात, समाधान करनेवाला, ४ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'अनीकस्थः' ( पु ) के युद्धमें स्थित, हाथी के लक्षणों को जानने-वाला, राजरक्षक, ३ अर्थ हैं ] ॥

११ [ 'भक्तिः' ( स्त्री ) के श्रद्धा, रचना-विशेष, गौणी वृत्ति, सेवा करना, ४ अर्थ हैं ] ॥

१. 'कर्मविपाकेऽपि.....स्थितिः' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां दुर्गवचनत्वे-नोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेपकत्वेन निहितः ।

२. तान्तशब्देषु थान्तशब्दपठनमनुचितं प्रतिभाति ॥

३. थकारान्तः कथमुक्तः क्षी० स्वा० ॥

- १ आतो लब्धप्रत्ययितौ २ नता पुत्रश्च पुत्रयोः ( ४८ )  
 ३ समूहोत्पन्नयोजित ४ महिजिह्वीपीन्द्रयोः ( ४९ )  
 ५ सौतिकेऽपि प्रयातो ६ ऽथावपातावतटावटौ ( ५० )  
 ७ समित्सङ्गे रणेऽपि स्त्री ८ व्यवस्थापामपि स्थितिः ( ५१ )

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ थान्ताः शब्दाः ।

- ९ अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।  
 १० 'निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

- १ [ 'आतः' ( त्रि ) के लब्ध ( मिला हुआ ), निश्चस्त, २ अर्थ हैं ] ॥  
 २ [ 'नता' ( = नष्ट पु ), का पोता ( पुत्रका पुत्र ), नातो ( पुत्रीका पुत्र ), २ अर्थ हैं ] ॥  
 ३ [ 'जातम्' ( न ) का समूह, १ अर्थ और 'जातम्' ( त्रि ) का उत्पन्न, १ अर्थ है ] ॥  
 ४ [ 'अहिजित्' ( पु ) के विष्णु, इन्द्र, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ५ [ 'प्रतापः' ( पु ) के पहाड़ का झरना, लेटना, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ६ [ 'अवपातः' ( पु ) के अतट ( बिना किनारावाला ), गढा, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ७ [ 'समित्' ( स्त्री ) के संग, जुद्ध, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ८ [ 'स्थितिः' ( स्त्री ) के व्यवस्था, निवासस्थान, टिकाव, ३ अर्थ हैं ] ॥

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ थान्ताः शब्दाः ।

- ९ 'अर्थः' ( पु ) के कहनेयोग्य, धन, वस्तु, प्रयोजन, ( उद्देश्य, मतलब ), निवृत्ति, ५ अर्थ हैं ॥  
 १० 'तीर्थम्' ( न ) के कूपादिके पासका जलाशय ( गढा । + सीढ़ी मुकुं । + निदान अर्थात् उपाय ), बौद्धशास्त्रसे भिन्न शास्त्र, ऋषिसे सेवित जल, गुरु, यज्ञ, पुण्यक्षेत्र, यज्ञवाला, स्त्री-रज, योनि, पात्र, दर्शन, ११ अर्थ हैं ॥

१. 'निदानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे' इति पाठान्तरम् ॥

- १ समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे द्वितेऽपि च ।  
 २ दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ ३ वीथी पङ्क्त्यपि ॥ ८७ ॥  
 ४ आस्थानीयस्तनोरास्था ५ प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।  
 ६ 'शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः ७ संस्थाऽऽधारे स्थितौ मृतौ ( ५२ )

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ दान्ताः शब्दाः ।

- ८ अभिप्रायवशौ छन्दः ९ वृद्धौ जीमूतवत्सरी ॥ ८८ ॥  
 १० अपवादौ तु निन्दाञ्जे ११ दायादौ सुतबान्धवौ ।  
 १२ पादा रश्म्यङ्गघ्नितुर्याशा १३ अन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥

- १ 'समर्थः' ( त्रि ) के बलवान् , सम्बद्ध अर्थ, हित, ३ अर्थ हैं ॥  
 २ 'दशमीस्थः' ( त्रि ) के क्षीण रागवाला ( प्रेमहीन), वृद्ध, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'वीथी' ( स्त्री ) के रास्ता ( गली ), पङ्क्ति ( कतार ), गृहप्रान्तः  
 ४ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'आस्था' ( स्त्री ) के सभा, उपाय, आलम्बन, अपेक्षा, ४ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'प्रस्थः' ( पु ) के शिखर ( कँगूरा ), परिमाण-विशेष ( सेर ), २ अर्थ हैं ॥  
 ६ [ 'ग्रन्थः' ( पु ) के शास्त्र, धन, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ७ [ 'संस्था' ( स्त्री ) के आधार, स्थिति, मृति, संस्था ( सभा, सोसायटी  
 आदि ), ४ अर्थ हैं ] ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ दान्ताः शब्दाः ।

- ८ 'छन्दः' ( पु ) के अभिप्राय, वश, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'वृद्धः' ( पु ) के मेघ, वर्ष, पर्वत विशेष, मोथा, ४ अर्थ हैं ॥  
 १० 'अपवादः' ( पु ) के निन्दा, आज्ञा, विश्रम्भ, निरवकाश ( बाधक )  
 सूत्रादि, ४ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'दायादः' ( पु ) के पुत्र, परिवार, २ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'पादः' ( पु ) के किरण, पैर, चौथाई हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'तमोनुत्' ( = तमोनुद पु ) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा व्याख्यानेऽमरविवेकमूलपुस्तके तद्व्याख्याने चोपलभ्यते ॥

- १ निर्वादो जनघादेऽपि २ शादो जम्बालघातयोः ।
- ३ आरावे रुदिते प्रातर्याक्रन्दो दाहणे रणे ॥ ९० ॥
- ४ स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि ५ सुदः स्याद् व्यञ्जनेऽपि च ।
- ६ गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो ७ हर्षेऽप्यामोदश्चम्पदः ॥ ९१ ॥
- ८ प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽत्रियाम् ।
- ९ स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥

१ 'निर्वादः' ( पु ) के जनापवाद, सिद्धान्त, २ अर्थ हैं ॥

२ 'शादः' ( पु ) के कीचड़ ( पक ), घास २ अर्थ हैं ॥

३ 'आक्रन्दः' ( पु ) के कष्ट युक्त शब्द, रोना, रक्तक, भयङ्कर युद्ध, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रसादः' ( पु ) के अनुग्रह, प्रसन्नता, काव्य का 'गुण-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'सुदः' ( त्रि ) के व्यञ्जन (कढ़ी, बरी, तरकारी आदि), रसोइयादार, २ अर्थ हैं ॥

६ 'गोविन्दः' ( पु ) के गोष्ठ ( गोशाला ) का मालिक, विष्णु, बृहस्पति, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'आमोदः' ( पु ) के हर्ष, दूर ही से चित्तको आकर्षित करनेवाला कस्तूरी आदिका गन्ध, २ अर्थ और 'म्पदः' ( पु ) के हर्ष, कस्तूरी, वीर्य (शुक्र), गर्व ( अहङ्कार ), हाथीका मद, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'ककुदः' ( पु न ) के प्राधान्य, राज-चिह्न ( छत्र, चँवर आदि ), बैल या साँड़का डील, पहाड़की चोटी, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'संविद्' ( = संविद् स्त्री ) के ज्ञान, संभाषा (संभाषण । + संकेत), कर्मका नियम वा व्यवस्थापन, लड़ाई, नाम, तोषण, आचार, प्रतिज्ञा, ८ अर्थ हैं ।

१. विश्वनाथेन प्रसादलक्षणमुक्तन्तद्यथा—

'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः ।

स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च' ॥ इति सा० द० ६ । ६३१ ॥

काव्यप्रकाशे च—'शुष्केन्धनादिवत्प्रवच्छजलवत्सहसैव यः ।

व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः' ॥ इति ॥



- १ धर्मे रहस्युपनिषत् २ स्यादृतौ वत्सरे शरत् ।  
 ३ पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्गवस्तुषु ॥ ९३ ॥  
 ४ गोष्पदं सेविते माने ५ प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।  
 ६ त्रिविष्टमधुरौ स्वादू ७ मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥  
 ८ मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युः ९ द्वौ तु शारदौ ।  
 प्रत्यग्राप्रतिभौ १० विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

इति दकारान्ताः शब्दाः ।

अथ धकारान्ताः शब्दाः ।

### ११ व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ—

१ 'उपनिषत्' ( = उपनिषद् स्त्री ) के धर्म, एकान्त, वेदान्त ( ग्रन्थ-विशेष ), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शरत्' ( = शरद् स्त्री ) के शरद् ऋतु ( पृ० ४२ ), वर्ष, २ अर्थ हैं ॥

३ 'पदम्' ( न ) के व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, शब्द ( सुबन्ध और तिङन्त ), वाक्य, एक वस्तु, व्यवसाय, अपदेश, १० अर्थ हैं ॥

४ 'गोष्पदम्' ( न ) के गौओंसे सेवित स्थान, गौके चरणतुल्य प्रमाण-वाला रादा २ अर्थ हैं ॥

५ 'आस्पदम्' ( न ) के प्रतिष्ठाका स्थान, काम, १ अर्थ हैं ॥

६ 'स्वादुः' ( त्रि ) के इष्ट, मधुर, स्वादिष्ट, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मृदुः' ( त्रि ) के तेजोहीन, कोमल २ अर्थ हैं ॥

८ 'मन्दः' ( त्रि ) के अल्प, बेवकूफ भाग्यहीन, शिथिल, स्वच्छन्द, रोगी, शनि, ७ अर्थ हैं ॥

९ 'शारदः' ( त्रि ), के नया ( टटका ), डरपोक ( ढिठाई से हीन ), शरद् ऋतुमें उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विशारदः' ( त्रि ) के विद्वान्, प्रतिभावाला, २ अर्थ हैं ॥

इति दान्ताः शब्दाः ।

अथ धान्ताः शब्दाः ।

११ 'न्यग्रोधः' ( पु ) के व्याम ( अँकवारभर अर्थात् फैलाये हुए दोनों हाथोंके घेरेका प्रमाण-विशेष ), बरगद ( बड़ ) का पेड़, २ अर्थ हैं ॥

—१ उत्सेधः काय उन्नतिः ।

२ पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

३ परिविर्व्यञ्जितरोः शाखाद्यामुपसूर्यके ।

४ बन्धकं व्यसनं चेत्तपीडाऽधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

५ स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।

६ दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिधिनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ।

१ 'उत्सेधः' ( पु ) के शरीर, उन्नति ( ऊँचाई ), २ अर्थ हैं ॥

'विवधः, वीवधः' ( २ पु ) के वहाँगी या काँवर, रास्ता, बोझ, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'परिविः' ( पु ) के यज्ञ-सन्बन्धी पेड़ ( पलाश, शमी आदि ) की शाखा, परिवेष नामका सूर्यके चारों तरफवाला घेरा, गोलाई, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आधिः' ( पु ) के बन्धक ( ऋण लेनेके समय विश्वासके लिये महा-जनके पास रखी हुई चीज अर्थात् थाती, धरोहर ), आपत्ति, मानसिक पीड़ा, अधिष्ठान, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'समाधिः' ( पु ) के समर्थन, चुप रहना, नियम ( अपनेको ब्रह्मरूप' समझना ), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'अनुबन्धः' ( पु ) के दोष लगाना, नष्ट होनेवाले ( प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश आदिमें इत्संज्ञा होनेपर लुप्त होनेवाले ) अक्षर ( जैसे—एध, डुपचष्, सु, औट्, तिप्, डीप्, णुट्, नुट्, धुट्, नुम्, ...में क्रमशः अकार, हु तथा अष्, उ, ...वर्ण ), पिता आदि श्रेष्ठोंकी आज्ञा माननेवाला बालक, प्रकरणागत विषयोंका अनुवर्तन ( जैसे—वैरानुबन्धः, ... ) ४ अर्थ हैं ॥

१. सूतसंहितायां समाधिलक्षणमुक्तन्तवथा—

'सोऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यत्कदाचन ।

इति विद्यात्स्वमात्मानं स समाधिः' प्रकीर्तितः' ॥ इति ॥

अन्यच्च—समाधिः तु सभाधानं जीवात्मपरमात्मनोः ।

ब्रह्मण्येव स्थितायां स समाधिः प्रत्यगात्मनः ॥ इति ॥

भगवता पतञ्जलिना योगसूत्रेऽपि—

'तदेतन्मन्त्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः' ॥ इति यो० सू० ४ । ३ इति ॥

- १ विधुविष्णौ चन्द्रमसि २ परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥ ९९ ॥  
 ३ विधिविधाने दैवेऽपि ४ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।  
 ५ बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि ६ स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥  
 ७ देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।  
 ८ विधा विधौ प्रकारे च ९ साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥  
 १० बधूर्जाया स्नुषा स्त्री च ११ सुधालेपोऽमृतं स्नुही ।  
 १२ संधा प्रतिष्ठा मर्यादा १३ श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥  
 १४ मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽपि—

- १ 'विधुः' ( पु ) के विष्णु, चन्द्रमा, कर्पूर, ३ अर्थ हैं ॥  
 २ 'अवधिः' ( पु ) के समान ( हृद ), बिल या गढ़ा, समय, ३ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'विधिः' ( पु ) के विधान ( कानून ), भाग्य, ब्रह्मा, समय, प्रकार, ५ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'प्रणिधिः' ( पु ) के याचना करना, दूत, २ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'बुधः' ( पु ) के पण्डित, बुधनामक ग्रह २ अर्थ और 'वृद्धः' ( त्रि ) के पण्डित, पुराना या बूढ़ा, बढ़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'स्कन्धः' ( पु ) के समूह, सैन्यभाग, काण्ड ( शाखा, डाल ), कन्धा, राजा, ५ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'सिन्धुः' ( पु ) के सिन्धुदेश, नद-विशेष ( यह पञ्जाब-में है ), समुद्र, ३ अर्थ और 'सिन्धुः' ( स्त्री ) का नदी, १ अर्थ है ॥  
 ८ 'विधा' ( स्त्री ) के विधि, प्रकार ( तरह, जैसे-द्विविधा, त्रिविधा, ... ), हाथी-घोड़े आदिका भोजन, वेतन, वृद्धि ५ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'साधुः' ( त्रि ) के रमणीय, सज्जन ( महात्मा ), बनियाँ, ३ अर्थ हैं ॥  
 १० 'बधूः' ( स्त्री ) के पत्नी, पत्नी ( पुत्र-भतीजा आदिकी स्त्री ), स्त्री-मात्र ३ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'सुधा' ( स्त्री ) के लेप, अमृत, सेंहुड, ३ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'संधा' ( स्त्री ) के स्वीकार, मर्यादा, प्रतिज्ञा, ३ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'श्रद्धा' ( स्त्री ) के आदर, काङ्क्षा, २ अर्थ हैं ॥  
 १४ 'मधु' ( न ) के मदिरा, फूलका रस, शहद, दूध ४ अर्थ और 'मधुः' ( पु ) के वसन्त ( चैत्र-वैशाख ) ऋतु, मधु नामका दैत्य, चैत्र महीना, एक प्रकारका पेड़, ४ अर्थ हैं ॥

—१ अन्धं तमस्यपि ।

- २ अतस्त्रिषु ३ समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥  
 ४ ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशे ५ अथावलम्बितः ।  
 अविदूरोऽप्यवष्टब्धः ६ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥  
 ७ 'लेखोऽपि गन्धः ८ संबाधः गृह्यसंकुलयोरपि ( ५३ )  
 ९ बाधा निषेधे दुःखेऽपि १० ज्ञातृचान्द्रिसुरा बुधाः' ( ५४ )

इति धान्ताः शब्दाः ।



१ 'अन्धम्' ( न ) का अन्धकार, १ अर्थ और 'अन्धः' ( त्रि ) का अन्धा,  
 १ अर्थ हैं ॥

२ यहाँसे आगे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ 'समुन्नद्धः' ( त्रि ) के स्वयं पण्डित न होते हुए भी अपनेको पण्डित  
 समझनेवाला, अभिमानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ब्रह्मबन्धुः' ( त्रि ) के निन्दा, ( जैसे—हे ब्रह्मबन्धो ! दुष्टोऽसि,  
 ..... ), निर्देश, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अवष्टब्धः' ( त्रि ) के अवलम्बित ( आश्रित ), समीप ( पासवाला ),  
 बैधा हुआ, रुका हुआ ४ अर्थ हैं ॥

६ 'प्रसिद्ध' ( त्रि ), के विख्यात, सुशोभित, २ अर्थ हैं ॥

७ [ 'गन्धः' ( पु ) के लेश, गन्ध ( सुवास ), २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'संबाध' ( पु ) के गुप्त, सङ्कुल ( भीड़ आदिसे ठसठास भरा  
 हुआ ), २ अर्थ हैं ] ॥

९ [ 'बाधा' ( स्त्री ) के निषेध, दुःख, २ अर्थ हैं ॥

१० [ 'बुधः' ( पु ) के जाननेवाला, बुध नामका ग्रह, देवता, ३ अर्थ हैं ] ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।



१. अयं क्षेपकांशः क्षी० रत्ना० व्याख्याने मूलमात्रमुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया  
 क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

- १ सूर्यवह्नी चित्रभानू २ भानू रश्मिदिवाकरौ ।
- ३ भूतात्मनौ घातृदेहौ ४ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
- ५ ग्रावाणौ शैलपाषाणौ ६ पत्त्रिणौ शरपक्षिणौ ।
- ७ तरुशैलौ शिखरिणौ ८ शिखिनौ वद्विबर्हिणौ ॥ १०६ ॥
- ९ प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहा १० वथ सादिनौ ।
- द्वौ सारथिद्वयारोहौ ११ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥
- १२ कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्य १३ थ द्वायनाः ।
- वर्षाविर्विहिमेदाश्च १४ चन्द्रग्न्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

- १ 'चित्रभानु' ( पु ) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥
- २ 'भानु' ( पु ) के किरण, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥
- ३ 'भूतात्मा' ( = भूतात्मन् पु ) के ब्रह्मा, शरीर, २ अर्थ हैं ॥
- ४ 'पृथग्जनः' ( पु ) के मूर्ख, नीच, २ अर्थ हैं ॥
- ५ 'ग्रावा' ( = ग्रावन् पु ) के पहाड़, पत्थर, २ अर्थ हैं ॥
- ६ 'पत्त्री' ( = पत्त्रिन् पु ) के बाण, पत्ती, बाज चिड़िया, रथिक, पहाड़, ५ अर्थ हैं ॥
- ७ 'शिखरी' ( = शिखरिन् पु ), के पहाड़, २ अर्थ हैं ॥
- ८ 'शिखी' ( = शिखिन् पु ) के मोर, अग्नि, पेड़, मुर्गा, पत्ती, बाण, केतु नामका ग्रह, ७ अर्थ हैं ॥
- ९ 'प्रतियत्नः' ( पु ) के लिप्सा, वन्दी-ग्रहणादि, संस्कार, ३ अर्थ हैं ॥
- १० 'सादी' ( = सादिन् पु ) के सारथि, घुड़सवार, २ अर्थ हैं ॥
- ११ 'वाजी' ( = वाजिन् पु ) के घोड़ा, बाण, पत्ती, ३ अर्थ हैं ॥
- १२ 'अभिजनः' ( पु ) के वंश ( खान्दान ), जन्म-भूमि, ख्याति, कुलसमूह, ४ अर्थ हैं ॥
- १३ 'द्वायनः' ( पु ) के वर्ष, किरण, नीवार ( तिब्बो ) आदि अन्न, ३ अर्थ हैं ॥
- १४ 'विरोचनः' ( पु ) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

- १ 'क्लेशेऽपि वृजिनो २ विश्वकर्माकंसुरशिल्पिनोः ।
- ३ आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्म ज ॥ १०९ ॥
- ४ 'शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
- ५ अभिमानोऽर्थादिदपे ज्ञाने प्रणयद्विसयोः ॥ ११० ॥
- ६ 'घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ।
- ७ इनः सूर्ये प्रभौ ८ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
- ९ वाणिन्यौ नर्तकीदूतौ १० स्रवन्त्यामपि वाहिनी ।

१ 'वृजिनः' ( पु ) का क्लेश ( + केश ), 'वृजिनम्' ( न ) का पाप, रक्तचर्म २ अर्थ और 'वृजिनः' ( त्रि ) का कुटिल, १ अर्थ है ॥

२ 'विश्वकर्मा' ( = विश्वकर्मन् पु ) के सूर्य, देवताओंका कारीगर (बढ़ई), २ अर्थ हैं ॥

३ 'आत्मा' ( = आत्मन् पु ) के यत्न, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर, ज्ञेत्रज्ञ ( ज्ञानी पुरुष ), ७ अर्थ हैं ॥

४ 'घनाघनः' ( पु ) के इन्द्र, घातुक ( हिंसा करनेवाला ) मतवाला हाथी, बरसनेवाला साल ( वर्ष ), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'अभिमानः' ( पु ) के घन आदिका घमण्ड, ज्ञान, प्रेम, हिंसा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'घनः' ( पु ) के बादल, कड़ापन, लोहेका मुद्गर, बाहुल्य, मुस्त, ५ अर्थ और 'घनः' ( त्रि ) के कठोर, गश्किन, काँसेका बाजा, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इनः' ( पु ) के सूर्य, प्रभु या समर्थ, श्रेष्ठ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'राजा' ( = राजन् पु ) के चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा, स्वामी, यक्ष, इन्द्र, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'वाणिनी' ( स्त्री ) के नाचनेवाली वेरया आदि, दूती, चतुर स्त्री, मतवाली स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'वाहिनी' ( स्त्री ) के नदी, सेना, सेनाका भेद-विशेष ( २।८।८१ का चक्र ), ३ अर्थ हैं ॥

१. 'केशे' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शक्रघातुकमत्तेभवषुकाब्दा घनाघनाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. कचित्तु — 'घनो.....निरन्तरे' इत्ययमंशः 'अभिमानो.....द्विसयोः' इत्यस्यानन्तरं पठ्यते ॥

- १ ह्रस्विन्यौ वज्रतडितौ २ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥  
 ३ त्वग्देहयोरपि तनुः ४ सूनाऽधोजिह्विकापि च ।  
 ५ क्रतुविस्तारयारस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥  
 मन्दे ६ ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।  
 ७ 'वेदस्तत्त्वं' तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥  
 ८ उत्साहने च 'हिसायां सूचने चापि गन्धनम् ।  
 ९ आतञ्जनं प्रतीवापञ्चवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

- १ 'ह्रादिनी' (स्त्री) के वज्र (इन्द्रका अस्त्र-विशेष), बिजली, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'कामिनी' (स्त्री) के बन्ना (बाँदा अर्थात् पेड़के ऊपर ही उत्पन्न काष्ठ-विशेष), स्त्री, काम (इच्छा) करनेवाला स्त्री, विलासिनी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'तनुः' (स्त्री) के त्वचा (छाल, चमड़ा), शरीर, २ अर्थ और 'तनुः' (त्रि) के कृश, थोड़ा, विरल, ३ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'सूना' (स्त्री) के गलेकी चाँटी, प्राणियोंका वधस्थान, सन्तान, ३ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'वितानम्' (न पु) के यज्ञ, विस्तार, चँदोवा, ३ अर्थ और 'वितानम्' (त्रि) के तुच्छ, मन्द, २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'केतनम्' (न) के कार्य, पताका, निमन्त्रण (मित्रोंको उत्सव आदिमें बुलाना), निवास, ४ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'ब्रह्म' (= ब्रह्मन् न) के ऋग्, यजुष्, साम ये तीनों वेद, तत्त्व, तप, ब्रह्म, ४ अर्थ और 'ब्रह्मा' (= ब्रह्मन् पु) के ब्राह्मण, ब्रह्मा, २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'गन्धनम्' (न) के उत्साहित करना, हिंसा करना, आशय प्रकट करना, (+ हिंसा-प्रयुक्त सूचना स्त्री० स्वा०), प्रकाशन, ४ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'आतञ्जनम्' (न) के जोरन डालना (औंटे दूधमें दही छोड़कर दही जमाना । + गलाये हुए सोनेमें दूसरे द्रव्यके साथ अवचूर्णन करना स्त्री० स्वा०), वेग, तर्पण (तृप्त) करना, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'वेदास्तत्त्वं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हिसार्थसूचने' इति स्त्री० स्वा० इति पाठान्तरम् ॥

- १ व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
- २ स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
- ३ स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
- ४ अवकाशे स्थितौ स्थानं ५ क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
- ६ उत्थानं पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च ।
- ७ व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
- ८ मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ।
- निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यास्तु च साधनम् ॥ ११९ ॥

१ 'व्यञ्जनम्' ( न ) के चिह्न, दाढ़ी-मूँछ ( हजामत ), तेमन ( दही कढ़ी, बरी बरा आदि ) अवयव, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'कौलीनम्' ( न ) के लोकापवाद, पशु ( भेंड़ा आदि ) पक्षियों ( मुर्गा-तीतर आदि ) आदिकी लड़ाई, कुलीनता, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उद्यानम्' ( न ) के निकलना, बागीचा, प्रयोजन, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'स्थानम्' ( न ) के अवकाश, स्थिति, सादृश्य ( बराबरी ), ज्योंका त्यों रहना ( न घटना न बढ़ना ), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'देवनम्' ( न ) के क्रीडा आदिमें जीतनेकी इच्छा, व्यवहार, २ अर्थ और 'देवनः' ( पु ) का जुवा ( घूत ) १ अर्थ है ॥

६ 'उत्थानम्' ( न ) के पुरुषार्थ, तन्त्र ( सैन्य, अपने मण्डल अर्थात् राज्य-विषयक चिन्ता, या पारिवारिक काम ), ऊँचा उठना ( उन्नति करना ), पुस्तक, युद्ध, सिद्धान्त, ६ अर्थ हैं ॥

७ 'व्युत्थानम्' ( न ) के तिरस्कार, चोरी आदि विरुद्ध आचरण, स्वतन्त्रता, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'साधनम्' ( न ) के मरना ( पारा आदिका शोधना ), मरे हुएका संस्कार ( दाह आदि ) करना, जाना, धन, धन दिलाना ( + द्रव्यका उपपादन ) धन पैदा करना, उपाय, पीछे २ चलना, सैन्य, मेढ़, १० अर्थ हैं ॥

१. लाञ्छनश्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्रव्योपपादने' इति पाठान्तरम् ॥



- १ निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
- २ व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥
- ३ पक्ष्माक्षिलोमिनि किञ्चलके तन्त्रवाद्यंशेऽप्यणीयसि ।
- ४ तिथिभेदे क्षणे पर्व ५ वर्त्म नैत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥
- ६ अकार्यगुह्ये कौपीनं ७ मैथुनं संगतौ रते ।
- ८ प्रधानं परमात्मा धीः ९ प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥
- १० प्रसूनं पुष्पफलयोः—

१ 'निर्यातनम्' ( न ) के वैरशुद्धि ( शत्रु से बदला लेना ), दान, धरोहर ( याती ) को वापस करना, ३ अर्थ हैं ।

२ 'व्यसनम्' ( न ) के विपत्ति, नीचे गिरना, ( अवनति होना ), काम-जन्य ( शिकार, जुआ, मदिरा-पान, स्त्रीसङ्ग आदिसे उत्पन्न ) दोष, क्रोधजन्य ( कठोर वचन, कठिन दण्ड आदिसे उत्पन्न ) दोष, निष्फल उद्यम, अशुभ भाग्य का बुरा फल, ६ अर्थ हैं ॥

३ 'पक्ष्म' ( = पक्ष्मन् न ) के बरौनी ( आँखका रोंआ ), किञ्चलक ( कमलकेसर ), सूत आदिका बहुत महीना हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'पर्व' ( पर्वन् न ) के तिथि-भेद ( अमावस्या-पूर्णिमा आदि, प्रतिपद् और पञ्चदशी अर्थात् अमावस्या पूर्णिमाकी सन्धि ), उत्सव, ग्रन्थका अंश ( जैसे—आदिपर्व, वनपर्व, आदि ), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'वर्त्म' ( वर्त्मन् न ) के पपनी ( आँखको ढाकनेवाला चमड़ा, पलक ), रास्ता २ अर्थ हैं ॥

६ 'कौपीनम्' ( न ) के नहीं करने योग्य, लँगोटी, गुह्य ( शिरन ), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मैथुनम्' ( न ) के स्त्री आदिका सम्बन्ध, स्त्रीके साथ संभोग करना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'प्रधानम्' ( न ) के परमात्मा, बुद्धि, मुख्य, साङ्ख्यशास्त्रोक्त प्रकृति, राजाका प्रधान सहाय, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'प्रज्ञानम्' ( न ) के बुद्धि, चिह्न २ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रसूनम्' ( न ) के फूल, फल, २ अर्थ हैं ॥

—१ निधनं कुलनाशयोः ।

- २ क्रन्दने रोदनाह्वाने ३ वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥  
 ४ गृहदेहत्वित्प्रभावा धामान्यपथ चतुष्पथे ।  
 सन्निवेशे च संस्थानं ६ लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥  
 ७ आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ।  
 ८ आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥  
 ९ अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाभ्यासनेष्वपि ।  
 १० रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि ११ वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥  
 १२ तलिनं विरले स्तोके १३ वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।  
 १४ समानाः सरसमैके स्युः—

- १ 'निधनम्' ( न ) के कुल ( वंश ), नाश, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'क्रन्दनम्' ( न ) के रोना, पुकारना, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'वर्ष्म' ( = वर्ष्मन् न ) के शरीर, प्रमाण, २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'धाम' ( धामन् न ) के घर, शरीर, तेज, प्रभाव, जन्म, शक्ति, ६ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'संस्थानम्' ( न ) के चौरास्ता, अवयव-विभाग, आकृति, मरना ४ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'लक्ष्म' ( = लक्ष्मन् न ) के चिह्न, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'आच्छादनम्' ( न ) के अच्छी तरह छिपना ( अन्तर्धान होना ) कपड़े आदिसे ढाँकना २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'आराधनम्' ( न ) के साधन प्राप्ति होना, संतुष्ट करना, ३ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'अधिष्ठानम्' ( न ) के पहिया, ग्राम, प्रभाव, आक्रमण, ४ अर्थ हैं ॥  
 १० 'रत्नम्' ( न ) के अपने जातिवालों ( सामान्य वर्ग ) में श्रेष्ठ, मणि ( जवाहरात ), २ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'वनम्' ( न ) के पानी, जङ्गल, निवास, घर, ४ अर्थ हैं के  
 १२ 'तलिनम्' ( त्रि ) के विरल, योड़ा, स्वच्छ, ३ अर्थ हैं ॥  
 १३ इसके आगे सब नान्त शब्द वाच्यलिङ्ग ( त्रिलिङ्ग ) हैं ॥  
 १४ 'समानः' ( त्रि ) के पण्डित, समान ( तुल्य ), मुख्य, ३ अर्थ  
 'समानः' ( पु ) का नाभि-मण्डलमें रहनेवाली वायु, १ अर्थ हैं ॥

—१ पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

- २ हीनन्यूनावूनगह्यौ ३ वेगिशूरी तरस्विनौ ।  
 ४ अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापदगतावपि ॥ १२८ ॥  
 ५ 'लेख्यं भूम्यादिदानार्थं यातनाऽऽज्ञा च शासनम्' ( ५५ )  
 ६ निदानमवसानेऽपि ७ सार्थं वार्धुपिके धनी ( ५६ )  
 ८ कक्षापटेऽपि कौपीनं ९ न ना ज्ञानेऽपि बाधना ( ५७ )  
 १० द्युम्नं बले —

१ 'पिशुनः' ( त्रि ) के दुष्ट, चुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥

२ 'हीनः, न्यूनः' ( २ त्रि ) के कम, निन्दनीय, २ अर्थ हैं ॥

३ 'तरस्वी' ( = तरस्विन् त्रि ) के वेगवान्, शूरवीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'अभिपन्नः' ( त्रि ) के अपराधी, शत्रुसे आक्रान्त, विपत्तिमें पड़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

५ [ 'शासनम्' ( न ) के राजासे मिली हुई भूमि आदि जागीर, शास्त्र ( जैसे—'अथ धर्माज्जशासनम्' यो० सू० १।१ ), आज्ञा, राज्य—लेख्य—भेद, शासन ( दण्ड देना ), ५ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'निदानम्' ( न ) के अवसान ( अन्त ), रोग—निर्णय, आदि कारण, कारणमात्र, कारण समूह, शुद्धि, रोग ७ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'धनी' ( = धनिन् पु ) के सुदखोर ( व्याजपर रुपया देनेवाला महाजन ), बनियोंका झुण्ड, धनवान्, ३ अर्थ हैं ॥

८ [ 'कौपीनम्' ( न ) के नहीं करने योग्य, गुह्य ( लिङ्ग ), लंगोटी, ३ अर्थ हैं ] ॥

९ [ 'बाधना' ( स्त्री ) के प्रतिरोध ( रोक ), स्वभाविक ज्ञान, हेतुवाभाव-भेद, पीड़ा, न्यायोक्त, ५ अर्थ और पा० भे० से + 'वेदना' ( स्त्री ) के ज्ञान, दुःख, २ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'द्युम्नम्' ( न ) के बल, धन २ अर्थ हैं ] ॥

१ 'लेख्यं.....लाञ्छनम्' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ।

२ 'न ना खेदेऽपि वेदना' इति बाठान्तरम् ।

१—अथ भार्यापि जनी २ दोषेऽपि लाञ्छनम्' ( ५८ )

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

- ३ कलापो भूषणे बह्वे नूणीरे संहतावपि ।
- ४ परिच्छदे परीवापः पर्युसौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥
- ५ गोधुग्गोष्ठपती गोपौ ६ हरविष्णू वृषाकपी ।
- ७ बाष्पमूढमाश्रु<sup>१</sup> 'कशिपुस्त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥
- ९ तत्पं शय्याऽट्टद्वारेषु १० स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम्<sup>२</sup> ।

१ [ 'जनी' ( स्त्री ) के सीमन्तिनी ( केश-वेशसे युक्त स्त्री ), बहु १ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'लाञ्छनम्' ( न ) के दोष, चिह्न, नाम, ३ अर्थ हैं ] ॥

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

३ 'कलापः' ( पु ) के भूषण ( गहना ), मोरका पंख, तरकस ( बाण रखने के लिये चमड़े आदिकी बना हुई झोली-नूगीर ), संहत ( मिला हुआ ), ४ अर्थ हैं ॥

४ 'परीवापः' ( पु ) के तम्बू कनात आदि, बाज बोना, थाका, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'गोपः' ( पु ) के गौ दुहनेवाला, गोशालाका स्वामी ( ब्रह्मर ), देश या कुलका अध्यक्ष, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वृषाकपिः' ( पु ) के शिवजी, विष्णु भगवान्, अग्नि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कशिपुः' ( पु ) के अन्न, वस्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'तत्पम्' ( न ) के शय्या, अटारी, स्त्री ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विटपः' ( पु न ) के गुच्छा, विस्तार, शाखा, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'कशिपू' इत्यपपाठ' इति क्षा० स्वा० ॥

२. 'अस्त्रियाम्' इत्यस्य 'कशिपु-तत्प' शब्दाभ्यां सम्बन्धर के मा० दी० महे० वचने तु 'कशिपुर्भोज्यवस्त्रयोः' ( अने० संग्रह ३।४७१ ) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'कशिपुर्भोजना-

१ प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥

भेद्यल्लिङ्गा अमीरकूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

३ 'कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमैऽशके' ( ५९ )

इति पान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

४ २ 'रवर्णे पुंसिः रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

५ 'शिफाशिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि ( ६० )

१ 'प्रातरूपः, स्वरूपः, अभिरूपः' ( १ त्रि ) के विद्वान्, मनोहर  
२ अर्थ हैं ॥

२ 'कच्छपी' ( स्त्री ) के सरस्वतीकी वीणा, कछुही, २ अर्थ हैं ॥

३ 'कुतपः' ( पु ) के ऊनी कपड़ा, दिनका आठवाँ हिस्सा,  
२ अर्थ हैं ] ॥

इति पान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

४ 'रेफः' ( पु ) के रेफः अर्थात् 'र' अक्षर, १ अर्थ और 'रेफः' ( त्रि )  
का निन्दित, १ अर्थ हैं ॥

५ 'शिफा' ( स्त्री ) के शिखा, नदी, जटामसी, माता, ४ अर्थ हैं ] ॥

कच्छा—' ( अमि० रत्न० १।१२१ ) इति इलायुषोक्त्या, 'कशिपुर्भक्ताच्छादनयोरेकोक्त्या  
'यक् तयोः पुंसि' ( मेदि० पृ० १०८ श्लो० १८ ) इति मेदिन्युक्त्या च 'कशिपु'शब्दस्य;  
'तत्पमट्टे शय्याकलत्रयोः' ( अने० संग्र० २।२९८ ) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'तत्पमट्टे  
कलत्रे च शयनीये च न द्वयोः' ( मेदि० पृ० १०८ श्लो० ६ ) इति मेदिन्युक्त्या च  
'तत्प' शब्दस्य च पुंस्त्वस्यैव लाभश्चिन्त्ये ॥

१. 'कुतपो.....ऽशके' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्या मूलमात्रं माहेश्वर्या  
मूले चोपलभ्यते ॥

२. 'रवर्णे.....लिङ्गकः' इत्ययमंशः मा० दी० महे० मूले पठित्वा व्याख्यातः, शिफा.....  
कीर्तितः' इत्ययमंशश्च महे० व्याख्याने मूलमात्रं पठ्यते । क्षी० स्वा० व्याख्यायां तु 'रवर्णे  
.....कीर्तितः' इति सर्वोऽप्यंशः मूलमात्रमेव पठ्यते ।

१ शफं मूले तरुणां स्याद्द्रवादीनां खुरेऽपि च ( ६१ )

२ गुम्फः स्याद् गुम्फने बाहोरलङ्कारे च कीर्तितः ( ६२ )

इति फान्ताः शब्दाः ।

अथ वा ( वा ) न्ताः शब्दाः ।

३ अन्तर्गभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ।

४ कम्बुर्ना वलये शङ्खे ५ त्रिजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

६ पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुं बहुत्वेऽपि पूर्वज्ञान् ।

७ चित्रपुङ्खेऽपि कादम्बो ८ नितम्बःऽद्रितटे कटौ ( ६४ )

१ [ 'शफम्' ( न ) के पेड़की जड़, पशुओं का खुर, २ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'गुम्फः' ( पु ) के फूल माला आदिका गूँथना, हाथका भूषण, २ अर्थ हैं ] ॥

इति फान्ताः शब्दाः ।

अथ वा ( वा ) न्ताः शब्दाः ।

३ 'गन्धर्वः' ( पु ) का जन्म और मरणके मध्य समयमें स्थित प्राणी, मृगविशेष, पुंस्कोकिल, घोड़ा, स्वर्गके ( हाहा, हूहू आदि ) गायक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कम्बुः' ( पु ) के बङ्कण, शङ्ख, गज, घोघा या सितुही, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'त्रिजिह्वः' ( पु ) के साँप, जुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥

६ 'पूर्वः' ( त्रि ) का पहला ( जैसे-पूर्वो ग्रामः, पूर्व वनम्, ..... ), १ अर्थ; + 'पूर्वा' ( स्त्री ) पूर्व दिशा, १ अर्थ और 'पूर्वे' ( पु नि० ब० व० ) का पुरुषा ( पुराने वंशवाले, पुरनिभां ), ब्रह्मा, ३ अर्थ हैं ॥

७ [ 'कादम्बः' ( पु ) के चित्र पंखवाला पक्षि-विशेष ( कलहंस ), बाण, २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'नितम्बः' ( पु ) के, पहाड़का किनारा, कटि (चूतड़), २ अर्थ हैं ] ॥

१. बयोः सावर्ण्याद्वान्ता बान्ताश्च शब्दा अत्र उक्ताः ॥

२. 'चित्रपुङ्खेऽपि.....फले' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ॥

१ 'दर्वी' फणापि २ बिम्बोऽस्त्री मण्डले चाकृतौ फले' ( ६४ )

इति वा ( बा ) न्ताः शब्दाः ।



अथ भान्ताः शब्दाः ।

- ३ कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ ४ डिम्भौ तु शिशुवालिशौ ॥ १३४ ॥  
 ५ स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ ६ शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।  
 ७ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा ८ विस्त्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥  
 ९ स्याद्भेर्यो दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।  
 १० स्यान्महारजने क्लीवं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥  
 ११ क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना—

१ [ 'दर्वी' ( स्त्री ) के साँपका फणा, कलछुल, २ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'बिम्बः' ( + बिम्बः । पु न ) के सूर्यार्द्रिका मण्डल, आकृति, प्रतिबिम्ब, बिम्बिका—फल ( कुनरुन, त्रिकोलका फल ), ४ अर्थ हैं ] ॥

इति वा ( बा ) न्ताः शब्दाः ।



अथ भान्ताः शब्दाः ।

'कुम्भः' ( पु ) के घड़ा, हाथीके मस्तकका कुम्भ ( मांस-पिण्ड-विशेष ), कुम्भ नामका ग्यारहवों राशि, वेरया—पात, कुम्भकर्णका पुत्र, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'डिम्भः' ( पु ) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

५ 'स्तम्भः' ( पु ) के खम्भा, जड़ता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'शम्भुः' ( पु ) के ब्रह्मा, शिवजी, पूज्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'गर्भः' ( पु ) के कुक्षि ( कोख ), गर्भमें रहनेवाला बच्चा या गर्भ, बालक, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'विस्त्रम्भः' ( + विस्त्रम्भः । पु ) के शृङ्गार-याचना, विश्वास, २ अर्थ हैं ॥

९ 'दुन्दुभिः' ( पु ) के मेरी बाजा, वरुण, दुन्दुभि नामका दैत्य, ३ अर्थ और 'दुन्दुभिः' ( स्त्री ) का लड़कों का खिलौना—विशेष, १ अर्थ है ॥

१० 'कुसुम्भम्' ( न ) के बरें ( कुसुम ) का फूल, सोना, २ अर्थ और 'कुसुम्भः' ( पु ) का कमण्डलु, १ अर्थ है ॥

११ 'नाभिः' ( पु ) के चत्रिय, जीतनेकी इच्छा करनेवाला या प्रधान

—१ सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ।

२ सभा संसदि सभ्ये च ३ त्रिष्वध्यक्षेऽपि बल्लभः ॥ १३७ ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

४ किरणप्रग्रहौ रश्मौ ५ कपिभेकौ लृचङ्गमौ ।

६ इच्छामनोभवो कामौ ७ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

८ धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।

९ उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाभ्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

राजा, पहियेके बीचवाला भाग, ३ अर्थ और 'नाभिः' ( स्त्री ) करतूरीकामद, १ अर्थ है ॥

१ 'सुरभिः' ( स्त्री ) का गौ, १ अर्थ; 'सुरभिः' ( पु ) के वसन्त ऋतु, जातीफल, चम्पा, ३ अर्थ और 'सुरभिः' ( त्रि ) के सुगंधित, मनोहर, २ अर्थ हैं ॥

२ 'सभा' ( स्त्री ) के सभा ( बैठक, कमेटी ), घूत; मन्दिर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'बल्लभः' ( त्रि ) के अध्यक्ष, प्रिय, हैं ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

४ 'रश्मिः' ( पु ) के किरण, रस्सी २ अर्थ हैं ॥

५ 'लृचवङ्गमः' ( पु ) के वन्दर, मेढक, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कामः' ( पु ) के इच्छा, कामदेव, काम्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'पराक्रमः' ( पु ) के सामर्थ्य, द्योग, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धर्मः' ( पु न ) के पुण्य ( यज्ञ, अहिंसा आदि ), आचार ( जैसे—धर्मशास्त्र, आदि ), स्वभाव, उपक्रम, उपनिषत्, न्याय ( जैसे—धर्माधिकारी, धर्माध्यक्ष, ... ), ६ अर्थ और 'धर्मः' ( पु ) के यमराज, सोमलताका पान करनेवाला, जिन, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उपक्रमः' ( पु ) के उपायको सोचकर किया हुआ आरम्भ, मन्त्रीके शील-परीक्षा करनेका उपाय, चिकित्सा, ३ अर्थ हैं ॥



- १ वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो २ नागरो वणिक् ।  
 नैगमौ <sup>१</sup>द्वौ ३ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥  
 ४ शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः ५ क्रान्तौ च विक्रमः ।  
 ६ स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे ७ जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥  
 ८ <sup>२</sup>उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ।  
 १० गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च ११ जामिः स्वसुकुलस्त्रियोः ॥ १४२ ॥  
 १२ क्षितिक्षान्तयोः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते द्विते त्रिषु ।

१ 'निगमः' ( पु ) के वाणिज्य, पुर ( ग्राम ), वेद, २ अर्थ हैं ॥

२ 'नैगमः' ( त्रि ) के वेद-सम्बन्धी, नगर-वासी, २ अर्थ और 'नैगमः' ( पु ) के उपनिषद्, वनियाँ, २ अर्थ हैं ॥

३ 'रामः' ( पु ) के बलदेवजी ( कृष्णजीके बड़े भाई ), परशुरामजी, रामचन्द्रजी, ३ अर्थ और 'रामः' ( त्रि ) के नीला, सुन्दर, सफेद, बागीचा, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'ग्रामः' ( पु ) के शब्द आदि ( पूर्व ) में रहे तो समूह ( जैसे— शब्दग्रामः, गुणग्राम अर्थात् कमलः शब्द-समूह, गुण-समूह, ... ), गाँव, स्वर-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'विक्रमः' ( पु ) के क्रान्ति ( आक्रमण ), पराक्रम, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'स्तोमः' ( पु ) के स्तोत्र, यज्ञ, समूह, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'जिह्वः' ( पु ) के कुटिल, आलसी, २ अर्थ हैं ॥

८ 'घर्मः' ( पु ) के धूप ( घाम, रौंदा ) पसीना, २ अर्थ हैं ॥

९ 'विभ्रमः' ( पु ) के हाव, भ्रान्ति, शोभा, पद्यका अलङ्कार विशेष, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'गुल्मः' ( पु ) के गुल्म ( प्लीहा या कब्ज ) रोग, कुश, बाल, ढाल आदि का गुच्छा, सेना-विशेष ( १।८।८१ का चक्र ), किला आदिका रक्षास्थान, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'जामिः' ( + यामिः । स्त्री ) के बहन ( भगिनी ), कुलस्त्री, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'क्षमा' ( स्त्री ) के पृथ्वी, माफी, २ अर्थ; 'क्षमम्' ( न ) का योग्य, १ अर्थ और 'क्षमम्' ( त्रि ) के शक्त ( समर्थ ), हित, २ अर्थ हैं ॥

१. 'द्विविति ब्राह्मणस्य नैगमरत्ने निषेधः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'उष्णेऽपि.....विभ्रमः' इति क्षेपकांशः भा० दी० मूलव्याख्ययोनोपलभ्यते ॥

- १ त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ॥ १४३ ॥
- २ ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ।
- ३ सूक्ष्ममध्यात्ममण्याद्ये ४ प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ॥ १४४ ॥
- ५ वामौ वल्गुप्रतीपौ ६ द्वाघधमौ न्यूनकुत्सितौ ।
- ७ जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ॥ १४५ ॥
- ८ 'ध्रमो मूच्छा तक्षभाण्डमजिराम्बुविनिर्गमः ( ६५ )
- ९ ध्यामौ धूम्रास्फुटौ—

१ 'श्यामः' ( त्रि ) के हरित् ( नीला रंग ) वाला, काला रंगवाला, २ अर्थ; 'श्यामः' ( पु ) के काला रंग, नीला रंग, प्रयागका 'अक्षयवट' नामक वटवृक्ष, मेघ, वृद्धदारक ( औषध-विशेष ), पिक, ६ अर्थ; 'श्यामा' ( स्त्री ) के शारिवा ( सरिवन ) नामक ओषधि, रात, सोमलता, गुन्द्रा, यमुना, तिधारा ओषधि, सोलह वर्षकी स्त्री, बिना बच्चा पैदा की हुई स्त्री, ८ अर्थ और 'श्यामम्' ( न ) के मिर्च, समुद्री नमक, २ अर्थ हैं ॥

२ 'लालामम्' ( + ललाम=ललामन् । न ) के पूँछ, घोड़ा आदिके ललाटका चित्र ( चिह्न-विशेष ), घोड़ा, घोड़ेका गहना, पताका, प्रधान, शृङ्ग, रमणीय, प्रभाव, १० अर्थ हैं ॥

३ 'सूक्ष्मम्' ( न ) के अक्षयारम, कपट, २ अर्थ; 'सूक्ष्मः' ( पु ) का अग्नि, १ अर्थ और 'सूक्ष्मः' ( त्रि ) का अत्यन्त महीन या छोटा, १ अर्थ है ॥

४ 'प्रथमः' ( त्रि ) के पहला, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वामः' ( त्रि ) के सुन्दर, प्रतिकूल, शिवजी, पयोधर, बायां, शत्रु, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'अधमः' ( त्रि ) के थोड़ा, नीच ( निन्दित ), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'यातयामम्' ( त्रि ) के पुराना, उपभोग किया हुआ ( जूठा या खासी ), २ अर्थ हैं ॥

८ 'ध्रमः' ( पु ) के मूच्छा ( बेहोशी ), तक्षभाण्ड, जलका निर्गम, ३ अर्थ हैं ] ॥

९ 'ध्यामः' ( पु ) के धुआँ, अस्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

—१ भीमा रुद्रभीषणपाण्डवाः' ( ६६ )

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

- २ तुरङ्गगरुडौ ताक्ष्यौ ३ निलयापचयौ क्षयौ ।  
 ४ श्वशुर्यौ देवरश्यालौ ५ भ्रातृभ्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥ १४६ ॥  
 ६ पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ ७ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ।  
 ८ तिष्यः पुष्ये कलियुगे ९ पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥ १४७ ॥  
 १० प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ।  
 रन्ध्रे शब्दे—

१ [ 'भीमः' ( पु ) के शिवजी, भयङ्कर, भीमसेन ( युधिष्ठिरका भाई ),  
 अमलवैत ४ अर्थ हैं ] ॥

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

- २ 'ताक्ष्यः' ( पु ) के घोडा, गरुड, सर्प, गरुडका बड़ा भाई, ४ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'क्षयः' ( पु ) के घर, कमी ( नाश ), कल्पान्त, रोग-विशेष,  
 ४ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'श्वशुर्यः' ( पु ) के देवर ( पतिका छोटा भाई ), शाला ( स्त्रीका  
 भाई ), २ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'भ्रातृभ्यः' ( पु ) के भाईका लड़का, शत्रु, २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'पर्जन्यः' ( पु ) के गर्जता हुआ मेघ, इन्द्र, मेघका गर्जना,  
 ३ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'अर्यः' ( पु ) के स्वामी, वैश्य, २ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'तिष्यः' ( पु ) के पुष्य नामका आठवां नक्षत्र, कलियुग, २ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'पर्यायः' ( पु ) के अवसर, सिलसिला ( क्रम ), प्रकार, निर्माण,  
 ४ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रत्ययः' ( पु ) के अधीन, शपथ ( कसम ), ज्ञान, विश्वास, कारण,  
 आचार, प्रसिद्ध, छिद्र, प्रत्यय ( जैसे—सन्, क्यच्, काभ्यच्, तिप्, तस्,  
 क्षि, सु, औट्, जस्, ..... ), २ अर्थ हैं ॥

—१ अथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥ १४८ ॥

२ स्थूलोच्चस्त्वसाकल्ये बागानां मध्यमे गते ।

३ समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥ १४९ ॥

४ व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ।

५ अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यध्यापदि ॥ १५० ॥

युद्धायत्योः संपरायः ७ पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ।

८ पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च सन्नयौ ॥ १५१ ॥

९ संघाते सन्निवेशे च संस्त्यायः १० प्रणयास्त्वमी ।

‘विश्रम्भयाच्चाप्रेमाणो ११ विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥ १५२ ॥

१२ विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ।

१ ‘अनुशयः’ ( पु ) के बड़ा द्वेष, पछतावा, २ अर्थ हैं ॥

२ ‘स्थूलोच्चयः’ ( पु ) के असंपूर्णता, हाथियोंका मध्यम ( न बहुत कम न बहुत अधिक ) गतिसे चलना, पहाड़का बड़ा ढोका ( चट्टान ), ३ अर्थ हैं ॥

३ ‘समयः’ ( पु ) के शपथ, आचार, काल, सिद्धान्त, भाषा, बुद्धि, निर्देश, संकेत, ८ अर्थ हैं ॥

४ ‘अनयः’ ( पु ) के जुआ आदि खेलनेकी बुरी आदत, दुर्भाग्य, विपत्ति, अन्याय, ४ अर्थ हैं ॥

५ ‘अत्ययः’ ( पु ) के उल्लङ्घन, कष्ट, दोष, दण्ड, बड़ा उत्पात, ५ अर्थ हैं ॥

६ ‘संपरायः’ ( पु ) के युद्ध, आपत्ति, उत्तर काल, ३ अर्थ हैं ॥

७ ‘पूज्यः’ ( पु ) के श्वशुर, पूजा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

८ ‘सन्नयः’ ( पु ) के सेनाके पीछे रहनेवाली सेना, समूह, २ अर्थ हैं ॥

९ ‘संस्त्यायः’ ( पु ) के समूह, स्थान-विशेष, विस्तार ३ अर्थ हैं ॥

१० ‘प्रणयः’ ( पु ) के विश्वास, याचना, प्रेम, परिचय, ४ अर्थ हैं ॥

११ ‘समुच्छ्रयः’ ( पु ) के विरोध, ऊँचाई, २ अर्थ हैं ॥

१२ ‘विषयः’ ( पु ) के देश, स्थान, शब्द आदि ( स्पर्श, रूप, रस, गन्ध । इनमें कानका शब्द, त्वचाका स्पर्श, नेत्रका रूप, जिह्वाका रस और नाक का गन्ध विषय है ), ३ अर्थ हैं ॥

१. ‘विश्रम्भयाच्चाप्रेमाणः’ इति पाठान्तरम् ॥

- १ निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री २ सभायां च प्रतिश्रयः ॥ १५२ ॥  
 ३ प्रायो भूम्यन्तगमने ४ मन्युर्दैन्ये क्रतौ कृधि ।  
 ५ रहस्योपस्थयोर्गुह्यं ६ सत्यं शपथतथ्ययोः ॥ १५४ ॥  
 ७ वीर्यं बले प्रभावे च ८ द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ।  
 ९ धिषण्यं स्थाने गृहे मेऽग्नौ १० भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥ १५५ ॥  
 ११ 'कशेरुह्मनोर्गाङ्गेयं' १२ विशल्या दन्तिकाऽपि च ।

- १ 'कषायः' ( पुनः ) के काड़ा, कषाय (कसाव) रस, गेरुआ रंग, ३ अर्थ हैं ॥  
 २ 'प्रतिश्रयः' ( पु ) के सभा, आश्रय, २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'प्रायः' ( पु ) के अधिकतर, अन्तिम यात्रा ( मरना, जैसे 'प्रायोपवेशः कृतः' अर्थात् मर गया, ..... ), अनशन (भोजन-त्याग करना), तुल्य ४ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'मन्युः' ( पु ) के दीनता, यज्ञ, क्लोष, ३ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'गुह्यम्' ( न ) के रहस्य, उपस्थ ( योनि, लिङ्ग ), २ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'सत्यम्' ( न ) के कसम ( शपथ ), सत्य, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'वीर्यम्' ( न ) के बल, प्रभाव, तेज, शुक (पुरुषका धातु), ४ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'द्रव्यम्' ( न ) के भव्य ( योग्य ), गुणाश्रय ( गन्ध आदि गुणका आश्रय-पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन, ये ९ द्रव्य ), धन, विलेप, ओषधि, ५ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'धिषण्यम्' ( न ) के स्थान, गृह, नक्षत्र, अग्नि, शक्ति, ५ अर्थ हैं ।  
 ( श्री० स्वा० के मतमें अग्नि अर्थ में 'धिषण्यः' ( पु ) है ) ॥  
 १० 'भाग्यम्' ( न ) के पूर्व जन्मका किया हुआ शुभ या अशुभ कर्म, ऐश्वर्य, २ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'गाङ्गेयम्' ( न ) के कशेरु, सुवर्ण, २ अर्थ और 'गाङ्गेयः' ( पु ) का भीष्म पित्तामङ्ग, १ अर्थ है ॥  
 १२ 'विशल्या' ( स्त्री ) के दन्ती ( ओषधि-विशेष ), आगकी लपट, गुडुच, त्रिपुटा ओषधि, ४ अर्थ हैं ॥

१. 'कशेरुह्मनोर्गाङ्गेयं' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तमत्रमट्टेन तर्कसङ्ग्रहे—'तत्र द्रव्याणि पृथिव्येतेजोवाय्वाकाशकालदिगात्मन-  
 नांसि नवैव' इति ॥

- १ वृषाकपायी श्रीगौर्यो २ रभिख्या नामशोभयोः ॥ १५६ ॥
- ३ आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।  
उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ १५७ ॥
- ४ छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ।
- ५ कक्ष्या प्रकाष्ठे हर्म्यादेः काञ्चर्या मध्येभवन्धने ॥ १५८ ॥
- ६ कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु मेघे धनादिभिः ।
- ७ जन्यं स्याज्जनवादेऽपि ८ 'जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥ १५९ ॥
- ९ 'गृह्याधीनौ च वक्तव्यौ १० कल्यौ सज्जनिरामयौ ।

१ 'वृषाकपायी' ( स्त्री ) के लक्ष्मीजी, पार्वतीजी, जीवन्ती नामका ओषधि-विशेष, सतावर, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'रभिख्या' ( स्त्री ) के नाम, शोभा, यश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'क्रिया' ( स्त्री ) के कार्य, निष्कृति ( प्रार्थश्चित्त ), शिक्षा, पूजा, विचार, साम आदि ( दान, दण्ड, विभेद ) चार उपाय, काम, चेष्टा, रोग आदि-की चिकित्सा, ९ अर्थ हैं ॥

४ 'छाया' ( स्त्री ) के सूर्यकी स्त्री, शोभा, प्रतिबिम्ब, छाँह, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'कक्ष्या' ( स्त्री ) के राजगृह आदिकी छ्योड़ी, करधनी ( स्त्रियोंके कमरका भूषण ), हाथियोंका हौदा, गदा आदि कसनेकी डोरी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'कृत्या' ( स्त्री ) के क्रिया, देवता-विशेष ( 'मारी' नागक ), २ अर्थ और 'कृत्या' ( त्रि ) के धन स्त्री भूमि आदिसे शत्रुका भेद्य ( फोड़ने योग्य ) रूप आदि, कार्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'जन्यः' ( पु । + न ) के जनापवाद, उत्पात, युद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'जघन्यः' ( त्रि ) के अन्त ( + अन्त्य ), नीच, निन्दित, शिरन ( लिङ्ग ), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वक्तव्यः' ( त्रि ) के निन्दित, हीन ( + वश ), कहने योग्य, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'कल्यः' ( त्रि ) के उपाय-युक्त ( तयार, सजा हुआ ), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥

- १ 'आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ' २ पुण्यं तु चार्चयि ॥ १६० ॥  
 ३ रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि ४ वदान्यो वल्गुवागपि ।  
 ५ न्याय्येऽपि मध्यं ६ सौम्यं तु सुन्दरे सोमदेवते ॥ १६१ ॥  
 ७ 'सर्वज्ञभिषजौ वैद्यः ८ वात्मा कामश्च हृच्छयौ' ( ६७ )  
 ९ फलकल्याणयोर्भग्यं १० योग्यं सांप्रतिके त्रिषु ( ६८ )  
 ११ क्रियाचारातिक्रमेऽपि १२ जलाधारेऽपि चाशयः ( ६९ )

१ 'अर्थ्यः' ( त्रि ) के बुद्धिमान् ( + धार्मिक ), अर्थसे युक्त, न्यायसे युक्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'पुण्यम्' ( त्रि ) के मनोहर, पवित्र, १ अर्थ और 'पुण्यम्' ( न ) के सुकृत, धर्म, २ अर्थ हैं ॥

३ 'रूप्यम्' ( त्रि ) का सुन्दर रूपवाला, १ अर्थ और 'रूप्यम्' ( न ) के सोनेका सिक्का ( अक्षरफाँ, गिज्जो आदि ), चाँदीका सिक्का ( रूपया, अठन्नी आदि ), २ अर्थ हैं ॥

४ 'वदान्यः' ( + वदन्यः । त्रि ) के मधुर बोलनेवाला, बहुत दान देनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मध्यम्' ( त्रि ) के न्याय्य ( न्यायसे युक्त ), कमर, बीच, अधम, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'सौम्यम्' ( त्रि ) के सुन्दर, उग्रताहीन, सोम देवतावाला हविष्य आदि, ३ अर्थ और 'सौम्यः' ( पु ) का बुब नामका ग्रह, १ अर्थ है ॥

[ 'वैद्यः' ( पु ) के सर्वज्ञ ( सब कुछ जाननेवाला अर्थात् पण्डित ), भिषक ( दवा करनेवाला वैद्य, डाक्टर, हकीम आदि ), २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'हृच्छयः' ( पु ) के आत्मा, कामदेव, २ अर्थ हैं ] !

९ [ 'भग्यम्' ( न ) के फल, कल्याण, २ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'योग्यम्' ( त्रि ) के योगार्ह, श्चित्त, निपुण, समर्थ, ४ अर्थ 'योग्यः' ( पु ) के पुष्प नक्षत्र, १ और 'योग्यम्' ( न ) का ऋद्धि औषध, १ अर्थ है ॥

११ 'क्रिया' ( स्त्री ) के आचारातिक्रम, आरम्भ, आदि ( ३३।१५९ में उक्त ) १० अर्थ हैं ] ॥

१२ [ 'आशयः' ( पुं ) के जलाधार, अभिप्राय, कटहल ३ अर्थ हैं ] ॥

१. 'अन्नवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सर्वज्ञभिषजौ.....सरित्' इति क्षेपकांशः महेश्वरव्याख्यायां, दुर्गावचनत्वेन क्षी० स्वा० व्याख्यायाश्चोपलभ्यत इति प्रकृतोत्सोगितया क्षेपकात्वेन मूले निहितः ॥

- १ दैत्याचार्येऽपि धिष्ण्यो ना २ काषायः सुरभावपि ( ७० )
- ३ चन्द्रोदयो वितानेऽपि ४ स्यादाम्नायोऽन्वये श्रुतौ ( ७१ )
- ५ शीताशिते शिते शैत्यं ६ जात्यं कुलजकान्तयोः ( ७२ )
- ७ व्यवायो व्यवधौ च स्यात् ८ कुल्या कुलवधूः सरिद् ( ७३ )

इति यान्ताः शब्दाः ।



अथ रान्ताः शब्दाः ।

- ९ निवहावसरौ वारौ १० संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
- ११ गुरु गोर्पतिपित्राद्यौ १२ द्वापरौ युगसंशयौ ॥ १६२ ॥

१ [ 'धिष्ण्यः' ( पु ) के शुक्र, अग्नि, २ अर्थ और 'धिष्ण्यम्' ( न ) के स्थान, नम्रत्र, घर, बल, ४ अर्थ हैं ] ॥

२ [ 'काषायाः' ( पु ) के सुगन्धि, कसाव रस, २ अर्थ हैं ] ॥

३ [ 'चन्द्रोदयः' ( पु ) के वितान ( चँदोवा ), चन्द्रमाका उदय, चन्द्रोदय रस ( औषध-विशेष ), ३ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'आम्नायः' ( पु ) के ( वंश, खान्दान ), वेद, उपदेश, अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'शैत्यम्' ( न ) के ठंडक, दौर्बल्य, तीक्ष्णता, ३ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'जात्यम्' ( न ) के कुलीन, सुन्दर, २ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'व्यवायः' ( पु ) के व्यवधान, मैथुन, २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'कुल्या' ( स्त्री ) के कुलवधू, छोटी नदी ( नहर ), २ अर्थ हैं ] ॥

इति यान्ताः शब्दाः ।



अथ रान्ताः शब्दाः ।

९ 'वारः' ( पु ) के समूह, अवसर, सूर्य, चन्द्र, मङ्गल आदि सात दिन, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'संस्तरः' ( पु ) के शय्या या कुशादिकी चटाई आदि, यज्ञ २ अर्थ हैं ॥

११ 'गुरुः' ( पु ) बृहस्पति, पिता आदि ( माता, बड़ा भाई आदि-बड़े लोग पढ़ाने वाला ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'द्वापरः' ( पु ) के द्वापर युग, संशय, १ अर्थ हैं ॥



- १ प्रकारौ भेदसादृश्ये २ आकारविक्रिताकृती ।  
 ३ किंशाक 'सस्यशूकेषु ४ मरु धन्वधराधरौ ॥ १६३ ॥  
 ५ अद्रयो द्रुमशैलाकारः ६ स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ।  
 ७ ध्वान्तारिदानवा वृत्रा ८ बलिहस्तांशवः कराः ॥ १६४ ॥  
 ९ प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणा १० अस्त्राः कचा अपि ।  
 ११ अजातशत्रुः गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना न तूबरौ ॥ १६५ ॥  
 १२ स्वर्णेऽपि राः १३ परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ।

- १ 'प्रकारः' ( पु ) के भेद ( तरह ), सादृश्य ( बराबरी ), २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'आकारः' ( पु ) के चेष्टा, भाकृति (आकार, डीलडौल), २ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'किंशाकः' ( पु ) के कान आदि (यव आदि) का टूट, बाण २ अर्थ हैं ॥  
 ४ 'मरु' ( पु ) के मरुस्थल ( राजपुताने के निर्जल स्थान ), पहाड़,  
 २ अर्थ हैं ॥  
 ५ 'अद्रिः' ( पु ) के पेड़, पहाड़, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'पयोधरः' ( पु ) के स्त्रीका स्तन, मेघ, कोषकार, कशेरु, नारियल,  
 ५ अर्थ हैं ।  
 ७ 'वृत्राः' ( पु ) के अन्धकार, शत्रु, वृत्रासुर, पर्वत-भेद, ४ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'करः' ( पु ) के कर (मालगुजारी, टैक्स, कौड़ी, आदि ), हाथ, किरण,  
 हाथी का सुदं, ४ अर्थ हैं ॥  
 ९ 'प्रदरः' ( पु ) के भङ्ग, स्त्रीका-रोग-विशेष, बाण ३ अर्थ हैं ॥  
 १० 'अस्त्राः' ( पु ) के केश, कोण, २ अर्थ और 'अस्त्रम्' ( न ) के आंसू  
 खून, २ अर्थ हैं ॥  
 ११ 'तूबरः' ( + तूवरः । पु ) के भूँड़ ( समय आने पर भी सींग )  
 जिसका नहीं जमा हो वह ) गौ, समय ( अवस्था ) आनेपर भी दाढ़ी-मूँड़  
 जिसका नहीं जमा हो वह पुरुष, कसाव रस, ३ अर्थ हैं ॥  
 १२ 'राः' ( = रै पु ) के स्वर्ण ( सोना ), धन, २ अर्थ हैं ॥  
 १३ 'परिकरः' ( पु ) के पर्यङ्क, परिवार, मन्त्री आदि परिजन, समूह,  
 विवेक, आरम्भ, धरन, ७ अर्थ हैं ॥

१. 'धान्यशूकेषु' इति पाठान्तरम् ॥

- १ मुक्ताशुद्धौ च तारः स्यात्स्वच्छारो वायौ स तु त्रिषु ॥ १६६ ॥  
कंबुरेऽथ प्रतिष्ठाऽऽजिसंविदापरसु संगरः ।
- ४ वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो ५ मित्रो रवावपि ॥ १६७ ॥
- ३ मन्त्रेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुऽर्गुहोऽप्यवस्करः ।
- ८ आढम्बरस्तूर्यारवे गजेन्द्राणां च गजिते ॥ १६८ ॥
- ६ 'अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ।
- १० स्याज्जक्रमे परीवारः खड्गकोऽपरिच्छदे ॥ १६९ ॥

१ 'तारः' ( पु ) के मुक्ताशुद्धि, निर्मल मोती, नैरना, वानर-भेद.  
४ अर्थ; 'तारम्' ( न स्त्री ) के लक्ष्म, अँखिको पुतला, २ अर्थ; 'तारम्' ( न ) का चौरवी, १ अर्थ; + 'तारा' ( स्त्री ) के बुद्धदेवी, पालि ( सुधीवके भाई ) का स्त्री, बृहस्पतिकी स्त्री, ३ अर्थ और 'तारम्' ( त्रि ) का ऊँचा शब्द, १ अर्थ है ।

२ 'शारः' ( पु ) का वायु, १ अर्थ और 'शारः' ( त्रि ) का चितकावर, १ अर्थ है ॥

३ 'संगरः' ( पु ) के प्रण, युद्ध, क्रियाकार, आपत्ति, विष, ५ अर्थ और 'संगरम्' ( न ) का शमोक्छ, १ अर्थ है ।

४ 'मन्त्रः' ( पु ) के वेद-भेद ( मन्त्र ), सलाह, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मित्रः' ( पु ) का सूर्य, १ अर्थ और 'मित्रम्' ( न ) का दोस्त, १ अर्थ है ॥

६ 'स्वरुः' ( पु ) के यज्ञ-स्तम्भको छीलते समय पहली बार गिरा हुआ काष्ठ-खण्ड, इन्द्रका वज्र, २ अर्थ ( स्त्री० स्वा० मतसे-यज्ञ, बाण, यज्ञ स्तम्भ, खण्ड, वज्र, ५ अर्थ ) हैं ॥

७ 'अवस्करः' ( पु ) के उपस्थ ( भग, लिङ्ग ), विष्टा, २ अर्थ हैं ।

८ 'आढम्बरः' ( पु ) के राजाका शब्द, हाथियोंका गर्जना, समारम्भ ( आढम्बर ), ३ अर्थ हैं ॥

९ 'अभिहारः' ( पु ) के अभियोग, चोरी, कवच आदिको धारण करना, ३ अर्थ हैं ।

१० 'परीवारः' ( पु ) के परिजन ( कुटुम्ब, भृत्य आदि ), तलवारकी म्यान, उपकरण ( सहायक सामग्री ), ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अभिहारो....च' इत्यंशः स्त्री० स्वा० अभ्याख्यातः, (२) इदृकोष्ठान्तर्गतश्च मूलमात्र-मेवोपलभ्यते ।

- १ विष्टरो विटपी वर्धमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ।  
 २ द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ॥ १७० ॥  
 ३ विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु ।  
 ४ सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीवं वरे त्रिषु ॥ १७१ ॥  
 ५ दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ।  
 ६ महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुन्नपुंसकम् ॥ १७२ ॥  
 ७ मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ।  
 ८ देवाद्भृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक्प्रिये ॥ १७३ ॥

१ 'विष्टरः' ( पु ) के पेड़, कुशाकी मुट्टी ( जिसमें २५ कुशा हों ), पीड़ा ( पाटा ) मृगचर्म आदि आसन, ३ अर्थ हैं ।

२ 'प्रतीहारः' ( पु ) के द्वार, द्वारपाल, २ अर्थ और 'प्रतीहारी' ( स्त्री ) का द्वारपालिका, १ अर्थ है ॥

३ 'बभ्रुः' ( पु ) के बड़ा, नेवला, विष्णु, मुनि, ३ अर्थ और 'बभ्रुः' ( त्रि ) के पिङ्गल वर्णवाला ( भूभर ), अग्नि, शूला, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'सारः' ( पु ) के बल, स्थिरांश, ( सारिल लकड़ी आदि ), २ अर्थ, 'सारम्' ( न ) का न्याययुक्त, १ अर्थ और 'सारः' ( त्रि ) का उत्तम, १ अर्थ है ॥

५ 'दुरोदरः' ( + दुरोदरः । पु ) के द्यूतकार ( नालदार अर्थात् जुआ खेलानेवाला ), दाव, २ अर्थ और 'दुरोदरम्' ( न ) का जुआ, १ अर्थ है ॥

६ 'कान्तारः' ( पु न ) के बड़ा जङ्गल, कठिन रास्ता, बिल, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मत्सरः' ( पु ) का दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करना, १ अर्थ और 'मत्सरः' ( त्रि ) के दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करनेवाला, कृपण, २ अर्थ हैं ॥

८ 'वरः' ( पु ) के वरदान ( देवता आदिसे प्राप्त अभीप्सित फल ), दामाद, विट, ३ अर्थ; 'वरः' ( त्रि ) का श्रेष्ठ, १ अर्थ और 'वरम्' ( न । + अव्य० वी० ) का थोड़ा प्रिय ( जैसे—'वरं कृपशताद्वापी, .....' ), १ अर्थ है ॥

१. 'विष्टरप्रमाणं यथा—'भवेत्पञ्चाशता ब्रह्मा तदद्वेन तु विष्टरः' । इति ।

१ वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तदभेदे घटे च ना ।

२ ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥ १७४ ॥

३ यमानिलेन्द्रचन्द्रकविष्णुसिंहाशुवाजिषु ।

शुकाहिकपिभेकेषु हारर्ना कपिले त्रिषु ॥ १७५ ॥

४ शर्करा कर्परांशोऽपि ५ यात्रा स्याद्यापने गतो ।

६ इरा भूवाक्सुराण्युभयात् ७ तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १७६ ॥

८ धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि ।

९ क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरथा कण्टकारिका ॥ १७७ ॥

१ 'करीरः' ( पु न ) का बौसका कौपद ( अङ्कुर ), १ अर्थ और 'करीरः' ( पु ) के करील पेड़ ( इसमें पत्ते नहीं होते हैं ), घड़ा, २ अर्थ हैं ॥

२ 'प्रतिसरः' ( पु ) के सेनाका पिछला हिस्सा, मन्त्र-भेद, माला, कङ्कण, ४ अर्थ; 'प्रतिसरः' ( पु न ) के मण्डल, विवाह-कालमें हाथमें बँधा हुआ कङ्कण (माङ्गलिक सूत्र-विशेष) या राखी, २ अर्थ और 'प्रतिसरः' ( त्रि ) का निषाज्य ( भृत्यादि ), १ अर्थ है ॥

३ 'हरिः' ( पु ) के यमराज, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता ( सुग्गा ) साँप, वानर, मण्डूक ( मेढक ), लोकान्तर ( परलोक ), १४ अर्थ और 'हरिः' ( त्रि ) के हरा रंग, कपिल रंग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'शर्करा' ( स्त्री ) के छोटे २ कङ्कण या शिकरा, शक्कर, रोग-विशेष, डुकड़ा, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'यात्रा' ( स्त्री ) के समय बिताना ( + भोजनादि विधान, जैसे— प्राणयात्रा, ..... ), चलना, देव-दर्शन आदि करना, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'इरा' ( स्त्री ) के पृथ्वी, बात ( वचन ), मदिरा, जल, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'तन्द्रा' ( + तन्द्रा । स्त्री ) के नींद, भ्रमादिसे इन्द्रियोंका अपने-अपने काममें शिथिल होना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धात्री' ( स्त्री ) के धाई, पृथ्वी, अँवला, माता ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षुद्रा' ( स्त्री ) के किसी अङ्गसे हीन स्त्री, नटी, वेश्या, मधुमक्खी,

- त्रिषु करेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं १ मात्रा परिच्छदे ।  
 अल्पे च परिमाणे सा मात्रा कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥ १७८ ॥  
 २ आलेख्याभ्यर्थयोश्चित्रं ३ कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।  
 ४ योग्यभाजनयोः पात्रं ५ पन्नं वाहनपक्षयोः ॥ १७९ ॥  
 ६ निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं ७ शास्त्रमायुधलोहयोः ।  
 ८ स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं ९ क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥ १८० ॥  
 १० मुख्राग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं—

मष्टकटैया ( रँगनी ), ५ अर्थ और 'क्षुद्रः' ( त्रि ) के क्रूर, गर्राब ( मिधन ), मौख, ३ अर्थ हैं ॥

१ 'मात्रा' ( की ) के परिच्छद या सामग्री ( जैसे—महामात्रः, ... ), थोड़ा, परिमाण, अक्षरके अवयव ( हकार, ईकार, उकार, ... ), कानका भूषण-विशेष, ५ अर्थ और 'मात्रम्' ( न ) के साकरण ( जैसे—हस्तमात्रं वस्त्रम्, ... ), अवधारण ( केवल, जैसे—पयोमात्रमस्ति, ... ), २ अर्थ हैं ॥

२ 'चित्रम्' ( न ) के फोटो ( तस्वीर ), आभरण, चितकाबर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'कलत्रम्' ( न ) के कमर, छाँ, २ अर्थ हैं ॥

४ 'पात्रम्' ( न ) के योग्य ( जैसे—पात्रे दानं कर्तव्यम्, ... ), वर्तन, दो तटों-का बीच, सुवा-चरु आदि, राजमन्त्री, पत्ता, नाटक करनेवाला ( एक्टर ), ७ अर्थ हैं ॥

५ 'पन्नम्' ( न ) के वाहन ( घोड़ा, हाथी, उँट आदि सवारी ), पकड़, पत्ता, बाण. पक्षी, ५ अर्थ हैं ॥

६ 'शास्त्रम्' ( न ) के आदेश, व्याकरण आदि ६ शास्त्र, २ अर्थ हैं ॥

७ 'शस्त्रम्' ( न ) के हथियार, लोहा, २ अर्थ हैं ॥

८ 'नेत्रम्' ( न ) के पेचकी सोर ( जड़ ), वस्त्र, मयनीकी रहसी, अँख, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षेत्रम्' ( न ) के छाँ, शरीर, खेत, सिद्ध-मुनि आदिको स्थान ४ अर्थ हैं ॥

१० 'पोत्रम्' ( न ) के सूरका मुख, हकका मुख ( अगला भाग ), वस्त्र. ६ अर्थ हैं ॥

१. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णेनार्जुने प्रति—

'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमिदमिषीयते' । गीता १३ १ ॥

—१ गोत्रं तु ताम्रि च ।

२ सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ॥ १८१ ॥

३ अजिरं विषये कायेऽप्यग्भरं व्योम्नि वाससि ।

४ चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षेत्रे मोक्षेऽपि क्षीरमाप्नुव ॥ १८२ ॥

८ स्वर्णेऽपि भूविचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ।

१० गुहादम्भौ गह्वरे द्वे ११ रद्योऽन्तिकमुत्तरे ॥ १८३ ॥

१ 'गोत्रम्' ( न ) के नाम, गोत्र ( वंश, कुल ), संभावनाके योग्य बंध, जङ्गल, क्षेत्र, रास्ता, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सत्रम्' ( न ) के आच्छादन ( ढँकना ), यज्ञ, सर्वदा दान करना, जङ्गल, दम्भ, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'अजिरम्' ( न ) के विषय ( रूप, रस, गन्ध आदि ), शरीर, आँगन ( चौक ), हवा, मेढक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'अग्भरम्' ( न ) के आकाश, कपड़ा, २ अर्थ हैं ॥

'चक्रम्' ( न ) के राज्य, सेना, पहिया, आयुध-विशेष, समूह, कुम्भारका चाक, पानीकी भौरी, ७ अर्थ और 'चक्रः' ( पु ) का चकवा पत्ती, १ अर्थ है ॥

६ 'अक्षरम्' ( न ) के मोक्ष, परब्रह्म, वर्ण ( क ख ग घ आदि वर्ण, किसी भी भाषाके अक्षर ), आकाश, धर्म, तप, मूल कारण, चिचिदा (अपामार्ग), ८ अर्थ हैं ॥

७ 'क्षीरम्' ( न ) के पानी, दूध, २ अर्थ हैं ॥

८ 'भूरि' ( न ) का सोना १ अर्थः 'भूरि' ( पु ) के कृष्णजी, शिवजी, ब्रह्मा, ३ अर्थ और 'भूरि' ( त्रि ) का अधिक (काफी), १ अर्थ तथा 'चन्द्रः' ( पु ) के सोना, चन्द्रमा, सुन्दर, कबीला (औषध-विशेष), पानी, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'गोपुरम्' ( न ) के द्वारमात्र, नगरका द्वार, मोथा, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'गह्वरम्' ( न ) के गुफा, दम्भ, निकुञ्ज, गहन, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'उपह्वरम्' ( न ) के एकान्त, समीप, २ अर्थ हैं ॥

- १ पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्य २ नगरे नगरे पुरम् ।  
 मन्दिरं चाप्य राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥ १८४ ॥  
 ४ द्रोऽस्त्रियां भये श्वस्त्रे ५ वज्रोऽस्त्री हीरके पर्वौ ।  
 ६ तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छेदे ॥ १८५ ॥  
 ७ 'औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ।  
 ८ पुष्करं करिद्विस्तात्रे बाधभाण्डमुखे जले १८६ ॥  
 व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ।  
 ९ अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तधिभेदादर्थ्ये ॥ १८७ ॥

१ 'अग्रम्' ( न ) के आगे ( सामने ), एक पल ( ४ भरी ) का प्रमाण-विशेष, ऊपर, आलम्बन, समूह, प्रान्त, ६ अर्थ और 'अग्रम्' ( त्रि ) के अधिक-प्रधान, पहला, ६ अर्थ हैं ।

२ 'पुरम्' ( न ) के घर, नगर ( शहर, बड़ा ग्राम ), २ अर्थ और 'पुरः' ( पु ) के गुगुल, १ अर्थ तथा 'मन्दिरम्' ( न ) के घर, नगर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'राष्ट्रः' ( पु न ) के देश, उपद्रव, २ अर्थ हैं ॥

४ 'द्रोः' ( पु न ) के डर, गढा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वज्रः' ( पु न ) के हीरा, वज्र ( इन्द्रका आयुध-विशेष ), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तन्त्रम्' ( न ) के प्रधान, सिद्धान्त, जुलाहा ( कपड़ा बुननेवाली जाति-विशेष ), सामग्री, वेदकी एक शाखा, कारण, उत्तम औषध, ७ अर्थ हैं ॥

७ 'औशीरः' ( पु । + न० स्त्री० स्वा० ), का चँवरका दण्ड, १ अर्थ; 'औशीरम्' ( न ) के शयन, आसन ( + शयन और आसन दोनोंका समुदाय स्त्री० स्वा० ), उशीर ( खस ) से उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पुष्करम्' ( न ) के हाथीकी सूँडका आगेवाला हिस्सा, बाजाके भाण्डका मुख, पानी, आकाश, तलवारका फल, कमल, 'पुष्कर क्षेत्र' नामक तीर्थ विशेष, पुष्करमूल औषध, ८ अर्थ हैं ॥

९ 'अन्तरम्' ( न ) के अवकाश ( खाली ), अवधि, पहिरनेका कपड़ा आदि, अन्तर्धान ( छिपना ), भेद ( फरक ), तादर्थ्य ( उसके लिये, जैसे—

छिद्रात्प्रीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ।

- १ मुस्तेऽपि पिठरं २ राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥ १८८ ॥
- ३ शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेषुलिङ्गकम् ।
- ४ गौराऽरुणे सिते पीते ५ व्रणकार्येऽप्यरुकरः ॥ १८९ ॥
- ६ जठरः कठिनेऽपि स्या ७ दधस्तादपि चाधरः ।
- ८ अनाकुलेऽपि चैकाग्रो ९ व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥ १९० ॥

ओदनान्तरात्पण्डुलः अर्थात् भातके लिये चावल है, ..... ) छिद्र, आरम्य (अपना), विना, बाहर, अवसर, बीच, अन्तरात्मा, सादर्य, अन्य, १५ अर्थ हैं ॥

१ 'पिठरम्' ( न ) के मोथा चावल, स्थाली ( बटलोनी ), मथनी ३ अर्थ हैं ॥

२ 'नागरम्' ( न ) के सोंठ, नागरमोथा, २ अर्थ और 'नागरः' (त्रि) के नगरवासी या नगरमें होनेवाला, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शार्वरम्' ( न ) का घोर अन्धकार १ अर्थ; 'शार्वरम्' ( त्रि ) का घातुक, १ अर्थ और 'शार्वरः' ( पु ) का घातुक हाथी, १ अर्थ है ॥

४ 'गौरः' ( त्रि ) के अरुण, सफेद ( गोर ), पीला, विशुद्ध, ४ अर्थ; 'गौरः' ( पु ) के पीला सरसों, चन्द्रमा, २ अर्थ और 'गौरः' ( पु न ) का पयकेसर, १ अर्थ है ॥

५ 'अरुकरः' ( पु ) का 'भेलावा' नामकी ओषधि, १ अर्थ और 'अरुकरः' ( त्रि ) का घाव करनेवाला, १ अर्थ है ॥

६ 'जठरः' ( त्रि ) का कठोर, १ अर्थ; 'जठरः' ( पु न ) का पेट, १ अर्थ और 'जठरः' ( पु ) का बूढ़ा, १ अर्थ है ॥

७ 'अधरः' (त्रि) के नीचे, हीन, २ अर्थ और 'अधरः' ( पु ) का ओठ, १ अर्थ है ॥

८ 'एकाग्रः' ( त्रि ) के अनाकुल ( स्वस्थ ), एकान्त, २ अर्थ हैं ॥

९ 'व्यग्रः' ( त्रि ) के अनेक कार्योंमें फँसा हुआ ( चञ्चल ), व्याकुल, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'घातुके भेषुलिङ्गकम्' इति पाठान्तरम् । २. 'व्रणकार्येऽप्यरुकरः' इति पाठान्तरम् ।



- १ उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वुत्तरः स्याद २ उत्तरः ।  
 एषां त्रिपर्यये श्रेष्ठे ३ दूरानात्मोत्तमाः पगाः ॥ १२१ ॥  
 ४ स्वादुप्रियौ तु मधुरौ ५ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ।  
 ६ उदारो दातुमद्वतो ७ रितरस्तदन्वनीचयोः ॥ १२२ ॥  
 ८ मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः ९ शुभ्रमुद्गीतशुक्लयोः ।  
 १० 'आसारो वेगवद्वर्षं सैन्यप्रसरणं तथा ( ७४ )  
 ११ धाराम्बुपाते चोत्कर्षेऽसौ १२ कटाहे तु कर्परः ( ७५ )

१ 'उत्तरः' ( त्रि ) के ऊपर, उत्तर दिशामें होनेवाला, श्रेष्ठ, ३ अर्थ;  
 'उत्तरम्' ( न ) का जवाब, १ अर्थ; 'उत्तरः' ( पु ) का विराट राजाका पुत्र,  
 १ अर्थ और + 'उत्तरा' ( स्त्री ) के उत्तर दिशा, अभिमन्यु ( अर्जुनके पुत्र )  
 की स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

२ 'अनुत्तरः' ( त्रि ) के नीचे, उत्तरके अतिरिक्त ( भिन्न ) दिशामें  
 होनेवाला, नीच, श्रेष्ठ, ४ अर्थ और 'अनुत्तरम्' ( न ) का निरुत्तर, १ अर्थ है ॥

३ 'परः' ( त्रि ) के दूर, शत्रु, उत्तम, दूसरा ( अपनेसे भिन्न ), ४ अर्थ  
 और 'परम्' ( न ) का केवल, १ अर्थ है ॥

४ 'मधुरः' ( त्रि ) के स्वादिष्ट, प्रिय, २ अर्थ; 'मधुरः' ( पु ) का मीठा,  
 १ अर्थ और + 'मधुरा' ( स्त्री ) का सौँक, १ अर्थ है ॥

५ 'क्रूरः' ( त्रि ) के कठिन, निर्दय, घोर, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'उदारः' ( त्रि ) के दाता, बड़ा, चतुर, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इतरः' ( त्रि ) के दूसरा, नीच, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्वैरः' ( त्रि ) के मन्द, स्वतन्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शुभ्रम्' ( त्रि ) के उद्गीत ( प्रकाशमान ), श्वेत वर्णवाला, २ अर्थ और  
 'शुभ्रम्' ( न ) का सफेद रंग, १ अर्थ है ॥

१० 'आसारः' ( पु ) के जोरसे वर्षा होना, सेनाका फैलना, २ अर्थ हैं ॥

११ 'धारा' ( स्त्री ) के धारसे पानी आदिका गिरना, तलवार आदि की  
 धार, बड़ेकी गति-विशेष, सेनाप्रभाग, ४ अर्थ हैं ॥

१२ 'कर्परः' ( पु ) के कटाह ( बड़ी कड़ाही ), साह-विशेष, कपाल, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अव्यंक्षेपकांक्षः स्त्री० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ।

- १ बन्धुरं सुन्दरे नम्रे २ गिरिगेंदुकशैलयोः ( ७६ )  
 ३ चरुः स्थाल्यां हविःपक्ता ४ अधीरः कातरे चले' ( ७७ )  
 इति रान्ताः शब्दाः ।

अथ लान्ताः शब्दाः ।

- ५ चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ॥ १९३ ॥  
 ६ द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ।  
 ७ कृतान्तानेहसोः काल ८ क्षतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥ १९४ ॥  
 ९ स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः १० प्रावारेऽपि च कम्बलः ।

- १ [ 'बन्धुरम्' ( त्रि ) के सुन्दर, नम्र, २ अर्थ हैं ] ॥  
 २ [ 'गिरिः' ( पु ) के गेंदा, पहाड़, भौलका रोग-विशेष, ३ अर्थ और 'गिरिः' ( त्रि ) का पूज्य, १ अर्थ है ] ॥  
 ३ [ 'चरुः' ( पु ) के बटलोही, हविष्यका पाक, २ अर्थ हैं ] ॥  
 ४ [ 'अधीरः' ( त्रि ) के कातर, अधीर (चञ्चक अर्थात् धैर्यहीन २ अर्थ हैं] ॥  
 इति रान्ताः शब्दाः ।

अथ लान्ताः शब्दाः ।

- ५ 'मौलिः' ( पु स्त्री ) के चूडा, मुकुट, बँचा हुआ केश (बाल), ३ अर्थ हैं ॥  
 ६ 'पीलुः' ( पु ) के अखरोटका पेड़, हाथी, बाण, ३ अर्थ और 'पीलु' ( न ) का अखरोटका फल तथा फूल, २ अर्थ हैं ॥  
 ७ 'कालः' ( पु ) के यमराज, समय, मृत्यु, काला, ४ अर्थ हैं ॥  
 ८ 'कलिः' ( पु ) के कलियुग, लड़ाई सगदा, २ अर्थ और 'कलिः' ( स्त्री ) का फूलकी कली ( कोंड़ी ), १ अर्थ है ॥  
 ९ 'कमलः' ( पु ) का मृग-विशेष, १ अर्थ और 'कमलम्' ( न ) के कमलका फूल, पानी, ताँबा, आकाश, औषध, ५ अर्थ हैं ॥  
 १० 'कम्बलः' ( पु ) का बुपट्टा ( चादर ), हाथी, साज्जा ( गाय या बैलके गलेमें लटकता हुआ चमड़ा, ढोर ), कीड़ा ( कृमि ), ४ अर्थ और 'कम्बलम्' ( न ) का पानी, कम्बल, २ अर्थ हैं ॥

- १ करोपहारयोः पुंसि 'बलिः' प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥ १९५ ॥  
 २ स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ।  
 ३ वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥ १९६ ॥  
 ४ भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदमर्पयोः ।  
 ५ मलोऽस्त्री पापविटकिट्टान्य द स्त्री शूलं रुमाशूधम् ॥ १९७ ॥  
 ७ शङ्कावपि द्वयोः कीलः ८ पालिः स्वयभ्यङ्कपङ्क्तिषु ।  
 ९ कला शिल्पे कालभेदेऽपि—

१ 'बलिः' ( + वलिः । पु ) के राजाका कर ( कौबी, टैक्स, मालगुजारी ), उपहार ( भेंट, नजर ), 'बलि' नामक दैत्य, चँवरका दण्ड, ४ अर्थ और 'बलिः' ( स्त्री ) के बुढ़ापेसे चमड़ेका सिकुड़ना, घरमें लगा हुआ काष्ठ-विशेष, पेटी ( पेटके चमड़ेकी सिकुड़न ), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'बलम्' ( न ) के मोटाई, सामर्थ्य ( ताकत ), सेना, रूप, ४ अर्थ और 'बलः' ( पु ) के कौआ, बलराम ( कृष्णजीके बड़े भाई ), 'बल' नामका दैत्य ( जिसे इन्द्रने मारा था ), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'वातूलः' ( + वातुलः । पु ) का वायुसमूह ( आँधी ), १ अर्थ और 'वातूलः' ( त्रि ) का बातूनी ( बहुत बात करनेवाला ), १ अर्थ हैं ॥

४ 'व्यालः' ( त्रि ) का शठ, १ अर्थ और 'व्यालः' ( पु ) के हिंसक जन्तु, साँप, बदमाश हाथी, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'मलः' ( पु न ) के पाप, मैला ( विष्टा ), मैल, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'शूलम्' ( पु न ) के शूल नामक रोग-विशेष, हथियार ( त्रिशूल ), २ अर्थ हैं ॥

७ 'कीलः' ( पु स्त्री ) के खूबा आदि, आगकी ज्वाला, शङ्कु, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पालिः' ( + पाली । स्त्री ) के कोना या घार, भट्ठ ( गोद ) पङ्क्ति, श्मश्रु ( दाढ़ी-मूँछ ) से युक्त स्त्री, प्रान्त, पुल, कल्पित भोजन, बड़ाई, कर्णलता, प्रस्थ, १० अर्थ हैं ॥

९ 'कला' ( स्त्री ) के कारीगरी ( यह ४४ प्रकारकी होती है । एतदर्थ परिशिष्ट देखिये ), ३० काष्ठाका ( ८ सेकेण्ड ; पृ० ४४ में उक्त ) समय-विशेष, मूल धनकी वृद्धि ( सूद ), सोलहवाँ हित्ता, चन्द्र-कला, ५ अर्थ हैं ॥

—१ आली सख्यावली अपि ॥ १९८ ॥

२ अव्ययविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ।

३ बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु ॥ १९९ ॥

४ लीला विलासक्रिययो ५ उपला शर्करापि च ।

६ शोणितेऽम्भसि कीलालं ७ मूलमाये शिफोभयोः ॥ २०० ॥

८ जालं समूह आनायगवाक्षारकेऽपि ।

९ शीलं स्वभावे सद्बृत्ते १० सस्ये हेतुकृते फलम् ॥ २०१ ॥

१ 'आलः' ( श्री ) के सखी, पङ्क्ति, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वेला' ( खा ) के चन्द्रमाके उदय होनेपर समुद्रका बढ़ना, समय, मर्यादा, तट, बुझकी स्त्री, धनियोंका भोजन, विना दुःखका मरना, ७ अर्थ हैं ॥

३ 'बहुलाः' ( खो, ताराओंके बहुत होनेसे नित्य बहुवचन है ) के कृत्तिका नामका तीसरा नक्षत्र, गौ, २ अर्थ; 'बहुलः' ( पु ) के अग्नि, कृष्णपक्ष, २ अर्थ और 'बहुलः' ( त्रि ) के काला वर्ण, बहुत, २ अर्थ हैं ॥

४ 'लीला' ( स्त्री ) के विलास, केलि, शृङ्गारभावसे उत्पन्न क्रिया-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'उपला' ( स्त्री ) के शिकड़ी ( पथरका छोटा २ कण्टक ), खोंड़ या चीनी, २ अर्थ और 'उपलः' ( पु ) के पथर, रत्न, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कीलालम्' ( न ) खून, पानी, २ अर्थ हैं ॥

७ 'मूलम्' ( न ) के पड़ला, जब, मूल नामक बत्तीसवाँ नक्षत्र, ( + मूल-धन ), समीप ( जैसे—बृहमूले तिष्ठति, ..... ), ४ अर्थ हैं ॥

८ 'जालम्' ( न ) के समूह, जाल ( फन्दा ), गवाच ( खिचकी, जँगला ), विना खिली हुई कली, दम्भ, ५ अर्थ और 'जालः' ( पु ) का कदम्बका पेड़, १ अर्थ है ॥

९ 'शीलम्' ( न ) के स्वभाव, सदाचरण ( अच्छी रहन ), २ अर्थ हैं ॥

१० 'फलम्' ( न ) के धान्य वृक्ष आदिका फल, फल ( लाभ; जैसे—यज्ञका फल स्वर्ग, ..... ), बाणकी नोक, जातीफल, त्रिफला ( आँवला, हर्द, बहेड़ा ), कंकोल, सम्पत्ति, ७ अर्थ हैं ॥

१. 'विकार्ययोः' इति पाठान्तरम् ।

- १ छदिनेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ।  
 २ अद्यःस्वरूपयोरस्त्री तलं ३ स्याच्चाभिषे पलम् ॥ २०२ ॥  
 ४ और्वानलेऽपि पातालं ५ 'चैलं' षष्ठेऽधमे त्रिषु ।  
 ६ कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णं श्वध्रे ना तु तुषानले ॥ २०३ ॥  
 ७ निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ।  
 ८ पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षते त्रिषु ॥ २०४ ॥  
 ९ प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री १० त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ।  
 ११ करालो दन्तुरे तुङ्गे १२ चारौ दक्षे च पेशलः ॥ २०५ ॥

१ 'पटलम्' ( न ) के छप्पर, आँखका रोग-विशेष, २ अर्थ और 'पटलम्' ( न स्त्री ) का समूह, १ अर्थ है ॥

२ 'तलम्' ( पु न ) के नीचे (जैसे—रसातलम्, पादतलम्, .....), स्वरूप, पृष्ठ भाग (जैसे—श्रुतलम्, करतलम्, .....), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'पलम्' ( न ) के मांस, चार भरीका प्रमाण-विशेष, समय-विशेष ( १ घटीका ६० भाग ), -३ अर्थ हैं ॥

४ 'पातालम्' ( न ) के बड़वानल, नागलोक (पाताल), बिल, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'चैलम्' ( + चेलम् । न ) का कपड़ा, १ अर्थ और 'चैलः' ( त्रि ) का नीच, १ अर्थ है ॥

६ 'कुकूलम्' ( न ) का कील आदिसे भरा गढ़ा, १ अर्थ और 'कुकूलः' ( पु ) का भूसेकी भाग ( मठर ), १ अर्थ है ॥

७ 'केवलम्' (अव्यय) का सिर्फ, १ अर्थ और 'केवलम्' ( त्रि ) के एक (अकेला, जैसे—केवलोऽयं याति, .....), समूचा (जैसे—केवला भिक्षुकाः, .....), २ अर्थ हैं ॥

८ 'कुशलम्' ( न ) के पर्याप्त ( सामर्थ्य ), कल्याण, पुण्य, ३ अर्थ और 'कुशलम्' ( त्रि ) का शिक्षित ( चतुर ), १ अर्थ है ॥

९ 'प्रवालम्' ( न पु ) के नया पल्लव, मूँगा, वीणाका दण्ड, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'स्थूलम्' ( त्रि ) के मोटा, जड़ ( मूर्ख ), २ अर्थ हैं ॥

११ 'करालः' ( त्रि ) के दाँतुल, ऊँचा, भयङ्कर, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'पेशलः' ( त्रि ) के सुन्दर, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

१ 'चेलम्' इति पाठान्तरम् । २. 'अङ्कुरोऽत्र किसलयः' इति क्षी० स्वा० उक्तेः ।

- १ मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या २ लोलञ्जलसत्पण्याः ।
- ३ 'कुलं गृहेऽपि ४ तालाङ्गे कुबेरे चैककुण्डलः ( ७८ )
- ५ स्त्रीभावावशयोर्हेला ६ हेलिः सूर्ये ७ रणे हिलिः ( ७९ )
- ८ हालः स्यान्नृपतौ मध्ये ९ शकलच्छेदयोर्दलम् ( ८० )
- १० तूलिश्चित्रोत्करणशलाकातूलशययोः ( ८१ )
- ११ तुमुलं व्याकुले शब्दे १२ शाकुली कर्णपालयनि ( ८२ )

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथ वान्ताः शब्दाः ।

### १३ दचदावौ वनारण्यवही—

१ 'बालः' ( + बालः । त्रि ) के मूर्ख, बालक, कश, नेत्रवाला औषध, हाथी-घोड़ेकी पूँछके बालका गुच्छा, ५ अर्थ हैं ॥

२ 'लोलः' ( त्रि ) के चञ्चल, चाहनामे युक्त, २ अर्थ हैं ॥

३ [ 'कुलम्' ( न ) के घर, देह, देश, वंश, परिवार, ५ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'एककुण्डलः' ( पु ) के बलभद्र, कुबेर, १ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'हेला' ( स्त्री ) के स्त्रीका भाव-विशेष; अवज्ञा, २ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'हेलिः' ( पु ) के सूर्य, आलिङ्गन, २ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'हिलिः' ( पु ) के लड़ाई, भाव-सूचन, ३ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'हालः' ( पु ) के शालिवाहन ( + सातवाहन ) राजा, १ अर्थ और + 'हाला' ( स्त्री ) का मदिरा, १ अर्थ है ] ॥

९ [ 'दलम्' ( न ) के द्रुक्का, पत्ता, २ अर्थ हैं ] ॥

१० [ 'तूलिः' ( स्त्री ) के चित्र बनानेकी कूची, तोसक, २ अर्थ हैं ] ॥

११ [ 'तुमुलम्' ( न ) का रण आविर्भूत जन-समूहादि से ठसाठस भरा हुआ, १ अर्थ और 'तुमुलः' ( पु ) का बहेदेका पेड़, १ अर्थ है ] ॥

१२ [ 'शाकुली' ( स्त्री ) के कर्णपाली, (कानका पर्दा), पूड़ी, २ अर्थ हैं ] ॥

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथ वान्ताः शब्दाः ।

१३ 'दवः, दावः' ( २ पु ) के वन, दावानल ( लकड़ियोंकी रगड़से सरपक हुई जङ्गलकी आग ), २ अर्थ हैं ॥

—१ जन्महरौ भवौ ॥ २०६ ॥

- २ मन्त्री सहायः सचिवौ ३ पतिशास्त्रिनरा धवाः ।  
 ४ अवयः शैलमेषार्कः ५ आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवः ॥ २०७ ॥  
 ६ भावः 'सत्तास्वभावामिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ।  
 ७ स्यादुत्पादे फले पुण्ये प्रसवो गर्भप्रोचने ॥ २०८ ॥  
 ८ अवशिवासेऽपह्वेऽपि निकृताऽपि निहवः ।  
 ९ उत्सेकामर्षयोर्विच्छाप्रसरे मह उत्सवः ॥ २०९ ॥  
 १० अनुभावः प्रभावे च सतां च अतिनिश्चये ।  
 ११ स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाप्योपलब्धये ॥ २१० ॥

१ 'भवः' ( पु ) के जन्म लेना, शिवजी, प्राप्ति, सत्ता, संसार, कल्याण, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सचिवः' ( पु ) ३ मन्त्री ( बुद्धि-सचिव ), सहायक ( कर्म-सचिव ), २ अर्थ हैं ॥

३ 'धवः' ( पु ) के पति, धनका पेड़, नर, धूर्त, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'अवि' ( पु ) के पहाड़, भैंसा, सूर्य, नाथ ( स्वामी ), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'हवः' ( पु ) के आज्ञा, पुकारना, यज्ञ ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भावः' ( पु ) के सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, वस्तु, क्रिया, लीला, विभूति, प्रणवत, जन्तु, रतिवेग, १३ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रसवः' ( पु ) के उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भसे पैदा होना, सन्तान, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'निहवः' ( पु ) के अवशिवास, व्यर्थ बोलना ( बकना ), कठता, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उत्सवः' ( पु ) के उत्सव, क्रोध, इच्छाका वेग, आनन्दका अवसर ( विवाह आदि उत्सव ), ४ अर्थ हैं ॥

१० 'अनुभावः' ( पु ) के प्रभाव, सज्जनों के ज्ञान का निर्णय, भाव-सूचन, ३ अर्थ हैं ॥

११ 'प्रभवः' ( पु ) के जन्मकारण ( जैसे—पुत्रादिका जन्म कारण माता-पिता, ..... ), प्रथम उपलब्धिका स्थान ( जैसे—'गङ्गाप्रभवः हिमवान्' अर्थात् गङ्गाके प्रथमोपलब्धिका स्थान हिमालय है, ..... ), २ अर्थ हैं ॥

१. 'स्वस्वभावामिप्रायचेष्टात्मजन्मसु' इति पाठान्तरम् ।

- १ शूद्रायां विप्रतनये शब्दे' पारशवो मतः ।
- २ ध्रुवा भभदे कलीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥ २११ ॥
- ३ स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं विष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ।
- ४ स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि'नीवी परिपणेऽपि च ॥ २१२ ॥
- ५ शिवा गौरीफेरवया ६ द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ।
- ७ द्रव्यासुख्यवसायेषु सस्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥ २१३ ॥

१ 'पारशवः' ( + पाराशवः । पु ) के शूद्र जातिकी मातामें ब्राह्मण जातिके पितासे उत्पन्न भन्तान, परशु ( फरसा, कुल्हाड़ी ) अस्त्र, २ अर्थ हैं ॥

२ 'ध्रुवः' ( पु ) के ध्रुव तारा, बद्ध, वस्तु, योग भेद, शिवजी, शङ्ख, कील, ७ अर्थ; 'ध्रुवम्' ( न ) का निश्चित ( जैसे—ध्रुवं मूर्खोऽयम्, ..... ), १ अर्थ और 'ध्रुवम्' ( त्रि ) के निरन्तर ( जैसे—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ( गीता २ । २७ ), ..... ), तर्क, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'स्वः' ( पु ) के ज्ञाती ( जाति, जैसे—उत्सुकानीव भान्ति 'स्वाः, ..... ) आत्मा ( जैसे—हृदि स्वमवलोकयन्, ..... ), २ अर्थ; 'स्वम्' ( त्रि ) का आत्मीय, १ अर्थ और 'स्वः' ( पु न ) का धन, १ अर्थ है । ( 'इस 'स्व' शब्दके ज्ञाति और धन अर्थमें 'राम' शब्दकी तरह और आत्मा और आत्मीय अर्थमें 'भर्व' शब्दकी तरह रूप <sup>३</sup> होते हैं' ) ॥

४ 'नीवी' ( + नीविः । स्त्री ) के फुफुली ( स्त्रियोंके नाभिके नीचेवाली वस्त्र-प्रणिधि ) राजपुत्रादिके धनका अदल-बदल बनियोंका मूलधन, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'शिवा' ( स्त्री ) के पार्वतीजी, सियारिन, स्यार, शमी वृक्ष, आँवला, भूई आँवला ओषधि, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'द्वन्द्वम्' ( न । + पु ) के लड़ाई, जाही ( युग्म, युगल ), रहस्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सस्वम्' ( न ) के वस्तु, प्राण, अधिक पराक्रम होना, ३ अर्थ और 'सस्वम्' ( न पु ) का प्राणा १ अर्थ है ॥

१. 'पाराशवः पुमान्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'नीविः' इति पाठान्तरम् ।

३. आत्मात्मीयार्थयोः स्वशब्दः 'स्वमङ्गतिधनाख्यायाम्' ( पा० सू० १।१।१५ ) इति सर्वनामसंज्ञकस्तेन 'सर्व'वद्वपम् । ज्ञातिधनार्थयोस्तु सर्वनामसंज्ञाऽभावाद् रामशब्दवद्वपमित्यवधेयम् ।  
Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com



१ 'क्लीबं नपुंसकं षण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ।

२ 'अत्यध्वगातिप्रणतौ प्राध्वौ प्राध्वं तु बन्धने' ( ८३ )

इति वान्ताः शब्दाः ।



अथ शान्ताः शब्दाः ।

३ द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ ४ द्वौ चराभिन्नौ स्पशौ ॥ २४ ॥

५ द्वौ राशी पुञ्जमेवाद्यौ ६ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ।

७ रहःप्रकाशौ वीकाशौ—

१ 'क्लीबम्' ( न ) का नपुंसक ( हिजड़ा ) १ अर्थ और 'क्लीबम्' ( त्रि ) का सामर्थ्यहीन, १ अर्थ है ॥

२ [ 'प्राध्वः' ( पु ) के रास्ताको चलकर पूरा किया हुआ, अतिनम्र, २ अर्थ और 'प्राध्वम्' ( न ) का बन्धन, १ अर्थ है ] ॥

इति वान्ताः शब्दाः ।



अथ शान्ताः शब्दाः ।

३ 'विट्' ( = विश पु ) के वैश्य, मनुष्य, प्रवेश ३ अर्थ हैं ॥

४ 'स्पशः' ( पु ) के दूत, युद्ध, २ अर्थ हैं ॥

५ 'राशिः' ( पु ) के ढेरी, मेष आदि ( १।१।२७ में उक्त ) वारह राशि, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वंशः' ( पु ) के कुल (खानदान), बाँस, संघ, पीठकी रीढ़ ४ अर्थ हैं ॥

७ 'वीकाशः' ( + विकासः । पु ) के एकान्त, प्रकाश ( स्पष्ट व्यक्त ), २ अर्थ हैं ॥

१. अयं (स्त्रीवशब्दः)ओष्ठ्योऽत्र भ्रमात्पठितः' इति मा० दी०, 'बवयोः सावर्ण्यादस्यात्र पाठः' इति महे० वचनं च चिन्त्यम् । 'कृपणक्षुद्रकस्त्रीवक्षुद्रा.....' इति, स्त्रीवो वर्षवरः षण्डः.....इति, स्त्रीवो विक्रमहीनेऽपि.....( अमि० रत्न० क्रमशः २।१९२, २।२७५, ५।३४ ) इति हलायुषात् , 'स्त्रीवोऽपौरुषषण्डयोः' ( अने० संग्र० २।५३२ ) इति वान्तप्रकरणहैमात् 'पापे स्त्रीवं नपुंसके षण्डेऽन्यवदविक्रमे' इति मेदिन्याश्च वान्तस्यै ( दन्त्यौष्ठ्यस्यै ) य 'स्त्रीव' शब्दस्योपलब्ध्या सर्वेषां भ्रमकरूपनानौचित्यात् ॥

२. 'अत्यध्वगा.....बन्धने' इत्ययं श्लेषकांशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया मूके श्लेषकत्वेन निहितः ॥

—१ निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥ २१५ ॥

२ कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ।

३ पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्याद् दक्षुशमसु च ॥ २२६ ॥

५ दशावस्थानैकस्त्रिषाण्या दशा तृष्णापि चायता ।

७ वशा स्त्री करिणी च स्याद्दृष्टग्नाने ज्ञातरि त्रिषु ॥ २१७ ॥

९ स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामस्तृणावपि ।

१० प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि—

१ 'निर्वेशः' ( पु ) के वेतन, उपभोग, २ अर्थ हैं ॥

२ 'कीनाशः' ( पु ) के यमराज, वानर, २ अर्थ और 'कीनाशः' ( त्रि ) के क्षुद्र, कर्षक ( किसान ), २ अर्थ हैं ॥

३ 'अपदेशः' ( पु ) के श्याज ( बहाना । + स्थान ), लक्ष्य, निमित्त ३ अर्थ हैं ॥

४ 'कुशम्' ( न ) का पानी, १ अर्थ और 'कुशः' ( पु ) के रामचन्द्रजी-का पुत्र, कुशा, द्वीप, जोती ( बैल आदिके गलेमें बांधनेके लिये जुवाठकी रस्सी ), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'दशा' ( स्त्री ) के अवस्था ( दशा ), अनेक तरह, दीपकी बत्ती, ३ अर्थ और 'दशाः' ( स्त्री नि० व० व० ) का कपड़ेकी धारी ( किनारी, दस्ती ), १ अर्थ है ॥

६ 'आशा' ( स्त्री ) के तृष्णा ( चाह, आशारा, उमीद ), पूर्व आदि दिशा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'वशा' ( स्त्री ) के स्त्री, हथिनी, बॉस गौ, लक्ष्मी, वशमें रहनेवाली, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'दृक्' ( = दृश् स्त्री ) के ज्ञान, नेत्र, बुद्धि, ३ अर्थ और 'दृक्' ( = दृश् त्रि ) का ज्ञाता ( जाननेवाला ), १ अर्थ है ॥

९ 'कर्कशः' ( त्रि ) के साहसी, कठोर, रुखा, दृढ़, निर्दय, कृपाण, क्रूर, ७ अर्थ और 'कर्कशः' ( पु ) के तलवार, कबोका ओषधि, गन्ना, कासमर्द ( गुस्मभेद महे० । + वेसवारभेद स्त्री० स्वा० मा० दी० ), ४ अर्थ हैं ॥.....

१० 'प्रकाशः' ( पु ) के बहुत प्रसिद्ध, प्राम, उज्जाला, हँसी, ४ अर्थ हैं ॥

—१ शिशावज्ञे च बालिशः ॥ २१८ ॥

२ 'कोशोऽस्त्री कुड्मले ऋक्पिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ( ८४ )

३ 'नाशः क्षये तिरोधाने च जीवितेशः प्रिये यमे ( ८५ )

४ नृशंसखज्ञौ निखिशा ६ वंशुः सूर्याऽशवः कराः ( ८६ )

७ आश्वाखना शालिशीघ्रार्थेऽपाशो बन्धनशस्त्रयोः' ( ८७ )

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

१ कुरमत्स्यावनिमिषौ २० पुरुषावात्ममानवौ ।

१ 'बालिशः' ( पु ) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

२ [ 'कोशः' ( पु न ) के झुलकी कौड़ी ( कलिका ), तलवार की ग्यान, खजाना, दिव्य ( शपथ-भेद ), अर्थ हैं ] ॥

३ [ 'नाशः' ( पु ) के क्षय, अन्तर्धान ( छिपना ), २ अर्थ हैं ] ॥

४ [ 'जीवितेशः' ( पु ) के प्रिय ( पनि आदि ), यमराज, २ अर्थ हैं ] ॥

५ [ 'निखिशा' ( पु ) के क्रूर, तलवार, २ अर्थ हैं ] ॥

६ [ 'वंशुः' ( पु ) के सूर्य, किरण, सूत आदि का पतला हिस्सा, ३ अर्थ हैं ] ॥

७ [ 'आशु' ( व ) के जोहि ( धान्य-भेद ), शीघ्र, २ अर्थ हैं ] ॥

८ [ 'पाशः' ( पु ) के बन्धन, वरुण का हथियार या फाँस, २ अर्थ हैं ] ॥

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

१ 'अनिमिषः' ( पु ) के देवता, मछली, २ अर्थ हैं ॥

२० 'पुरुषः' ( पु ) के क्षेत्रज्ञ ( ज्ञानी ), मनुष्य ( पुरुष ), पुत्राग वृद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'कोशो'.....'दिव्ययोः' इत्ययमंशः भा० दी० क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते नापि ताभ्यां व्याख्यातः, क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गावचनत्वेन समुपलभ्यते । महे० मू० व्याख्यायां च समुपलभ्यते ॥

२. 'नाशः'.....'शस्त्रयोः' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गावचनत्वेनोपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेत्रकत्वेन स्थापितः ॥

- १ काकमरस्यात्स्वगौ ध्वाङ्गौ २ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥ २१९ ॥
- ३ अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ ४ प्रैषः प्रेषणमर्दने ।
- ५ पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥ २२० ॥
- ७ शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ।
- ८ 'कोषोऽस्त्री कङ्मले षडङ्गपिधानेऽर्थोऽपिद्वयोः ॥ २२१ ॥
- ९ द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्षमिन्द्रिये ।  
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥

१ 'ध्वाङ्गः' ( पु ) के कौआ, मछलीको खानेवाला पक्षी (बगुडा), भिन्नक, तच्चक मर्प, कपासके बीज निकालनेका यन्त्र-विशेष, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'कक्षः' ( पु ) के घास, लता, काँख जङ्गल, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अभीषुः' ( + अभीशुः । पु ) के रस्सी ( चोड़े आदिका बाखडोर ), किरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रैषः' ( + प्रेषः । पु ) के भेजना, पीडा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'पक्षः' ( पु ) के सहाय, पक्षवारा ( आधा महीना अर्थात् कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष ), पार्श्व, ग्रह, साध्य, अवरोध, कश आदिसे परे ( आगे ) रहनेपर समूह ( जैसे—केशपक्षः, काकपक्षः, ..... ), बल, मित्र, पंख, रुचि विक-  
सिपत ( जैसे—भवदीयः पक्षः, अस्मदीयः पक्षः, ..... ), १२ अर्थ हैं ॥

६ 'उष्णीषः' ( पु । + न ) के पगड़ी, किरीट ( मुकुट ) २ अर्थ हैं ॥

७ 'वृषः' ( पु ) के बहुत पराक्रमवाला ( + अण्डकोश ), चूहा, श्रेष्ठ, धर्म, वृष नामका दूसरा राशि, बैल, ६ अर्थ हैं ॥

८ 'कोषः' ( + कोशः, पु न ) के फूलकी विना खिली हुई कडी ( कोंडो ), तलवारकी रथान, खजाना दिव्य ( शपथ-भेद ), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'आकर्षः' ( पु ) के जुआ, जुआ खेलनेका पाशा, सतरंज आदि खेलने की बिसात, ( कपड़ा या पटरी आदि ), खींचना, इन्द्रिय, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'अक्षम्' ( न ) के इन्द्रिय, तृतीया, मोचरखार, ३ अर्थ और 'अक्षः'

१, 'सहायेऽप्युष्णीषं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कोषो ..... दिव्य योः' इत्येषोऽशो महे० पुस्तके नोपलभ्यते नापि तेन व्याख्यातः इ  
श्री० स्वा० मा० दी० मूलेलभ्यते व्याख्यातश्च ताभ्याम् ॥

- १ कर्षूर्वाता करीषाम्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ।  
 २ पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं ३ विषमस्तु च ॥ २२३ ॥  
 ४ उपादानेऽप्यामिषं स्या ५ अपराधेऽपि 'किन्विषम्' ।  
 ६ स्याद् वृष्टौ लौकधातुशो वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥  
 ७ प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा ८ भिक्षा सेवाऽऽर्थना भृतिः ।  
 ९ स्थिष्टः शोभाऽपि १० त्रिषु परे ११ न्यक्षं कात्स्न्येनिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥

( पु ) के जुआ खेलनेका पाशा, कर्ष ( सोलह मासा, प्रमाण-विशेष ), पहिया, बहेद, व्यवहार ( आय न्ययका विचार अर्थात् लेन देन ), ५ अर्थ हैं ॥

१ 'कर्षूः' ( पु ) का खेती ( जीविका ), उपला ( गोहरा, गोहंठा ) का अङ्गार, २ अर्थ और 'नर्षूः' ( स्त्री ) का नहर, १ अर्थ है ।

२ 'पौरुषम्' ( न ) के पुरुषका भाव, पुरुषका कर्म ( पुरुषार्थ ), तेज ३ अर्थ और 'पौरुषम्' ( त्रि ) का पोरसा ( हाथ उठाये हुए मनुष्यके सादे चार हाथका प्रमाण विशेष ) १ अर्थ है ॥

३ 'विषम्' ( न ) के जल, जहर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आमिषम्' ( न पु ) के उपादान ( घूस, रिस्वत ), भोग्य वस्तु, संभोग, मांस, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'किन्विषम्' ( + किन्मिषम् । न ) के अपराध, पाप, रोग, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'वषम्' ( पु न ) के वर्षा, जम्बूद्वीपके खण्ड ( १ । १ । ६ में उक्त भारत आदि नव वर्ष ), वर्ष ( साल ), ३ अर्थ और 'वर्षाः' ( स्त्री नि० ब० व० ) का वर्षा ऋतु, १ अर्थ है ॥

७ 'प्रेक्षा' ( स्त्री ) के नाच, देखना ( + नाच देखना ), बुद्धि, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'भिक्षा' ( स्त्री ) के सेवा, याचना, वेतन, भिक्षा में मिला हुआ पदार्थ, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'स्थिष्ट' ( = विष स्त्री ) के शोभा, वचन, तेज, ३ अर्थ हैं ॥

१० यहांसे आगे सब प्रकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

११ 'न्यक्षम्' ( त्रि ) के साकल्य, नीच, २ अर्थ 'न्यक्षः' ( पु ) का परशुराम, १ अर्थ है ।

- १ प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो २ रुक्मस्त्वप्रेषणप्रतिक्रणे ।
- ३ 'व्याजसंख्याशब्देषु लक्षं ४ घोषो रववर्त्तो ( ८८ )
- ५ कपिशीर्षं भित्तिशृङ्गेऽनुतर्षश्चाकः सुरा ( ८९ )
- ७ दोषो वातादिके दोषा राक्षो ८ दक्षोऽपि कुक्कुटे ( ९० )
- ९ गुण्डामभागे गण्डूषो द्रयोश्च मुखपूरणे ( ९१ )

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

### १० रविश्वेतच्छदो हंसौ—

- १ 'अध्यक्षः' ( त्रि ) के प्रत्यक्ष, अधिकारी ( मालिक, ) २ अर्थ हैं ॥
- २ 'रुक्मः' ( त्रि ) के प्रेमरहित, रुखा, २ अर्थ हैं ॥
- ३ [ 'लक्षम्' ( न ) के व्याज, लाख संख्या, निशाना, ३ अर्थ हैं ] ॥
- ४ [ 'घोषः' ( पु ) के शब्द (हल्ला, आवाज), अक्षरोंके रहनेका स्थान, २ अर्थ हैं ] ॥
- ५ [ 'कपिशीर्षम्' ( न ) के दिवालका ऊपरी भाग, शृङ्ग, अर्थ हैं ] ॥
- ६ [ 'अनुतर्षः' ( पु ) के मदिरा पीनेका प्याला, मदिरा, अभिलाषा, वृष्णा, ४ अर्थ हैं ] ॥
- ७ [ 'दोषः' ( पु ) के वात आदि (पित्त, कफ) तीन दोष, दोष (अपराध), २ अर्थ और 'दोषा' ( अव्य० ) का रात, १ अर्थ है ] ॥
- ८ [ 'दक्षः' ( पु ) का सुर्गा, १ अर्थ और 'दक्षः' ( त्रि ) का चतुर, १ अर्थ है ॥
- ९ [ 'गण्डूषः' ( पु ) के हाथीके सूँठका आगेवाला भाग, १ अर्थ और 'गण्डूषः' ( पु स्त्री ) का कुल्ला ( मुखमें पानी भरना ), १ अर्थ है ] ॥

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

### १० 'हंसः' ( पु ) के सूर्य, हंस पक्षी, २ योगि-भेद, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'व्याज'.....'मुखपूरणे' इत्ययं क्षेत्रकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतो-  
पयोगितया मूले क्षेत्रकत्वेन स्थापितः ॥

२. तदुक्तम्—'कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयकः ।

चतुर्थो परमो हंसो योग्यः पश्चात्स उत्तमः' ॥ इति शारीतः ॥

—१ सूर्यवह्नी विभावसु ॥ २२६ ॥

- २ वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ ३ सारङ्गाश्च दिवौकसः ।  
 ४ शृङ्गारादौ विषे वीर्यं गुणे रागे द्रवे रसः ॥ २२७ ॥  
 ५ पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ।  
 ६ देवभेदेऽनले रश्मौ वसु रत्ने धने वसु ॥ २२८ ॥  
 ७ विष्णौ च वेधाऽस्त्री स्वाशीर्द्विताशंसाह्निदंष्ट्रयोः ।  
 ९ लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये १० हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥ २२९ ॥

१ 'विभावसुः' ( पु ) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वत्सः' ( पु ) के गौका बछ्वा या पुत्र आदि ( बच्चा ), वर्ष, २ अर्थ और 'वत्सम्' ( न ) का छाती, १ अर्थ है ॥

३ 'दिवौकसः' ( = दिवौकस् पु ) के चातक पक्षी, देवता, २ अर्थ हैं ॥

४ 'रसः' ( पु ) के शृङ्गार आदि ( १।७।१७ में उक्त ) नव रस, विष, वीर्य, कसाव आदि ( १।५।९ में उक्त ) छ रस, राग ( जैसे—रसिकस्त-  
 रुणः, ..... ), पिघलना, पारा, जल, स्वाद, ९ अर्थ हैं ॥

५ 'उत्तंसः, अवतंसः' ( २ पु ) के कानका भूषण, भूषणमात्र, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वसुः' ( पु ) के घर आदि आठ वसु ( १ घर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ अहन् ( दिन ), ५ वायु, ६ अग्नि, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास; ये आठ वसु<sup>१</sup> हैं ), अग्नि, किरण, राजा, जोती ( जुवाठमें बंधी हुई बैल के गले में बांधने की रस्सी ), ५ अर्थ; 'वसु' ( न ) के रत्न, धन, वृद्धि औषध, स्वर्ण, ४ अर्थ और 'वसुः' ( त्रि ) का मधुर, १ अर्थ है ॥

७ 'वेधाः' ( = वेधस् पु ) के विष्णु, ब्रह्मा, पण्डित. ३ अर्थ हैं ॥

८ 'आशीः' ( = आशिस् स्त्री ) के आशीर्वाद, सर्पका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

९ 'लालसा' ( स्त्री ) के प्रार्थना, उत्सुकता, अधिक चाह, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'हिंसा' ( स्त्री ) के चोरी आदि ( बांधना, डराना ) बुरा काम, मारना, २ अर्थ हैं ॥

१. तदुक्तम्—'घरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिष्टोऽनलः ।

प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः' ॥ १ ॥

इति भा० आ० ६६०—' इति वाचस्पत्य० पु० ४८६३ ॥

- १ प्रसूरश्चापि २ भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ।
- ३ ज्वालाभासौ न पुंस्यचिञ्ज्योतिर्भद्योतद्विषु ॥ २३० ॥
- ५ पापापराधयोरागः ६ खगबाह्यादिभोर्वयः ।
- ७ तेजः पुरीषयोर्वर्चो ८ महस्तूरसवतेजयोः ॥ २३१ ॥
- ९ रजो गुणे च स्त्रीपुंस्ते १० राक्षो ध्वाग्ते गुणे तमः ।
- ११ छन्दः पद्येऽभिलाषे च १२ तपः कृच्छ्रादिकर्म च ॥ २३२ ॥
- १३ सद्वा बलं सद्वा मार्गो—

१ 'प्रसूः' ( स्त्री ) के घोड़ी, माता, केला, लता, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'रोदस्यौ' (= रोदसी स्त्री ), 'रोदसी' (= रोदस् स । २ नि० द्विव ) का, जमीन-आसमान, १ अर्थ है ॥

३ 'अचिः' (= अचिस् स्त्री न ) के ज्वाला, किरण या कान्ति, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ज्योतिः' (= ज्योतिस् न ) के नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि, ज्योतिष शास्त्र, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'आगः' (= आगस् न ) के पाप, अपराध, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वयः' (= वयस् न ) के चिद्विद्या, अवस्था ( बाल्य, यौवन, वार्द्धक्य आदि ), २ अर्थ हैं ॥

७ 'वर्चः' ( ॥ वर्चस् न ) के तेज, विट् (मैला, पाखाना), रूप, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'महः' (= महस् न । + महः = मह पु ) के उरसव, तेज, २ अर्थ हैं ॥

९ 'रजः' (= रजस् न । + रजः = रज पु ) के रजोगुण, स्त्रीका मासिक आर्तव, २ अर्थ हैं ॥

१० 'तमाः' (= तमस् पु) का राहु ग्रह, १ अर्थ और 'तमाः' (तमस् न) के अन्धकार, तमोगुण, शोक ( मोह, मूर्च्छा ), ३ अर्थ हैं ॥

११ 'छन्दः' (= छन्दस् न ), पद्य (श्लोक आदि), अभिलाषा, वेद, स्वच्छन्दता, ४ अर्थ हैं ॥

१२ 'तपः' (= तपस् न) का तपस्या (कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि कठिनव्रत), तपोलोक, धर्म, ३ अर्थ 'तपाः' (पु) के माघ महीना, तिसिर ऋतु, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'सहः' (= सहस् न ) के बल, ज्योतिष्, २ अर्थ और 'सद्वाः' (= सहस् पु ) के मार्ग ( अगहन ) महीना, हेमन्त ऋतु, २ अर्थ हैं ॥



—१ नभः खं धावणो नभाः ।

२ ओकः सन्नाश्रयश्चोकाः ३ पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ॥ २३३ ॥

४ ओजो दीप्तौ बले ५ स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ।

६ तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्यज्जलिषु ॥ २३४ ॥

८ विद्वान्विदंश्च बीभत्सो हिंस्रोऽप्यतिशये त्वमी ।

वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्—

१ 'नभः' (= नभस् न ) का आकाश, १ अर्थ और 'नभाः' (= नभस् पु) के धावण महीना, मेघ ( बादल ), पिकवान ( उगलवान ), नाक, मृगालसूत्र, वर्षा ऋतु, ६ अर्थ हैं ॥

१ 'ओकः' (= ओकस् न + ओकः = ओक पु ) का मकान, १ अर्थ और 'ओकाः' (= ओकस् पु ) का आश्रयमात्र, १ अर्थ है ॥

३ 'पयः' (= पयस् न ) के दूध, पानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ओजः' (= ओकस् न ) के दीप्ति, बल, प्रकाश ( उजाला ), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'स्रोतः' (= स्रोतस् न ) के इन्द्रिय, सोत ( नदी आदिका बहाव ), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तेजः' (= तेजस् न ) के प्रभाव, दीप्ति, बल, वीर्य ( मनुष्यका शरीर-स्थ घातु ), असहन, ५ अर्थ हैं ॥

७ यहाँसे आगे सब सकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'विद्वान्' (= विद्वस् त्रि ) के पण्डित, आत्मज्ञानी, प्राज्ञ, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'बीभत्सः' ( त्रि ) के हिंसक या क्रूर, भयङ्कर ( डरावना ), २ अर्थ और 'बीभत्सः' ( पु ) के बीभत्स रस ( 'यह पृ० ७३ में उक्त शृङ्गार आदि नवरसों के अन्तर्गत है' ), १ अर्थ है ॥

१० 'उयायान्' (= उयायस् त्रि ) के अत्यन्त बूढ़ा, बहुत प्रशंसा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

१. तदुक्तं साहित्यदर्पणे विद्वनाथेन—

'अभिधोपापमानार्देः प्रयुक्तस्य परेण यद ।

प्राणास्यकेऽप्यसद्वनं तत्तेजः समुदाहृतम् ॥ १ ॥

इति सा० द० ३। १७ ॥

—१ कनीयांस्तु युवाल्पयोः ॥ २३५ ॥

२ घरीयांस्तूहवरयोः ३ साधीयान्साधुवादयोः ।

इति सान्ताः शब्दाः ।

अथ हान्ताः शब्दाः ।

४ दलेऽपि बर्हं ५ निर्वन्धोपरागाकादयो ग्रहाः ॥ २३६ ॥

६ द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो नागवन्तके ।

७ तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहोऽपि च ॥ २३७ ॥

८ पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ।

९ दारेषु च गृहाः—

- १ 'कनीयान्' ( = कनीयस् त्रि ) के बहुत युवा, बहुत छाटा, २ अर्थ हैं ॥  
 २ 'घरीयान्' ( = घरीयस् त्रि ) के बहुत बड़ा, बहुत श्रेष्ठ, १ अर्थ हैं ॥  
 ३ 'साधीयान्' ( = साधीयस् त्रि ) के बहुत साधु ( अच्छा ), बहुत ज्यादा, २ अर्थ हैं ॥

इति सान्ताः शब्दाः ।

अथ हान्ताः शब्दाः ।

४ 'बर्हम्' ( न पु ) के पत्ता, मोरका पंख, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रहः' ( पु ) के ग्रहण करना, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह ( सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये नव 'ग्रह' हैं ), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'निर्व्यूहः' ( पु ) के द्वार, शिखा या चोटीमें बांधनेकी माला, काढ़ेका रस, खूंटी, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रग्रहः, प्रमाहः' ( २ पु ) के तनी ( तराजूके डण्डीकी रस्सी ), घोड़े आदिका चाबडोर या लगाम, २ अर्थ हैं ॥

८ 'परिग्रहः' ( पु ) के पत्नी ( स्त्री ), परिजन, लेना, बुरादिकी जड़, शाप या शपथ, राहुग्रस्त सूर्य, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'गृहाः' ( नि० पु० ब० व० ) का स्त्री, १ अर्थ और 'गृहम्' ( न पु ) का घर, १ अर्थ है ॥

१. तदुक्तम्—'सूर्यश्चन्द्रो मङ्गलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः ।

शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥ १ ॥ इति वाचस्पत्येन पृ० २७४५ ॥

— १ ओण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥ २३८ ॥

२ व्यूहो वृन्देऽप्य३ द्विवृत्रेऽप्य४ ग्नीन्द्रकास्तमोपहाः ।

५ परिच्छदे नृपाह्वेऽर्थे परिवर्हः—

इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

— ६ अव्ययाः परे ॥ २३९ ॥

७ आङ्गीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ।

८ आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽस्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥ २४० ॥

१ 'आरोहः' ( पु ) के स्त्रीकी कमर या चूतड़, पहाड़ आदिपर चढ़ना, पेड़ आदिकी ऊँचाई, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यूहः' ( पु ) के समूह, सेनाकी स्थिति विशेष, तर्क, बनावट ( रचना ), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अद्विः' ( पु ) के वृत्रासुर, साँग, १ अर्थ हैं ॥

४ 'तमोपहः' ( पु ) के अग्नि, अन्द्रमा, सूर्य, जिन, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'परिवर्हः' ( पु ) के सामग्री, राजाका छत्र-चामर आदि चिह्न, धन, ३ अर्थ हैं ॥  
इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

६ यहाँसे आगे नानार्थवर्गके अन्ततक सब शब्द अव्यय हैं ॥

७ 'आङ्' के थोड़ा, अभिव्याप्ति ( व्याप्तकर ), सीमा ( हद्द ), धातु-योगसे उपपन्न अर्थ, ४ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदाहरण—। आपिङ्गकः, २ आस्व-गात्, ३ आसमुद्रं चित्तीशानाम् ( रघु० १.५ ), ४ आक्रामति, ...' ) ॥

८ 'आ' ( इसकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है ) के स्मरण, वाक्य, २ अर्थ हैं ।  
( 'क्रमशः उदा०—१ आ एवं नु मन्यसे, २ आ एवं किल तत्, ...' ) ॥

९ 'आ' के कोप, पीडा, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदाहरण—१ आः पाप ! एषम् अधुनापि प्रजल्पसि, २ आः शीतम्, ...' ) ॥

१. 'निपात एकाजनाङ् ( पा० सू० १.१.१४ ) इति सूत्रेणाङ्मित्रस्य आ' इत्यस्यैव प्रगृह्य संज्ञा विधीयते । सत्यां च तस्यां वक्ष्यमाणटीकोकोदाहरणद्वये 'वृद्धिरेचि' ( पा० सू० ६.१.१८८ ) इति सूत्रेण वृद्धिर्न भवति, किन्तु 'प्लुतप्रगृह्या अचि निश्चयम्' ( पा० सू० ६.१.११५ ) इति प्रकृतिभाव एवेति प्रगृह्यसंज्ञाफलमित्यवधेयम् ॥

१ पापकुत्सेषदर्थे कु २ धिक् निर्भर्त्सननिन्दयोः ।

३ चान्वाचयसमाहारेतररसमुच्चये ॥ २४१ ॥

४ स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ ५ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति ।

६ स्वित्रप्रश्ने च वितर्के च ७ तु स्याद्भेदेऽवधारणे ॥ २४२ ॥

१ 'कु' के पाप, कुत्सा ( निन्दा ), थोड़ा, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—  
१ कुकृत्यम्, कुकर्म, २ कुभार्योऽयम्, ३ कोष्णम्.....' ) ॥

२ 'धिक्' के धराना निन्दा, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ धिक्  
त्वां शासनार्हं विस्मृतार्थम्, धिक् तार्किकान्, २ धिग् वारवधूगामिनं  
त्वाम्,.....' ) ॥

३ 'च' के अन्वाचय ( जहाँ दो कामोंमें—से एक काम अग्रधान हो वह ),  
समाहार ( समूह ) इतरेतरयोग ( एकाधिकका आपसमें मिल जाना ), समु-  
च्चय ( परस्पर निरपेक्ष क्रियाओंका आपसमें अन्वय होना ), विनियोग, तुल्य-  
योगिता, कारण, ७ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ मिहामट गाञ्जानय, २ पाणि  
च पादौ च पाणिपादम्, संज्ञा च परिभाषा च संज्ञापरिभाषम्, ३ अवश्च खदिरश्च  
धवखदिरौ हरिश्च हरश्च हरिहरौ, ४ ईश्वरं च गुरुं च भजस्व, पठति पचति च  
मैत्रः, ५ अहं च त्वं च वृत्रहन्संयुज्याव सनिभ्य आ ( निर० १।४।२१ ), ६  
ध्यातश्चोपस्थितश्च, ७ ग्रामरच गन्तव्यः आतपश्च अर्थात् आतपात्कथं ग्रामो  
गम्यते,.....' ) ॥

४ 'स्वस्ति' के आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य, मङ्गल, ४ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः  
उदा०—१ स्वति भवद्भ्यः, २ स्वस्ति प्रजाभ्यः, स्वस्ति गच्छ, ३ स्वस्तिमान्  
स्वर्गमाप्नोति, स्वस्ति काममिदंतव, ४ स्वस्ति श्रीकुसुमपुरात्—(मुद्रा०),....' ॥

५ 'अति' के प्रकर्ष ( अतिशय ), लङ्घन, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—  
१ अत्युत्तमं भोजनम्, २ मर्बादामतिक्रामति बुधः,.....' ) ॥

६ 'स्वित्' के प्रस्न, वितर्क, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ किं  
स्विन्मङ्गलमस्ति तावकगृहे, २ अधः स्विदासीक्षुपरि स्विदासीत्,.....' ) ॥

७ 'तु' के भेद ( कमी-वैशी ), निश्चय, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—  
१ चौरान्मांसं तु पुष्टिकृत्, २ भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः, भोजनं तु रुचिप्रियम्  
.....' ) ॥

- १ सकृत् सहैकवारं चाप्याऽराद्-दूरसमीपयोः ।  
 ३ प्रतीच्यां चरमे पश्चाद्दुताप्यर्थविकल्पयोः ॥ २४३ ॥  
 ४ पुनः सहार्थयोः शश्वत् ६ साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ।  
 ७ खेदानुकम्पासतोषविस्मयामन्त्रणे 'वत' ॥ २४४ ॥

१ 'सकृत्' के साथ, एक बार सर्वदा, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—  
 १ 'सकृद्गच्छन्ति बालकाः' सह गच्छन्तीत्यर्थः, २ सकृदप्यनाद्विस्मयते पाठः,  
 ३ 'सकृद्युवानो गीर्वाणा' देवाः सदा युवानो भवन्तीत्यर्थः, ..... ) ॥

२ 'आरात्' के दूर, समीप, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ आराद्  
 दुर्जनसंसर्गस्याशयः श्रेयोऽभिलाषुकैः, २ 'सत्वायं स्थापयेदारात्' समीपे स्थाप-  
 येदित्यर्थः, ..... ) ॥

३ 'पश्चात्' के पश्चिम दिशा, अन्तिम, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—  
 १ पश्चादस्तमितो रविः, पश्चादस्तादिः' पश्चिम इत्यर्थः, पश्चाद्गच्छति ..... ) ॥

४ 'उत' के समुच्चय, प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ४ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः  
 उदा०—१ उत भीम उतार्जुनः, २ उत दण्डः पतिष्यति, ३ उत पर्वतं भिन्धात्,  
 उत त्रुटयेद्वज्रः, ४ स्थाणुरत पुरुषः, ..... ) ॥

५ 'शश्वत्' के बारम्बार, साथ, निरन्तर ( सदा ), ३ अर्थ हैं । ( क्रमशः  
 उदा०—१ 'शश्वद्गच्छति' अनेकवारं गच्छतीत्यर्थः, २ शश्वदुभुजते, ३ शश्वतं  
 वैरम्, ..... ) ॥

६ 'साक्षात्' के प्रत्यक्ष ( सामने ), तुल्य, २ अर्थ हैं । ( क्रमशः  
 उदा०—१ साक्षात्पश्यति परमात्मानं योगीश्वरः, २ 'इयं साक्षात्त्वमोः' लक्ष्मीतु-  
 ल्येत्यर्थः, ..... ) ॥

७ 'वत' ( + वत ) के खेद, अनुकम्पा ( दया ), सन्तोष, विस्मय,  
 आमन्त्रण, ५ अर्थ हैं । ( क्रमशः उदा०—१ अहो वत महद्दुःखम्, २ वत  
 निःस्वोऽसि स्वम्, ३ वत पतिरालिङ्गितः, वत प्राप्ता सीता, अहो वतासि  
 स्पृहणीयवीर्यः ( कु० सं० ३।२० ), अहो वतायं ध्रुव आप देशम्, वत वित-  
 रत तोयं तोयवाहा नितान्तरम्, एहि वत सौम्य, ..... ) ॥

१. 'वत' इति पाठान्तरम् ॥

- १ हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ।
- २ प्रति प्रतिनिधौ वीप्सा लक्षणादौ प्रयोगतः ॥ २४५ ॥
- ३ इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ।
- ४ प्राच्यां पुरस्तात् प्रथमे पुरार्थेऽप्रत इत्यपि ॥ २४६ ॥
- ५ यावत्तावत् साकस्येऽवधौ मानेऽवधारणे ।

१ 'हन्त' के हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विषाद, ३ अर्थ हैं । ( क्रमशः उदा०—१ हन्त जीवामो वयम्, २ हन्त दीनो रक्षणीयः, ३ हन्त ते कथयिष्यामि ( गीता १०।१९ ), ४ हन्त आत्मजातारः प्रथमेन त्वयारिणा ( शिशु० वध २।१०२ ), ..... ) ॥

२ 'प्रति' प्रतिनिधि, वीप्सा ( व्यास करनेकी इच्छा ), लक्षण, 'आदि' से—इत्थंभूताख्यान, भाग, प्रतिदान, ६ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अभिमन्युरर्जुनं प्रति, अभिमन्युं प्रति परीक्षित्, २ तीर्थ तीर्थं प्रति याति, वृत्तं वृत्तं प्रति विद्योतते विद्युत्, ३ वृत्तं प्रति विद्योतते विद्युत्, ४ साधु देवदत्तो मातरं प्रति, ५ यदत्र मां प्रति सौऽक्षो दीयताम्, ६ माषानस्मै तिलेभ्यः प्रति प्रयच्छति, .....' ) ॥

३ 'इति' के हेतु, प्रकरण, प्रकाश ( + प्रकर्ष ), 'आदि' से—इस तरह, समाप्ति, विवक्षा, नियम, स्वरूप, ७ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ हन्तीति पलायते, २ गौरश्चो हस्तीति जातिः, ३ 'इति पाणिनिः' पाणिनिर्लोकं प्रकाशत इत्यर्थः, ४ क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः ( शिशु० वध १।३ ), ५ धर्ममाचरेदिति, अत्र इति ( पा० सू० ८।४।६८ ), ६ नक्षत्रास्त्वस्मिन्निति मतुप् ( पा० सू० ५।१।९४ ), ७ वृद्धिरित्येव वा सा वृद्धिः, .....' ) ॥

४ 'पुरस्तात्' के पूर्व दिशा, पहले ( प्रथम ), बीता हुआ ( भूतकाल ), पहले ( आगे ), ४ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ पुरस्ताद् द्वारम् पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः, २ पुरस्ताद्भुक्के प्रथमं भुक् इत्यर्थः, ३ पुरस्ताद्गामोऽभूत्, ४ पित्रोः पुरस्तात् क्रीडति शिशुः, .....' ) ॥

५ 'यावत्, तावत्' के साकस्य ( जितना, उतना ), अवधि ( हद ), प्रमाण, अवधारण ( निश्चय ), ४ अर्थ हैं । ( 'दोनोंके क्रमशः उदा०—१ मम-

१. 'हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु' इति आत्मन्तरम् ॥

१ मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येवथो अथ ॥ २४७ ॥

२ वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनैकोभयार्थयोः ।

४ नु पृच्छायां विकल्पे च ५ पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥ २४८ ॥

यावत्कार्यमस्ति तावत्कुरु, यावदध्यापितं तावत्पठितम्, २ यावद्गन्ता तावत्तिष्ठ, ३ यावत्सुवर्णं तावद्भजतम्, यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्, ४ यावदमन्त्रं ब्राह्मणानामामन्त्रयस्व, ..... ) ॥

१ 'अथो, अथ' के 'मङ्गल, अनन्तर ( बाद ), आरम्भ, प्रश्न, कार्त्स्न्यं, अधिकार, प्रतिज्ञा, अन्वादेश ( एक बार कहे हुएको फिर कहना ), समुच्चय, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अथ परस्मैपदानि, अथातो ब्रह्मजिज्ञासा ( ब्र० सू० १।१।१।१ ), २ स्नानं कृत्वाऽथ भुञ्जीत, ३ अथ शब्दानुशासनम् पात० भा० १।१ आह्नि० १ पस्प० ), ४ अथ वक्तुं समर्थस्त्वम्, ५ अथ क्रतून् ब्रूमः, ६ अथ स्नानविधिः, ७ गौडो भवानथेति ब्रूमः, ८ अथो हमं वेदमध्यापय अथो एनं छन्दोऽपि, ९ अथो खत्वाहुः, भीमोऽथाहुर्नः, ..... ) ॥

२ 'वृथा' के व्यर्थ ( निष्फल ), अविधि ( विधिसे हीन ), २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ वृथा दुग्धोऽनङ्वान्, २ प्रतिभाष्यं वृथा दानमाक्षिकं सौरिकं च यत् ( मनुः ८।१।५९ ), ..... ) ॥

३ 'नाना' के अनेक ( बहुत ), उभय, विना, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ नानाविधाः पुरुषाः, २ नानाविधं न सज्जेत, नानापञ्चावमर्शः संशयः, ३ 'नाना नारीर्निष्फला लोकयात्रा नारीर्विना लोकयात्रा निष्फला भवतीत्यर्थः, ..... ) ॥

४ 'नु' के प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ को नु धावति, को नु भवान्, २ भीमो नु फाणुनो नु योद्धा, देवदत्तो नु यज्ञदत्तो नु पण्डितः, ३ स्थाणुर्नु पुरुषो नु, अहिर्नु रज्जुर्नु, ..... ) ॥

५ 'अनु' के पश्चात् ( बाद ), सादृश्य ( समानता ), लक्षण, तत्त्वाख्यान, भाग, वीप्सा, लम्बाई, ७ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ राममनुगच्छति लक्ष्मणः, २ पितरमनुकरोति बालः, ३ वृक्षमनुधीतते, ४ साधु देवदत्तो मातरमनु, ५ यदन्न मामनुस्यात्तदीयताम्, ६ वृत्तं वृक्षमनुसिञ्चति, ७ अनुगङ्गं काशी, ..... ) ॥

१. 'ओङ्कारश्चापशब्दश्च दावेतो ब्रह्मणः पुरा । कण्ठंभिरवा विनिर्यावौ तस्मान्माङ्गिकानुभौ' ॥ १॥  
इत्यभिधुक्तोक्त्या 'अथ' शब्दस्य माङ्गिकत्वम् ॥

- १ प्रश्नावधारणानुज्ञाऽनुनयामन्त्रणे ननु ।
- २ गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासम्भावनास्वपि ॥ २४९ ॥
- ३ उपमायां विकल्पे वा ४ सामि स्वर्धे जुगुप्सिते ।
- ५ अमा सह समीपे च ६ कं वारिणि च मूर्धनि ॥ २५० ॥

१ 'ननु' के प्रश्न, अवधारण, अनुज्ञा ( आज्ञा ), आमन्त्रण, वाक्यारम्भ, आक्षेप प्रत्युक्ति ( प्रत्युत्तर, जवाब ), ७ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ ननु पठति छात्रः, २ नन्वद्य गच्छामो वयम्, ३ नन्वाद्विश, ४ ननु चण्डि प्रसीद मे, ५ नन्वपोहः प्रसूयते, ६ ननु किमर्थमागतस्वम्, अकार्षीः गृहकार्यं ? ननु करोमि भोः, पठसि पुस्तकम् ? ननु पठामि भोः, .....' ) ॥

२ 'अपि' के निन्दा, समूह ( भी ), प्रश्न, शङ्का, संभावना, दृष्टपरन, आक्षेप, युक्त पदार्थ ( वस्तु ), ८ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अपि सिञ्चेत्पलाण्डुम्, २ स्त्रियं पालय पुत्रमपि, रामो वनं यानि लक्ष्मणोऽपि, ३ अपि, गच्छसि गृहम्?, अपि जानासि किञ्चित्स्वम्?, ४ अपि प्रसीदेद्दुष्टो नृपतिः अपि चौरोऽप्यम् ५ पर्वतमपि शिरसा भिन्धत्, ६ 'अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्या । स्नानविधिचामणि ते । अपि स्वशक्त्या तपसे प्रवर्तसे—' ( कु० सं० ५।११ ), ७ अपि गृहं यां चेदम्, ८ सर्वेषोऽपि स्यात्, .....' ) ॥

३ 'वा' के उपमा, विकल्प, समूह, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ भीमोऽन्तको वा समरे गदापागिरदृश्यत, सर्वो वा क्रुद्धः' सर्प इव क्रुद्धः' इत्यर्थः, २ यवैर्ब्राहिभिर्वा यजेत, ३ 'सा वा शम्भोस्तदाया वा मूर्तिर्जलमयो मम ( कु० सं० २।६० ) 'न तृतायामूर्तिरित्यर्थः, वायुर्वाद्य मेहर्वाद्य दहनो वा, ...' ) ॥

४ 'सामि' के आधा निन्दित, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ सामि संमीलिताक्षी, २ सामि कृतमकृतं स्यात्, सामिकृतमकरवाणकारि, .....' ) ॥

५ 'अमा' के साथ, पास, १ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ 'त्रेणामा भुङ्क्ते' सहेत्यर्थः, २ अमा भावोऽमात्यः, .....' ) ॥

६ 'कम्' के पानी, शिर ( मस्तक ), मुख, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ कक्षं कमलम्, २ कक्षाः केसाः, ३ कुंयुः, .....' ) ॥



- १ इवेत्यमर्थयोरेवं २ नूनं तर्कऽर्थनिश्चये ।  
 ३ तृष्णीमर्थे सुखे जोषं ५ किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥ २५१ ॥  
 ५ नाम प्राकाश-संभाव्यकोधोपगमकुत्सने ।  
 ६ अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ॥ २५२ ॥

१ 'एवम्' के इवाथे ( सदृश ), इत्य तरह, उपदेशादि, निर्देश, निश्चय, स्वीकार, ६ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अग्निरेवं द्विजोऽग्निरिवेत्यर्थः, २ एवं वादिनि देवेषां ( कु० सं० ६।८४ ), ३ एवमर्थाद्, ४ एवं तावत्, ५ एवमेतत्, ६ एवं कुर्मः, .....' ) ॥

२ 'नूनम्' के तर्क, अर्थका निश्चय, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ नूनं शरत्पुष्पा हि काशाः, नूनमयतियऽवनां प्रियः, २ जुष्टेऽपि नूनं शरणं प्रपन्नं, नूनं हन्तास्मि रावणम्, .....' ) ॥

३ 'जोषम्' के मौन ( चुप रहना ), सुख, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ 'जोषमास्व' मौनमास्वेत्यर्थः, २ जोषमास्ते जितेन्द्रियः, जोषमासीत पर्वासु' .....' ) ॥

४ 'किम्' के प्रश्न, निन्दा, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ किंकरोषि ?, किं गतोऽसौ ?, २ स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं, हिताज्ञ यः संश्रुते स किंप्रभुः ( किरा० १ । ५ ), .....' ) ॥

५ 'नाम' ( = नामन् ), के प्राकाश्य ( प्रकट, नाम, संज्ञा ), संभावनाके योग्य, क्रोध, द्वेषपूर्वक स्वीकार करना, निन्दा, झूठा, विस्मय, ७ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ हिमालयो नाम नगाधिराजः ( कु० सं० १ । १ ), २ कथं भविष्यति संगरो नाम, ३ ममापि नाम रावणस्य नरवानरैर्मृत्युः, ५ शत्रोः सकाशाद् गृह्णाति नाम, एवमस्तु नाम, ५ को नामायं प्रलपति मे विगतः सभा-याम्, को नामायं सवितुरुदयः, ६ दृष्टेऽधरे रोदिति नाम तन्वी, ७ अन्धो नाम गिरिमारोहति, .....' ) ॥

६ 'अलम्' के भूषण, पर्याप्त ( काफी ), शक्ति, वारण ( मना करना ), व्यर्थ, ५ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अलङ्कृतां कन्यां प्रयच्छेत्, २ 'अल-मत्स्यस्य धनं' बहुवचनः, ३ अलं हरिः' समर्थ इत्यर्थः, अलं मङ्गो मङ्गाय, ४ अलमतिप्रसङ्गेन, अलं महीपाक तव अमेन—( रघु० २।१४ ), .....' ) ॥

- १ हुं वितर्कं परिप्रश्ने २ समयाऽन्तिकमध्ययोः ।
- ३ पुनरप्रथमे भेदे ४ निर्निश्चयनिषेधयोः ॥ २५३ ॥
- ५ स्यात्प्रबन्धे त्रिरातीते निकटागामिके पुरा ।
- ६ ऊरर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ॥ २५४ ॥
- ७ स्वर्गे परे च लोके स्वः—

१ 'हुम्' के वितर्क, प्रश्न, भय, भर्त्सन ( डराना ), अनिच्छा, ५ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ हुं पयो हुं मृगतृष्णा, चैत्रो हुं मैत्रो हुम् , २ हुं देवदत्तोऽयम् हुं तस्य त्वं सुहृत् , ३ हुं राजसोऽयम् , ४ हुं निर्लज्जः , ५ हुं हुं मुञ्च माम् , .....' ) ॥

२ 'समया' के समीप, बीच, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ रामं समयास्ते लक्ष्मण, समया ग्रामं नदी, २ 'ग्रामं समयास्ते' ग्राममध्य इत्यर्थः, 'समया शैलयोग्रामः' शैलयोर्मध्य इत्यर्थः, .....' ) ॥

३ 'पुनः' ( = पुनर् ) के फिर, भेद ( विशेष ), २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ पुनरागतः, २ किं पुनर्ब्राह्मणः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ( गीता १।३३ ), .....' )

४ 'निः' ( = निर् ) के निश्चय, निषेध, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ निष्पन्नं कार्यम् , निरुक्तम् , २ निर्धनो वणिक, निर्मर्यादः, .....' ) ॥

५ 'पुरा' के प्रबन्ध, बहुत दिन पहले, आनेवाला ( आगामी ) निकट समय, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ 'पुराधीयते' निरन्तरमपाठीदित्यर्थः, २ पुरापि न नव पुराणम् , पुरातनम् , ३ 'गच्छ पुरा देवो वर्षति' समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः, .....' ) ॥

६ 'ऊररी, ऊरी उररी' ३ के विस्तार, स्वीकार, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ 'ऊररीकृत्य, ऊरीकृत्य, उररीकृत्य वा पठे' विस्तार्येत्यर्थः, २ 'ऊररी कृत्य ऊरीकृत्य उररीकृत्य वाऽङ्गां गच्छति' स्वीकृत्य गच्छीत्यर्थः, .....' ) ॥

७ 'स्वः' ( = स्वर् ) के स्वर्ग, परलोक, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—स्वलोकलोकेतरदुर्लभानि, स्वभोगमत्रापि सृजन्त्यमर्त्याः, स्वर्णदीस्वर्णपद्मिन्याः— ( नैष० च० क्रमशः ३।९६, ३।२१, २०।३९ ), २ स्वर्गतस्य जनस्य पारलौकिकं कुर्यात् , स्वर्गतस्य क्रिया कार्या पुत्रैः परमभक्तिः, .....' ) ।

—१ वार्तासंभाव्ययोः किल ।

२ निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासाऽनुनये खलु ॥ २५५ ॥

३ समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ।

४ नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ॥ २५६ ॥

१ 'किल' के वार्ता, सम्भावनाके योग्य, हेतु, झूठा ( असत्य ), अरुचि, \* अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा० — १ जवान कंसं किल वासुदेवः, २ अर्जुनः किल विजेष्यते कुरुन्, ३ स किल कश्चिरेव पुक्तवान्, ४ गोत्रस्त्रलितं किलाश्रुतं कृत्वा, ५ त्वं किल योत्स्यसे, .....' ) ॥

२ 'खलु' के निषेध, वाक्यालङ्कार, जिज्ञासा ( जानने की इच्छा ), अनुनय ४ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा० — १ खलु रुदित्वा, खलु कृत्वा, २ एतस्त्वत्वाहुः, ३ सखल्यधीते शब्दशास्त्रम्, ४ न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत् (नामा० ना० २१०), .....' ) ॥

३ 'अभितः' ( = अभितस् ) के समीप, दोनों तरफ, शीघ्र, साकल्य, सामने, \* अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा० — १ चारानसंभितो गङ्गा, अभितो ग्रामं वसति' समीप इत्यर्थः, २ अभितः कुरु चामरौ, ३ अभितः पठ, अभितो गच्छ' शीघ्र-मित्यर्थः, ४ व्यासोऽभितो रजः' सर्वत इत्यर्थः, ५ आपतन्तमभितोऽरिमपश्यत्, ...' ) ।

४ 'प्रादुः' ( = प्रादुस् ) के नाम, प्रकट, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा० — १ विष्णोर्दश' प्रादुर्भावाः दश नामानीत्यर्थः, २ प्रादुरासीद् बुद्धिर्वादिनः, ...' ) ।

५ 'मिथः' ( = मिथस् ) के अन्योन्य ( परस्पर, आपस ), एकान्त, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा० — १ मिथः प्रहारं कुर्वतः, वसिष्ठकौण्डिन्यमैत्रा-वरुणानां मिथो न विवाहः, २ मिथो मन्त्रयते, ...' ) ॥

१. पुराणसमुच्चये दशवतारा उक्ताः—

'मत्स्याभूदधुतमुग्दिने मधुसितं कूर्मो विधौ माधवे  
चाराहो गिरिजासुते नभसि यद् भूते सिते माधवे ।

सिंहो माद्रपदे सिते हरितियो श्रंक्षामनो माधवे  
रामो गौरितियावतः परमभूद्दामो नवन्यां मथोः ॥ १ ॥

कृष्णोऽष्टम्यां नभसि सिततरे चाश्विने यदशम्यां  
बुधः कल्की नभसि समभूत्पुष्यपठ्यां क्रमेण ।

अहो नध्ये वामनो रामरामो मत्स्यः क्रीडश्चापराहे विभागे ।

कूर्मः सिंहो बौद्धकल्की च सायं कृष्णो रात्रौ कालसम्ये च पूर्वे ॥ २ ॥

इति नि० सिन्धु० पृ० १२ परि० २ ।

१ तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे २ हा विषादशुगतिषु ।

३ अहहृत्यद्भुते खेदे ४ हि हेतावधारणे ॥ २५७ ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

१ 'तिरः' ( = तिरस् ) के अन्तर्धान ( छिपना ), निर्झा, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ इति व्याहृत्य विबुधान्विश्रयोतिस्तरोदधे ( कु० सं० २। ६२ ), २ तिरोवर्तते भास्करः, '.....' ) ॥

२ 'हा' के विषाद, शोक, दुःख, ३ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ हा गतो रमणीयः कालः, २ हा वनं गतो रामचन्द्रः, ३ हा हतोऽस्मि मन्दभार्यः, '.....' ) ॥

३ 'अहह' ( + अहहा ) के अद्भुत, खेद, २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अहह बुद्धिप्रकर्षो नृपालस्य, २ अहह नीतो मया व्यसनेनामूढ्यः, कालः, अहह हता विधवा बाला, '.....' ) ॥

४ 'हि' के हेतु, अवधारण ( निश्चय ), २ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ अग्निरत्रास्ति धूमो हि दृश्यते, २ चन्द्रो हि शीतलः, '.....' ) ॥

विशेषः—'नानार्थ अव्यय' शब्दों के अव्ययमात्र होनेसे अन्य प्रकरणोंके समान ( 'अव्य०' ) इस तरह प्रत्येक शब्दके बाद नहीं लिखा गया है, अतः ३।३।२४० से ३।३।२५७ तक के प्रत्येक शब्दोंकी 'अव्यय' समझना चाहिए ॥

इस 'नानार्थवर्ग' में ग्रन्थकारके अतिरिक्त 'अनेकार्थसंग्रह, मेदिनीकोष, विश्वकोष, अभिधानलमाला, '.....' कोषग्रन्थोंमें लिखित अतिप्रसिद्ध अर्थ तथा ग्रन्थकारके लिखित 'च, तु, अपि, '.....' शब्दसे संगृहीत-टीकाकारोंके सम्मत बाहरी अर्थ भी लिखे गये हैं । कहीं-कहीं आवश्यक स्थलों में उदाहरण आदि भी दिये गये हैं । टीका बढ़ानेके भयसे उन्हें पृथक् लिखना या सर्वथा त्याग करना अनुचित-सा प्रतीत होनेसे एकत्र ही लिखा गया है । यद्यपि पूर्वोक्त अव्यय शब्द भी 'कान्त, खान्त, गान्त आदि क्रमसे ही कहे गये हैं तथापि इन नानार्थ अव्यय शब्दोंको 'कान्त अव्यय शब्द, खान्त अव्यय शब्द, '.....' टीकावृद्धिके भयसे नहीं कहा गया है । पाठकगण स्वयं कान्त, खान्त, गान्त, '.....' अव्ययों को समझ लें ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥



## ४. अथाव्ययवर्गः ।

- १ चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।  
 ५ मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्षणमसकृत्समाः ॥ १ ॥  
 ३ स्नाग्भटित्यञ्जसाऽऽहाय द्राक् मडङ्गु सपदि द्रुते ।  
 ४ बलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥  
 ५ पृथग्विनान्तरेणते हिरुङ् नाना च वर्जनै ।  
 ६ यत्तद्यतस्ततो हेताव ७ साकल्ये तु विच्यन ॥ ३ ॥  
 ८ कदाचिज्जातु ९ सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।  
 १० आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं ११ व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥

## ४. अथाव्ययवर्गः ।

१ चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, ( + आद्य शब्दसे—चिरेण, चिरात्, चिरम्, चिरे ) ३ का 'देर' अर्थ है ।

२ मुहुः ( = मुहुस् ) पुनः पुनः ( = पुनः पुनर् ) शश्वत्, अभीक्षणम्, असकृत्, ५ का 'बारबार' अर्थ है ॥

३ स्नाक्, झटिति, अञ्जसा, अहाय, द्राक्, मडङ्गु, सपदि, ७ के 'झटपट' 'उसी समय' अर्थ है ॥

४ बलवत्, सुष्टु, किमुत, सु, अति, अतीव, ६ का 'अतिशय' अर्थ है ॥

५ पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुङ्, नाना, ६ का 'वर्जन' ( विना ) अर्थ है ॥

६ यत्, तत्, यतः ( = यतस् ) ततः ( ततस् + येन, तेन ), ४ का 'कारण' अर्थ है ॥

७ चित्, चन, २ का 'असाकल्य' ( असम्पूर्णता ) अर्थ है ॥

८ कदाचित्, जातु, २ का 'कभी' अर्थ है ॥

९ सार्धम्, साकम्, सत्रा, समम्, सह ( + सङ्गः = सङ्गप् ), ५ का 'साथ' अर्थ है ॥

१० प्राध्वम्, १ का 'अनुकूलता' अर्थ है ॥

११ वृथा, मुधा, २ का 'व्यर्थ' अर्थ है ॥

- १ आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।  
 २ तु हि च स्म ह वै पादपूरणे ३ पूजने स्वति ॥ ५ ॥  
 ४ दिवाऽह्नीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनावपि ।  
 ६ तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ सम्बोधनार्थकाः ॥ ६ ॥  
 स्युःप्याट्प्याङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ।  
 ९ अतर्किते तु सहसा स्यात् १० पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥  
 ११ स्वाहा देवहविर्भने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।  
 १२ किञ्चिदोषन्वतागल्पे १३ प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥  
 १४ व वा यथा तदेवैवं साम्ये—

३ आहो ( + अहो ), उताहो, किमुत, किम्, किमु, उत, ५ का 'वितर्क' करना, विकल्प' अर्थ है ॥

२ तु, हि, च, स्म, ह, व, ६ श्लोक के चरण को पूरा करने में प्रयुक्त होते हैं ॥

३ सु, अति, २ का 'पूजा बड़ाई' अर्थ है ॥

४ दिवा, १ का 'दिन में' अर्थ है ॥

५ दोषा, नक्तम् ( + उपा ) २ का 'रात में' अर्थ है ॥

६ साचि, तिरः ( = तिरस् ) २ का 'तिर्छा' अर्थ है ॥

७ पाट्, प्याट्, अङ्ग, हे, है, भोः ( = भोस् ), ६ का 'सम्बोधन' ( पुकारना, बुलाना ) अर्थ है ॥

८ समया, निकषा, हिरुक्, ३ का 'समीप' अर्थ है ॥

९ सहसा, १ का 'एकाएक' अर्थात् अतर्कित (विना विचार किये) अर्थ है ॥

१० पुरः ( पुरस् ) पुरतः ( = पुरतस् ), अग्रतः ( = अग्रतस् ), ३ का 'आगे पहले' अर्थ है ॥

११ स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वधा, ये ५ 'देवताओं को हविष्य देनेमें' प्रयुक्त होते हैं, (इनमें 'स्वधा' शब्द, 'पितरोंको कव्य देनेमें' प्रसिद्ध है) ॥

१२ किञ्चित्, ईषत्, मनाक्, ३ का 'थोड़ा' अर्थ है ॥

१३ प्रेत्य, अमुत्र, २ का 'परलोक' अर्थ है ॥

१४ व ( + वत् ), वा, यथा, तथा, इव, एवम्, ६ का 'समानता' ( बराबरी, उपमा, सादृश्य ) अर्थ है ॥

—१ अहो ही च विस्मये ।

- २ मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां ३ सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥  
 ४ दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽऽथान्तरेऽन्तरा ।  
 अन्तरेण च मध्ये १युः ६ प्रसह्य तु द्वितीयकम् ॥ १० ॥  
 ७ युक्ते द्वे सांप्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।  
 ९ अभावे न्ह्य नो नापि १० मास्म माऽलं च वारणे ॥ ११ ॥  
 ११ पक्षान्तरे चेद्यदि च १२ तत्त्वे त्वद्धाऽजसा द्वयम् ।  
 १३ प्राकाशये प्रादुराविः स्यात् १४ दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

१ अहो, ही, २ का 'आश्चर्य' अर्थ है ॥

२ तूष्णीम्, तूष्णीकाम्, २ का 'चुप, मौन' अर्थ है ॥

३ सद्यः ( सद्यस् ), सपदि, २ का 'इसी समय' ( अभी ) अर्थ है ॥

४ दिष्ट्या, समुपजोषम् ( + शम्, अपजोषम्, उपजोषम् ), २ का 'आनन्द' अर्थ है ॥

५ अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण, ३ का 'मध्य, बीच' अर्थ हैं ॥

६ प्रसह्य, १ का 'दृठ' ( बलात्कारपूर्वक ) अर्थ है ॥

७ सांप्रतम्, स्थाने, २ का 'युक्त, उचित' अर्थ है ॥

८ अभीक्ष्णम्, शश्वत्, २ का 'निरन्तर, लगातार' अर्थ है ॥

९ नहि, 'अ, नो, न, ४ का 'नहीं' अर्थ है ॥

१० मास्म, मा, अलम्, ३ का 'वारण, मना करना' अर्थ है ॥

११ चेत्, यदि, २ का 'पक्षान्तर' ( यह वा वह, अथवा ) अर्थ है ॥

१२ अद्धा, अजसा, २ का 'तत्त्वे' ( ठीक-ठीक विषय ) अर्थ है ॥

१३ प्रादुः ( = प्रादुस् ), आविः ( = आविस् ), २ का 'प्रकट' अर्थ है ॥

१४ ओम्, एवम्, परमम्, ३ का 'स्वीकार, अनुमिति' अर्थ है ॥

१. 'नञोऽयमकारः' इति वदतो मानुजिदीक्षितस्योक्तिस्तु—अशब्दः स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थप्रतिषेधयोः । अनुकम्पायाच्च यथा—' ( मेदि० पृष्ठ० १९३ इलो० २ ) इति मेदिनी-वचनात्, 'अ स्यादभावे स्वल्पार्थे विष्णावेष त्वनव्ययम्' ( अने० सं० परिशिष्टकाण्डे इलो० १ ) इति हैमवचनात्, 'अ स्यादभावे स्वल्पार्थे—' इति विश्वाच्च चिन्त्या । अत एव क्ली० स्वा० उक्तस्य 'विप्रवन्न द्रुपे' इति विवरणात्मकस्य 'अविप्र इव माषसे' इति समस्त-वाक्यस्य सगतिरित्यवधेयम् ॥

- १ समन्ततस्तु परितः सर्वतो विधगित्यपि ।  
 २ 'अकामानुमतौ कामरमस्योपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥  
 ४ ननु च स्याद्विरोधोक्तौ ५ कश्चित्कामप्रवेदने ।  
 ६ निःषमं दुःषमं गह्यं ७ यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥  
 ८ मृषा मिथ्या च वितथे ९ यथार्थं तु यथातथम् ।  
 १० स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥  
 ११ प्रागतीतार्थकं १२ नूनमतश्यं निश्चये द्वयम् ।  
 १३ संवत्सरे १४ धरे त्वर्वा १५ गामेवं १६ स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

१ समन्ततः (= समन्ततस्), परितः (= परितस्), सर्वतः (= सर्वतस्), विधक्, ४ का 'चारों ( सब ) तरफ' अर्थ है ॥

२ कामम्, १ का 'विना इच्छासे स्वीकार ( अनुमति )' अर्थ है ॥

३ अस्तु, १ का 'असूया-पूर्वक स्वीकार' अर्थ है ॥

४ ननु च? ( + नाम ), १ का 'विरोधोक्ति' अर्थ है ॥

५ कश्चित्, १ का 'इष्ट प्रश्न' अर्थ है ॥

६ निःषमम्, दुःषमम्, २ का 'निन्दनीय' अर्थ है ॥

७ यथास्वम्, यथायथम्, २ का 'यथायोग्य' अर्थ है ॥

८ मृषा, मिथ्या, २ का 'असत्य' अर्थ है ॥

९ यथार्थम्, यथातथम्, २ का 'सत्य' अर्थ है ॥

१० एवम्, तु, पुनः ( = पुनर् ), वै, वा, ५ का 'निश्चय' अर्थ है ॥

११ प्राक्, १ का 'बीता हुआ, पहले समयमें' अर्थ है ॥

१२ नूनम्, अवश्यम्, २ का 'निश्चय' ( जरूर ) अर्थ है ॥

१३ संवत्, १ का 'वर्ष, साल' अर्थ है ॥

१४ अर्वाक्, १ का 'पुराने समयके बाद' अर्थ है ॥

१५ आम्, एवम्, २ का 'हाँ' अर्थ है ॥

१६ स्वयम्, १ का 'आपसे आप' अर्थ है ॥

१. 'अकामानुमतौ' इति पाठान्तरम् ।

२. 'ननु च' निपातद्वयस्य समाहारद्वन्द्वः इति मा० दी० ।



- १ अल्पो नीचेऽर्मद्वत्युच्चैः ३ प्रायो भूम्यधद्रुते शनैः ।  
 ५ सना नित्ये ६ बहिर्बाह्ये ७ स्मातोतेऽस्तमदर्शने ॥१७॥  
 ९ अस्ति सत्त्वे १० 'रुषाक्तावु ११ ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।  
 १३ 'हुं तर्के १४ स्यादुषा रात्रेऽवसाने १५ नमो नतौ ॥१८॥  
 १६ पुनर्थेऽङ्ग १७ निन्दायां दुष्टु १८ सुष्टु प्रशंसने ।  
 १९ सायं साये २० प्रगे प्रातः प्रभाते २१ निकषाऽन्तिके ॥१९॥

- १ नीचैः ( = नीचैस् ), १ का 'छोटा, धीरे-धीरे, नीचे' अर्थ है ॥  
 २ उच्चैः ( = उच्चैस् ), १ का 'ऊँचा, अधिक, जल्दी-जल्दी' अर्थ है ॥  
 ३ प्रायः ( = प्रायस् ), १ का 'बाहुल्य, अधिकतर' अर्थ है ।  
 ४ शनैः ( = शनैस् ), १ का 'धीरे-धीरे' अर्थ है ॥  
 ५ सना ( + सनत्, सनात् ), १ का 'नित्य' अर्थ है ॥  
 ६ बहिः ( = बहिस् ), १ का 'बाह्य' अर्थ है ॥  
 ७ स्म, १ का 'धीता हुआ' अर्थ है ॥  
 ८ अस्तम्, १ का 'अस्त' ( नहीं दिखाई देना ) अर्थ है ॥  
 ९ अस्ति, १ का 'है' अर्थ है ॥  
 १० उ ( + उम् ), १ का 'क्रोधसे कहना' अर्थ है ॥  
 ११ ऊं ( = ऊञ् ) १ का 'पूछना' ( + क्रोधसे पूछना क्षी० स्वा० ) अर्थ है ॥  
 १२ अयि, १ का 'शान्त करना, रुठे हुएको मनाना' अर्थ है ॥  
 १३ हुम् ( + स्यात् 'जैसे—स्याद्वादिनो जैनाः'), १ का 'तर्क' अर्थ है ॥  
 १४ उषा, १ का 'रात्रिका अन्त, सबेरा' अर्थ है ॥  
 १५ नमः ( = नमस् ), १ का 'प्रणाम' अर्थ है ॥  
 १६ अङ्ग, १ का 'फिर' अर्थ है ॥  
 १७ दुष्टु, १ का 'निन्दा' अर्थ है ॥  
 १८ सुष्टु, १ का 'बढ़ाई, प्रशंसा' अर्थ है ॥  
 १९ सायम्, १ का 'सायंकाल, साँझ' अर्थ है ॥  
 २० प्रगे, प्रातः ( = प्रातर ), २ का 'प्रातःकाल, सुबह' अर्थ है ॥  
 २१ निकषा, १ का 'समीप' अर्थ है ॥

- १ परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।  
 २ अद्यात्राह्वयश्च पूर्वेऽहीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥  
 तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।  
 ४ उभयद्युश्चोभयेद्युः ५ परे त्वहि परेद्यवि ॥ २१ ॥  
 ३ ह्यो गतेऽनागतेऽहि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ।  
 ९ तदा तदानीं १० युगपदेकदा ११ सर्वदा सदा ॥ २२ ॥  
 १२ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं १३ तथा ।

१ परुत्, परारि ऐषमः ( = ऐषमस् ), क्रमशः १ १ का 'परसाल, परियार साल, इस वर्ष' १-१ अर्थ हैं ॥

२ अद्य, १ का 'आज' अर्थ है ॥

३ पूर्वेद्युः ( = पूर्वेद्युस् ), उत्तरेद्युः ( = उत्तरेद्युस् ), अपरेद्युः ( = अपरेद्युस् ), अधरेद्युः ( = अधरेद्युस् ), अन्येद्युः ( = अन्येद्युस् ), अन्यतरेद्युः ( = अन्यतरेद्युस् ) इतरेद्युः ( = इतरेद्युस् ), क्रमशः १-१ का 'पूर्व' (पहले बीता हुआ ) दिन, उत्तर ( आगे आनेवाला ) दिन, पर ( आगामी ) दिन, हीन ( बीता हुआ ) दिन, अन्य ( दूसरे ) किसी दिन, दो दिनोंमें-से किसी एक दिन, इतर ( दूसरे ) दिन' १-१ अर्थ हैं ।

४ उभयद्युः ( = उभयद्युस् ), उभयेद्युः ( = उभयेद्युस् ), २ का 'दो दिन' अर्थ है ॥

५ परेद्यवि, १ का 'आनेवाला दिन' अर्थ है ॥

६ ह्यः ( = ह्यस् ), १ का 'बीता हुआ कल' अर्थ है ॥

७ श्वः ( = श्वस् ), १ का 'आनेवाला कल' अर्थ है ॥

८ परश्वः ( परश्वस् ), १ का 'आनेवाला परसों' अर्थ है ॥

९ तदा, तदानीम्, २ का 'तब' अर्थ है ॥

१० युगपत् ( = युगपद् + युगपत् ), एकदा, २ का 'एक समय' अर्थ है ॥

११ सर्वदा, सदा, २ का 'हमेशा, हर समय' अर्थ है ॥

१२ एतर्हि, संप्रति, इदानीम्, अधुना, सांप्रतम्, ५ का 'इस समय' अर्थ है ॥

१३ तथा, १ का 'समुच्चय ( और ) उस तरह' २ अर्थ हैं ॥

१ दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगाद्यः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥



५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ सलिङ्गशास्त्रैः सञ्ज्ञादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

१ 'प्राक्' के 'पूर्व दिशामें' १, पूर्व दिशासे २, पूर्व दिशा ३, पूर्व देशमें ४, पूर्व देशसे ५, पूर्व देश ६, पूर्वकालमें ७, पूर्व कालसे ८, पूर्व काल ९, ये ९ अर्थ हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ 'प्राग्वसति' पूर्वस्यां दिशि वसतीत्यर्थः । २ 'प्रागागतः' पूर्वस्या दिश आगत इत्यर्थः । ३ 'प्रागस्ति' पूर्वा दिग्वासीत्यर्थः । ४ 'प्राग्वसति' पूर्वस्मिन्देसे वसतीत्यर्थः । ५ 'प्रागागतः' पूर्वस्माद्देशादागत इत्यर्थः । ६ 'प्रागतः' पूर्वस्मिन्काले गत इत्यर्थः । ७ 'प्रागासीत्' पूर्वस्मिन्काल आसीदित्यर्थः । ८ 'प्राक् प्रचलितेयं प्रथास्ति' पूर्वस्मात्कालादियं प्रथा प्रचलतीत्यर्थः । ९ 'प्राग्वर्तते' पूर्वकालो वर्तते इत्यर्थः' इसी तरह 'उदक्' के उत्तर दिशामें, ..... ९ अर्थ, 'प्रत्यक्' के पश्चिम दिशामें ..... ९ अर्थ, 'अवाक्' के दक्षिण दिशा में ..... ९ अर्थ होते हैं । उनके उदाहरण भी उसी तरह समझ लेना चाहिये ॥ ) ।

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥



५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ पाणिनि आदि ऋषियोंके निर्मित लिङ्ग-विधान करनेवाले शास्त्रों अर्थात् सूत्रों ( 'जैसे—स्त्रियां क्तिन् ( पा० सू० ३।३।९४ ), 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' ( पा० सू० ३।३।११८ ) 'नपुंसके भावे क्तः' ( पा० सू० ३।३।११४ ), 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' ( वार्त्ति० ), ..... ) के सहित, सन् आदि (आदिसे—क्यच्, ...) कृत्, तद्धित और समाससे उत्पन्न प्रत्ययोंसे बननेवाले प्रायः पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में संकीर्णवर्गके समान लिङ्गका तर्क करना चाहिये । ( 'क्रमशः उदा०—१ सन्' प्रत्यय से उत्पन्न शब्द जैसे—तितिक्षा, जुगुप्सा, पिपासा ..... , २ 'आदि' शब्दसे संगृहीत 'क्यच्'

‘अनुक्तैः संप्रदे लिङ्गं संकीर्णवदिदोन्नयेत् ॥ १ ॥

१ लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—पुत्रकाम्या, ...। ३ ‘कृत्’ प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—श्वपाकः, कुम्भकारः, सरसिजम्, ...। ४ ‘तद्धित’ प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—औपगवः, वैयाकरणः, नैयायिकः, गार्म्यः, वात्स्यः, ...। ५ ‘समास’ प्रत्यय (‘टच्, अच्, अ...’) से उत्पन्न शब्द जैसे—वायुसखोऽनलः, धर्मराजः, ब्रह्मवर्चसम्, अर्धर्चः, ... ) । ‘संकीर्णवर्ग’ के समान लिङ्ग समझना चाहिये अर्थात् ‘संकीर्णवर्ग’ में जिस तरह प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ आदि ( क्रियाविशेषण, ... ) से लिङ्गका तर्क किया गया है उसी तरह यहाँ भी तर्क करना चाहिये । ( उदा०—१ प्रकृतिके अर्थसे जैसे—‘अर्धर्चाः पुंसि च’ ( पा० सू० २।४।३१ ) इस सूत्रसे ‘अर्धर्चः, अर्धर्चम्’ यहाँपर ‘अर्धर्च’ शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग, ... ) । २ प्रत्ययके अर्थसे जैसे—‘स्त्रियां क्तिन्’ ( पा० सू० ३।३।९४ ) इस सूत्रसे ‘कृतिः, संपत्तिः, विपत्तिः, भूतिः, ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और ३ ‘आदि’ शब्दसे संगृहीत क्रिया-विशेषणसे जैसे—‘साधु भवति, शोभनं पचति, ...’ में साधु और शोभन शब्द नपुंसक हुए हैं, उसी तरह इस ‘लिङ्गादिसंग्रहवर्ग’ में भी समझना चाहिये ॥

१ यदि पहले और यहाँ कहे हुए वाक्योंसे बाध (निषेध) नहीं किया गया हो तो शेष लिङ्गका विधान अपने विषयमें व्यापक होता है अर्थात् अपवाद ( बाधक ) विषयको छोड़कर सर्वत्र सामान्यतः उक्त लिङ्ग होता है । ( ‘उदा०—‘स्वर्गयागादिमेवाब्धि—’ ( ३।५।११ ) इस वाक्यसे स्वर्ग-पर्याय शब्दको सामान्यतः पुंलिङ्ग कहा गया है तथापि ‘स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः । सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्’ ( १।१।६ ) इस अपवाद वचनसे ‘स्वर्’ शब्दको अव्यय, ‘द्यो, दिव्’ शब्दको स्त्रीलिङ्ग, और ‘त्रिविष्टप’ शब्दको नपुंसक कहनेके कारण ये ( स्वर् द्यो, दिव्, त्रिविष्टप ) शब्द पुंलिङ्गमें प्रयुक्त नहीं होते, किन्तु उक्त विशेष वचन के अनुसार क्रमशः ‘अव्यय, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग’ में ही प्रयुक्त होते हैं, ग्रन्थ बढ़नेके

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रिया२मीदृद्विरामैकाचसयोनिप्राणिनाम् च ॥ २ ॥

३ गाम' विद्युन्निशावल्लीवीणादिभूचदीहियाम् ।

भयसे उन स्वरादि शब्दों की भिन्न लिङ्गमें यहाँ पुनः नहीं कहा गया है ।

२ उदा०—पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः' (३।५।११) इस सामान्य वचनसे 'भेद, अनुचर, पर्याय' के सहित 'सुर और असुर' पुंलिङ्ग हैं' ऐसा कहा गया तथापि'.....'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' ( १।१।५ ) इस अपवाद वचनसे 'दैवत' शब्दको पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग और 'देवता' शब्दको स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, अतः इन (दैवत्, देवता) शब्दोंको छोड़कर 'सुर, असुर' के पर्याय आदि शब्द पुलिङ्ग होते हैं । इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में विशेष वचन सामान्य वचनका बाधक होता है । ( 'जैसे—'अदन्तैर्द्विगुरेकार्थः' ( ३।५।३ ) इस सामान्य वचनसे अदन्त शब्दसे आगे रहनेपर एकार्थ द्विगुको स्त्रीलिङ्ग कह कर 'न स पात्रयुगादिभिः' ( ३।५।३ ) इस विशेष वचन से 'पात्र, युग, भुवन' आदि शब्दोंके आगे रहनेपर स्त्रीलिङ्गका निषेध किया गया है, अत एव 'अष्टाध्यायी, त्रिलोकी, दशमूली' आदि शब्दोंके समान 'पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्, .....शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं होते हैं' ) ॥

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँ से आगे 'पुंस्त्वे.....' ( ३।५।११ ) तक 'स्त्रियाम्' का अधिकार होनेसे यहाँसे 'पुंस्त्वे.....' (३।५।११) के मध्यवर्ती ( बीचवाले ) सब शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

२ एक अच् वाले ईकारान्त १, ऊकारान्त २; तथा योनि ( भग ) सहित प्राणियों के नाम ३ स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०—१ धीः, श्रीः, हीः, ..... । २—भू, स्नूः, द्रूः, जूः, भूः, ..... । ३ माता ( = मातृ ), दुहिता ( = दुहितृ ), याता ( = यातृ ), प्रसूः, स्वसा ( = स्वसृ ), योषित्, करेणुः, सुरभिः, ..... ) ॥

३ विद्युत् ( बिजली ) १, निशा ( राशि ) २, वल्ली ( लता ) ३, वीणा

१. 'विद्युन्निशावल्लीवीणादिभूचदीहियाम्' इति पाठान्तरम् ।

१ अदन्तैद्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

२ तल्वृन्दे येनिकट्यवाः—

( + वाणी ) ४, दिक् (दिशा) ५, भू (जमीन) ६, मदी ७ ही (लाज + धी<sup>२</sup> अर्थात् बुद्धि), के नामवाले शब्द छीलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ विद्युत्, चपला, सौदामिनी, तडित्, .....। निशा, रात्रिः, यामिनी, .....। ३ वल्ली, व्रतती, लता, .....। ४ वीणा, वल्लकी, विपञ्ची, कच्छपी .....। + वाणी, भारती, ब्राह्मी, वाक्, .....। ५ दिक्, ककुप्, आशा, हरित् .....। ६ भूः, पृथ्वी, मही, इला, .....। ७ नदी, सरित्, आपगा, .....। ८ व्रीडा, लज्जा, त्रपा, .....। + धीः, बुद्धिः, मतिः, शेमुषी, चित्, संवित्, ..... ) ॥

१ अदन्त ( ह्रस्व अकारान्त ) शब्द ( 'जैसे—मूल, लोक, अक्षर, अध्याय, .....' ) के उत्तर पदमें रहनेपर समाहार ( समूह ) अर्थमें द्विगु समास-संज्ञक शब्द छीलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे—दशमूली, त्रिलोकी, पञ्चाक्षरी, अष्टाध्यायी, .....' ) । किन्तु पात्र, युग आदि ( भुवन, पुर, ..... ) अदन्त शब्द उत्तर पदमें रहनेपर द्विगु समास-संज्ञक शब्द छीलिङ्ग नहीं होते हैं । ( 'जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्', त्रिभुवनम् त्रिपुरम्, .....' ) । 'अदन्त' ग्रहणसे 'पञ्चकुमारि, दशधेनु' ..... में और 'एकार्थ' ( समाहार ) ग्रहण करनेसे पञ्चकपालः, पञ्चकपालौ, पञ्चकपालाः, ..... में छीलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ समूह में १ तल् प्रत्ययान्त, और य २, इनि ३, कट्य ४, त्र ५, प्रत्य-

१. 'इयवृद्धन्तं' ( २ । ५ । ५ ) इति वक्ष्यमाणवचनेनैव 'वीणा'पर्यायानां 'कच्छपी-विपञ्ची'त्यादीनां स्त्रीत्वसिद्धौ 'धीणा' ग्रहणस्याकिञ्चित्करत्वात्, तत्स्थाने 'वाणी' शब्द, पाठ एव समुचितस्तत्पर्यायानां 'ब्राह्मी, गीर्भारती'त्यादिशब्दानां स्त्रीत्वनिर्देशावश्यकत्वादित्यवधेयम् ।

२. 'स्त्रियामीदृदिरामैकाच्' ( ३।५।२ ) इति वचनेनैव 'ही'पर्यायवतां 'लज्जादीनां' स्त्रीत्वसिद्धौ 'ही' शब्दस्यात्राकिञ्चित्करत्वात् तत्स्थाने 'धी'शब्दपाठ एव समुचितः, 'धी'पर्यायवतां 'चित्संविदा' दीनां स्त्रीत्वबोधकवचनावश्यकत्वादित्यवधेयम् ।

३. 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' ( वार्ति० १५५६ ) इति भाष्येष्टेः ।

४. 'पात्राद्यन्तस्य न' ( वार्ति० १५५९ ) इति भाष्येष्टेः ।

५. 'समासान्ताः' ( पा० सू० ५।४।६८ ) इति सूत्रभाष्ये तु 'त्रिपुरी'ति दृश्यते ।

—१ 'वैरमैथुनिकाविवुन् ।

२ 'स्त्रीभावादावनक्तिण्वुल्ण्वुक्वयव्युजिअङ्निशाः ॥ ४ ॥

यान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ ग्रामता, जनता, वन्धुता, देवता,.....। २ पाश्या, वात्या,.....। ३ खलिनी, शाकिनी, डाकिनी, पद्मिनी,.....। ४ रथकट्या,.....। ५ गोत्रा,.....') । 'वृन्' ग्रहण करनेसे मुख्यः, दण्डी ( = दण्डिन् )' यहां स्त्रीलिङ्ग नहीं हुआ है ।

१ वैर १, मैथुनिक २ आदि अर्थमें विहित वुन्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । 'आदि' शब्दसे वीप्सामें विहित 'पादशतस्य—' (पा० सू० ५।४।१), दण्डव्ययसर्गयोश्च' ( पा० सू० ५।४।२ ) से विहित 'वुन्' प्रत्ययान्त भी स्त्रीलिङ्ग होता है । ( 'क्रमशः उदा०—१ अभ्रमहिषिका, काकोलूकिका,.....। २ अत्रिभरद्वाजिका, कुत्सकुशिकिका,.....। 'आदि'से 'संगृहीतके क्रमशः उदा०—१—२ द्विपदिकां, द्विशतिकां वा ददाति, दण्डितो वा,.....। 'वुन्' ग्रहण 'वुज्'का उपलक्षण है अतः 'काठिकया काशिका, गर्तिकया श्लाघते,..... यहाँ भी स्त्रीलिङ्ग होना है' ) ।

२ 'स्त्रियां क्तिन्' ( पा० सू० ३।३।९४ ) के 'स्त्रियाम्' का अधिकार कर भाव आदि अर्थमें विहित 'अनि १, क्तिन् २, ण्वुल् ३, णच् ४, ण्वुच् ५, ऋयप् ६, युच् ७, इज् ८, अङ् ९, नि ( + अ ) १०, श ११, प्रत्यय जिसके अन्तमें हों, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । 'क्रमशः उदा०—१ अकरणिः, अजननिः,....। २ कृतिः, भूतिः, चितिः,.....। ३ प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका,.....। ४ व्यावकोशी, व्यात्युत्ती, व्यावहासी,.....। ५ शार्थिका, इक्षुभक्षिका,.....। ६ ब्रज्या, इज्या, समज्या, निषद्या, ब्रह्महत्या,.....। ७ कारणा, हारणा, आसना, कामना,.....। ८ वापिः, वासिः, कारिः, गणिः,.....। ९ पचाभिदा, घटा, मृदा,.....। १० श्लानिः, श्लानि, अरणिः, धमनिः,.....। + चिकीर्षा, पुत्रकाम्या,.....। ११ क्रिया, इच्छा,.....') 'स्त्रीभावाद्' ग्रहण करनेसे, मृषोद्यम् यहाँपर स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है ।

१. 'वैरमैथुनिकाविवुः' इति पाठान्तरम् ।

२. ....क्वयव्युजिअङ्निशाः' इति पाठान्तरम् ।

- १ 'उणादिषु निरुरीश्च उथावूडन्तं चलं स्थिरम् ।
- २ तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवाण दिक् ॥ ५ ॥
- ३ घञो अः सा क्रियाऽस्यां चेद्दण्डपाता द्वि फाल्गुनी ।  
श्यैनपाता च मृगया तैलपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥

१ उणादिमें विहित 'निरू १, ऊर् २, ई ३, प्रत्ययान्त शब्द तथा चल ( जङ्गम ) अथवा अचल ( स्थावर ) जो 'ङी ( डीप् वा डीप् ) ४ आप् ( टाप् ) ५, ऊङ् ६' प्रत्ययान्त शब्द वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ श्रेणिः, श्रेणिः, ज्यानिः, ..... । २ कर्षूः, चमूः, अलावूः, जम्बूः, ..... । ३ लक्ष्मीः, अत्रीः, तरीः, तन्त्रीः, ..... । ४ चल ( जङ्गम ) जैसे—नारी, ..... । अचल ( स्थावर ) जैसे—कदली, कन्दली, ..... । ५ चल ( जङ्गम ) जैसे—शिवा, रमा, गङ्गा, ... । अचल ( स्थावर ) जैसे—खट्वा, माला, ..... । ६ चल ( जङ्गम ) जैसे—ब्रह्मबन्धूः, वामोरुः, करभोरु, ..... । अचल ( स्थावर ) जैसे—कर्कन्धूः, अलावूः, ..... ) ॥

२ खेलमें 'मुष्टि पल्लव' आदि ( मुसल, दण्ड, ..... ) का प्रहरण ( प्रहार, मार ) इसका है, इस अर्थमें 'ण' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—मौष्ट्या, पाल्लवा, मौसला, दण्डा, ..... ) ॥

३ दण्डपात इस फाल्गुनी तिथि में है १, श्येनवात ( बाज्का गिरना ) इस मृगया ( शिकार ) क्रिया में है २, तैलपात ( तेलका गिरना ) इस स्वधा ( पिण्ड-दान ) क्रिया में है ३, इस अर्थमें 'घञ्' प्रत्ययान्तसे विहित 'अ' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां तिथौ विद्यते इति दण्डपाता फाल्गुनी तिथिः । २ श्येनपातोऽस्यां मृगयायाम्, इति श्येनपाता मृगया । ३ तैलपातोऽस्यां स्वधायाम् इति तैलपाता स्वधा' ) 'इति दिक्' कहने से मुसलपातोऽस्यामिति 'मौसलपाता' भूमिः आदि का संग्रहण है ॥

१. 'उणादिष्वनिरुरीश्च' इति पाठान्तरम् एतत्पाठे 'धरणिः, धमनिः, शरणिः' इत्या-  
मुदाहरणं श्रेयम् ॥



१ स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिविवक्षाऽपचये यदि ।

२ लङ्का शोफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

सिध्रका 'सारिका' हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।

तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

१ अपचय ( न्यूनता, कमी ) विवक्षित रहनेपर मृणाली आदि ( कुम्भी प्रणाली, ..... ) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे— अल्पं मृणालं ( थोड़ा मृणाल ( मृणाली, कुम्भी, प्रणाली, सुसली, छत्री, पटी, तटी, मठी, वंशी, गुह्य-काण्डी, ..... ) ( 'काचित्' ग्रहण करनेसे 'अल्पो वृत्तः' इति विग्रहे 'वृत्तकः' पुल्लिङ्ग ही होता है स्त्रीलिङ्ग नहीं होता ॥

१ 'ढ्याबूढन्तम्' ( ३ । ५ । ५ ) इत्यादिसे उक्त लिङ्गवाले कुछ शब्दोंको भी सुखपूर्वक लिङ्ग-ज्ञानके लिये 'कान्त, खान्त, .....' के क्रमसे कहते हैं । 'लङ्का ( रावणकी राजधानी ), शोफालिका ( निर्गुण्डी ), टीका ( ग्रन्थादिकी व्याख्या ), धातकी ( धव वृत्त-विशेष ), पञ्जिका ( सम्पूर्ण पदोंकी व्याख्या ), आढकी ( अरहर, जिसकी दाल होती है ), सिध्रका ( 'सीध'नामका वृत्त-विशेष ), सारिका ( + शारिका । मैना पक्षी ), हिक्का ( हिचकी आना ), प्राचिका ( वनमक्खी । + पक्षि-विशेष स्त्री० स्वा० ) उल्का ( लुवक ) पिपीलिका ( चींटी या दीमक । + जो अप्रसिद्ध है या पहले अनुक्त है वही यहाँपर तत्तन्नाम-निर्देश-पूर्वक कहा गया है अतः 'शनैर्याति पिपीलिकः' यहाँ पुल्लिङ्गका निषेध नहीं हुआ, इसी तरह सर्वत्र समझना ), तिन्दुकी ( तेंदू वृत्त ), कणिका ( परमाणु, अतिसूक्ष्म या गेहूँ आदिका आटा, जयपर्ण वृत्त या अरणि वृत्त ), भङ्गिः ( रचना, कौटिल्य-भेद ) सुरङ्गा ( सुरङ्ग ) सूचि ( सूई ) माढिः ( दन्थ या दैन्य-प्रकाशन, पत्रिशिरा अर्थात् पत्तेकी नस । + देशः कवच स्त्री०

१. 'शारिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ढ्याबूढन्तम्' ( ३।५।५ ) इति सिद्धे नामानुशासनार्थो लङ्कादीनां पाठः । मढ्यादीनामुभयानुशासनार्थः । शोफालिकादीनां तु व्यर्थः स्वपर्यायपठित्वात्' इति भा० दी० ।

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्रूणिः शाणी द्रुणी द्रत् ।  
 सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥  
 झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला ।  
 लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥  
 इति खील्लिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ पुंस्त्वे २ सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वा० ), पिच्छा ( मोचरस अर्थात् सेमर का गोद । + भात आदिका मांड़ ),  
 वितण्डा ( बखेड़ा ), काकिणी ( + काकिनी । चौथाई पैसा, दुकड़ा ), चूणिः  
 ( अष्टाध्यायीका पातञ्जल भाष्य ), शाणी ( मनका वस्त्र-विशेष महे०, कसीटी,  
 सान अर्थात् शस्त्रको तेज करनेका यन्त्र-विशेष । + 'काणी' अर्थात् संकोच ),  
 द्रुणी ( गोजर । + कच्छपी ), द्रत् ( ग्लेच्छ जाति ), सातिः ( समाप्तिः ),  
 कन्था ( चिथड़ा ), आसन्दी ( एक प्रकारका आसन, या बेंतका आसन ),  
 नाभिः, ( पेटकी ढोडी ), राजसभा ( राजाकी सभा ), झल्लरी ( हुडक बाजा ),  
 चर्चरी ( ताली या गान-विशेष ), पारी ( हाथीके पैर बाँधनेकी रस्सी, पान-  
 भाण्ड बड़ा आदि ), होरा ( लगन, लगनार्द्ध, जातक ), लट्वा ( ग्रामका  
 गौरैया पत्नी, करञ्ज फल, वाद्य-विशेष ), सिध्मला ( सूखी मछली, गीली  
 खुजली, मल । + सफेद कुछ रोग स्त्री० स्वा० ), लाक्षा ( लाह ), लिक्षा ( जुभा-  
 का अण्डा, लीख ), गण्डूषा ( + गण्डूषः पु । पानीसे मुख भरना, कुझा ),  
 गृध्रसी ( उरु-सन्धिमें होनेवाला वातरोग-विशेष ), चमसी ( उदद या मसूर  
 आदिका बेसन, काष्ठका बना हुआ यज्ञपात्र-विशेष । + प्रणीतापात्र महे० ),  
 मसी ( स्याही ), ये ४२ शब्द खील्लिङ्ग होते हैं ॥

इति खील्लिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'द्विहीने.....' ( ३ । ५ । २२ ) के पूर्व 'पुंस्त्वे,  
 इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ॥  
 २ भेद और अनुचरके सहित १ सुर ( देवता ) तथा २ असुर ( दैत्य )

## १ स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरायः ॥ ११ ॥

के पर्यायोंके सहित सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०—१ सुरके पर्याय जैसे—अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, बिबुधः, ..... । भेद जैसे—तुषितः, साध्याः, आभास्वराः, इन्द्रः, शक्रः, विद्यौजाः, सूर्यः, आदित्यः, रविः, ब्रह्मा, स्वयम्भूः, विष्णुः, शौरिः, रुद्रः, शम्भुः, ..... । अनुचर जैसे—हाहाः, हूहूः, तुम्बुरुः, मातलिः, जयः, विजयः, चण्डः, प्रचण्डः, विष्वक्सेनः, नन्दी ( = नन्दिन् ), महाकालः, शृङ्गी ( = शृङ्गिन् ), गणाः, प्रमथाः, ..... । २ असुर (दैत्य) के पर्याय जैसे—दैत्याः, दैतेयाः, दानवाः, पूर्वदेवाः, ..... । भेद जैसे—बलिः, नमुचिः, जम्मा, विरोचनः, प्रह्लादः, ..... । अनुचर जैसे—कूष्माण्डः, मुण्डः, कुम्भः, ..... ) ॥

१ स्वर्ग १, याग ( यज्ञ ) २, अद्रि ( पहाड़ ) ३, मेघ ( बादल ) ४, अब्धि ( समुद्र ) ५, द्रु ( पेड़ ) ६, काल ( समय ) ७, असि ( तलवार ) ८, शर ( बाण ) ९, और अरि ( शत्रु ) १०, इनके पर्याय और भेदवाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०—१ पर्याय जैसे—स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, ..... । २ पर्याय जैसे—यागः, ऋतुः, सप्ततन्तुः, ..... । भेद जैसे—अग्निष्टोमः, अनिरात्रः, अश्वमेधः, ..... । ३ पर्याय जैसे—अद्रिः, गिरिः, पर्वतः, ..... । भेद जैसे—सुमेरुः, मेरुः, हिमालयः, विन्धवः, सद्यः, ..... । ४ पर्याय जैसे—मेघः, अम्बुदः, घनः, वारिदः, ..... । भेद जैसे—पुष्करावर्तकः, ..... । ५ पर्याय जैसे—अब्धिः, समुद्रः, नदीनः, सागरः, अर्णवः, ..... । भेद जैसे—क्षारोदः, लवणोदः, दध्यूदः, ..... । ६ पर्याय जैसे—द्रुः, नरुः, वृक्षः, ..... । भेद जैसे—वटः, आम्रः, प्लवः, खदिरः, पिप्पलः, ..... । ७ पर्याय जैसे—कालः, समयः, शिष्टः, ..... । भेद जैसे—सायः, पक्षः, ऋतुः, ..... । ८ पर्याय जैसे—असिः, खड्गः, करवालः, छण्डकात्रः, ..... । भेद जैसे—नन्दकः, चन्द्रहासः, ..... । ९ पर्याय जैसे—शरः, बाणः, ह्युः, विशिखः, ..... । भेद जैसे—नाराचः काण्डः, भरुः, ..... । १० पर्याय जैसे—अरिः, रिपुः, शत्रुः, द्वेषणः, ..... । भेद जैसे—आततायी ( = आततायिन् ), ..... ) ॥

- १ 'करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।
- २ अह्नाहन्ताः क्ष्वेडभेदा राजान्ता प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥
- ३ श्रीवेष्टाश्च निर्यासा असञ्जन्ता अबाधिताः ।

१ कर ( कौडी या राजाका कर अर्थात् मालगुजारी, किरण, ) १, गण्ड ( गाल ) २ ओष्ठ ( ओठ ) ३, दोः ( = दोष् । हाथ ) ४, दन्त ( दाँत ) ५, कण्ठ ( गला ) ६, केश ( बाल ) ७, नख ( नाखून ) ८, स्तन ( थन ) ९, इनके पर्याय और भेदके सहित शब्द पुष्पिलङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०— १ करः, राजभागः, रश्मिः, मयूखः, ..... । २ गण्डः, कपोलः, कटः, ..... । ३ ओष्ठः, रदनच्छदः, अधरः, ..... । ४ दोः ( = दोष् ), प्रवेष्टः, बाहुः, भुजः, ..... । ५ दन्तः, दशनः, रदः, रदनः, ..... । ६ कण्ठः, गलः, ..... । ७ केशः, बालः, चिकुरः, ..... । ८ नखः, पुनर्भ्रूः, करुहः, ..... । ९ स्तनः, पयोधरः, कुचः, ..... ) ॥

२ 'अह् १, अहन् २' शब्द जिसके अन्तमें हों वे शब्द, विष-भेदके वाचक शब्द ३, 'रात्रि' शब्द हो अन्तमें जिनके ऐसे असंख्यापूर्वक ( संख्या-वाचक शब्द पूर्व में न रहें ऐसे ) शब्द ४, पुष्पिलङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ पूर्वाह्णः, सायाह्णः, अपराह्णः, मध्याह्णः, ..... । २ द्वयहः, त्रयहः, उत्तमाहः, परमाहः, ..... । ३ वसनाभः, सौराष्ट्रिकः, ब्रह्मपुत्रः, शौचिककेयः, कालकूटः, हलाहलः, ..... । ४ अहोरात्रः, सर्वरात्रः, दीर्घरात्रः, वर्षारात्रः, ..... ) । 'प्रागसंख्यकाः' ( असंख्यापूर्वक ) ग्रहण करने से 'पञ्चरात्रम् द्विरात्रम्, त्रिरात्रम् ..... में संख्यावाचक शब्द पूर्वमें रहनेसे पुष्पिलङ्ग नहीं होता है' ) ॥

३ श्रीवेष्ट ( + श्रीविष्ट ) आदि गौद के वाचक शब्द १, अस् २, और अन् ३, हो अन्तमें जिनके ऐसे अबाधित ( किसीसे बाध न हुआ हो ) शब्द पुष्पिलङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ श्रीविष्टः ( + श्रीविष्टः ) सरलः, द्रवः, ..... । 'आद्य' शब्दसे 'श्रीवासः, वृकधूसः, ..... ' का और 'च' शब्दसे गुग्गुलुः, वृकधूसः, ..... ' का संग्रह होने से ये शब्द भी पुष्पिलङ्ग होते हैं' । २ वेष्टाः ( = वेधस् ) पुरोधः ( पुरोधस् ) उशनाः ( = उशनस् ), अङ्गिराः

१. 'करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः' इति पाठान्तरम् ।

१ कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

२ कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी ३ अथ ।

पथनयसटोपान्ताः—

( = अङ्गिरस् ), चन्द्रमाः ( चन्द्रमस् ), ..... । ३ कृष्णवरमा ( = कृष्णवर्मन् ), प्रतिदिवा ( = प्रतिदिवन् ), मघवा ( = मघवन् ), प्लीहा ( प्लीहन् ), ..... ) । 'अबाधित' ग्रहण करनेसे 'अप्सरसः' ( = अप्सरस् ), जलौकसः ( = जलौकस् ), सुमनसः ( = सुमनस् ), ..... ये असन्त शब्द, तथा 'लोम' ( = लोमन् ), साम ( = सामन् ), वर्म ( = वर्मन् ), ..... ये नान्त शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्दको छोड़कर अन्य 'तु १, रु २' अन्तमें हों जिनके ऐसे शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०— १ वास्तुः, मस्तुः, हेतुः, स्वस्तुः, धातुः, सेतुः, ..... । २ कुरुः, रसरुः, मरुः, तरुः, .....' ) । 'कशेरुज-तुवस्तूनि हित्वा' 'इसके कहनेसे इदं 'कशेरु' जलज कन्द विशेष, 'जतु' लाक्षा, इदं 'वस्तु' यहाँपर 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'क १, ष २, ण ३, भ ४, म ५, र ६' य ६ वर्ण जिस अदन्त शब्द के उपान्त ( अन्तवाले वर्णके अव्यवहित पूर्व ) में रहें वे शब्द विशेष, पुल्लिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०— १ अङ्कः, कलङ्कः, लोकः, स्फटिकः, शक्कः, वराटकः, ..... । २ ओषः, प्लोषः, माषः, प्लषः, निकषः, तुषः, रोषः, + + । + ३ गणः, शणः, कणः, पाषाणः, गुणः, + + । ४ कुम्भः, कलभः, दर्भः, शलभः, + + । ५ आचामः, धूमः, होमः, ग्रामः, गुल्मः, व्यामः, + + । ६ अङ्कुरः, दरः, क्षर्करः, + +' ) ॥

३ 'प १, थ २, न ३, य ४, स ५, ट ६' ये ६ वर्ण जिनके उपान्त ( अन्त-के वर्णके अव्यवहित पूर्व ) में रहें वे शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०— १ सुपः, वाप्पः, कलापः, यूपः, कूपः, ..... । २ रोमन्थः, शपथः, सार्थः,

१. 'कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा' इति व्यर्थम् । 'अबाधिताः' इत्यस्यान्वयेनैव सामञ्स्यात् । वस्तुतस्तु 'अबाधिताः' इत्यपि व्यर्थम् । 'विशेषैर्यथाबाधितः' ( ३। ५। १ ) इत्यनेनैव निर्वाहात् । अत एव दावादिषु निर्वाहः इति भा० दी० 'वेशोर्वायुपलक्षणं 'दारुमश्रु' प्रभृतीनाम् । कशेरु अस्थिविशेषस्तुणविशेषो वा, जतु लाक्षा' इति महे० ॥

—१ गोत्राख्याश्चरणाङ्गयाः ॥ १४ ॥

२ नाम्न्यकर्तरि भावे च घञ्प्रत्ययान्तङ्गघाथुवः ।

३ ल्युः कर्तरीमनिजभावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

नाथः, ..... । ३ फेनः, हाथनः, स्तनः, जनः, इनः, ..... । ४ अपनयः, विनयः, प्रणयः, आयः, व्ययः, तन्तुवायः, ..... । ५ रसः, हासः, कुरसः, वरसः, ..... । ६ पटः, कटः, सरटः, ..... । महे० सु० के मतसे 'अथ' शब्दको आदिमें रहनेसे 'यद्यदन्ताः' इसका सम्बन्ध 'पथनयसटोपान्ताः' में नहीं होता, अतः 'पाथुः, जायुः, गोमायुः, .....' अदन्तसे भिन्न शब्द भी पुंलिङ्ग होते हैं ) ॥

१ गोत्राख्य (गोत्रके वाचक) शब्द स्त्री० स्वा० के मतसे अपत्य प्रत्ययान्त १, और चरण (वेद-शाखा) के वाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ काश्यपः वसिष्ठः, गौतमः, ..... । स्त्री० स्वा० के मतसे + वसिष्ठः, गार्ग्यः, दाक्षिः, ..... । २ कठः, बह्वृचः, छन्दोगः, कलापः, ..... ) ॥

२ नाम, कर्तृभिन्न कारक और भावमें विहित 'घञ् १, अच् २, अप् ३, नङ् ४, ण ५, घ ६, अथुच् ७, प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ प्रास, वेदः, प्रासादः, प्रकार, माघः, भावः, पाकः, रागाः, ..... । २ जयः, चयः, नयः, ..... । ३ पचः, करः, गरः, लवः, स्तवः, प्लवः, ..... । ४ यज्ञः प्रश्नः, यत्नः, ..... ('नङ्' के उपलक्षण होनेसे 'नन्' प्रत्ययान्त भी पुंलिङ्ग होता है, जैसे—स्वप्नः, ..... ) । ५ न्यायः, ..... । ६ प्रहरः, विघसः, गोचरः उरश्छद्दः, प्रच्छद्दः, ..... । ७ वेपथुः, श्वयथुः, आनन्वथुः, ..... ) ॥

३ कर्तामें विहित 'ल्यु' प्रत्ययान्त १, भावमें विहित 'इमनिच्' २ और 'क' ३, प्रत्ययान्त तथा 'प्रादिसे ४, और अन्यसे ५, परे घुसङ्गक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ नन्दनः, रमणः,

१. अत्र 'प्रादि' शब्देन द्वाविंशतिरुपसर्गा आह्व्यस्ते यथा—'प्र १, परा २, अप ३, सम् ४, अनु ५, अव ६, निस् ७, निर् ८, दुस् ९, दुर् १०, वि ११, आङ् १२, नि १३, अवि १४, अपि १५, अति १६, सु १७, उव १८, अमि १९, प्रति २०, परि २१, उप २२' इत्येते 'उपसर्गाः क्रियायोगे' ( पा० सू० १।४।५९ ) इत्यनेनोपसर्गसंज्ञका भवन्ति ।

- १ द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते ।  
 २ कान्तःसूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥  
 ३ वटकश्चानुवाकश्च रत्नकश्च 'कुडङ्गकः ।  
 पुङ्खोऽन्यूङ्खः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटाः ॥ १७ ॥

मधुसूदनः, जनार्दनः, ..... । २ प्रथिमा (= प्रथिमन् ), लविमा (= लविमन् ), गरिमा (= गरिमन् ), महिमा (= महिमन् ), ..... । ३ प्रस्थः, आस्थः, ..... । ४ ( प्रादिसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त ) जैसे—प्रधिः, निधिः, व्याधिः, आधिः, उपधिः, ..... । ५ ( अन्यसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त, जैसे—जलधिः, अन्धिः, ..... ) । 'घोः किः' इसीसे सर्वत्र पुंलिङ्ग हो जाता, अतः 'प्रादितोऽन्यतः' यह पद व्यर्थ ही है ॥

१ समाहार अर्थसे भिन्न द्वन्द्व समासमें 'अश्ववडव' शब्द पुंलिङ्ग होता है । ( जैसे—अश्वश्च वडवा च 'अश्ववडवौ' ) ॥

२ 'सूर्य' १, 'चन्द्र' २, के पर्याय, और 'अयस्' ३ शब्दसे परे ( आगे ) रहनेपर 'कान्त' शब्द पुंलिङ्ग होता है । ( 'क्रमशः उदा०—१ सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, भास्वरकान्तः, ..... । २ चन्द्रकान्तः, शशिकान्तः, इन्दुकान्तः, ..... । ३ अयस्कान्तः' ) ॥

३ अब 'कान्त, खान्त .....' के क्रमसे 'पुंलिङ्गसंग्रह' के अन्ततक पुंलिङ्ग शब्दोंको कहते हैं । वटकः ( बारा ), अनुवाकः ( वेद-भेद, ऋक् और यजुष् का समूह ), रत्नकः ( पद्म-कम्बल, रौआदार कम्बल ), कुडङ्गकः ( + कुडङ्गकः । वृक्ष-लतासे गहन स्थान ), पुङ्खः ( घाणके नीचेवाला भाग ), अन्यूङ्खः ( + न्युङ्खः । सामवेदके भा० ङी० के मतसे ६ और ङी० स्वा० के मतसे १६ उँकार ), समुद्रः ( सगुप्त, डब्बा ), विटः ( कामी अनुचर, धूर्त ), पट्टः ( पीड़ा, काष्ठका आसन-विशेषा + पनड़ी आदि ङी० स्वा० ), घटः ( काष्ठकी तराजू, परीचा करनेकी तराजू ), खटः ( अन्धा कूवा, तृण, प्रहार ), कोट्टः ( किला ), अरघट्टः

कोट्टारघट्टहट्टाश्च<sup>१</sup> पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।  
 गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥  
 हतिसीमन्तहरिता रोमन्थोद्वीथबुद्बुदाः ।  
 कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥  
 आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपश्चुरकेदराः ।  
 पूरश्चुरप्रचुकाश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

( बड़ा कुआँ । + कोट्टार, घट्टः, अर्थ क्रमशः नगरका कूर, घाट, भा० दी० ),  
 हट्टः ( बाजार ), पिण्डः ( कवल या पिण्ड ), गोण्डः ( नाभि । + गौडः अर्थात्  
 गुड का बना पदार्थ या गौड देश ), पिचण्डः ( + पिचिण्डः । पेट ), गडुः  
 ( गाल ची० स्वा०, गलगण्ड रोग महे० ), करण्डः ( समुद्र ची० स्वा०, बांसका  
 कोठिला आदि भाण्ड-विशेष भा० दी० महे० ), लगुडः ( लाठी ), वरण्डः  
 ( समूह, मुखरोग ), किणः ( चावका चिह्न, मांस-ग्रन्थि, घट्टा ), घुणः ( घुन ),  
 हतिः ( भाथी ), सीमन्तः ( केश-वेश ), हरित ( हरा रंग ), रोमन्थः ( पगुरी ),  
 उद्वीथः ( साम-भेद ), बुद्बुदः ( बुबुला, पानीमें वर्षा आदि पड़ने या खोलनेपर  
 होनेवाला क्षणिक जल-विकार ), कासमर्दः ( गुल्म-भेद महे०, वेसवार अर्थात्  
 एक प्रकारका मसाला या छौंक ), अर्बुदः ( दश करोड़, आवू पहाड़, रोग-  
 विशेष । + अर्दनिः अर्थात् अग्नि ), कुन्दः ( कुन्द फूल या शिखर-भाण्ड ), फेनः  
 ( फेन, गाज ), स्तूपः ( माटी आदिका ढेर ची० स्वा०, + यज्ञमें वध्य पशु  
 बाँधनेका काष्ठ-विशेष ), यूपः ( यज्ञमें पशु बाँधनेका काष्ठ-विशेष । + पूषः  
 अर्थात् पूषा ), आतपः ( चाम ), नाभिः ( चत्रिय ), कुणपः ( मुर्दा-विशेष ।  
 + कणपः, अर्थात् प्रास-विशेष ), चुरः ( लूरा ), केदरः ( एक प्रकारका व्याव-  
 हारिक पदार्थ ), पूरः ( पानीका प्रवाह ), चुरप्रः ( + चुरप्रः । बाण-  
 भेद ), चुकः ( चुक, शाक-विशेष ), गोलः ( गोला, पिण्ड ), हिङ्गुलः  
 ( + हिङ्गुलः । इंगुर ), पुद्गलः ( आरमा, जैनसिद्धान्तसम्मत आकाशादि द्रव्य ),

१. 'पिण्डगोण्डपिचण्डवत्' इति 'पिचिण्डिवत्' इति च पाठान्तरे ।

२. 'कासमर्दोऽर्दनिः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ' इति पाठान्तरम् ।

३. 'पूरश्चुरप्रचुकाश्च' इति 'गोलहिङ्गुलपुद्गलाः' इति पाठान्तरम् ।



वेतालमल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि' पट्टिप्तः ।

कुलमाषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ 'द्विहीनेऽन्यच्च २ स्तारण्यपर्णश्च छद्दिमोदकम् ।

शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

३ फलहेमशुल्वलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

वेतालः (प्रेत-विशेष), मल्लः ( मल्ल, बाण-विशेष, पटा ), मल्लः ( कुरती लङ्घनेमें चतुर ), पुरोडाशः ( यज्ञसम्बन्धी पूजा, हविष्य-विशेष, ) पट्टिप्तः ( + पट्टिप्तः । अन्न-विशेष ), कुलमाषः ( आधा गोला मव या उदक आदि ), रभसः ( हर्ष, वेग, पौर्वापर्यका विचार ), कटाहः ( कराह ), पतद्ग्रहः ( पीकदान ), ये ५५ शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ॥ इति पुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'पुंनपुंसकयोः' (३।५।३२) के पहले तक 'द्विहीने' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती ( बीचवाले ) शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । 'अभ्यत्' ग्रहण करनेसे जो बाधित न हों वे ही शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

२ खम् ( इन्द्रिय ) १, अरण्यम् ( वन ) २, पर्णम् ( पत्ता ) ३, श्वभ्रम् ( पाताल, बिल ) ४, हिमम् ( वर्ष ) ५, उदकम् ( पानी ) ६, शीतम् ( ठण्डा ) ७, उष्णम् ( गर्म ) ८, मांसम् ( मांस ) ९, रुधिरम् ( रून ) १०, सुखम् ( मुँह ) ११, अक्षि ( आँख ) १२, द्रविणम् ( धन ) १३, बलम् ( सेना ) १४, फलम् ( आम आदिका फल । + हलम् अर्थात् जोतनेवाला हल ) १५, हेम ( = हेमन् । सुवर्ण ) १६, शुल्वम् ( तामा ) १७, लोहम् ( लोहा ) १८, सुलम् ( सुल ) १९, दुःखम् ( दुःख ) २०, शुभम् ( शुभ ) २१, अशुभम् ( अशुभ ) २२, जलपुष्पम् ( पानीमें होनेवाले फूल ) २३, लवणम् ( नमक ) २४, व्यञ्जनम् ( तरकारी आदि ) २५, अनुलेपनम् ( लेप-मेव ) २६; ये २६ शब्द

१. 'पट्टिप्तः' इति मुकुटः इति महे० ।

२. 'द्विहीनेऽन्यच्च' इति पाठान्तरम् ।

३. 'इलहेम—' इति पाठान्तरम् ।

## १ 'भयामृतशक्रद्वत्रिचापाभरणलाङ्गलम् ( १२ )

और इनके पर्यायवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग ( भा० दी० ने इनके पर्यायवाचक शब्दोंको नपुंसक नहीं कहा है ) होते हैं । 'क्रमशः उद्ग०—१ प्रथमार्थक (इन्द्रिय पर्याय) जैसे—१ खम् , इन्द्रियम् , करणम् , हृषीकम् , ..... । २ द्वितीयार्थक ( आकाश-पर्याय ) जैसे—खम् , आकाशम् , गगनम् , अम्बरम् , ..... । ३ अरण्यम् , कान्तारम् , वनम् , विपिनम् , ..... । ४ पर्णम् , दलम् , पत्रम् , ..... । ५ श्वभ्रम् , विलम् , विवरम् , पातालम् , ..... । ६ हिमम् , प्रालेयम् , तुहिनम् , ..... । ७ उदकम् , जलम् , पानीयम् , तोयम् , ..... । ८ शीतम् , शिशिरम् , ..... । ९ उष्णम् , घर्मम् , ..... । १० मांसम् , पिशितम् , तरसम् , ..... । ११ रुचिरम् , रक्तम् , ..... । १२ मुखम् , आननम् , लपनम् , आस्यम् , वक्त्रम् , ..... । १३ अक्षि , नयनम् , नेत्रम् , ..... । १४ द्रविणम् , धनम् , स्वापतेयम् , ..... । १५ बलम् , सैन्यम् , अनीकम् , ..... । १६ फलम् , आम्रम् , कपिस्थम् , ..... । १७ हेम ( = हेमन् ) , सुवर्णम् , हाटकम् , स्वर्णम् , ..... । १८ (लोह-भेद) जैसे—शुक्लम् , ताम्रम् औदुम्बरम् , ..... । १९ लोहम् , कालायसम् , अरमसारम् , ..... । २० सुखम् , उपजोषन् , शान्तम् , शर्म ( = शर्मन् ) शातम् , ..... । २१ दुःखम् , कष्टम् , कृष्कम् , आसीलम् , ..... । २२ शुभम् , कल्याणम् , कुशलम् , पुण्यम् , सुकृतम् , ..... । २३ अशुभम् , पापम् , दुःकृतम् , ..... । २४ (जलपुष्प भेद) जैसे—कमलम् , कैरवम् , कुमुदम् , कहारम् , सत्पलम् , ..... । २५ ( लवण-भेद ) जैसे—लवणम् , सैन्धवम् , विडम् , रुचकम् , ..... । २६ व्यञ्जनम् , तेमनम् , निष्ठानम् , उपसेचनम् , मस्तु , ..... । और २७ ( अनुलेपन-भेद ) जैसे—अनुलेपनम् , कुङ्कुमम् , अग्निशिखम् , कारमीरम् , चन्दनम् , ..... ) ॥

१ [भयम्(डर),अनृतम् (झूठा) + 'अमृतम्' अर्थात् अमृत), शक्रत् (मैला), वक्त्रम् (मुख) + 'वस्तु' अर्थात् चीज, पदार्थ], चापम् (धनुष), आभरणम्

१. 'भया' 'प्रयुज्यते' इत्ययं श्लेषकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यमानः प्रकृतोपयुक्ततयाऽत्र मूले स्थापितः । तत्र—'भयामृतशक्रदस्तु' इति पाठान्तरमप्यस्ति ।

२. तथा च भा० दी०—'द्राव्या हीने कर्त्तव्ये' इत्याद्युक्त्वा 'तत्र कांश्चिदर्शयति ह्यमिति—' इत्याह ।

दार्वौषधमृधापत्यहृदयोदरकाकुदम् ( ९३ )

पत्तनाजिरशृङ्गाक्षद्वारबर्होडुमानसम् ( ९४ )

ध्वान्तं चाव्यक्तलिङ्गं च भाणतौ यत्प्रयुज्यते' ( ९५ )

१ कोट्याः शतादिसङ्ख्याभ्यां वा लक्षा नियुतं च तत् ।

२ द्वयत्कमसिद्धसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

( भूषण ), लाङ्गलम् ( हल ), दारु ( लक्ष्मी ), औषधम् ( दवा ), मृधम् ( युद्ध ), अपत्यम् ( सन्तान ), हृदयम् ( हृदय ), उदरम् ( पेट ), काकुदम् ( तालु ), पत्तनम् ( नगर ), अजिरम् ( अङ्गन ), शृङ्गम् ( सींग या शिखर ) अकम् ( अनाज ), द्वारम् ( दरवाजा ), बर्हम् ( मोरका पङ्क ), उडु ( नवत्र ), मानसम् ( मनका भाव या कर्म वा मानसोवर तालाब ), ध्वान्तम् ( अन्धकार ) और अव्यक्त ( अफुट ) लिङ्गवाले जो शब्द कहनेमें प्रयुक्त होते हैं वे सब शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ] ॥

१ 'कोटि' शब्द को छोड़कर अन्य 'शत आदि संख्या-वाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । जैसे— शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, अर्बुदम्, लक्षम्, ... और 'लक्षा' शब्द विकल्पसे नपुंसकलिङ्ग होता है पक्षमें स्त्रीलिङ्ग 'लक्षा' होता है । उसी ( लक्षा ) का पर्याय 'नियुतम्' भी नपुंसकलिङ्ग है । 'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्ग है । 'शतादि' ग्रहण करनेसे 'विंशतिः, नवतिः, सप्ततिः, ...' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ अस् १, इस् २, उस् ३, अन् ४, अन्त में हो जिनके ऐसे दो अच् ( स्वर ) वाले शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । और 'अन' अन्तमें हो जिसके ऐसे 'कर्ता' से भिन्न शब्द ५, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०— १ यशः ( = यज्ञस् ), पयः ( = पयस् ), मनः ( = मनस् ), तपः ( = तपस् ), ..... १ सर्पिः ( = सर्पिस् ), उयोतिः ( = उयोतिस् ), = हविः ( = हविष् ), ..... ३ धनुः ( = धनुस् ), वपुः ( = वपुस् ), यजुः ( = यजुस् ), + + । ४ वर्म ( = वर्मन् ), चर्म ( = चर्मन् ), कर्म ( = कर्मन् ), साम ( सामन् ), ..... ५ गमनम् ,

१. 'कोटि-लक्षा' शब्दयोस्त्रीलिङ्गत्वे उदाहरणम्—

'कियती पञ्चसहस्रा कियती लक्षाश्च कोटिरपि कियती ।

औदार्योन्नतमनसां रत्नमती वसुमती कियती' ॥ १ ॥ इति ।

१ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्सङ्ख्ययान्वितम् ।

२ पात्राद्यदन्तरेकार्यो द्विगुलक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

३ द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ—

[मणम्, साधनम्, पचनम्, .....] । 'कर्तृभिन्न' ग्रहण करनेसे 'रमणः, मधुसूदनः, भदनः, .....' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ शेष ( पूर्वोक्तसे बचा हुआ अर्थात् अबाधित ) त्रान्त ( 'त्र' अन्तमें हो जिनके वे ) १, स २, ल ( + न ) ३, उपधा' ( अन्त के पूर्व ) में हो जिनके वे शब्द, संख्यावाचक शब्द पूर्वमें जिनके हों ऐसे 'रात्र' शब्द अर्थात् संख्यापूर्वक 'रात्र' शब्दान्त शब्द ४, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०—१ ( त्रान्त ) जैसे—वहिन्नम्, वस्त्रम्, पात्रम्, भग्नम्, ... । २ ( सोपध ) जैसे—अपुसम्, विसम्, अन्धतमसम्, बुसम्, ..... । ३ ( लोपध ) जैसे—कुलम्, मूलम्, तूलम्, शूलम्, ..... । + ३ ( नोपध ) जैसे—भुवनम्, वनम्, ..... ) । \* ( संख्या-पूर्वक रात्र-शब्दान्त ) जैसे—पञ्चारात्रम्, त्रिरात्रम्, षड्रात्रम्, ..... ) । 'शिष्ट' ग्रहण करनेसे 'पुत्रः, वृत्रः, हंसः, कंसः, पनसः, कालः, गलः ( + जनः, श्वेनः, स्वप्नः ), .....' और 'संख्या' ग्रहण करनेसे 'अर्धरात्रः, मध्यरात्रः, पूर्वात्रः, .....' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'पात्र' आदि अदन्त शब्दोंके साथ एकार्थ ( समाहार अर्थवाले ) द्विगु शब्द लक्ष्यके अनुसार नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्थगम्, त्रिभुवनम्, ..... ) । 'पात्रादि' ग्रहण करनेसे 'त्रिलोकी, त्रिवेदी, .....' 'एकार्थ' ग्रहण करनेसे 'पञ्चकपालः ( पाँच कपालमें पकाया हुआ ) पुरोडाशः, .....' और 'लक्ष्यानुसारतः' ग्रहण करनेसे 'त्रिपुरी, पञ्चभूली, .....' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

३ द्वन्द्व समासमें एकरव ( एकार्थक अर्थात् समाहार ) १, और अव्ययीभाव समासवाले शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( क्रमशः उदा०—पाणिपादम्, शिरोग्रीवम्, मार्दङ्गकपाणविकम्, ..... । २ अविस्त्रि, अधिगोपम्, द्विमुनि, त्रिमुनि, तिष्ठद्गु, ..... ) ॥

१. 'अलोऽन्त्यात्पूर्वं उपधा' ( पा० सू० २ । २ । ६५ ) इत्यनेनान्वयात्पूर्वो वर्ण 'उपधा' संज्ञको भवति ।

—१ पथः सङ्ख्याव्ययात्परः ।

२ षष्ठ्याश्छाया बहुनां चेद्विच्छायं ३ संहतौ सभा ॥ २६ ॥  
शास्त्रार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात् ।

१ 'संख्या १, अव्यय २, से परे कृतसमासान्त' ( समासान्त 'अच्' प्रत्ययान्त ) 'पथिन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है । (क्रमशः उदा०—१ द्विपथम् , त्रिपथम् , ..... । २ विपथम् , कापथम् , ..... ) । 'संख्याव्यय' ग्रहण करनेसे 'धर्मपथः, ..... में 'पथः' (कृतसमासान्त) ग्रहण करनेसे 'अतिपन्थाः, सुपन्थाः, ..... में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ षष्ठ्यन्त (षष्ठो विभक्ति जिसके अन्तमें रहे उस) से परे कृतसमासान्त 'छाया' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है, यदि वह छाया बहुतोंकी रहे तब । ('जैसे—इच्छायम्, वीनां पणिनां छाया विच्छायम्, वृद्धानां छाया वृद्धाव्यम्, .....') । 'बहुनां चेत्' ( बहुतोंकी छाया रहे तब ) ग्रहण करनेसे 'वृक्षस्य छाया वृक्षच्छाया, ..... में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ षष्ठ्यन्तसे परे (आगे) रहनेपर समूहार्थक ( समूह अर्थवाला ) 'सभा' शब्द १, षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर गृहार्थक ( गृह अर्थवाला ) और 'अपि' शब्दसे समूहार्थक 'सभा' शब्द अराजक ( 'राजन्' शब्दसे भिन्न ) राजार्थक (राज पर्यायवाले) २, अमनुष्यार्थक ( मनुष्य अर्थसे भिन्न ) ३, नपुंसकलिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ दासीसभम् , ब्राह्मणसभम् , ..... । २ नृपसभम् , इनसभम् , प्रभुसभम् , ..... । ३ रक्षसभम् , पिशाचसभम् , .....') । 'संहतौ' ( समूहार्थक ) ग्रहण करनेसे 'दासीनां सभा गृहम्' इस विग्रहमें 'दासीसभा' यहाँपर, 'षष्ठ्याः' (षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर) ग्रहण करनेसे 'नृपतिविषये सभा 'नृपतिसभा' यहाँपर, नृणां पतिर्यस्यां सा नृपतिः सा चासौ सभा च' यह विग्रहकर कर्मधारय समास करनेसे 'नृपतिसभा' यहाँपर, 'अराजक' ( 'राजन्' शब्दसे भिन्न ) ग्रहण करनेसे चन्द्रगुप्तके राज-

१. मूले 'पथ' शब्दोपादानं कृतसमासान्तत्वेन पथिन् शब्दस्य आहकशक्तिपरम् ।

२. अत एव 'इच्छायनिषादिभ्यः.....' (रघु० ४ । २०) इत्येव समीचीनः पाठः ।

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा विशाः ॥ २७ ॥

१ उपपञ्चोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।

कोपञ्चकोपक्रमादि २ कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

३ भावेनणकचिङ्गथोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

विशेष होनेके कारण 'चन्द्रगुप्तस्य सभा' इस षष्ठीतत्पुरुषमें भी 'चन्द्रगुप्तसभा' यहाँपर, नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ 'उपज्ञा और उपक्रम' का प्राथम्य प्रकाशन करना हो तो षष्ठ्यन्तसे परे उपज्ञान्त (जिसके अन्तमें 'उपज्ञा' शब्द हो वह) शब्द १, 'उपक्रमान्त' (जिसके अन्तमें 'उपक्रम' शब्द हो वह) शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होता है । ( 'क्रमशः उदा०—१ कस्योपज्ञा कोपञ्चं सर्गाः, चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणम्, पाणिन्युपज्ञमकाद्यकं व्याकरणम्, ..... २ कस्योपक्रमः कोपक्रमः सृष्टिः, नन्दोपक्रमाणि मानानि, ..... ) । 'तदादित्वप्रकाशने' ग्रहण करनेसे 'देवदत्तोपज्ञा मृन्मयः प्रकारः, देवदत्तोपक्रमो रथः, .....' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ 'उशीनर देशकी जो कन्था' इस अर्थमें संज्ञा ( नाम ) गभ्यमान रहे तक षष्ठ्यन्तसे परे 'कन्था' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है । ( 'जैसे—सौशमिकन्थम्, बल्लिककन्थम्, .....' ) । 'उशीनर' ग्रहण करनेसे 'दाक्षिकन्था' ( यह नाम बाह्यिक देशमें प्रसिद्ध है ) यहाँपर, और 'नाम' ग्रहण करनेसे 'चैत्रकन्था' ( यह संज्ञा नहीं है ) यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ न, ण, क, चित् ( 'च' की जिसमें<sup>१</sup> इत्संज्ञा हुई हो ) प्रत्ययसे भिन्न जो भावमें विहित<sup>२</sup> कृतसंज्ञक अदन्त प्रत्यय १, और समूह अर्थमें भाव-कर्ममें विहित जो अकारान्त तद्धित प्रत्यय २, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ भूतम्, भवनीयम्, भवितव्यम्, भव्यम्, ब्रह्मभूयम्, साराविणं वर्तते, सांकुटिनं वर्तते, .....' । २ ( समूहमें तद्धित ) जैसे—भैरवम्, औषगवकम्, कैदार्यम्, कैदारकम्, राजकम्, यौवतम्, औचकम्, ..... भावमें—

१. प्रत्ययादौ वर्तमानस्य चत्स्य 'चुट्' ( पा० सू० १ । ३ । ७ ) इत्यनेन प्रत्ययादेरन्ते वर्तमानस्य च 'इलन्त्यम्' ( पा० सू० १ । ३ । ३ ) इत्यनेनेरसंज्ञा विधीयते ।

२. 'कुदतिङ्' ( पा० सू० १ । १ । ९३ ) इत्यनेन कृतसंज्ञा विधीयते ।

- अदन्तप्रत्ययाः १ पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥  
 २ कियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्यतोदके ।  
 'चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म याजनम् ॥ ३० ॥  
 राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

गोत्वम्, शौचम्, ..... कर्मम्—शौचत्वम्, राउयम्, चौर्यम्, ..... ) ।  
 नणकचिङ्गयोऽभ्ये' ग्रहण करनेसे 'प्रनः, यनः, स्वप्नः, न्यादः, आखूथः,  
 वेष्टनः, चयः, जयः, कारणा, हारणा, ..... 'मं नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ पुण्य १, सुदिन २, शब्दसे परे 'कृतसमासान्त 'अहन्' शब्द नपुंसक-  
 लिङ्ग होता है । ( 'क्रमशः उदा०—१ पुण्याहम्, २ सुदिनाहम्' ) । 'अहः'  
 ग्रहण करनेसे पुण्यानि अहानि यस्मिन्मासि स 'पुण्याहा' ( = पुण्याहन् )  
 यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ क्रिया १ और अव्यय २ के विशेषण नपुंसकलिङ्ग और एकवचन होते  
 हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ मृदु पचति, मन्दं करोति, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः,  
 ..... । २ रम्यं श्वः, सुखं प्रातः, .....' ) ॥

३ अब नपुंसकलिङ्गवाले कुछ शब्दोंको कण्ठरबसे स्वयं कह रहे हैं । 'उक्तम्'  
 ( सामभेद ), ताटकम् ( १० अक्षरवाले 'पङ्क्ति' जातीय वृत्तका छन्दो-विशेष ),  
 चोचम् ( जूठा छोड़ा हुआ, तालफुट, कदली-फुट ), पिच्छम् ( मोरका पंख । +  
 'उक्तम्' अर्थात् एक अक्षरवाला 'उक्ता' जातीय 'अ' आदि छन्दो-विशेष स्त्री०  
 स्वा० । + 'मुक्तम्' अर्थात् छूटा हुआ भा० दा० ), गृहस्थूणम् ( घरमें लगा हुआ  
 खम्भा ), तिरीटम् ( शिरका बैठन, साफा, पगड़ी आदि, शिरका भूषण ), मर्म (=  
 मर्मन्, सन्निवस्थान, हृदय आदि मर्म स्थल ), योजनम् ( चार कोसका लम्बे रास्ते  
 आदिका प्रमाण-विशेष ), राजसूयम् ( राजसूय नामका यज्ञ-विशेष ), वाजपेयम्  
 ( वाजपेय नामका यज्ञ-विशेष ), गद्यम् ( कवि रचिता बिना छन्दकी शब्द-योजना,  
 जैसे-दशकुमार, काश्मीरी आदि ग्रन्थों में है ), पद्यम् ( कवि-रचित छन्दसे युक्त

१. 'चोचमुक्तम्' इति स्त्री० स्वा० पाठान्तरम् । भा० दी० तु 'मुक्तम्' इति पाठे 'मुक्त  
 ओचने' इत्यस्मात् 'क्त' प्रत्ययेन साधितवान् ।

२. 'चित्-धयनं श्वयुः' इति स्त्री० स्वा० उदाहरणं चिन्त्यम् । तत्त्वाद्गन्तव्यमावात् ।

३. मूले 'अहः' इति कृतसमासान्तस्याहच्छन्दस्वानुकरणम् ।

‘माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं<sup>१</sup> विदलस्थालवाहिकम् ।

इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ पुन्नपुंसकयोः शेषोऽधचपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

श्लोक आदि, जैसे—रघुवंश, कुमारसंभव, नैषधचरित, आदि काव्यादि ग्रन्थोंमें है ), माणिक्यम् ( रत्न, जवाहिर ), भाष्यम् ( जिसमें सूत्रके अनुसार पदोंकी व्याख्या हो और अपने पदकी भी विवेचना की गई हो ऐसा ग्रन्थ-विशेष<sup>२</sup>, जैसे—पा० सू० पर पातञ्जलभाष्य, वेदान्तसूत्रपर शाङ्करभाष्य, ..... ), सिन्दूरम् ( सिन्दूर ), चीरम् ( कपड़ा ), चीवरम् ( मुनियोंका वस्त्र ), पिञ्जरम् ( + पञ्जरम् । चिड़िया आदि पालनेका पिंजड़ा ), लोकायतम् ( तर्क ), हरितालम् ( हरताल नामका औषध विशेष ), विदलम् ( बाँसका बर्तन-विशेष ), स्थालम् ( भोजनपात्र विशेष ), वाहिकम् ( बहू देशमें होनेवाला, कुङ्कुम । + ‘बाहुवम्’ अर्थात् बहू देशसे होनेवाला ), ये ३१ शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे ‘स्त्रीपुंसयोः.....’ ( ३।५३७ ) के पहले ‘पुन्नपुंसकयोः’ इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती ( बीच वाले ) शेष ( पूर्वोक्तसे भिन्न ) शब्द ‘पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग’ होते हैं ॥

२ अर्धर्चः अर्धर्चम् ( ऋचाका आधा ), पिण्याकः पिण्याकम् ( तिलकी खली ), कण्टकः कण्टकम् ( काँटा ), मोदकः मोदकम् ( मिठाई, लड्डू.... ), तण्डरुः

१. ‘.....पञ्जरम्’ इति पाठान्तरम् । २. ‘विदल स्थालवाहिकम्’ इति पाठान्तरम् ।

३. ‘भाष्य’लक्षणं पराशरपुराण उक्तं तद्यथा—

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥ १ ॥ इति ।



मोदकस्तण्डकटङ्कः शाटकः 'कर्पटोऽर्बुदः ।

'पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु 'बुस्तं च्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ।

तण्डकम् ( परिष्कार स्त्री० स्वा०, उपताप-विशेष महे० । + 'दण्डकः दण्डकम्' अर्थात् दण्ड या कपड़ा बुनने का काष्ठ-विशेष ), टङ्कः टङ्कम् ( पथर चीरनेकी टॉकी ), शाटकः शाटकम् ( साड़ी ), कर्पटः कर्पटम् ( स्थान-भेद या वस्त्र भेद । + 'खर्वटः खर्वटम्' अर्थात् नदी और पहाड़से मिश्रित स्थान महे० भा० नी०, ४०० ग्रामोंका संग्रहस्थान स्त्री० स्वा० ), अर्बुदः अर्बुदम् ( आँखका रोग-विशेष, दस करोड़की संख्या ), पातकः पातकम् ( ब्रह्महत्या आदि पाप ), उद्योगः उद्योगम् ( उद्योग ), चरक चरकम् ( चरक नामका वैद्यक ग्रन्थ । + 'वरकः वरकम्' अर्थात् बुना हुआ कपड़ा ), तमालः तमालम् ( तम्बाकू, सुती ), आमलकः आमलकम् ( आँवलेका फल ), नडः नडम् ( भीतरी बिल, नरसल नामका तृण-विशेष ), कुष्ठम् कुष्ठः ( कोढ़ रोग ), मुण्डम् मुण्डः ( शिर ), शीधु शीधुः ( मदिरा ), बुस्तम् बुस्तः ( + बुस्तम् बुस्तः, पुस्तम् पुस्तः, श्वस्तम् श्वस्तः, चुस्तम् चुस्तः । मांसकी पुष्टी स्त्री० स्वा०, भूना हुआ मांस, कटहल आदिका सारभाग ), च्वेडितम् च्वेडितः ( 'वीरोंका सिंहके समान गर्जना, ) क्षेम क्षेमा ( = क्षेमन् । कुशल ), कुट्टिमम् कुट्टिमः ( मणि-पथर आदि जड़ा हुआ कर्श ), संगमम् संगमः ( दो नदी आदिका मिलाना ), शतमानम् शतमानः ( 'चार रूपयाभरका प्रमाण-विशेष ), अर्मम् अर्मः ( आँखका रोग-विशेष ), शम्बलम् शम्बलः ( + सम्बलम् सम्बलः । रास्ते का कलेवा ), अव्ययम् अव्ययः ( व्ययका न होना,

१. 'खर्वटोऽर्बुदः' इति पाठान्तरम् ।

२. 'पातकोद्योगचरकतमालामलका' इति पाठान्तरम् ।

३. 'बुस्तम्, चुस्तम्, पुस्तम्, श्वस्तम्' इति पाठान्तराणि ।

४. 'खर्वट'लक्षणं यथा—

'यत्रैकतो भवेद्ग्रामो नगरं चैकतः स्मृतम् ।

मिश्रं तु खर्वटं नाम नदीगिरिसमाश्रयम्' ॥ १ ॥ इति ।

५. 'शतमान'लक्षणं स्मृतावुक्तं तथया—

'द्वे कृष्णले रूप्यमाषो धरणं षोडशैव ते ।

शतमानं तु दशमिर्धरणैः पलमेव च' ॥ १ ॥ इति ।

संगमं शतमानार्मशम्भलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

कवियं 'कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् ।

'यूपं प्रमीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१ अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।

तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषम् ॥ ३६ ॥

इति पुञ्जपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

लेङ्ग और संख्यासे रहित सब लिङ्गी और वचनोंमें तुल्यरूपवाला ( 'अव्यय' संज्ञक शब्द-भेद ), ताण्डवम् ताण्डवः ( नाचना ), कवियम् कवियः ( लगाम ), कन्दम् कन्दः ( + कर्म । सुरज कन्दा बण्डा आदि कन्द ), कर्पासम् कर्पासः ( कपास, रुई ), पारम् पारः ( नदी आदिका पार अर्थात् दूसरा किनारा ), पारावारम् अवारः ( नदी आदिके इचरका किनारा ), युगन्धरम् युगन्धरः ( जिसमें घोड़े बैल आदि जोते जाते हैं वह रथका लम्बा काष्ठ-विशेष ), यूपम् यूपः ( यज्ञमें पशु बाँधनेका खम्भा । + 'यूपम् पूयः' अर्थात् पीव ), प्रमीवम् प्रमीवः ( खिड़की ), पात्रीवम् पात्रीवः ( यज्ञ-पात्र-विशेष ), यूपम् यूपः ( मीढ़ ), चमसः चमसम् ( यज्ञ-पात्र-विशेष ), चिक्कसः चिक्कसम् ( यज्ञ-पात्र-विशेष गृहे, यवका भःटा क्षी० स्वा० ), ये ४० शब्द पुंस्त्रिलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

१ अर्धर्चादिगण में 'घृत' आदि शब्दके जो पुंस्त्रिलिङ्ग आदि ( नपुंसकलिङ्ग ) कहे गये हैं, वे निश्चय वैदिक हैं अर्थात् उनका वेदमें ही प्रयोग होता है । अस-एव यहाँ लोकमें वे नहीं कहे गये हैं । यदि प्रमाद आदिसे लोकमें भी दोनों लिङ्ग के प्रयोग मिल जायें तो शेष ( अवशिष्ट ) शब्दोंके समान उनका भी पुंस्त्रिलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गमें प्रयोग होता है ॥

इति पुञ्जपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१. 'कर्मकर्पासम्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'यूपम्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'अव्यय'लक्षणं 'तद्धितश्चास'० ( पा० सू० १ । १ । ३७ ) इति सूत्रीवपातजकभाष्य

उक्तं तथा —

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यज्ञ इति तदव्ययम्' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रीपुंसयो २ रपत्यान्ता ३ द्विचतुःषट्पदोरगाः ।

जातिभेदाः ४ पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह ५ मल्लकः ॥ ३७ ॥

‘ऊर्निर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे ‘स्त्रीपुंसकयोः.....’ ( ३।५।३९ ) के पहले तक ‘स्त्री-पुंसयोः’ का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती ( बीचवाले ) शब्द ‘स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग’ होते हैं ॥

२ ‘अपत्य’ अर्थमें विहित प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । ( ‘जैसे—‘उपगोरपत्यम् औपगवः औपगवी; इसी तरह गार्ग्यः गार्गी, वैदेहः वैदेही, वासिष्ठः वासिष्ठी,....’ ) । इनमें पहला ‘औपगव’ शब्द पुंलिङ्ग और दूसरा ‘औपगवी’ शब्द स्त्रीलिङ्ग है, इसी तरह अन्यत्र भी सम्झना चाहिये ॥

३ जाति-भेद द्विपद (दो पैरवाले) १, चतुष्पद (चार पैरवाले) २, षट्पद (छः पैरवाले) ३, और उरग (सर्प) शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । (‘क्रमशः उद्।०—१ मानुषः मानुषी, ब्राह्मणः ब्राह्मणी, शूद्रः शूद्रा, पुरुषः पुरुषी,.....। २ सिंहः सिंही, अजः अजा, मृगः मृगा, व्याघ्रः व्याघ्री, मार्जारः मार्जारी,.....। ३ अमरः अमरी, भृङ्गः भृङ्गी, षट्पदः षट्पदी,.....। ४ उरगः उरगी, नागः नागी, सर्पः सर्पिणी,.....’ ) ॥

४ स्त्री-योग के साथ पुंस ( पुरुष ) वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । ( ‘जैसे—मातुलः मातुलानी-मातुली, इन्द्रः इन्द्राणी,.....’ ) । ( कोई २ व्याख्याकार ‘पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः’ इसका सम्बन्ध पूर्वके ही साथ करते हैं ) ॥

५ अब कुछ स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग शब्दोंको स्वयं कहते हैं—‘मल्लकः, मल्लिका ( पुष्प-उता-विशेष, बेलका फूल ), ऊर्मिः ( पानीका तरङ्ग । + मुनिः अर्थात् ऋषि तपस्विनी ), वराटकः वराटिका ( कौड़ी ), स्वातिः ( + स्वाती । स्वाती नामका पन्द्रहवाँ नक्षत्र ), वर्णकः वर्गिका ( चन्दक ), झाटलिः ( पलाश वृक्षके तुल्य वृक्ष-विशेष ), मनुः मनायी-मनावी-मनुः ( मनुस्मृतिके निर्माता

१. ‘मुनिर्वराटकः’ इति पाठान्तरम् ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंसलिङ्गसंग्रहः ।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रीनपुंसकयो २ भावक्रिययोः व्यञ्ज् क्विच्च् वुञ् ।

औचित्यमौचित्यौ मैत्री मैत्र्यं वुञ्प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

३ षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः ।

मनु या मनुष्य, मानुषी, मूषः मूषा (सोना-चौंड़ी आदि धातु गलाने की चरिया), सृपाटः सृपाटी (परिमाण-सेढ़), कर्कन्धूः (बैर-), यष्टिः (छड़ी, लाठी), शाटः शाटी (साड़ी), कटः कटी (कमर), कुटः कुटी (कुटिया), ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंसलिङ्ग होते हैं । ( इनमें एक रूपवाले शब्द दोनों लिङ्गमें तुल्यरूप होते हैं ) ॥

इति स्त्रीपुंसलिङ्गसंग्रहः ।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'त्रिषु' ( ३।५।४१ ) के पहले 'स्त्रीनपुंसकयोः' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती ( बीचवाले ) शब्द 'स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' होते हैं ॥

२ भाव और कर्ममें विहित व्यञ् ३ और वुञ् २ प्रत्ययान्त शब्द कहीं-कहीं ( सर्वत्र नहीं किन्तु लक्ष्यानुसार ) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ ( व्यञ् प्रत्ययान्त ) जैसे—औचित्यम् औचित्यौ, मैत्र्यम् मैत्री, सामप्रथम् सामग्री, आहन्त्यम् आहन्ती, ..... । २ ( वुञ् प्रत्ययान्त ) का 'वैरमैथुनकादिवुञ्' ( ३।५।४ ) में उदाहरण दिया गया है' ) । 'क्वचित्' ( कहीं २ सर्वत्र नहीं ) ग्रहण करनेसे 'शौक्ल्यम्, ब्रह्मण्यम्, रामणीयकम्, साहाय्यकम्, शैष्योपाध्यायिका, गार्गिका, काठिका.....' यहाँपर दोनों लिङ्ग ( स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ) नहीं होते हैं ॥

३ षष्ठ्यन्त पूर्वपदमें रहनेपर सेना १, छाया २, शाला ३, सुरा ४, निशा ५, विकलसे स्त्रीलिङ्ग ( स्त्रीलिङ्ग और पक्षमें नपुंसकलिङ्ग ) होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ नृसेनम् नृसेना, राजसेनम् राजसेना, ..... । २ वृक्षच्छायम् वृक्षच्छाया, कुड्यच्छायम् कुड्यच्छाया, ..... । ३ गोशालम् गोशाला, पाठ-

स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

१ आबन्ततोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।

त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ त्रिषु ३ पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

शालम् पाठशाला, पाकशालम् पाकशाला, ..... । ४ यवसुरम् यवसुरा, ..... ।

५ श्वनिशम् श्वनिशा, ..... ) ॥

१ 'आप् १, अन् २, प्रत्ययान्त शब्द उत्तरपदमें ( आगे ) रहें तो द्विगु समासमें वे शब्द 'नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग' होते हैं तथा 'अन्' प्रत्ययके 'न्' का लोप होता है । ( 'क्रमशः उदा०—१ त्रिखट्वम् त्रिखट्वी, ..... । २ त्रितक्षम्, त्रितक्षी, .....' ) ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ यहाँसे आगे 'परवलिङ्ग.....' ( ३।५।४२ ) के पहले 'त्रिषु' का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती ( बीचवाले ) सब शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

३ यहाँ स्वयं कुछ त्रिलिङ्ग शब्दोंको कहते हैं—पात्री पात्रम् पात्रः ( बर्तन ), पुटी पुटम् पुटः ( ढक्कन ), वाटी वाटम् वाटः ( आच्छादन, घेरा ), पेटी पेटम् पेटः ( बेंत आदिका बक्स ), कुवलः कुवली कुवलम् ( बैरका फल ), दाडिमः दाडिमी दाडिमम् ( अनार ), ये ६ शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ स्वप्रधान ( उभयपदप्रधान ) इतरेतर द्वन्द्व समासमें १, और तत्पुरुष समासमें २, पर ( आगे ) वाले शब्दके समान लिङ्ग होता है । जैसे—इमे कुक्कुटमयूरयौ, इमौ मयूरीकुक्कुटौ; ..... । २ अयं कुलब्राह्मणः, इदं ब्राह्मणकुलम् ; इयमर्धपिप्पली, अयं चन्द्रार्धः ; इयं सर्पमीतिः, इदं सर्पमयम् ; ..... ) ॥

- १ अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।  
तद्धितार्थो द्विगुः सङ्ख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥  
२ बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।  
२ 'गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

१ अर्थान्त ('अर्थ' शब्द जिसके अन्तमें हो वह ) १, प्र २, आदि (अति ३, सु ४, .....), अलम् ५, प्राप्त ६, आपन्न ७, पूर्वमें जिनके रहें वे शब्द, तद्धितार्थ द्विगु ८, संख्यावाचक ९, सर्वनाम १०, संख्यान्त (संख्या-वाचक शब्द जिनके अन्तमें रहें वे) ११, सर्वनामान्त (सर्वनाम जिनके अन्तमें रहे वे) १२, शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ द्विजार्था माला, द्विजार्थः सूर्यः, द्विजार्थ पयः, ..... । २ प्रगन आचार्यः प्राचार्यः, ..... । ('आदि' से संगृहीत । ३ अतिक्रान्तः मालामतिमालः, अतिखट्वः, ..... । ४ सूपूज्यः, सुकुलम्, सुनगरी, ..... ) । ५ अलञ्जीविकाये अलञ्जीविकः, ..... । ६ प्राप्तजीविको भृत्यः, प्राप्तग्रामं कुलम्, ..... । ७ आपन्नजीविको मनुष्यः, आपन्नजीविका दासी, ..... । ८ पञ्चकपालः, पुरोडाशः, पञ्चकपालं पयः, ..... । ९ एको विप्रः, एका वधूः, एकं वस्त्रम्; द्वौ बालकौ, द्वे बालिके, द्वे वाससी, बहवो विप्राः, बह्वयः विप्रपरन्त्यः, बहूनि वस्त्राणिः ..... । १० सर्वः, सर्वा, सर्वम्; पूर्वः, पुरुषः, पूर्वा दिक्, पूर्व नगरम्; ..... । ११ ऊनत्रयो ब्राह्मणः, ऊनतिस्रो वध्वः, ऊनत्रीणि वस्त्राणि; ..... । १२ परमसर्वः, परमसर्वा, परमसर्वम्; ..... ) ॥

२ 'दिङ्नाम' से भिन्न बहुव्रीहि त्रिलिङ्ग होता है । ('जैसे—बहुधनः, बहुधना, बहुधनम्; .....') । 'आदिङ्नाम्नाम्' के ग्रहण करनेसे 'उत्तरस्यां पूर्वस्यां च मध्ये या दिक् सा 'उत्तरपूर्वा' दिक्, ..... में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ गुण १, द्रव्य २, क्रिया ३, का योगनिमित्त है जिनका वे शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम् । कृष्णो देहः, कृष्णा तनुः, कृष्णं शरीरम्; ..... । २ दण्डी पुरुषः, दण्डिनी स्त्री, दण्डि कुलम्; ..... । ३ पाचको विप्रः, पाचिका ब्राह्मणी, पाचकं विप्रकुलम्; .....') ॥

- १ कृतः कर्तर्यसंज्ञायां २ कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।  
 ३ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥  
 ४ षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ।

१ कर्ता अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न ( नामको छोड़कर ) 'कृत्' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ( जैसे—कर्ता पुरुषः, कर्त्री स्त्री, कर्तृ कलत्रम् ; कुम्भ-कारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कलत्रम् ; ..... ) । 'असंज्ञायाम्' ग्रहण करनेसे 'ग्रहः, व्याघ्रः, धनञ्जयः, हरिः, प्रजा, ..... ' में और 'कर्तरि' ग्रहण करनेसे 'कृतिः, ..... ' में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ कर्ता १ और कर्म ३ अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न 'कृत्य' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ( 'क्रमशः उदा०—१ वास्तव्यः, वास्तव्या, वास्तव्यम् ; ...' । २ कर्तव्यो धर्मः, कर्तव्या गुरुजनसेवा, कर्तव्यं सन्ध्योपासनम् ; ..... ) । 'कर्तृकर्मणोः' के ग्रहण करनेसे स्थातव्यं स्वया, ब्रह्मभूयम्, एधितव्यं स्वया... में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ 'तससे रँगा गया है' आदि ( 'आदि' से 'आगत १, युक्त २, देवता ३, दृष्ट ४, ..... ' ) अर्थमें विहित 'अण्' १, आदि प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ( जैसे—हारिद्रः पटः, हारिद्री शाटी, हारिद्रं वस्त्रम् ; कौसुम्भम्, कौसुम्भी, कौसुम्भिः, लाङ्गिकः, लाङ्गिकी, लाङ्गिकम् ; ..... । ( 'आदि' से संगृहीत १ 'आगत' अर्थमें जैसे—माथुरो विप्रः, माथुरी महिषी, माथुरं वस्त्रम् ; ..... । २ कार्तिकी पौर्णमासी, कार्तिको मासः, कार्तिकं दिनम् ; ... । ३ ऐन्द्रो मन्त्रः, ऐन्द्री ऋक्, ऐन्द्रं हविः ; ... । ४ वासिष्ठी मन्त्रः, वासिष्ठी ऋक्, वासिष्ठं साम ; ...' ) । इसी तरह अन्यान्य अर्थ और उदाहरणोंका तर्क स्वयं कर लेना चाहिये ) ॥

४ 'षट्संज्ञक १, युष्मद् २, अस्मद् ३, अव्यय ४, और तिङन्त ५, शब्द तीनों लिङ्गोंमें समान रूपवाले होते हैं । ( क्रमशः उदा०—१ कति पुरुषाः, कति स्त्रियाः, कति वस्त्राणि; पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मणाः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मण्यः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा वस्त्राणि; ..... । २-३ त्वम् अहं वा पुरुषः, त्वम् अहं वा स्त्री, त्वम् अहं वा कुलम् ; ..... । ४ उच्चैः

१. 'इति च' ( पा० सू० १।१।२५ ) इत्यनेन 'कति' शब्दस्य, ण्यन्ताः षट् ( पा० सू० १।१।२४ ) इत्यनेन च 'पञ्चन्, षट्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्' आदि नान्तशब्दानां 'षट्' संज्ञा विधीयते ।

१ परं विरोधे २ शेषं तु शेषं शिष्टप्रयोगतः । ५६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥



नीचैः पुरस्तात् पश्चाद् वा प्रासादः, उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चाद्वा वाठशाला,  
उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चात् वा गृहम्, ..... । ५ पुरुषः पचति, स्त्री पचति,  
कूलं पचति:.....' ) ॥

१ लिङ्ग-विधायक वचनोंको यदि आपसमें विरोध ( दो या अधिक वचनों  
से दो या अधिक लिङ्ग प्राप्त ) हों तो पर ( अन्त ) वाला लिङ्ग होता है ।  
( 'जैसे—'धीः, भूः, ..... ' में 'स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्' ( ३।५।२ ) चरितार्थ है  
और 'कर्ता, पाचकः, ..... ' में 'कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम्' ( ३।५।४५ ) चरितार्थ  
है, फिर 'नीः, लृः' यहाँ दोनोंकी ( १ ले वचनसे स्त्रीलिङ्ग और २ रे वचनसे  
त्रिलिङ्गकी ) प्राप्ति है तब पर ( आगेवाले ) वचनसे उक्त लिङ्ग ( त्रिलिङ्ग ) ही  
होगा । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणोंका तर्क कर लेना चाहिये' ) ॥

२ शेष ( बाकी ) लिङ्ग शिष्टोंके प्रयोगके अनुसार जानना चाहिये ।  
( 'जैसे—१ 'चालनी तितउः पुमान्' ( १।९।२६ ) इस वचनसे 'तितउ'  
शब्दको पुंलिङ्ग कहा गया, किन्तु 'तितउ परिवपनं भवति' ( पा० भा० पृ० ४२ )  
इस भाष्यके प्रयोगसे 'तितउ' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी होता है । २ 'कोरका  
कोरकः पुमान्' ( १।४।१६ ) इस वचनसे 'कोरक' शब्दको पुंलिङ्ग कहा गया है तो  
भी 'कोरकाणि' इस माघ कविके प्रयोगसे वह 'कोरक' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी  
होता है' ) । यहाँ जो नहीं कहा गया है उसे लक्ष्यसे समझना चाहिये ।  
( 'उदा०-१ अव्यक्त गुण-लिङ्गमें नपुंसकलिङ्ग होता है, जैसे—किं तस्या 'जात'  
पुमान् स्त्री वा'.... । २ 'तयप्' प्रत्ययान्त धर्मवृत्ति शब्द स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक-  
लिङ्ग होते हैं, जैसे—वर्णानां चतुष्टयी, वर्णानां चतुष्टयम्, वेदानां त्रयी, वेदानां  
त्रयम्, ..... । छन्द ( वेद ) में स्वार्थविहित 'अण्' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग  
होते हैं, जैसे—गायत्री एव गायत्रम्, अनुष्टुबेवानुष्टुभम्, ..... । ४ 'स्तिप्  
अन्तमें हो जिसके ऐसा इक् ( इ, उ, ऋ, लृ ) अन्तवाला शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है,  
जैसे—इयं वृद्धिः, इयं पचतिः, ..... । ५ 'प्रमाण' आदि शब्द नित्य नपुंसक-  
लिङ्ग होते हैं, जैसे—वेदाः प्रमाणम्, स्मृतयः प्रमाणम्, .....' ) ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥





काण्डसमाप्तिः—

१ 'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके

'अमरकोषे' तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

काण्डसमाप्तिः—

१ श्री 'अमरसिंह' के बनाये हुए 'नामलिङ्गानुशासन' (अमरकोष) नामके ग्रन्थमें 'सामान्यकाण्ड' नामका तीसरा प्रकरण अङ्गसहित समर्थित होकर पूर्ण हुआ ॥

बुधस्य सन्देहहरो बुधाग्रयः शास्त्राधिनाथो बुध 'लोकनाथः' ।

शास्त्रार्थकान्तारहरिप्रवीरो विपक्षपक्षस्य हि 'पूर्णचन्द्रः' ॥ १ ॥

वेदाङ्गषट्शास्त्रसमुद्रपारङ्गतैर्बुधैश्चापि प्रभातवन्द्यः ।

स्वान्तेवसरपूरितभू 'स्त्रिवेदी श्रीदेवनारायण' नामधेयः ॥ २ ॥

शिरसैतद्गुरुश्रेष्ठपादाब्जद्वंद्वरेणुभिः।ष्टताभिर्लब्धसङ्ज्ञानादिस्थितमनस्तमाः ॥ ३ ॥

'विहार' प्रान्त 'आरा' ख्ये मण्डले पावने शुभे ।

'केसठ' ग्रामवास्तव्य 'रामस्वार्थ' सुधीसुतः ॥ ४ ॥

'हरगोविन्दमिश्रा'ख्या 'नामलिङ्गानुशासनीम्' ।

व्याख्या 'मणिप्रभा' नाम्नी व्याधाद्वाक्त्रयोगिनीम् ॥ ५ ॥

गुरुप्रसादसंज्ञव्यज्ञानेन निर्मिता शुभा । पूज्यश्रंगुहपादाब्जेध्वेव भूयःसमर्पिता ॥ ६ ॥

नेत्राङ्गाङ्गशशाङ्गसंमिततमे श्रीवैक्रमे वसरे

भाद्रे मास्यसिते दले वसुतिथौ सौम्ये निशीथक्षणे ।

कोपस्या 'मरसिंह' पण्डितकृते व्याख्या सुपूर्णा शुभा

भूयाच्छात्रगणस्य बोधकृतये लोकस्य विष्णोर्जनिः ॥ ७ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री 'रामस्वार्थमिश्र' तनूज-श्री 'हरगोविन्दमिश्र' विरचितायां

'मणिप्रभा' ख्या 'अमरकोष' व्याख्यायां तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

१. 'इत्यमर'.....समर्थितः' इत्ययं श्लोकः केवलं महेश्वरेणैव व्याख्यातः । भा० दी० मूले, स्त्री० स्वा० व्याख्यायां च [ ] ईदृकोष्टे मूलमात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ।

२. 'व वा यथा तथैवैवम्' (श० ४।९) इति ग्रंथकारोक्तेरत्र 'वा' शब्द इवार्थक इत्यवधेयम् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

## परिशिष्टम्

**आदित्याः (११११०) —** हरिवंशोक्ता द्वादशादित्यकथाऽत्रोच्यते, तथा हि—  
 'मरीचात्करयपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया । तत्र शक्रश्च विष्णुश्च जज्ञाते पुनरेव ह ॥  
 अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा च भारत । विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च ॥  
 अंशो भगव्यातितेजा आदित्या द्वादश स्मृताः' । इति शब्दकल्पद्रुमकोशः ॥

काश्यान्ववन्त्य एव द्वादशादित्याः विद्यन्ते इत्युक्तं काशीखण्डे । तथा हि—  
 इति काशीप्रभावज्ञो जगच्चक्षुस्तमोनुदः । कृत्वा द्वादशधाऽऽत्मानं काशीपुर्यां व्यवस्थितः ॥  
 लोकार्क उत्तरार्कश्च शम्बादित्यस्तथैव च । चतुर्थो ह्रुपदादित्यो वृद्धकेशवसङ्गौ ॥  
 दशमो विमलादित्यो गङ्गादित्यस्तथैव च । द्वादशश्च रमादित्यः काशीपुर्यां षटोद्भव ॥  
 तमोऽधिकेभ्यो दुष्टेभ्यः क्षेत्रं रक्षन्त्यमी सदा' ।

इति काशीखण्डे अ० ४६; वाचस्पत्याभिधानस्य ३८०६ तमे पृष्ठे ॥

यथा वा—विष्णुधर्मोत्तरे भारते चोक्ता द्वादशादित्याः—

'धाता मित्रोऽर्यमा रुद्रो वरुणः सूर्य एव च । भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशमस्तथा ॥  
 एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते' । इति ॥

द्वादशमासभेदेनान्य एव द्वादशादित्या आदित्यद्वये सक्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते ।

तथा हि—

'अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा । चैत्रे मासि च वेदज्ञो वैशाखे तपनः स्मृतः ॥  
 ज्येष्ठे मासि तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः । गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥  
 श्वे हिरण्यरेताश्च कार्तिके च दिवाकरः । मार्गशीर्षे तपेच्चैत्रः पौषे विष्णुः सनातनः ॥

इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेयाः प्रकीर्तिताः' ।

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ६९६ तमे पृष्ठे ॥

**विश्वेदेवाः ( ११११० ) —** विश्वेदेवा दश प्रोक्तास्तेषां नामान्युल्लिख्यन्ते ।

तथा हि—

'ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः काकस्तथा धुरिः । रोचनोमाद्रबाक्षैव तथा चान्यः पुरुरवाः ।  
 विश्वेवा भवन्त्येते दश ब्राह्मणेषु पूजिताः' । इति वाचस्पत्याभिधाने ४९१६ तमे पृष्ठे ॥

अन्यच्च बह्विपुराणे—

'ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः काकस्तथा ध्वनिः । रोचकश्चाद्रबाक्षैव तथा चान्यः पुरुरवाः ।

विश्वेदेवा भवन्त्येते दश सर्वत्र पूजिताः' ॥ इति वह्निपुराणे गणनामाध्यायः' ।

इति शब्दकल्पद्रुमकोशस्य ४४० पृष्ठे ।

**वसवः** ( ११११० )—वसवोऽष्टौ । ते यथा—

‘धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः’ ॥

इति ‘भा० आ० ६६ अ०’ इति वावस्पत्याभिधानस्य ४८६३ तमे पृष्ठे ।

धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ क्रमात्स्मृताः’ ॥

इति भरतः । दक्षो द्वितीयजन्मनि षष्ठमन्वन्तरे असिक्न्मां पत्न्यां षष्टिः कन्या जनयामास । ताः प्रजापतिभ्यो दत्तवान् । धर्माय दश, तासां नामानि—‘भानुर्लम्बा ककुयामिर्विष्वा साध्या मरुत्वती । वसुमुहूर्ता सङ्कल्पा । आसां मध्ये वसोरष्टौ वसवः पुत्रा जाताः । ते यथा—१ द्रोणः, २ प्राणः, ३ ध्रुवः, ४ अर्कः, ५ अग्निः ६ दोषः, ७ वास्तुः ८ विभावसुश्चेति’ ॥

मतान्तरोक्ता अष्टौ वसवो यथा—

‘१ धरः, २ ध्रुवः, ३ सोमः, ४ सावित्रः, ५ अनिलः, ६ अनलः, ७ प्रत्यूषः, ८ प्रभासश्चेति’ महामारते दानधर्मः । अवि च—

‘आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः’ ॥ इति वह्निपुराणे काश्यपीयप्रजासर्गनामाध्यायः । कूर्मपुराणे १४ तमाध्यायश्चेति ॥

**तुषिताः** (११११०) गणदेवताभेदे १२ मन्वन्तरभेदे भिन्ननामानो यथा—

‘पूर्वमन्वन्तरे श्रेष्ठा द्वादशासन् सुरोत्तमाः । तुषिता नाम तेऽन्योन्यमूचुर्वैवस्वतोऽन्तरे । उपस्थितेऽतियशसश्चाक्षुषस्यान्तरे मनोः । समवायीकृताः सर्वे समागम्य परस्परम् ॥ आगच्छत हुतं देवा अदितिं संप्रविश्य वै । मन्वन्तरे प्रसूयामस्तत्र श्रेयो भविष्यति ॥ एवमुक्त्वा तु ते सर्वे चाक्षुषस्यान्तरे मनोः । मारीचात्कश्यपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया ॥ तत्र विष्णुश्च शक्रश्च जज्ञाते पुनरेव च । अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा तथैव च ॥ विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव । अंशो भगश्चादितिजा आदित्या द्वादश स्मृताः ॥

चाक्षुषस्यान्तरे पूर्वमासन् ये तुषिताः सुराः ।

वैवस्वतोऽन्तरे ते वै आदित्या द्वादश स्मृताः ॥’

इति हरिवंशे ३याध्यायः ॥ तथा चादित्यरूपा द्वादश—

‘प्राणापानाबुदानश्च समानो व्यान एव च । चक्षुः श्रोत्रं रसो घ्राणस्पर्शौ बुद्धिर्मनस्तथा ॥

१. अत्रैवाग्रे प्रत्येकस्य सन्ततिवर्णनं नाम चाग्रे विस्तरेण वर्णितम् ।

द्वादशैते तु तुषिता देवाः स्वारीचिषोऽन्तरे' । इति सारसुन्दरीवचनाद् द्वादश ।  
तोषः प्रतोषः सन्तोषो भद्रशान्तिरिडस्पतिः । इष्मः कविर्बिभुः स्वाहासुदेवो रोचनो द्विषट् ।  
तुषिता नाम ते देवा आसन् स्वायम्भुवोऽन्तरे' ॥

इति शब्दार्थचिन्तामणिधृतवाक्योक्त्या षट्त्रिंशत् ॥

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ३३३७ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य ६४० पृष्ठे च ॥

ये च द्वादश इति मन्यन्ते, त एकैकमन्वन्तरापेक्षया द्वादशेति वर्णयन्ति  
समष्टयभिप्रायेण षट्त्रिंशदिति विवेकः । तदभिप्रायेणैव 'षट्त्रिंशत्तुषिता मताः'  
इत्युक्तं टिप्पणे इत्यवधेयम् ॥

आभास्वराः ( १।१।१० )—आभास्वराः' द्वादश । तथा हि—

‘आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं शमस्तपः ।

कामः क्रोधो मदो मोहो द्वादशाभास्वरा इमे' ॥

इति वाचस्पत्याभिधाने ७५४ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य १७९ तमे पृष्ठे च ॥

अनिलः ( १।१।१० )—अग्निपुराणे वायोऋणपञ्चाशन्नामान्युक्तानि, तानीह  
प्रोच्यन्ते । तथा हि—

‘एकज्योतिश्च द्विज्योतिश्चिज्योतिज्योतिरेव च । एकशक्नो द्विशक्नश्च त्रिशक्नश्च महाबलः ॥

इन्द्रश्च गत्यदृश्यश्च ततः पतिसकृत्परः । मितश्च संमितश्चैव सुमतिश्च महाबलः ॥

ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषेणः सेनजित्था । अग्निमित्रोऽनमित्रश्च पुरुमित्रोऽपराजितः ॥

ऋतश्च ऋतवाद्श्च धर्ता च धरणो ध्रुवः । विधारणो नाम तथा देवदेवो महाबलः ॥

इदृक्षश्चाप्यदृक्षश्च एते दश मितशिनः । व्रतिनः प्रसदृक्षश्च सभरश्च महायशः ॥

वाता दुर्गो धृतिर्भीमस्त्वभियुक्तस्त्वपात्सहः । द्युतिर्यपुरनाय्योऽथ वासः कामो जयो विराट् ॥

इत्येकोनाश्च पञ्चाशन्मरुतः पूर्वसम्भवाः' ॥ इति बह्विपुराणे गणनामाध्यायः ॥

हेमाद्रौ दानखण्डे वायुपुराणोक्तान्येकोनपञ्चाशन्मरुन्नामानि, तेषां सप्त गणाश्चो-

क्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते । तथा हि—मरुन्नामानि तु वायुपुराणे—

ततस्तेषां तु नामानि मातापित्रोः ? प्रचक्रतुः । तद्विधैः कर्मभिश्चैव मरुतान्तो पृथक् पृथक् ॥

शुकज्योतिस्तथाऽऽदित्यश्चित्रज्योतिस्तथाऽपरः ।

सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मान् सत्यहा ऋतपास्तथा ॥

१. इदं 'आभास्वराश्चतुःषष्टिः' इति टिप्पणीवचनविरुद्धमपि ६४ भेदानां काव्यनुप-  
लब्धेद्वादशैवात्र निर्दिष्टाः । ६४ भेदान् सूचयतो विदुषः परं कृतञ्चो भवेयम् ।

प्रथमोऽयं गणः प्रोक्तो द्वितीयं तु निबोधत । ऋतजित्सत्यजिच्छैव सुषैवः सेनजित्तथा ॥  
 अन्तिमित्रो ह्यमित्रश्च दूरेमित्रस्तथा परः । गण एष द्वितीयस्तु तृतीयोऽयं निबोधत ॥  
 ऋतः सत्यो ध्रुवो धर्ता विधर्ताऽयं विचारयः । धरुणश्च तृतीये तु चतुर्थं मे निबोधत ॥  
 ध्वान्तश्च धुनितश्चैव सभरश्च तथा गणः । ईदृक्षासः पुरुषश्चैव ! अन्यादृक्षास एव नः ॥  
 संमिताः समदृक्षासः प्रतिदृक्षास वै गणः । मरुतेन्द्रः सरभसस्तथा देवविशोऽपरः ॥  
 यज्ञश्चैवानुवर्तमानस्तथाऽन्यो मानुषोविशः । दैत्यदेवाः समाख्याताः सप्तैते सप्तका गणाः ॥  
 एते ह्येकोनपञ्चाशन्मरुतो नामतः स्मृताः । इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७७६ तमे पृष्ठे ॥

वायवः पञ्चैवेति केचिदाहुस्तेऽत्र लिखन्ते । तथा हि—‘वायुश्च पञ्चभूतान्त-  
 र्गतभूतविशेषः । तद्विशेषविवरणं यथा—वायवः प्राणापानसमानव्यानोदानाः । तत्र  
 १ प्राणो नाम प्राग्गमनवाक्साप्रवर्ती, २ अपानो नाम अवगमनवान् पाय्वादिस्थान-  
 ववर्ती, ३ व्यानो नाम विध्वगमनवान् अखिलशरीरवर्ती, ४ उदानो नाम कण्ठस्था-  
 नोय ऊर्ध्वगमनवानुत्क्रमणवायुः, ५ समानो नाम शरीरमध्यगताशितपीताब्जादिसमी-  
 करणकरः ( समीकरणन्तु परिपाककरणं रसरुधिरशुक्लपुरीषादिकरणम् ) इति ।

अन्ये तु ‘१ नाग २ कूर्म ३ कृकर ४ देवदत्त ५ धनञ्जयाख्याः पञ्चान्ये वाय-  
 वः सन्तीत्याहुः । तत्र १ नाग उद्गिरणकरः, २ कूर्मो निमोलनादिकरः, ३ कृकरः  
 भ्रुधाकरः, ४ देवदत्तो जृम्भणकरः, ५ धनञ्जयः पोषणकरः । एतेषां प्राणादिष्वन्त-  
 र्भावात्पञ्चैवेति केचित् । इति शब्दकल्पद्रुमकोषः ३४१ पृष्ठे । वाचस्पत्युक्तान्येको-  
 नपञ्चाशद्वायुनामानि तत्रैव शब्दकल्पद्रुमकोषे १६४-१६८ तमे पृष्ठे ‘अनिल’ शब्द-  
 विवरणे सविस्तरं द्रष्टव्यानि ॥

महाराजिकाः ( ११११० )—एषां विशत्यधिकशतद्वयं भेदाः सन्ति ॥

साध्याः ( ११११० )—साध्या द्वादशविधास्तेषां नामानि यथा—

‘मनो मन्ता तथा प्राणो भरोऽपानश्च वीर्यवान् । निर्भक्षो नरकश्चैव दंशो नारायणो वृषः

प्रभुश्चेति समाख्याताः साध्या द्वादश देवताः’ ।

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ५२७९ तमे पृष्ठे ॥

रुद्रः ( ११११० )—रुद्रा एकादश सन्ति । ते यथा—१ अजः, २ एक-  
 पाद्, ३ अहिमृगः, ४ पिनाकी, ५ अपराजितः, ६ त्र्यम्बकः, ७ महेश्वरः,  
 Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

८ वृषाकपिः, ९ शम्भुः, १० हरणः, ११ ईश्वरश्चेति, इति महाभारते दानधर्मः ॥  
अपि च—

‘अजैकपादहिम्वध्नो विरूपाक्षः सुरेश्वरः । जयन्तो बहुरुपश्च त्र्यम्बकोऽप्यपराजितः ॥  
वैवस्वतश्च सावित्रो हरो रुद्रा इमे स्मृताः’ । इति जटाधरः ॥ अन्यच्च—  
अजैकपादहिम्वध्नस्त्वष्टा रुद्रश्च दीर्यवान् । त्वष्टुश्चैवात्मजः पुत्रो विश्वरूपो महातपाः ॥  
हरश्च बहुरुपश्च त्र्यम्बकश्चापराजितः । वृषाकपिश्च शम्भुश्च कपर्दी रैवतस्तथा ॥  
एकादशैते कथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः’ । इति गारुडे ६ तमेऽध्याये ॥

अग्निपुराणे ‘त्वष्टृस्थाने ‘कृत्तिवासा’ इत्युक्तम् ॥ अन्यच्च—

‘अजैकपादहिम्वध्नो विरूपाक्षोऽथ रैवतः । हरश्च बहुरुपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥  
सावित्रश्च जयन्तश्च पिनाकी चापराजितः । एते रुद्राः समाख्याता एकादश गणेश्वराः  
इति मातस्ये ५ मेऽध्याये’ इति शब्दकल्पद्रुमकोषस्य १६७ तमे पृष्ठे ॥

हेमाद्रौ ब्रह्माण्डपुराणे अष्टैव रुद्राः समाख्याताऽस्तेऽत्र यथाक्रमं स्त्रीपुत्रनाम-  
सहिता निर्दिश्यन्ते । तथा हि—

रुद्रो भवश्च शर्वश्च ईशः पशुपतिस्तथा । भीम उग्रो महादेव एते रुद्राः प्रकीर्तिताः ॥  
जटिलाश्चर्मवसनाः सर्वे खट्वाणूश्चलिनः । तेषां भार्याश्च पुत्राश्च नामतः कथयामि ते ॥

सौवर्चलाऽङ्गवादा च विकेशी च शिवा तथा ।

स्वाहा दिशा च दीक्षा च रोहिणी च तथा क्रमात् ॥

ताश्च स्त्रीवेषधारिण्यः सर्वाभरणभूषिताः । रुद्रपत्न्य इमाश्चाष्टौ पुत्राश्च ऋणु नारद ॥  
शनैश्वरश्च शुक्रश्च लोहिताङ्गो मनोजवः । वसन्तः स्वर्गः सन्तानो बुधश्चैव यथाक्रमम्’ ॥

इति हेमाद्रेर्दानखण्डे ७४५ तमे पृष्ठे ॥

षडभिज्ञः ( ११११४ )—अभिधर्मकोषोक्ताः षडभिज्ञा यथा—

१ ऋद्धि-श्रोत्र-मनः-पूर्वनिवास-च्युत्युपपत्तयेत ज्ञानसाक्षा क्रियाभिज्ञा षड्-  
विधाः । २ दिव्यश्रोत्रज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ३ चेतःपर्यायज्ञानसाक्षात्क्रिया-  
भिज्ञा । ४ पूर्वनिवासानुस्मृतिज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ५ च्युत्युपपादनज्ञानसाक्षात्क्रि-  
याभिज्ञा । ६ आश्रवक्ष्यज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा’ । इति अभिधर्मकोषः ७४९ ॥

दशबलः ( ११११४ )—अभिधर्मकोषे दशबलानि बुद्धस्यान्यान्येवोक्तानि ।  
तानि यथा—

‘ध्यानाध्यक्षाभिमोक्षेषु ध्यान्ती च प्रतिपत्सु वा । दश द्वे संवृतिज्ञाने षड्वा दश वा क्षये ॥

१ स्थानासहजानबलम् । २ क्रमविपाकज्ञानबलम् । ३—३ ध्यान-विमोक्ष—

समाधि-समापत्तिज्ञानबलानि । ७ सर्वत्रगाभिनीप्रतिपज्ज्ञानबलम् । ८—९ पूर्व-  
निवासबलम् , द्युत्युत्पादनबलञ्च । १० अश्रवक्ष्यज्ञानबलम् । इति अभिष-  
र्गकोषः ७।२९ ॥

**अष्टमूर्तिः** ( ज्ञे० १४—१।१।३४ )—अथाष्टमूर्तेः प्रत्येकमूर्तिनामान्युच्यन्ते ।  
तथा हि—१ 'क्षितिमूर्तिः शर्वः, २ जलमूर्तिर्भवः, ३ अग्निमूर्ति रूद्रः, ४ वायुमूर्ति-  
रुद्रः, ५ आकाशमूर्तिर्भीमः, ६ यजमानमूर्तिः पशुपतिः, ७ चन्द्रमूर्तिर्महादेवः,  
८ सूर्यमूर्तिरीशानश्चेति तन्त्रशास्त्रम् । एताः शरभरूपिशिवस्याष्टपादा इति कालि-  
कापुराणम् ॥ अन्त्यञ्च—

‘अथाग्नी रविरिन्दुश्च भूमिरापः प्रमञ्जनः । यजमानः खमष्टौ च महादेवस्य मूर्तयः’ ॥  
इति ‘शब्दमाला’ इति शब्दकल्पद्रुमस्य १४९ तमे पृष्ठे ॥

**सप्तमातरः** ( ज्ञे० १६—१।१।३५ )—भरतेन सप्त मातर उक्तास्तथा हि—

‘ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री रौद्री वाराहिकी तथा ।

कौबेरी चैव कौमारी मातरः सप्त कीर्तिताः’ ॥ इति ।

अन्याश्च सप्तमातरो यथा—

‘आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका ।

गावी धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः’ ॥ इति ॥

अन्यत्राष्टमातरोऽप्युक्तास्तथा हि—

‘ब्राह्मी माहेश्वरी चैव वाराही वैष्णवी तथा ।

कौमारी चैव चामुण्डा चर्चिकेत्यष्ट मातरः’ ॥ इति ॥

आदृतत्वे बहुवृत्तपरिशिष्टे गौर्यादिषोडशमातरोऽप्युक्तास्ता यथा—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥

शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिरात्मदेवतया सह ।

आदौ विनायकः पूज्यः अन्ते च कुलदेवताः ॥ इति ॥

द्वैष्टवपूज्यास्त्वन्या एव षोडश मातरः उक्तास्तथा हि—

‘यत्र मातृगणाः पूज्यास्तत्र ह्येताः प्रपूजयेत् । सदा भगवती पौर्णमासी पञ्चान्तरङ्गिका ॥

गङ्गा कलिन्दतनया गोपी वृन्दावती तथा । गायत्री तुलसी वाणी पृथिवी गौक्ष वैष्णवी ॥

श्रीयशोदा देवद्वृत्तिदेवकीरोहिणीमुखाः । श्रीसीता द्रौपदी कुन्ती ह्यपरया महर्षयः ॥

रुक्मिण्याद्यास्तथा चाष्टमहिषी याश्च ता अपि’ ।

इति पाद्मे उत्तरखण्डे ७८ तमेऽध्याये’ इति शब्दकल्पद्रुमस्य ६९० तमे पृष्ठे ॥

**दुर्गाः** ( १।१।३७ )—दुर्गासप्तशत्यां नव दुर्गा उक्ताः । तथा हि—

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी । तृतीयं चन्द्रवर्णदेवि कूष्माण्डदेवि चतुर्थकम् ॥  
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतथा । सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥  
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः । इति दुर्गासप्तशतीकवचम् ६—५ ॥

**निधिः** ( जे० ३०—१।१।७१ ) मूले नवनिधय उक्ताः । किन्तु हारावल्यां  
'सर्वश्च निधयो नव' इत्यस्य स्थाने 'वर्चोऽपि निधयो नव' इति पाठ उपलभ्यते ।  
मार्कण्डेयपुराणे तु 'वर्च' इति हित्वाऽष्टावेवोक्ता इति भरतः । तल्लक्षणं फलश्च  
मार्कण्डेयपुराणस्य ६८ तमेऽध्याये द्रष्टव्यम् ॥

**सन्ध्या** ( १।४।३ )—मुहूर्तचिन्तामणौ, तद्व्याख्यायां पीयूषधारायां चोक्तं  
सन्ध्यालक्षणं निर्दिश्यते । तथा हि—

'सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कविम्बादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।

चेयाम्यसौम्ये अयने कमास्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वधसौ' ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणिः ३।७॥ अत्र पीयूषधाराख्यटीकाकारः । 'तदाह वराहः—

अर्धास्तमितानुदितात्सूर्यादस्पष्टमं नभो यावत् ।

तावत्सन्ध्याकालविहैरेतैः फलं ब्रूयात्' ॥ इति ॥

सन्धयोर्लक्षणान्तरे । तत्प्रमाणमाह नारदः—

'अर्धास्तमनसन्ध्या हि षटिकात्रयसंमिता । तत्रैवार्द्धोदयात्प्रातर्घटिकात्रयसंमिता' ॥ इति ॥

स्कन्दपुराणेऽपि—

'उदयात्प्राक्तनी सन्ध्या षटिकात्रयमुच्यते ।

सोऽयं सन्ध्या त्रिघटिका ह्यस्तादुपरि भास्वतः' ॥ इति ॥

अत्र सन्ध्यालक्षणोऽर्द्धास्तमितानुदितवाक्यस्य स्कन्दपुराणीयवाक्यस्य च यव-  
ब्रीहिवद्विकल्पः' इति ॥

**कल्पः** ( १।४।२१ )—त्रिंशत्कल्पस्य ब्रह्मणो मासो जायते । तेषां त्रिंश-  
त्कल्पानां नामान्यत्र निर्दिश्यन्ते । तथा हि—'अथ कल्पदानं मत्स्यपुराणे—

'कल्पानुकीर्तनं वक्ष्ये सर्वपापप्रणाशनम् । यस्यानुकीर्तनादेव वेदपुण्येन युज्यते ॥

प्रथमः श्वतकल्पस्तु द्वितीयो नीललोहितः । वामदेवस्तृतीयस्तु ततो रथन्तरोऽपरः ॥

रौरवः पञ्चमः प्रोक्तः षष्ठः प्राण इति स्मृतः । सप्तमोऽथ वृहत्कल्पः कन्दर्पोऽष्टम उच्यते ॥

सद्योऽथ नवमः प्रोक्त ईशानो दशमः स्मृतः । व्यान एकादशः प्रोक्तस्तथा सारस्वतोऽपरः ॥

त्रयोदश उदानस्तु गारुडोऽथ चतुर्दशः । कूर्मः पञ्चदशो ज्ञेयः पौर्णमासी प्रजायते ॥



षोडशो नारसिंहस्तु समानस्तु ततः परः । आग्नेयोऽष्टादशः प्रोक्तः सोमकल्पस्तथा परः ॥  
मानवो विंशतिः प्रोक्तस्तत्पुमानिति चापरः । वैकुण्ठश्च परस्तद्वल्लक्ष्मीकल्पस्तथा परः ॥  
चतुर्विंशस्तथा प्रोक्तः सावित्रीकल्पसंज्ञकः । पञ्चविंशतिमो घोरो वाराहस्तु ततोऽपरः ॥  
सप्तविंशोऽथ वैराजो गौरीकल्पस्तथाऽपरः । माहेश्वरस्तथा प्रोक्तास्त्रि रो यत्र घातितः ॥  
पितृकल्पस्तथा ते तु या कुहूर्ब्रह्मणः स्मृता । इत्ययं ब्रह्मणो मासः सर्वपापप्रणाशनः ॥

इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७८३ तमे पृष्ठे ॥

**भैरवम्** ( १।७।१९ )—अयं भैरवशब्दः पुंलिङ्गत्वे देवविशेषस्य वाचकः ।  
तस्य चाष्टौ भेदाः सन्ति । ते यथा— १ अमिताभः, २ रुद्रः, ३ चण्डः, ४ क्रोधः,  
५ उन्मत्तः, ६ कुपितः, ७ भीषणः, ८ संहारश्चेति ॥

**द्वीपः** ( १।१०।८ )—अग्निपुराणे सप्त द्वीपा उक्ताः । ते च लवणादिभिः  
सप्तसमुद्रैरावृता इत्युक्तम् । तथा हि—

‘जम्बूद्वीपश्चाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलिश्चापरो महान् ।

कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चेति सप्तमः ॥

एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः । लवणेषुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलैः समम् ॥

इत्यग्निपुराणम् अध्यायः १०८ श्लो० १-२ ॥

**नल्वः—गव्यूतिः** ( २।१।१८ )—हेमाद्रौ दानखण्डे ‘नल्व-गव्यूति’ लक्षण-  
न्युक्तानि । तथा हि—

‘जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते ॥  
त्रसरेणुस्तु विज्ञेयो ह्यष्टौ ये परमाणवः । त्रसरेणवस्तु ते ह्यष्टौ रथरेणुस्तु स स्मृतः ॥  
रथरेणवस्तु ते ह्यष्टौ बालाग्रं तत्स्मृतं बुधैः । बालाग्रण्यष्ट लिखा तु यूका लिखाष्टकं बुधैः ॥  
अष्टौ यूका यवं प्राहुरङ्गुलं तु यथाष्टकम् । द्वादशाङ्गुलमात्रा वै वितस्तिस्तु प्रकीर्तिता ॥  
अङ्गुष्ठस्य प्रदेशिन्या न्यासः प्रादेश उच्यते । तालः स्मृतो मध्यमया गोकर्णश्चाप्यनामया ॥  
कनिष्ठया वितस्तिस्तु द्वादशाङ्गुलिका स्मृता । रत्नस्त्वङ्गुलपर्वणि विज्ञेयस्त्वेकविंशतिः ॥

चत्वारि विंशतिश्चैव हस्तः स्यादङ्गुलानि तु ।

किष्कुः स्मृतो द्विरतिस्तु द्विचत्वारिंशदङ्गुलः ॥

षण्णवत्यङ्गुलैश्चैव धनुर्दण्डः प्रकीर्तितः । धनुर्दण्डयुगं नालिङ्ग्यो ह्येते यवाङ्गुलेः ॥  
धनुषा त्रिंशता नल्वमाहुः संख्याविदो जनाः । धनुः सहस्रे द्वे चापि गव्यूतिरुपदिश्यते ॥

अष्टौ धनुःसहस्राणि योजनं तु प्रकीर्तितम् ॥

**मार्कण्डेयपुराणे—**

‘परमाणुः परं सूक्ष्मं त्रसरेणुर्महीरजः । बालाग्रं चैव लिखा च यूका चाथ यवोऽङ्गुलम् ॥

कमादष्टगुणान्याहुर्यवा अष्टौ ततोऽङ्गुलम् ।  
 षडङ्गुलं पदं प्राहुर्वितस्त्रिद्विगुणं स्मृतम् ॥  
 द्वे वितस्ती ततो हस्तो ब्रह्मतीर्थं द्विचेष्टनैः ।  
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो नालिका तश्चोनेन तु ॥  
 कोशो धनुस्सहस्रे द्वे गम्यतिश्च चतुर्गुणा ।  
 द्विगुणं योजनं तस्मात्प्रोक्तं संख्यानकोविदैः ॥  
 इति हेमाद्रौ दानखण्डे १३१-१३२ तमे पृष्ठे ॥

पर्वतः ( २।३।१ )—अथ प्रसन्नाद्रुद्रपुराणोक्तसप्तकुलपर्वतानां नामान्गुलि-  
 क्यन्ते । तथा हि—

त्रिकोणे संस्थितो मेरुरधः कोणे च मंदरः ।  
 दक्षकोणे च कैलासो वामकोणे हिमाचलः ॥  
 निषधश्चोर्ध्वरेखायां दक्षायां गन्धमादनः ।  
 रमणो वामरेखायां सप्तैते कुलपर्वताः ॥

इति गरुडपुराणे १५ अ० ६०-६१ श्लो० ॥

यमः ( २।७।४८ )—अत्रिस्मृतौ तु यमा दश उक्ताः । तथा हि—

‘मानृशंस्यं क्षमा सत्यमहिंसादानमार्जवम् ।  
 प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश’ ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४८ ॥

नियमाः ( २।७।४९ ) अत्रिस्मृतौ नियमा दशसंख्यका उक्ताः । तथा हि—

‘शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहौ ।  
 व्रतमौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश’ ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४९ ॥

दुर्गः ( २।८।१७ )—दुर्गस्य नवधात्वं शुक्लीतावुकमत्र प्रोच्यते, तथा हि—

‘षष्ठं दुर्गप्रकरणं प्रवक्ष्यामि समासतः ।  
 खातकण्टकपाषाणैर्दुष्पथं दुर्गमैरिणम् ॥  
 परितस्तु महाखातं पारिखं दुर्गमेव तत् ।  
 इष्टकोपलमृत्तिप्राकारं पारिधं स्मृतम् ॥  
 महाकण्टकवृक्षौघैर्ग्याप्तं तद्वनदुर्गमम् ।  
 जलमावस्तु परितो धन्वदुर्गं प्रकीर्तितम् ॥

जलदुर्गं स्मृतं तज्ज्ञैरासमन्तान्महाजलम् ।

सुवारिपृष्ठेऽधरं विविकते गिरिदुर्गमम् ॥

अभेयं व्यूहविद्वीरव्याप्तं तत्सैन्यदुर्गमम् ।

सहायदुर्गं तज्ज्ञेयं शूराणुकूलबान्धवम् ॥

एतेषु किमपेक्षया कस्य श्रेष्ठत्वमित्यपि तत्रैव—

‘पारिखादैरिणं श्रेष्ठं पारिघं तु ततो वनम् ।

ततो धन्वं जलं तस्माद्विरिदुर्गं ततः स्मृतम् ॥

सहायसैन्यदुर्गे तु सर्वदुर्गप्रसाधके ।

ताभ्यां विनाऽन्यदुर्गाणि निष्फलानि महीभुजाम् ॥

श्रेष्ठं तु सर्वदुर्गेभ्यः सेनादुर्गं स्मृतं बुधैः’ ॥ इति शुक्नीतिः ४१६१-८ ॥

राज्याङ्गानि ( २१८१८ )—शुक्नीत्यां सप्त राज्याङ्गान्युक्तानि । तथा हि—

‘स्वान्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।

सप्ताङ्गमुच्यते राज्यं तत्र मूर्धा नृपः स्मृतः ॥

दृगमात्यः सुहृच्छ्रेष्ठं मुखं कोशो बलं मनः ।

हस्तौ पादौ दुर्गराष्ट्रौ राज्याङ्गानि स्मृतानि हि’ ॥

इति शुक्नीतिः ११६१-६२ ॥

गतयोऽमूः पञ्च ( २१८४९ )—शुक्नीत्यामश्वस्यैकादश गतय उक्ता-  
स्तथा हि—

‘चक्रितं रेचितं बलिगतकं धौरितमास्तुतम् ।

तुरं मन्दं च कुटिलं सर्पणं परिवर्तनम् ॥

एकेदशास्कन्दितम्’ । इति शुक्नीतिः २१९४-१३५ ॥

लोकाः ( २१३१२ )—‘भुवनार्थकं लोक’ शब्दस्य गण्डपुराणे सप्त भेदा  
उक्तास्तथा हि—

‘.....सप्त लोकाः प्रकीर्तिताः ॥

भुलोकं नामिमध्ये तु भुवर्लोकं तदुर्ध्वके । स्वर्लोकं दृश्ये विद्यात्कण्ठदेशे महस्तथा ॥

जनलोकं वक्त्रदेशे तपोलोकं कलाटके । सत्यलोकं ब्रह्मरन्ध्रे—’

इति गण्डपुराणे ११५ । ५७—५९ ॥

‘भुर्भुवः स्वर्भेदेन त्रय एव लोका’ इत्यपि परे ।

**प्रमाणम्** ( ३।३।५४ )—मतभेदेन 'प्रमाण'स्य संख्यात्वेऽनेकमतम् ।  
तथा हि—

‘प्रत्यक्षमेके चार्वाकाः, ‘कणाद’सुगतौ पुनः ।  
प्रत्यक्षमनुमानश्च, साङ्ख्यः शब्दं च ते अपि ॥  
‘न्यायैकदेशिनोऽप्येवमुपमानं च ‘केचन ।  
अर्थापत्त्या सहैतानि चत्वार्याह प्रभाकरः ॥  
अभावप्रष्टान्येतानि ‘भाट्टा वेदान्तिनस्तथा ।  
सम्भवैतिह्ययुक्तानि तानि पौराणिका जगुः’ ॥ इति ॥

**तलम्** ( ३।३।२०२ )—अधोऽर्थक ‘तल’ शब्दस्य गरुडपुराणे सप्त भेदा उक्तास्ते यथा—

‘पादाधस्तात्तलं ज्ञेयं पादोर्ध्वं वितलं तथा ।  
जानुनोः सुतलं बिद्धि सक्थिदेशे महातलम् ॥  
तलातलं सक्थिमूले गुह्यदेशे रसातलम् ।  
पातालं कटिसंस्थं च—’ इति गरुडपुराणे १५।५६—५७ ॥

अग्निपुराणे सप्त तलान्युक्तानि । तथा हि—  
अतलं वितलं चैव नितलं च गभस्तिमतम् । महामं सुतलं चैव पातालं चापि सप्तमम् ॥  
प्रसङ्गतस्तत्रत्यभूमिवर्णान्यप्युच्यन्ते—  
कृष्णपीताम्बुजाः शुक्लार्कराः शैलकाञ्चनाः । भूमयस्तेषु रम्येषु—  
इति अग्निपुराणम् १२०।१२-३ ॥

**कला** (३।३।१९८)—चतुष्षष्टिः कलाः शैवतम्बोक्ता यथा—‘गीतम् १,  
वाद्यम् २, नृत्यम् ३, नाट्यम् ४, आलेख्यम् ५, विशेषकच्छेद्यम् ६, तण्डुलकुसुम-  
बलिप्रकाराः ७, पुष्पास्तरणम् ८, दशनवसनाङ्गरागाः ९, मणिभूमिकार्कम् १०, शय-  
नरचनम् ११, उदकवाद्यमुदकघातः १२, चित्रयोगाः १३, माल्यग्रन्थविकल्पाः १४,  
शेखरापीडयोजनम् १५, नेपथ्ययोगाः १६, कर्णपत्रमङ्गाः १७, सुगन्धियुक्तिः १८,

- |                                   |             |                       |
|-----------------------------------|-------------|-----------------------|
| १. वैशेषिकः ।                     | २. बुद्धः । | ३. प्रत्यक्षानुमाने । |
| ४. न्यायसारस्य भूषणाख्यटीकाकारः । |             | ५. अन्ये नैयायिकाः ।  |
| ६. कुमारिकभट्टानुयायिनः ।         |             |                       |

भूषणयोजनम् १९, ऐन्द्रजालम् २०, कौचुमारयोगाः २१, हस्तलाघवम् २२, चित्र-  
शाकापूपभक्ष्यविकारक्रियाः २३, पानकरसरागासनयोजनम् २४, सूचीवायकर्म २५,  
सूत्रक्रीडा २६, वीणाढमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाला २९, दुर्वचक-  
योगाः ३०, पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम्  
३३, पत्रिकावेत्रबाणविकल्पाः ३४, तर्ककर्माणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविद्या ३७,  
रूप्यरत्नपरीक्षा ३८, धातुवादः ३९, मणिरागज्ञानम् ४०, आकरज्ञानम् ४१, वृक्षा-  
द्युर्वेदयोगाः ४२, मेघकुक्कुटलावकयोगविधिः ४३, शुक्रशारिकाप्रकापनम् ४४, वत्सा-  
दनम् ४५, केशमार्जनकौशलम् ४६, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४७, म्लेच्छितकविकल्पाः  
४८, देशभाषाज्ञानम् ४९, पुष्पशकटिकानिमितिज्ञानम् ५०, यन्त्रमातृकाधारणमातृका  
५१, संवाच्यम् ५२, मानसकाव्यक्रिया ५३, अभिधानकोशः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५,  
क्रियाविकल्पाः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रगोपनानि ५८, द्यूतविशेषः ५९, आक-  
र्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, वैनायिकीनाम् ६२, वैजयिकीनाम् ६३, वैतालिक-  
कानाञ्च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति ( श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे पूर्वाद्धे अध्यायः ४५  
श्लो० ३६ तमस्य 'श्रीधरी' व्याख्या ॥

**शुक्रनीतौ तु एतद्विधा एव कला उक्ताः । तथाहि—शुक्रनीत्युक्ताश्चतु-  
ष्टयष्टिः कला यथा—**

कलानां तु पृथङ्नाम लक्ष्म चास्तीह केवलम् ।  
पृथक् पृथक् क्रियाभिर्हि कलः भेदस्तु जायते ।  
यां यां कलां समाधित्य तन्नात्रा जातिरुच्यते ॥  
हावभावादिसंयुक्तं नर्तनं तु कला स्मृता ।  
अनेकवाद्यकरणे ज्ञानं तद्वादने कला ॥  
बल्लालङ्कारसन्धानं स्त्रीपुंसोश्च कला स्मृता ।  
अनेकरूपाविर्भावकृतिज्ञानं कला स्मृता ॥  
शय्यास्तरणसंयोगपुष्पादिप्रनयनं कला ।  
द्यूताद्यनेकक्रीडाभी रजनन्तु कला स्मृता ॥  
अनेकासनसन्धानै रतेज्ज्ञानं कला स्मृता ।  
कलासप्तकमेतद्धि गान्धर्वे समुदाहृतम् ॥  
मकरन्दासवादीनां मयादीनां कृतिः कला ।

शल्यगुहाहतौ ज्ञानं शिराव्रगव्यधे कला ॥  
 हिङ्गवादिप्रसंयोगादङ्गदिपचनं कला ।  
 वृश्चादिप्रसंयोगारोपपालनादिकृतिः कला ॥  
 पाषाणधात्वादितितस्तस्मिन्करणं कला ।  
 यावदिक्षुबिकाराणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥  
 धात्वोषधीनां संयोगक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।  
 धातुसाङ्कर्यपार्थक्यकरणन्तु कला स्मृता ॥  
 संयोगपूर्वविज्ञानं धात्वादीनां कला स्मृता ।  
 क्षारनिष्कासनज्ञानं कलासंज्ञं तु तत्स्मृतम् ॥  
 कलादशकमेतद्धि ह्यायुर्वेदागमेषु च ।  
 शस्त्रसन्धानविक्षेपः पादादिन्यासतः कला ॥  
 सन्ध्याधाताकृष्टिभेदैर्मल्लयुद्धं कला स्मृता ।  
 बाहुयुद्धं तु मल्लानामशस्त्रं मुष्टिभिः स्मृतम् ॥  
 स्मृतस्य तस्य न स्वर्गो यशो नेहापि विद्यते ।  
 बलदपि विना शान्तं नियुद्धं यशसे रिपोः ॥  
 न कस्यासिद्धिं कुर्याद्वै प्राणान्तं बाहुयुद्धकम् ।  
 कृतप्रकृतकैश्चैत्रैर्बाहुभिश्च सुषङ्कटैः ॥  
 सन्निपातावपाटैश्च प्रमादोन्मथनैस्तथा ।  
 कृतं निपीडनं ज्ञेयं तन्मुक्तिस्तु प्रतिक्रिया ॥  
 कलाभिलक्षिते देशे यन्प्रायस्त्रनिपातनम् ।  
 वायसंकेततो व्यूहरचनादि कला स्मृता ॥  
 गजाश्वरथगत्या तु युद्धसंयोजनं कला ।  
 कलापञ्चकमेतद्धि धनुर्वेदागमे स्थितम् ॥  
 विविधासनमुद्राभिर्देवतातोषणं कला ।  
 सारथ्यं च गजाश्वादेर्गतिशिक्षा कला स्मृता ॥  
 मृत्तिकाकाष्ठपाषाणबाहुभाण्डादिप्रतिक्रिया ।  
 पुयकलाचतुष्कं तु चित्राद्यालेखनं कला ॥  
 तडागवापीप्रासादसमभूमिक्रिया कला ।

धव्यायनेकयन्त्राणां वाद्यानां तु कृतिः कला ॥  
 हीनमथ्यादिसंयोगवर्णाद्यै रञ्जनं कला ।  
 जलवायवग्निसंयोगनिरोधैश्च क्रिया कला ॥  
 नौकारयादियानानां कृतिज्ञानं कला स्मृता ।  
 सूत्रादिरज्जुकरणविज्ञानन्तु कला स्मृता ॥  
 अनेकतन्तुसंयोगैः पटबन्धः कला स्मृता ।  
 वेधादिसदसज्ज्ञानं रत्नानां च कला स्मृता ॥  
 स्वर्णादीनां तु याथात्म्यविज्ञानञ्च कला स्मृता ।  
 कृत्रिमस्वर्णरत्नादिक्रियाज्ञानं कला स्मृता ॥  
 स्वर्णायलङ्कारकृतिः कला लेपादिसत्कृतिः ।  
 मार्दवादिक्रियाज्ञानं चर्मणां तु कला स्मृता ॥  
 पशुचर्मजनिर्हारक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।  
 दुग्धदोहादिविज्ञानं घृतान्तं तु कला स्मृता ॥  
 सीवने कञ्जुकादीनां विज्ञानन्तु कलात्मकम् ।  
 बाह्यादिभिश्च तरणं कलासंज्ञं जले स्मृतम् ॥  
 मार्जने गृहभाण्डादेर्विज्ञानं तु कला स्मृता ।  
 वस्त्रसंमार्जनं चैव धुरकर्मकले ह्युभे ॥  
 तिलमांसादिस्नेहानां कला निष्कासने कृतिः ।  
 सीरायाकर्षणे ज्ञानं वृक्षायारोदणे कला ॥  
 मनोनुकूलसेवायाः कृतिज्ञानं कला स्मृता ।  
 वेणुतृणादिपात्राणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥  
 काचपात्रादिकरणविज्ञानं तु कला स्मृता ।  
 संसेचनं संहरणं जलानां तु कला स्मृता ॥  
 लोहामिसारशस्त्रास्त्रकृतिज्ञानं कला स्मृता ।  
 गजाश्ववृषभोष्ट्राणां पल्याणादिक्रिया कला ॥  
 शिशोः संरक्षणे ज्ञानं धारणे क्रीडने कला ।  
 सुयुक्तताडनज्ञानमपराधिजने कला ॥  
 नानादेशीयवर्णानां सुसम्यग्लेखने कला ।

ताम्बूलरक्षादिकृतिर्विज्ञानं तु कला स्मृता ॥

आदानमाशुकारित्वं प्रतिदानं चिरक्रिया ।

कलासु द्वौ गुणौ ज्ञेयौ द्वे कले परिकीर्तिते ॥

चतुष्पष्टिः कला ह्येताः संचेपेण निदर्शिताः ।

इति शुक्नीतिः अध्यायः ४ प्रकरणम् ३ श्लोकाः ॥ ६५-९९ ॥

आचार्यास्तु कन्यकानां—( कामसूत्र १।१।१५ ) इति कामसूत्रीय 'जयम-  
ङ्गला' व्याख्योक्ताश्चतुष्पष्टिः कलास्तु भिन्ना एव । तत्रैवं जयमङ्गला—'शास्त्रान्तरे  
चतुष्पष्टिर्मूलकला उक्ताः, तत्र कर्माभ्याश्चतुर्विंशतिः । तथया—गीतम् १,  
नृत्यम् २, वाद्यम् ३, कौशललिपिज्ञानम् ४, वचनं चोदाहरणम् ५, चित्रविधिः ६,  
पुस्तकम् ७, पत्रच्छेदम् ८, मालाविधिः ९, गन्धयुक्त्यास्वाद्यविधानम् १०, रत्नप-  
रीक्षा ११, धौवनम् १२, रत्नपरिज्ञानम् १३, उपकरणक्रिया १४, मानविधिः १५,  
आजोवहानम् १६, तिर्यग्योनिचिकित्सितम् १७, मायाकृतपाषण्डसमयज्ञानम् १८,  
कीडाकौशलम् १९, लोकज्ञानम् २०, वैचक्षण्यम् २१, संवाहनम् २२, शरीर-  
संस्कारः २३, विशेषकौशलम् २४, चेति । द्यूताभ्यां विंशतिः—तत्र निर्जीवाः  
पञ्चदश, तथया—आयुःप्राप्तिः २५, अक्षविधानम् २६, रूपसंख्या २७,  
क्रियामार्गणम् २८, बोजप्रहणम् २९, नयज्ञानम् ३०, करणज्ञानम् ३१ चित्राचित्र-  
विधिः ३२ गूढराशिः ३३, तुल्याभिहारः ३४, क्षिप्रप्रहणम् ३५, अनुप्राप्तिलेख-  
स्मृतिः ३६, अग्निक्रमः ३७, छलव्यामोहनम् ३८, प्रहादानम् ३९, चेति ।  
सजीवाः पञ्च, तथया—उत्स्थानविधिः ४०, युद्धम् ४१, कृतम् ४२, गतम् ४३,  
नृतम् ४४ चेति । शयनोपचारिकाः षोडश, तथया—पुरुषस्यभावप्रहणम् ४५,  
स्वरागप्रकाशनम् ४६, प्रत्यङ्गदानम् ४७, नखदन्तयोर्विचारौ ४८, नीवीर्लसनम् ४९,  
गुह्यस्य संस्पर्शनानुलोम्यम् ५०, परमार्थकौशलम् ५१, हर्षणम् ५२, समानार्थता-  
कृतार्थता ५३, अनुप्रीत्याहनम् ५४, मृदुकोधप्रवर्तनम् ५५, सम्यक्कोधनिवर्त-  
नम् ५६ क्रुद्धप्रसादनम् ५७, सुमपरित्यागः ५८, चरमस्वापविधिः ५९, गुह्य-  
गूहनम् ६०, इति । चतस्र उत्तरकलाः, तथया—आश्रुपातं रमणाय शाप-  
दानम् ६१, शपथक्रिया ६२, प्रस्थितानुगमनम् ६३, पुनःपुनर्निरीक्षणम् ६४, चेति  
चतुष्पष्टिर्मूलकलाः । आस्वेव निविष्टानामवान्तरकलानामष्टादशाधिकानि  
पञ्चशताभ्युक्तानि । तत्र धर्मयूताभ्याः प्रायश आबालं गच्छन्ति, ता एवान्यथा



विभज्य चतुष्टिरत्रोक्ताः, यास्तु शयनोपचारिका उत्तरकलाश्च, ताः प्रायशस्तन्त्र-  
स्याज्ञतां प्रतिपद्यन्त इति पाश्चात्तिकयामेव चतुःषष्ट्याप्रधानन्तरकला वेदितव्याः,  
ताश्च यथाप्रस्तावं वक्ष्यन्ते' इति ॥

तन्त्रावापौपयिकीं चतुष्षष्टिमाह—'गीतम् १, वाद्यम् २, नृत्यम् ३, आले-  
ख्यम् ४, विशेषकच्छेद्यम् ५, तण्डुलकुसुमवर्णविकाराः ६, पुष्पास्तरणम् ७ दशन-  
वसनाङ्गरागः ८, मणिभूमिकार्कम्, ९, शयनरचनम् १०, उदकवाद्यम् ११, उदका-  
घातः १२, चित्राश्च योगाः १३, मास्यग्रन्थनविकल्पाः १४, शोखरकापीडयोजनम्  
१५, नेपथ्यप्रयोगाः १६, कर्णपत्रभङ्गाः १७, गन्धनयुक्तिः १८, भूषणयोजनम् १९,  
ऐन्द्रजालाः २०, कौबुमाराश्च योगाः २१, हस्तलाघवम् २२, विचित्रशाकपूषमद्य-  
विकारक्रिया २३, पानकरसरगास्रवयोजनम् २४, सूचीवायकर्मणि २५, सूत्रक्रीडा  
२६, वीणाढमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाळा २९, दुर्वाचकयोगाः ३०,  
पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाखवायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम् ३३, पट्टिका-  
वेष्टनानविकल्पाः ३४, तक्षकर्मणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविशा ३७, रूढ्यरत्न-  
रीक्षा ३८, धातुवादः ३९, मणिरागाकरज्ञानम् ४०, वृक्षायुर्वेदयोगाः ४१, मेघकु-  
वकुटलावकयुद्धविधिः ४२, शुक्रसारिकाप्रकापनम् ४३, उत्पादने संवाहने केशमर्दने  
च कौशलम् ४४, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४५, म्लेच्छितविकल्पाः ४६, देशभाषाज्ञानम्  
४७, पुष्पशकटिका ४८, निमित्तज्ञानम् ४९, यन्त्रमातृका ५०, धारणमातृका ५१,  
संपाठ्यम्, ५२, मानसी काव्यक्रिया, ५३, अभिधानकोषः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५,  
क्रियाकरूपः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रोपनानि ५८, यूतविशेषः ५९,  
आकर्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, वैनायिकीनां ६२, वैजयिकीनां ६३,  
व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति चतुःषष्टिरङ्गविधाः कामसूत्रावस्थायिनः  
इति कामसूत्रम् १।३।१६ ) ॥

इति परिशिष्टम् ।



# मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

## शब्दानुक्रमणिका



अ ]

[ अग्रज

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः	शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः	शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
अ				अक्षदेविन्	२	१०	४३	अगम	२	४	५
अ	३	४	११	अक्षधूर्त	२	१०	४३	अगस्त्य	१	३	२०
अंश	२	९	८९	अक्षर	३	३	१८२	अगाध	१	१०	१५
अंशु	१	३	३३	अक्षरचुञ्चु	२	८	१५	अगार	२	२	५
अंशुक	२	६	११५	अक्षरचण	२	८	१५	अगुरु	२	६	१२६
अंशुमती	२	४	११५	अक्षवती	२	१०	४४	"	२	६	१२७
अंशुमत्फला	२	४	११३	अक्षान्ति	१	७	२४	अग्नायी	२	७	२१
अंस	२	६	७८	अक्षि	२	६	९३	अग्नि	१	१	५३
अंसल	२	६	४४	"	३	५	२२	अग्निकण	१	१	५७
अंहति	२	७	३०	अक्षिकूटक	२	८	३८	अग्निचित	२	७	१२
अंहस्	२	४	२३	अक्षिगत	३	१	४५	अग्निज्वाला	२	४	१२४
अकरणि	३	२	३९	अक्षीव	२	४	३१	अग्निभू	१	१	३९
अकूपार	१	१०	१	"	२	९	४१	अग्निमन्य	२	४	६६
अकृष्णकर्मम्	३	१	४६	अक्षोट	२	४	२९	अग्निमुखी	२	४	४२
अक्ष	२	४	५८	अक्षौहिणी	२	८	८१	अग्निशिखा	२	४	११८
"	२	९	४३	अखण्ड	३	१	६५	"	२	४	१३६
"	२	९	८६	अखात	१	१०	२७	"	२	६	१२४
"	२	१०	४५	अखिल	३	१	६५	अग्न्युत्पात	१	४	१०
"	३	३	२२२	अग	३	३	१९	अग्र	३	१	५८
अक्षत	२	९	४७	अगद	२	६	५०	"	३	३	१८४
अक्षदर्शक	२	८	५	अगदक्कार	२	६	५७	अग्रज	२	६	४३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अग्रजन्मन्	२	७	४	अङ्गार	२	९	३०	अजहा	२	४	६
अग्रतःसर	२	८	७२	अङ्गारक	१	३	२५	अजा	२	९	७३
अग्रतस्	३	३	२४६	अङ्गारधानिका	२	९	२९	अजाजी	२	९	३६
"	३	४	७	अङ्गारबहरी	२	४	४८	अजाजीव	२	१०	११
अग्रमत्स	२	६	६४	अङ्गारवल्ली	२	४	९०	अजित	३	३	३२
अग्रिय	२	६	४३	अङ्गारशकटी	२	९	२९	अजिन	२	७	४६
"	३	१	५८	अङ्गीकार	१	५	५	अजिनपत्रा	२	५	२६
अग्रीय	३	१	५८	अङ्गीकृत	३	१	१०८	अजिनयोनि	२	५	८
अग्रेदिषिषू	२	६	२३	अङ्गुलिमुद्रा	२	६	१०८	"	२	५	९
अग्रेसर	२	८	७२	अङ्गुली	२	६	८२	अजिर	२	३	१३
अग्रथ	३	१	५८	अङ्गुलीयक	२	६	१०७	"	३	३	१८२
अघ	१	४	२३	अङ्गुष्ठ	२	६	८२	अजिह्व	३	१	७२
"	३	३	२७	अङ्गुष्ठि	२	६	७१	अजिह्वग	२	८	८६
अघमर्षण	२	७	४७	अङ्गुष्ठिनामक	२	४	१२	अज्जुका	१	७	११
अघ्नथा	२	९	६७	अङ्गुष्ठिवलिका	२	४	९२	अज्झटा	२	४	१२७
अङ्क	१	३	१७	अचण्डी	२	९	७०	अज्ञ	३	१	३८
"	३	३	४	अचल	२	३	१	"	३	१	४८
अङ्कुर	२	४	४	अचला	२	१	२	अज्ञान	१	५	७
अङ्कुश	२	८	४१	अच्युत	१	१	१९	अज्ञित	३	१	९८
अङ्कोट	२	४	२९	अच्युताग्रज	१	१	२३	अज्ञन	१	३	३
अङ्कथ	१	७	५	अच्छ	१	१०	१४	अज्ञनकेशी	२	४	१३०
अङ्क	२	६	७०	अच्छमल	२	५	४	अज्ञनावती	१	३	५
"	३	४	७	अज	२	९	७६	अजलि	२	६	८५
"	३	४	१९	"	३	३	३०	अजसा	३	४	२
अङ्कद	२	६	१०७	अजगन्धिका	२	४	१३९	"	३	४	१२
अङ्कण	२	२	१३	अजगर	१	८	५	अटनी	२	८	८४
अङ्कना	१	३	५	अजगव	१	१	३५	अटरुष	२	४	१०३
"	२	६	३	अजन्य	२	८	१०९	अटवी	२	४	१
अङ्गविक्षेप	१	७	१६	अममोदा	२	४	१४५	अटाट्या	२	७	३५
अङ्गसंस्कार	२	६	१२१	अजशृङ्गी	२	४	११९	अट्ट	२	२	१२
अङ्गहार	१	७	१६	अनस	१	१	६६	अणक	३	१	५४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अणि	२	८	५७	अतिविषा	२	४	९९	अद्रि	२	३	१
अणिमन्	१	१	३६	अतिवेल	१	१	६६	"	३	३	१६४
अणीयस्	३	१	६२	अतिशक्तिता	२	८	१०२	"	३	५	११
अणु	२	९	२०	अतिशय	१	१	६६	अद्वयवादिन्	१	१	१४
"	३	१	६२	"	३	२	११	अधम	३	१	५४
अण्ड	२	५	३७	अतिशोभन	३	१	५८	"	३	३	१४५
अण्डकोश	२	६	७६	अतिसर्जन	३	२	२८	अधमर्ण	२	९	५
अण्डज	१	१०	१७	अतिसारकिन्	२	६	५९	अधर	२	६	९०
"	२	५	३३	अतोन्द्रिय	३	१	७९	"	३	३	१९०
"	३	१	५१	अतीव	३	४	२	अधिकर्षि	३	१	११
अतट	२	३	४	अत्तिका	१	७	१५	अधिकाङ्ग	२	८	६३
अतल्लप्यर्श	२	१०	१५	अत्यन्तकोपन	३	१	३२	अधिकार	२	८	३१
अतसी	२	९	२०	अत्यन्तीन	२	८	७७	अधिकृत	२	८	६
अति	३	३	२४२	अत्यय	२	८	११६	अधिक्षिप्त	३	१	४२
"	३	४	२	"	३	३	१५०	अधित्यका	२	३	७
अतिक्रम	३	२	३३	अत्यर्थ	१	१	६६	अधिप	३	१	११
अतिचरा	२	४	१४६	अत्याहित	३	३	७७	अधिभू	३	१	११
अतिच्छत्र	२	४	१६७	अत्रि	१	३	२७	अधिरोहिणी	२	२	१८
अतिच्छत्रा	२	४	१५२	अथ	३	३	२४७	अधिवासन	२	६	१३४
अतिजव	२	८	७३	अथो	३	३	२४७	अधिविज्ञा	२	६	७
अतिथि	२	७	३४	अदभ्र	३	१	६३	अधिश्रयणी	२	९	२९
अतिनु	१	१०	१४	अदर्शन	३	२	२२	अधिष्ठान	३	३	१२६
अतिपथिन्	२	१	१६	अदितिनन्दन	१	१	८	अधीन	३	१	१६
अतिपात	२	७	३७	अदृश्	२	६	६१	अधीर	३	१	२६
"	३	२	३३	अदृष्ट	२	८	३०	अधीश्वर	२	८	२
अतिमात्र	१	१	६६	अदृष्टि	१	७	३७	अधुना	३	४	२२
अतिमुक्त	२	४	७२	अद्धा	३	४	१२	अधृष्ट	३	१	२६
अतिमुक्तक	२	४	२६	अद्भुत	१	७	१७	अधोशुक्र	२	६	११७
अतिरिक्त	३	१	७५	"	१	७	१९	अधोक्षज	१	१	२१
अतिवक्तृ	३	१	३५	अधमर	३	१	२०	अधोभुवन	१	८	१
अतिवाद	१	६	१४	अथ	३	४	२०	अधोमुख	३	१	३३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अध्यक्ष	२	८	६	अनवस्कर	३	१	५६	अनुचर	२	८	७१
"	३	३	२२६	अनवरार्थ	३	१	५७	अनुज	२	६	४३
अध्यवसाय	१	७	२१	अनस्	२	८	५२	अनुजीविन्	२	८	९
अध्यापक	२	७	७	अनागतार्तवा	२	६	८	अनुतर्षण	२	१०	४३
अध्याहार	१	५	३	अनादर	१	७	२२	अनुताप	१	७	२५
अध्यूदा	२	६	७	अनामय	२	६	५०	अनुत्तम	३	१	५७
अध्येषणा	२	७	३२	अनामिका	२	६	८२	अनुत्तर	३	३	१९१
अध्वग	२	८	१७	अनारत	१	१	६५	अनुपद	३	१	७८
अध्वनीन	२	८	१७	अनार्यतित्त	२	४	१४३	अनुपदीना	२	१०	३०
अध्वन्	२	१	१५	अनाहत	२	६	११२	अनुपमा	१	३	४
अध्वन्य	२	८	१७	अनिमिष	३	३	२१९	अनुप्लव	२	८	७१
अध्वर	२	७	१३	अनिरुद्ध	१	१	१७	अनुबन्ध	३	३	९८
अध्वर्यु	२	७	१७	अनिल	१	१	१०	अनुबोध	२	६	१२२
अनक्षर	१	६	२१	"	१	१	६२	अनुभव	३	२	२७
अनङ्ग	१	१	२५	अनिश	१	१	६५	अनुभाव	१	७	२१
अनच्छ	१	१०	१४	अनीक	२	८	७८	"	३	३	२१०
अनडुह्	२	९	६०	"	२	८	१०४	अनुमति	१	४	८
अनन्त	१	२	१	अनीकस्थ	२	८	६	अनुयोग	१	६	१०
"	१	८	४	अनीकिनी	२	८	७८	अनुरोध	२	८	१२
"	३	३	८१	"	२	८	८१	अनुलाप	१	६	१६
अनन्ता	२	१	२	अनु	३	३	२४८	अनुलेपन	३	५	२३
"	२	४	९२	अनुक	३	१	२३	अनुवर्तन	२	८	१२
"	२	४	११२	अनुकम्पा	१	७	१८	अनुवाक	३	५	१७
"	२	४	१३६	अनुकर्ष	२	८	५७	अनुशय	३	३	१४८
"	२	४	१५८	अनुकल्प	२	७	४०	अनुष्ण	२	१०	१८
अनन्यज	१	१	२६	अनुकामीन	२	८	७६	अनुहार	३	२	१७
अनन्यवृत्ति	३	१	७९	अनुकार	३	२	१७	अनूक	३	३	१३
अनय	३	३	५०	अनुक्रम	२	७	३६	अनूचान	२	७	१०
अनल	१	१	५४	अनुक्रोश	१	७	१८	अनूनक	३	१	६५
अनवधानता	१	७	३०	अनुग	३	१	७८	अनूप	२	१	१०
अनवरत	१	१	६६	अनुग्रह	३	२	१३	अनूरु	१	३	३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अनुजु	३	१	४६	अन्तेवासिन्	२	७	११	अपचिति	२	७	३४
अनृत	२	९	२	"	२	१०	२०	"	३	३	६७
अनेकप	२	८	३४	अन्य	३	१	८१	अपट्ट	२	६	५८
अनेहस्	१	४	१	अन्त्र	२	६	६६	अपस्थ	२	६	२८
अनोकह	२	४	५	अन्दुक	२	८	४१	अपत्रपा	१	७	२३
अन्त	२	८	११६	अन्ध	२	६	६१	अपत्रपिष्णु	३	१	२८
"	३	१	८१	"	३	३	१०३	अपथ	२	१	१७
अन्तःपुर	२	२	११	अन्धकरिपु	१	१	३४	अपथिन्	२	१	१७
अन्तक	१	१	५९	अन्धकार	१	८	३	अपदान्तर	३	१	६८
अन्तर	३	३	१८७	अन्धतमस्	१	८	३	अपदिश	१	३	५
अन्तरा	३	४	१०	अन्धस्	२	९	४८	अपदेश	१	७	३३
अन्तराय	३	२	१९	अन्धु	१	१०	२६	"	३	३	२१६
अन्तराल	१	३	६	अत्र	२	९	४८	अपध्वस्त	३	१	३९
अन्तरीक्ष	१	२	१	"	३	१	१११	अपभ्रंश	१	६	२
अन्तरीप	१	१०	८	अन्य	३	१	८२	अपयान	२	८	१११
अन्तरीय	२	६	११७	अन्यतर	३	१	८२	अपरस्पर	३	२	१
अन्तरे	३	४	१०	अन्वक्ष	३	१	७८	अपरजिता	२	४	१०४
अन्तरेण	३	४	३	अन्वक्	३	१	७८	"	२	४	१४९
"	३	४	१०	अन्वय	२	७	१	अपराद्धपुष्टक	२	८	६८
अन्तर्गत	३	१	८६	अन्ववाय	२	७	२	अपराध	२	८	२६
अन्तर्द्वार	२	२	१४	अन्वाहार्य	२	७	३१	अपराद्ध	१	४	३
अन्तर्धा	१	३	१२	अन्विष्ट	३	१	१०५	अपर्णा	१	१	३७
अन्तर्धि	१	३	१२	अन्वेषणा	२	७	३२	अपलाप	१	६	१७
अन्तर्मनस्	३	१	८	अन्वेषित	३	१	१०५	अपवर्ग	१	५	७
अन्तर्वली	२	६	२२	अप् ( आप् )	१	१०	३	अपवर्जन	२	७	३०
अन्तर्वाणि	३	१	६	अपकारगिर्	१	६	४४	अपवाद	१	६	१३
अन्तर्वेशिक	२	८	८	अपक्रम	२	८	१११	"	३	३	८९
अन्तावसायिन्	२	१०	१०	अपघन	२	६	७०	अपवारण	१	३	१२
अन्तिक	३	१	६७	अपचय	३	२	१६	अपट्ट	३	१	८४
अन्तिकतम	३	१	६८	अपचायित	३	१	१०१	अपशब्द	१	६	२
अन्तिका	२	९	२९	अपचित	३	१	१०१	अपसद	२	१०	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अपसर्प	२	८	१३	अबद्धमुख	३	१	३६	अभिनय	१	७	१६
अपसव्य	३	१	८४	अबन्ध	२	४	६	अभिनव	३	१	७७
"	३	१	८४	अबला	२	३	२	अभिनिर्मुक्त	२	७	५५
अपस्कर	२	८	५६	अबाध	३	१	८३	अभिनिर्याण	२	८	९५
अपस्मात	३	१	९१	अब्ज	१	३	१४	अभिर्नात	२	८	२४
अपहार	३	२	१६	"	३	३	३२	"	३	३	८१
अपापति	१	१०	२	अब्जयोनि	१	१	१७	अभिपन्न	३	३	१२८
अपाक्	२	६	९४	अब्द	१	४	२०	अभिप्राय	३	२	२०
"	३	३	२१	"	३	३	८८	अभिभूत	३	१	४०
अपाकदर्शन	२	६	९४	अग्नि	१	१०	१	अभिमर	२	७	६३
अपान	१	१	६३	"	३	५	११	अभिमान	१	७	२२
"	२	६	७३	अधिकफ	२	९	१०५	"	३	३	११०
अपामार्ग	२	४	८८	अत्रह्वाण्य	१	७	१४	अभियोग	३	२	१३
अपावृत	३	१	१५	अभय	२	४	१६४	अभिरूप	३	३	१३१
अपासन	२	८	११३	अभया	२	४	५९	अभिलाव	३	२	२४
अपि	३	३	२४९	अभाषण	२	७	३६	अभिलाष	१	७	२८
अपिधान	१	३	१३	अभिक	३	१	२४	अभिलाषुक	३	१	२२
अपिनद्ध	२	८	६५	अभिक्रम	२	८	९६	अभिवादक	३	१	२८
अपूप	२	९	४८	अभिख्या	३	३	१५६	अभिवादन	२	७	४१
अपोगण्ड	२	६	४६	अभिग्रह	३	२	१३	अभिव्याप्ति	३	२	६
अप्पति	१	१	६१	अभिग्रहण	३	२	१७	अभिज्ञस्त	३	१	४३
अप्पित्त	१	१	५६	अभिधातिन्	२	८	११	अभिज्ञस्ति	२	७	३२
अप्रगुण	३	१	७२	अभिचार	३	२	१९	अभिज्ञाप	१	६	११
अप्रत्यक्ष	३	१	७९	अभिजन	२	७	१	अभिषङ्ग	३	३	२४
अप्रधान	३	१	६०	"	३	३	१०८	अभिषव	२	७	४७
अप्रहत	२	१	५	अभिजात	३	३	८२	"	२	१०	४२
अप्राग्रथ	३	१	६०	अभिज्ञ	३	१	४	अभिषुत	२	९	३९
अप्सरस्	१	१	११	अभितस्	३	१	६७	अभिषेणन	२	८	९५
"	१	१	५२	"	३	३	२५६	अभिषुत	३	१	११०
अफल	२	४	६	अभिधान	१	६	८	अभिसंपात	२	८	१०५
अबद्ध	१	६	२०	अभिध्या	१	७	२४	अभिसर	२	८	७१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अभिसारिका	२	६	१०	अभ्यासादन	२	८	११०	अमृत	१	५	६
अभिहार	३	२	१७	अभ्युदित	२	७	५५	"	१	६	२२
"	३	३	१६९	अभ्युपगम	१	५	५	"	१	१०	३
अभिहित	३	१	१०७	अभ्युपपत्ति	३	२	१३	"	२	७	२८
अभीक	३	१	२४	अभ्यूप	३	२	४७	"	२	९	३
अभीक्ष्णम्	३	४	१	अभ्र	१	२	१	"	३	३	७६
"	३	४	११	"	१	६	६	अमृता	२	४	५८
अभीप्सित	३	१	५३	अभ्रक	२	९	१००	"	२	४	५९
"	३	१	११२	अभ्रपुष्प	२	४	३०	"	२	४	८२
अभीरु	२	४	१००	अभ्रमातङ्ग	१	१	४६	अमृतान्धस्	१	१	८
अभीरुपत्नी	२	४	१०१	अभ्रमु	१	३	४	अमोघा	२	४	१०६
अभीषङ्ग	३	२	६	अभ्रमुबल्लभ	१	१	४६	अम्बर	१	२	१
अभीषु	३	३	२२०	अभि	१	१०	१३	"	३	३	१८२
अभीष्ट	३	१	५३	अभ्रिय	१	३	८	अम्बरच	२	९	३०
अभ्यग्र	३	१	६७	अभ्रेष	२	८	२४	अम्बष्ठ	२	१०	२
अभ्यन्तर	१	३	६	अमत्र	२	९	३३	अम्बष्ठा	२	४	७१
अभ्यमित	२	६	५८	अमर	१	१	७	"	२	४	८४
अभ्यमित्राण	२	८	७५	अमरावती	१	१	४५	"	२	४	१४०
अभ्यमित्रोय	२	८	७५	अमर्त्य	१	१	८	अम्वा	१	७	१४
अभ्यमित्र्य	२	८	७५	अमर्ष	१	७	२६	अम्बिका	१	१	३७
अभ्यर्ण	३	१	६७	अमर्षण	३	१	३२	अम्बु	१	१०	४
अभ्यवकर्षण	३	२	१७	अमा	३	३	२५०	अम्बुज	२	४	६१
अभ्यवस्कन्दन	२	८	११०	अमांस	२	६	४४	अम्बुभुत	१	३	७
अभ्यवहृत	३	१	१११	अमात्य	२	८	४	अम्बुवेतस	२	४	३०
अभ्याख्यान	१	६	१०	"	२	८	१७	अम्बुकृत	१	६	२०
अभ्यागम	२	८	१०५	अमावस्या	१	४	८	अम्भस्	१	१०	४
अभ्यागारिक	३	१	१२	अमावास्या	१	४	८	अम्भोरुह	१	१०	४१
अभ्यादान	३	२	२६	अमित्र	२	८	११	अम्भय	१	१०	५
अभ्यान्त	२	६	५८	अमुत्र	३	४	८	अम्बल	१	५	९
अभ्यामर्द	२	८	१०५	अमृणाल	२	४	१६४	अम्बलवेतस	२	४	१४०
अभ्याश	३	१	६७	अमृत	१	१	४८	अम्बल्लोणिका	२	४	१४०



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अम्लान	२	४	७३	अरिष्ट	३	३	३६	अर्णव	१	१०	१
अम्लिका	२	४	४३	अरिष्टदुष्टधी	३	१	४४	अर्णस्	१	१०	४
अय	१	४	२७	अरुण	१	३	२९	अर्णन	३	२	३२
अयन	१	४	१३	"	१	३	३२	अर्ति	३	३	६८
"	२	१	१५	"	१	५	१५	अर्थ	२	९	९०
अयस्	२	९	९८	"	३	३	४८	"	३	३	८६
अयःप्रतिमा	२	१०	३५	अरुणा	२	४	९९	"	३	३	८६
अधि	३	४	१८	अरुन्तुद	३	१	८३	अर्थना	२	७	३३
अयोध	२	९	२५	अरुत्कर	२	४	४२	"	३	२	६
अर	१	१	६४	"	३	३	१८९	अर्थप्रयोग	२	९	४
अरघट्ट	३	५	१८	अरुस्	२	६	५४	अर्थिन्	२	८	९
अरणि	२	७	१९	अरोक	३	१	१००	"	३	१	४९
अरण्य	२	४	१	अर्क	१	३	२९	अर्थ्य	२	९	१०४
"	३	५	२२	"	३	३	४	"	३	३	१६०
अरण्यानी	२	४	१	अर्कपूर्ण	२	४	८१	अर्दना	३	२	६
अरलि	२	६	८६	अर्कबन्धु	१	१	३५	अर्दित	३	१	९७
अरर	२	२	१७	अर्काह	२	४	८०	अर्थ	१	३	१६
अरलु	२	४	५७	अर्गल	२	२	१७	"	१	३	१६
अरविन्द	१	१०	३९	अर्घ	३	३	२७	अर्थचन्द्रा	२	४	१०९
अराति	२	८	११	अर्घ्य	२	७	३३	अर्थनाव	१	१०	१४
अराल	३	१	७१	अर्चा	२	७	३४	अर्थरात्र	१	४	६
अरि	२	८	१०	"	२	१०	३६	अर्थर्च	३	५	३२
"	३	५	११	अर्चित	३	१	१०१	अर्थहार	२	६	१०६
अरित्र	१	१०	१३	अर्चिस्	१	१	५७	अर्बुद	३	५	१९
अरिमेद	२	४	५०	"	३	३	२३०	"	३	५	३३
अरिष्ट	२	२	८	अर्चिष्	१	१	५७	अर्मक	२	५	३८
"	२	४	३१	अर्जक	२	४	८०	अर्म	३	५	३४
"	२	४	६२	अर्जुन	१	५	१३	अर्य	२	९	१
"	२	४	१४८	"	२	४	४५	"	३	३	१४७
"	२	५	२०	"	२	४	१६७	अर्यमन्	१	३	२८
"	२	९	५३	अर्जुनी	२	९	६७	अर्या	२	६	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अर्याणी	२	६	१४	अलि	२	५	२९	अवतमस	१	८	३
अर्यी	२	६	१५	अलिक	२	६	९२	अवतोका	२	९	३९
अर्वन्	२	१	५४	अलिन्	२	५	२९	अवदंश	२	१०	४०
"	२	८	४४	अलिज	२	९	३१	अवदात	१	५	१३
"	३	१	५४	अलिन्द	२	२	१२	"	३	३	८०
अर्वाक्	३	४	१६	अलीक	३	३	१२	अवदान	३	२	३
अर्शस	२	६	५९	अल्प	३	१	६१	अवदाह	२	४	१६५
अर्शस्	२	६	५४	अल्पतनु	२	६	४८	अयदारण	२	९	१२
अर्शोम्र	२	४	१५७	अल्पमारिष	२	४	१३६	अवदीर्ण	३	१	८९
अर्शोरोगयुत	२	६	५९	अल्पसरसू	१	१०	२८	अवद्य	३	१	५४
अर्हणा	२	७	३४	अल्पिष्ठ	३	१	६२	अवधि	३	३	९९
अर्हित	३	१	१०१	अल्पीयस्	३	१	६२	अवध्वस्त	३	१	९४
अलम्	३	३	२५२	अवकर	२	२	१८	अवन	३	२	४
"	३	४	११	अवकीर्णिन्	२	७	५४	अवनत	३	१	७०
अलक	२	६	९६	अवकुष्ठ	३	१	३९	अवनाट	२	६	४५
अलका	१	१	७०	अवकेशिन्	२	४	७	अवनाय	३	२	२७
अलक्त	२	६	१२५	अवक्रय	२	९	७९	अवनि	२	१	३
अलगर्द	१	८	५	अवगणित	३	१	१०६	अवन्तिसोम	२	९	३९
अलङ्कुरिष्णु	२	६	१००	अवगत	३	१	१०८	अवमृथ	२	७	२७
"	३	१	२९	अवगीत	३	१	९३	अवभ्रट	२	६	४५
अलङ्कर्तृ	२	६	१००	"	३	३	७९	अवम	३	१	५४
अलङ्कर्मिण	३	१	१८	अवग्रह	१	३	११	अवमत	३	१	१०६
अलङ्कार	२	६	१०१	"	२	८	३८	अवमर्द	२	८	१०९
अलङ्कृत	२	६	१००	अवग्राह	१	३	११	अवमानना	१	७	२३
अलङ्क्रिया	२	६	१०१	अवचूर्णित	३	१	९३	अवमानित	३	१	१०६
अलकै	२	४	८१	अवज्ञा	१	७	२३	अवयव	२	६	७०
"	२	१०	२२	अवज्ञात	३	१	१०६	अवर	२	८	४०
अलस	२	१०	१८	अवट	१	८	२	अवरज	२	६	४३
अलात	२	९	३०	अवटीट	२	६	४५	अवरति	३	२	३७
अलाबू	२	४	१५६	अवट्ट	२	६	८८	अवरवर्ण	२	१०	१
अलि	२	५	१४	अवतंस	३	३	२२८	अवरीण	३	१	८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अवरोध	२	२	१२	अवित	३	१	१०६	अश्मरी	२	६	५६
अवरोधन	२	२	११	अविद्या	१	५	७	अश्मसार	२	९	९८
अवरोह	२	४	१२	अविनीत	३	१	२३	अश्रान्त	१	१	६५
अवर्ण	१	६	१३	अविरत	१	१	६५	अश्रि	२	८	९३
अवलम्ब	०	६	७९	अविलम्बित	१	१	६५	अश्रु	२	६	९३
अवलगुज	२	४	९५	"	३	१	८३	अश्लील	१	६	१९
अवयाद	२	८	२५	अविस्पष्ट	१	६	२१	अश्व	२	८	४३
अवश्यम्	३	४	१६	अवीची	१	९	१	अश्वकर्णक	२	४	४३
अवश्याय	१	३	१८	अबीरा	२	६	११	अश्वत्थ	२	४	२१
अवष्टब्ध	३	३	१०४	अवेक्षा	३	२	२८	अश्वयुज्	१	३	२१
अवसर	३	२	२४	अव्यक्त	३	३	६२	अश्ववडव	३	५	१६
अवलान	३	२	३८	अव्यक्तराग	१	५	१५	अश्वा	२	८	४६
अवसित	२	२	४	अव्यण्डा	२	४	८६	अश्वारोह	२	८	६०
"	३	१	९८	अव्यथा	२	४	५९	अधिन्	१	१	५१
अवस्कर	२	६	६७	"	२	४	१४६	अधिनी	१	३	२१
"	३	३	१६८	अव्यय	३	५	३४	अधिनीसुत	१	१	५१
अवन्था	१	४	२९	अव्यवहित	३	१	६८	अधीय	२	८	४८
अवहार	१	१०	२१	अशनाया	२	९	५४	अधक्षीण	२	८	२२
अवहित्या	१	७	३४	अशनायित	३	१	२०	अष्टापद	२	९	९५
अवहेलन	१	७	२३	अशनि	१	१	४७	"	२	१०	४६
अवाकपुष्पी	२	४	१५२	अशित	३	१	१११	अष्टौवत्	२	६	७२
अवाग्र	३	१	७०	अशिश्वी	२	६	११	असकृत्	३	४	१
अवाच्	३	१	१३	अशुभ	३	५	२३	असती	२	६	१०
"	३	१	३३	अशेष	३	१	६५	असतीसुत	२	६	२६
अवाची	१	३	१	अशोक	२	४	६४	असन	२	४	४४
अवाच्य	१	६	२१	अशोकरोहिणी	२	४	८५	असमोक्ष्यकारिन्	१	१७	
अवार	१	१०	७	अश्मगर्भ	२	९	९२	असार	३	१	५६
अवःसम्	३	१	३९	अश्मज	२	९	१०४	असि	२	८	८९
अवि	२	६	२०	अश्मन्	२	३	४	"	३	५	११
"	३	३	२०७	अश्मन्त	२	९	२९	असिक्ती	२	६	१८
अविश	२	४	६८	अश्मपुष्प	२	४	१२२	असित	१	५	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
असिधावक	२	१०	७	अहन्	१	४	२	आकाश	१	२	२
असिधनुका	२	८	९२	अहमहमिका	२	८	१०१	आकीर्ण	३	१	८५
असिधुवा	२	८	९२	अहंपूत्रिका	२	८	१००	आकुल	३	१	७५
असु	२	८	११०	अहंमति	१	५	७	आक्रन्द	३	३	९०
अनुधारण	२	८	१११	अहंपति	१	३	३०	आक्राड	२	४	३
अनुर	१	१	१२	अहंमुखा	१	४	२	आक्रोशन	३	२	६
"	३	५	११	अहस्कर	१	३	२८	आक्षारणा	१	६	१५
अमूर्क्षण	१	७	२३	अहह	३	३	२५७	आक्षारित	३	१	४३
अमृया	१	७	२४	अहार्य	२	३	१	आक्षेप	१	६	१३
अमृधरा	२	६	६२	अहि	१	८	६	आखण्डल	१	१	४४
कन्तु	२	६	६४	"	३	३	२३९	आखु	२	५	१२
अमौग्यस्वर	३	१	३७	अहित	२	८	११	आखुभुज्	२	५	६
अस्त	२	३	२	अहितुण्डिक	१	८	११	आखेट	२	१०	२३
"	३	१	८७	अहिमय	२	८	३०	आख्या	१	६	८
अन्नम्	३	४	१७	अहिभुज्	३	३	३०	आख्यात	३	१	१०७
अग्नि	३	४	१८	अहेर	२	४	१०१	आख्यायिका	१	६	५
अस्तु	३	४	१३	अहो	३	४	९	आगन्तु	२	७	३४
अन्न	२	८	८२	अहोरात्र	१	४	१२	आगत	२	८	२६
अखिन्	२	८	६९	अह्वाय	३	४	२	"	३	३	२३१
अन्धि	२	६	६८	आ				आगू	१	५	५
अस्थिर	३	१	४३	आः	३	३	२४०	आग्नेध	२	७	१७
अस्फुटवाच्	३	१	३७	आ	३	३	२४०	आग्रहायणिक	१	४	१४
अख	२	६	६४	आम्	३	४	१६	आग्रहायणी	१	३	२३
अन्न	२	६	९३	आकम्पित	३	१	८७	आङ्	३	३	२४०
"	३	३	१६५	आकर	२	३	७	आङ्गिक	१	७	१६
अन्नप	१	१	५९	आकर्ष	३	३	२२२	आङ्गिरस	१	३	२४
अन्तु	२	६	९३	आकल्प	२	६	९९	आचमन	२	७	३६
अस्त्रच्छन्द	३	१	१६	आकार	३	२	१५	आचाम	२	९	४९
अन्वय	१	१	८	"	३	३	१६३	आचार्य	२	७	७
अस्वर	३	१	३७	आकारगुप्ति	१	७	३४	आचार्या	२	६	१४
अहंयु	३	१	५०	आकारणा	१	६	८	आचार्यानी	२	६	१५
अहङ्कार	१	७	२२								
अहङ्कारवत्	३	१	५०								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आचित	२	९	८७	आतिथेय	२	७	३३	आधोरण	२	८	५९
आच्छादन	१	३	१३	आतिथ्य	२	७	३३	आधान	१	७	२९
"	२	६	११५	आतुर	२	६	५८	आनक	१	७	६
"	३	३	१२५	आतोद्य	१	७	५	"	३	३	३
आच्छुरितक	१	७	३४	आसगर्व	३	१	४०	आनकदुन्दुभि	१	१	२२
आच्छोदन	२	१०	२३	आरमगुप्ता	२	४	८६	आनत	३	१	७०
आजक	२	९	७७	आरमवोष	२	५	२०	आनद्ध	१	७	३
आज्ञानेय	२	८	४४	आरमज	२	६	२७	आनन	२	६	८९
आजि	२	८	१०६	आरमन्	१	४	२९	आनन्द	१	४	२५
"	३	३	३२	"	३	३	१०९	आनन्दथु	१	४	२५
आजीव	२	९	१	आरमभू	१	१	१६	आनन्दन	३	२	७
आजू	१	९	३	"	१	१	२६	आनर्त	३	३	६४
आङ्गा	२	८	२६	आरमम्मरि	३	१	२१	आनाय	१	१०	१६
आज्य	२	९	२२	आत्रेयी	२	६	२०	आनाय्य	२	७	२१
आटि	२	५	२५	आथर्वण	३	२	४३	आनाइ	२	६	५५
आटम्बर	२	८	१०८	आदर्श	२	६	१४०	आनुपूर्वी	२	७	३६
"	३	३	१६८	आदि	३	१	८०	आन्वसिक	२	९	२८
आढी	२	५	२५	आदिकारण	१	४	२८	आन्वीक्षिकी	१	६	५
आढक	२	९	८८	आदितेय	१	१	८	आपक्व	२	९	४७
आढकिक	२	९	१०	आदित्य	१	१	८	आपगा	१	१०	३०
आढकी	२	४	१३०	"	१	१	१०	आपण	२	२	२
"	३	५	७	"	१	३	२८	आपणिक	२	९	७८
आढ्य	३	१	१०	आदीनव	३	२	२९	आपत्	२	८	८२
आतङ्क	३	३	१०	आदृत	३	३	८१	आपत्प्राप्त	३	१	४२
आतञ्चन	३	३	११५	आद्य	३	१	८०	आपन्न	३	१	४२
आततायिन्	३	१	४४	आद्यमाषक	२	९	८५	आपन्नसत्त्वा	२	६	२२
आतप	१	३	३४	आद्यून	३	१	२१	आपमित्यक	२	९	४
"	३	५	२०	आचार	१	१०	२९	आपान	२	१०	४२
आतपत्र	२	८	३२	आधि	१	७	२८	आपीड	२	६	१३६
आतर	१	१०	१२	"	३	३	९७	आपीन	२	९	७३
आतायिन्	२	५	२१	आधूत	३	१	८७	आपूपिक	२	९	२८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आपूपिक	३	२	३९	आमोद	३	३	९१	आरेवत	२	४	२४
आप्त	२	८	१३	आमोदिन्	१	५	११	आरोग्य	२	६	५०
आप्य	१	१०	५	आम्नाय	१	६	३	आरोह	२	६	११४
आप्रच्छन्न	३	२	७	"	३	२	७	"	३	३	२३८
आप्रपद	२	६	११९	आम्र	२	४	३३	आरोहण	२	२	१८
आप्रपदीन	२	६	११९	आम्रातक	२	४	२७	आर्तगल	२	४	७४
आप्लव	२	६	१२१	आम्रेडित	१	६	१२	आर्तव	२	६	२१
आप्लाव	२	६	१२१	आयत	३	१	६९	आर्द्र	३	१	१०५
आबन्ध	२	९	१३	आयतन	२	२	७	आर्द्रक	२	९	३७
आभरण	२	६	१०१	आयति	२	८	२७	आर्य	१	७	१४
आभाषण	१	६	१५	"	३	३	७२	"	२	७	३
आभास्वर	१	१	१०	आयत्त	३	१	१६	आर्यावर्त	२	१	८
आभीर	२	९	५७	आयाम	२	६	११४	आर्धम्य	२	९	६२
आभीरपङ्खी	२	२	२०	आयुध	२	८	८२	आल	२	९	१०३
आभीरी	२	६	१३	आयुधिक	२	८	६७	आलम्भ	२	८	११५
आभील	१	९	४	आयुधीय	२	८	६७	आलय	२	२	५
आभोग	२	६	१३७	आयुष्मत्	३	१	७	आलवाल	१	१०	२९
आमगन्धिन्	१	५	१२	आयुस्	२	८	१२०	आलस्य	२	१०	१८
आमनस्य	१	९	३	आयोधन	२	८	१०३	आलान	२	८	४१
आमय	२	६	५१	आरकूट	२	९	९७	आलाप	१	६	१५
आमयाविन्	२	६	५८	आरग्वध	२	४	२३	आलि	२	१	१४
आमलक	३	५	३३	आरनालक	२	९	३९	"	२	४	४
आमलको	२	४	५७	आरति	३	२	३७	"	२	६	१२
आमिक्षा	२	७	२३	आरम्भ	३	२	२६	"	३	३	१९८
आमिष	२	६	६३	आरव	१	६	२३	आलिङ्ग्य	१	७	५
"	३	३	२२४	आरा	२	१०	३४	आलीढ	२	८	८५
आमिषाशिन्	३	१	१९	आरात्	३	३	२४३	आलु	२	९	३१
आम्	३	४	१६	आराधन	३	३	१२५	आलोक	३	३	३
आमुक्त	२	८	६५	आराम	२	४	२	आलोकन	३	२	३१
आमोद	१	४	२४	आरालिक	२	९	२८	आवपन	२	९	३३
"	१	५	१०	आराव	१	६	२३	आवर्त	१	१०	६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आवलि	२	४	४	आशुशुक्षणि	१	१	५५	आस्कन्दन	२	८	१०४
आवसित	२	९	२३	आश्रयै	१	७	१९	आस्कन्दित	२	८	४८
आवाप	१	१०	२९	आभ्रम	२	७	४	आस्तरण	२	८	४२
आवापक	२	६	१०७	आश्रय	२	८	१८	आस्था	३	३	८८
आवाल	१	१०	२९	"	३	१	११	आस्थान	२	७	१५
आविद्ध	३	१	७१	आश्रयाश	१	१	५४	आस्थानी			"
"	३	१	८७	आश्रव	१	५	५	आस्पद	३	३	९४
आविष	३	२	३६	"	३	१	२४	आस्फोट	२	४	८०
आविल	१	१०	१४	आश्रुत	३	१	१०८	आस्फोटनी	२	१०	३३
आविस्	३	४	१२	आश्व	२	८	४८	आस्फोटा	२	४	७०
आवुक	१	७	१२	आश्वस्थ	२	४	१८	"	२	४	१०४
आवुत्त	१	७	१२	आश्वयुज	१	४	१७	आस्य	२	६	८९
आवृत्	२	७	३६	आश्विन			"	आस्या	३	२	२१
आवृत	३	१	९०	आश्विनेय	१	१	५१	आस्रव	३	२	२९
आवेगी	२	४	१३७	आश्वीन	२	८	४७	आहत	१	६	२१
आवेशन	२	२	७	आषाढ	१	४	१६	"	३	१	८८
आवेशिक	२	७	३४	"	२	७	४५	आहतलक्षणा	३	१	१०
आशंसितृ	३	१	२७	आसक्त	३	१	९	आहव	२	८	१०५
आशंसु	३	१	२७	आसन	२	६	१३८	आहवनीय	२	७	१९
आशय	३	२	२०	"	२	८	१८	आहार	२	९	५६
आशर	१	१	५९	"	२	८	३९	आहाव	१	१०	२६
आशा	१	३	१	आसना	३	२	२१	आहेय	१	८	९
"	३	३	२१७	आसन्दी	३	५	९	आहो	३	४	५
अशितक्कवीन	२	९	५९	आसन्न	३	१	६६	आहोपुरषिका	२	८	१०१
आशीविष	१	८	७	आसव	२	१०	४१	आह्वय	१	६	७
आशिस्	३	३	२२९	आसादित	३	१	१०४	आह्वान	१	६	७
आशु	१	१	६५	आसार	१	३	११	इ			
"	२	९	१५	"	२	८	९६	इक्षु	२	४	१६३
आशुग	१	१	६२	आसुरी	२	९	१९	इक्षुगन्वा	२	४	९८
"	२	८	८६	आसेचनक	३	१	५३	"	२	४	१०४
"	३	३	१९					"	२	४	११०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शुभगन्धा	२	४	१६३	शुभगानिका	२	४	६८	शुभगानिका	२	६	२०
शुभुर	२	४	१०४	शुभगानी	१	१	४५	शुभित	३	१	११०
शुभवाकु	२	४	१५६	शुभगानुष	१	३	१०	शुभित	३	३	६८
शुभ	३	१	७४	शुभगारि	१	१	१२	शुभित	३	१	८७
"	३	२	१५	शुभगवरज	१	१	२०	शुभित	२	६	५४
शुभित	३	९	१५	शुभगिय	१	५	८	शुभित	१	७	२४
शुभुदी	२	४	४६	"	२	६	६२	शुभित	३	१	१०९
शुच्छा	१	७	२७	शुभगियार्थ	१	५	८	शुभित	२	८	९१
शुच्छावती	२	६	९	शुभन	२	४	१३	शुभित	१	१	३०
शुज्याशीक	२	७	८	शुभ	२	८	३४	शुभित	१	१	३०
शुट्चर	२	९	६२	शुभ्य	३	१	१०	शुभित	३	१	१०
शुडा	३	३	४२	शुभमद	१	३	१०	शुभित	१	१	३०
शुतर	२	१०	१६	शुरा	२	१०	३९	शुभित	३	१	१०
"	३	१	८२	"	३	३	१७६	शुभित	१	१	३६
"	३	३	१९२	शुभरिणम्	३	३	५७	शुभित	३	४	८
शुति	३	३	२४६	शुला	३	३	४२	शुभित	१	५	१३
शुतिह	२	७	१२	शुल्लला	१	३	२३	शुभित	२	९	१४
शुतिहास	१	६	४	शुल	३	४	९	शुभित	२	८	४०
शुत्वरी	२	६	१०	शुष	१	४	१७	शुभित	२	१०	३२
शुदानोम्	३	४	२३	शुषु	२	८	८६	शुभित	१	७	२७
शुधम	२	४	१३	शुषुधि	२	८	८८	शुभित	२	५	७
शुन	३	३	१११	शुष्ट	२	७	२८	उ	३	४	१८
शुन्दीवर	१	१०	३७	"	२	९	५७	उक्त	३	१	१०७
शुन्दु	१	३	१३	शुष्टकापथ	२	४	१६५	उक्ति	१	६	१
शुन्दीवरी	२	४	१००	शुष्टगन्ध	१	५	११	उक्थ	३	५	३०
शुन्द्र	१	१	४१	शुष्टार्थोद्युक्त	३	१	९	उक्षन्	२	९	५९
"	१	३	२	शुष्टि	३	३	३९	उखा	२	९	३१
शुन्द्रदु	२	४	४५	शुष्टास	२	८	८३	"	२	९	३१
शुन्द्रयव	२	४	६७	ई	३	२	३१	उख्य	२	०	४५
शुन्द्रवारुणी	२	४	१५६	ईक्षण	२	६	९३				
शुन्द्रसुरस	२	४	६८	"	३	२	३१				



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उग्र	१	१	३२	उत्कण्ठा	१	७	२९	उत्सर्जन	१	७	२९
"	१	७	२०	उत्कार	२	५	४२	उत्सव	१	७	३८
"	२	१०	२	उत्कर्ष	३	२	११	"	३	३	२०९
उग्रगन्धा	२	४	१०२	उत्कलिका	१	७	२९	उत्सादन	२	६	१२१
"	२	४	१४५	उत्कार	३	२	३६	उत्साह	१	७	२९
उक्त	३	१	७०	उत्क्रोश	२	५	२३	उत्साहवर्धन	१	७	१८
उच्छटा	२	४	१६०	उत्तंस	३	३	२२८	उत्सुक	३	१	८
उच्छण्ड	३	१	८३	उत्त	३	१	१०५	उत्सृष्ट	३	१	१०७
उच्चार	२	६	६७	उत्तप्त	२	६	६३	उत्सेध	२	४	१०
उच्चावच	३	१	८३	उत्तम	३	१	५७	"	३	३	९६
उच्चैःश्रवस्	१	१	४५	उत्तमर्ण	२	९	५	उदक्	३	४	२३
उच्चैर्धृष्ट	१	६	१२	उत्तमा	२	६	४	उदक	१	१०	४
उच्चैस्	३	४	१७	उत्तमाङ्ग	२	६	९५	"	३	५	२२
उच्छ्रय	२	४	१०	उत्तर	१	६	१०	उदक्या	२	६	२०
उच्छ्राय	२	४	१०	"	३	३	१९१	उदग्र	३	१	७०
उच्छिन्न	३	१	७०	उत्तरासङ्ग	२	६	११७	उदज	३	२	३९
"	३	३	८५	उत्तरीय	२	६	११८	उदधि	१	१०	१
उज्जासन	१	८	११५	उत्तान	१	१०	१५	उदन्त	१	६	७
उज्ज्वल	१	७	१७	उत्तानशया	२	६	४१	उदन्या	२	९	५५
उज्ज्वल	२	९	२	उत्थान	३	३	११८	उदन्यत्	१	१०	१
उटज	२	२	६	उत्थित	३	३	८५	उदपान	१	१०	२६
उडु	१	३	२१	उत्पत्तिवृ	३	१	२९	उदय	२	३	२
उडुप	१	१०	११	उत्पत्ति	१	४	३०	उदर	२	६	७७
उडुन	२	५	३७	उत्पत्तिष्णु	३	१	२९	उदकं	२	८	२९
उत	३	१	१०१	उत्पल	१	१०	३७	उदवसित	२	२	५
"	३	३	२४३	"	२	४	१२६	उदधित	२	९	५३
"	३	४	५	उत्पलशारिवा	२	४	११२	उदात्त	१	६	४
उताहो	३	४	४५	उत्पात	२	८	१०९	उदान	१	१	६३
उत्क	३	१	८	उत्फुल्ल	२	४	७	उदार	३	१	८
उत्कट	३	४	३४	उत्स	२	३	५	"	३	३	१९२
"	३	१	२३					उदासीन	२	८	१०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वदाहार	१	६	९	उद्भिज्ज	३	१	५१	उपकण्ठ	३	१	६७
उदित	३	१	१०७	उद्भिद्	३	१	५१	उपकारिका	२	२	१०
उदीची	१	३	२	उद्भिद्	३	१	५१	उपकार्या	२	२	१०
उदीच्य	२	१	७	उद्भ्रम	३	२	१२	उपकुञ्चिका	२	४	१२५
"	२	४	१२२	उद्यत	३	१	८९	"	२	९	३७
उदुम्बर	२	४	२२	उद्यम	३	२	११	उपकुल्या	२	४	९६
"	२	९	९७	उद्यान	२	४	३	उपक्रम	२	७	१३
उदुम्बरपणी	२	४	१४४	उद्यान	३	३	११७	"	३	२	२६
उद्वल	२	९	२५	उद्योग	३	५	३३	"	३	३	१३९
उद्गत	३	१	९७	उद्ग	१	१०	३०	उपक्रोश	१	६	१३
उद्गमनीय	२	६	११२	उद्गर्तन	२	६	१२१	उपगत	३	१	१०९
उद्गाढ	१	९	६६	उद्गान्त	२	८	३६	उपगूहन	३	२	३०
उद्गातृ	२	७	१७	"	३	१	९७	उपग्रह	२	८	११९
उद्गार	३	२	३७	उद्गासन	१	८	११५	उपग्राह्य	२	८	२८
उद्गाथ	३	५	१९	उद्गाह	२	७	५६	उपघ्न	३	२	१९
उद्गूर्ण	३	१	८९	उद्ग्रेग	२	४	१६९	उपचरित	३	१	१०२
उद्ग्राह	३	२	३७	"	३	२	१२	उपचाय्य	२	७	२०
उद्ग	१	४	२७	उन्दुर	२	५	१२	उपचित	३	१	८९
उद्गन	३	२	३५	उन्नत	३	१	७०	उपचित्रा	२	४	८७
उद्गाटन	२	१०	२७	उन्नतानत	३	१	६९	उपजाप	२	८	२१
उद्गात	३	२	२६	उन्नय	३	२	१२	उपज्ञा	२	७	१३
उद्गान	२	८	२६	उन्नाय	३	२	१२	उपतप्तृ	२	२	१४
उद्गाल	२	४	३४	उन्मत्त	२	४	७७	उपताप	१	२	५१
उद्दित	३	१	९५	"	२	६	६०	उपत्यका	२	३	७
उद्द्राव	२	८	१११	उन्मदिष्णु	३	१	२३	उपदा	२	८	२८
उद्दर्ष	१	७	३८	उन्मनस्	३	१	८	उपधा	२	८	२१
उद्दव	१	७	३८	उन्माथ	२	८	११५	उपधान	२	६	१३७
उद्दान	२	९	२९	"	२	१०	२६	उपधि	१	७	३०
उद्धार	२	९	४	उन्माद	१	७	२६	उरनाह	१	७	७
उद्धृत	३	१	९०	उन्मादवत्	२	६	६०	उपनिधि	२	९	८१
उद्भव	१	४	३०					उपनिषद्	३	३	९६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उपनिष्कार	२	१	१८	उपसंपन्न	२	७	२६	उपासना	२	७	३५
उपन्यास	१	६	९	"	२	९	४५	उभासित	३	१	१०२
उपपत्ति	२	६	३५	उपसर	३	२	२५	उपाहित	१	४	१०
उपबर्ह	२	६	१३७	उपसर्ग	२	८	१०२	"	३	१	९२
उपभृत्	२	७	२५	उपसर्जन	३	१	६०	उपेन्द्र	१	१	२०
उपभोग	३	२	२०	उपसर्ग्या	२	९	७०	उपोदिका	२	४	१५७
उपमा	२	१०	३६	उपसूर्यक	१	३	३२	उपोद्गत	१	६	९
"	२	१०	३७	उपस्कर	२	९	३५	उभयद्युस्	३	४	२१
उपमान	१	१०	३६	उपस्थ	२	६	७५	उभयेद्युस्	३	४	२१
उपयम	२	७	५६	उपस्पर्श	२	७	३६	उभा	१	१	३६
उपयाम	२	७	५६	उपहार	२	८	२८	"	२	९	२०
उपरक्त	१	४	१०	उपहर	३	३	१८३	उभापति	१	१	३४
"	३	१	४३	उपांशु	२	८	२३	उरःसूत्रिका	२	६	१०४
उपरक्षण	२	८	३३	उपाकरण	२	७	४०	उरग	१	८	८
उपराग	१	४	९	उपाकृत	२	७	२५	उरण	२	९	७६
उपराम	३	२	३७	उपास्त्यय	२	७	३७	उरणाख्य	२	४	१४७
उपल	२	३	४	"	३	२	३३	उरभ्र	२	९	७६
उपलब्धार्थ	१	६	५	उपादान	३	१	१६	उररी	३	३	२५५
उपलब्धि	१	५	१	उपाधि	१	७	२८	उररीकृत	३	१	१०८
उपलम्भ	३	२	२७	"	३	१	१२	उरश्छिद	२	८	६४
उपला	३	३	२००	उपाध्याय	२	७	७	उरस्	२	६	७८
उपवन	२	४	२	उपाध्याया	३	६	१४	उरसिल	२	८	७६
उपवर्तन	२	१	८	उपाध्यायानी	२	६	१५	उरस्य	२	६	२८
उपवास	२	७	३८	उपाध्यायी	२	६	१४	उरस्वत्	२	८	७६
उपविषा	२	४	९९	"	२	६	१५	उर	३	१	११
उपवीत	२	७	४९	उपानह	२	१०	३०	उरबूक	२	४	५१
उपशख्य	२	२	२०	उपायचतुष्टय	२	८	२०	उर्वरा	२	१	४
उपशाय	३	२	३२	उपायन	२	८	२८	उर्वशी	१	१	५१
उपभुत	३	१	१०९	उपावृत्त	२	८	५०	उर्वार	२	४	१५५
उपसंन्यास	२	६	११७	उपासक	२	८	८८	उर्वी	२	१	३
				उपासन	२	८	८६	उरुप	२	४	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उलूक	२	५	१५	ऊ				ऊष्मागम	१	४	१९
उलूखल	२	९	२५	ऊत	३	१	१०१	ऊइ	१	५	३
उलूखलक	२	४	३४	ऊधस्	२	९	७३	ऋ			
उलूपिन्	१	१०	१८	ऊम्	३	४	१८	ऋकथ	२	९	९०
उल्का	३	५	८	ऊररी	३	३	२५४	ऋक्ष	१	३	२१
उल्व	२	६	३८	ऊरव्य	२	९	१	"	२	४	५७
उल्वण	३	२	८१	ऊरी	३	३	२५४	"	२	५	४
उलमुक	२	९	३०	ऊरोकृत	३	१	१०८	ऋक्षगन्धा	२	४	१३७
उल्लाघ	२	६	५७	"	३	१	१०८	ऋक्षगन्धिका	२	४	११०
उल्लोच	२	६	१२०	ऊह	२	३	७३	ऋन्	१	६	३
उल्लोल	१	१०	५	ऊहज	२	९	१	ऋजोष	२	९	३२
उशनस्	१	३	२५	ऊहपर्वन्	२	६	७२	ऋजु	३	१	७२
उशीर	२	४	१३४	ऊर्ज	१	४	१८	ऋजुरोहित	१	३	१०
उषणा	२	४	९७	ऊर्जस्वल	२	८	७६	ऋग	२	९	३
उषर्बुध	१	१	५४	ऊर्जस्विन्	२	८	७३	ऋतीया	३	२	३२
उषस्	१	४	२	ऊर्जनाम	२	५	१३	ऋत	१	६	२२
उषा	३	४	१८	ऊर्गा	३	३	२०	"	२	९	२
उषापति	१	१	२७	ऊर्गायु	२	९	७६	ऋतु	१	४	१३
उषित	३	१	९९	"	२	९	१०७	"	१	४	१९
उष्ट्र	२	९	७५	ऊर्ध्वक	१	७	५	"	३	३	६१
उष्ण	२	४	१९	ऊर्ध्वजानु	२	६	४७	ऋतुनती	२	६	२१
"	२	१०	१९	ऊर्ध्वक्षु	२	६	४७	ऋते	३	४	२
"	३	५	२२	ऊर्मि	१	१०	५	ऋतिवज्	२	७	१७
उष्णरश्मि	१	३	२२	"	३	५	३८	ऋद्ध	२	९	२३
उष्णिका	२	९	५०	ऊर्मिका	२	६	१०७	ऋद्धि	२	४	११२
उष्णीष	३	३	२२०	ऊर्मिमत्	३	१	७१	ऋमु	१	१	८
उष्णोपगम	२	४	१९	ऊष	२	१	४	ऋमुक्षिन्	१	१	४४
उस	१	३	३३	ऊषण	२	९	३६	ऋश्य	२	५	१०
उस्रा	२	९	६६	ऊषर	२	१	५	ऋषभ	१	७	१
				ऊषवत्	२	१	५	"	२	४	११६
				ऊष्मक	२	४	१८				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ऋषभ	२	९	५९	एकाशीला	२	४	८५	ऐरावण	१	१	४६
"	३	१	५९	एड	२	६	४८	ऐरावत	१	१	४६
ऋषि	२	७	४२	एडक	२	९	५६	"	१	३	३
ऋष्यप्रोक्ता	२	४	८७	एडगज	२	४	१४७	"	२	४	३८
"	२	४	१०१	एडमूक	३	१	३८	ऐरावती	१	३	९
ए				एडूक	२	२	४	ऐलविल	१	१	६९
एक	३	१	८२	एण	२	५	१०	ऐलेय	२	४	१२१
"	३	१	८२	एत	१	५	१७	ऐश्वर्य	१	१	३६
"	३	३	१६	एतहिं	३	४	२३	ऐषमस्	३	४	२०
एकक	३	१	८२	एध	२	४	१३	ओ			
एकतान	३	१	७१	एधा	३	२	१०	ओकस्	३	३	२३३
एकताल	१	७	३	एधस्	२	४	१३	ओघ	१	७	९
एकदन्त	१	१	३८	एधित	३	१	७६	"	२	५	३९
एकदा	३	४	२२	एनस्	१	४	२३	"	३	३	२७
एकधुर	२	९	६५	एरण्ड	२	४	५१	ओंकार	१	६	४
एकधुरावह	२	९	६५	एला	२	४	१२५	ओजस्	३	३	२३४
एकधुरीण	२	९	६५	एलापर्णी	२	४	१४०	ओण्डपुष्प	२	४	७५
एकपदी	२	१	१५	एलावालुक	२	४	१२१	ओतु	२	५	५
एकपिङ्ग	१	१	६९	एवम्	३	३	२५१	ओदन	२	९	४८
एकयष्टिका	२	६	१०६	"	३	४	९	ओम्	३	४	१२
एकसर्ग	३	१	८०	"	३	४	१२	ओष	३	२	९
एकहायनी	२	९	६८	"	३	४	१५	ओषधी	२	४	६
एकाकिन्	३	१	८२	"	३	४	१६	"	२	४	१३५
एकाग्र	३	१	७९	एषणिका	२	१०	३२	ओषधोश	१	३	१४
"	३	३	१९०	ऐ				ओष्ठ	२	६	९०
एकाग्र्य	३	१	८०	ऐकागारिक	२	१०	२४	"	३	५	१२
एकान्त	१	१	६७	ऐकुह	२	४	१८	औ			
एकायन	३	१	७९	ऐण	२	५	८	औक्षक	२	९	६०
एकायनगत	३	१	८०	ऐण्य	१	५	८	औचितो	३	५	३९
एकावली	२	६	१०६	ऐतिहा	२	७	१२	औचित्य	३	५	३९
एकाशील	२	४	८१	ऐन्द्रियक	३	१	७९	औत्तानपादि	१	३	२०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
औदनिक	२	२	२८	कङ्काल	२	६	६१	कटु	३	३	३५
औदरिक	३	१	२१	कङ्कु	२	९	२०	कटुतुम्बो	२	४	१५६
औपगवका	३	२	३२	कङ्क	२	६	९५	कटुरोहिणी	२	४	८५
औपधिक	२	८	२४	कङ्कर	३	१	५५	कट्वल	२	४	४०
औपवस्त	२	७	३८	कङ्कित	३	४	१४	कट्वङ्ग	२	४	५६
औरभ्रक	२	९	७०	कङ्क	२	१	१०	कटिअर	२	४	७९
औरस	२	६	२८	"	२	४	१२८	कठिन	३	१	७६
औध्वदेहिक	२	७	३०	कङ्कप	१	१०	२१	कठिलक	२	४	१५४
और्व	१	१	५६	कङ्कपी	३	३	१३२	कठोर	३	१	७६
औक्षोर	३	३	१८६	कङ्कुर	२	६	५८	कङ्कर	२	९	२२
औषध	२	४	१३५	कङ्कुरा	२	४	९२	कङ्कम्ब	२	९	३५
"	२	६	५०	कङ्क	२	६	५३	कङ्कार	१	५	१६
औष्टक	२	९	७७	कङ्कुक	१	८	९	कण	३	१	६२
क				"	२	८	६३	"	३	३	४६
क	३	३	५	कङ्ककिन्	२	८	८	कणा	२	४	९६
कंस	२	९	३२	कट	२	६	७४	"	२	९	३६
कंसाराति	१	१	२१	"	२	८	३७	कणिका	२	४	६६
ककुद	३	३	९२	"	२	९	२६	"	३	५	८
ककुयती	२	६	७४	"	३	३	३४	कणिश	२	९	२१
ककुम्	१	३	१	कटक	२	३	५	कण्टक	३	५	३२
ककुम	१	७	७	"	२	६	१०७	कण्टकारिका	२	४	९३
"	२	४	४५	कटम्भरा	२	४	८५	कण्टकिफल	२	४	६१
ककोलक	२	६	१३०	"	२	४	१५३	कण्ठ	२	६	८८
कक्ष	२	६	७९	कटभी	२	४	१५०	"	३	५	१२
"	३	३	२१९	कटाक्ष	२	६	९४	कण्ठभूषा	२	६	१०४
कक्ष्या	२	८	४२	कटाह	३	५	२१	कण्डुरा	१	४	८६
"	३	३	१५८	कटि	२	६	७४	कण्डू	२	६	५३
कङ्क	२	५	१६	कटी	३	५	३८	कण्डूया	२	६	५३
कङ्कटक	२	८	६४	कटोप्रोथ	२	६	७५	कण्डोल	२	९	२६
कङ्कण	२	६	१०८	कटु	१	५	९	कण्डोलवीणा	२	१०	३१
कङ्कतिका	२	६	१३९	"	२	४	८५	कतृण	२	४	१६६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कथा	१	६	६	कन्दली	२	५	१	कवन्ध	३	८	१६८
कदम्बन्	२	१	१६	कन्दु	२	१	३०	कवरी	२	६	०७
कदम्ब	२	४	४२	कन्दुक	२	६	१३८	"	२	९	४०
कदम्बक	२	५	४०	कन्धरा	२	६	८८	कन्	३	३	२५०
"	२	९	१७	कन्या	२	६	८	कमठ	१	१०	२१
कदर	२	४	५०	कपट	१	७	०	कमठा	१	१०	२४
कदर्थ	३	१	४८	कपर्द	१	१	३५	कमण्डलु	२	७	४६
कदली	२	४	११३	कपर्दिन्	१	१	३२	कमन	३	१	२४
"	२	५	९	कपाट	२	२	१७	कमल	१	१०	३
कदाचित्	३	४	४	कपाल	०	६	६८	"	१	१०	४०
कदुष्ण	१	३	३५	कपालभूत्	१	१	३२	"	३	३	१९५
कद्रु	१	५	१६	कपि	२	५	३	कमला	१	१	२७
कद्वद	३	१	३७	कपिकच्छु	०	४	८७	कमलासन	१	१	१७
कनक	२	९	९४	कपिस्थ	२	४	२१	कमलोत्तर	२	९	१०३
कनकाध्यक्ष	२	८	७	कपिल	१	५	५६	कमिन्	३	१	२३
कनजालुका	२	८	६२	कपिला	१	३	४	कम्प	१	७	३८
कनकाह्वय	२	४	७७	"	२	४	१२०	कम्पन	३	१	७४
कनिष्ठ	२	६	४३	कपिवल्ली	२	४	९७	कम्पित	३	१	८७
"	३	३	४१	कपिश	१	५	१६	कम्प	३	१	७४
कनिष्ठा	२	६	८२	कपीनन	२	४	२७	कम्बल	२	६	११६
कनीनिका	३	६	१२	"	३	४	४३	"	२	८	८७
कनीयस्	३	१	६२	"	०	४	६३	"	३	३	१९५
"	३	३	२३८	कपोन	३	५	१४	कम्बि	२	९	३४
कन्था	३	५	०	कपोनपालिका	०	०	१८	कम्बु	१	१०	२३
"	३	५	०	कपोनाक्षिप्र	२	४	१०१	"	३	३	१३३
कन्द	२	४	१५७	कपोल	२	६	९०	कम्बुग्रीवा	२	६	८८
"	३	५	३५	कफ	२	६	६२	कम्ब	३	१	०४
कन्दर	२	३	६	कफिन्	२	६	६०	कर	१	३	३३
कन्दराल	२	४	२९	कफोणि	२	६	८०	"	२	८	२७
"	२	४	४३	कवन्ध	१	१०	४				
कन्दर्प	१	१	२५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कर	३	३	१६४	करिपिप्पली	२	४	९७	कर्णेजप	३	१	४७
"	३	५	१२	करिशावक	२	८	३५	कर्तरी	२	१०	३३
करक	१	३	१२	करीर	२	४	७७	कर्दम	१	१०	९
"	२	४	६४	"	३	३	१७४	कर्पट	२	६	११५
"	३	३	६	करीष	२	९	५१	कर्पर	२	६	६८
करज	२	४	४७	करुण	१	७	१७	"	३	३	१९२
"	२	४	१२९	करुणा	१	७	१८	कर्परी	२	९	१०१
करञ्जक	२	४	४७	करेड्ड	२	५	१९	कर्पास	३	५	३५
करट	३	५	२०	करेणु	३	३	५२	कर्पूर	२	६	१३०
"	३	३	३४	करोटि	२	६	६९	कबुर	१	१	६०
करण	२	१०	२	कर्क	२	८	४६	"	१	५	१७
"	३	३	५४	कर्कटक	१	१०	२१	"	२	९	९४
करण्ड	३	५	१८	कर्कटी	२	४	१५५	कर्मकार	२	१०	१५
करतोया	१	१०	३३	कर्कन्धू	२	४	३६	"	३	१	१९
करपत्र	२	१०	३४	"	३	५	३८	कर्मकार	३	१	१९
करभ	२	६	८१	कर्करी	२	९	३१	कर्मक्षम	३	१	१८
"	२	९	७५	कर्करेड्ड	२	५	१९	कर्मठ	३	१	१८
करभूषण	२	६	१०८	कर्कश	२	४	४६	कर्मण्या	२	१०	३८
करमर्दक	२	४	६८	"	३	१	७६	कर्मन्	३	२	१
करम्भ	२	९	४८	"	३	३	२१८	कर्मन्दिन्	२	७	४१
कररुह	२	६	८३	कर्कार	२	४	१५५	कर्मशील	३	१	१८
करवाल	२	८	८९	कर्चूर	२	४	१५४	कर्मशूर	३	१	१८
करवालिका	२	८	९१	कर्चूरक	२	४	१३४	कर्मसचिव	२	८	४
करवीर	२	४	७७	कर्ण	२	६	९३	कर्मार	२	४	१६०
करशाखा	२	६	८२	कर्णजलौकस्	२	५	१३	कर्मन्द्रिय	१	५	८
करशंकर	२	८	३७	कर्णधार	१	१०	१२	कर्ष	२	९	८६
करहाट	१	१०	४३	कर्णवेष्टन	२	६	१०३	कर्षक	२	९	५
करहाटक	२	४	५२	कर्णिका	२	६	१०३	कर्षकल	२	४	५८
कराल	३	३	२०५	"	३	३	१५	कर्षू	३	३	२२३
करिणी	२	८	३६	कर्णिकार	२	४	६०	कल	१	७	२
करिन्	२	८	३४	कर्णीरथ	२	८	५१				



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कलकल	१	६	२५	कलिल	३	१	८५	कशिपु	३	३	१३०
कलक्क	१	३	१७	कलुष	१	४	२३	कशेर	३	५	१३
”	३	३	४	”	१	१०	१४	कशेरुका	२	६	६९
कलत्र	३	३	१७	कलेवर	२	६	७०	कश्मल	२	८	१०९
कलघौत	३	३	७६	कल्क	३	३	१४	कश्य	२	८	४७
कलभ	२	८	३५	कल्प	१	४	२१	”	२	१०	४०
कलम	२	९	२४	”	१	४	२२	”	३	१	४४
”	२	९	३५	”	२	७	३९	कष	२	१०	३२
कलम्ब	२	८	८७	”	२	८	२४	कषाय	१	५	९
कलम्बी	२	४	१५७	कल्पना	२	८	४२	”	३	३	१५३
कलरव	२	५	१४	कल्पवृक्ष	१	१	५०	कष्ट	१	९	४
कलल	२	६	३८	कल्पान्त	१	४	२२	”	३	३	३९
कलविक्क	२	५	१८	कल्मष	१	४	०३	कस्तूरी	२	६	१०९
कलश	२	९	३१	कल्माष	१	५	१७	कलार	१	१०	३६
कलशि	२	४	९३	कल्य	१	४	२	कह	२	५	२२
कलईस	२	५	२३	”	२	६	५७	काक	२	५	२०
कलह	२	८	१०४	”	३	६	१६०	काकचिञ्ची	२	४	९८
कला	१	३	१५	कल्या	१	६	१८	काकतिन्दुक	२	४	३९
”	१	४	११	कल्याण	१	४	२५	काकनासिका	२	४	११८
”	३	३	१९८	कल्लोल	१	१०	६	काकपक्ष	२	६	९६
कलाद	२	१०	८	कवच	२	८	६४	काकपीलुक	२	४	३९
कलानिधि	१	३	१४	कवल	२	९	५४	काकमाची	२	४	१५१
कलाप	३	३	१२९	कवरी	२	४	१३९	काकमुद्रा	२	४	११३
कलाय	२	९	१६	कवि	१	३	२५	काकली	१	७	२
कलि	२	८	१०५	”	२	७	५	काकाङ्गी	२	४	११८
”	३	३	१९४	कविका	२	८	४९	काकिणी	३	५	९
कलिका	२	४	१६	कविय	३	५	३५	काकु	१	६	१२
कलिङ्ग	२	४	६७	कवीष्ण	१	३	३५	काकुद	२	६	९१
”	२	५	१६	कव्य	२	७	२४	काकेन्दु	२	४	१९
कलिद्रुम	२	४	५८	कशा	२	१०	३१	काकोदुम्बरिका	२	४	६१
कलिमारक	२	४	४८	कशाई	३	१	४४	काकोदर	१	८	७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
काकोल	१	८	१०	कान्ता	२	६	३	काय (तीर्थ)	२	७	५०
"	२	५	२१	कान्तार	२	१	१७	कायस्था	२	४	५९
काक्षी	२	४	१३१	"	३	३	१७२	कारण	१	४	२८
काङ्क्षा	२	७	२७	कान्तारक	२	४	१६३	कारणा	१	९	३
काच	२	९	९९	काग्नि	१	३	१७	कारणिक	३	१	७
"	२	१०	३०	"	३	२	८	कारण्डव	२	५	३४
"	३	३	२८	कान्दविक	२	९	२८	कारम्भा	२	४	५६
काचस्थाली	२	४	५४	कान्दिशीक	३	१	४२	कारवी	२	४	१११
काचित	३	१	८९	कापथ	२	१	१६	"	२	४	१५२
काञ्चन	२	९	९५	कापोत	२	५	४३	"	२	९	३७
काञ्चनाह्वय	२	४	६५	"	२	९	१०९	"	२	९	४०
काञ्चनी	२	९	४१	कापोताञ्जन	२	९	१००	कारबेल	२	४	१५४
काञ्ची	२	६	१०८	काम	१	१	२५	कारा	२	८	११९
काजिक	२	९	३९	"	१	७	२८	कारिका	३	३	१५
काण्ड	३	३	४३	"	२	९	५७	कारीष	३	२	४३
काण्डपृष्ठ	२	८	६६	"	३	३	१३८	कारु	२	१०	५
काण्डवत्	२	८	६९	कामन	३	१	२४	कारुणिक	३	१	१५
काण्डीर	२	८	६९	कामपाल	१	१	२३	कारुण्य	१	७	१८
काण्डेक्षु	२	४	१०४	कामम्	३	४	१३	कारोत्तर	२	१०	४२
कातर	२	१	२६	कामयितु	३	१	२४	कार्तस्वर	२	९	९५
कात्यायनी	१	१	३६	कामिनी	२	६	३	कार्तान्तिक	२	८	१४
"	२	६	१७	"	३	३	११२	कार्तिक	१	४	१७
कादम्ब	२	५	२३	कामुक	३	१	२३	कार्तिकिक	१	४	१८
कादम्बरी	२	१०	३९	कामुका	२	६	९	कार्तिकेय	१	१	३९
कादम्बिनी	१	३	८	कामुकी	२	६	९	कर्पास	२	६	१११
काद्रवेय	१	८	४	काम्पिल्य	२	४	१४६	"	३	५	३५
कानन	२	४	१	काम्बल	२	८	५४	कर्पासी	२	४	११६
कानीन	२	६	२४	काम्बविक	२	१०	८	कर्म	३	१	१८
कान्त	३	१	५२	काम्बोज	२	८	४५	कर्मण	३	२	४
कान्तलक	२	४	१२८	काम्बोजी	२	४	१३८	कार्मुक	२	८	८३
				काम्यदान	३	२	३	काश्ये	२	४	४४
				काय	२	६	७१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कार्पाण	२	९	८८	कालीयक	२	४	१०१	किष्किणी	१	६	११०
कार्षिक	२	९	८८	"	२	६	१२६	किञ्चित्	३	४	८
काल	१	१	५९	काल्पक	२	४	१३५	किञ्चुलक	१	१०	२२
"	१	४	१	कात्या	२	९	७०	किञ्जल्क	१	१०	४३
"	१	५	१४	कावचिक	२	८	६६	किटि	२	५	२
"	३	३	१९४	कावेरी	१	१०	३५	किट्ट	२	६	६५
"	३	५	११	काव्य	१	३	२४	किण	३	५	१८
कालक	२	६	४९	काश	३	४	१६२	किणिही	२	४	८९
कालकण्ठक	२	५	२१	काश्मरी	२	४	३५	किण्व	२	१०	४२
कालकुट	१	८	१०	काश्मर्य	२	४	३६	कितव	२	४	७७
कालखण्ड	२	६	६६	काश्मीर	२	४	४५	"	२	१०	४३
कालधर्म	२	८	११६	काश्मीरजन्मन्	२	६	१२४	किन्नर	१	१	११
कालपृष्ठ	२	८	८३	काश्यपि	१	३	३२	"	१	१	७१
कालमेधिका	२	४	९०	काश्यपी	२	१	२	किन्नरेश	१	१	६९
"	२	४	१०९	काष्ठ	२	४	१३	किम्	३	३	२५१
कालमेषी	२	४	९६	काष्ठकुहाल	१	१०	१३	"	३	४	५
कालशेथ	२	९	५३	काष्ठतक्ष्	२	१०	९	किमु	३	४	५
कालसूत्र	१	९	२	काष्ठा	१	३	१	किमुत	३	४	२
कालस्कन्द	२	४	३८	"	१	४	११	"	३	४	५
"	२	४	६८	"	३	३	४१	किम्पचान	३	१	४८
काला	२	४	९४	काष्ठीला	२	४	११३	किम्पुरुष	१	१	७१
"	२	४	१०९	कास	२	६	५२	किरण	१	३	३३
"	२	९	३७	कासमर्द	३	५	१९	किरात	२	१०	२०
कालागुरु	२	६	१२७	कासर	२	५	४	किराततिक्त	२	४	१५३
कालानुसार्य	२	४	१२२	कासार	१	१०	२८	किरि	२	५	२
"	२	६	१२६	किंवदन्ती	१	६	७	किरीट	२	६	१०२
कालायस	२	९	९८	किंशार	२	९	२१	किमीर	१	५	१७
कालिका	३	३	१५	"	३	३	१६३	किल	३	३	२५५
कालिन्दी	१	१०	३२	किंशुक	२	४	२९	किलास	२	६	५३
कालिन्दीभेदन	१	१	२४	किक्किदिदि	२	५	१६	किलासिन्	२	६	६१
काली	१	१	३६	किङ्कर	२	१०	१७				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
किल्जिक	२	९	२६	कुचन्दन	२	६	१३२	कुड्य	२	२	४
किल्जिष	१	४	२३	कुचर	३	१	३७	कुणप	२	८	११८
"	३	३	२२४	कुचाग्र	२	६	७७	"	३	५	२०
किशोर	२	८	४६	कुज	१	३	२५	कुणि	२	४	१२८
किष्कु	३	३	७	कुञ्जिन	३	१	७१	"	२	६	४८
किसलय	२	४	१४	कुञ्ज	२	३	८	कुण्ठ	३	१	१७
कोकस	२	६	६८	कुञ्ज	३	३	३१	कुण्ड	२	६	३६
कांचक	२	४	१६१	कुञ्जर	२	८	३४	"	२	९	३१
कीनाश	३	३	२१६	"	३	१	५९	कुण्डल	२	६	१०३
कीर	२	५	२१	कुञ्जराशन	२	४	२०	कुण्डलिन्	१	८	७
कीर्ति	१	६	११	कुञ्जल	२	९	३९	कुण्डी	२	७	४६
कील	१	१	५७	कुट	२	४	५	कुतप	२	९	३३
"	३	३	१९८	"	२	९	३२	कुतुक	१	७	३१
कीलक	२	९	७३	कुटक	२	९	१३	कुतुप	२	७	३१
कीलाल	१	१०	३	कुटज	२	४	६६	कुतु	२	९	३३
"	३	३	२००	कुटजट	२	४	५७	कुतूल	१	७	३१
कीलिन	३	१	४२	"	२	४	१३१	कुत्सा	१	६	१३
कीश	२	५	३	कुटिल	३	१	७१	कुत्सित	३	१	५४
कु	२	१	३	कुटी	२	२	४	कुथ	२	४	१६६
"	३	३	२४१	"	३	५	३८	"	२	८	४२
कुकर	२	६	४८	"	३	५	३८	कुडाल	२	४	२२
कुक्कन्दर	२	६	७५	कुटुम्बन्यापृत	३	१	११	कुनदी	२	९	१०८
कुक्कल	३	३	२०३	कुटुम्बिनो	२	६	६	कुनाशक	२	४	९१
कुक्कुट	२	५	१७	कुट्टनी	२	४	११	कुन्त	२	८	९३
कुक्कुभ	२	५	३५	कुट्टिम	३	५	३४	कुन्तल	२	६	९५
कुक्कुर	२	४	१३२	कुठर	२	९	७४	कुन्द्	२	४	७३
"	२	१०	२१	कुठार	२	८	९२	"	२	४	१२१
कुक्षि	२	६	७७	कुठेरक	२	४	७९	"	३	५	१९
कुक्षिम्भरि	३	१	२१	कुडव	२	९	८९	कुन्दरु	२	४	१२१
कुङ्कुम	२	६	१२३	कुङ्कक	३	५	१७	कुन्दुरुकी	२	४	१२४
कुच	२	६	७७	कुङ्मल	२	४	१६	कुपूय	३	१	५४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कृप्य	२	९	९१	कुरवक	२	४	७५	कुवाद	३	१	३७
कुबेर	१	१	६८	कुरर	२	५	२३	कुविन्द	२	१०	६
"	१	३	३	कुरण्टक	२	४	७५	कुवेणी	१	१०	१६
कुबेरक	२	४	१२७	कुरुविन्द	२	४	१५९	कुश	२	४	१६६
कुबेराक्षी	२	४	५५	कुरुविस्त	२	९	८६	"	३	३	२१६
कुब्ज	२	६	४८	कुल	२	५	४१	कुशल	१	४	२३
कुमार	१	१	४०	"	२	७	१	"	३	१	४
"	१	७	१२	कुलक	२	४	३९	"	३	३	२०४
कुमारक	२	४	२४	"	२	४	१५५	कुशी	२	९	१९
कुमारी	२	४	७३	"	१	१०	५	कुशीलव	२	१०	१२
"	२	६	८	कुलटा	२	६	१०	कुशेशय	१	१०	४०
कुमुद	१	३	३	कुलथिका	२	९	१०२	कुष्ट	२	४	१२६
"	१	१०	३७	कुलपालिका	२	६	७	कुष्ठ	२	६	५४
कुमुदबान्धव	१	३	१३	कुलश्रेष्ठिन्	२	१०	८	"	३	५	३४
कुमुदिका	२	४	४०	कुलसम्भव	२	७	२	कुसीद	२	९	४
कुमुदिनी	१	१०	३९	कुलस्त्री	२	६	७	कुसीदिक	२	९	५
कुमुदप	२	१	९	कुलाय	२	५	३७	कुसुम	२	४	१७
कुमुदती	१	१०	३८	कुलाल	२	१०	६	कुसुमाञ्जन	२	९	१०३
कुम्भा	२	७	१८	कुलाली	२	९	१०२	कुसुमेषु	१	१	२६
कुम्भ	२	४	३४	कुलिश	१	१	४७	कुसुम्भ	२	९	१०६
"	२	८	२७	कुली	२	४	९४	"	३	३	१३३
"	३	३	१३४	कुलीन	२	७	३	कुसृति	१	७	३०
कुम्भकार	२	१०	६	कुलीर	१	१०	२१	कुस्तुम्बुर	२	९	३८
कुम्भसम्भव	१	३	२०	कुलमाष	२	९	३९	कुहना	२	७	५३
कुम्भिका	१	१०	३८	"	३	५	२१	कुहर	१	८	१
कुम्भी	२	४	४०	कुरुमाषामिषुत	२	९	३९	कुहू	१	४	९
कुम्भीर	१	१०	२१	कुरय	२	६	६८	कूकुद	३	१	१४
कुरङ्ग	२	५	८	कुरया	१	१०	३४	कूट	२	३	४
कुरण्टक	२	४	७४	कुवल	२	४	३६	"	२	५	४२
"	२	४	७५	"	३	५	४२	"	३	३	३७
कुरवक	२	४	७४	कुबलय	१	१०	३७	कूटयन्त्र	२	१०	२६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कूटशास्त्रमलि	२	४	४७	कृतिन्	२	७	६	कृष्णफला	२	४	९६
कूटस्थ	३	१	७३	"	३	१	४	कृष्णमेदी	२	४	८६
कृप	१	१०	२६	कृत्त	३	१	१०३	कृष्णला	२	४	९८
कृपक	१	१०	१०	कृत्ति	२	७	४६	कृष्णलोहित	१	५	१६
"	१	१०	१२	कृत्तिवासस्	१	१	३१	कृष्णवर्त्मन्	१	१	५४
"	२	६	७५	कृत्या	३	३	१५२	कृष्णवृन्तः	२	४	५५
कूबर	२	८	५७	कृत्रिमधूपक	२	६	१२८	कृष्णसार	२	५	१०
कूर्च	२	६	९२	कृत्स्न	३	१	६५	कृष्णा	२	४	९६
कूर्चशीर्ष	२	४	१४२	कृपण	३	१	४८	कृष्णिका	२	९	१९
कृचिका	२	९	४४	कृपा	१	७	१८	केकर	२	६	४९
कूर्दन	१	७	३३	कृपाण	२	८	८९	केका	२	५	३१
कूर्पर	२	६	८०	कृपाणी	२	१०	३३	केकिन्	२	५	३०
कूर्पासक	२	६	११८	कृपालु	३	१	१५	केतकौ	२	४	१७०
कूर्म	१	१०	२१	कृपीटयोनि	१	१	५३	केतन	२	८	९९
कूल	१	१०	७	कृमि	२	५	१३	"	३	३	११४
कृष्माण्डक	२	४	१५५	कृमिघ्न	२	४	१०६	केतु	३	३	६०
कृकग	२	५	१९	कृमिज	२	६	१२६	केदर	३	५	२०
कृकलास	२	५	१२	कृश	३	१	६१	केदार	२	९	११
कृकमाकु	२	५	१७	कृशानु	१	१	५४	केनिपातक	१	१०	१३
कृकाटिका	२	६	८८	कृशानुरेतस्	१	१	३३	केयूर	२	६	१०७
कृच्छ्र	१	९	४	कृशाश्विन्	२	१०	१२	केलि	१	७	३२
"	२	७	५२	कृषक	२	९	१३	केवल	३	३	२०४
कृत	३	३	७७	कृषि	२	९	२	केश	२	६	९५
कृतपुङ्ख	२	८	६८	कृषिक	२	९	५	"	३	५	१२
कृतमाल	२	४	२४	कृषीवल	२	९	५	केशपर्णी	२	४	८९
कृतमुख	३	१	४	कृष्टि	२	७	६	केशपाशी	२	६	९७
कृतलक्षण	३	१	१०	कृष्ण	१	१	१८	केशव	१	१	१८
कृतसापलिका	२	६	७	"	१	४	१२	"	२	६	४५
कृतहस्त	२	८	६८	"	१	५	१४	केशवेश	२	६	९६
कृतान्त	१	१	५८	"	२	९	३६	केशाबुनामन्	२	४	१२२
"	३	३	६४	कृष्णपाकफल	२	४	६७	केशिक	२	६	४५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
केशिन्	२	६	४५	कोटि	३	३	३८	कोश	२	९	२१
केशिनी	२	४	१२६	कोटिवर्षा	२	४	१३३	"	३	३	२२१
केसर	१	१०	४३	कोटिश	२	९	१२	कोशफल	२	६	१३०
"	२	४	२५	कोट्ट	३	५	१८	कोशातकी	३	३	८
"	२	४	६४	कोठ	२	६	५४	कोष	३	३	२२१
"	२	४	६५	कोण	१	७	६	कोष्ठ	३	३	४०
केसरिन्	२	५	१	"	२	८	९३	कोष्ण	१	३	३५
क्रेटभजित्	१	१	२२	कोदण्ड	२	८	८३	कौकुटिक	३	३	१७
कैडर्य	२	४	४०	कोद्रव	२	९	१६	कौक्षेयक	२	८	८९
कैनव	१	७	३०	कोप	१	७	२६	कौटतश्च	२	१०	२
"	२	१०	४४	कोपना	२	६	४	कौटिक	२	१०	१४
कैदारक	२	९	११	कोपिन्	३	१	३२	कौणप	१	१	५९
कैदारिक	२	९	११	कोमल	३	१	७८	कौतुक	१	७	३१
कैदार्य	२	९	११	कोयष्टिक	२	५	३५	कौतूहल	१	७	३१
कौरव	१	१०	३७	कोरक	१	४	१६	कौद्रवीण	२	९	८
कैलास	१	१	७०	कोरङ्गी	२	४	१२५	कौन्तिक	२	८	७०
कैवर्त	१	१०	१५	कोरदूष	२	९	१६	कौन्ती	२	४	१२०
कैवर्तीमुस्तक	२	४	१३२	कोल	१	१०	११	कौपीन	३	३	१२३
कैवल्य	१	५	६	"	२	४	३३	कौमुदी	१	३	१६
कैशिक	२	६	९६	"	२	५	२	कौमोदकी	१	१	२८
कैश्य	२	६	९६	कोलक	२	६	१०९	कौलटिनेय	२	६	२७
कोक	२	५	७	"	२	९	३६	कौलटेय	२	६	२६
"	१	५	२२	कोलदल	२	४	१३०	"	२	६	२७
कोकनद	१	१०	४२	कोलम्बक	१	७	७	कौलदेर	२	६	२६
कोकनदच्छवि	१	५	१५	कोलवल्ली	२	४	९७	कौलीन	३	३	११६
कोकिल	२	५	१९	कोला	२	४	९७	कौलेयक	२	१०	२१
कोकिलाक्ष	२	४	१०४	कोलाहल	१	६	२५	कौशिक	२	४	३४
कोटर	२	४	१३	कोलि	२	४	३६	"	३	३	१०
कोटवी	२	६	१७	कोविद	२	७	५	कौशेय	२	६	१११
कोटि	२	८	८४	कोविदार	२	४	२२	कौस्तुभ	१	१	२८
"	२	८	९३	कोश	२	५	३७	क्रकच	२	१०	३४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ककर	२	४	७७	कूर	३	१	७६	क्षण	१	७	३८
"	२	५	१९	"	३	३	१९२	"	३	३	४७
कतु	२	७	१३	केय	२	९	८१	क्षणदा	१	४	४
कतुर्ध्वसिन्	१	१	३४	कोह	२	५	२	क्षणन	२	८	११४
कतुमुग्	१	१	९	"	२	६	७७	क्षणप्रभा	१	३	९
कथन	२	८	११५	कोध	१	७	२६	क्षतज	२	६	६४
कन्दन	२	८	१०७	कोधन	३	१	३२	क्षतव्रत	२	७	५४
"	३	३	१२३	कोष्ठ	२	५	५	क्षरु	२	८	५९
कन्दित	१	७	३५	कोष्ठविज्ञा	२	४	९३	"	२	१०	३
क्रम	२	७	३९	कोष्ठी	२	४	११०	"	३	३	६३
कमुक	२	४	४१	कौञ्च	२	५	२२	क्षत्रिय	२	८	१
"	२	४	४१	कौञ्चदारण	१	१	४०	क्षत्रिया	२	६	१४
"	२	४	१६९	कुम	३	२	१०	क्षत्रिया	२	६	१५
कमेलक	२	९	७५	कुमथ	३	२	१०	क्षत्रियाणी	२	६	१४
कयविक्रयिक	२	९	७८	कुञ्ज	३	१	१०५	क्षन्तु	३	१	३१
कयिक	२	९	७९	कुञ्जित	३	१	९८	क्षपा	१	४	४
कथ्य	२	९	८१	कुष्ट	१	६	१९	क्षपाकर	१	३	१५
कथ्य	२	६	६३	"	३	१	९८	क्षम	३	३	१४३
कथ्याव	१	१	५९	क्रीतक	२	४	१०९	क्षमा	३	३	१४३
कथ्याद	१	१	५९	क्रीतकिका	२	४	९४	क्षमितु	३	१	३१
कायक	२	९	७९	क्रीष	२	६	३९	क्षमिन्	३	१	३१
क्रिया	१	६	२	"	३	३	२१४	क्षन्तु	३	१	३१
"	३	२	१	क्रीष	३	२	२९	क्षय	१	४	२२
"	३	३	१५७	क्रीम	२	६	६५	"	२	६	५१
क्रियावत्	३	१	१८	कण	१	६	२४	"	२	८	१९
क्रोडा	१	७	३२	कणन	१	६	२४	"	३	२	७
"	१	७	३३	कथित	३	१	९५	"	३	३	१४६
क्रुञ्	२	५	२२	काण	१	६	२४	क्षव	२	६	५२
क्रुञ्	१	७	२६	"	३	२	८	"	२	९	१९
क्रुष्ट	१	७	३५	क्षण	१	४	११	क्षवथु	२	६	५२
कर	३	१	४७					क्षान्त	३	१	९७



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ज्ञान्ति	१	७	२४	क्षुध्	२	९	५४	क्षीम	२	६	११३
क्षार	२	९	९९	क्षुधित	३	१	२०	क्षुण्ण	३	१	९१
क्षारक	२	४	१६	क्षुप	२	४	८	क्ष्मा	२	१	३
क्षारमृत्तिका	२	१	४	क्षुमा	२	९	२०	क्ष्माभृत	२	३	१
क्षारित	३	१	४३	क्षुर	२	४	१०४	"	२	८	१
क्षिति	२	१	२	"	३	५	२०	क्ष्वेड	१	८	९
"	३	३	७०	क्षुरक	२	४	४०	क्ष्वेडा	२	८	१०७
क्षिपा	३	२	११	क्षुरप्र	३	२	२०	"	३	३	४३
क्षिप्त	३	१	८७	क्षुरिन्	२	१०	१०	क्ष्वेडित	३	५	३४
क्षिप्नु	३	१	३०	क्षुल्लक	२	१०	१६				
क्षिप्र	१	१	६४	"	३	१	६१	ख	१	२	१
क्षिया	३	२	७	"	३	२	१०	"	३	३	१८
क्षीब	३	१	२३	क्षेत्र	२	९	११	"	३	५	२२
क्षीर	१	१०	४	"	२	९	११	खग	२	५	३२
"	२	१	५१	"	३	३	१८०	"	२	८	८६
"	३	३	१८३	क्षेत्रज्ञ	१	४	२९	"	३	३	१९
क्षीरविदारी	२	४	११०	"	३	३	३३	खगेश्वर	१	१	२९
क्षीरशुद्धी	२	४	११०	क्षेत्राजीव	२	९	६	खजाका	२	९	३४
क्षीरावी	२	४	१००	क्षेपण	३	२	११	खज	२	६	४९
क्षोरिका	२	४	४५	क्षेपणी	१	१०	१३	खजन	२	५	१५
क्षोरोद	१	१०	२	क्षेपिष्ठ	३	१	१११	खजरीट	२	५	१५
क्षुध	२	६	५२	क्षेम	१	४	२६	खट	३	५	१७
क्षुत	२	६	५२	"	२	४	१२८	खट्वा	२	६	१३८
क्षुताभिजनन	२	९	१९	क्षेमन्	३	५	३४	खङ्ग	२	५	४
क्षुद्र	३	१	४८	क्षोणि	२	१	२	"	२	८	८९
"	३	३	१७८	क्षोद	२	८	९९	खङ्गिन्	२	५	४
क्षुद्रवण्टिका	२	६	११०	क्षोदिष्ठ	३	१	१११	खण्ड	१	३	१६
क्षुद्रसङ्घ	१	१०	२३	क्षोम	२	२	१२	खण्डपरशु	१	१	३१
क्षुद्रा	२	४	९४	क्षौद्र	२	९	१०७	खण्डनिकार	२	९	४३
"	३	३	१७७	क्षौम	२	६	१११	खण्डिक	२	९	१६
								खदिर	२	४	४९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
खदिरा	२	४	१४१	खुर	२	४	१३०	गणहासक	२	४	१२८
खद्योत	२	५	२८	"	२	८	४९	गणाधिप	१	१	३८
खनि	२	३	७	खुरणस्	२	६	४७	गणिका	२	४	७१
खनित्र	२	९	१२	खुरणस	२	६	४७	"	२	६	१९
खपुर	२	४	१६९	खेट	३	१	५४	गणिकारिका	२	४	६६
खर	१	३	३५	खेय	१	१०	२९	गणित	३	१	६४
"	२	९	७७	खेला	१	७	३३	गणैय	३	१	६४
खरणस्	२	६	४६	खोड	२	६	४९	गण्ड	२	६	९०
खरणस	२	६	४३	ख्यात	३	१	९	"	२	८	३७
खरपुष्पा	२	४	१३९	ख्यातगर्हण	३	१	९३	"	३	५	१२
खरमञ्जरी	२	४	८९	ख्याति	३	२	९	गण्डक	२	५	४
खरा	२	४	६९	ग				गण्डकारी	२	४	१४१
खराधा	२	४	१११					गण्डैल	२	३	६
खजू	२	६	५३	गगन	१	२	१	गण्डाली	२	४	१५९
खजूर	२	४	१७०	गङ्गा	१	१०	३१	गण्डौर	२	४	१५७
"	२	९	९६	गङ्गाधर	१	१	३४	गण्डूपद	१	१०	२२
खजूरी	२	४	१७०	गज	२	८	३४	गण्डूपदी	१	१०	२४
खर्व	२	६	४६	गजता	२	८	३६	गण्डूषा	३	५	१०
"	३	१	७०	गजबन्धनी	२	८	४३	गतनासिक	२	६	४६
खल	३	१	४७	गजमध्या	२	४	१०३	गद	२	६	५१
खलपू	३	१	१७	गजानन	१	१	३८	गद्य	३	५	३१
खलिनी	३	२	४२	गजा	२	२	८	गन्त्री	२	८	५२
खलीन	२	८	४९	गडक	१	१०	१७	गन्ध	१	५	७
खलु	३	३	२५५	गड्ड	३	५	१८	गन्धकुटी	२	४	१२३
खल्या	३	२	४२	गडुल	२	६	४८	गन्धन	३	३	११५
खात	१	१०	२७	गण	२	५	४०	गन्धनाकुली	२	४	११४
खादित	३	१	११०	"	२	८	८१	गन्धफली	२	४	५६
खारी	२	९	८८	"	३	३	४६	"	२	४	६४
खारीक	२	९	१०	गणक	२	८	१४	गन्धमादन	२	३	३
खिल	२	१	५	गणनीय	३	१	६४	गन्धमूली	२	४	१५४
				गणरात्र	१	४	६	गन्धरस	२	९	१०४
				गणरूप	२	४	८०				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गन्धर्व	१	१	११	गर्गरी	२	९	७४	गवेषणा	२	७	३२
"	२	५	११	गर्जित	१	३	८	गवेषित	३	१	१०५
"	२	८	४४	"	२	८	३६	गव्य	२	९	५०
"	३	३	१३३	गर्त	१	८	२	गव्या	२	९	६०
गन्धर्वहस्तक	२	४	५०	गर्दभ	२	९	७७	गव्यूति	२	१	१८
गन्धवह	१	१	६२	गर्दभाण्ड	२	४	४३	गहन	२	४	१
गन्धवहा	२	६	८९	गर्धन	३	१	२२	"	३	१	८५
गन्धवाह	१	१	६२	गर्भ	२	६	३९	गह्वर	२	३	६
गन्धसार	२	६	१३१	"	३	३	१३५	"	३	३	१८३
गन्धाश्मन्	२	९	१०२	गर्मक	२	६	१३५	गाङ्गेय	२	९	९४
गन्धिक	२	९	१०२	गर्भागार	२	२	८	"	३	३	१५६
गन्धिनी	२	४	१२३	गर्भाशय	२	६	२८	गाङ्गेरुकी	२	४	११७
गन्धोत्तमा	२	१०	३९	गर्भिणी	२	६	२२	गाढ	१	१	६७
गन्धोली	२	५	२७	गर्भोपवातिन	२	९	६९	गाणिक्य	२	६	२२
गमस्ति	१	३	३३	गर्मुत्प	२	४	१६५	गाण्डिव	२	८	८४
गभीर	१	१०	१५	गर्व	१	७	२२	गाण्डीव	२	८	८४
गम	२	८	९५	गर्हण	१	६	१३	गात्र	२	६	७०
गमन	२	८	९५	गर्ह्य	३	१	५४	"	२	८	४०
गम्भारी	२	४	३५	गर्ह्यादिन्	३	१	३७	गात्रानुलेपनी	२	७	१३३
गम्भीर	१	१०	१५	गल	२	६	८८	गान	१	६	२६
गम्य	३	१	९२	गलकम्बल	२	९	६३	गान्धार	१	७	१
गरल	१	८	९	गलन्तिका	२	९	३१	गायत्री	२	४	४९
गरिष्ठ	३	१	११२	गलित	३	१	१०४	गारुत्मत	२	९	९२
गरी	२	४	६९	गल्या	३	२	४२	गार्भिण	२	६	२२
गरुड	१	१	२९	गवय	२	५	११	गार्हपत्य	२	७	१९
गरुडध्वज	१	१	१९	गवल	२	९	१००	गालव	२	४	३३
गरुडाग्रज	१	३	३२	गवाक्ष	२	२	९	गिर्	१	६	१
गवत्	२	५	३६	गवाक्षी	२	४	१५६	गिरि	२	३	१
गवत्सप्त	१	१	२९	गवाक्षी	२	९	५८	"	३	२	११
"	२	५	३४	गवोश्चर	२	९	५८	गिरिकर्णी	२	४	१०४
"	३	३	५८	गवेषु	२	९	२५	गिरिका	२	५	१२
				गवेषुका	२	९	२५	गिरिज	२	९	१०४

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
गिरिजामल	२	९	१००	गुन्द्रा	२	४	५५	गृधसी	३	५	१०
गिरिमल्लिका	२	४	६६	"	२	४	१६०	गृष्टि	२	४	१५१
गिरिश	१	१	३१	गुप्त	३	१	८९	गृह	२	२	४
गिरीश	१	१	३१	"	३	१	१०६	"	२	२	५
गिरित	३	१	११०	गुप्ति	३	३	७४	"	३	३	२३८
गीत	१	६	२६	गुरण	३	२	११	गृहगोधिका	२	५	१२
गीर्ण	३	१	११०	गुरु	१	३	२४	गृहपति	२	८	१५
गीर्णि	३	२	११	"	२	७	७	गृहयात्रा	३	१	२७
गीर्णपति	१	३	२४	"	३	३	१६२	गृहस्थूण	३	५	३०
गीर्वाण	१	१	९	गुर्विणी	२	६	२२	गृहाराम	२	४	१
गुग्गुलु	२	४	३४	गुल्फ	२	६	७२	गृहावग्रहणी	२	२	१३
गुच्छ	२	६	१०५	गुल्म	२	४	९	गृहिन्	२	७	३
गुच्छक	२	४	१६	"	२	८	८१	गृष्टक	२	५	४३
गुच्छार्थ	२	६	१०५	"	३	३	१४२	"	३	१	१६
गुञ्जा	२	४	९८	गुस्मिनी	२	४	९	गेन्दुक	२	६	१३८
गुड	३	३	४२	गुवाक	२	४	१६९	गेह	२	२	४
गुडपुष्प	२	४	२७	गुह	१	१	३९	गैरिक	२	३	८
गुडफल	२	४	२८	गुहा	२	३	६	"	३	३	१२
गुडा	२	४	१०५	"	२	४	९३	गैरेय	२	९	१०४
गुडूची	२	४	८२	गुह्य	३	३	१५४	गो	२	९	९
गुग	२	८	८५	गुह्यक	१	१	१११	"	२	९	६६
"	२	९	२८	गुह्यकेश्वर	१	१	६८	"	३	३	२५
"	२	१०	२७	गूढ	३	१	८९	गोकण्टक	२	४	९९
"	३	३	४७	गूढपाद्	१	८	७	गोकर्ण	२	५	१०
गुणवृक्षक	१	१०	१२	गूढपुरुष	२	=	१३	"	२	६	८३
गुणित	३	१	८८	गूथ	२	६	६८	गोकर्णी	२	४	८४
गुणितत	३	१	८९	गून	३	१	९६	गोकुल	२	९	५८
गुद	२	६	७३	गूजन	२	४	१४८	गोक्षुरक	२	४	९९
गुन्द्र	२	४	१६२	गृध्नु	३	१	२२	गोचर	१	५	८
				गृध	२	५	२१	गोजिहा	२	४	११९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गोडुम्बा	२	४	१५६	गोमत्	२	९	५८	गौर	१	५	१३
गोण्ड	३	५	१८	गोमय	२	९	५०	"	१	५	१४
गोत्र	२	३	१	गोमायु	२	५	५	"	३	३	१८९
"	२	७	१	गोमिन्	२	९	५८	गौरी	१	१	३६
"	३	३	१८१	गोरस	२	९	५३	"	२	६	८
गोत्रमिद्	१	१	४२	गोद	२	६	६५	गौष्ठान	२	१	१३
गोत्रा	२	१	३	गोल	३	५	२०	ग्रन्थि	२	४	१६२
"	२	९	६०	गोलक	२	६	३६	ग्रन्थिक	२	९	११०
गोदारण	२	९	१४	गोला	२	९	१०८	ग्रन्थिन	३	१	८६
गोदुह	२	९	५७	गोलाढ	२	४	३९	ग्रन्थिपर्ण	२	४	१३२
गोधन	२	९	५८	गोलोमा	२	४	१०२	ग्रन्थिल	२	४	३७
गोधा	२	८	६४	"	२	४	१५९	"	२	४	७७
गोधापदी	२	४	११९	"	२	९	१११	ग्रस्त	१	६	२०
गोधि	२	६	९२	गोवन्दनी	२	४	५५	"	३	१	१११
गोधिका	१	१०	२२	गोविन्द	१	१	१९	ग्रह	१	४	९
गोधूम	२	९	१८	"	३	३	९१	"	३	२	८
गोमर्द	२	४	१३२	गोविष्	२	९	५०	"	३	३	२३६
गोनस	१	८	४	गोशाल	३	५	४०	ग्रहणीरुज्	२	६	५५
गोप	२	८	७	गोशीर्ष	२	६	१३१	ग्रहपति	१	३	३०
"	२	९	५७	गोष्ट	२	१	१३	ग्रहीतृ	३	१	२७
"	३	३	१३०	गोष्ठी	२	७	१५	ग्राम	२	२	१९
गोपति	२	९	६२	गोष्पद	३	३	९४	"	६	३	१४१
गोपरस	२	९	१०४	गोसंख्य	२	९	५७	ग्रामणी	३	३	४९
गोपानसी	२	२	१५	गोस्तन	२	६	१०५	ग्रामतक्ष	२	१०	९
गोपायित	३	१	१०६	गोस्तनी	२	४	१०७	ग्रामता	३	२	४२
गोपाल	२	९	५७	गोस्थानक	२	४	१३	ग्रामान्त	२	२	२०
गोपी	२	४	११२	गौतम	१	१	१५	ग्रामीणा	२	४	९४
गोपुर	२	२	१६	गौधार	२	५	६	ग्राम्य	१	६	१९
"	२	४	१३२	गौधेय	२	५	६	ग्राम्यधर्म	२	७	५७
"	३	३	१८३	गौधेर	२	५	६	भावन्	२	३	१
गोप्यक	२	१०	१७								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रावन्	२	३	४	वर्म	३	३	१४२	प्राणतर्पण	१	५	११
"	३	३	१०६	वस्मर	३	१	२०	प्रात	३	१	९०
प्रास	२	९	५४	वस्र	१	४	२	च			
प्राह	१	१०	२१	घाटा	२	६	८८	च	३	३	२४१
"	३	२	८	घाण्टिक	२	८	९६	"	३	४	५
प्रादिन्	२	४	२१	घात	२	८	११५	चकोरक	२	५	३५
प्रावा	२	६	८८	घातुक	३	१	२८	चक	१	१०	७
प्रीष्म	१	४	१८	"	३	१	४७	"	२	५	२२
प्रीवेयक	२	६	१०४	घास	२	४	१६७	"	२	८	५६
ग्लस्त	३	१	१११	घुटिका	२	६	७२	"	२	८	७८
ग्लह	२	१०	४५	घुण	३	५	१८	"	३	३	१८२
ग्लान	२	६	५८	घूर्णित	३	१	३२	चक्रकारक	२	४	१२९
ग्लास्तु	२	६	५८	घृणा	१	७	१८	चक्रपाणि	१	१	२०
ग्लौ	१	३	१४	"	३	२	३२	चक्रमर्दक	२	४	१४७
घ				"	३	३	५१	चक्रला	२	४	१६०
घट	२	९	३२	घृणि	१	३	३३	चक्रवर्तिन्	२	८	२
घटा	२	८	१०७	घृत	२	९	५२	चक्रवर्तिनी	२	४	१५३
घटीयन्त्र	२	१०	२७	"	३	३	७६	चक्रवाक	२	५	२२
घण्टापथ	२	१	१८	घृष्टि	२	५	२	चक्रवाल	१	३	६
घण्टापाटलि	२	४	३९	घोटक	२	८	४४	"	२	३	२
घण्टारवा	२	४	१०७	घोणा	२	६	८९	चक्राङ्ग	२	५	२३
घन	१	३	७	घोणिन्	२	५	२	चक्राङ्गी	२	४	८६
"	१	७	३	घोण्टा	२	४	३७	चक्रिन्	१	८	७
"	१	७	९	घोर	१	७	२०	चक्रोवत्	२	९	७७
"	२	८	९१	घोष	२	२	२०	चक्षुःश्रवस्	१	८	७
"	३	१	६६	घोषक	२	४	११७	चक्षुष्	२	६	९३
"	३	३	१११	घोषणा	१	६	१२	चक्षुष्या	२	९	१०२
घनरस	१	१०	५	घ्राण	१	६	८९	चञ्चल	३	१	७५
घनसार	२	६	१३०	"	३	१	९०	चञ्चला	१	३	९
घनाघन	३	३	११०					चञ्चु	२	४	५१
वर्म	१	७	३३								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चक्षु	२	५	३६	चन्द्रभागा	१	१०	२४	चाचर	३	१	७४
चटक	२	५	१७	चन्द्रमस	१	३	१३	चरिष्णु	३	१	७४
चटका	२	५	१८	चन्द्रवाला	२	४	१२५	चर	२	७	२२
"	२	५	१८	चन्द्रसेखर	१	१	३०	चर्चरी	३	५	१०
चटकाशिरस्	२	९	११०	चन्द्रसंज्ञ	२	६	१३०	चर्चा	१	५	२
चणक	२	९	१८	चन्द्रहाम	२	८	८९	"	२	६	१२२
चण्ड	३	१	३२	चन्द्रिका	१	३	१६	चर्मकष	२	४	१४३
चण्डा	२	४	१२८	चपल	१	९	६५	चर्मकार	२	१०	७
चण्डात	२	४	७६	"	२	९	९९	चर्मन्	२	७	४६
चण्डातक	२	६	११९	"	३	९	४६	"	२	८	९०
चण्डाल	२	१०	४	चपला	१	३	९	चर्मप्रभेदिका	२	१०	३४
"	२	१०	१९	"	२	४	९६	चर्मप्रसेविका	२	१०	३३
चण्डालबलकी	२	१०	११	चपेट	२	६	८४	चर्मिन्	२	४	४६
चण्डिका	१	१	३७	चमर	२	५	१०	"	२	८	७१
चतुःशाल	२	२	६	चमरिक	२	४	२२	चर्या	२	७	३५
चतुर	२	१०	१९	चमस	३	५	३५	चवित	३	१	१११
चतुरकुल	२	४	२३	चमसी	३	५	१०	चल	३	१	७४
चतुरानन	१	१	१६	चमू	२	८	७८	चलदल	२	४	२०
चतुर्भद्र	२	७	५८	"	२	८	८१	चलन	३	१	७४
चतुर्भुज	१	१	२०	चमूरु	२	५	९	चलाचल	३	१	७४
चतुर्वर्ग	२	७	५७	चम्पक	२	४	६३	चलित	२	८	९६
चतुर्द्विगुणी	२	९	६८	चय	२	२	३	"	३	१	८७
चतुष्पथ	२	१	१७	"	२	५	४०	चविका	२	४	९८
चतुर्वर	२	२	१३	चर	२	८	१३	चव्य	२	४	९८
"	२	७	१८	"	३	१	७४	चधक	२	१०	४३
चन	३	४	३	चरक	३	५	३३	चषाल	२	७	१८
चन्दन	२	६	१३१	चरण	२	६	७१	चाक्रिक	२	८	९६
चन्द्र	१	३	१३	चरणायुध	२	५	१७	चाङ्गेरी	२	४	१४०
"	२	४	१४६	चरम	३	१	८१	चाटकौर	२	५	१८
"	३	३	१८३	चरमक्षमाभूत	२	३	२	चाण्डाल	२	१०	२०
चन्द्रक	२	५	३१					चाण्डालिका	२	१०	३१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चातक	२	५	१७	चित्र	१	७	१९	चिह्न	२	६	६०
चातुर्वर्ण्य	२	७	२	"	३	३	१७९	चिह्न	१	३	१७
चाप	२	८	८३	चित्रक	२	४	५१	चीन	२	५	९
चामर	२	८	३२	"	२	४	८०	चोर	३	५	३१
चामीकर	२	९	९५	"	२	६	१२३	चोरी	२	५	२८
चाम्पेय	२	४	६३	चित्रकर	२	१०	७	चोवर	३	५	३१
"	२	४	६५	चित्रकृत	२	४	२७	चुक	२	४	१४१
चार	२	८	१३	चित्रतण्डुला	२	४	१०६	"	२	९	३५
"	३	२	१४	चित्रपर्णी	२	४	९२	"	३	५	२०
चारटी	२	४	१४६	चित्रमानु	१	१	५६	चुक्रिका	२	४	१४०
चारण	२	१०	१२	"	१	३	३०	चुछ	२	६	६०
चारु	३	१	५२	"	३	३	१०५	चुछि	२	९	३९
चार्विक्य	२	६	१२२	चित्रशिखण्डिज	१	३	२४	चूचुक	२	६	७७
चालनी	२	९	२६	चित्रशिखण्डिन्	१	३	२७	चूडा	२	५	३१
चाष	२	५	१६	चित्रा	२	४	८७	"	२	६	९७
चिकित्सक	२	६	५७	"	२	४	१५६	चूडामणि	२	६	१०२
चिकित्सा	२	६	५०	चिन्ता	१	७	२९	चूडाला	२	४	१६०
चिकुर	२	६	९५	चिपिटक	२	९	४७	चूत	२	४	३३
"	३	१	४६	चिडुक	२	६	९०	चूर्ण	२	६	१३४
चिकण	२	९	४६	चिरक्रिय	३	१	१७	"	२	८	९९
चिकस	३	५	३५	चिरण्टी	२	६	९	चूर्णकुन्तल	२	६	९६
चिञ्चा	२	४	४३	चिरन्तन	३	१	७७	चूर्णि	३	५	९
चित	१	५	१	चिरप्रसूता	२	९	७१	चूलिका	२	८	३८
"	३	४	३	चिरबिम्ब	२	४	४७	चेटक	२	१०	१७
चिता	२	८	११७	चिररात्राय	३	४	१	चेत	३	४	१२
चिति	२	८	११७	चिरस्य	३	४	१	चेतकी	२	४	५९
चित्त	१	४	३१	चिराय	३	४	१	चेतन	१	४	३०
चित्तविभ्रम	१	७	२६	चिरण्टी	२	६	९	चेतना	१	५	१
चित्ताभोग	१	५	२	चिलिचिम	१	१०	१८	चेतस्	१	४	३१
चित्या	२	८	११७	चिह्न	२	५	२१	चैत्य	२	२	७
चित्र	१	५	१७								



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चैत्र	१	४	१५	छन्न	२	८	२२	जग्धि	२	९	५५
चत्ररथ	१	१	७०	"	३	१	९८	जघन	२	६	७४
चैत्रिक	१	४	१५	छल	२	८	१०८	जघनेफला	२	४	६१
चैल	२	६	११५	छवि	१	३	१७	जघन्य	३	१	८१
"	३	३	२०३	"	१	३	३४	"	३	३	१५९
चोच	२	४	१३४	छाग	२	९	७६	जघन्यज	२	६	४३
"	३	५	३०	छागी	२	९	७६	"	२	१०	१
चोरपुष्पी	२	४	१२६	छात	२	६	४४	जङ्गम	३	१	७४
चोल	२	६	११८	"	३	१	१०३	जङ्गमेतर	३	१	७३
चौर	२	१०	२४	छात्र	२	७	११	जङ्हा	२	६	७२
चौरिका	२	१०	२५	छादित	३	१	९८	जङ्हाकारिक	२	८	७३
चौर्य	२	१०	२५	छान्दस	२	७	६	जङ्हाल	२	८	७३
च्युत	३	१	१०४	छाया	३	३	१५८	जटा	२	४	११
छ				छित	३	१	१०३	"	२	६	९७
				छिद्र	१	८	२	"	३	३	३८
				छिद्रित	३	१	९९	जटामांसी	२	४	१३४
				छिन्न	३	१	१०३	जटिन्	२	४	३२
				छिन्नरुहा	२	४	८२	जटिला	२	४	१३४
				छुरिका	२	८	९२	जठर	२	६	७७
				छेक	२	५	४३	"	३	३	१९०
				छेदन	३	२	७	जड	१	३	१९
				ज				"	३	१	३८
								जडुल	२	६	४९
छगलक	२	९	७६					जतु	२	६	१२५
छगलान्त्री	२	४	१३७					"	३	५	१३
छन्न	२	८	३२					जतुक	२	९	४०
छन्ना	२	४	१०५					जतुकुत्	२	४	१५३
"	२	४	१६७					जतुका	२	५	२६
"	२	९	३७					जतुका	२	४	१५३
छन्नाकी	२	४	११५					जत्रु	२	६	७८
छद	२	४	१४								
"	२	५	३६	जगत	२	१	६				
छदन	२	४	१४	"	३	३	८०				
छदिस्	२	२	१४	जगती	२	१	६				
छन्नन्	१	७	३०	"	३	३	७१				
छन्द	३	२	२०	जगत्प्राण	१	१	६२				
"	३	३	८८	जगर	२	८	६४				
छन्दस्	२	७	२२	जगल	२	१०	४१				
छन्दस्	३	३	२३२	जग्ध	३	१	१११				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
जनक	२	६	२८	जम्बुक	३	३	३	जलाधार	१	१०	२५
जनकम	२	१०	१९	जम्बू	२	४	१९	जलाशय	१	१०	२५
जनता	३	२	४२	जम्भ	२	४	२४	"	२	४	१६४
जनन	१	४	३०	जम्भेदिन्	१	१	४३	जलोच्छ्वास	१	१०	१०
"	२	७	१	जम्भल	२	४	२४	जलौकस्	१	१०	२२
जननी	२	६	२९	जम्भीर	२	४	२४	जलौका	१	१०	२२
जनपद	२	१	८	जय	२	४	६६	जलपाक	३	१	३६
जनयित्री	२	६	२९	"	२	८	११०	जल्पित	३	१	१०७
जनश्रुति	१	६	७	"	३	२	१२	जव	१	१	६४
जनार्दन	१	१	१९	जयन	३	२	१२	"	२	८	७३
जनाश्रय	२	२	९	जयन्त	१	१	४६	जवन	२	८	४५
जनि	१	४	३०	जयन्तो	२	४	६५	"	२	८	७३
जनो	२	४	१५३	जया	२	४	६५	"	३	२	३८
"	२	६	९	जय्य	२	८	७४	जवनिका	२	६	१२०
जनुस्	१	४	३०	जरठ	३	१	७६	जहुतनया	१	१०	३१
जन्तु	१	४	३०	जरण	२	९	३६	जागरा	३	२	१९
जन्तुफल	२	४	२२	जरत्	२	६	४२	जागरितु	३	१	३२
जन्मन्	१	४	३०	जरद्रव	२	९	६१	जागरूक	३	१	३२
जन्मिन्	१	४	३०	जरा	२	६	४१	जागर्या	३	२	१९
जन्म	२	७	५८	जरायु	२	६	३८	जाङ्गुलिक	१	८	११
"	२	८	१०३	जरायुज	३	१	५०	जाङ्गिक	२	८	७३
"	३	३	१५९	जल	१	१०	३	जात	१	४	३१
जन्त्यु	१	४	३०	जलजन्तु	१	१०	२०	जातरूप	२	९	९५
जप	२	७	४७	जलधर	१	३	७	जातवेदस्	१	१	५३
जपापुष्प	२	४	७६	जलनिधि	१	१०	२	जातापस्या	२	६	१६
जम्पती	२	६	३८	जलनिर्गम	१	१०	६	जाति	१	४	३१
जम्बाल	१	१०	९	जलनीली	१	१०	३८	"	२	४	७२
जम्बीर	२	४	२४	जलपुष्प	३	५	२३	"	३	३	६८
"	२	४	७९	जलप्राय	२	१	१०	जातीकोश	२	६	१३२
जम्बु	२	४	१९	जलमुच्	१	३	७	जातीफल	२	६	१३२
जम्बुक	२	५	५	जलव्याल	१	८	५	जातु	३	४	४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
जातोक्ष	२	९	६०	जोमृत	१	३	७	जृम्भण	१	७	३५
जानु	२	६	७२	"	२	४	६९	जेतृ	२	८	७४
जाबाल	२	१०	११	"	३	३	५८	"	२	८	७७
जामातृ	२	६	३२	जीरक	२	९	३६	जैमन	२	९	५६
जामि	३	३	१४२	जीर्ण	२	६	४२	जैय	२	८	७४
जाम्बव	२	४	१९	जीर्णि	३	२	९	जैत्र	२	८	७४
जाम्बूनद	२	९	९५	जीर्णदस्त्र	२	६	११४	जैवातुक	१	३	१४
जायक	२	६	१२५	जीव	१	३	२४	"	३	१	६
जाया	२	६	६	"	२	८	११९	"	३	३	११
जायाजीव	२	१०	१२	जीवक	२	४	४४	जोङ्गक	२	६	१२६
जायापति	२	६	३८	"	२	४	१४२	जोषम्	३	३	२५१
जायु	२	६	५०	जीवजीव	२	५	३५	क्ष	२	७	५
जार	२	६	३५	जीवन	१	१०	३	क्षपित	३	१	९८
जाल	१	१०	१६	"	२	९	१	क्षम	३	१	९८
"	३	३	२०१	जीवनी	२	४	१४२	क्षप्ति	१	५	१
जालक	२	४	१६	जीवनीया	२	४	१४२	क्षातसिद्धान्त	२	८	१५
जालिक	२	१०	१४	जीवन्तिका	२	४	८२	क्षाति	२	६	३४
जाली	२	४	११८	"	२	४	८३	क्षातृ	३	१	३०
जालम	२	१०	१६	जीवन्ती	२	४	१४२	क्षातेय	२	६	३५
"	३	१	१७	जीवा	२	४	१४२	क्षान	१	५	६
जिघत्सु	३	१	२०	जीवातु	२	८	१२०	क्षानिन्	२	८	१४
जिङ्गी	२	४	९०	जीवान्तक	२	१०	१४	ज्या	२	१	२
जित्स्वर	२	८	७७	जीविका	२	९	१	"	२	८	८५
जिन	१	११	१३	जुगुप्सा	१	६	१३	ज्यानि	३	२	९
जिष्णु	१	१	४२	जुङ्ग	२	४	१३७	ज्यायस्	२	६	४३
"	२	८	७७	जुहू	२	७	२५	"	३	३	२३५
जिह्वा	३	१	७१	जूति	३	२	३८	ज्येष्ठ	१	४	१६
"	३	३	१४१	जूति	३	२	३८	"	३	३	४१
जिह्वाग	१	८	८	जूति	३	२	३८	ज्योतिरिङ्गण	२	५	२८
जिह्वा	२	६	९१	जूम्भ	१	७	३५	ज्योतिष्मती	२	४	१५०
जीन	२	६	४२								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ज्योतिस्	३	३	२३०	ड				तत्काल	२	८	२९
ज्योत्स्ना	१	३	१६	डमर	३	२	१४	तत्त्व	१	७	९
ज्योत्स्नी	२	४	११८	डमरु	१	७	८	तत्पर	३	१	९
ज्यौतिषिक	२	८	१४	डयन	२	८	५२	तथा	३	४	९
ज्योत्स्ना	१	४	५	डहु	२	४	६०	"	३	४	२३
ज्वर	२	६	५६	डिण्डिम	१	७	८	तथागत	१	१	१३
"	३	२	३८	डिण्डीर	२	९	१०५	तथ्य	१	६	२२
ज्वलन	१	१	५३	डिम्ब	३	२	१४	तद्	३	४	३
ज्वाल	१	१	५७	डिम्भ	२	५	३८	तदा	३	४	२२
झ				"	३	३	१३४	तदास्व	२	८	२९
झटामला	२	४	१२७	डिम्भा	२	६	४१	तदानीम्	३	४	२२
झटिति	३	४	२	डुण्डुभ	१	८	५	तनय	२	६	२७
झर	२	३	५	डुलि	१	१०	२४	तनु	२	६	७१
झर्झर	१	७	८	ढ				"	३	१	६१
झलरी	३	५	१०	ढका	१	७	६	"	३	१	६६
झष	१	१०	१७	त				"	३	३	११३
झषा	२	४	११७	तक्र	२	९	५३	तनुत्र	२	८	६४
झाटल	२	४	३९	तक्षक	३	३	४	तनू	२	६	७१
झाटलि	२	५	३८	तक्षन्	२	१०	९	तनूकृत	३	१	९९
झाबुक	२	४	४०	तट	१	१०	७	तनूनपाव	१	१	५३
झिण्टा	२	४	७५	तटिनी	१	१०	३०	तनूरुह	२	५	३६
झिण्टी	२	४	७४	तड्याग	१	१०	३८	"	२	६	९९
झिलिका	२	५	२८	तडित	१	३	९	तन्तु	२	१०	२८
झीरुका	२	५	२८	तडितवत्	१	३	७	तन्तुभ	२	९	१७
ट				तण्डक	३	५	३३	तन्तुवाय	२	५	१३
टङ्क	२	१०	३४	तण्डुल	२	४	१०६	"	२	१०	६
"	३	५	३३	तण्डुलीय	२	४	१३६	तन्त्र	३	३	१८५
टिट्टिभक	२	५	३५	तत	१	७	३	तन्त्रक	२	६	११२
टीका	३	५	७	"	३	१	८६	तन्त्रिका	२	४	८२
टण्डुक	२	४	५६	"	३	४	३	तन्द्रा	३	३	१७६
				ततस्	३	४	३	तन्द्री	१	७	३७
								तप	१	४	१९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
तपन	१	३	३१	तरस्	१	१	६४	तापस	२	७	४२
"	१	९	१	"	१	८	१०२	तापसतर	२	४	४६
तपनीय	२	९	९४	तरस	२	६	६३	तापिच्छ	२	४	६८
तपस्	१	४	१५	तरस्विन्	२	८	७३	तामरस	१	१०	४०
"	३	३	२३२	"	३	२	१२८	तामलकी	२	४	१२७
तपस्य	१	४	१५	तरि	१	१०	१०	ताम्बूलवल्ली	२	४	१२०
तपस्विन्	२	७	४२	तरु	२	४	५	ताम्बूली	२	४	१२०
तपस्विनी	२	४	१३४	तरुण	२	६	४२	ताम्रक	२	९	९७
तम	१	३	२६	तरुणी	२	६	८	ताम्रकणी	१	३	५
तमस्	१	४	२९	तर्क	१	५	३	ताम्रकुट्टक	२	१०	८
"	१	८	३	तर्कारी	२	४	६५	ताम्रचूड	२	५	१७
"	३	३	२३२	तर्जनी	२	६	८१	तार	१	७	२
तमस्विनी	१	४	४	तर्णक	२	९	६०	"	३	३	१६६
तमाल	२	४	६८	तर्दू	२	९	३४	तारकजिद	१	१	४०
"	३	५	३३	तर्पण	२	७	१४	तारका	१	३	२१
तमालपत्र	२	६	१२३	"	२	९	५६	"	२	६	९२
तमिस्त्र	१	८	३	"	३	२	४	तारा	१	३	२१
तमिस्त्रा	१	४	५	तर्मन्	२	७	१९	तारुण्य	२	६	४०
तमो	१	४	४	तर्ष	१	७	२८	तार्क्ष्यं	१	१	२९
तमोनुद	३	३	८९	"	२	९	५५	"	३	३	१४६
तमोपह	३	३	२३९	तल	२	८	८४	तार्क्ष्यशैल	२	९	१०२
तरक्षु	२	५	१	"	३	३	२०२	ताल	१	७	९
तरङ्ग	१	१०	५	तलिन्	३	३	१२७	"	२	४	१६८
तरङ्गिणी	१	१०	३०	तल्प	३	३	१३१	"	२	६	८३
तरणि	१	३	३०	तल्लज	१	४	२७	"	२	९	१०३
"	१	१०	१०	तष्ट	३	१	९९	तालपत्र	२	६	१०३
"	२	४	७३	तस्कर	२	१०	२४	तालपणी	२	४	१२३
तरपण्य	१	१०	११	ताण्डव	१	७	१०	तालमूलिका	२	४	११९
तरल	२	६	१०२	"	३	५	३४	तालवृन्तक	२	६	१४०
"	३	१	७५	तात	२	६	२८	तालाङ्क	१	१	२४
तरला	२	९	५०	तान्त्रिक	२	८	१५	ताली	२	४	१२७

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
ताली	२	४	१७०	तिलक	२	६	४९	तुण्डिकेरी	२	४	१३९
तालु	२	६	९१	"	२	६	६५	तुण्डिम	२	६	६१
तावत्	३	३	२४७	"	२	६	१२३	तुण्डिल	२	६	६१
तिक्त	१	५	९	"	२	९	४३	तुत्थ	२	९	१०१
तिक्तक	२	४	१५५	तिलकालक	२	६	४९	तुत्था	२	४	९५
तिक्तशाक	२	४	२५	तिलपर्णी	२	६	१३२	"	२	४	१२५
तिग्म	१	३	३५	तिलपिञ्ज	२	९	१९	तुत्थाजन	२	९	१०१
तितउ	२	९	२६	तिलपेज	२	९	१९	तुन्द्	२	६	७७
तिनिक्षा	१	७	२४	निलित्स	१	८	५	तुन्दपरिमृज	२	१०	१८
तिनिधु	३	१	३१	निव्य	२	९	७	तुन्दिम	२	६	४४
तित्तिरि	२	५	३५	तित्व	२	३	३३	तुन्दिल	२	६	४४
तिथि	१	४	१	तिष्य	१	३	२२	तुन्दिन्	२	६	४४
निनिश	२	४	२६	"	३	३	१४७	तुन्न	२	४	१२७
निन्निडी	२	४	४३	तिष्यफला	२	४	५७	तुन्नवाय	२	१०	६
निन्निडीक	२	९	३५	तीक्ष्ण	१	३	३५	तुमुल	२	८	१०६
तिन्दुक	२	४	३८	"	२	९	९८	तुम्बी	२	४	१५६
तिन्दुकी	३	५	८	"	३	३	५३	तुरग	२	८	४३
तिमि	१	१०	१९	तीक्ष्णगन्धक	२	४	३१	तुरङ्ग	२	८	४३
तिमिङ्गिल	१	१०	२०	तीर	१	१०	७	तुरङ्गम	२	८	४३
तिमिन	३	१	१०५	तीर्थ	३	३	८६	तुरङ्गवदन	१	१	७१
तिमिर	१	८	३	तीव्र	१	१	६७	तुरायण	३	२	२
तिरस्	३	३	२५७	तीव्रवेदना	१	९	३	तुरासाह्	१	१	४४
"	३	४	६	तु	३	३	२४२	तुरुष्क	२	६	१२८
तिरस्करिणी	२	६	१२०	"	३	४	५	तुला	२	९	८७
तिरस्क्रिया	१	७	२२	"	३	४	१५	तुलाकोटि	२	६	१०९
तिरीट	२	४	३३	तुङ्ग	२	४	२५	तुल्य	२	१०	३६
"	३	५	३०	"	३	१	७०	तुल्यपान	२	९	५५
तिरोधान	१	३	१३	तुङ्गी	२	४	१३९	तुवर	१	५	९
तिरोहित	२	८	११२	तुच्छ	३	१	५६	तुवरिका	२	४	१३१
तिर्यच्	३	१	३४	तुण्ड	२	६	८९				
तिलक	२	४	४०	तुण्डिकेरी	२	४	११६				

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
तुष	२	४	५८	तृप्ति	२	९	५६	त्यक्त	३	१	१०७
"	२	९	२२	तृष्	१	७	२७	त्याग	२	७	२९
तुषार	१	३	१८	"	२	९	५५	त्रपा	१	७	२३
"	१	३	१९	तृष्णक्	३	१	२२	त्रपु	२	९	१०५
तुषित	१	१	१०	तृष्णा	३	१	५१	त्रयो	१	६	३
तुष्टिन	१	३	१८	तेजन	२	४	१६१	"	१	६	३
तूण	२	८	८८	तेजनक	२	४	१६२	त्रस	३	१	७४
तूणी	२	८	८९	तेजनी	२	४	८३	त्रसर	३	२	२४
तूणीर	२	८	८८	तेजस्	२	६	६२	त्रस्त	३	१	२६
तूद	२	४	४१	"	३	३	२३४	त्राण	३	१	१०६
तूबर	३	३	१६५	तेजित	३	१	९१	"	३	२	८
तूर्ण	१	१	६५	तेम	३	२	२९	त्रात	३	१	१०६
तूल	२	४	४२	तेमन	२	९	४४	त्रायन्ती	२	४	१५०
"	२	९	१०६	तैत्तिर	२	५	४३	त्रायमाणा	२	४	१५०
तूलिका	२	१०	३२	तैलपणीक	२	६	१३१	त्रास	१	७	२१
तूणीशील	३	१	३९	तैलपाता	३	५	६	त्रिक	२	६	७६
तूणीक	३	१	३९	तैलपायिका	२	५	२६	त्रिककुद्	२	३	२
तूणीकाम्	३	४	९	तैलोन	२	९	७	त्रिकट्ट	२	९	१११
तूणीम्	३	४	९	तैष	१	४	१५	त्रिका	१	१०	२७
तृण	२	४	१६७	तोक	२	६	२८	त्रिकूट	२	३	२
तृणद्रुम	२	४	१७०	तोकक	२	५	१७	त्रिखट्ब	३	५	४१
तृणधान्य	२	९	२५	तोकम	२	९	१६	त्रिखट्बी	३	५	४१
तृणध्वज	२	४	१६०	तोटक	३	५	३०	त्रिगुणाकृत	२	९	९
तृणराज	२	४	१६८	तोत्र	२	८	४१	त्रितक्ष	३	५	४१
तृणशून्य	२	४	६९	"	२	९	१२	त्रिनक्षी	३	५	४१
तृप्या	२	४	१६८	तोदन	२	९	१२	त्रिदश	१	१	७
तृतीयाकृत	२	९	९	तोमर	२	८	९३	त्रिदशालय	१	१	६
तृतीया प्रकृति	२	६	३९	तोय	१	१०	४	त्रिदिव	१	१	६
तृप्त	३	१	१०३	तोयपिप्पली	२	४	१११	त्रिदिवेश	१	१	७
				तोरण	२	२	१६	त्रिपथगा	१	१०	३१
				तौर्यत्रिक	१	७	१०	त्रिपुटा	२	४	१०८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
त्रिपुटा	२	४	१२५	त्वच्	२	४	१२	दण्ड	२	८	२०
त्रिपुरान्तक	१	१	३३	"	२	६	६२	"	२	८	७३
त्रिफला	२	९	१११	त्वच	२	४	१३४	"	३	३	४२
त्रिभण्डी	२	४	१०८	त्वचिसार	२	४	१६०	दण्डधर	१	१	५९
त्रियामा	१	४	४	त्वरा	३	२	२६	दण्डनोति	१	६	५
त्रिलोचन	१	१	३२	स्वरित	१	१	६४	दण्डविष्कम्भ	२	९	७४
त्रिवर्ग	२	७	५७	"	३	८	७३	दण्डाहत	२	९	५३
"	२	८	१९	त्वष्टृ	२	१	९९	दद्रुघ्न	२	४	१४७
त्रिविक्रम	१	१	२०	त्वष्टृ	२	१०	९	दद्रुण	२	६	५९
त्रिविष्टप	१	१	६	"	३	३	३५	दद्रुरोगिन्	२	६	५९
त्रिवृत्	२	४	१०८	त्विष्	१	३	३४	दधित्थ	२	४	२१
त्रिद्विता	२	४	१०८	"	३	३	२२५	दधिफल	२	४	२१
त्रिसन्ध्य	१	४	३	त्रिषाम्पति	१	३	३०	दनुज	१	१	१२
त्रिसीत्य	२	९	९	त्सर	२	८	९०	दन्त	२	६	९१
त्रिस्रोतस्	१	१०	३१					"	३	५	१२
त्रिहृत्	२	९	९	दंश	२	५	२७	दन्तधावन	२	४	४३
त्रिहायणी	२	९	६८	दंशन	२	८	६४	दन्तभाग	२	८	४०
बुटि	२	४	१२५	दंशित	२	८	६५	दन्तशठ	२	४	२१
"	३	१	६२	दंशी	२	५	२७	"	२	४	२४
"	३	३	३७	दंष्ट्रिन्	२	५	२	दन्तशठा	२	४	१४०
त्रेता	२	७	२०	दक्ष	२	१०	१९	दन्तावल	२	८	३४
"	३	३	६९	दक्षिण	३	१	८	दन्तिका	३	४	१४४
त्रोति	२	५	३६	दक्षिणस्थ	२	८	६०	दन्तिन्	२	८	३४
त्र्यम्बक	१	१	३३	दक्षिणाग्नि	२	७	१९	दन्दशूक	१	८	८
त्र्यम्बकसख	१	१	६८	दक्षिणाई	३	१	५	दभ्र	३	१	६१
अयूषण	२	९	१११	दक्षिणीय	३	१	५	दम	२	८	२१
स्वक्षोरी	२	९	१०९	दक्षिणैर्मन्	२	१०	२४	"	३	२	३
स्वक्पत्र	२	४	१३४	दक्षिण्य	३	१	५	दमथ	३	२	३
स्वक्सार	२	४	१६०	दग्ध	३	१	९९	दमित	३	१	९७
स्व	३	१	८२	दग्धिका	२	९	४९	दमूनस्	१	१	५६
				दण्ड	१	३	३१	दम्पती	२	६	३८



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दम्भ	१	७	३०	दशा	३	३	२१७	दाह	२	४	१३
दम्भोलि	१	१	४७	दस्यु	२	८	१०	"	२	४	५३
दम्भ्य	२	९	६२	"	२	१०	२४	दारुण	१	७	२०
दया	१	७	१८	दस्त्र	१	१	५१	दारुहरिद्रा	२	४	१०२
दयालु	३	१	१५	दहन	१	१	५५	दारुहस्तक	२	९	३४
दयित	३	१	५३	दाक्षायणी	१	३	२१	दार्वाघाट	२	५	१३
दर	१	७	२१	दाक्षाय्य	२	५	२१	दार्विका	२	४	११९
"	३	३	१८५	दाडिम	२	४	६४	"	२	९	१०१
दरत्त	३	५	९	"	३	५	४२	दार्वी	२	४	१०२
दरिद्र	३	१	४९	दाडिमपुष्पक	२	४	४९	दाव	३	३	२०६
दरी	२	३	६	दाण्डपाता	३	५	६	दाविक	१	१०	३६
दर्दुर	१	१०	२४	दात	३	१	१०३	दाश	१	१०	१५
दर्पक	१	१	२५	दात्यूह	२	५	२१	दाशपुर	२	४	१३१
दर्पण	२	६	१४०	दात्र	२	९	१३	दास	२	१०	१७
दर्भ	२	४	१६६	दान	२	७	२९	दासी	२	४	७४
दर्वि	२	९	३४	"	२	८	२०	दासीसुभ	३	५	२७
दर्वीकर	१	८	८	"	२	८	३७	दासेय	२	१०	१७
दर्श	१	४	८	दानव	१	१	१२	दासेर	२	१०	१७
"	२	७	४८	दानवारि	१	१	९	दिगम्बर	३	१	३९
दर्शक	२	८	६	दानशौण्ड	३	१	७	दिग्ध	२	८	८८
दर्शन	३	१	३१	दान्त	२	७	४२	"	३	१	९१
दल	२	४	१४	"	३	१	९७	दित	३	१	१०३
दव	३	३	२०६	दान्ति	३	२	३	दितिसुन	१	१	१२
दविष्ठ	३	१	६९	दापित	३	१	४०	दिधिपु	२	६	२३
दवायस्	३	१	६९	दामन्	२	९	७३	दिधिषू	२	६	२३
दशन	२	६	९१	दामनी	२	९	७३	दिन	१	४	२
दशनवासस्	२	६	९०	दामोदर	१	१	१८	दिनान्त	१	४	३
दशबल	१	१	१४	दायाद	३	३	८९	दिव्	१	१	६
दशमिन्	२	६	४३	दारा	२	६	६	"	१	२	१
दशमीस्थ	३	३	८७	दारद	१	८	११	दिवस	१	४	२
दशा	२	६	११४	दारित	३	१	१००	दिवस्पति	१	१	४२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दिवा	३	४	६	दुःपमम्	३	४	१३	दुःपविनी	२	४	११४
दिवाकर	१	३	२८	दुःस्पर्श	२	४	९१	दुःख	२	६	२८
दिवाकीर्ति	२	१०	१०	दुःस्पर्शा	२	४	९३	दुःख	२	८	१६
"	२	१०	१९	दुकूल	२	६	११६	दुःख	२	६	१७
दिविषद्	१	१	८	दुग्ध	२	९	७१	दुःख	२	८	१६
दिवौकस	१	१	७	दुग्धिका	२	४	१००	दुःख	३	१	१०२
"	३	३	२२७	दुन्दुभि	१	७	६	दुःख	३	१	६८
दिव्योपपादुक	३	१	५०	"	३	३	१३३	दुःख	२	७	६
दिशु	१	३	१	दुरध्व	२	९	१३	दुःख	२	४	१५८
"	३	५	३	दुरालभा	२	४	९२	दुःख	२	६	६७
दिश्य	१	३	१	दुरित	१	४	२३	दुःख	२	६	१२०
दिष्ट	१	४	१	दुरोदर	३	३	१०२	दुःख	२	८	४२
"	१	४	२८	दुर्गा	३	८	१०	दुःख	१	१	६७
"	३	३	३५	दुर्गत	३	१	४९	"	३	१	७६
दिष्टान्त	२	८	११६	दुर्गति	१	९	१	"	३	३	४५
दिष्टया	३	४	१०	दुर्गन्ध	१	५	१२	दुःखमन्त्रि	३	१	७५
दीक्षित	२	७	८	दुर्गसञ्चर	३	२	२५	दुःख	३	५	१९
दीदिवि	२	९	४८	दुर्गा	१	१	३७	दुःख	३	१	८६
दीधिति	१	३	३३	दुर्जन	३	१	४७	दुःख	२	६	९३
दीन	३	१	४९	दुर्दिन	१	३	१३	"	३	३	२१७
दीप	२	६	१३८	दुर्दुम	२	४	१४८	दुःख	२	३	४
दीपक	३	३	११	दुर्नामक	२	६	७४	दुष्ट	२	८	३०
दीप्ति	१	३	३४	दुर्नामन्	१	१०	२५	दुष्टरजस्	२	६	८
दीप्य	२	४	१११	दुर्बल	२	६	४३	दुष्टान्त	३	३	६२
दीर्घ	३	१	६९	दुर्मनस्	३	१	८	दुष्टि	२	६	९३
दीर्घकोशिका	१	१०	२५	दुर्मन्त्र	३	१	३६	"	३	३	३८
दीर्घदंशिन्	२	७	६	दुर्वर्ण	२	९	९६	देव	१	१	७
दीर्घपृष्ठ	१	८	८	दुर्विध	३	१	४९	"	१	७	१३
दीर्घवन्त	२	४	५७	दुहृद्	२	८	१०	देवकीनन्दन	१	१	२१
दीर्घसूत्र	३	१	१७	दुश्चयवन	१	१	४४	देवकुसुम	२	६	१२५
दीर्घिका	१	१०	२८	दुष्कृत	१	४	२३	देवखातक	१	१०	२७
दुःख	१	९	३	दुष्ट	३	४	१९	देवच्छन्द	२	६	१०५
"	३	५	२३	दुष्पत्र	२	४	१२८	देवजग्धक	२	४	१६६
								देवता	१	१	९

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
देवताड	२	४	६९	दोषश	२	७	५	द्रुघण	२	८	९१
देवदारु	२	४	५४	दोषा	३	४	६	द्रुग	२	५	१४
देवघञ्	३	१	३४	दोषैकद्रुग	३	१	४६	द्रुगी	३	५	९
देवन	२	१०	४५	दोस्	२	६	८०	द्रुत	१	१	६८
"	३	३	११७	"	३	५	१२	"	३	१	८९
देववल्लभ	२	४	२५	दोहद	१	७	२७	"	३	१	१००
देवभूय	२	७	५२	दोहदवनी	२	६	२१	द्रुम	२	४	५
देवमानुक	२	१	१२	द्युति	१	३	१७	द्रुमामय	२	६	१२५
देवर	२	६	३२	"	१	३	३४	द्रुमोत्पल	२	४	६०
देवल	२	१०	११	द्युमणि	१	३	३०	द्रुवय	२	९	८५
देवसभा	१	१	४८	द्युम	२	९	९०	द्रुहिण	१	१	१७
देवाजीव	२	१०	११	द्युत	२	१०	४४	द्रोण	२	९	८८
देवी	१	७	१३	द्युतकारक	२	१०	४४	"	३	३	४९
"	२	४	८३	द्युतकृत	२	१०	४३	द्रोणकाक	२	५	२१
"	२	४	१३३	द्यो	१	१	६	द्रोणक्षीरा	२	९	७२
देष्टु	२	६	३२	"	१	२	१	द्रोणदुग्धा	२	९	७२
देश	२	१	८	द्योत	१	३	३४	द्रोणी	१	१०	११
देशरूप	२	८	२४	द्रप्स	२	९	५१	"	२	४	९५
देह	२	६	७१	द्रव	१	७	३२	द्रोहचिन्तन	१	५	४
देहली	२	२	१३	"	२	८	१११	द्रौणिक	२	९	१०
दैतेय	१	१	१२	द्रवन्ती	२	४	८७	द्रन्द	२	५	३६
दैत्य	१	१	१२	द्रविण	२	८	१०२	"	३	३	२१३
दैत्यगुरु	१	३	२५	"	२	९	९०	द्रयातिग	२	७	४४
दैत्या	२	४	१२३	द्रविण	३	२	२२	द्रादशात्मन्	१	३	२८
दैत्यारि	१	५	१९	"	३	३	५२	द्रापर	१	५	३
दैर्घ्य	२	६	११४	द्रव्य	२	९	९०	"	३	३	१६२
दैव	१	४	२८	"	३	३	१५५	दार्	२	२	६
दैव ( तीर्थ )	२	७	५०	द्राक्	३	४	२	दार्	२	२	६
दैवज्ञ	२	८	१४	द्राक्षा	२	४	१०७	दारपाल	२	८	६
दैवज्ञा	२	६	२०	द्राघिष्ठ	३	१	११२	द्रास्थ	२	८	६
दैवत	१	१	९	द्राविडक	२	४	१३५	द्रास्थित	२	८	६
दैवत(अहोरात्र)	१	४	२१	द्रु	२	४	५	द्रिगुणाकृत	२	९	९
दोला	२	४	९५	"	३	५	११	द्रिज	२	५	३२
"	२	८	५३	द्रुकिलिम	२	४	५३	"	३	३	३०

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
द्विजराज	१	३	१५	धनुष्मत्	२	८	६९	धातु	३	३	६५
द्विजा	२	४	१२०	धनुस्	२	८	८३	धानु	१	१	१७
द्विजाति	२	७	४	धन्य	३	१	३	धातुपुष्पिका	२	४	१२४
द्विजिह्व	३	३	१३३	धन्वन्	२	८	५	धात्री	३	३	१७७
द्विनीया	२	६	५	"	२	८	८३	धाना	२	९	४७
द्विप	२	८	३४	धन्वयास	२	४	९१	धानुष्क	२	८	६९
द्विपाथ	२	८	२७	धन्विन्	२	८	६९	धान्य	२	९	२१
द्विरद	२	८	३४	धमन	२	४	१६२	धान्याक	२	९	३८
द्विर्रेफ	२	५	२९	धमनि	२	६	६५	धान्याम्ल	२	९	३९
द्विष्	२	८	११	धमनो	२	४	१३०	धामन्	३	३	१२४
द्विषत्	२	८	१०	"	२	६	६५	धामार्गव	२	४	८८
द्विहायनी	२	९	६८	धम्मिल्ल	२	६	९७	"	२	४	१७७
द्वीप	१	१०	८	धर	२	३	१	धाय्या	२	७	२२
द्वीपवती	१	१०	३०	धरणि	२	१	२	धारणा	२	८	२६
द्वीपिन्	२	५	१	धरा	२	१	२	धारा	२	८	४९
द्वेषण	२	८	१०	धरित्री	२	१	२	धाराधर	१	३	७
द्वेष्य	३	१	४५	धर्म	१	४	२४	धारासम्पात	१	३	११
द्वैष	२	८	१८	"	१	६	३	धार्तराष्ट्र	२	५	२४
द्वैप	२	८	५३	"	३	३	१३९	धावनी	२	४	९३
द्वैमातुर	१	१	३८	धर्मचिन्ता	१	७	२८	धिक्	३	३	२४१
द्वयष्ट	२	९	९७	धर्मध्वजिन्	२	७	५४	धिक्कृत	३	१	३९
ध				धर्मपत्तन	२	९	३६	"	३	१	९३
धट	३	५	१७	धर्मराज	१	१	१३	धिषण	१	३	२४
धत्तूर	२	४	७७	"	१	१	५८	धिषणा	१	५	१
धन	२	९	९०	"	३	३	३१	धिषण्य	३	३	१५५
धनजय	१	१	५३	धर्षिणी	२	६	१०	धी	१	५	१
धनद	१	१	६८	धव	२	६	३५	धीन्द्रिय	१	५	८
धनहरी	२	४	१२८	"	३	३	२०७	धीमत्	२	७	६
धनाधिप	१	१	६८	धवल	१	५	१३	धीमतां	२	६	१२
धनिन्	३	१	१०	धवला	२	९	६७	धीर	२	६	१२४
धनिष्ठा	१	३	२२	धातकी	२	४	१२४	"	२	७	५
धनुर्धर	२	८	६९	"	३	५	७	धीवर	१	१०	१५
धनुःपट	२	४	३८	धातु	२	३	८	वीशक्ति	३	२	२५

का.	व.	श्लो.	शब्दः	का.	व.	श्लो.	शब्दः	का.	व.	श्लो.
२	८	४	धोरण	२	८	५८	नग	३	३	१९
३	१	८७	धौरिचक	२	८	४८	नगरी	२	२	१
१	१०	३०	धौरिय	२	९	६५	नगौकस्	२	३	३३
२	९	६५	ध्याम	२	४	१६६	नक्ष	३	१	३९
२	९	६५	ध्रुव	१	३	२०	नक्षह	२	१०	४२
२	९	६५	"	२	४	८	नक्षिका	२	६	८
२	७	२३	"	३	१	७२	"	२	६	१७
२	८	५५	"	३	३	२११	नट	२	४	५६
३	१	१०७	धृगिण	१	३	३३	"	२	१०	१२
३	१	१०२	ध्रुवा	२	४	११५	नटन	१	७	१०
"	"	"	"	२	७	२५	नटी	२	४	१२९
३	३	५८	ध्वज	२	८	९९	नड	२	४	१६३
१	३	७	ध्वजिनी	२	८	७८	"	३	५	३३
१	५	१६	ध्वनि	१	६	२२	नड्या	२	४	१६८
३	२	४२	ध्वनित	३	१	९४	नड्वत्	२	१	९
२	५	१६	ध्वस्त	३	१	१०४	नड्वल	२	१	९
१	५	१६	धवाङ्ग	२	५	२०	नन	३	१	७१
१	१	३३	"	३	३	२१९	नदी	१	१०	२९
२	४	७७	धवान	१	६	२२	"	३	५	३
२	१०	४३	ध्वान्त	१	८	३	नदीमातृक	२	१	१२
३	१	४७	न	३	४	११	नदीसर्ज	२	४	४५
२	९	६५	नकुलेष्टा	२	४	११५	नधी	२	१०	३१
२	८	९८	नक्तक	२	६	११५	ननान्द	२	६	२९
१	५	१३	नक्तम्	३	४	६	ननु	३	३	२४९
३	३	७६	नक्तमाल	२	४	४०	ननु च	३	४	१४
३	१	२५	नक्र	१	१०	२१	नन्दक	१	१	२८
"	"	"	नक्षत्र	१	३	२१	नन्दन	१	१	४५
"	९	७१	नक्षत्रमाला	२	६	१०६	नन्दिशृक्ष	२	४	१२८
"	८	३६	नक्षत्रेश	१	३	१५	नन्धावर्त	२	२	१०
३	३	१५	नख	२	४	१३०	नपुंसक	२	६	३९
२	९	७२	"	२	६	८३	नप्त्री	२	६	२९
२	९	६०	"	३	५	१३	नभस्	१	२	१
१	७	१	नखर	३	५	१२	"	१	४	१६

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.
नभसङ्गम	२	५	३४	नभ्य	३	१	७७	नाद	१	६
नभस्य	१	४	१७	नष्ट	२	८	११२	नादेयी	२	४
नभस्वत्	१	१	६३	नष्टचेष्टना	१	७	३३	"	२	४
ननम्	३	४	१८	नष्टाग्नि	२	७	५३	"	२	४
नमसित	३	१	१०१	नस्तित	२	९	६३	"	२	४
नमस्कारी	२	४	१४१	नस्योत	२	९	६३	नाना	३	६
नमस्या	२	७	३४	नहि	३	४	११	"	३	६
नमस्यित	३	१	१०१	नाक	१	१	६	नानारूप	३	६
नमुचिसूदन	१	१	४३	"	३	३	२	नान्दोकर	३	६
नय	३	२	९	नाकु	२	१	१४	नान्दीवादिन्	३	६
नयन	२	६	९३	नाकुली	२	४	११४	नापित	२	१८
नर	२	६	१	नाग	१	८	४	नाभि	२	८
नरक	१	९	१	"	२	८	३४	"	३	६
नरवाहन	१	१	६९	"	२	९	१०५	"	३	६
नर्तकी	१	७	८	"	३	१	५९	नाभी	३	६
नर्तन	१	७	१०	"	३	३	१९	नाम	३	६
नर्मदा	१	१०	३२	नागकेसर	२	४	६५	नामधेय	१	६
नर्मन्	१	७	३२	नागजिह्विका	२	९	१०८	नामन्	१	६
नलकूबर	१	१	७०	नागबला	२	४	११७	नाय	३	६
नलद	२	४	१६४	नागर	२	९	३८	नायक	३	६
नलमीन	१	१०	१८	"	२	३	१८८	नारक	१	६
नलिन	१	१०	३९	नागरङ्ग	२	४	३८	नाराच	२	६
नलिनी	१	१०	३९	नागलोक	१	८	१	नाराची	२	१८
नली	२	४	१२९	नागवल्ली	२	४	१२७	नारायण	१	६
नल्व	२	१	१८	नागसम्भव	२	९	१०५	नारायणी	२	६
नव	३	१	७७	नागान्तक	१	१	९	नारी	२	६
नवदल	१	१०	४३	नाट्य	१	७	१०	नाल	१	१८
नवनीत	२	९	५२	नाडिन्धम	२	१०	८	"	२	६
नवमालिका	२	४	७२	नाडी	२	६	६५	नालिका	२	६
नवसूतिका	२	९	७१	"	२	९	२२	नालिकेर	२	६
नवाम्बर	२	६	११२	"	३	३	४२	नाविक	१	६
नवीन	३	१	७७	नाडीव्रण	२	६	५४	नाव्य	१	१८
नवीद्धृत	२	९	५२	नाथवत्	३	१	१६	नाश	२	६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
नासत्य	१	१	५१	निकृष्ट	३	१	५४	निद्रालु	३	१	३३
नासा	२	२	१३	निकेतन	२	२	४	निधन	२	८	११६
"	२	६	८९	निकोचक	२	४	२९	"	३	३	१२३
नासिका	२	६	८९	निकण	१	६	२४	निधि	१	१	७१
नासिकता	१	५	४	निक्राण	१	६	२४	निधुवन	२	७	५७
निःशलाक	३	८	२२	निखिल	३	१	६५	निध्यान	३	१	३१
निःशेष	३	१	६५	निगड	२	८	४१	निनद	१	६	२२
निःशोध्य	३	१	५६	निगद	३	२	१२	निनाद	१	६	२२
निःश्रेणि	२	२	१८	निगम	२	२	१	निन्दा	१	३	१३
निःश्रेयस	१	५	६	"	३	३	१४०	निप	२	९	३२
निःषमम्	३	४	१३	निगाद	३	१	१२	निपठ	३	२	२९
निःसरण	२	२	१९	निगार	३	२	३७	निपाठ	३	२	२९
निःस्व	३	१	४९	निगाल	२	८	४८	निपातन	३	२	२७
निकट	३	१	६६	निग्रह	३	२	१३	निपान	१	१०	२६
निकर	२	५	३९	निव	३	२	३६	निपुण	३	१	४
निकर्षण	२	२	१९	निघास	२	९	५६	निबन्ध	२	६	५५
निकष	२	१०	३२	निघ्न	३	१	१६	निवर्हण	२	८	११३
निकषा	३	४	७	निचुल	२	४	६१	निभ	२	१०	३७
"	३	४	१९	निचोल	२	६	११६	निभृत	३	१	२५
निकषात्मज	१	१	६०	निज	३	३	३२	निमय	२	९	८०
निकाम	२	९	५७	नितम्ब	२	६	७४	निमित्त	३	३	७३
निकाय	२	५	४२	नितम्बिनी	२	६	३	निमेष	१	४	११
निकाव्य	२	२	५	नितान्त	१	१	६७	निघ्न	१	१०	१५
निकार	३	२	१५	नित्य	१	१	६६	निघ्नगा	१	१०	३०
"	३	२	३६	"	३	१	७२	निम्ब	२	४	६२
निकारण	२	८	११२	निद्राष	१	४	१९	निम्बतरु	२	४	२६
निकुञ्चक	२	९	८८	"	१	७	३३	नियति	१	४	२८
निकुञ्ज	२	३	८	निदान	१	४	२८	नियन्तृ	२	८	५९
निकुम्भ	२	४	१४४	निदिग्ध	३	१	८९	नियम	१	५	५
निकुरम्ब	२	५	४०	निदिग्धिका	२	४	९३	"	२	७	३७
निकृत	३	१	४१	निदेश	२	८	२५	"	२	७	४९
"	३	१	४६	निद्रा	१	७	३६	नियामक	१	१०	१२
निकृति	१	७	३०	निद्राण	३	१	३३	नियुत	३	५	२४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
नियुद्ध	२	८	१०६	निर्याण	२	८	३८	निशान्त	२	२	५
नियोज्य	२	१०	१७	निर्यातन	३	३	१२०	निशापति	१	३	१४
निर	३	३	२५३	निर्वपण	२	७	३०	निशित	३	१	९१
निरन्तर	३	१	६६	निर्वर्णन	३	२	३१	निशीथ	१	४	६
निरय	१	९	१	निर्वहण	१	७	१५	निशीथनी	१	४	४
निरगल	३	१	८३	निर्वाण	१	५	६	निश्वय	१	५	३
निरर्थक	३	१	८१	"	३	१	९६	निश्रेणा	२	२	१८
निरवग्रह	३	१	१५	निर्वात	३	१	९६	निषक	२	८	८८
निरसन	३	१	३१	निर्वाद	१	६	१३	निषक्तिन्	२	८	६९
निरस्व	१	६	२०	"	३	३	९०	निषद्या	२	२	२
"	२	८	८८	निर्वापण	२	८	११४	निषदूर	१	१०	९
"	३	१	४०	निर्वाय	३	१	१३	निषध	२	३	३
निराकरिष्णु	३	१	३०	निर्वासन	२	८	११३	निषाद	१	७	१
निराकृत	३	१	४१	निर्वृत्त	३	१	१००	"	२	१०	२०
निराकृति	२	७	५३	निर्वेश	२	१०	३८	निषादिन्	२	८	५९
"	३	२	३१	"	३	२	२०	निषूदन	१	८	११३
निरामय	२	६	५७	"	३	३	२१५	निष्क	३	३	१४
निरीश	२	९	१३	निर्वर्धन	१	८	२	निष्कला	२	६	२१
निर्कृति	१	९	२	निर्व्यूह	३	३	२३७	निष्कासित	३	१	३९
निर्गुण्डी	२	४	६८	निर्हार	३	२	१७	निष्कुट	२	४	१
"	२	४	७०	निर्हारिन्	१	५	११	निष्कुटि	२	४	१२५
निर्ग्रन्थन	२	८	११३	निर्हाद	१	६	२३	निष्कुह	२	४	१३
निर्घोष	१	६	२३	निलय	२	२	५	निष्क्रम	३	२	२५
निर्जर	१	१	७	निवह	२	५	३९	निष्ठा	१	७	१५
निर्जर	२	३	५	निवात	३	३	८४	"	३	३	४१
निर्णय	१	५	३	निवाप	२	७	३१	निष्ठान	२	९	४४
निर्णित	३	१	५६	निवीन	२	६	११३	निष्ठीवन	३	२	३८
निर्णैजक	२	१०	१०	"	२	७	५०	निष्ठुर	१	६	१९
निर्देश	२	८	२५	निवृत्त	३	१	८८	"	३	१	७६
निर्भर	१	१	६६	निवेश	२	८	३३	निष्ठेव	३	२	३७
निर्मद	२	८	३६	निशा	१	४	४	निष्ठेवन	३	२	३८
निर्मुक्त	१	८	६	"	३	५	३	निष्ठयत्	३	१	८७
निर्मोक	१	८	९	निशाख्या	२	९	४१	निष्ठयति	३	२	३८



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
निष्ठात			४	नीललोहित	१	१	३३	नेत्र	२	६	९३
निष्पन्न	३			नीला	२	५	२६	"	३	३	१८०
निष्पन्न	३	१	१००	नीलाम्बर	१	१	२४	नेत्राम्बु	२	६	९३
निष्पाव	३	२	२४	नीलाम्बुजन्मन्	१	१०	३७	नेदिष्ठ	३	१	६८
निष्प्रभ	३	१	१००	नीलिका	२	४	७०	नेपथ्य	२	६	९१
निष्प्रवाणि	३	३	११२	नीलिनी	२	४	९५	नेमि	२	८	७६
निसर्ग	३	३	३८	नीली	२	४	७४	नेमी	२	४	२६
निसृष्ट	३	१	२८	"	२	४	९४	नैकभेद	३	१	८३
निस्तल	३	१	३९	नीवाक	३	२	२३	नैगम	२	९	७८
निस्तर्हण	२	८	११४	नीवार	२	९	२५	"	३	३	१४०
निर्लिश	२	८	८९	नीवी	२	९	८०	नैचिकी	२	९	६७
निस्त्राव	२	१	११	"	३	३	२१२	नैपाली	२	९	१०८
निस्वन	१	६	२३	नीवृत्त	२	१	८	नैमेय	२	९	८०
निस्वान	३	३	२३	नीशार	२	६	११८	नैयग्रोध	२	४	१८
निहनन	२	८	११४	नीहार	१	३	१८	नैर्ऋत	१	१	६०
निहाका	१	३	२२	नु	३	३	२४८	"	१	३	२
निर्दिसन	२	८	११३	नुति	१	६	११	नैष्किक	२	८	७
निहीन	०	१०	१६	नुत्त	३	१	८७	नैर्लिशिक	२	८	७०
निहव	१	६	१७	नुन्न	३	१	८७	नो	३	४	११
"	३	३	२०९	नूतन	३	१	७७	नौ	१	१०	१०
नीकाश	२	१०	३७	नूल	३	१	७८	नौकादण्ड	१	१०	१३
नीच	०	१०	१६	नूनम्	३	३	२५१	न्यक्ष	३	३	२२५
"	३	१	७०	"	३	४	१६	न्यग्रोध	२	४	३२
नीचैस्	३	४	१७	नूपुर	१	६	१९	"	३	३	९६
नीड	२	५	३७	नृ	२	६	१	न्यग्रोधी	२	४	८७
नीडोद्भव	२	५	३४	नृत्य	१	७	१०	न्यच्	३	१	७०
नीध्र	२	२	१४	नृप	२	८	१	न्यङ्कु	२	५	१०
नीप	२	४	४२	नृपलक्ष्मन्	२	८	३२	न्यस्त	३	१	८८
नीर	१	१०	४	नृपसभ	३	५	२७	न्याद	२	९	५६
नील	१	५	१४	नृपासन	२	८	३१	न्याय	२	८	२४
नीलकण्ठ	२	५	३०	नृशंस	३	१	४७	न्याय्य	२	८	२५
"	३	३	४०	नृसेन	३	५	४०	न्यास	२	९	८१
नीलङ्गु	२	५	१३	नेष्ट	३	१	११	न्युञ्ज	२	६	६१

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
न्यूङ्	३	५	१७	पञ्चना	२	८	११६	पणित	३	१	१०९
न्यून	३	३	१२८	पञ्चदशी	१	४	७	पणितव्य	२	९	८२
प				पञ्चम	१	७	१	पण्ड	२	६	३९
पक्ष	२	२	२०	पञ्चशर	१	१	२५	पण्डित	२	७	५
पक्ष	३	१	९१	पञ्चशाख	२	६	८१	पण्य	२	९	८२
"	३	१	९६	पञ्चाङ्गुल	२	४	५१	पण्यवाधिका	२	२	२
पक्ष	१	४	१२	पञ्चास्य	२	५	१	पण्यवा	२	४	१५०
"	२	५	३६	पञ्जिका	३	५	७	पण्यजीव	२	९	७८
"	१	६	९८	पट	२	६	११६	पतग	२	५	३३
"	२	८	८७	पटच्चर	२	६	११५	पतङ्ग	२	५	२८
"	३	३	२२०	पटल	२	२	१४	"	३	३	१९
पक्षक	२	२	१४	"	३	३	२०२	पतङ्गिका	२	५	२७
पक्षति	१	४	१	पटलप्रान्त	२	२	१४	पतत्	२	५	३३
"	२	५	३६	पटवासक	२	६	१३९	पतत्त्र	२	५	३६
"	३	३	७२	पटह	१	७	६	पतत्त्रि	२	५	३३
पक्षदार	२	२	१४	"	२	८	१०८	पतत्त्रिन्	२	५	३३
पक्षभाग	२	८	४०	पट्ट	२	४	१५५	पतद्बह	२	६	१३९
पक्षमूल	२	५	३६	"	२	१०	१९	"	३	५	२१
पक्षान्त	१	४	७	"	३	३	४०	पतयालु	३	१	२७
पक्षिन्	२	५	३२	पट्टपर्णी	२	४	१३८	पताका	२	८	९९
पक्षिणी	१	४	५	पटोल	२	४	१५५	पताकिन्	२	८	७१
पक्षमन्	३	३	१२१	पटोलिका	२	४	११८	पति	२	६	३५
पक्ष्म	१	४	२३	पट्ट	३	५	१७	"	३	१	१०
"	१	१०	९	पट्टिकारथ	२	४	४१	पतिवरा	२	६	७
पक्षिल	२	१	१०	पट्टिन्	२	१	४१	पतिवली	२	६	१२
पक्षेह	१	१०	४०	पट्टिश	३	५	२०	पतिव्रता	२	६	६
पक्षि	२	४	४	पण	२	९	८८	पतन	२	२	१
"	२	९	८४	"	२	१०	३८	पत्ति	२	८	६६
"	३	३	७२	"	२	१०	४४	"	२	८	८०
पक्षु	२	६	४८	"	२	१०	४५	"	३	३	७२
पचम्पचा	२	४	१०२	"	३	३	४६	पत्नी	२	६	५
पचा	३	२	८	पणव	१	७	८	पत्र	२	४	१४
पञ्चजन	२	६	१	पणायित	३	१	१०९	"	२	५	३६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पञ्च	२	८	५८	पञ्चराग	२	९	९२	परम्पराक	२	७	२६
"	३	३	१७९	पञ्चा	१	१	२७	परवत्	३	१	१६
पञ्चरश्मि	२	१०	३२	"	२	४	८९	परशु	२	८	९२
पञ्चपाश्या	२	६	१०३	"	२	४	१४६	परश्वध	२	८	९२
पञ्चरथ	२	५	३३	पञ्चाकर	१	१०	२८	परश्वस्	३	४	२२
पञ्चलेखा	२	६	१२२	पञ्चाट	२	४	१४७	पराक्रम	२	८	१०२
पञ्चाङ्ग	२	६	१३२	पञ्चालया	१	१	२७	"	३	३	१३८
"	२	९	१११	पञ्चिन्	२	८	३५	पराग	२	४	१७
पञ्चाङ्गुलि	२	६	१२२	पञ्चिनी	१	१०	३९	"	३	३	२१
पञ्चिन्	२	५	१५	पद्य	३	५	३०	पराङ्मुख	३	१	३३
"	२	५	३३	पद्या	२	१	१५	पराचित	२	१०	१८
"	२	८	८७	पनस	२	४	६१	परावीन	३	१	३३
"	३	३	१०६	पनायित	३	१	१०९	पराजय	२	८	१११
पञ्चोर्ण	२	४	५६	पनित	३	१	१०९	पराजित	२	८	११२
"	२	६	११३	पन्न	३	१	१०४	परावीन	३	१	१६
पथिक	२	८	१७	पन्नग	१	८	८	परान्न	३	१	२०
पथिन्	२	१	१५	पन्नगाशन	१	१	२९	पराभूत	२	८	११२
पथ्या	२	४	५९	पयस्	१	१०	३	परारि	३	४	२०
पद्	२	६	७१	"	२	९	५१	परार्थ	३	१	५८
पद्	३	३	९३	"	३	३	२३३	परासन	२	८	११३
पदग	२	८	६६	पयस्थ	२	९	५१	पराशु	२	८	१७
पदवी	२	१	१५	पयोधर	३	३	१६४	परास्कन्दिन्	२	१०	२४
पदाजि	२	८	६६	पर	३	८	११	परिकर	३	३	१६६
पदाति	२	८	६६	"	३	३	१९१	परिकर्मन्	२	६	१२१
पदिक	२	८	६७	परःशत	३	१	६४	परिक्रम	३	२	१६
पद्ग	२	८	६७	परजात	२	१०	१८	परिक्रिया	३	२	२०
पङ्कति	२	१	१५	परतन्त्र	३	१	१६	परिक्षित	३	१	८८
पद्य	१	१	७१	परपिण्डाद	३	१	२०	परिखा	१	१०	२३
"	१	१०	३९	परभूत	२	५	२०	परिग्रह	३	३	२३८
पद्यक	२	८	३९	परभूत	२	५	१९	परिव	२	८	९१
पद्यचारिणी	२	४	१४६	परस्मन्	३	४	१२	"	३	३	२७
पद्यनाभ	१	१	२०	परमात्र	२	७	२४	परिधासन	२	८	९१
पद्यपत्र	२	४	१४५	परमेष्ठिन्	१	१	१६	परिचय	३	२	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
परिचर	२	८	६२	परिवृत्ति	२	७	५६	परैतराज्	१	१	५८
परिचर्या	२	७	३५	परिवृद्ध	३	१	११	परैयवि	३	४	२१
परिचाराय	२	७	२०	परिवेत्तु	२	७	५५	परैष्टुका	२	९	७०
परिचारक	२	१०	१७	परिवेष	१	३	३२	परैधित	२	१०	१८
परिणत	३	१	९६	परिव्याघ	२	४	३०	परोष्णी	२	५	२६
परिणय	२	७	५६	"	२	४	६०	पर्कटी	२	४	३२
परिणाम	३	२	१५	परिवाज्	२	७	४१	पर्जनी	२	४	१०२
परिणाय	२	१०	४५	परिषद्	२	७	१५	पर्जन्य	३	३	१४७
परिणाह	२	६	११४	परिष्कार	२	६	१०१	पर्ण	२	४	१४
परितस्	३	४	१३	परिष्कृत	२	६	१००	"	२	४	२९
परित्राण	३	२	५	परिष्वङ्ग	३	२	३०	"	३	५	२२
परिदान	२	९	८०	परिसर	२	१	१४	पर्णशाला	२	२	६
परिदेवन	१	६	१६	परिसर्प	३	२	२०	पर्णास	२	४	७९
परिधान	२	६	११७	परिसर्पा	३	२	२१	पर्यङ्क	२	६	१३८
परिधि	१	३	३२	परिस्कन्द	२	१०	१८	पर्यटन	२	७	३५
"	३	३	९७	परिस्तोम	२	८	४२	पर्यन्तभू	२	१	१४
परिधिस्थ	२	८	६२	परिस्त्यन्द	२	६	१३७	पर्यय	२	७	३७
परिपण	२	९	८०	परिस्तुत्	२	१०	३९	"	३	२	३३
परिपन्थिन्	२	८	११	परिस्तुता	२	१०	३९	पर्ययस्था	३	२	२१
परिपाटी	२	७	३६	परीक्षक	३	१	७	पर्याप्त	२	९	५७
परिपूर्णता	२	६	१३७	परीभाव	१	७	२२	पर्याप्ति	३	२	५
परिपेलव	२	४	१३१	परीवर्त	२	९	८०	पर्याय	२	७	३७
परिप्लव	३	१	७५	परीवाद	१	६	१३	"	३	३	१४७
परिबर्ह	३	३	२३९	परीवाप	३	३	१२९	पर्युद्बन्धन	२	९	३
परिभव	१	७	२२	परीवार	३	३	१६९	पर्येषणा	२	७	३२
परिभाषण	१	६	१४	परीवाह	१	१०	१०	पर्वत	२	३	१
परिभूत	३	१	१०६	परीष्टि	२	७	३२	पर्वन्	१	४	७
परिमल	१	५	९	परोसार	३	२	२१	"	२	४	१६२
"	३	२	१३	परीहास	१	७	३२	"	३	३	१२१
परिरम्भ	३	२	३०	परुत्	३	४	२०	पर्शुका	२	६	६९
परिवर्जन	२	८	११४	परुष	१	६	१९	पल	२	९	८६
परिवादिनी	१	७	३	परुस्	२	४	१६२	"	३	३	२०२
परिवापित	३	१	८५	परेत	२	८	११७	पलगण्ड	२	१०	६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पलङ्कषा	२	४	९८	"	३	२	८	वातुक	३	१	२७
पलल	२	६	६३	पाकल	२	४	१२६	पात्र	१	१०	७
पलाण्डु	२	४	१४७	पाकशासन	१	१	४१	"	२	७	२४
पलाल	२	९	२२	पाकशासनि	१	१	४६	"	२	९	३३
पलाश	२	४	१४	पाकस्थान	२	९	२७	"	३	३	१७९
"	२	४	२९	पावथ	२	९	४२	पात्री	३	५	४२
"	२	४	१५४	"	२	९	१०९	पात्रीव	३	५	३५
पलाशिन्	२	४	५	पाखण्ड	२	७	४५	पाथस्	१	१०	४
पलिवनी	२	६	१२	पाञ्चजन्य	१	१	२८	पाद	२	३	७
पलित	२	६	४१	पाञ्चालिका	२	१०	२९	"	२	६	७१
पल्यङ्ग	२	६	१३८	पाट्	३	४	७	"	२	९	८९
पल्व	२	४	१४	पाटच्चर	२	१०	२५	"	३	३	८९
पल्वल	१	१०	२८	पाटल	१	५	१५	पादकटक	२	६	११०
पव	३	३	२४	"	२	९	१५	पादग्रहण	२	७	४०
पवन	१	१	६३	पाटला	२	४	५४	पादप	२	४	५
"	३	२	२४	पाटलि	२	४	५४	पादबन्धन	२	९	५८
पवनाशन	१	८	८	पाठ	२	७	१४	पादस्फोट	२	६	५२
पवमान	१	१	६३	"	३	२	२९	पादाम्र	२	६	७१
पवि	१	१	४७	पाठा	२	४	८४	पादाङ्गद	२	६	१०९
पवित्र	२	४	१६६	पाठिन्	२	४	८०	पादात	२	८	६७
"	२	७	४५	पाठीन	१	१०	१८	पादातिक	२	८	६६
"	३	१	५५	पाणि	२	६	८१	पादुका	२	१०	३०
पवित्रक	१	१०	१६	पाणिगृहीती	२	६	५	पादू	२	१०	३०
पशुजाति	२	५	११	पाणिघ	२	१०	१३	पादूकृत	३	१०	७
पशुपति	१	१	३०	पाणिपीडन	२	७	५६	पाथ	२	७	३३
पञ्जु	२	९	७३	पाणिवाद	२	१०	१३	पान	२	१०	४०
पश्चात्	३	३	२४३	पाण्डर	१	५	१२	पानगोष्ठिका	२	१०	४२
पश्चात्ताप	१	७	२५	पाण्डु	१	५	१३	पानपात्र	२	१०	४३
पश्चिम	३	१	८१	पाण्डुकम्बलिन्	२	८	५४	पानभाजन	२	९	३२
पडौही	२	९	७०	पाण्डुर	१	५	१३	पानीय	१	१०	४
पांशु	२	८	९८	पातक	३	५	३३	पानीयशालिका	२	२	७
पांशुला	२	६	११	पाताक	१	८	१	पान्थ	२	८	१७
पाक	२	५	३८	"	३	३	२०३	पाप	१	४	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पाप	३	१	४७	परिहार्य	२	६	१०७	पिचण्ड	३	५	१८
पापवेली	२	४	८५	पारो	३	५	१०	पिचण्डिल	२	६	४४
पाप्मन्	१	४	२३	पाकथ्य	१	६	१४	पितु	२	९	१०६
पाप्मन्	२	६	५३	पार्थिव	२	८	१	पितुमरद	२	५	६२
पाप्मन	२	६	५८	पार्वती	१	१	३७	पितुल	२	४	४०
पाप्मर	२	१०	१५	पार्वतीनन्दन	१	१	३४	पिचट	२	९	१०५
पाप्मा	२	६	५३	पार्थ	२	६	७९	पिचल	२	५	३१
पायस	२	६	१२८	"	३	२	४१	"	३	५	३०
"	२	७	२४	पार्थिव	२	६	७२	पिच्छा	२	४	४७
पायु	२	६	७३	पार्थिव्याइ	२	८	१०	"	३	५	९
पाय्य	२	९	८५	पालघ्न	२	४	१६७	पिच्छिल	२	९	४३
पाय	१	१०	७	पालङ्का	२	४	१२१	पिच्छिला	२	४	४३
पारद	२	९	९९	पालाश	१	५	१४	"	२	४	६२
पारशव	३	३	२११	पालि	२	८	९३	पिञ्ज	२	८	११५
पारश्वधिक	२	८	७०	"	३	३	११८	पिञ्जर	२	९	१०३
पारसीक	२	८	४५	पालिन्दी	२	४	१०८	"	३	५	३१
पारश्वेणय	२	६	२४	पाल्वा	३	५	५	पिञ्जल	२	८	९९
पारायण	३	२	२	पावक	१	१	५४	पिट	२	९	२६
पारायत	२	५	१४	पाश	२	६	९८	पिटक	२	६	५३
पारावताङ्गि	२	४	१५०	पाशक	२	१०	४५	"	२	१०	२९
पारावार	१	१०	१	प.शिन्	१	१	६१	पिठर	२	९	३०
"	३	५	३५	पाशुपत	२	४	८१	"	३	३	१८८
पाराशरिन्	२	७	४१	पाशुपाख्य	२	९	२	पिण्ड	२	९	९८
पारिकाङ्किन्	२	७	४२	पाश्या	३	२	४२	"	२	९	१०४
पारिजातक	१	१	५०	पाश्चात्य	३	१	८१	"	३	५	१८
"	२	४	२६	पाषाण	२	२	४	पिण्डक	२	६	१२८
पारितथ्या	२	६	१०३	पाषाणदारण	२	१०	३४	पिण्डिका	२	८	५६
पारिप्लव	३	१	७५	पिक	२	५	१९	पिण्डीतक	२	४	५३
पारिभद्र	२	४	२६	पिङ्ग	१	५	१६	पिण्याक	३	३	९
पारिभद्रक	२	४	५३	पिङ्गल	१	३	३१	"	३	५	३२
पारिभाष्य	२	४	१२६	"	१	५	१६	पितामह	१	१	१६
पारियात्रक	२	३	३	पिङ्गला	१	३	४	"	२	६	३३
पारिषद	१	१	३५	पिचण्ड	२	६	७७	पितृ	२	६	२८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पितृ	२	६	३७	पिष्ठान	२	६	१३९	पुटभेद	१	१०	७
पितृदान	२	७	३१	पीठ	२	६	१३८	पुटभेदन	२	१	१९
पितृपति	१	१	५८	पीडन	२	८	१०९	पुटी	३	५	४२
"	१	३	२	पीडा	१	९	३	पुण्डरीक	१	३	३
पितृपितृ	२	६	३३	पीत	१	५	१४	"	१	१०	४१
पितृपसू	१	४	३	पीतडाक	२	४	५३	"	३	३	११
पितृवन	२	८	११८	पीतद्रु	२	४	६०	पुण्डरीकाक्ष	१	१	१९
पितृव्य	२	६	३१	"	२	४	१०१	पुण्ड्र	२	४	१६३
पितृसंनिभ	३	१	१३	पीतन	२	४	२७	पुण्ड्रक	२	४	७२
पित्त	२	६	६२	"	२	६	१२४	पुण्य	१	४	२४
पित्र्य ( तीर्थ )	२	७	५१	"	२	९	१०३	"	३	३	१६०
पित्सव	२	५	३४	पीतसारक	२	४	४३	पुण्यक	२	७	३७
पिधान	१	३	१३	पीता	२	९	४१	पुण्यजन	१	१	६०
पिनद्ध	२	८	६५	पीताम्बर	१	१	१९	पुण्यजनेश्वर	१	१	६९
पिनाक	१	१	३५	पीन	३	१	६१	पुण्यभूमि	२	१	८
"	३	३	१४	पीनस	२	६	५१	पुण्यवत्	३	१	३
पिनाकिन्	१	१	३१	पीनोष्णी	२	९	७१	पुत्तिका	२	५	२७
पिपासा	२	९	५५	पीयूष	१	१	४८	पुत्र	२	६	२७
पिपीलिका	३	५	८	"	२	९	५४	"	२	६	३७
पिप्पल	२	४	२०	पीलु	२	४	२८	पुत्रिका	२	१०	२९
पिप्पली	२	४	९७	"	३	३	१९४	पुत्रौ	२	६	३७
पिप्पलीमूल	२	९	११०	पीलुपर्णी	२	४	८४	पुद्गल	३	५	२०
पिप्लु	२	६	४९	"	२	४	१३९	पुनःपुनर्	३	४	१
पिल	२	६	६०	पावन्	३	१	६१	पुनर्	३	३	२५३
पिशङ्ग	१	५	१६	पीवर	३	१	६१	"	३	४	१५
पिशच	१	१	११	पीवरस्तनी	२	९	७१	"	३	४	१९
पिशित	२	६	६३	पुंश्वली	२	६	१०	पुननंवा	२	४	१४९
पिशुन	२	६	१२४	पुंस्	२	६	१	पुनर्मव	२	६	८३
"	३	१	४७	पुक्कस	२	१०	२०	पुनर्भू	२	६	२३
"	३	३	१२७	पुक्क	३	५	१७	पुन्नाग	२	४	२५
पिशुना	२	४	१३३	पुक्कव	३	१	५९	पुर्	२	२	१
पिष्टक	२	९	४८	पुच्छ	२	८	५०	पुर्	२	४	३४
पिष्टपचन	२	९	३२	पुञ्ज	२	५	४२	"	३	३	१८४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पुरःसर	२	८	७२	पुलिन्द	२	१०	२०	पूज्य	३	१	५
पुरतस्	३	४	७	पुलोमजा	१	१	४५	"	३	३	१५१
पुरद्वार	२	३	१६	पुपित	३	१	९७	पूत	२	७	४५
पुरन्दर	१	१	४१	पुष्कर	१	२	१	"	२	९	२३
पुरन्ध्री	२	६	६	"	१	१०	४	"	३	१	५५
पुरस्	३	४	७	"	१	१०	४१	पूतना	२	४	५९
पुरस्कृत	३	३	८४	"	२	४	१४५	पूतिक	२	४	४८
पुरस्तात	३	३	२४६	"	३	३	१८६	पूतिकरज	२	४	४८
पुरा	३	३	२५४	पुष्कराक्ष	२	५	२२	पूतिकाष्ठ	२	४	५४
पुराण	१	६	५	पुष्करिणी	१	१०	२७	"	२	४	६०
"	३	१	७७	पुष्कल	३	१	५८	पूतिगन्धि	१	५	१३
पुरातन	३	१	७७	पुष्ट	३	१	९७	पूतिफली	२	४	९६
पुरावृत्त	१	६	४	पुष्प	२	४	१७	पूप	२	९	४८
पुरी	२	२	१	"	२	४	१३२	पूर	३	५	२०
पुरीतत्	२	६	६६	"	२	६	२१	पूरणी	२	४	४६
पुरीष	२	६	६८	पुष्पक	१	१	७०	पूरित	३	१	९८
पुरु	३	१	६३	"	२	९	१०३	पूरुष	२	६	१
पुरुष	१	४	२९	पुष्पकेतु	२	९	१०३	पूर्ण	३	२	६५
"	२	४	२५	पुष्पदन्त	१	३	४	"	३	१	९८
"	२	६	१	पुष्पधन्वन्	१	१	२६	पूर्णकुम्भ	२	८	३२
"	३	३	२१९	पुष्पफल	२	४	२१	पूर्णमा	१	४	७
पुरुषोत्तम	१	१	२१	पुष्परस	२	४	१७	पूर्ण	२	७	२८
पुरुहू	३	१	६२	पुष्पलिङ्	२	५	२९	पूर्व	३	१	८०
पुरुहूत	१	१	४१	पुष्पवती	२	६	२०	"	३	३	१३४
पुरोग	२	८	७२	पुष्पवत्	१	४	१०	पूर्वज	२	६	४३
पुरोगम	२	८	७२	पुष्पसमय	१	४	१८	पूर्वदेव	१	१	१२
पुरोगामिन्	२	८	७२	पुष्य	१	३	२२	पूर्वपर्वत	२	३	२
पुरोडाश	३	५	२१	पुष्यरथ	२	८	५१	पूर्वेधुस्	३	४	२१
पुरोधस्	२	८	५	पुस्त	२	१०	२८	पूषन्	१	३	२९
पुरोमागिन्	३	१	४६	पूग	२	४	१६९	पृक्ति	३	२	९
पुरोहित	२	८	५	"	३	३	२०	पृच्छा	१	६	१०
पुलाक	३	३	५	पूजा	२	७	३४	पृथना	२	८	७८
पुलिन	१	१०	९	पूजित	३	१	९८	"	२	८	८१



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पृथक्	३	४	३	पेटक	२	१०	२९	प्याट्	३	४	७
पृथक्पूर्ण	२	४	९२	पेटा	२	१०	२९	प्रकाण्ड	१	४	२७
पृथगात्मता	१	४	३१	पेठी	३	५	४२	"	२	४	१०
पृथग्जन	२	१०	१६	पेलव	३	१	६६	प्रकाम	२	९	५७
"	३	३	१०५	पेशल	२	१०	१९	प्रकार	३	३	१६३
पृथग्विध	३	१	९३	"	३	३	२०५	प्रकाश	१	३	३४
प्रथिवो	२	१	३	पेशिन्	२	५	३७	"	३	३	२१८
पृथु	२	९	३७	पैठर	२	९	४५	प्रकीर्णक	२	८	३१
"	२	९	४०	पैतृष्वसेय	२	६	२५	प्रकीर्य	२	४	४८
"	३	१	६०	पैतृष्वस्त्रीय	२	६	२५	प्रकृति	१	४	२९
पृथुक	२	५	३८	पैत्र (अहोरात्र)	१	४	२१	"	१	७	३७
"	२	९	४७	पोटगल	२	४	१६२	"	२	८	१८
"	३	३	३	"	२	४	१६३	"	३	३	७३
पृथुरोमन्	१	१०	१७	पोटा	२	६	१५	प्रकोष्ठ	२	६	८०
पृथुल	३	१	६०	पोत	२	५	३८	प्रक्रम	३	२	२६
पृथ्वी	२	१	३	"	३	३	६०	प्रक्रिया	२	८	३१
"	२	९	३७	पोतवणिज्	१	१०	१२	प्रक्कण	१	६	२५
"	२	२	४०	पोतबाह	१	१०	१२	प्रक्कण	१	६	२५
पृथ्वीका	२	४	११५	पोताधान	१	१०	१९	प्रक्ष्वेडन	२	८	८७
पृदाकु	१	८	६	पोत्र	३	३	१८१	प्रगण्ड	२	६	८०
पृश्नि	२	६	४८	पोत्रिन्	२	५	२	प्रगतजानुक	२	६	४७
पृश्निपणी	२	४	९२	पौण्डर्य	२	४	१२७	प्रगल्भ	३	१	२५
पृषत्	१	१०	६	पौत्री	२	६	२९	प्रगाढ	३	३	२४४
पृषत	१	१०	६	पौर	२	४	६६	प्रगुण	३	१	७२
"	२	५	१०	पौरस्त्य	३	१	८०	प्रगे	३	४	१९
पृषत्क	२	८	८६	पौरुष	२	६	८७	प्रग्रह	२	८	११९
पृषदश्च	१	१	६२	"	३	३	२२३	"	३	३	२३७
पृषदाज्य	२	७	२४	पौरोगव	२	९	२७	प्रग्राह	३	३	२३७
पृष्ठ	२	६	७८	पौर्णमास	२	७	४८	प्रग्रीव	३	५	३५
पृष्ठय	२	८	४६	पौर्णमासी	१	४	७	प्रघण	२	२	१२
"	३	२	४१	पौलस्त्य	१	१	६९	प्रघाण	२	२	१२
पेचक	२	५	१५	पौलि	२	९	४७	प्रचक्र	२	८	९६
"	३	३	६	पौष	१	४	१५	प्रचलायित	३	१	३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रचुर	३	१	६३	प्रतापस	२	४	८१	प्रतियत्न	३	३	१०७
प्रचेतस्	१	१	६१	प्रति	३	३	२४५	प्रतियातना	२	१०	३५
प्रचोदनी	२	४	९४	प्रतिकर्म	२	६	९९	प्रतिरोधिन्	२	१०	२५
प्रच्छन्नपट	२	६	११६	प्रतिकूल	३	१	८४	प्रतिवाक्य	१	६	१०
प्रच्छन्न	२	२	१४	प्रतिकृति	२	१०	३६	प्रतिविषा	२	४	९९
प्रच्छदिका	२	६	५५	प्रतिकृष्ट	३	१	५४	प्रतिशासन	३	२	३४
प्रजन	३	२	२४	प्रतिक्षिप्त	३	१	४२	प्रतिश्याय	२	६	५१
प्रजदिन्	२	८	१०३	प्रतिस्थापति	३	२	२८	प्रतिभय	३	३	१५३
प्रजा	३	३	३२	प्रतिग्रह	२	८	७९	प्रतिश्रव	१	५	५
प्रजाता	२	६	१६	प्रतिग्राह	२	६	१३९	प्रतिश्रुत्	१	६	२६
प्रजापति	१	१	१७	प्रतिषा	१	७	२६	प्रतिष्टम्भ	३	२	२७
प्रजावनी	२	६	३०	प्रतिषातन	२	८	११४	प्रतिसर	३	३	१७४
प्रज्ञा	१	५	१	प्रतिष्ठाया	२	१०	३५	प्रतिसीरा	२	६	१२०
"	२	६	१२	प्रतिष्ठागर	३	२	२८	प्रतिहत	३	१	४१
प्रज्ञान	३	३	१२२	प्रतिष्ठात	३	१	१०८	प्रतिहारक	२	१०	११
प्रज्ञु	२	६	४७	प्रतिष्ठान	१	५	५	प्रतिहास	२	४	७६
प्रज्ञान	२	५	३७	प्रतिष्ठान	२	९	८१	प्रतीक	२	६	७०
प्रणव	३	२	२५	प्रतिष्ठान	१	६	२६	"	३	३	७
"	३	३	१५२	प्रतिनिधि	२	१०	३६	प्रतीकार	२	८	११०
प्रणव	१	६	४	प्रतिपत्	१	४	१	प्रतीकाश	२	१०	३७
प्रणाद	१	६	११	"	१	५	१	प्रतीक्ष्य	३	१	५
प्रणाली	१	१०	३५	प्रतिपन्न	३	१	१०८	प्रतीची	१	३	१
प्रणयि	२	८	१३	प्रतिपादन	२	७	२९	प्रतीत	३	१	९
"	३	३	१००	प्रतिबद्ध	३	१	४१	"	३	३	८२
प्रणिहित	३	१	८६	प्रतिबन्ध	३	२	२७	प्रतीपदशिनी	२	६	२
प्रणीत	२	७	८	प्रतिबिम्ब	२	१०	३५	प्रतीर	१	१०	७
"	२	९	४५	प्रतिभय	१	७	२०	प्रतीहार	२	२	१६
प्रणुत	३	१	१०९	प्रतिमान्वित	३	१	२५	"	२	८	६
प्रणय	३	१	२५	प्रतिभू	२	१०	४४	"	३	३	१७०
प्रतन	३	१	७७	प्रतिमा	२	१०	३५	प्रतीहारी	३	३	१७०
प्रतल	२	६	८४	प्रतिमान	२	८	३९	प्रतोली	२	२	३
"	२	६	८५	"	२	१०	३५	प्रत्न	३	१	७७
प्रताप	२	८	२०	प्रतिमुक्त	२	८	३५	प्रत्यक्	३	४	२३
								प्रत्यक्षपणी	२	४	८९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रत्यक्षश्रेणी	२	४	८८	प्रद्राव	२	८	१११	प्रमा	३	२	१०
"	२	४	११४	प्रधन	२	८	१०३	प्रमाण	३	३	५४
प्रत्यक्ष	३	१	७९	प्रधान	१	४	२९	प्रमाद	१	७	३०
प्रत्यग्र	३	१	७७	"	२	८	५	प्रमापण	२	८	११२
प्रत्यन्त	२	१	७	"	३	१	५७	प्रमिति	३	२	१०
प्रत्यन्तपर्वत	२	३	७	"	३	३	१२२	प्रमीत	२	७	२६
प्रत्यय	३	३	१४८	प्रधि	२	८	५६	"	२	८	११७
प्रत्ययित	२	८	१३	प्रपञ्च	३	३	२८	प्रमीला	१	७	३७
प्रत्ययिन्	२	८	११	प्रपद	२	६	७१	प्रमुख	३	१	५७
प्रत्यवसित	३	१	११०	प्रपा	२	२	७	प्रमुखित	३	१	१०३
प्रत्याख्यात	३	१	४०	प्रपात	२	३	४	प्रमोद	१	४	२४
प्रत्याख्यान	३	२	३१	प्रपितामह	२	६	३३	प्रयत	२	७	४५
प्रत्यादिष्ट	३	१	४०	प्रपुत्राड	२	४	१४७	प्रयस्त	२	९	४५
प्रत्यादेश	३	२	३१	प्रपौण्डरीक	२	४	१२७	प्रयाम	३	२	२३
प्रत्यालीढ	२	८	८५	प्रफुल्ल	२	४	७	प्रयोगार्थ	३	२	२६
प्रत्यासार	२	८	७९	प्रबोधन	२	६	१२२	प्रलम्ब	१	१	२३
प्रत्याहार	३	२	१६	प्रमञ्जन	१	१	६३	प्रलय	१	४	२२
प्रत्युत्क्रम	३	२	२६	प्रमव	३	३	२१०	"	१	७	३३
प्रत्युषस्	१	४	२	प्रमा	१	३	३४	"	२	८	११६
प्रत्यूष	१	४	२	प्रमाकर	१	३	२८	प्रलाप	१	६	१५
प्रत्यूह	३	२	१९	प्रमात	१	४	३	प्रवण	३	३	५६
प्रथम	३	१	८०	प्रमाव	२	८	२०	प्रवयस्	२	६	४२
"	३	३	१४४	प्रमिन्न	२	८	३६	प्रवर्ह	३	१	५७
प्रथा	३	२	९	प्रभु	३	१	११	प्रवह	३	२	१८
प्रथित	३	१	९	प्रभूत	३	१	६२	प्रवहण	२	८	५२
प्रदर	३	३	१६५	प्रभृष्टक	२	६	१३५	प्रवहिका	१	६	६
प्रदीप	२	६	१३८	प्रमथ	१	१	३५	प्रवारण	३	२	३
प्रदीपन	१	८	१०	प्रमथन	२	८	११५	प्रवाल	१	७	७
प्रदेशन	२	८	२७	प्रमथाधिप	१	१	३१	"	२	९	९३
प्रदेशिनी	२	६	८१	प्रमद	१	४	२४	"	३	३	२०५
"	२	६	८२	प्रमदवन	२	४	३	प्रवासन	३	२	१८
प्रदोष	१	४	६	प्रमदा	२	६	३	प्रवाह	२	८	११३
प्रपञ्च	१	१	२५	प्रमनस्	३	१	७	प्रवाहिका	२	६	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रविदारण	२	८	१०३	प्रसारिन्	३	१	३१	प्रहेलिका	१	६	३
प्रविश्लेष	३	२	२०	प्रसारिणी	२	४	१५३	प्रह्व	३	१	१०३
प्रवीण	३	१	४	प्रसित	३	१	९	प्रांशु	३	१	७०
प्रवृत्ति	१	६	७	प्रसिति	३	२	१४	प्राकार	२	२	३
"	३	२	१८	प्रसिद्ध	३	३	१०४	प्राकृत	२	१०	१६
प्रवृद्ध	३	१	७६	प्रसू	२	६	२९	प्राग्वंश	२	७	१६
"	३	१	८८	"	३	३	२३०	प्राग्रहर	३	१	५८
प्रवेक	३	१	५७	प्रसूता	२	६	१६	प्राग्र्य	३	१	५८
प्रवेणी	२	६	९८	प्रसूति	३	२	१०	प्राधार	३	२	१०
"	२	८	४२	प्रसूतिका	२	६	१६	प्राच्	३	४	१६
प्रवेष्ट	२	६	८०	प्रसूतिज	१	९	३	"	३	४	२३
प्रव्यक्त	३	१	८१	प्रसून	२	४	१७	प्राचिका	३	५	८
प्रश्न	१	६	१०	"	३	३	१२३	प्राची	१	३	१
प्रश्रय	३	२	२५	प्रसूजनयितु	२	६	३७	प्राचीन	२	२	३
प्रश्रित	३	१	२५	प्रसृत	३	१	८८	प्राचीना	२	४	८५
प्रष्ट	२	८	७२	प्रसृता	२	६	७२	प्राचीनाबीत	२	७	५०
प्रष्टवाह	२	९	६३	प्रसृति	२	६	८५	प्राच्य	२	१	७
प्रष्टौही	२	९	७०	प्रसेव	२	९	२६	प्राजन	२	९	१२
प्रसन्न	१	१०	१४	प्रसेवक	१	७	७	प्राजितु	२	८	५९
प्रसन्नता	१	३	१६	प्रस्तर	२	३	४	प्राज्ञ	२	७	५
प्रसन्ना	२	१०	३९	प्रस्ताव	३	२	२४	प्राज्ञा	२	६	१२
प्रसभ	२	८	१०८	प्रस्थ	२	३	५	प्राज्ञी	२	६	१२
प्रसर	३	२	२३	"	२	९	८९	प्राज्ञ्य	३	१	६३
प्रसरण	२	८	९६	"	३	३	८८	प्राज्ञ्विवाक	२	८	५
प्रसव	३	२	१०	प्रस्थपुष्प	२	४	७९	प्राण	१	१	६३
"	३	३	२०८	प्रस्थान	२	८	९५	"	२	८	१०२
प्रसव्य	३	१	८४	प्रस्फोटन	२	९	२६	"	२	८	११९
प्रसव्य	३	४	१०	प्रस्रवण	२	३	५	प्राण	२	९	१०४
प्रसाद	१	३	१६	प्रस्त्राव	२	६	६७	प्राणिन्	१	४	३०
"	३	३	९१	प्रहर	१	४	६	प्रातर	३	४	१९
प्रसाधन	२	६	९९	प्रहरण	२	८	८२	प्राथमकस्मिक	२	७	११
प्रसाधनी	२	६	१३९	प्रहस्त	२	६	८४	प्रादुस्	३	३	२५६
प्रसाधित	२	६	१००	प्रहि	१	१०	२६	"	३	४	१२

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
प्रादेश	१	६	८३	प्रियक	२	५	९	प्लव	१	१०	२४
प्रादेशन	२	७	३०	प्रियकु	२	४	५५	"	२	४	१३२
प्राध्वम्	३	४	४	"	२	९	२०	"	२	५	३४
प्राप्तर	१	१	१७	प्रियता	१	७	२७	"	२	१०	१९
प्राप्त	३	१	८६	प्रियंवद	३	१	३५	प्लवग	२	५	३
"	३	१	२०४	प्रियाळ	२	४	३८	"	३	३	२४
प्राप्तपञ्चत्व	२	८	११७	प्रीणन	३	२	४	प्लवङ्ग	२	५	३
प्राप्तरूप	३	३	१३१	प्रीत	३	१	१०३	प्लवङ्गम	३	३	१३८
प्राप्ति	३	३	६९	प्रीति	१	४	२३	प्लाञ्च	२	४	१८
प्राप्त्व	३	१	९२	प्रुष्ट	३	१	९९	प्लोहन्	२	६	६६
प्राभूत	१	६	२७	प्रेक्षा	१	५	१	प्लोहशब्दु	२	४	४९
प्राय	२	७	५२	"	३	३	२२५	प्लुत	२	८	४८
"	३	३	१५४	प्रेक्षा	२	८	५३	प्लुष्ट	३	१	९९
प्रायस्	३	४	१७	प्रेक्षित	३	१	८७	प्लाव	३	२	९
प्राथित	३	१	९७	प्रेत	१	९	२	प्लाव	३	१	११०
प्राकम्ब	२	६	१३६	"	२	८	११७	फ			
प्राकम्बिका	२	६	१०४	"	३	३	६०	फणा	१	८	९
प्राकेय	१	३	१८	प्रेत्स	३	४	८	फणिल्लक	२	४	७९
प्रावार	२	६	११७	प्रेमन्	१	७	२७	फणिन्	१	८	७
प्रावृत	२	६	११३	"	१	७	२७	फळ	२	८	९०
प्रावृष्	१	४	१९	प्रेष्ठ	३	१	१११	"	२	९	१३
प्रावृषायणी	२	४	८६	प्रेष	३	३	२२०	फळ	३	३	२०१
प्राप्त	२	८	९३	प्रेष्य	२	१०	१७	"	३	५	२३
प्राप्तज्ञ	२	८	५७	प्रोक्षण	२	७	२६	फळक	२	८	९०
प्राप्तज्ञ	२	९	६४	प्रोक्षित	२	७	२६	फळकपाणि	२	८	७१
प्रासाद	२	२	९	प्रोथ	२	८	४९	फळत्रिक	२	९	१११
प्रासिक	२	८	७०	प्रोष्ठपदा	१	३	२२	फळपूर	२	४	७८
प्राक्ष	१	४	३	प्रोष्ठी	१	१०	१८	फळवत्	२	४	७
प्रिय	१	६	३५	प्रौढ	३	१	७६	फलाध्यक्ष	२	४	४५
"	३	१	५३	प्रौष्ठपद	१	४	१७	फलिन्	२	४	७
प्रिवक	१	४	४२	प्लक्ष	२	४	३२	फलिन	२	४	७
"	१	४	४४	"	२	४	४३	फलिनी	२	४	५५
"	२	४	५६	प्लव	१	१०	११	"	२	४	१३६
								फली	२	४	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
फलेग्रहि	२	४	६	वन्दी	२	८	११९	बला	२	४	१०७
फलेग्रहा	२	४	५४	वन्वकी	२	६	१०	बलाका	२	५	२५
फल्यु	२	४	६१	वन्वन	२	८	२६	बलात्कार	२	८	१०८
"	३	१	५६	"	३	२	१४	बलारति	१	१	४३
फाणित	२	९	४३	वन्धु	२	६	३४	बलाहक	१	३	६
फाण्ट	३	१	९४	वन्धुजीवक	२	४	७३	बलि	२	७	१४
फाल	२	६	११९	वन्धुता	२	६	३५	"	२	८	२७
"	२	९	१३	वन्धुर	३	१	७०	"	३	३	१९५
फाल्गुन	१	४	१५	वन्धुल	२	६	२६	बलिध्वंसिन्	१	१	२१
फाल्गुनिक	१	४	१५	वन्धूक	२	४	७३	बलिन	२	३	४५
फुल्ल	२	४	८	वन्धूकपुष्प	२	४	४४	बलिपुष्ट	२	५	१०
फेन	२	९	१०५	वन्धूक	२	४	७	बलिन	२	३	४५
"	३	५	१९	वन्धूक	२	९	६९	बलिमुक्	२	५	२०
फेनिल	२	४	३१	बन्धु	३	३	१७१	बलिसद्यन्	१	८	१
"	२	४	३६	बर्ह	२	४	१३२	बलीवर्ह	२	९	५९
फेरब	२	५	५	"	२	५	३१	बल्लव	२	९	२७
फेरु	२	५	५	"	३	३	२३६	"	२	९	५७
फेला	२	९	५६	बर्हिण	२	५	३०	बल्लवज	२	४	१६३
ब				बर्हिन्	२	५	३०	बल्ल	२	९	७६
बर्हिष्ठ	३	१	१११	बर्हिमुल्ल	१	१	९	बर्हिर्दार	२	२	१६
बक	२	५	२२	बर्हिस्	१	१	५४	बर्हिस्	३	४	१७
बकुल	२	४	६४	बर्हिष्ठ	२	८	१२२	बहु	३	१	६३
बडवानल	१	१	५६	बल	१	१	२४	बहुकार	३	१	१७
बडिश	१	१०	१६	"	२	८	१७	बहुगार्वाज्	३	१	३६
बत	३	३	२४४	"	२	८	७८	बहुपाद	२	४	३२
बदर	२	४	३७	"	२	८	१०२	बहुप्रद	३	१	७
बदरा	२	४	११६	"	३	२	२२	बहुमूल्य	२	३	११३
"	२	४	१५१	"	३	३	१९६	बहुरूप	२	३	१२८
बदरी	२	४	३६	बलदेव	१	१	२३	बहुल	३	३	१९९
बान्दिन्	२	८	९७	बलभद्र	१	१	२३	"	३	१	६३
बद्ध	३	१	४२	बलभद्रिका	२	४	१५०	बहुला	२	४	१२५
"	३	१	९५	बलवत्	२	६	४४	"	३	३	१९९
बधिर	२	६	४८	"	३	४	२	बहुवारक	३	४	३४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
बहुविध	३	१	९३	बाहुल	१	४	१८	बुद्धि	१	५	१
बहुसुता	२	४	१०१	बाहुलेय	१	१	४०	बुद्बुद	३	५	१९
बहुसूति	२	९	७०	बाह्लिक	२	८	४५	बुध	१	३	२६
बाकूची	२	४	९५	"	३	३	९	"	२	७	५
बाहव	१	१	५३	"	३	५	३२	"	३	३	१००
बाढ	१	१	६७	बाह्लीक	२	६	१२४	बुधित	३	१	१०८
"	३	३	४४	"	२	९	४०	बुध्न	२	४	१२
बाण	२	८	८६	"	३	३	९	बुधुक्षा	२	९	५४
"	३	३	४५	विड	२	९	४२	बुभुक्षित	३	१	२०
बाणा	२	४	७४	विन्दु	१	१०	६	बुस	२	९	२२
बाधा	१	९	३	विभीतक	२	४	५८	बुस्त	३	५	३४
बान्धकिनेय	२	३	२६	विम्ब	१	३	१५	बुहित	२	८	१०७
बान्धव	२	६	३४	विम्बिका	२	४	१३९	बृहती	२	४	०३
बाहृत	२	४	१९	विल	१	८	१	"	३	३	७५
बाल	२	४	१२२	विलेशय	१	८	८	बृहत्	३	१	६०
"	२	६	४२	विल्व	२	४	३२	बृहत्तिका	२	६	११७
"	३	३	२०६	विसप्रसून	१	०	४१	बृहत्कुक्षि	२	६	४४
बालतनय	२	४	४९	विसिनी	१	१०	३९	बृहत्क्रानु	१	१	५४
बालमृण	२	४	१६७	विस	१	१०	४२	बृहत्स्पति	१	३	२४
बालमूषिका	२	५	१२	विसकण्ठिका	२	५	२५	बोधकर	२	८	९६
बाला	१	७	१४	विस्त	२	९	८६	बोविद्रुम	२	४	२०
बालिश	३	१	४८	बीज	१	४	२८	बोल	२	९	१०४
"	३	३	२१८	"	२	६	६२	भक्ष	१	३	२८
बालेय	२	९	७७	बीजकोश	१	१०	४३	ब्रह्मचारिन्	२	७	३
बालेयशाक	१	४	९०	बीजपूर	२	४	७८	"	२	७	४२
बाक्य	२	६	४०	बीजाकृत	२	९	८	ब्रह्मण्य	२	४	४१
बाष्प	३	३	१३०	बीज्य	२	७	२	ब्रह्मत्व	२	७	५१
बाष्पिका	२	९	४०	बीमत्स	१	७	१७	ब्रह्मदर्भा	२	४	१४५
बाहु	२	३	८०	"	१	७	१९	ब्रह्मदारु	२	४	४१
बाहुज	२	८	१	"	३	३	२३५	ब्रह्मन्	१	१	१६
बाहुदा	१	१०	३३	बुका	२	६	६४	"	३	३	११४
बाहुमूल	१	६	७९	बुद्ध	१	१	१३	ब्रह्मपुत्र	१	८	१०
बाहुयुद्ध	२	८	१०६	"	३	१	१०८	ब्रह्मबन्धु	३	३	१०४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शब्दविन्दु	२	७	३९	मटिप्र	२	९	४५	मर्त्सन	१	६	१४
शब्दाभूय	२	७	५१	मट्टारक	१	७	१३	मर्मन्	२	९	९४
शब्दावर्चस	२	७	३८	मट्टिनी	१	७	१३	"	२	१०	३८
शब्दासायुज्य	२	७	५१	मण्टाकी	२	४	११४	मरल	३	५	२१
शब्दासू	१	१	२७	मण्डिल	२	४	६३	मरलातकी	२	४	४२
शब्दासूत्र	२	७	४९	मण्डी	२	४	९१	मरलुक	२	५	३
शब्दाजलि	२	७	३८	मण्डीरी	२	४	९१	मरलूक	२	५	४
शब्दासन	२	७	३९	भद्र	१	४	२५	भव	१	१	३४
शब्दा (तीर्थ)	२	७	५१	"	२	९	५९	"	३	३	२०६
शब्दा (भद्रोरात्र)	२	४	२१	भद्रकुम्भ	२	८	३२	भवन	२	२	५
शब्दाण	२	७	४	भद्रद्वार	२	४	५३	भवानी	१	१	३७
शब्दाणयष्टिका	२	४	८९	भद्रपणी	२	४	३६	भविक	१	४	२६
शब्दाणी	२	४	८९	भद्रबला	२	४	१५३	भवितृ	३	१	२९
शब्दाण्य	३	२	४१	भद्रमुस्तक	२	४	१६०	भविष्णु	३	१	२९
शब्दाही	१	१	३५	भद्रयष	२	४	६७	भव्य	१	४	२६
"	१	६	१	भद्रश्री	२	६	१३०	भषक	२	१०	२२
"	२	३	१३७	भद्रासन	२	८	३१	भक्षा	२	१०	३४
भ	१	३	२१	भय	१	७	२१	भस्मगन्धिनी	२	४	१२०
भक्त	२	९	४८	भयङ्कर	१	७	२०	भस्मगर्मा	२	४	६३
भक्षक	३	१	२०	भयद्रुत	३	१	४२	भा	१	३	३४
भक्षित	३	१	११०	भयानक	१	७	१७	भाग	२	९	८९
भक्ष्यकार	२	९	१८	"	१	७	२०	भागधेय	१	४	२८
भग	२	६	७६	भर	१	१	६६	"	२	८	२७
"	३	३	२६	भरण	२	१०	३८	भागिनेय	२	६	३३
भगन्दर	२	६	५६	भरण्य	२	१०	३८	भागीरथी	१	१०	३१
भगवत्	१	१	१३	भरण्यभुज्	३	१	१०	भाग्य	१	४	२८
भगिनी	२	६	२९	भरत	२	१०	१२	"	३	३	१५५
भङ्ग	१	१०	५	भरद्वाज	२	५	१५	भाजन	२	९	३३
भङ्गा	२	९	२०	भर्ग	१	१	३३	भाण्ड	२	९	३३
भङ्गि	३	५	८	भर्तृ	२	६	३५	"	३	३	४४
भजमान	२	८	२४	"	३	३	५९	भाद्र	१	४	१७
भट	२	८	६१	भर्तृदारक	१	७	१२	भाद्रपद	१	४	१७
				भर्तृदारिका	१	७	१३५	भाद्रपदा	१	३	३३



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मानु	१	३	३१	मिधु	२	७	४१	मुकान्तर	२	६	७७
"	१	३	३३	मिस्त	१	३	१६	मुजिष्म	२	१०	१७
"	३	३	१०५	मिस्ति	२	२	४	मुवन	१	१०	३
मामिनी	२	६	४	मिना	३	२	५	"	२	१	६
मार	२	९	८७	मिदुर	१	१	४७	भू	२	१	२
भारत	२	१	६	मिनिपाल	२	८	९१	भूत	१	१	११
भारती	१	६	१	मित्र	३	१	८२	"	३	१	१०४
भारद्वाजी	२	४	११६	"	३	१	१००	"	३	३	७८
भारवष्टि	२	१०	३०	मिषज्	२	६	५७	भूतकेश	२	९	१११
भारबाह	२	१०	१५	मिस्मटा	२	९	४८	भूतवेशी	२	४	७१
भारिक	२	१०	१५	मिस्सा	२	९	४९	भूमात्मन्	३	३	१०५
भार्गव	१	३	२५	मी	१	७	२१	भूताबास	२	४	५८
भार्गवी	२	४	१५८	मीति	१	७	२१	भूति	१	१	३६
भार्गी	२	४	८९	मीम	१	१	३४	"	३	३	६९
भार्वा	२	६	६	"	१	७	२०	भूतिक	३	३	८
भार्वापती	२	६	३८	मीरु	२	६	३	भूतेश	१	१	३१
भाव	१	७	१२	"	३	१	२६	भूवार	२	५	२
"	१	७	२१	मीरुक	३	१	२६	भूदेव	२	७	४
"	३	३	२०८	मीलुक	३	१	२६	भूनिम्ब	२	४	१४३
भावित	२	६	१३४	मीषण	१	७	२०	भूप	२	८	१
"	२	९	४६	मीष्म	१	७	२०	भूपदी	२	४	७०
"	३	१	१०४	मीष्मसू	१	१०	३१	भूपृथ	३	३	६१
भाबुक	१	४	२६	मुक्त	३	१	१११	भूमि	२	१	२
भाषा	१	६	१	मुक्तसमुज्जित	१	९	५६	भूमिजम्बुका	२	४	३७
भाषित	१	६	१	मुस	३	१	७१	"	२	४	११८
"	३	१	१०७	"	३	१	९१	भूमिस्तृण	२	९	१
भाष्य	३	५	३१	भुज	२	६	८०	भूयस्	३	१	६३
भास्	१	३	३४	भुजग	१	८	६	भूयिष्ठ	३	१	६३
भास्कर	१	३	२८	भुजङ्ग	१	८	६	भूरि	३	१	६३
भास्वत्	१	३	२९	भुजङ्गभुज्	२	५	३०	"	३	३	१८३
भिद्या	३	२	६	भुजङ्गम	१	८	६	भूरिफेना	२	४	१४३
"	३	३	२२५	भुजङ्गाक्षी	२	४	११५	भूरिमावा	२	५	५
भिधु	२	७	३	भुजङ्गिरस्	२	६	७८	भूरुण्डी	२	४	६९

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
भूर्ज	२	४	४६	भौम	१	३	२५	मकुटक	२	९	१७
भूषण	२	६	१०१	भौरिक	२	८	७	मकुळक	२	४	१४४
भूषित	२	६	१००	भकुंस	१	७	११	मक्षिका	२	५	२६
भूष्णु	३	१	२९	भकुटि	१	७	३७	मख	२	७	१३
भूस्तृण	२	४	१६७	भ्रम	१	५	४	मगव	२	८	९७
भृगु	२	३	४	"	१	१०	७	मघवत्	१	१	४१
भृङ्ग	२	४	१३४	"	३	२	९	मङ्क्षु	३	४	२
"	२	५	१६	भ्रमर	२	५	२९	मङ्गल	१	४	२५
"	२	५	२९	भ्रमरक	२	६	९६	मङ्गल्यक	२	९	१७
भृङ्गराज	२	४	१५१	भ्रमि	३	२	९	मङ्गस्था	२	६	१२७
भृङ्गार	२	८	३२	भ्रह्म	३	१	१०४	मचर्चिका	१	४	२७
भृङ्गारी	२	५	२८	भ्राजिष्णु	२	६	१०१	मञ्ज	२	६	१३८
भृनक	२	१०	१५	भ्रातर	२	६	३६	मज्जा	२	४	१२
भृति	२	१०	३८	भ्रातृ	२	६	३६	मजरि	२	४	१३
भृतिभुज्	२	१०	१५	भ्रातृज	२	६	३६	मभिडा	२	४	९०
भृत्थ	२	१०	१७	भ्रातृमाया	२	६	३०	मजीर	२	६	१०९
भृत्था	२	१०	३८	भ्रातृमगिनी	२	६	३६	मजु	३	१	५२
भृश	१	१	६६	भ्रातृभ्य	३	३	१४	मजुल	३	१	५२
भेक	१	१०	२४	भ्रात्रीब	२	६	३६	मज्जा	२	१०	२९
भेकी	१	१०	२४	भ्रान्ति	१	५	४	मठ	२	२	८
भेद	२	८	२१	भ्राट्	२	९	३०	मड्ड	१	७	८
भेदित	३	१	१००	भ्रकुंस	१	७	११	मणि	२	९	९३
भेरी	१	७	६	भ्रकुटि	१	७	३७	मणिक	३	९	३१
भेषज	२	६	५०	भ्र्	२	६	९२	मण्ड	२	४	५१
भैक्ष	२	७	४६	भ्रकुंस	१	७	११	"	२	९	४९
भैरव	१	७	१९	भ्रकुटि	१	७	३७	मण्डन	२	६	१०२
भैषज्य	२	६	५०	भ्रूण	२	६	३९	"	३	१	२९
भोग	३	३	२३	"	३	३	४५	मण्डप	२	२	९
भोगवती	३	३	७०	भ्रैव	२	८	३३	मण्डल	१	३	६
भोगिन्	१	८	८	भ्र				"	१	३	१५
भोगिनी	२	६	५	मकर	१	१०	२०	"	१	३	३१
भोजन	२	९	५५	मकरध्वज	१	१	२६	मण्डलक	२	६	५४
भोस्	३	४	७	मकरन्द	२	४	१७	मण्डकाग्र	२	८	८९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दा	का.	व.	श्लो
मण्डलेश्वर	२	८	२	मदगु	२	५	३४	मधूक	२	४	२७
मण्डलारक	२	१०	१०	मदगुर	१	१०	१९	मधूच्छिष्ट	२	९	१०७
मण्डित	१	६	१००	मद्य	२	१०	४०	मधूलक	२	४	२८
मण्डुक	१	१०	२४	मधु	१	४	१५	मधूलिका	२	४	८४
मण्डुकपर्ण	२	४	५६	"	२	९	१०७	मध्य	२	६	७९
मण्डुकपर्णी	२	४	९१	"	२	१०	४०	"	३	४	१३१
मण्डूर	२	९	९८	"	३	३	१०३	मध्यदेश	२	१	७
मत्तकञ्ज	२	८	३४	मधुक	२	४	१०९	मध्यम	१	७	१
मत्तलिका	१	४	२७	मधुकर	२	५	२९	"	२	१	७
मत्ति	१	५	१	मधुकम	२	१०	४०	"	२	६	७९
मत्त	२	८	३६	मधुद्रुम	२	४	२७	मध्यमा	२	६	८
"	३	१	२३	मधुप	२	५	२९	"	२	६	८२
"	३	१	१०३	मधुपणिका	२	४	३५	मध्याह्न	१	४	३
मत्तकाशिनी	२	६	४	"	२	४	९४	मध्यासव	२	१०	४२
मत्सर	३	३	१७३	मधुपर्णी	२	४	८३	मनःशिला	२	९	१८
मत्स्य	१	१०	१७	मधुमक्षिका	२	५	२६	मनस्	१	४	३१
मत्स्यण्डी	२	९	४३	मधुयष्टिका	२	४	१०९	मनसिञ्ज	१	१	२६
मत्स्यपित्ता	२	४	८६	मधुर	१	५	९	मनस्कार	१	५	२
मत्स्यवेधन	१	१०	१६	"	३	३	१९२	मनाक्	३	४	८
मत्स्याक्षी	२	४	१३७	मधुरक	२	४	१४२	मनित	३	१	१०८
मत्स्याधानी	१	१०	१६	मधुरसा	२	४	८३	मनीषा	१	५	१
मथित	२	९	५३	"	२	४	१०७	मनीषिन्	२	७	५
मथिन्	२	९	७४	मधुरा	२	४	१५२	मनु	३	५	३८
मद	२	८	३७	"	३	३	१९२	मनुज	२	६	१
"	३	२	१२	मधुरिका	२	४	१०५	मनुष्य	२	६	१
मदकल	२	८	३५	मधुरिपु	१	१	२०	मनुष्यमर्म्न्	१	१	६८
मदन	१	१	२५	मधुलिङ्	२	५	३९	मनोगुप्ता	२	९	१०८
"	२	४	५३	मधुवार	२	१०	४०	मनोजवस्	३	१	१३
"	२	४	७८	मधुव्रत	२	५	२९	मनोह	३	१	५२
मदस्थान	२	१०	४०	मधुशिग्रु	२	४	३१	मनोरथ	१	७	२७
मदिरा	२	१०	४०	मधुश्रेणी	२	४	८४	मनोरम	३	१	५२
मदिरागृह	२	२	८	मधुष्ठील	२	४	२८	मनोहत	३	१	४१
मदोक्त	२	८	३५	मधुस्रवा	२	४	१४२	मनोहा	२	९	१०८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मन्तु	२	८	२६	मयूख	३	३	१८	मल	३	३	१९७
मन्त्र	३	३	१६७	मयूर	२	४	२११	मलदूषित	३	१	५५
मन्त्रिन्	२	८	४	"	२	५	३०	मलगू	२	४	६१
मन्थ	२	९	७४	मयूरक	२	४	८८	मलयज	२	६	१३०
मन्थदण्डक	२	९	७४	"	२	९	१०१	मलिन	३	१	५५
मन्थनी	२	९	७४	मरकत	२	९	९२	मलिनी	२	६	२०
मन्थर	२	८	७२	मरण	२	८	११६	मलिम्लुच	२	१०	२५
मन्थान	२	९	७४	मरीच	२	९	३६	मलीमस	३	१	५५
मन्द	२	१०	१८	मरीचि	१	३	२७	मल्ल	३	५	२१
"	३	३	९५	"	१	३	३३	मल्लक	३	५	३७
मन्दगामिन्	२	८	७२	मरीचिका	१	३	३५	मल्लिका	२	४	६९
मन्दाकिनी	१	१	४९	मरु	२	१	५	मल्लिकाक्ष	२	५	२४
मन्दाक्ष	१	७	२३	"	३	३	१६३	मसी	३	५	१०
मन्दार	१	१	५०	मरुत	१	१	६२	मसूर	२	९	१७
"	२	४	२६	"	१	३	२	मसूरविदला	२	४	१०९
"	२	४	८१	"	३	३	६९	मसृण	२	९	४६
मन्दिर	२	२	५	मरुवत्	१	१	४१	मस्कर	२	४	१६१
"	३	३	१८४	मरुन्माला	२	४	१३३	मस्करिन्	२	७	४१
मन्दुरा	२	२	७	मरुबक	२	४	५२	मस्तक	२	६	९५
मन्दोष्ण	१	३	३५	"	२	४	७९	मस्तिष्क	२	६	६५
मन्द्र	१	७	२	मर्कट	२	५	३	मस्तु	२	९	५४
मन्मथ	१	१	२५	मर्कटक	२	५	१३	मह	१	७	३८
"	२	४	२१	मर्कटी	२	४	४८	महत	३	१	६०
मन्या	२	६	६५	"	२	४	८७	"	३	३	७९
मन्यु	१	७	२५	मर्त्य	२	६	१	महती	३	३	६९
"	३	३	१५४	मर्दन	३	२	२२	महस्	३	३	२३१
मन्वन्तर	१	४	२२	मर्दल	१	७	८	महाकन्द	२	४	१४८
मय	२	९	७५	मर्मन्	३	५	३०	महाकुल	२	७	३
मयु	१	१	७१	मर्मर	१	६	२३	महाक्ष	२	९	७५
मयुष्टक	२	९	१७	मर्मस्पर्श	३	१	८३	महाजाली	२	४	११७
मयूख	१	३	३३	मर्यादा	२	८	२६	महादेव	१	१	३२
				मल	२	३	६५				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
महाधन	२	६	११३	महौषध	२	४	१००	मातुलपुत्रक	२	४	७८
महान्स	२	९	२७	"	२	४	१४८	मातुलानी	२	६	३०
महामात्र	२	८	५	"	२	९	३८	"	२	९	२०
महारजस	२	९	९५	मा	३	४	११	मातुलाहि	१	८	६
महारजन	२	९	१०६	मांस	२	६	६३	मातुली	२	६	३०
महारण्य	२	४	१	"	३	२	२२	मातुलुक्क	२	४	७८
महाराजिक	१	१	१०	मांसल	२	६	४४	मातृ	१	१	३५
महारौरव	१	९	१	मांसिक	२	१०	१४	"	१	७	१४
महाशय	३	१	३	माक्षिक	२	९	१०७	"	२	६	२९
महाशुद्धी	२	६	१३	मागध	२	८	९६	"	२	९	६६
महायेता	२	४	११०	मागध	२	१०	२	मात्र	३	३	१७८
महासहा	२	४	७३	मागधी	२	४	७१	मात्रा	३	१	६२
"	२	४	१३८	"	२	४	९६	"	३	३	१७८
महासेन	१	१	३९	माघ	१	४	१५	माद	३	२	१२
महिला	२	६	२	माघ्य	१	४	७३	माधव	१	१	१८
महिलाहया	२	४	५५	माठर	१	३	३१	"	१	४	१६
महिष	२	५	४	माडि	३	५	८	माधवक	२	१०	४१
महिषी	२	६	५	माणवक	२	६	४२	माधवी	२	४	७२
मही	२	१	३	"	२	६	१०६	माध्वीक	२	१०	४१
महीक्षित	२	८	१	माणव्य	३	२	४०	मान	१	७	२२
महीभ्र	२	३	१	माणिक्य	३	५	३१	"	२	९	८५
महीरुह	२	४	५	माणिमन्य	२	९	४२	मानव	२	६	१
महीरुता	१	१०	२१	मातङ्ग	२	१०	१९	मानस	१	४	३१
महीसुत	१	३	२५	"	३	३	२१	मानसौकस्	२	५	२३
महेच्छ	३	१	३	मातरपितृ	२	६	३७	मानिनी	२	६	३
महेरणा	२	४	१२४	मातरिधन्	१	१	६१	मानुष	२	६	१
महेश्वर	१	१	३०	मातलि	१	१	४५	मानुष्यक	३	२	४२
महीक्ष	२	९	६१	मातापितृ	२	६	३७	माया	२	१०	११
महीत्पल	१	१०	३९	मातामह	२	६	३३	मायाकार	२	१०	११
महीत्साह	३	१	३	मातुल	२	४	७८	मायादेवीसुत	१	१	१५
महोषम	३	१	३	"	२	६	३१	मातृ	२	६	३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मायूर	२	५	४३	माषपर्णी	२	४	१३८	मुक्तकञ्जुक	१	८	३
मार	१	१	२५	मास	१	४	१२	मुक्ता	२	९	९३
मारजित्	१	१	१३	मासर	२	९	४९	मुक्ताबली	२	६	१०५
मारण	२	८	११४	मास्म	३	४	११	मुक्तास्फोट	१	१०	२३
मार्षि	१	७	१४	माहिष्य	२	१०	३	मुक्ति	१	५	६
मारुत	१	१	६२	माहेयो	२	९	६६	मुख	२	२	१९
मार्कव	२	४	१५१	मितम्पच	३	१	४८	"	२	६	२९
मार्ग	१	४	१४	मित्र	१	३	३०	"	३	२	२२
"	२	१	१५	"	२	८	९	मुखर	३	२	३६
मार्गण	२	८	८७	"	२	८	१२	मुखवासन	१	५	११
मार्गण	३	१	४९	"	३	३	१६७	मुख्य	२	७	४०
"	३	२	३०	मिथस्	३	३	२५६	"	३	१	५७
मार्गशीर्ष	१	४	१४	मिथुन	३	५	३८	मुण्ड	३	६	४८
मार्गित	३	१	१०५	मिथ्या	३	४	१५	"	३	५	३४
मार्जन	२	४	३३	मिथ्यादृष्टि	१	५	४	मुण्डित	२	६	४८
मार्जना	२	६	१२१	मिथ्याभियोग	१	६	१०	"	३	१	८५
मार्जार	२	५	६	मिथ्याभिर्शंसन	१	६	१०	मुण्डिन्	२	१०	१०
मार्जिता	२	९	४४	मिथ्यामति	१	५	४	मुद्	१	४	२४
मार्तण्ड	१	३	२९	मिश्रेया	२	४	१०५	मुदिर	१	३	७
मार्तङ्गिक	२	१०	१३	मिसि	२	४	१०५	मुद्रपर्णी	२	४	११३
मार्ष्टि	२	६	१२१	"	२	४	१५२	मुद्रर	२	८	९१
मात्स्यक	२	४	६२	मिसी	२	४	१३४	मुधा	३	४	४
मालती	२	४	७२	मिहिका	१	३	१८	मुनि	१	१	१४
माढा	२	६	१३५	मिहिर	१	३	२९	"	२	७	४२
मालाकार	२	१०	५	मीढ	३	१	९६	मुनीन्द्र	१	१	१४
मालातुणक	२	४	१६७	मीन	१	१०	१७	मुरज	१	७	५
मालिक	२	१०	५	मीनकेतन	१	१	२५	मुरा	२	४	१२३
मालुधान	१	८	६	मुकुट	२	६	१०२	मुषित	३	१	८८
मालूर	२	४	३२	मुकुन्द	२	४	१२१	मुष्क	२	६	७६
माख्य	२	६	१३४	मुकुर	२	६	१४०	मुष्कक	२	४	३९
माख्यवत्	२	३	३	मुकुल	२	४	१६	मुष्टिवन्ध	३	२	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मुसल	२	९	२५	मूल	३	३	२००	मृड	१	१	३१
मुसलिन्	१	१	२४	मूलक	२	४	१५७	मृडानी	१	१	३७
मुसलो	२	४	११९	मूलधन	२	९	८०	मृणाल	१	१०	४२
"	२	५	१२	मूल्य	२	९	८०	मृणाली	३	५	७
मुसल्य	३	१	४५	"	२	१०	३८	मृत्	२	१	४
मुस्तक	२	४	१५९	मूषक	२	५	१२	मृत्	२	८	११७
मुस्ता	२	४	१५९	मूषा	२	१०	३३	मृत्	२	९	३
मुडुस्	३	४	१	"	३	५	३८	मृत्स्नात	३	१	१९
मुडुर्माषा	१	६	१६	मूषिकपर्णी	२	४	८८	मृत्तालक	२	४	१३१
मुहूर्त	१	४	११	मूषित	३	१	८८	मृत्तिका	२	१	४
मूक	३	१	१३	मृग	२	५	७	मृत्पु	२	८	११६
मूढ	३	१	४८	"	३	२	३०	मृत्पुञ्जय	१	१	३१
मृत	३	१	९५	"	३	३	२०	मृत्सा	२	१	४
मृत्र	२	६	६७	मृगणा	३	२	३०	मृत्स्ना	२	१	४
मृत्रकृच्छ्र	२	६	५६	मृगतृणा	१	३	३५	"	२	४	१३१
मृषित	३	१	९६	मृगदंशक	२	१०	२१	मृदङ्ग	१	७	५
मृष्व	३	१	४८	मृगधूर्तक	२	५	५	मृदु	३	१	७८
मृच्छा	२	८	१०९	मृगनाभि	२	६	१२९	"	३	३	९४
मृच्छाल	२	६	६१	मृगवधालीव	२	१०	२१	मृदुस्वच्	२	४	४६
मृच्छित	२	६	६१	मृगबन्धनी	२	१०	२६	मृदुल	३	१	७८
"	३	३	८२	मृगमद	२	६	१२८	मृद्रीका	३	४	१०७
मृत	२	६	६१	मृगया	२	१०	२३	मृष	२	८	१०४
"	३	१	७६	मृगयु	२	१०	२१	मृषा	३	४	१५
मृति	२	६	७१	मृगव्य	२	१०	२३	मृष्ट	३	१	५६
"	३	३	६६	मृगशिरस्	१	३	२३	मेकलकन्यका	१	१०	३२
मृतिमत	३	१	७६	मृगशीर्ष	१	३	२३	मेखला	२	६	१०८
मूर्धन्	२	६	९५	मृगाङ्ग	१	३	१४	"	२	८	९०
मूर्ध्नाभिषिक्त	२	८	१	मृगादन	२	५	१	मेघ	१	३	६
"	३	३	६१	मृगित	३	१	१०५	"	३	५	११
मूर्वा	२	४	८३	मृगेन्द्र	२	५	१	मेघज्योतिस्	१	३	१०
मूक	२	४	१२	मृजा	३	६	१२१	मेघनादानुला-			
								तिन्	२	५	३०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मेषनामन्	२	४	१५९	मोचक	२	४	३१	यक्षिय	२	७	२७
मेषनिर्घोष	१	३	८	मोचा	२	४	४६	यज्वन्	२	७	८
मेषपुष्प	१	१०	५	"	२	४	११३	यत्	३	४	३
मेषमाला	१	३	८	मोदक	३	५	३३	यतः	३	४	३
मेषवाहन	१	१	४४	मोरट	२	९	११०	यति	२	७	४३
मेषक	१	५	१४	मारटा	२	४	८३	यनिन्	२	७	४३
"	२	५	३१	मोषक	२	१०	२४	यथा	३	४	९
मेढ	२	६	७६	मोह	२	८	१०९	यथाजात	३	१	४८
मेढ्	२	९	७६	मोक्तिक	२	९	९२	यथातथम्	३	४	१५
मेदक	२	१०	४१	मोक्षोन	२	९	८	यथायथम्	३	४	१४
मेदस्	२	६	६४	मौन	२	७	३६	यथार्थम्	३	४	१४
मेदिनी	२	१	३	मौरजिक	२	१०	१३	यथाईवर्ण	२	८	१३
मेदुर	३	१	३०	मौर्वी	२	८	८५	यथास्वम्	३	४	१४
मेघा	१	५	२	मौलि	३	३	१९३	यथेप्सित	२	९	५७
मेघि	३	९	१५	मौहा	३	५	५	यदि	३	४	१२
मेघ्य	३	१	५५	मौहूर्त	२	८	१४	यदृच्छा	३	२	२
मेरु	१	१	४९	मौहूर्तिक	२	८	१४	यन्तु	२	८	५८
मेलक	३	२	२९	म्लिष्ट	१	६	२१	"	३	३	५९
मेष	२	९	७६	म्लेच्छदेश	२	१	७	यम	१	१	५८
मेषकम्बल	२	९	१०७	म्लेच्छमुख	२	९	८७	"	२	७	४८
मेह	२	६	५६	य				"	३	२	१८
मेहन	२	६	७६	यकुत्	२	६	६६	यमराज्	१	१	५८
मैत्रावरुणि	१	३	२०	यक्ष	१	१	११	यमुना	१	१०	३२
मैत्री	३	५	३९	"	१	१	६९	यमुनाभ्रातृ	१	१	५८
मैत्र्य	३	५	३९	यक्षकर्म	२	६	१३३	ययु	२	८	४५
मैथुन	२	७	५७	यक्षधूप	२	६	१२७	यव	२	९	१५
"	३	३	१२२	यक्षराज	१	१	६८	यवक्य	२	९	७
मैरेय	२	१०	४१	यक्षमन्	२	६	५१	यवक्षार	२	९	१०८
मोक्ष	१	५	७	यजमान	२	७	८	यवफल	२	४	१६१
"	२	४	३९	यजुस्	१	६	३	यवस	२	४	१६७
मोष	३	१	८१	यज्ञ	२	७	१३	यवागू	२	९	५०
मोषा	२	४	५४	यज्ञाङ्ग	२	४	२२	यवाग्रज	२	९	१०८



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शब्दानिका	२	४	१४५	याम	१	४	६	यूथनाथ	२	८	३५
मवास	२	४	९१	"	३	२	१८	यूथप	२	८	३५
मवीथस्	२	६	४३	यामिनी	१	४	४	यूथिका	२	४	७१
मव्य	२	९	७४	यामुन	२	९	१००	यूप	२	४	४१
यशःपट्ट	१	७	६	यायजूक	२	७	८	"	३	५	१९
यशस्	१	६	११	याव	२	३	१२५	"	३	५	३५
यष्टि	३	५	३८	यावक	२	९	१८	यूपाम्र	२	७	१९
यष्टीमधुक	२	४	१०९	यावत्	३	३	२४७	यूष	३	५	३५
यष्टृ	२	७	८	यावन	२	६	१२८	योक्त्र	२	९	१३
याग	२	७	१३	याष्टीक	२	८	७०	योग	३	३	२२
"	३	५	११	यास	२	४	९१	योगेष्ट	२	९	१०५
याचक	३	१	४९	युक्त	२	८	२४	योग्य	२	४	११२
याचनक	३	१	४९	युक्तरसा	२	४	१४०	योजन	३	५	३०
याचना	२	७	३२	युग	२	५	३८	योजनबद्धी	२	४	९१
याचितक	२	९	४	"	३	३	२४	योन	२	९	१३
याचना	२	७	३२	युगकीलक	२	९	१४	योद्ध	३	८	६१
"	३	२	६	युगम्बर	२	८	५७	बोष	२	८	६१
याभक	२	७	१७	"	३	५	३५	यानि	२	६	७६
यातना	१	९	३	युगपद्	३	४	२२	बोषा	२	६	२
यातयाम	३	३	१४५	युगपत्रक	२	४	३२	बोषित	२	६	२
यातु	१	१	६०	युगपार्थग	२	९	६३	यौतक	२	८	२८
यातुधान	१	१	६०	युगल	२	५	३८	यौतव	२	९	८५
यातु	२	६	३०	युग्म	२	५	३८	यौवत	२	६	२२
यात्रा	२	८	९५	युग्म	२	८	५८	यौवन	२	६	४०
"	३	३	१७६	"	२	९	६४				
यादःपति	१	१०	२	युद्ध	२	८	१०३	रंइस्	१	१	६४
यादस्	१	१०	२०	युध्	२	८	१०६	रक्त	१	५	१४
यादसांपति	१	१	६१	युवति	२	३	८	"	२	६	६४
यान	२	८	१८	युवन्	२	६	४२	"	२	६	१२४
"	२	८	५८	युवराज	१	७	१२	"	३	३	८०
यानमुख	२	८	५५	यूथ	२	५	४१	रत्नक	२	४	७३
याप्य	३	१	५४								
याप्ययान	२	८	५३								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रक्तचन्दन	२	६	१३२	रजनी	२	४	९५	रन्ध्र	१	८	२
"	२	९	१११	रण	२	८	१०४	रभस	३	५	२१
रक्तापा	१	१०	२२	"	३	२	८	रमणी	२	६	४
रक्तफला	२	४	१३९	"	३	३	४९	रम्भा	२	४	११३
रक्तसन्ध्यक	१	१०	३६	रण्डा	२	४	८८	रय	१	१	६४
रक्तसरोरुह	१	१०	४१	रत	२	७	५७	रत्नक	२	६	११६
रक्ताङ्ग	२	४	१४६	रतिपति	१	१	२६	"	३	५	१७
रक्तोत्पल	१	१०	४२	रत्न	२	९	९३	रव	१	६	२२
रक्षःसम	४	५	२७	"	३	३	१२६	रवण	३	१	३८
रक्षस्	१	१	११	रत्नसानु	१	१	४९	रवि	१	३	३१
"	१	१	६०	रत्नाकर	१	१०	२	रशना	२	६	१०८
रक्षित	३	१	१०६	रत्नि	२	६	८६	रश्मि	३	३	१३८
रक्षिवर्ग	२	८	६	रथ	२	४	३०	रस	१	५	७
रक्षण	३	२	८	"	२	८	५१	"	१	५	९
रङ्ग	२	५	१०	रथकट्या	२	८	५५	"	१	७	१७
रङ्ग	२	९	१०६	रथकार	२	१०	४	"	२	९	९९
रङ्गाजीव	२	१०	७	"	२	१०	९	"	३	३	२२७
रचना	२	६	१३७	रथगुप्ति	२	८	५७	रसगर्भ	२	९	१०२
रजक	२	१०	१०	रथद्रु	२	४	२६	रसज्ञा	२	६	९१
रजत	२	९	९६	रथाङ्ग	२	५	२२	रसना	२	६	९१
"	३	३	७९	"	२	८	५५	रसवती	२	६	२७
रजनी	१	४	४	रथिक	२	८	७६	रसा	२	१	२
"	२	४	१५३	रथिन्	२	८	६०	"	२	४	८४
रजनीमुख	१	४	६	"	२	८	७६	"	२	४	१२३
रजस्	१	४	२९	रथिर	२	८	७६	रसाञ्जन	२	९	१०१
"	२	६	२१	रथ्य	२	८	४६	रसातल	१	८	१
"	२	८	९८	रथ्या	२	२	३	रसाल	२	४	३३
"	३	३	२३२	"	२	८	५५	"	२	४	१६३
रक्षस्वला	२	६	२०	रद	२	६	९१	रसाला	२	९	४४
रङ्गु	२	१०	२७	रदन	२	६	९१	रसित	१	३	८
रजन	२	६	१३२	रदनच्छद	२	६	९०	रसोनक	२	४	१४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रहस्	२	८	२२	राजीव	१	१०	१९	रीष्टि	२	८	८९
"	२	८	२३	"	१	१०	४१	रीढा	१	७	२३
रहस्य	२	८	२३	राज्याङ्ग	२	८	१८	रीण	३	१	९२
राका	१	४	८	रात्रि	१	४	४	रोति	२	९	९७
राक्षस	२	१	५९	रात्रिचर	१	१	६०	"	३	३	६८
राक्षसी	२	४	१२८	रात्रिचर	१	१	६०	रोतिपुष्प	२	९	१०३
राक्षा	२	६	१२५	रादान्त	१	५	४	रुक्प्रतिक्रिया	२	६	५०
राहुव	२	६	१११	राध	१	४	१५	रुक्म	२	९	९५
राज्	२	८	१	राधा	१	३	२२	रुक्मकारक	२	१०	८
राजक	२	८	३	राम	१	१	२३	रुग्ण	३	१	२१
राजन्	२	८	२	"	२	५	११	रुच्	१	३	३४
"	३	३	१११	"	३	३	१४०	रुचक	२	४	५१
राजन्य	२	८	१	रामठ	२	९	४०	"	२	४	७८
राजन्यक	२	८	४	रामा	२	६	४	"	२	९	४३
राजन्वत्	२	१	१३	राम्म	२	७	४५	"	२	९	१०९
राजबला	२	४	१५३	राल	२	६	१२७	रुचि	१	३	३४
राजबीजिन्	२	७	२	राशि	२	५	४२	"	३	३	२९
राजराज	१	१	६८	"	३	३	२१५	रुचिर	३	१	५२
राजवंश	२	७	२	राहू	२	८	१७	रुच्य	३	१	५२
राजवध	२	१	१३	"	३	३	१८४	रुज्	२	६	५१
राजवृक्ष	२	४	२३	राष्ट्रिका	२	४	९४	रुजा	२	६	५१
राजसदन	२	२	१०	राष्ट्रिय	१	७	१४	रुदित	१	७	३५
राजसभा	३	५	९	रासम	२	९	७७	रुद्ध	३	१	९०
राजसूय	३	५	३१	राका	२	४	११४	रुद्र	१	१	१०
राजहंस	२	५	२४	"	२	४	१४०	"	१	१	३४
राजादन	२	४	३५	राहु	१	३	२६	रुद्राणो	१	१	३७
"	२	४	४५	रिक्तक	३	१	५६	रुधिर	२	६	६४
राजाहं	२	६	१२६	रिक्त	२	९	९०	"	३	५	२२
राजि	२	४	४	रिक्कण	१	७	३६	रुह	२	५	१०
राजिका	२	९	१९	रिपु	२	८	१०	रुषती	१	६	१८
राजिक	१	८	५	रिट	३	३	३६	रुष्	१	७	२६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रहा	२	४	१५८	रोधस्	१	१०	७	कक्षमी	२	४	११२
रक्ष	३	३	२२६	रोप	२	८	८७	"	२	८	८२
रूप	१	५	७	रोमन्	२	६	९९	लक्ष्मीवत्	३	१	१४
रूपाजीवा	२	६	१९	रोमन्थ	३	५	१९	लक्ष्म	१	७	३३
रूढ्य	२	९	९१	रोमहर्षण	१	७	३५	"	२	८	८६
"	२	९	९६	रोमाञ्च	१	७	३५	लगुड	३	५	१८
"	३	३	१६१	रोष	१	७	२६	लभ	१	३	२७
रूप्याध्यक्ष	२	८	७	रोहिणी	२	९	६७	लभक	२	१०	४४
रूपित	३	१	८९	रोहित	१	५	१५	लघु	१	१	६४
रेचित	२	८	४८	"	१	१०	१९	"	२	४	१३३
रेणु	२	८	९८	"	३	५	१०	"	३	३	२८
रेणुका	२	४	१२०	रोहितक	२	४	४९	लघुकथ	२	४	१६५
रैतस्	१	६	६२	रोहिताश्व	१	१	५५	लक्षा	३	५	७
रैफ	३	१	५४	रोहिन्	२	४	४९	लक्ष्मोपिका	२	४	१३३
"	३	३	१३२	रौद्र	१	७	१७	लज्जा	१	७	२३
रैवतीरमण	१	१	२३	"	१	७	२०	लज्जाशील	३	१	२८
रैवा	१	१०	३२	रौमक	२	९	४२	लज्जित	३	१	९१
रै	२	९	९०	रौरव	१	९	१	लट्वा	३	५	१०
"	३	३	१६६	रौहिण्य	१	१	२४	लता	२	४	९
रोक	१	८	२	"	१	३	२६	"	३	४	१०
रोग	२	६	५१	रौहिष	२	४	१६६	"	२	४	५५
रोगहारिन्	२	६	५७	"	२	५	१०	"	२	४	७२
रोचन	२	४	४७	ल				"	२	४	१३३
रोचनी	२	४	१०८	लकुच	२	४	६०	"	२	४	१५०
"	२	४	१४६	लक्ष	२	८	८६	लतार्क	२	४	१४८
रोचिष्णु	२	६	१०१	लक्षण	१	३	१७	लणन	२	६	८९
रोचिस्	१	३	३४	लक्ष्मण	३	१	१४	लपित	१	६	१
रोदन	२	६	९३	लक्ष्मण	२	५	२५	"	३	१	१०७
रोदनी	२	४	९२	लक्ष्मण	१	३	१७	लभ्य	३	१	१०४
रोदस्	३	३	२३०	"	३	३	१२४	लभ्यवर्ण	२	७	६
रोदसी	३	३	२३०	कक्षमी	१	१	२७	लभ्य	२	८	२४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
लम्बन	२	६	१०४	लामञ्जक	२	४	१६५	लेखपत्र	१	१	४२
लम्बोदर	१	१	३८	लालसा	१	७	२८	लेखा	२	४	४
लय	१	७	९	"	३	३	२२९	लेपक	२	१०	६
ललना	२	६	३	लाला	२	३	६७	लेश	३	१	६२
ललन्तिका	२	६	१०४	लालाटिक	३	३	१७	लेष्टु	३	९	१२
ललाट	२	६	९२	लाव	२	५	३५	लेह	२	९	५६
ललाटिका	२	६	१०३	लासिका	१	७	८	लांक	२	१	६
ललाम	३	३	१४४	लास्य	१	७	१०	"	३	३	२
ललामक	२	६	१३५	लिङ्गव	२	४	६०	लोकजित	१	१	१३
ललित	१	७	३१	लिङ्गा	३	५	१०	लोकायत	३	५	३२
लव	३	१	६२	लिङ्ग	३	३	२५	लोकालोक	२	३	२
"	३	२	२४	लिङ्गवृत्ति	२	७	५४	लोकेश	१	१	१६
लवङ्ग	२	६	१२५	लिपिकार	२	८	१५	लोचन	२	६	९३
लवण	१	५	९	लिपि	२	८	१६	लोचमस्तक	२	४	१११
"	३	५	२३	लित	३	१	९०	लोप्त्र	२	१०	२५
लवणोद	१	१०	२	लितक	२	८	८८	लोभ्र	२	४	३३
लवन	३	२	२४	लिप्ता	१	७	२७	लोपामुद्रा	१	३	२०
लवित्र	२	९	१३	लिबि	२	८	१६	लोमन्	२	६	९९
लशुन	२	४	१४८	लीढ	३	१	११०	लोमशा	२	४	१३४
लस्तक	२	८	८५	लीला	१	७	३२	लोल	३	१	७४
लाक्षा	२	६	१२५	"	१	७	३२	"	३	३	२०६
"	३	५	१०	"	३	३	२००	लोलुप	३	१	२२
लाक्षाप्रसादन	२	४	४१	लुठित	२	८	५०	लोलुम	३	१	२२
लाङ्गल	२	९	१३	लुब्ध	३	१	२२	लोष्ट	२	९	१२
लाङ्गलिकी	२	४	११८	लुब्धक	२	१०	२१	लोष्टमेदन	२	९	१२
लाङ्गली	२	४	१११	लुलाय	२	५	४	लोह	२	६	१२६
"	२	४	१६८	लृता	२	५	१३	"	२	९	९८
लाङ्गुल	२	८	५०	लृन	३	१	१०३	"	२	९	९९
लाज	२	९	४७	लृम	२	८	५०	"	३	५	२३
लाञ्छन	१	३	१७	लेख	१	१	८	लोहकारक	२	१०	७
लाभ	२	९	८०	लेखक	२	८	१५	लोहपृष्ठ	२	५	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
लोहल	३	१	३७	वञ्चक	२	५	५	वथू	२	४	१३३
लोहाभिसार	२	८	९४	"	३	१	४७	"	२	६	२
लोहित	१	५	१५	वञ्चित	३	१	४१	"	२	६	८
"	२	६	६४	वञ्जुल	२	४	२७	"	३	३	१०२
लोहितक	२	९	९२	"	२	४	३०	वध्य	३	१	४५
लोहितचन्दन	२	६	१२४	"	२	४	६४	वध्री	२	१०	३१
लोहिताङ्ग	१	३	२५	वट	२	४	३२	वन	१	१०	३
व				वटक	३	५	१७	"	२	४	१
वंश	२	४	१६०	वटो	२	१०	२७	"	३	३	१२६
"	२	७	१	वडवा	२	८	४६	वनतिक्तिका	३	४	८५
"	३	३	२१५	वड्	३	१	६१	वनप्रिय	२	५	१९
वंशिक	२	६	१२६	वणिज्	२	९	७८	वनमक्षिका	२	५	२७
वंशरोचना	२	९	१०९	वणिज्या	२	९	७९	वनमालिन्	१	१	२१
वक्तव्य	३	३	१६०	वण्टक	२	९	८९	वनमुद्ग	२	९	१७
वक्र	४	१	७१	वत्स	२	६	७८	वनमृङ्गाट	२	४	९९
वक्तु	३	१	३५	"	२	९	६२	वनस्पति	२	४	६
वक्र	२	६	२९	"	३	३	२२७	वनायुज	२	८	४५
वक्षस्	२	६	७८	वत्सक	२	४	६६	बनिता	२	६	२
वक्ष्ण	२	६	७३	वत्सतर	२	९	६२	"	३	३	७४
वक्त्र	२	९	१०६	वत्सनाम	१	८	११	वनीयक	३	१	४९
वचन	१	६	१	वत्सर	१	४	१३	वनीकस्	२	५	३
वचनेस्थित	३	१	२४	"	१	४	२०	वन्दा	२	४	८२
वचस्	१	६	१	वत्सल	३	१	१४	वन्दारु	३	१	२८
वचा	२	४	१०२	वत्साध्वी	२	४	८२	वन्द्या	२	४	४
वज्र	१	१	४७	वद	३	१	३५	वपा	१	८	२
"	२	४	१०५	वदन	२	६	८९	"	२	६	६४
"	३	३	१८५	वदान्य	३	१	७	वपुस्	२	६	७०
वज्रनिर्घोष	१	३	१०	"	३	३	१६१	वप्र	२	३	३
वज्रपुष्प	२	४	७३	वदावद	३	१	३५	"	२	९	११
वज्रिन्	१	१	४२	वध	२	८	११५	"	२	९	१०५
								वमथु	२	३	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वमथु	२	८	३७	वरिवस्या	२	७	३५	वतिक	२	५	३५
वमि	२	६	५५	वरिवस्तियत	३	१	१०२	वतिष्णु	३	१	२९
वयस्	३	३	२३१	वरिष्ठ	२	९	९७	वर्तुल	३	१	६०
वयस्थ	२	६	४२	वरिष्ठ	३	१	१११	वर्तमन्	२	१	१५
वयस्था	२	४	५८	वरी	२	४	१००	"	३	३	१२१
"	२	४	१३७	वरीयस्	३	३	२३६	वर्धक	२	४	९०
"	२	४	१४४	वरुण	१	१	६१	वर्धकि	२	१०	९
वयस्य	२	८	१२	"	१	३	२	वर्धन	३	१	२८
वयस्या	२	६	१२	"	२	४	२५	"	३	२	७
वर	२	६	१२४	वरुणात्मजा	२	१०	३९	वर्धमान	२	४	५१
"	३	२	८	वरूथ	२	८	५७	वर्धमानक	२	९	३२
"	३	३	१७३	वरुथिनी	२	८	७८	वर्धिष्णु	३	१	२८
वरटा	२	५	२५	वरण्य	३	१	५७	वर्बरा	२	४	१३९
"	२	५	२७	वर्कर	२	१०	२३	वर्मन्	२	८	६४
वरण	२	२	३	वर्ग	२	५	४१	वर्मित	२	८	६५
"	२	४	२५	वर्चस्	३	३	२३१	वयं	३	१	५७
वरण्ड	३	५	१८	वर्चस्क	२	६	६८	वर्या	२	६	७
वरत्रा	२	८	४२	वर्ण	२	७	१	वर्वणा	२	५	२६
"	२	१०	३१	"	२	८	४२	वर्वर	२	४	९०
वरद	३	१	७	"	३	३	४८	वर्ष	१	३	११
वरवर्णिनी	२	६	४	वर्णक	२	६	१३३	"	३	३	२२४
"	२	९	४१	"	३	५	३८	वर्षवर	२	८	९
वराङ्ग	३	३	२६	वर्णित	३	१	११०	वर्षा	१	४	१९
वराङ्गक	२	४	१३४	वर्णिन्	२	७	४२	वर्षाभू	१	१०	२४
वराटक	१	१०	४३	वर्तक	२	५	३५	वर्षाभ्वी	१	१०	२४
"	२	१०	२७	"	३	३	११	वर्षीयस्	२	६	४३
"	३	५	३८	"	२	९	१	वर्षोपल	१	३	१२
वरारोहा	२	६	४	वर्तन	३	१	२९	वर्ष्मन्	२	६	७०
वराशि	२	६	११६	"	३	१	२९	"	३	३	१२३
वराह	२	५	२	वर्तनी	२	१	१५	वलक्ष	१	५	१३
वरिवसित	३	१	१०२	वर्ति	२	६	१३३				

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
वल्ज	१	३	३१	वष्कयिणि	२	९	७१	वाक्य	१	६	२
वल्जमी	२	२	१५	वसति	३	३	६७	वागीश	३	१	३४
वलय	२	६	१०७	वसन	२	६	११५	वागुरा	२	१०	२६
वलयित	३	१	९०	वसन्त	१	४	१८	वागुरिक	२	१०	१४
वलिन	२	६	४५	वसा	२	६	६४	वाग्मिन्	३	१	३५
वलिभ	२	६	४५	वसु	१	१	१०	वाक्मुख	१	६	९
वलिर	२	६	४९	"	२	४	८१	वाच्	१	६	१
वलीक	२	२	१४	"	२	९	९०	वाच्यम	२	५	४२
वलीमुख	२	५	३	"	३	३	२२८	वाचस्पति	१	३	२४
वल्क	२	४	१२	वसुक	२	४	८०	वाचाट	३	१	३६
वल्कल	२	४	१२	"	२	९	४२	वाचाल	३	१	३६
वल्गित	२	८	४८	"	२	९	४२	वाचिक	१	६	१७
वल्मोक	२	१	१४	वसुदेव	१	१	२२	वाचोयुक्तिपट्ट	३	१	३५
वल्मकी	१	७	३	वसुधा	२	१	३	वाज	२	८	८७
वल्मभ	३	१	५३	वसुन्धरा	२	१	३	वाजपेय	३	५	३०
"	३	३	१३७	वसुमती	२	१	३	वाजिदन्तक	२	४	१०३
वल्मरी	२	४	१३	वस्ति	२	६	७३	वाजिन्	२	५	३३
वल्मो	२	४	९	वस्तु	३	५	१२	"	२	८	४४
"	३	५	३	वस्त्य	२	२	५	"	३	३	१०७
वल्मर	२	६	६३	वस्त्र	२	६	११५	वाजिशाला	२	२	७
वश	३	२	८	वस्त्रयोनि	२	६	११०	वाञ्छा	१	७	३७
वशक्रिया	३	२	४	वस्त्र	२	९	७९	वाटी	३	५	४२
वशा	२	८	३६	वस्त्रसा	२	६	६६	वाट्यालका	२	४	१०७
"	२	९	६९	वह	२	९	६३	वाडव	२	७	४
"	३	३	२१७	वह्नि	१	१	५३	"	२	८	४६
वशिक	३	१	५६	"	१	३	३	वाडव्य	३	२	४१
वशिर	२	४	९७	वह्निशिख	२	९	१०६	वाणि	२	१०	२८
"	२	९	४१	वह्निसंशक	२	४	८०	वाणिज	२	९	७८
वश्य	३	१	२५	वा	३	३	२५०	वाणिज्य	२	९	२
वषट्	३	४	८	"	३	४	९	"	२	९	७९
वषट्कृत	२	७	२७	"	३	४	१५	वाणिनी	३	३	११२
				वाक्पति	१	१	३५				



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वाणी	१	६	१	वामा	२	६	२	वार्तावह	२	१०	१५
वात	१	१	६३	वामी	२	८	४६	वार्धक	२	६	४०
वातक	२	४	१४९	वायदण्ड	२	१०	२८	वार्धुषि	२	९	५
वातकिन्	२	६	५९	वायस	२	५	२०	वार्धुषिक	२	९	५
वातपोष	२	४	२९	वायसाराति	२	५	१५	वार्मण	३	२	४३
वातप्रमी	२	५	७	वायसी	२	४	१५१	वाषिक	२	४	१५०
वातमृग	२	५	७	वायसोली	२	४	१४४	वाल	२	६	९५
वातरोगिन्	२	६	५९	वायु	१	१	६१	वालधि	२	८	५०
वाताघन	२	२	९	वायुसख	१	१	५५	वालपाश्या	२	६	१०३
वाताधु	२	५	८	वार्	१	१०	३	वालहस्त	२	८	५०
वातूल	३	३	१९६	वार	२	५	३९	वालुक	२	४	१२१
वात्सक	२	९	६०	"	३	३	१६२	वाल्क	२	६	१११
वादर	२	६	१११	वारण	२	८	३४	वावदूक	३	१	३५
वादित्र	१	७	५	वारणबुसा	२	४	११३	वावृत्त	३	१	९२
वाध	१	७	४	वारमुख्या	२	६	१९	वाशिका	२	४	१०३
वान	२	४	१५	वाटबाण	२	८	६३	वाशित	१	६	२५
वानप्रस्थ	२	४	२८	वारस्त्री	२	६	१९	वास	२	२	६
"	२	७	३	वाराही	२	२	१५१	वासक	२	४	१०३
वानर	२	५	३	वारि	१	१०	३	वासगृह	२	२	८
वानस्पत्य	२	४	६	वारिद	१	३	७	वासन्ती	२	४	७२
वानीर	२	४	३०	वारिपणी	१	१०	३८	वासयोग	२	६	१३४
वानेय	२	४	१३१	वारिप्रवाह	२	३	५	वासर	१	४	२
वापी	१	१०	२८	वारिकाह	१	३	६	वासव	१	१	४२
वाप्य	२	४	१२६	वारी	२	८	४३	वासस्	२	६	११५
वाम	३	३	१४५	वारुणी	३	३	५२	वासित	२	६	१३४
वामदेव	१	१	३२	वार्त	२	६	५७	"	२	९	४६
वामन	१	३	३	"	३	३	७५	वासिता	३	३	७५
"	२	६	४६	वार्ता	१	६	७	वासुकि	१	८	४
"	३	१	७०	"	२	९	१	वासुदेव	१	१	२०
वामलूर	२	१	१४	"	३	३	७५	वासू	१	७	१४
वामलोचना	२	६	३	वार्ताकी	२	४	११४	वास्तु	२	२	१९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वास्तुक	२	४	१५८	विक्रयिक	२	९	७९	विट	३	५	१७
वास्तोष्पति	१	१	४३	विक्रान्त	२	८	७७	विटङ्क	२	२	१५
वास्त	२	८	५४	विक्रिया	३	२	१५	विटप	२	४	१४
वाह	२	८	४४	विक्रेतृ	२	९	७९	"	३	३	१३१
"	२	९	८८	विक्रेय	२	९	८२	विटपिन्	२	४	५
वाहद्विषय	२	५	४	विष्ठव	३	१	४४	विटखदिर	२	४	५०
वाहस	१	८	५	विष्ठाव	३	२	३७	विटचर	२	१०	२३
वाहिस्थ	२	८	३९	विगत	३	१	१००	विडङ्ग	२	४	१०६
वाहिनी	२	८	७८	विगतातंवा	२	६	२१	विडाल	२	५	६
"	२	८	८१	विग्र	२	६	४६	विडौत्रस्	१	१	४१
"	३	३	११२	विग्रह	२	६	७०	वितण्डा	३	५	९
वाहिनीपति	२	८	६२	"	२	८	१८	वितथ	१	६	२१
वि	२	५	३३	"	२	८	१०४	वितरण	२	७	२९
विकङ्कत	२	४	३७	"	३	२	२२	वितर्दि	२	२	१६
विकच	२	४	७	विवस	२	७	२८	वितस्ति	२	६	८४
विकर्तन	१	३	२९	विघ्न	३	२	१९	वितान	२	६	१००
विकलाङ्ग	२	६	४६	विघ्नराज	१	१	३८	"	३	३	११३
विकसा	२	४	९०	विचक्षण	२	७	६	वितुन्न	२	४	१५९
विकसित	२	४	८	विचयन	३	२	३०	वितुन्नक	२	४	१२६
विकस्वर	३	१	३०	विचचिका	२	६	५३	"	२	९	३७
विकार	३	२	१५	विचारणा	१	५	२	"	२	९	१०१
विकासिन्	३	१	३०	विचारित	३	१	९९	वित्त	२	९	९०
विकिर	२	५	३३	विचिकित्सा	१	५	३	"	३	१	९
विकिरण	२	४	८०	विच्छन्दक	२	२	११	"	३	१	९९
विकुर्वाण	३	१	७	विच्छाय	३	५	२६	विदर	३	२	५
विकृत	१	७	१९	विजन	२	८	२२	विदल	३	५	३२
"	२	६	५८	विजय	२	८	११०	विदारक	१	१०	१०
विकृति	३	२	१५	विजिल	२	९	४६	विदारी	२	४	११०
विक्रम	२	८	१०२	विज्ञ	३	१	४	विदारिगन्धा	२	४	११५
"	३	३	१४१	विज्ञात	३	१	९	विदित	३	१	१०८
विक्रय	२	९	८३	विज्ञान	१	५	६	"	३	१	१०९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
विदिश	१	३	५	विधुर	३	२	२०	विपुल	३	१	६१
विदु	२	८	३७	विधुवन	३	२	४	विप्र	२	७	४
विदुर	२	४	३०	विधूनन	३	२	४	विप्रकार	३	२	१५
"	३	१	३०	विधेय	३	१	२४	विप्रकृत	३	१	४१
विदुल	२	४	३०	विनयग्राहिन्	३	१	२४	विप्रकृष्टक	३	१	६८
विद्व	३	१	९९	विना	३	४	३	विप्रतीसार	१	७	२५
विद्वकर्णी	२	४	८४	विनायक	१	१	१४	विप्रयोग	३	२	२८
विद्याधर	१	१	११	"	१	१	३८	विप्रलम्भ	३	१	४१
विद्युत्	१	३	९	"	३	३	६	विप्रलम्भ	१	७	३६
"	३	५	३	विनाश	३	२	२२	"	३	२	२८
विद्वधि	२	६	५६	विनीत	२	८	४४	विप्रलाप	१	६	१६
विद्व	२	८	१११	"	३	१	२५	विप्रशिक्षा	२	६	१९
विदुत	३	१	१००	विन्दु	३	१	३०	विप्रुष्	१	१०	६
विद्रुम	२	९	९३	विन्ध्य	२	३	३	विप्लव	३	२	१४
विद्रुमलता	२	४	१२९	विन्न	३	१	९९	विप्रुष	१	१	७
विद्रस्	२	७	५	"	३	१	१०४	विमव	२	९	९०
"	३	३	२३५	विपक्ष	२	८	११	विमाकर	१	३	२८
विद्वेष	१	७	२५	विपञ्ची	१	७	३	विमावरी	१	४	४
विधवा	२	६	११	विपण	२	९	८२	विभावसु	१	१	५६
विधा	२	१०	३८	विपणि	२	२	२	"	१	३	३०
"	३	३	१०१	"	३	३	५२	"	३	३	२२६
विधातृ	१	१	१७	विपत्ति	२	८	८२	विभूति	१	१	३६
विधि	१	१	१७	विपथ	२	१	१६	विभूषण	२	६	१०१
"	१	४	२८	विपद्	२	८	८२	विभ्रम	१	७	३१
"	२	७	३९	विपर्यय	३	२	३३	"	३	३	१४२
"	३	३	१००	विपर्याप्त	३	२	३३	विभ्राज्	२	६	१०१
विधु	१	१	२२	विपश्चित्	२	७	५	विमनस्	३	१	८
"	१	३	१४	विपादिका	२	६	५२	विमर्दन	३	२	१३
"	३	३	९९	विपाश्	१	१०	३३	विमला	२	४	१४३
विधुत	३	१	१०७	विपाशा	१	१०	३३	विमातृज	२	६	२५
विधुन्तुष्ट	१	३	२६	विपिन	२	४	१	विमान	१	१	४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वियत्	१	२	२	विवस्वत्	३	३	५७	विश्राव	३	२	२८
वियद्गङ्गा	१	१	४९	विवाद	१	६	९	विश्रुत	३	१	९
वियम	३	२	१८	विवाह	२	७	५६	विश्व	१	१	१०
वियात	३	१	२५	विविक्त	२	८	२२	"	२	९	३८
वियाम	३	२	१८	"	३	३	८२	"	३	१	६५
विरजस्तमस्	२	७	४४	विविध	३	१	९३	विश्वकद्रु	२	१०	२२
विरति	३	२	३७	विवेक	२	७	२८	विश्वकेतु	१	१	२७
विरल	३	१	६६	विश्वोक	१	७	३१	विश्वकर्मन्	३	३	१०९
विराज्	२	८	१	विश्	२	६	६८	विश्वभेषज	२	९	३८
विराव	१	६	२३	"	२	९	१	विश्वम्भर	१	१	२२
विरिञ्च	१	१	१७	"	३	३	२१४	विश्वम्भरा	२	१	२
विरूपाक्ष	१	१	३२	विशङ्कट	३	१	६०	विश्वसृज्	१	१	१७
विरोचन	१	३	३०	विशद	१	५	१२	विश्वस्ता	२	६	११
"	३	३	१०८	विशर	२	८	११५	विश्वा	२	४	९९
विरोध	१	७	२५	विशस्या	२	४	८३	विश्वास	२	८	२३
विरोधन	३	२	२१	"	२	४	१३६	विष	१	८	९
विरोधोक्ति	१	६	१६	"	३	३	१५६	"	३	३	२२३
विलक्ष	३	१	२६	विशसन	२	८	११४	विषधर	१	८	७
विलक्षण	३	२	२	विशाख	१	१	४०	विषमच्छद	२	४	२३
विलम्ब	३	२	२८	विशाखा	१	३	२२	विषय	१	५	७
विलाप	१	६	१६	विशाय	३	२	३२	"	२	२	८
विलास	१	७	३१	विशारण	३	८	११२	"	३	२	११
विलीन	३	१	१००	विशारद	३	३	९५	"	३	३	१५३
विलेपन	२	६	१३३	विशाल	३	१	६०	विषयिन्	१	५	८
"	३	२	२७	विशालता	२	६	११४	विषवैद्य	१	८	११
विलेपी	२	९	५०	विशालत्वच्	२	४	२३	विषा	२	४	९९
विवध	३	३	९६	विशाला	२	४	१५६	विषाक्त	२	८	८८
विवर	१	८	१	विशिक्ष	२	८	८६	विषाण	३	३	५६
विवर्ण	२	१०	१५	विशिक्षा	२	२	३	विषाणी	३	४	११९
विवश	३	१	४४	विशेषक	२	६	१२३	विपुव	१	४	१४
विवस्वत्	१	३	२९	विश्राणन	२	७	२९	विपुवत्	१	४	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
विष्किर	२	५	३३	विस्मय	१	७	१९	वीर	१	७	१७
विष्टप	३	१	६	विस्मयान्वित	३	१	२६	"	१	७	१८
विष्टर	३	३	१७०	विस्मृत	३	१	८६	"	२	८	७७
विष्टरश्रवस्	१	१	१७	विस्त्र	१	५	१२	वीरण	२	४	१६४
विष्टि	१	९	६	विस्त्रम्भ	२	८	२३	वीरतर	२	४	१६४
विष्टा	२	६	६८	"	३	३	१३५	वीरतरु	२	४	४५
विष्णु	१	१	१८	विस्त्रसा	२	६	४१	वीरपत्नी	२	६	५३
विष्णुकान्ता	२	४	१०४	विहग	२	५	३२	वीरपान	२	८	१०३
विष्णुपद्	१	२	२	विहङ्ग	२	५	३२	वीरभार्या	२	६	१६
विष्णुपदी	१	१०	३१	विहङ्गम	२	५	३२	वीरमारु	२	६	१६
विष्णुरथ	१	१	२९	विहङ्गिका	२	१०	२९	वीरवृक्ष	२	४	४२
विष्य	३	१	४५	विहसित	१	७	३५	वीराशंसन	२	८	१००
विष्वच्	३	४	१३	विहस्त	३	१	४३	वीरभू	२	६	१६
विष्वक्सेन	१	१	१९	विहापित	२	७	२९	वीरहन्	२	७	५२
विष्वक्सेनप्रिया	२	४	१५१	विहायस्	१	३	२	वीरधू	२	४	९
विष्वक्सेना	२	४	५६	"	२	५	३२	वीर्य	१	७	२९
विष्वद्रथच्	३	१	३४	विहार	३	२	१६	"	२	६	६२
विसर	२	५	३९	विहल	३	१	४४	"	३	३	१५५
विसर्जन	२	७	२९	वीकाश	३	३	२१५	वीवध	३	३	२६
विसर्पण	३	२	२३	वीचि	१	१०	५	वुक	२	४	८१
विसंवाद	१	७	३६	वीणा	१	७	३	वृक	२	५	७
विसार	१	१०	१७	"	३	५	३	वृकधूप	२	६	१२८
विसारिन्	३	१	३१	वीणावाद	२	१०	१३	"	२	६	१२९
विस्त	३	१	८६	वीन	२	८	४३	वृक्कण	३	१	१०३
विस्तार	३	१	३१	वीतंस	२	१०	२६	वृक्ष	२	४	५
विस्तमर	३	१	३१	वीति	२	८	४३	वृक्षभेदिन्	२	१०	३४
विस्तर	३	२	२२	वीतिहोत्र	१	१	५३	वृक्षरहा	२	४	८२
विस्तार	३	२	२२	वीथी	२	४	४	वृक्षवाटिका	२	४	२
विस्मृत	३	१	८६	"	३	३	८७	वृक्षादनी	२	४	८२
विस्फार	२	८	१०८	वीध	३	१	५५	"	२	१०	३४
विस्फोट	२	६	५३	वीनाह	१	१०	२७	वृक्षाम्ल	२	९	३५
								वृजिन	१	४	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वृजिन	३	१	७१	वृन्द	२	५	४०	वेणुष्म	२	१०	१३
"	३	३	१०९	वृन्दारक	१	१	९	वेतन	२	१०	३८
वृत्	३	१	९२	"	३	३	१६	वेतस	२	४	२९
वृत्ति	३	२	८	वृन्दिष्ठ	३	१	११२	वेतस्वत्	२	७	९
वृत्त	३	१	६९	वृश्चिक	२	५	१४	वेताल	३	५	२१
"	३	१	९२	"	२	५	१४	वेत्रवती	१	१०	३४
"	३	३	७८	"	३	३	७	वेद	१	६	३
वृत्तान्त	१	६	७	वृष	१	४	२४	वेदना	३	२	६
"	३	३	६३	"	२	४	१०३	वेदि	२	७	१८
वृत्ति	२	९	१	"	२	४	११६	वेदिका	२	२	१६
"	३	३	७३	"	२	९	५९	वेध	३	२	८
वृत्र	३	३	१६४	"	३	३	२२१	वेधनिका	२	१०	३३
वृत्रहन्	१	१	४२	वृषण	२	६	७६	वेधमुख्यक	२	४	१३५
वृथा	३	३	२४८	वृषदंशक	२	५	६	बंधस्	१	१	१७
"	३	४	४	वृषध्वज	१	३	३४	"	३	३	२२९
वृद्ध	२	४	१२२	वृषन्	१	१	४२	वेधित	३	१	९९
"	२	६	४२	वृषभ	२	९	५९	वेपथु	१	७	३८
"	३	३	१००	वृषल	२	१०	१	वेमन्	२	१०	२८
वृद्धत्व	२	६	४०	वृषस्यन्ती	२	६	९	वेला	३	३	१९९
वृद्धदारक	२	४	१३७	वृषा	२	४	८७	वेरल	२	४	१०६
वृद्धनामि	२	६	६१	वृषाकपायी	३	३	१५६	वेरलज	२	९	३५
वृद्धश्वस्	१	१	४१	वृषाकपि	३	३	१३०	वेरिलत	३	१	७१
वृद्धसङ्घ	२	६	४०	वृषी	२	७	४६	"	३	१	८७
वृद्धा	२	६	१२	वृष्टि	१	३	११	वेश	२	२	२
वृद्धि	२	४	११२	वृष्णि	२	९	७६	वेशन्त	१	१०	२८
"	२	८	१९	वेग	३	३	२०	वेशम्	२	२	४
"	३	२	९	वेगिन्	२	८	७३	वेशम्भू	२	२	१९
वृद्धिजीविका	२	९	४	वेणि	२	६	९८	वेश्या	२	६	१९
वृद्धोक्ष	२	९	६०	वेणी	२	४	६९	वेष	२	६	९९
वृद्धयाजीव	२	९	५	वेणु	२	४	१६१	वेष्टित	३	१	९०
वृन्त	२	४	१५	वेणुक	२	८	४१	वेसवार	२	९	३५

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
वेद्वत्	२	९	६९	वैरशुद्धि	२	८	११०	व्यस्त	३	१	७२
वै	३	४	५	वैरिन्	२	८	१०	व्याकुल	३	१	४३
"	३	४	१५	वैवधिक	२	१०	१५	व्याकोश	२	४	७
वैकक्षिक	२	६	१३६	वैवस्वत	१	१	५९	व्याघ्र	२	५	१
वैकुण्ठ	१	१	१७	वैशाख	१	४	१६	"	३	१	५९
वैजयन्त	२	६	३९	"	२	९	७४	व्याघ्रनख	२	४	१२९
वैजयन्त	१	१	४६	वैश्य	२	९	१	व्याघ्रपाद	२	४	३७
वैजयन्तिक	२	८	७१	वैश्रवण	१	१	६९	व्याघ्रपुच्छ	२	४	५०
वैजयन्तिका	२	४	६५	वैश्वानर	१	१	५३	व्याघ्राट	२	५	१५
वैजयन्ती	२	८	९९	वैसारिण	१	१०	१७	व्याघ्री	२	४	९३
वैशानिक	३	१	४	वौषट्	३	४	८	व्याज	१	७	३०
वैणव	२	४	१८	व्यक्त	३	३	६२	"	१	७	३३
वैणविक	२	१०	१३	व्यक्ति	१	४	३१	व्याह	३	३	४२
वैणिक	२	१०	१३	व्यग्र	३	३	१९०	व्याहायुध	२	४	१२९
वैतंसिक	२	१०	१४	व्यजन	२	६	१४०	व्याघ	२	१०	२१
वैतनिक	२	१०	१५	व्यजक	१	७	१६	व्याधि	२	४	१२६
वैतरणी	१	९	२	व्यजन	३	३	११६	"	२	६	८१
वैतालिक	२	८	९७	"	३	५	२३	व्याधिघात	२	४	२४
वैदेहक	२	९	७८	व्यहम्बक	३	४	५१	व्याधित	२	६	५८
"	२	१०	३	व्यत्यय	३	२	२३	व्यान	१	१	६३
वैदेही	२	४	९६	व्यत्यास	३	२	२३	व्यापाद	१	५	४
वैद्य	२	६	५७	व्यथा	१	९	३	व्याम	२	६	८७
वैद्यमातृ	२	४	१०३	व्यध	३	२	८	व्याल	१	८	७
वैधात्र	१	१	५१	व्यध्व	२	१	१६	"	३	३	१९७
वैधेय	३	१	४८	व्यय	३	२	१७	व्यालप्रादिन्	१	८	११
वैनतेय	१	१	२९	व्यलोक	३	३	१२	व्यास	३	२	२२
वैनीतक	२	८	५८	व्यनधा	१	३	११	व्याहार	१	६	९
वैमात्रेय	२	६	२५	व्यवहार	१	६	८	व्युत्थान	३	३	११८
वैयाघ्र	२	८	५३	व्यवाय	२	७	५७	व्युष्टि	३	३	३८
वैर	१	७	२५	व्यसन	३	३	१२०	व्यूढ	३	३	४५
वैरनिर्यातन	१	८	११०	व्यसनार्त	३	१	४३	व्यूढकङ्कट	२	८	३५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
व्युति	२	१०	२८	शकुनि	२	५	३२	शक्तिनी	२	४	१२६
व्यूह	२	५	३९	शकुन्त	२	५	३२	शची	१	१	४५
"	२	८	७९	"	३	३	५८	शचीपती	१	१	४३
"	३	२	२३९	शकुन्ति	२	५	३२	शटी	२	४	१५४
व्यूहपार्ष्णि	२	८	७९	शकुल	१	१०	१९	शठ	३	१	४६
व्योकार	२	१०	७	शकुलाक्षक	२	४	१५९	शणपर्णी	२	४	१४९
व्योमकेश	१	१	३४	शकुलादनी	२	४	८६	शणपुष्पिका	२	४	१०७
व्योमन्	१	२	१	"	२	४	१११	शण्ड	२	६	३८
व्योमदान	१	१	४८	शकुलार्भक	१	१०	१७	"	२	८	९
व्योष	२	९	१११	शक्र	२	६	६७	शत	२	९	८४
व्रज	२	५	३९	शक्रकरि	२	९	६२	शतकोटि	१	१	४७
"	३	३	३०	शक्ति	०	८	१९	शतपत्र	१	१०	४०
व्रज्या	२	७	३५	"	२	८	१०२	शतपत्रक	२	५	१६
"	२	८	९५	"	३	३	६६	शतपदी	२	५	१३
व्रण	२	६	५४	शक्तिधर	१	१	४०	शतपर्वन्	२	४	१६१
व्रत	२	७	३७	शक्तिहेतिक	२	८	६९	शतपर्विका	२	४	१०२
व्रतति	२	४	९	शक	१	१	४२	"	२	४	१५८
"	३	३	६७	"	२	४	६६	शतपुष्पा	२	४	१५२
व्रतिन्	२	७	७	शकभनुस्	१	३	१०	शतप्रास	२	४	७६
व्रक्षन्	२	१०	३२	शकपादप	२	४	५३	शतमन्यु	१	१	४२
व्रात	२	५	३९	शकपुष्पिका	२	४	१३६	शतमान	३	५	३४
व्रात्य	२	७	५३	शकु	३	१	३५	शतमूली	२	४	१००
व्रीडा	१	७	२३	शक्र	१	१	३०	शतवीर्या	२	४	१५९
व्रीहि	२	९	१५	शकु	१	१०	२०	शतवेचिन्	२	४	१४१
"	"	"	२१	"	२	४	८	शतहृदा	१	३	९
व्रीह्य	२	९	६	"	२	८	९३	शताक्ष	२	८	५१
श	१	१०	४	शक्त	१	१	७१	शतावरी	२	४	१०१
शंवर	२	४	८७	"	१	१०	२३	शत्रु	२	८	९
शंवरी	२	४	८७	"	२	४	१३०	"	८	२	११
शकट	२	८	५२	"	३	३	१८	शनैश्चर	१	३	२३
शकल	१	३	१६	शक्कनख	१	१०	२३	शनैस्	३	४	१७
शकलिन्	१	१०	१७								
शकुन	२	५	३२								



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शपथ	१	६	९	शम्बूक	१	१०	२३	शर्करा	२	१	११
शपन	१	६	९	शम्भली	२	६	१९	"	२	९	४३
शफ	२	८	४९	शम्भु	१	१	३०	"	३	३	१७६
शफरी	१	१०	१८	"	३	३	१३५	शर्करावट	२	१	११
शवर	२	१०	२०	शभ्या	२	९	१४	शर्करिल	२	१	११
शवरालय	२	२	२०	शय	२	६	८१	शर्मन्	१	४	२४
शबल	१	५	१७	शयन	१	७	३६	शर्व	१	१	३०
शबली	२	९	६७	"	२	६	१३७	शर्वरी	१	४	३
शब्द	१	५	७	शयनीय	२	६	१३७	शर्वाणी	१	१	३७
"	१	६	२	शयालु	३	१	३३	शल	२	५	७
"	१	६	२२	शयित	३	१	३३	शलम	२	५	२८
शब्दग्रह	२	६	९४	शयु	१	८	५	शलल	२	५	७
शब्दन	३	१	३८	शय्या	२	६	१३७	शलली	२	५	७
शम	३	२	३	शर	२	४	१६२	शलाट्ट	२	४	२५
शमथ	३	२	३	"	२	८	८७	शक्क	३	३	१३
शमन	१	१	५८	"	३	५	११	शक्य	२	४	५३
"	२	७	२६	शरजन्मन्	१	१	३९	"	२	५	७
शमनस्वसृ	१	१०	३२	शरण	३	३	५३	"	२	८	९३
शमल	२	६	६७	शरव	१	४	१९	शव	२	८	११८
शमित	३	१	९७	"	१	४	२०	शश	२	५	११
शमी	२	४	५२	"	३	३	९३	शशधर	१	३	१५
"	२	९	२३	शरम	२	५	११	शशलोमन्	२	९	१०७
शमीर	२	४	५२	शरभ्य	२	८	८६	शशादन	२	५	१४
शम्पा	१	३	९	शराभ्यास	२	८	८६	शशोर्ण	२	९	१८७
शम्पाक	२	४	२३	शरारि	२	५	२५	शश्व	३	३	२४४
शम्ब	१	१	४७	शराक	३	१	२८	"	३	४	१
शम्बर	१	१०	४	शराव	२	९	३२	"	३	४	११
"	२	५	१०	शरावती	१	१०	३४	शष्प	२	४	१६७
शम्बरारि	१	१	२६	शरासन	२	८	८३	शस्त	१	४	२६
शम्बल	३	५	३४	शरीर	२	६	७०	"	३	१	१०९
शम्भाकृत	२	९	९	शरीरिन्	१	४	३०	शश	२	८	८२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शब्द	३	३	१८०	शाबर	२	४	३३	शिक्य	२	१०	३०
शब्दक	२	९	९८	शाम्बरी	२	१०	११	शिक्यित	३	१	८९
शब्दमार्ज	२	१०	७	शार	३	३	१६६	शिक्षा	१	६	४
शब्दाजीव	२	८	६७	शारद	२	४	२३	शिक्षित	३	१	४
शब्दी	२	८	९२	"	३	३	९५	शिक्षण्ड	२	५	३१
शाक	२	४	१३६	शारदी	१	४	१११	शिक्षण्डक	२	६	९६
"	२	९	३४	शारिफल	२	१०	४६	शिखर	२	३	४
शाकट	२	९	६४	शारिवा	२	४	११२	"	२	४	१२
शाकुनिक	२	१०	१४	शार्कर	२	१	११	शिखरिन्	२	३	१
शाक्तीक	२	८	६९	शार्किन्	१	१	१९	"	३	३	१०६
शाक्यमुनि	१	१	१४	शार्दूल	२	५	१	शिखा	१	१	५७
शाक्यसिंह	१	१	१५	"	३	१	५९	"	२	५	३१
शाखा	२	४	११	शार्वर	३	३	१८९	"	२	६	९७
शाखानगर	२	२	२	शाल	१	१०	१९	"	३	३	१९
शाखामृग	२	५	३	शाला	२	२	६	शिखावत्	१	१	५५
शाखिन्	२	४	५	"	२	४	११	शिखावल	२	५	३०
शाक्षिक	२	१०	८	शालावृक	३	३	१२	शिखिमीव	२	९	१०१
शाटक	३	५	३३	शालि	२	९	२४	शिखिन्	२	५	३०
शाटी	३	५	३८	शालीन	३	१	२६	"	३	३	१०६
शाठ्य	१	७	३०	शालुक	१	१०	३८	शिखिवाहन	१	१	४०
शाण	२	१०	३२	शालुर	१	१०	२४	शिमु	२	४	३१
शाणी	३	५	९	शालेय	२	४	१०५	"	२	९	३४
शाण्डिल्य	२	४	३२	"	२	९	६	शिमुज	२	९	११०
शात	३	१	९१	शात्मलि	२	४	४६	शिक्षित	१	६	२४
शातकुम्भ	२	९	९४	शावक	२	५	३८	शिक्षिनी	३	८	८५
शाप्रव	२	८	११	शाश्वत	३	१	७२	शितशूक	२	९	१५
शाव	१	१०	९	शाशुलिक	३	२	४०	शिति	३	३	८३
"	३	३	९०	शासन	२	८	२५	शितिकण्ठ	१	१	३२
शाहल	२	१	१०	शास्तृ	१	१	१४	शितिसारक	२	४	३८
शान्त	३	१	९७	शास्य	३	३	१८	शिपिविष्ट	३	३	३४
शान्ति	३	२	३	शास्त्रविद्	३	१	७	शिफा	३	३	१३२

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
शिफा	२	४	११	शिवा	२	५	५	शील	१	७	२६
शिफाकन्द	१	१०	४३	"	३	३	२१३	"	३	३	२०१
शिविका	२	८	५३	शिशिर	१	३	१९	शुक	२	४	१३२
शिविर	२	८	३३	"	१	४	१८	"	२	५	२१
शिव्या	२	९	२३	शिशु	२	५	३८	शुकनास	२	४	५७
शिरस्	२	६	९५	शिशुक	१	१०	१८	शुक्त	३	३	८३
शिरस्त्र	२	८	६४	शिशुत्व	२	६	४०	शुक्ति	१	१०	२३
शिरस्य	२	६	९८	शिशुमार	१	१०	१०	"	२	४	१३०
शिरा	२	६	६५	शिश्र	२	६	७६	शुक	१	१	५६
शिरोष	२	४	६३	शिषिदान	३	१	४६	"	१	३	२५
शिरोधि	२	६	८८	शिष्टि	२	८	२६	"	१	४	१६
शिरोरत्न	२	६	१०२	शिष्य	२	७	११	"	२	६	६२
शिरोरुद्ध	२	६	९४	शीघ्र	१	१	६४	शुकशिष्य	१	१	१२
शिक्षा	२	२	१३	शीत	१	३	१९	शुक्ल	१	४	१२
"	२	३	४	"	१	३	१९	"	१	५	१२
शिलाजटु	२	९	१०४	"	२	४	३०	शुच्	१	७	२५
शिली	१	१०	२४	"	२	४	३४	शुचि	१	१	५६
शिलीमुख	३	३	१८	"	३	५	१२२	"	१	४	१६
शिलोच्चय	२	३	१	शीतक	२	१०	१८	"	१	५	१२
शिर्य	२	१०	३५	शीतमीरु	२	४	७०	"	१	७	१७
शिर्यिन्	२	१०	५	शीतल	१	३	१९	"	३	३	२८
शिर्यिशाळा	२	२	७	"	२	४	१४९	शुण्ठी	२	९	३८
शिव	१	१	३०	शीतशिव	२	४	१०५	शुण्डा	२	१०	४०
"	१	४	२५	"	२	४	१२२	शुतुद्रि	१	१०	३३
शिवक	२	९	७३	"	२	९	४२	शुतुहु	१	१०	३३
शिवमल्ली	२	४	८१	शीघ्र	३	५	३४	शुमान्त	२	२	१२
शिवा	१	१	३७	शीर्ष	२	६	९५	"	३	३	६६
"	२	४	५२	शीर्षक	२	८	६३	शुनक	२	१०	२२
"	२	४	५९	शीर्षच्छेद्य	३	१	४५	शुनी	२	१०	२३
"	२	४	१२७	शीर्षण्य	२	६	९८	शुभ	१	४	२५
				"	२	८	६४	"	२	९	७६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शुभ	३	५	२३	शूलय	२	९	४५	शैलालिन्	२	१०	१२
शुभंशु	३	१	५०	शृगाल	२	५	५	शैलूष	२	४	३२
शुभान्वित	३	१	५०	शृङ्गल	२	६	१०	"	२	१०	१२
शुभ्र	१	५	१२	"	२	८	४१	शैलेय	२	४	१२३
"	३	३	१९३	शृङ्गलक	२	९	७५	शैवल्लिनी	१	१०	३०
शुभ्रदन्ती	१	३	५	शृङ्गला	२	८	४१	शैवाल	१	१०	३८
शुभ्रांशु	१	३	१४	शृङ्ग	२	३	४	शैशव	२	६	४०
शुल्क	२	८	७७	"	२	४	१४२	शोक	१	७	२५
शुल्ब	२	९	९७	"	३	३	२६	शोचिष्केश	१	१	५४
"	२	१०	२७	शृङ्गवेर	२	९	३७	शोचिस्	१	३	३४
"	३	५	२३	शृङ्गाटक	२	१	१७	शोण	१	५	१५
शुश्रूषा	२	७	३५	शृङ्गार	१	७	१७	"	१	१०	३४
शुषि	१	८	२	शृङ्गार	१	७	१७	शोणक	२	४	५७
शुषिर	१	८	१	"	१	७	१७	शोणरत्न	२	९	९२
"	१	८	२	शृङ्गिणी	२	९	६६	शोणित	२	६	६४
शुष्कमांस	२	६	६३	शृङ्गी	१	१०	२५	शोथ	२	६	५२
शुष्म	२	८	१०२	"	२	४	१००	शोथप्रो	२	२	१४९
शुष्मन्	१	१	५४	"	२	४	११६	शोधनी	२	२	१८
शूक	२	९	२३	शृङ्गीकनक	२	९	९६	शोधित	२	९	४६
शूककीट	१	५	१४	शृत	३	१	९५	"	३	१	५६
शूकधान्य	२	८	२४	शेखर	२	६	१३६	शोफ	२	६	५२
शूकशिम्बि	२	४	८७	शेफस्	२	६	७६	शोभन	३	१	५२
शूद	२	१०	१	शेफालिका	२	४	७०	शोभा	१	३	१७
शूद्रा	२	६	१३	"	३	५	७	शोभाजन	२	४	३१
शूद्रो	२	६	१३	शेमुषी	१	५	१	शोष	२	६	५१
शून्य	३	१	५६	शैलु	२	४	३४	शोक	२	५	४३
शूर	२	८	७७	शैवधि	१	१	७२	शौक्तिकेय	१	८	१०
शूर्प	२	९	२६	शैवाल	१	१०	३८	शौण्ड	३	१	२३
शूल	३	३	१९७	शेष	१	८	४	शौण्डिक	२	१०	१०
शूलाकृत	२	९	४५	शैक्ष	२	७	११	शौण्डी	२	४	९७
शूलिन्	१	१	३०	शैखरिक	२	४	८८	शौद्धोदनि	१	१	१५
				शैल	२	३	१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शौरि	१	१	२१	श्रावण	१	४	१६	श्रेयस्	३	१	५८
शौर्य	२	८	१०२	श्रावणिक	१	४	१६	श्रेयसी	२	४	५९
शौखिक	२	१०	८	श्री	१	१	२७	"	२	४	८४
शौक्ल	३	१	१९	"	२	८	८२	"	२	४	९७
श्रयोत	३	२	१०	श्रीकण्ठ	१	१	३२	श्रेष्ठ	३	१	५८
श्रमशान	२	८	११८	श्रीधन	१	१	१४	श्रोण	२	६	४८
श्रमश्रु	२	६	९९	श्रीद्व	१	१	६९	श्रोणि	२	६	७४
श्याम	१	५	१४	श्रीपति	१	१	२१	श्रोत्र	२	६	९४
"	३	३	१४३	श्रोपणं	२	४	६६	श्रोत्रिय	२	७	६
श्यामल	१	५	१४	"	३	३	५३	श्रीषट्	३	४	८
श्यामा	२	४	५५	श्रीपणिका	२	४	४०	श्लक्ष्ण	३	१	६३
"	२	४	१०८	श्रीपणी	२	४	३६	श्लेष	३	२	११
"	२	४	११२	श्रीफल	२	४	३२	श्लेषमण	२	६	६०
"	३	३	१४३	श्रीफली	२	४	९५	श्लेषमन्	२	६	६२
श्यामाक	२	४	१६५	श्रीमत्	२	४	४०	श्लेषमल	२	६	६०
श्याल	२	६	३२	"	३	१	१४	श्लेषमातक	२	४	३४
श्याव	१	५	१६	श्रील	३	१	१४	श्लोक	३	३	२
श्येत	१	५	१२	श्रीवत्सलान्छन	१	१	२२	श्वःश्रेयस	१	४	२५
श्येन	२	५	१५	श्रीवास	२	६	१२८	श्वदंष्ट्रा	२	४	९८
श्येनम्पाता	३	५	६	श्रीवेष्ट	२	६	१२८	श्वन्	२	१०	२२
श्रद्धा	३	३	१०२	"	३	५	१३	श्वनिश	३	५	४०
श्रद्धालु	२	६	२१	श्रीसंश	२	६	१२५	श्वपच	२	१०	२०
"	३	१	२७	श्रीइस्तिनी	२	४	६९	श्वभ्र	१	८	२
श्रयण	३	२	१२	श्रुन	३	३	७७	"	३	५	२२
श्रवण	२	६	९४	श्रुति	१	६	३	श्वयथु	१	६	५२
श्रवस्	२	६	९४	"	२	६	९४	श्ववृत्ति	२	९	२
श्रविष्ठा	१	३	२२	"	३	३	७३	श्वशुर	२	६	३१
श्राणा	२	९	५०	श्रेणि	२	१०	५	"	२	६	३७
श्राद्ध	२	७	३१	श्रेणी	२	४	४	श्वशुर्य	२	३	१४६
श्राद्धदेव	१	१	५९	श्रेयस्	१	४	२४	श्वश्रु	२	६	३१
श्राय	३	२	१२	"	१	५	६	श्वश्रुश्वशुर	२	६	३७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
श्वस्	३	४	२२	संयुग	२	८	१०५	संस्कृत	३	३	८१
श्वसन	१	१	६१	संयोजित	३	१	९२	संस्तर	३	३	१६२
"	२	४	५२	संराव	१	६	२३	संस्तव	२	२	२३
श्वविध्	२	५	७	संलाप	१	६	१६	संस्ताव	३	२	३४
श्वित्र	२	६	५४	संवत्सर	१	४	२०	संस्त्याय	३	३	१५२
श्वेत	१	५	१२	संवत्	३	४	१६	संस्था	२	८	२६
"	२	९	९६	संवन्नन	३	२	४	संस्थान	३	३	१२४
"	३	३	७९	संवर्त	१	४	२२	संस्थित	२	८	११७
श्वेतगरुड	२	५	२३	संवर्तिका	१	१०	४३	संस्पर्श	२	४	१५४
श्वेतमरिच	२	९	११०	संवसथ	२	२	१९	संस्फोट	२	८	१०५
श्वेतरक्त	१	५	१५	संवाहन	३	२	२२	संहत	३	१	१५
श्वेतसुरसा	२	४	७१	संविद्	१	५	१	संहतजानुक	२	६	४७
ष				"	१	५	५	संहति	२	५	४०
षट्कर्मन्	२	७	४	"	३	३	९२	संहनन	२	६	७०
षट्पद	२	५	२९	संबीक्षण	२	२	३०	संहूति	१	६	८
षडभिष्ट	१	१	१४	संबीत	३	१	९०	सकल	३	१	६५
षडामन	१	१	३९	संवेग	१	७	३४	सकृत्	३	३	२४३
षडग्रन्थ	२	४	४८	संवेद	३	२	६	सकृत्प्रज	२	५	२०
षडग्रन्था	२	४	१०२	संवेश	१	७	३६	सक्तुफला	२	४	५२
षडग्रन्थिका	२	४	१५४	संव्यान	२	६	११८	सक्थि	२	६	७३
षड्ज	१	७	१	संशप्तक	२	८	९८	सखि	२	८	१२
षण्ड	१	१०	४२	संशय	१	५	३	सखी	२	६	१२
"	२	८	३३	संशयापन्नमानस	१	५		सख्य	२	८	१२
"	२	९	६२	संश्रव	१	५	५	सगर्भ्य	२	६	३४
षष्टिक्य	२	९	७	संश्रुत	३	१	१०९	सगोत्र	२	६	३४
षाण्मातुर	१	१	४०	संश्लेष	३	२	३०	सग्धि	२	९	५५
स				संसक्त	३	१	६८	सङ्कट	३	१	८५
संयत्	२	८	१०६	संसद्	२	७	१५	सङ्कर	२	२	१८
संयत	३	१	४२	संसरण	२	१	१८	सङ्कर्षण	१	१	२४
संयम	३	२	१८	"	३	३	५५	सङ्कलित	३	१	९३
संयाम	३	२	१८	संसिद्धि	१	७	३७	सङ्कल्प	१	५	२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सङ्क्षुप्तक	३	१	४३	सञ्जन	२	७	३	सत्वर	१	१	६५
सङ्कास	२	१०	३७	„	२	८	३३	सदन	२	२	५
सङ्कीर्ण	२	१०	१	सञ्जना	२	८	४२	सदम्	२	७	१५
„	३	१	८५	सञ्चय	२	५	३९	सदस्व	२	७	१६
„	३	३	५७	सञ्चारिक	२	६	१७	सदा	२	४	२२
सङ्कुल	१	६	१९	सञ्चवन	२	२	६	सदागति	१	१	१६१
„	३	१	८५	सञ्चवर	१	१	५७	सदातन	३	१	७२
सङ्कोच	२	६	१२४	सञ्चयन	२	८	११३	सदानीरा	१	१०	३३
सङ्कन्दन	१	१	४४	सञ्चया	३	३	३३	सदृश	२	१०	३३
सङ्क्रम	३	२	२५	सञ्चु	२	६	४७	सदृश	२	१०	३६
सङ्क्षेपण	३	२	२१	सटा	२	६	९७	सदृश	२	१०	३६
सङ्क्षय	२	८	१०४	संडीन	२	५	३७	सदेश	३	१	६७
सङ्क्षया	१	५	२	सट	२	७	५	सद्यन्	२	२	४
सङ्क्षयात	३	१	६४	„	३	३	८३	सद्यस्	३	४	९
सङ्क्षयावट	२	७	५	सतन	१	१	६५	सद्यथन्	३	१	३४
सङ्ग	३	२	२९	सती	२	६	६	सनस्कुमार	१	१	५१
सङ्गत	१	६	१८	सतीनक	२	९	१६	सना	३	४	१७
सङ्गम	३	२	२९	सतीर्थ	२	७	११	सनातन	३	१	७२
„	३	५	३४	सत्तम	३	१	५८	सनाभि	२	६	३३
सङ्गर	३	३	१६७	सत्त्व	१	४	२९	सनि	२	७	३२
सङ्गीर्ण	३	१	१०९	„	३	३	२१३	सनीड	३	१	६६
सङ्गूढ	३	१	९३	सरपथ	२	१	१६	सन्तत	१	१	६५
सङ्ग्रह	१	६	६	सत्य	१	६	२२	सन्नति	२	७	१
सङ्ग्राम	२	८	१०५	„	३	३	१५४	सन्तप्त	३	१	१०२
सङ्ग्रामह	२	८	९०	सत्यङ्कार	२	९	८३	सन्तमस	१	८	४
„	३	२	१४	सत्यवचस्	२	७	४३	सन्तान	१	१	५०
सङ्ग	२	५	४१	सत्याकृति	२	९	८२	„	२	७	१
सङ्गात	१	९	२	सत्यापन	२	९	८२	सन्ताप	१	१	५७
„	२	५	३९	सङ्ग	३	३	१८१	सन्तापित	३	१	१०२
सचिव	३	३	२०७	सङ्गा	३	४	४	सन्दान	२	९	७३
सङ्घ	२	८	६५	सङ्गिन्	२	८	१५	सन्दानित	३	१	९५

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
सन्दाव	२	८	१११	सप्तला	२	४	७२	"	३	३	१४९
सन्दिन	३	१	८६	"	२	४	१४३	समया	३	३	२५३
"	३	१	९५	सप्ताचिस्	१	५	५६	"	३	४	७
सन्देशवाच्	१	६	१७	सप्ताश्व	१	३	२९	समर	२	८	१०४
सन्देशहर	२	८	१६	सप्ति	२	८	४४	समर्थ	३	३	८७
सन्देश	१	५	३	सप्तद्व्यचारिन्	२	७	११	समर्थन	२	८	२५
सन्दोह	२	५	३९	समर्तुका	२	६	११२	समर्थक	३	१	७
सन्द्राव	२	८	१११	समा	२	२	६	समर्थ्याद	३	१	६७
सन्धा	३	३	१०२	"	२	७	१५	समवर्तिन्	१	१	५८
सन्धान	२	१०	४२	"	३	३	१३७	समवाय	२	५	४०
सन्धि	२	८	१८	समाजन	३	२	७	समष्टिका	२	४	१५७
"	३	२	११	समासद्	२	७	१६	समसन	३	२	२१
सन्धिनी	२	९	६९	समास्तार	२	७	१६	समस्त	३	१	३५
सन्ध्या	१	४	३	समिक	२	१०	४४	समस्या	१	६	७
सन्नकद्रु	२	४	३५	सम्य	२	७	३	समा	१	४	२०
सन्नद्ध	२	८	६५	"	२	७	१६	समासमीना	२	९	७२
सन्नय	३	३	१५१	सम	२	१०	३६	समाकर्षिन्	१	५	११
सन्निकर्षण	३	२	२३	"	३	१	६४	समाघात	२	८	१०५
सन्निकृष्ट	३	१	९६	समग्र	३	१	६५	समाज	२	५	४२
सन्निधि	३	२	२३	समज्ञा	२	४	९०	समाधि	१	५	५
सन्निवेश	२	२	१९	"	२	४	१४१	"	३	३	९८
सपक्ष	२	८	१०	समज	२	५	४२	समान	१	१	६३
सपदि	३	४	२	समज्ञा	१	६	११	"	२	१०	३७
"	३	४	९	समज्ञ्या	२	७	१५	"	३	३	१२७
सपर्या	२	७	१४	समजस	२	८	२४	समानोदर्य	२	६	३४
"	२	७	३४	समधिक	३	१	७५	समालम्भ	३	२	२७
सपिण्ड	२	६	३३	समन्ततस्	३	४	१३	समावृत	२	७	१०
सपीति	२	९	३५	समन्तदुग्धा	२	४	१०६	समासाद्य	३	१	९२
सप्तकी	२	६	१०९	समन्तभद्र	१	१	१३	समासार्था	१	६	७
सप्ततन्तु	२	७	१३	समम्	३	४	४	समाहार	३	२	१६
सप्तपर्ण	२	४	३३	समव	१	४	१	समाहित	३	१	१०९



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
समाहृति	१	६	६	समुपजोषम्	३	४	१०	सरल	२	४	५९
समाह्वय	२	१०	४६	समूरु	२	५	९	"	३	१	८
समित	२	८	१०६	समूह	२	५	३९	सरलद्रव	२	६	१२८
समिति	२	७	१५	समूह्य	२	७	२०	सरला	२	४	१०८
"	२	८	१०६	समृद्ध	३	१	११	सरम्	१	१०	२८
"	३	३	७०	समृद्धि	३	२	१०	सरसी	१	१०	२८
समिध्	२	४	१३	सम्पत्ति	२	८	८२	सरसीरुह	१	१०	४०
समीक	२	८	१०४	सम्पद	२	८	८१	सरस्वत	१	१०	१
समोप	३	१	६६	सम्पराय	३	३	१५१	"	३	३	५९
समीर	१	१	६२	सम्पुटक	२	६	१३९	सरस्वतां	१	६	१
समीरण	१	१	६२	सम्प्रति	३	४	२३	"	१	१०	३४
"	२	४	७९	सम्प्रदाय	३	२	७	सरित्	१	१०	२९
समुख्य	३	२	१६	सम्प्रधारणा	२	८	२५	सरिस्पति	१	१०	१
समुच्छ्रय	३	३	१५२	सम्प्रहार	२	८	१०५	सरीसृप	१	८	७
समुज्झित	३	१	१०७	सगुल्ल	२	४	७	सर्ग	३	२	२१
समुत्पिञ्ज	२	८	९९	सम्बाध	३	१	८५	सर्ज	२	४	४४
समुदक्त	३	१	९०	सम्भेद	१	१०	३५	सर्जक	२	४	४४
समुदय	२	५	४०	सम्भ्रम	१	७	३४	सर्जरस	२	७	१२७
समुदाय	२	५	४०	"	३	२	२६	सर्जिकाक्षार	२	९	१०९
"	२	८	१०६	सम्भद	१	४	२४	सर्प	१	८	६
समुद्र	३	५	१७	सम्भार्जनी	२	२	१८	सर्पराज	१	८	४
समुद्रक	२	६	१३९	सम्भूर्च्छन	३	२	६	सर्पिस्	२	८	५२
समुद्रिरण	३	३	५५	सम्भृष्ट	२	९	४६	सर्व	३	१	६४
समुद्धत	३	१	२३	सम्भ्यक्	१	६	२२	सर्वसहा	२	१	३
समुद्र	१	१०	१	सम्भ्राज्	२	८	३	सर्वश	१	१	१३
समुद्रान्ता	२	४	९२	सरक	२	१०	४३	"	१	१	३३
"	२	४	११६	सरघा	२	५	२६	सर्वतस्	३	४	१३
"	२	४	१३३	सरट	२	५	१२	सर्वतोभद्र	२	२	१०
समुन्दन	३	२	२९	सरणा	२	४	१५२	"	२	४	६२
समुन्न	३	१	१०५	सरणि	२	१	१५	सर्वतोभद्रा	३	४	३५
समुन्नद्ध	३	३	१०३	सरमा	२	१०	२२	सर्वतोमुख	१	१०	४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सर्वदा	३	४	२२	सहधर्मिणी	२	६	५	सातला	२	४	१४३
सर्वधुरीण	२	९	६६	सहन	३	१	३१	साति	३	२	३८
सर्वमङ्गला	१	१	३७	सहभोजन	२	९	५५	"	३	३	६७
सर्वरस	२	६	१२७	सहस्	१	४	१४	"	३	५	९
सर्वला	२	८	९३	"	२	८	१०२	सातिसार	२	६	५९
सर्वलिङ्गिन्	२	७	४५	"	३	३	२३३	सात्विक	१	७	१६
सर्ववेदस्	२	७	९	सहसा	३	४	७	सादिन्	२	८	६०
सर्वसन्नहन	२	८	९४	सहस्य	१	४	१५	"	३	३	१०७
सर्वानुभूति	२	४	१०८	सहस्र	२	९	८४	साधन	३	३	११९
सर्वान्नभोजिन्	३	१	२२	सहस्रदंष्ट्र	१	१०	१८	साधारण	२	१०	३७
सर्वान्नोन्न	३	१	२२	सहस्रपत्र	१	१०	४०	"	३	१	८२
सर्वामिसार	२	८	९४	सहस्रत्रीया	२	४	१५८	साधित	३	१	४०
सर्वार्थसिद्ध	१	१	१५	सहस्रवेधिन्	२	४	१४१	साधिष्ट	३	१	११२
सर्वौष	२	८	९४	"	२	९	४०	साधायस्	३	३	२३६
सर्वप	२	९	१७	सहस्रांशु	१	३	३१	साधु	२	७	३
सलिल	१	१०	३	सहस्राक्ष	१	१	४४	"	३	१	५२
सलकी	२	४	१२४	सहस्रिन्	२	८	६२	"	३	३	१०१
सव	२	७	१३	सहा	२	४	७३	साध्य	१	१	१०
सवन	२	७	४५	"	२	४	११३	साध्वस	१	७	२१
सवयस्	२	८	१२	सहाय	२	८	७१	साध्वी	२	६	६
सवितृ	१	३	३१	सहायता	३	२	४०	सानु	२	३	५
सविष	३	१	६७	सहिष्णु	३	१	३१	सान्त्व	१	६	१८
सवेश	३	१	६७	सांयात्रिक	१	१०	१२	"	२	८	२१
सव्य	३	१	८४	सांयुगीन	२	८	७७	सान्द्रष्टिक	२	८	२९
सव्येष्ट	२	८	६०	सांवत्सर	२	८	१४	सान्द्र	३	१	६६
सस्य	२	४	१५	सांशयिक	३	१	५	सान्नाय्य	२	७	२७
सस्यसम्बर	२	४	४४	साकम्	३	४	४	साप्तपदीन	२	८	१२
सह	३	४	४	साक्षात्	३	३	२४४	सामन	१	६	३
सहकार	२	४	३३	सागर	१	१०	१	"	२	८	२१
सहचरी	२	४	७५	साचि	३	४	६	सामाजिक	२	७	१६
सहज	२	६	३४	सात	१	४	२५	सामान्य	१	४	३१
								"	३	१	८२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सामि	३	३	२५०	सिंह	२	५	१	सिनीवाली	१	४	९
सामिधेनि	२	७	२२	"	३	१	५९	सिन्दुक	२	४	६८
साम्परायिक	२	८	१०४	सिंहतल	२	६	८५	सिन्दुवार	२	४	६८
साम्प्रतम्	३	४	११	सिंहपुच्छी	२	४	९३	सिन्दूर	२	९	१०५
"	३	४	२३	सिंहसंहनन	३	१	१२	"	३	५	३१
सायक	३	३	२	सिंहाण	२	९	९८	सिन्धु	१	१०	१
सायम्	१	४	३	सिंहासन	२	८	३१	"	३	३	१०१
"	३	४	१२	सिंहास्थ	२	४	१०३	सिन्धुज	२	९	४२
सार	३	३	१७१	सिंही	२	४	१०३	सिन्धुसङ्गम	१	१०	३५
सारङ्ग	२	५	१७	"	२	४	११४	सिङ्ग	२	६	१२८
"	३	३	२३	सिकता	३	३	७३	सीकर	१	३	११
सारधि	२	८	५९	सिकतामय	१	१०	९	सीता	२	९	१४
सारमेघ	२	१०	२१	सिकतावत	२	१	११	सीत्य	२	९	८
सारव	१	१०	३६	सिक्थक	२	९	१०७	सोधु	२	१०	४१
सारस	१	१०	४०	सित	१	५	१३	सीमन्	२	२	२०
"	२	५	२२	"	३	१	९५	सीमन्त	३	५	१९
सारसन	२	६	१०९	"	३	१	९८	सीमन्तिनी	२	६	२
"	२	८	६३	"	३	३	८०	सीमा	२	२	२०
सारिका	३	५	८	सितच्छत्रा	२	४	१५२	सीर	२	९	१४
सार्ध	२	५	४१	सिता	२	९	४३	सीरपाणि	१	१	२४
सार्धवाह	२	९	७८	सिताभ्र	२	६	१३०	सीवन	३	२	५
सार्द्र	३	१	१०५	सिताम्भोज	१	१०	४१	सीसक	२	९	१०५
सार्धम्	३	४	४	सिद्ध	१	१	११	सीडुण्ड	२	४	१०५
सार्वभौम	२	८	२	"	३	१	१००	सु	३	४	२
"	१	३	४	सिद्धान्त	१	५	४	"	३	४	५
साल	२	२	३	सिद्धार्थ	२	९	१८	सुकन्दक	२	४	१४७
"	२	४	५	सिद्धि	२	४	११२	सुकरा	२	९	७०
"	२	४	४४	सिध्म	२	६	५२	सुकल	३	१	८
सालपणी	२	४	११५	सिध्मल	२	६	६१	सुकुमार	३	१	७८
साला	२	९	६३	सिध्मला	३	५	१०	सुकृत	१	४	२४
साहस	२	८	२१	सिध्य	१	३	२२	सुकृतिन्	३	१	३
साहस्र	२	८	६२	सिध्मका	३	५	८	सुख	१	४	२५
"	३	२	४३								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सुख	३	५	२३	सुप्रयोगविशिष्ट	२	८	६८	सुवर्णक	२	४	२४
सुखवर्चक	२	९	१०९	सुप्रलाप	१	६	१७	सुवर्त्तक	२	४	९५
सुखसन्दोहा	२	९	७१	सुभगासुत	२	६	२४	सुवडा	२	४	७०
सुगत	१	१	१३	सुभिज्ञा	२	४	१२४	"	२	४	११५
सुगन्धा	२	४	११४	सुम	२	४	१७	"	२	४	११९
सुगन्धि	१	५	११	सुमनस्	१	१	७	"	२	४	१२३
"	२	४	१२१	"	२	४	१७	"	२	४	१४०
सुचरित्रा	२	६	६	"	२	४	७२	सुवता	२	९	७१
सुचेरक	२	६	११६	सुमनोरजस्	२	४	२७	सुपम	३	२	५२
सुत	२	६	२७	सुमेग	१	१	४९	सुपमा	१	३	१७
"	३	३	६०	सुर	१	१	७	सुषवी	२	४	१५५
सुतश्रेणी	२	४	८८	"	३	५	११	"	२	९	३७
सुधामन्	१	१	४२	सुरङ्गा	३	५	८	सुषिर	१	७	४
सुत्या	२	७	४७	सुरज्येष्ठ	१	१	१६	सुषिरा	२	४	१२९
सुत्तन्	२	७	१०	सुरदीर्घिका	१	१	४९	सुषोम	१	३	१९
सुदर्शन	१	१	२८	सुरदिष्	१	१	१२	सुषेण	२	४	६८
सुदाय	२	८	२८	सुरनिम्नगा	१	१०	३१	सुषेणिक	२	४	१०८
सुदूर	३	१	६९	सुरपति	१	१	४३	सुष्ठु	३	४	२
सुधर्मन्	१	१	४८	सुरभि	१	४	१८	"	३	४	१९
सुधा	१	१	४८	"	१	५	११	सुसंस्कृत	२	९	४५
"	३	३	१०२	"	३	३	१३७	सुसहद	२	८	१२
सुधांशु	१	३	१४	सुरभी	२	४	१२३	"	२	८	१७
सुधी	२	७	५	सुरभि	१	१	४८	सुहृदय	३	१	३
सुनासीर	१	१	४१	सुरलोक	१	१	६	सूकर	२	५	२
सुनिषण्णक	२	४	१४९	सुरवर्त्मन्	१	२	१	सूक्ष्म	३	१	६१
सुन्दर	३	१	५२	सुरसा	२	४	११४	"	३	३	१४४
सुन्दरी	२	६	४	सुरा	२	१०	३९	सूचक	३	१	४७
सुपथिन्	२	१	१६	सुराचार्य	१	३	२४	सूचि	३	५	८
सुपर्ण	१	१	२९	सुरालय	१	१	४९	सूत	२	८	५८
सुपर्वन्	१	१	७	सुराष्ट्रज	२	४	१३१	"	२	९	९९
सुपार्थक	२	४	४३	सुवचन	१	६	१७	"	२	१०	३
सुप्रतीक	१	३	४	सुवर्ण	२	९	८६	"	३	३	६२
				"	२	९	९४				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सूतिकागृह	२	२	८	सेनाङ्ग	२	८	३३	सोमवह्निका	२	४	९५
सूतिमास	२	६	३९	सेनानी	१	१	३९	सोमवह्नी	२	४	८३
सूत्थान	२	१०	१९	"	२	८	६२	सोमोद्भवा	१	१०	३२
सूत्र	२	१०	२८	सेनामुख	२	८	८१	सौगन्धिक	१	१०	३६
सूत्रवेष्टन	३	२	२४	सेनारक्ष	२	८	६१	"	२	४	१६६
सूद	२	९	२८	सेवक	२	८	९	"	२	९	१०२
"	३	३	९१	सेवन	३	२	५	सौचिक	२	१०	६
सूना	३	३	११३	सेव्य	२	४	१६४	सौदामनी	१	३	९
सूनु	२	६	२७	सैद्धिकेय	१	३	२६	सौध	२	२	१०
सूनुत	१	६	१९	सैकत	१	१०	९	सौभागिनेय	२	६	२४
सूपकार	२	९	२७	सेतवाहिनी	१	१०	३३	सौम्य	१	३	२६
सूर	१	३	२८	सैनिक	२	८	६१	"	३	३	१६१
सूरण	२	४	१५७	"	२	८	६१	सौरभेय	२	९	६०
सूरत	३	१	१५	सैन्धव	२	८	४४	सौरभेयी	३	९	६६
सूरसूत	१	३	३२	"	२	९	४२	सौराष्ट्रिक	१	८	१०
सूरि	२	७	६	सैन्ध	२	८	६१	सौरि	१	३	२६
सूमी	२	१०	३५	"	२	८	७८	सौवर्चल	२	९	४३
सूर्य	१	३	२८	सैरन्ध्री	२	६	१८	"	२	९	१०९
सूर्यतनया	१	१०	३२	सैरिक	२	९	६४	सौविद	२	८	८
सूर्येन्दुसङ्गम	१	४	८	सैरिभ	२	५	४	सौविदश्ल	२	८	८
सुकिणी	२	६	९१	सैरेयक	२	४	७५	सौवीर	२	४	३७
सुग	२	८	९१	सोढ	३	१	९७	"	२	९	३९
सुणि	२	८	४१	सोदयं	२	६	३३	"	२	९	१००
सुणिका	२	६	६६	सोन्माद	३	१	२३	सौहित्य	२	९	५६
सूति	२	१	१५	सोपप्लव	१	४	१०	स्कन्द	१	१	३९
सुपाटी	३	५	३८	सोपान	२	२	१८	स्कन्ध	२	४	१०
सुमर	२	५	११	सोम	१	३	१४	"	२	६	७८
सुष्ट	३	३	३९	सोमपा	२	७	९	"	३	३	१००
सेकपात्र	१	१०	१३	सोमपीथिन्	२	७	९	स्कन्धशाखा	२	४	११
सेचन	१	१०	२३	सोमराजी	२	४	९५	स्कन्न	३	१	१०४
सेतु	२	१	१४	सोमवक्त्र	२	४	५०	स्खलन	१	७	३६
सेतु	२	४	२५	"	३	३	९	स्खलित	२	८	१०८
सेना	२	८	७८	सोमवह्नी	२	४	१३७	स्तन	२	६	७७
								"	३	५	१२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्तनम्बयी	२	६	४१	स्थल	२	१	५	स्थूलशाटक	२	६	११६
स्तनपा	२	६	४१	स्थली	२	१	५	स्थूलोच्चय	३	३	१४९
स्तनयित्तु	१	३	६	स्थविर	२	६	४२	स्थूयस्	३	१	७३
स्तनित	१	३	८	स्थविष्ठ	३	१	१११	स्थौगय	२	४	१३२
स्तनक	२	४	१६	स्थाणु	१	१	३४	स्थौरिन्	२	८	४६
स्तम्बरोमन्	२	५	२	"	२	४	८	स्नव	३	२	९
स्तम्ब	२	४	९	"	३	३	४९	स्नातक	२	७	४३
"	२	९	२१	स्थाण्डिल	२	७	४४	स्नान	२	६	१२२
स्तम्बधन	३	२	३५	स्थान	२	८	१९	स्नायु	२	६	६६
स्तम्बध	३	३	३५	"	३	३	११७	स्निग्ध	२	८	१२
स्तम्बेरम	२	८	३५	स्थानीय	२	२	१	"	२	९	४६
स्तम्भ	३	३	१३५	स्थाने	३	४	११	"	३	१	१४
स्तव	१	६	११	स्थापत्य	२	८	८	स्तु	२	३	५
स्तिमित	३	१	१०५	स्थापनी	२	४	८४	स्तुत	३	१	९२
स्तुत	३	१	११०	स्थामन्	२	८	१०२	स्तुषा	२	६	९
स्तुति	१	६	११	स्थायुक	२	८	७	स्तुह	२	४	१०५
स्तुतिपाठक	२	८	९६	स्थाल	३	५	३२	स्तुही	२	४	१०५
स्तूप	३	५	१९	स्थालां	२	९	३१	स्नेह	१	७	२७
स्तेन	२	१०	२५	स्थावर	३	१	७३	स्पर्श	१	५	७
स्तैम	३	२	२९	स्थाविर	२	६	४०	"	३	२	१४
स्तैय	२	१०	२५	स्थासक	२	६	१२२	स्पर्शन	१	१	६१
स्तैन्य	२	१०	२५	स्थास्तु	३	१	७३	"	२	७	२९
स्तोक	३	१	६१	स्थिति	२	८	२६	स्पश	२	८	१३
स्तोकक	२	५	१७	"	३	२	२१	"	३	३	२१५
स्तोत्र	१	६	११	स्थिरतर	३	१	७३	स्पष्ट	३	१	८१
स्तोम	२	५	३९	स्थिरा	२	१	२	स्पृक्का	२	४	१३३
स्तोम	३	३	१४१	"	२	४	११५	स्पृशी	२	४	९३
स्त्री	२	६	२	स्थिरायुष	२	४	४६	स्पृष्टि	३	२	९
स्त्रीधर्मिणी	२	६	२०	स्थूणा	२	१०	३५	स्पृहा	१	७	२७
स्थण्डिल	२	७	१८	"	३	३	५१	स्पृष्टु	३	२	१४
"	२	७	४४	स्थूल	३	१	६१	स्फटा	१	८	९
स्थण्डिलशायिन्	२	७	४४	"	३	३	२०५	स्फाति	३	२	९
स्थपति	२	७	९	स्थूललक्ष्य	३	१	६	स्फार	३	१	६३
"	३	३	६१								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्फिच्	२	६	७५	स्रस्त	३	१	१०४	स्वर्ग	१	१	६
स्फुट	२	४	७	स्राक्	३	४	२	"	३	५	११
"	३	१	८१	स्रुच्	२	७	२५	स्वर्ण	२	९	९४
स्फुटन	३	२	५	स्रुत	३	१	९२	स्वर्णकार	२	१०	८
स्फुरण	३	२	१०	स्रुव	२	७	२५	स्वर्णक्षीरी	२	४	१३८
स्फुरणा	३	२	१०	स्रुवा	२	४	८३	स्वर्णदो	१	१	४९
स्फुरिक्	१	१	५७	स्रुवावृक्ष	२	४	३७	स्वर्मानु	१	३	२६
स्फूर्जक	२	४	३७	स्रोतस्	१	१०	११	स्वर्वेश्या	१	१	५२
स्फूर्जथु	१	३	१०	"	३	३	२३४	स्वर्वेद्य	१	१	५१
स्फेष्ठ	३	१	११२	स्रोतस्वती	१	१०	३०	स्ववासिनी	२	६	९
स्म	३	४	५	स्रोतोञ्जन	२	९	१००	स्वसु	२	६	२९
"	३	४	१७	स्व	२	६	३४	स्वस्ति	३	३	२४२
स्मर	१	१	२५	"	३	३	२१२	स्वस्तिक	२	२	१०
स्मरहर	१	१	३३	स्वच्छन्द	३	१	१५	स्वस्त्रीय	२	६	३२
स्मित	१	७	३४	स्वजन	२	६	३४	स्वाति	३	५	३८
स्मृति	१	६	६	स्वतन्त्र	३	१	१५	स्वादु	३	३	९४
"	१	७	२९	स्वधा	३	४	८	स्वादुकण्टक	२	४	३७
स्यद	१	१	६४	स्वधिति	२	८	९२	"	२	४	९८
स्यन्दन	२	४	२६	स्वन	१	६	२२	स्वादुरसा	२	४	१४४
"	२	८	५१	स्वनित	३	१	९४	स्वादी	२	४	१०७
स्यन्दनारोह	२	८	६०	स्वप्न	१	७	३६	स्वाध्याय	२	७	४६
स्यन्दिनी	२	६	६६	स्वप्नज्	३	१	३३	स्वान	१	६	२३
स्यञ्ज	३	१	९२	स्वभाव	१	७	३८	स्वान्त	१	४	३१
स्यूत	२	९	२६	स्वभू	१	१	१८	स्वाप	१	७	३६
"	३	१	१०१	स्वयंवरा	२	६	७	स्वापतेय	२	९	९०
स्यूति	३	२	५	स्वयम्	३	४	१६	स्वामिन्	२	८	१७
स्योनाक	२	४	५७	स्वयम्भू	१	१	१६	"	३	१	१०
स्रंसिन्	२	४	२८	स्वर्	३	३	२५५	स्वाराज्	१	१	४३
स्रज्	२	६	१३५	स्वर	१	६	४	स्वाहा	२	७	२१
स्रव	३	२	९	स्वरु	१	१	४७	"	३	४	८
स्रवद्गर्भा	२	९	६८	"	३	३	१६८	स्वित	३	३	२४२
स्रवन्ती	१	१०	३०	स्वरूप	१	७	३८	स्वेद	१	७	३३
स्रष्टृ	१	१	१७	"	३	३	१३१	स्वेदज	३	१	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्वेदनी	२	९	३०	हरित	१	३	१	इलक	१	१०	३६
स्वैर	३	३	१९३	"	१	५	१४	इव	३	२	८
स्वैरिणी	२	६	११	"	३	५	१९	"	३	३	२०७
स्वैरिता	३	२	२	हरित	१	५	१४	इविस्	२	९	५२
स्वैरिन्	३	१	१५	हरितक	२	९	३४	इव्य	२	७	२४
ह				हरिताल	३	५	३१	इव्यवाहन	१	१	५५
ह	३	४	५	हरितालक	२	९	१०३	हस	१	७	१८
हंस	१	३	३१	हरिदथ	१	३	२९	हसनी	२	९	३०
"	२	५	२३	हरिद्रा	२	९	४१	हसन्तो	२	९	२९
"	३	३	२२६	हरिद्राम	१	५	४१	हस्त	२	६	८६
हंसक	२	६	११०	हरिद्रु	२	४	१०१	"	२	६	९८
हजिका	२	४	८९	हरिन्मणि	२	९	९२	"	३	३	५९
हजे	१	७	१५	हरिप्रिया	१	१	२७	हस्तवारण	३	२	५
हट्ट	३	५	१८	हरिमन्थक	२	९	१८	हस्तिन्	२	८	३४
हट्टविलासिनी	२	४	१३	हरिवालुक	२	४	१२१	हस्तिनख	२	२	१७
हठ	२	८	१०८	हरिहय	१	१	४६	हस्तिपक	२	८	५९
हण्डे	१	७	१५	हरीतकी	२	४	१८	हस्त्यारोह	२	८	५९
हत	३	१	४१	"	२	४	५२	हा	३	३	२५७
हनु	२	४	१३०	हरेणु	२	४	१२०	हाटक	२	९	९४
"	२	६	९०	"	२	७	१६	हायन	१	४	२०
हन्त	३	३	२४५	हर्म्य	२	२	९	"	३	३	१०८
हन्न	३	१	९६	हयंक्ष	२	५	१	हार	२	६	१०५
हय	२	८	४४	हर्ष	१	४	२४	हारीत	२	५	३५
हयपुच्छी	३	४	१३८	हर्षमाण	३	१	७	हार्द	१	७	२७
हयमारक	२	४	७६	हल	२	९	१३	हाला	२	१०	३९
हर	१	१	३३	हला	१	७	१५	हालिक	२	९	६४
हरण	२	८	२८	हलायुध	१	१	२३	हाव	१	७	३२
हरि	२	५	१	हलाहल	१	८	१०	हास	१	७	१९
हरिचन्दन	१	१	५०	हलिन्	१	१	२४	हास्तिक	२	८	३६
"	२	६	१३१	हलिप्रिय	२	४	४२	हास्य	१	७	१७
हरिण	१	५	१३	हलिप्रिया	२	१०	३९	"	१	७	१९
"	२	५	८	हल्य	२	९	८	हाहा	१	१	५२
हरिणी	३	३	५०	हल्या	३	२	४१	हि	३	३	२५७
								"	३	४	५



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
हिंसा	३	३	२२९	हुतभुज्	१	१	५५	हेरम्ब	१	१	३८
हिंस	३	१	२८	हुम्	३	३	२५३	हेला	१	७	३२
हिका	३	५	८	"	३	४	१८	हेषा	२	८	४७
हिङ्गु	२	९	४०	हृति	१	६	८	हे	३	४	७
हिङ्गुनिर्यास	२	४	६२	"	३	२	८	हैमवती	१	१	३६
हिङ्गुल	३	५	२०	हृद्	१	१	५१	"	२	४	५९
हिङ्गुली	२	४	११४	हृणीया	३	२	३२	हैमवती	२	४	१०३
हिङ्गल	२	४	६१	हृद्	१	४	३१	"	२	४	१३८
हिन्ताल	२	४	१६९	"	२	६	६४	हैयङ्गवीन	२	९	५२
हिम	१	३	१८	हृदय	१	४	३१	होतु	२	७	१७
"	१	३	१९	"	२	६	६४	होम	२	७	१४
"	३	५	२२	हृदयङ्गम	१	६	१८	होरा	३	५	१०
हिमवत्	२	३	३	हृदयालु	३	१	३	ह्यस्	३	४	२२
हिमवाङ्मुका	२	६	१३०	हृष	३	१	५३	हृद	१	१०	२५
हिमसंहति	१	३	१८	हृषीक	१	५	८	हृसिष्ठ	३	१	११२
हिमांशु	१	३	१३	हृषीकेश	१	१	१८	हृस्व	२	६	४६
हिमानी	१	३	१८	हृष्ट	३	१	१०३	"	३	१	७०
हिमावती	२	४	१३८	हृष्टमानस	३	१	७	हृस्वगवेषुका	२	४	११७
हिरण्य	२	१	९०	हे	३	४	७	हृस्वाङ्ग	२	४	१४२
"	२	९	९१	हेति	१	१	५७	हादिनी	१	१	४७
"	२	९	९४	"	३	३	७१	"	१	३	९
हिरण्यगर्भ	१	१	१६	हेतु	१	४	३८	"	१	१०	३०
हिरण्यरेतस्	१	१	५५	हेमकूट	२	३	३	हादिनी	३	३	११२
हिरण्यवाह	१	१०	३४	हेमदुग्धक	२	४	२२	ही	१	७	२३
हिरक्	३	४	३	हेमन्	२	९	९४	"	३	५	३
"	३	४	७	"	३	५	२३	हीण	३	१	९१
हिलमोचिका	२	४	१५७	हेमन्त	१	४	१८	हीत	३	१	९१
ही	३	४	९	हेमपुष्पक	२	४	६३	हीवेर	२	४	१२२
हीन	३	१	१०७	हेमपुष्पिका	२	४	७१	हेषा	२	८	४७
"	३	३	१२९	हेमाद्रि	१	१	४९	हादिनी	२	४	१२४
हुतभूकप्रिया	२	७	२१								

इत्यमरकोषमूलस्थशब्दानामकारादिशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ॥

# अमरकोष-क्षेपकटीकास्थ-शब्दानामकारादिक्रमेण

## शब्दानुक्रमणिका

[ अंठल ]

[ अन मि तम्पच ]

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अ				अग्नेदिधिपु	२	६	२३	अटा	२	७	३५
अंठल	१	५	९	"	२	६	२३	अट्टालिक	२	२	९
अंशु	१	३	३३	अग्न्य	२	६	४३	अट्या	२	७	३५
४१ अंशुमालिन्	१	३	३०	अङ्क	२	६	७७	अणवीन	२	९	७
३ अकलमष	३	१	११०	अङ्कूर	२	४	४	अणव्य	२	९	७
अकिञ्चन	३	१	४९	अङ्घाट	२	४	२९	१७ अणिमा	१	१	३५
अक्षपटलिक	२	८	५	अङ्गन	२	२	१३	अण्डकोष	२	६	७६
१८ अक्षपाद	२	७	६	अङ्गारधानी	२	९	२९	१ अण्डज	१	१	१७
अक्षरविन्यास	२	८	१६	अङ्गारपात्रो	२	९	२९	अतिक्रम	२	८	९६
अक्षरसंस्थान	२	८	१६	अङ्गुरि	२	६	८२	अतिथी	२	७	३४
अक्षिगत	३	१	११२	अङ्गुरीयक	२	६	१०७	अतिवल	२	८	७२
अक्षिव	२	९	४१	अङ्गुल	२	६	८२	अतिसौरम	१	४	३३
अगच्छ	२	४	५	अङ्गुलि	२	६	८२	अतीसारकिन्	२	६	५९
अगरी	२	४	६९	अङ्गुस्	१	४	२३	अत्यन्तकोपन	३	१	३२
अगरु	२	६	१२६	अङ्गुप्रिप	२	४	५	अत्यल्प	३	१	६२
"	२	६	१२७	अङ्गुप्रिणिका	२	४	९२	अधः	३	८	१
अगरुति	१	३	२०	३४ अञ्छ	३	३	२९	अधःक्षिप्त	३	१	११२
अगुरुवासन	१	५	११	अजननि	३	२	२९	अधामार्गव	२	४	८८
अगुरुशिंशपा	२	४	६२	अजयं	२	८	१२	अधिक	२	९	८०
अग्निज्वाला	२	४	११८	अजिर	३	५	२३	अधिप	२	८	१
अग्निमुखा	२	४	११८	अजना	१	३	५	अधिपाङ्ग	२	८	६३
अग्रसर	२	८	७२	३२ अञ्जलिका-				अधीर	३	३	१९
अग्रिम	२	६	४३	रिका	२	१०	२८	अधोमुख	३	१	१०
अग्रोम	२	६	४३	अटनि	२	८	८४	अधरेसुस्	३	४	२१
अग्रीय	२	६	४३	अटरुष	२	४	१०३	अनधीनक	२	१०	९
"	३	१	५८	अटवि	२	४	१	अनमितम्पच	३	१	४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अनर्थक	१	६	२०	अपस्य	३	५	२३	अमण्ड	२	४	५१
अनायासकृत	३	१	९४	अपदान	३	२	३	अमल	२	९	१००
अनाह	२	६	११४	अपध्वस्त	३	१	९४	अमला	२	४	१२७
४६ अनौकस्थ	३	३	८५	अपर	२	८	४०	अमलाञ्छदा	२	४	१२७
अनुकर्षन्	२	८	५७	अपरेद्युस्	३	४	२१	अमा	१	४	८
अनुचर	२	८	९	अपशद	२	१०	१६	अमानस्य	१	५	३
अनून	३	१	६५	अपष्टुर	३	१	८४	अमामासी	१	४	८
अनृत	१	६	२१	अपाची	१	३	१	अमावासी	१	४	८
अनेहभूक	३	१	३८	अपोदका	२	४	१५७	अमावसी	१	४	८
३३ "	३	३	१७	अबर	२	८	४०	९२ अमृत	३	३	२३
३२ अन्तरिक्ष	१	२	१	अब्ज	२	९	८४	२१ अमृष्य	३	३	११२
अन्तर्गडु	३	१	११२	४१ अग्निनीपति	३	३	३०	अमेषस्	३	१	४८
अन्तर्गल	२	४	७४	अभिख्या	१	३	१७	अमोघा	२	४	५४
अन्तर्वेशिक	२	८	८	अभिनवोद्भिज्	२	४	४	अम्बरमणि	१	३	३०
अन्तिका	१	७	१५	अभिभूत	२	८	११२	अभ्रातक	२	४	२७
अन्तिकाभय	३	२	१९	अभिमर्द	२	८	१०५	अम्ल	१	५	९
अन्तिम	३	१	८१	अभियाति	२	८	११	अम्ललोणिका	२	४	१४०
अन्ती	२	९	२९	४६ अभिवोग	१	३	१६	अम्ललोणिका	२	४	१४०
अन्त्री	२	४	१३७	अभिषङ्ग	३	२	६	अम्लवेतस	२	४	१४१
अन्दिका	२	९	९	अभिषक्ति	२	७	३२	अम्लीका	२	४	४२
अन्दू	२	८	४१	अभिसर	२	८	७२	अयस्कर	२	१०	७
अन्व	१	१०	४	अमीर	२	९	५७	अपस्कार	२	१०	७
अन्वतामिश्र	१	९	२	अभीशु	३	३	२२०	अयुत	२	९	८४
२२ अन्वित	३	१	११२	अभ्यञ्जन	२	९	४९	अयोनि	२	९	२५
अन्वीक्षण	३	२	३०	अभ्यवहार	२	९	५६	भरद्वा	२	४	५७
२२ अन्वीत	३	१	११२	अभ्यास	३	१	६७	भररि	२	२	१७
अन्वेषण	३	२	३०	अभ्याहार	३	२	१७	भररी	२	२	१७
९ अन्वेष्टृ	३	१	११०	२० अभ्युत्थान	२	७	३३	१५ भरविन्द	१	१	२६
अपकृष्ट	३	१	५४	अभ्युस	२	९	४७	भराल	२	६	१२७
अपगा	२	१०	३०	अभ्योष	२	९	४७	अर्चि	१	१	५७
अपटान्तर	३	१	६८	अग्नी	१	१०	१३	अर्चित	३	१	९८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अर्जुन	२	९	९५	अवाचान	३	१	३३	आ			
अनुद	२	९	८४	अविद्धकर्णी	२	४	८४	४६ आक्रोश	१	६	१६
अर्श	२	६	५४	अविलम्बन	३	१	८३	आक्षदशंक	२	८	५
अशैरोगयुत	२	६	५९	अवी	२	६	२०	आक्षपटलिक	३	१	७
अल	२	९	१०३	अशन	२	९	५६	आक्षीर	२	४	३१
अलक्ष्मी	१	९	२	५ अशोक	१	१	२६	आक्षीव	२	४	३१
अलगद	१	८	५	"	२	४	८५	४६ आक्षेप	१	६	१६
अलवाल	१	१०	२९	अभ्रप	१	१	५९	आगुर्	१	५	५
अलि	२	४	४	अभ्रो	२	८	९३	आगू	१	५	५
अलिक	२	६	९२	अश्वमेधीय	२	८	४५	आग्रहायण	१	४	१४
अवग्राह	२	८	३८	१४ अष्टमूर्ति	१	१	३४	आचार्याणी	२	६	१५
"	३	२	३९	असनपर्णी	१	४	१४९	आचित	३	१	१२
अवच्छुरित	१	७	३४	असमासार्थ	१	६	७	आटी	२	५	२५
अवटि	१	८	२	असम्मत	३	१	११०	आढी	२	५	२५
अवदाहेष्ट	२	४	१६५	असिहेति	२	८	७०	आणक	३	१	५४
४४ अवधान	१	५	१	असुक्षण	१	७	२३	भातपिन्	२	४	२१
अवध्य	१	६	२०	असुरी	२	९	१९	आति	२	५	२५
अवनद्ध	१	७	४	असूक्षण	१	७	२३	आतिथि	२	७	३४
अवन्ध्य	२	४	६	असूक्संज्ञ	२	६	१२४	आप्तगन्ध	३	१	४०
अवपात	३	३	८५	अमृग्धारा	२	६	६२	आत्मजा	२	६	२८
अवराह	१	१०	२१	असेचनक	३	१	५३	आत्मदर्श	२	६	४०
अवलक्ष	१	५	१३	अस्वन्त	२	९	२९	आदण्ड	२	४	५१
५० अवला	२	६	२	अस्वाध्याय	२	७	५३	२१ आदिकवि	२	७	३५
५२ अवलेप	१	७	२१	अहःपति	१	३	३०	आदिम	३	१	८०
अववाद	१	६	१३	अहःपति	१	१	३०	आनक	१	७	६
५२ अवष्टम्भ	१	७	२१	अहत	२	६	११२	आनुपूर्व्य	२	७	३६
अवसर्प	२	८	१३	अहिजित	३	३	८५	आन्त्र	२	६	६६
अवसित	२	९	२३	अहिमार	२	४	५०	आपति	२	८	८२
अवस्कन्दन	२	८	११०	अहिमेद	२	४	५०	आपदा	२	८	८२
अवहेला	१	७	२३	४ अहिर्बुध्न्य	१	१	३४	आपस्	१	१०	३
अवाचीन	१	३	१	अहो	३	४	५	आपीनस्	२	६	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आप्त	३	३	८५	आवर्तनी	२	१०	३३	इ			
आप्य	२	४	१२६	आवली	२	४	४	इक्षुद	१	१०	२
आवाषा	१	९	३	आवाप	१	१०	११	इज्जल	२	४	६१
९२ आभरण	३	५	२३	आविम	२	४	६७	इज्या	२	१	२
आभीरपक्षी	२	२	२०	आवूत	१	७	१२	इतरेद्युस्	३	४	२१
आभ	२	६	५१	२० + आवेशिक	२	७	३३	इत्वर	२	९	६२
आमण्ड	२	४	५१	आशय	३	२	११	४१ इन	१	३	३०
आमन्त्रण	३	२	७	आशयाश	१	१	५४	९ इन्दिरा	१	१	२७
आमिषी	२	४	१३४	६९ ,,	३	३	१३१	इन्दोवार	१	१०	३७
आमिक्षा	२	७	२३	आशिर	१	१	५९	१४ इन्द्रलुप्तक	२	६	५५
७१ आम्नाय	३	३	१६१	५५ आशिस्	१	८	८	इन्द्रसुरित	२	४	६८
आम्बिका	२	४	४३	आशीर्विष	१	८	७	१६ इन्द्राणी	१	१	३५
आम्लीका	२	४	४३	८७ आशु	३	३	२१८	इर्वारु	२	४	१५५
७ आयःशू-				आशुव्रीहि	२	९	१५	१ इला	२	१	३
लिक	३	१	११०	आश्रव	३	२	२९	इलि	२	८	९१
आरग्वध	२	४	२३	४३ + आश्विन	१	४	१३	इली	२	८	९१
आरनाल	२	९	४०	४३ + आश्विनी	१	४	१३	इषिका	२	८	३८
आरवध	२	४	२३	आश्वीय	२	८	४८	"	२	१०	३२
आर्ति	३	३	६८	४० + आषाढ	१	४	१३	इषीका	२	८	३८
१९ आर्या	१	१	३७	४० + आषाढक	१	४	१३	"	२	१०	३२
१८ आर्हक	२	७	६	४० + आषाढी	१	४	१३				
आलाबु	२	४	१५६	आस	२	८	८३	ईरिण	३	३	५७
आलाबू	२	४	१५६	आसन	२	४	४४	ईर्या	२	७	३५
आलाम्बु	२	४	१५६	आसनपर्णी	२	४	१४९	ईर्वारु	२	४	१५५
आलि	२	५	१४	आसुर	१	१	१२	ईर्वालु	२	४	१५५
आलिन्द	२	२	१२	आस्फोट	२	४	८०	६ ईर्यालु	३	१	११०
आली	२	१	१४	आस्फोता	२	४	७०	ईलि	२	८	९१
"	२	५	१४	"	२	२	१०४	ईशा	२	९	१४
आलोकनक्षत्र	३	२	३१	आहितलक्षण	३	१	१०	१८ ईशिश्व	१	१	३५
आलोचित	३	१	९९	आहितुण्डक	१	८	११	ईश्वरा	१	१	३६
								ईषिका	२	८	३८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उ				१३ उद्धव	१	१	२८	उपोषण	२	७	३८
उच्छादन	२	६	१२१	उद्धान	३	१	९७	उपोषित	२	७	३८
उच्छृङ्खल	३	१	८३	उद्धार	२	९	१२	उप्तकृष्ट	२	९	८
उच्छ	२	९	२	उद्गुर	३	१	७०	उम्	३	४	१८
९४ उडु	३	५	२३	१५ उद्धृत	३	१	११२	उम्य	२	९	७
उडुम्बर	२	४	२२	उद्यमवत्	३	१	३	उरणाक्ष	२	४	१४७
उडुम्बरपर्णी	२	४	१४४	उद्रिक्त	३	१	२२	उरीकृत	३	१	१०८
उत्कण्ठित	३	१	८	उद्धान	२	९	२	उरुवृक्ष	२	४	५१
३० उत्कलिका	३	३	१७	"	३	१	११२	उरुवृक्ष	२	४	५१
उत्तरा	३	३	१९०	उधस्य	२	९	५१	२२ उर्वशी	१	१	५१
उत्तरेष्टुस्	३	४	२१	उधमान	२	९	२	१९ उत्का	१	१	२४
उत्तुङ्ग	३	१	७०	उन्दुर	२	५	११	उत्कासनक	१	७	३५
उत्तेरित	२	८	४८	उन्मथ	२	८	११५	उद्व	२	६	३८
उत्पलिनी	१	१०	३९	उन्मद	३	१	२३	उषण	२	९	३६
१२ उत्पश्य	३	१	११०	उन्मादिन्	२	६	६०	उषती	१	६	१८
१५ उत्पादित	३	१	११२	उन्मान	२	९	८५	उषा	१	४	२
उत्सर्ग	२	७	२९	उन्मुख	३	१	११०	"	२	९	३
उत्स्रक	३	१	१८	उन्मूलित	३	१	११२	"	३	४	६
१८ उदञ्चित	३	१	११२	उपकण्ठ	२	८	४८	३३ उष्टिका	३	३	१७
९३ उदर	३	५	२३	उपकालिका	२	९	३७	उष्णक	१	४	१८
उदरम्मरि	३	१	२१	उपचर्या	२	७	३४	उष्मक	१	४	१८
उदरिल	२	६	४४	उपजोषम्	३	४	१०	उष्मागम	१	४	१९
३० उदलावणिकर	९	४४		उपदंश	२	१०	४०	ऊ			
उदथित	२	९	५३	१ उपप्लुत	३	१	२३	ऊर्जस्	२	८	१०२
४५ उदास्थित	३	३	८५	उपयोषम्	३	४	१०	ऊर्ध्व	२	६	४७
उदित	३	१	९५	उपल	३	३	२००	ऊर्ध्वन्दम	३	१	११०
३४ उदीचीन	१	३	१	उपवस्त	२	७	३८	ऊर्ध्वस्थ	३	१	११०
उदूखलक	२	४	३४	२५ उपवाह्य	२	८	३६	ऊर्वः	१	१	५६
उद्धर्षण	१	७	३५	११ उपविष्ट	३	१	११०	ऊर्वरा	२	१	४
उद्धातन	२	१०	२७	उपाग्र	३	१	५९	ऊषणा	२	४	९७
उद्गम	३	१	८३	उपोदका	२	४	१५७	ऊष्ण	१	४	१८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कण्ठक	१	४	१८	ओ				२३ कण्ठक	३	३	१७
कण्ठोपगम	१	४	१९	ओक	३	३	२३३	कटंवरा	२	४	८५
कण्ठमण	१	४	१८	ओह्वार	१	६	४	कटम्बरा	२	४	८५
ऋ				ओजस्	२	८	१०२	"	२	४	१५३
ऋचीष	२	९	३२	औ				कटि	२	६	७५
४४ ऋत	३	३	८५	औदुम्बर	२	९	९७	कटिप्राथ	२	६	७५
ऋतुराज	१	४	१८	औपवल्	२	७	३५	कटिल्लक	२	४	१५४
ऋतुकेतु	१	१	२७	२५ औपवाह्य	२	८	३५	कटी	२	६	७४
ऋटि	२	८	८९	औमीन	२	९	७	कडङ्कर	२	९	२२
ऋष्य	२	५	१०	औरस्य	२	६	२८	कणिष	२	९	२१
ऋष्यकेतु	१	१	२७	और्ध्वदेहिक	२	७	३०	कण्टकारी	२	४	९३
ऋष्यगन्वा	२	४	११०	और्ध्व	२	७	६	कण्टकाशन	२	९	७५
"	२	४	११७	क				कण्टफलक	२	४	६१
ऋष्यगन्विका	२	४	११०	क	१	१०	४	८ कण्ठीरव	२	५	१
ए				ककुशत	२	९	६०	कण्डु	२	६	५३
७८ एककुण्डल	३	३	२०५	ककुन्दर	२	६	७५	कण्डूरा	२	४	८६
एकगुह	२	७	१०	ककसट	३	१	७६	कण्डोलीवीणा	२	१०	३१
एकतर	३	१	८२	कक्ष्य	२	६	७९	कण्डोली	२	१०	३१
१३ एक इष्टि	२	५	२०	कङ्क	२	५	२२	२६ कदन	२	८	११५
एकपाद्	२	१	१५	कङ्किणी	२	६	११०	कदल	२	४	११३
एकल	३	१	८२	कङ्गू	२	९	२०	कदला	२	४	११३
एडुक	२	२	४	कचपक्ष	२	६	९८	कदलिन्	२	५	९
एडोक	२	२	४	कचपाश	२	६	९८	कटु	२	४	३५
एवाह	२	४	११५	कचहस्त	२	६	९८	कनक	२	९	९६
एरुगज	२	४	१४७	कच्छ	३	३	२९	कनीनिका	२	६	९२
एरुबालुक	२	४	१२१	कच्छप	१	१०	२०	कनीयस्	२	६	४३
एषिका	२	१०	३२	२९ "	१	१	७१	कन्द	१	१०	४३
ऐ				कञ्जलध्वज	२	६	१३८	कन्दलिन्	२	५	९
ऐकाग्व	३	१	८०	५३ कञ्जकिन्	२	८	८	कन्दू	२	९	३०
ऐडविड	१	१	६९	कट	२	६	९०	कपिकञ्ज	२	४	८७
ऐडविड	१	१	६९	२३ कटक	३	३	१७	कपिअल	२	५	३५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कपित्थ	२	४	२१	कर्कटक	२	४	१६३	कवाट	२	२	१७
कपिल	२	१०	२२	कर्कटि	२	४	१५५	कवित्थ	२	४	२१
कपिला	२	४	६३	कर्कन्धु	२	४	३६	कविय	२	८	४८
"	२	९	३७	कर्कराडु	२	५	१९	कवी	२	८	४८
कपिशायन	२	१०	४०	कर्णजलीका	२	५	१३	कशारका	२	६	६९
कपिशोर्ष	३	३	२२५	कर्पर	२	६	८०	कदमल	३	१	५५
कपूय	३	१	५४	७५ "	३	३	१९२	काक	२	५	४३
कपोणि	२	६	८०	कर्पराल	२	४	२९	काकचिञ्चा	२	४	९८
कफणि	२	६	८०	कर्पासी	२	४	११६	काकचिञ्चि	२	४	९८
कवरी	२	४	१३९	कर्बर	१	१	६०	काकजङ्घा	२	४	११८
कमन्ध	१	१०	४	कर्बुर	२	४	१५४	काकलि	१	७	२
१ कमलोद्भव	१	१	१७	कर्बुर	२	४	१५४	काकस्थाली	२	४	५४
कमलिनी	१	१०	३९	कर्बुरक	२	१	१३५	९३ काकुद	३	५	२३
कम्बलिवाद्यक	२	८	५२	कर्मण्यभुज	३	१	१९	काचमाची	२	४	१५१
कम्बी	२	९	३४	२० कर्ममोटी	१	१	३७	काचर	२	६	४९
कम्भारी	२	४	३५	कर्मवृत्त	३	२	३	काञ्चिक	२	९	३९
करङ्क	२	६	६९	३९ कर्मसाक्षिन्	१	३	३०	काण्डस्पृष्ट	२	८	६७
करटक	१	१०	२०	कर्मीर	१	५	१७	कादम्ब	३	३	१३३
करडु	२	५	१९	कर्वरी	२	९	४०	काद्रव	२	९	१६
करडक	१	१०	२०	कर्बुर	२	९	९४	कापथ	२	४	१६५
करपाक	२	८	९१	कलधौत	२	९	९५	१९ कापिल	२	७	६
करपालिका	२	८	९१	"	२	९	९६	कापोत	२	९	१००
करपीडन	२	७	५६	कलशी	२	४	९३	कामङ्गामिन्	२	८	७६
करभ	२	८	३५	"	२	९	७४	कामदान	३	२	३
करहाट	२	४	५२	कलस	२	९	३१	७ कामाङ्ग	२	४	३३
करिगर्जित	२	८	१०७	कलिकारक	२	४	४८	काम्पिश्य	२	४	१४६
करिपिप्पली	२	४	९७	कल्प	२	१०	३७	कायस्था	२	४	५८
करोटी	२	६	६९	कल्य	२	१०	४०	कारित	३	१	८९
कर्क	१	१०	२०	कल्यपाल	२	१०	१०	कारोत्तम	२	१०	४२
"	१	१०	२१	कल्याण	२	९	९५	४३ + कार्तिक	१	४	१३
कर्कट	१	१०	२१	कवरी	२	६	९७	४३ + कार्तिकी	१	४	१३



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
काश्मरी	२	४	३६	किञ्जल्क	३	३	१७	५४ कुम्भीनस	१	८	८
कार्षक	२	९	६	किम्पच	३	१	४८	कुम्भोलखलक	२	४	३४
काल	२	८	११६	किर	२	५	२	कुरवक	२	४	७४
कालखज	२	६	६६	किरात	२	४	१४३	"	२	४	७५
३७ कालश्	२	३	३३	किलाटी	२	९	४४	कुरण्डक	२	४	७४
कालमेशिका	२	४	९०	किलिमष	३	३	२२४	कुरण्डक	२	४	७४
कालमेशी	२	४	९६	कीकट	३	१	४९	"	२	४	७५
काला	१	४	३६	कीनाश	३	१	४८	कुरुवक	२	४	७४
"	२	४	५४	कीर्ण	३	१	८५	कुरुवक	२	४	७४
कालायोन	२	९	८	कीशपर्णी	२	४	८९	७८ कुल	३	३	२०५
कालिका	२	९	३७	कुक	२	५	५२	कुलिक	२	१०	५
कालेयक	२	४	१०१	कुकुद	३	१	१४	कुलिर	१	१०	२०
"	२	६	१२६	कुञ्चिका	२	०	३७	कुल्माषाभिषुत	२	९	३९
काल्य	१	४	२	कुञ्जी	२	९	३७	कुल्मास	२	९	१८
काल्यक	२	४	१३५	कुटप	०	९	८९	कुल्य	२	७	३
काल्या	१	६	१८	कुटर	२	९	७४	कुल्या	२	६	८९
काबर	३	६	४९	कटि	२	२	६	७३ "	३	३	१६१
काश	२	६	५२	कट्टिम	२	०	८	कुव	१	१०	३७
७० काषाय	३	३	१६१	कुटमल	२	४	६	कुवर	१	५	९
काष्ठकुहाल	१	१	१३	कुडप	२	९	८९	कुवल	१	४	२६
काष्ठाम्बुवाहिनी	१	१०	११	कुतप	२	७	३१	"	१	१०	३७
कास	२	४	१६२	५९ "	३	३	१३१	कुशाल्मलि	२	४	४७
किकि	२	५	१६	२३ कुन्द	१	१	३०	कुशीद	२	९	४
किकिदिव	२	५	१६	कुन्दु	२	४	०१	कुशीदक	२	९	५
किकिदिवि	२	५	१६	कुन्दुर	२	४	२१	कुशीद	२	९	४
किकीदिव	२	५	१६	कुपथ	२	१	१६	कुशीदक	२	९	५
किकीदिवी	२	५	१६	कुपिन्द	२	१०	६	कुष्माण्डक	२	४	१५५
किकीदीवि	२	५	१६	कुम्भज	१	३	२०	कुसीद	२	९	२
किक्किणी	२	६	११०	कुम्भिक	१	१०	३८	कुस्तुम्बुरी	२	९	३७
किञ्जलिक	१	१०	२२	कुम्भिन्	२	८	३४	६ कुडन	३	१	११०
किञ्जुक	१	१०	२२	१ कुम्भिनी	२	१	३	कुड	१	४	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कूटक	२	९	१३	केशर	२	४	२५	कौञ्चदारण	१	१	४०
कूगी	२	६	४८	"	२	४	६४	कौटवी	२	६	१७
कूपक	२	६	७५	केशरिन्	२	५	१	१५ कौमारी	१	१	३५
कूलङ्गुषा	१	१०	३०	केशवत्	२	६	४५	कौलत्थीन	२	९	८
कुकलाश	२	५	१२	केशवेष	२	६	९७	कौलेयक	२	७	३
कुकुलास	२	५	१२	केशहस्त	२	६	९८	१२ कौशिक	२	५	१४
कृतकर्मन्	३	१	४	कैटर्य	२	४	४०	२२ "	२	७	३५
कृतकृत्य	३	१	४	कैदर्य	२	४	४०	२२ + कौषिक	२	७	३५
कृतश	२	१०	२२	कैदार	२	९	११	क्रकर	२	५	३५
कृतसापलका	२	६	७	कैरात	२	४	१४३	क्रजु	२	९	२०
कृतहस्त	३	१	४	कैवर्तमुस्तक	२	४	१३२	क्रिमि	२	५	१३
कृतार्थ	३	१	४	कैवर्तीमुस्तक	२	४	१३२	६९ क्रिया	३	३	१६१
३९ कूपीट	३	३	३९	कोक	२	५	३५	कुञ्च	२	५	२२
कुमिकोशोत्थ	२	६	१११	कोटि	२	८	८४	कुधा	१	७	२६
कुमिकोषोत्थ	२	६	१११	"	२	९	८४	कूर	२	९	७७
कुमिघ्नी	२	४	१०६	कोटी	२	८	९३	क्रैवृ	२	९	७८
कुशर	२	९	४९	कोटीश	२	९	१२	कोषिन्	३	१	३२
कुषिक	२	९	१३	कोट्टवी	२	६	१७	कुिन्नाक्ष	२	६	६०
कुषिका	२	९	१३	कोपन	३	१	३२	कुोमन्	२	६	६५
कुष्णकर्मन्	३	१	४६	कोयष्टि	२	५	३५	कजु	२	९	२०
कुष्णका	२	९	१९	कोरक	२	६	१२९	क्षतव्रत	२	७	५४
कुष्णभेदा	२	४	८६	कोला	२	४	३६	२० क्षार	१	१	५७
कुष्णसार	२	५	१०	कोली	२	४	३६	क्षिपणि	१	१०	१३
कुष्णा	२	९	६७	८४ कोश	३	३	२१८	क्षिपा	१	१०	१३
कुष्णामिष	२	९	९८	कोशिका	२	९	३२	क्षिष्णु	३	१	३०
कुष्णायस	२	९	९८	कोष	२	५	३७	१० क्षीरसागर-			
कुसर	२	९	४९	"	२	६	१३२	कन्यका	१	१	२७
केली	१	७	३२	"	२	८	१७	९ + क्षीराश्वि-			
१४ केशघ्न	२	६	५५	"	२	९	९१	तनया	१	१	२७
केशपक्ष	२	६	९८	कोषफल	२	६	१३०	९ क्षीरोदततया	१	१	२७
केशपाश	२	६	९८	कोष्कुट	२	५	४३	क्षीरविकृति	२	९	४४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
९ क्षुण्ण	३	१	११०	स्नानि	२	३	७	गन्धर्व	२	५	११
क्षुधा	२	९	५४	खानी	२	३	७	गरा	२	४	६९
क्षुधाभिजनन	२	९	२०	खार	२	९	८८	गरागरी	२	४	६९
क्षुब्ध	२	९	७४	खुल्लक	१	१०	१६	१७ गरिमा	१	१	३७
क्षुर	२	८	४८	२८ खेटक	३	३	१७	गर्भवती	२	६	२२
क्षुरमर्दिन्	२	१०	१०	खेला	१	७	३२	गर्भोपघातिनी	२	९	६९
क्षुरिका	२	८	९२	खोर	२	६	४९	४३ गर्मुद्य	३	३	८५
२० क्षुरित	३	१	११२	खोल	२	६	४९	गलन्ती	२	९	३१
क्षेत्र	२	९	११	ग				गलोद्देश	२	८	४८
क्षेपणि	१	१०	१३					गवेडु	२	९	२५
क्षेत्र	२	९	११	गगनमणि	१	१	३०	गवेषणा	३	२	३०
क्षोणी	२	१	१२	गजबन्धनी	२	८	४३	१ गह्वरी	२	१	३
क्षौणी	२	१	१२	गजभक्षा	३	४	१२३	२२ गाधेय	३	७	३५
"	२	१	१२	१४ गजारि	१	१	३४	गायत्रिन्	२	४	४९
क्षौम	२	१	१२	गजाशन	२	४	३०	गार्गक	३	२	३९
क्षमाभुज्	२	८	१	गज्जा	३	३	७	गिन्दुक	२	६	१३८
स्व				११२ "	२	४	१८	गिरा	१	६	१
				गड्ड	२	६	४८	७६ गिरि	३	३	१९२
खकसट	३	१	७६	गण	२	४	१२८	गिरिज	२	९	१००
२० खचित	३	१	११२	३१ गणिका	३	३	१७	१९ गिरिजा	१	१	३७
खजक	२	९	७४	गणिकापति	३	३	२३	गिरिसार	२	९	९८
३३ "	३	३	१७	४१ गण्ड	३	३	४३	गीर्वाण	१	१	९
खदिर	२	४	४१	गण्डकाली	२	४	१४१	गीष्पति	१	३	२४
४० खद्योत	१	३	३०	गण्डूक	२	६	१३८	गुच्छ	२	४	१६
१० खनक	२	५	११	९१ गण्डूष	३	३	२२५	"	२	९	२१
खरागरी	२	४	६९	४३ गति	३	३	८५	३४ "	३	३	२९
खर्जूर	२	९	९६	१३ गद	१	१	२८	गुडुची	२	४	८२
खर्ब	२	६	४६	गन्त्रीक	२	८	५२	गुण्डित	३	१	८९
२३ खर्व	१	१	३०	५३ गन्ध	३	३	१०४	गुत्स	२	६	१०५
"	२	९	९४	गन्धक	२	९	१०२	"	२	९	२१
खलेदाह	२	९	१५	११ गन्धमुषी	२	५	११	गुत्सक	२	४	१६
खादन	२	४	५६	गन्धमूला	२	४	१५४				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गुत्सादे	२	६	१०५	गोरुत	२	१	१८	घोट	२	८	४३
गुत्स्य	२	६	१०५	गोलिह	२	४	३९	घोणा	२	८	४९
गुत्स्यार्थ	२	६	१०५	गोष्ठश्च	३	१	११०	८८ घोष	३	३	२२५
गुथित	३	१	८६	गोस	२	९	५१	च			
६१ गुम्फ	३	३	१३२	गोस्तना	२	४	१०७	चक्रवाड	२	३	२
गुम्फित	३	१	८६	गौधुमीन	२	९	८	चक्रिक	२	८	९७
गुरण	३	२	११	गौर	२	९	१०३	चक्षण	२	१०	४०
गुबी	२	६	२२	२० गौरव	२	७	३३	४ चक्षुष्य	३	१	११०
गूवाक	२	१	१६९	ग्रथित	३	१	८६	चटका	२	९	११०
गृद्ध	२	५	२१	ग्रन्थ	३	३	८७	४७ चटु	१	३	१६
गृन्त	३	१	२२	ग्रस्त	१	६	२०	चण्डांशु	१	३	३१
गृष्टि	२	५	२	ग्रहणी	२	६	५५	चण्डा	२	४	८८
गृहगोलिका	२	५	१२	ग्रहणीरुज्	२	६	५५	चण्डालिका	३	१०	३१
गृहमणि	२	६	१३८	ग्रामाधीन	२	१०	९	२० चण्डिल	२	१०	१०
८ गृहेनदिन्	३	१	११०	ग्रामीण	३	१	११२	चतुःशाला	२	२	६
१२ गुष्ठा	३	१	११०	१३ ग्रामेयक	३	१	११२	चतुरब्दा	२	९	६८
गेण्डुक	२	६	१३८	ग्राम्य	३	१	११२	१९ चतुर्थ	३	१	११२
८ गेहेशूर	३	१	११०	ग्रैव	२	६	१०४	चन्दना	२	४	११२
गो	१	६	१	ग्रैवेयक	२	६	१०४	चन्द्रभागी	१	१०	३४
"	२	४	५५	घ				चन्द्रवाला	२	४	१२५
३ गोकर्ण	१	८	८	घटना	२	८	१०७	५ चन्द्रशाला	२	२	८
गोद	२	६	६५	३९ घटा	३	३	३९	चन्द्रिका	१	१०	३४
गोदुह	२	९	५७	घटिक	२	८	९७	चपेट	२	६	८४
गोनास	१	८	४	घण्टा	२	४	३९	चपेटिका	२	६	८४
गोप	२	९	१०४	घुण्टा	२	४	३७	चमर	२	८	३१
गोपकण्ट	२	४	३७	१२ घुक	२	४	१५	चरणप	२	४	५
गोपा	२	४	११३	२२ घृताची	१	१	५१	चरण्टी	२	६	९
गोमत	२	१	१८	घृतोद	१	१०	२	चरिण्टी	२	६	९
गोमुख	१	७	८	घृष्टि	२	४	१५१	७७ चर	३	३	१९२
गोरण	३	२	११	३८ "	३	३	३९	२० चर्चिका	१	१	३७
गोरस	२	९	५१	घृणि	१	३	३३	चर्पट	२	६	८४

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
चर्मप्रसेवक	२	१०	३३	चिराय	३	४	१	छगलाक्षी	२	४	१३७
२० चर्ममुण्डा	१	१	३७	चिरबिल्व	२	४	४७	छगलाङ्ग्री	२	४	१३७
चर्वण	२	१०	४०	चिरुका	२	५	२८	छगलाण्डी	२	४	१३७
चर्वणी	२	६	१०	चिरे	३	४	१	३२ छायानाथ	१	३	३८
चषक	२	९	३२	चिरेण	३	४	१	११ छुन्दरी	२	५	११
४७ चाटु	१	६	१६	चिलचिमि	१	१०	१८	ज			
चाणक	३	२	४०	चिलिका	२	५	२८	३९ जगक्षुस्	१	३	३०
चाणकीन	२	९	८	चिलका	२	५	२८	जगत्	१	१	६२
चाण्डाल	२	१०	४	चीर	२	६	११५	२ जगती	२	१	३
चान्द्रभागा	१	१०	३४	चुचुक	२	६	७७	जङ्गल	२	८	७३
चान्द्रभागी	१	१०	३४	चुहो	२	९	२९	जटि	२	४	३२
९२ चाप	३	५	२३	६ चूत	१	१	२६	जटो	२	४	३२
चामरा	२	८	३१	चूषा	२	८	४२	जटुल	२	६	४९
१६ चामुण्डा	१	१	३५	चूष्या	२	८	४२	जडा	२	४	८६
२० ,	१	१	३७	चेडक	२	१०	१७	जतिल	२	९	१९
चार्वाण	३	२	४२	चेल	२	६	११५	जतुका	२	४	१५३
१९ चार्वाक	२	७	६	"	३	३	२०३	जतूका	२	५	२६
चालन	२	९	२६	४३+चैत्र	१	४	१३	५८ जन	३	३	१२८
चास	२	५	१६	४३+चैत्री	१	४	१३	जननि	२	६	२९
चित्तसमुन्नति	१	७	२२	चोदनो	२	४	९२	जननी	२	४	१५३
७५ चित्तोद्रेक	१	५	५२	४६ चोष	१	६	१६	जनि	२	४	१५३
८ चित्रकाय	२	५	१	चोर	२	१०	२४	"	२	६	९
चित्रकूट	२	३	३	चोरङ	२	१०	२४	जनित्री	२	६	२९
चिनपिष्ट	२	९	१०५	चोरका	२	१०	२५	जन्म	१	४	३०
चिपिट	२	९	४७	चोरित	२	१०	२५	जपन	३	२	१२
१३चिरजीविन्	२	५	२०	१४ "	३	१	११२	जमन	२	९	५६
चिरण्टी	२	६	९	चोली	२	६	११८	जम्बुक	२	५	५
चिरतिक्त	२	४	१४३	छ				जम्भर	२	४	२४
चिरम्	३	४	१	छग	२	९	७६	जम्मीर	२	४	७९
चिरातिक्त	२	४	१४३	छगल	२	९	७६	जलकुक्कुट	१	१०	२०
चिरातिक्त	२	४	१४३	छगला	२	४	१३७	जलजन्तुका	१	१०	२२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
जलङ्गम	२	१०	१९	जीवितकाल	२	८	१२०	टिटिमक	२	५	३५
जलधि	२	९	८४	८५ जीवितेश	३	३	२१८	टिट्टिम	२	५	३५
जलवेतस्	२	४	३०	१६ जैमनीय	२	७	६	उ			
११ जलशायिन्	१	१	२१	जोस्त्रो	२	४	११८	डालिम	२	४	६५
जलशुक्ति	१	१०	२३	जोषा	२	६	२	डुड	२	९	७६
जलहस्तिन्	१	१०	२०	जोषिता	२	६	२	त			
जलका	१	१०	२२	जोषित्	२	६	२	तङ्क	२	१०	३४
जलोका	१	१०	२२	३६ श	३	३	३३	तड	२	३	४
जलोरागी	१	१०	२२	हानेन्द्रिय	१	५	८	तटाक	१	१०	२८
जवन	२	९	५६	४३ + ज्यैष्ठ	१	४	१३	तटाग	१	१०	२८
जवाधिक	२	८	४५	"	१	४	१६	तडाक	१	१०	२८
जवापुष्प	२	४	७६	४३ + ज्यैष्ठी	१	४	१३	तनया	२	६	२८
जागर	२	८	६४	ज्योतिषिका	२	८	१४	तनुस्	२	६	७१
जायति	३	२	१९	ज्योतिष्का	२	४	१५०	तनुसन्तत	३	१	१०१
जाद्रिया	३	२	१९	ज्योस्त्रा	१	४	५	तन्त्रवाप	२	१०	६
४९ जात	३	३	८५	ज्योस्त्रावृक्ष	२	६	१३८	तन्त्रवाय	२	५	१३
जाति	२	६	१३२	ज्योस्त्री	१	४	५	"	२	१०	६
जातिकोश	२	६	१३२	ज्योस्त्री	१	४	५	तन्दू	२	९	३४
जातीकोष	२	६	१३२	भ				तन्द्रा	१	७	३७
जातुधान	१	१	६०	२६ शन्शावात	१	१	३२	तन्दि	१	७	३७
३३ जातुष	२	१०	२८	शटा	२	४	१२७	तन्द्री	३	३	१७६
७२ जाश्य	३	३	१६१	शषकेतु	१	१	२७	तपःकुशसह	२	७	४२
जानपद	२	१	८	शिरिका	२	५	२८	तम	१	४	२९
२८ जालिक	३	३	१७	शिरिका	२	५	२८	तमस	२	८	३
जाह्नवी	१	१०	३१	शिरुका	२	५	२८	तमा	१	४	४
जित	२	८	११२	शिरुका	२	५	२८	तमि	१	४	४
जीवजीव	२	५	३५	शिरुलीका	२	५	२८	३८ तमिस्रहन्	१	३	३०
जीवनीषध	२	८	१२०	शोरिका	२	५	२८	तर	२	४	३२
जीवन्ती	२	४	८२	ट				तरक्ष	२	५	१
"	२	४	८३	३२ टङ्क	३	३	१७	तरणी	१	१०	१०
जीवाजीव	२	५	३५	टिटिम	२	५	३५	तरी	१	१०	१०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
तर्कुंक	३	१	४९	तुण्डिकेशी	२	४	१३९	तृतीयप्रकृति	२	६	३९
तल	२	४	१६८	तुण्डित	३	६	४४	तुफला	२	९	१११
"	२	६	८४	२१ तुण्डिन्	१	१	४०	तुषा	२	९	५५
तलमीन	१	१०	१८	"	२	६	४४	तृणक	३	१	२२
तलुनी	२	६	८	तुण्डिभ	२	६	४४	तृणा	१	९	९५
तसर	३	२	२४	तुण्डिल	२	६	४५	३८ तेजसाराशि	१	३	३०
ताडपत्र	२	६	१०३	तुत्थरसाजन	३	९	१०१	तेन	३	३	४३
तापन	१	३	३१	तुन्तुभ	२	९	१७	३१ तैल	२	९	४९
तापिच्छ	२	४	६८	तुन्दपरिमाजं	२	१०	१८	तोकक	२	५	१७
तापिज	२	४	६८	तुन्दिक	२	६	४४	त्रप्स	२	९	५१
तामिस्र	१	९	२	तुन्दित	२	६	४४	३९ त्रयीतनु	१	१	३०
ताम्र	२	९	९७	तुन्दिभ	२	६	६१	त्रयीधर्म	१	६	३
५१ तार	१	७	२	तुन्दिल	२	६	६१	त्रस्तु	३	१	२६
"	२	९	९६	तुन्न	२	९	१०१	त्रस्ता	२	४	१०८
तारा	२	६	८४	तुम	२	९	७६	३३ त्रायुष	२	३	३८
३२ तारापथ	१	२	१	८२ तुमुल	३	३	२०५	त्रिपिष्टप	१	१	६
ताल	२	६	८४	तुम्ब	२	४	१५६	त्रिपुटी	२	४	१०८
तालवृन्त	२	६	१४०	तुम्बा	२	४	१५६	त्रिशोत्य	२	९	९
तित्तिर	२	५	३५	तुम्बि	२	४	१५६	३१ तिसर	२	९	४९
तिन्तिली	२	४	४३	१९ तुरीय	३	१	११२	३१ तिसरा	२	९	४९
तिन्दुकी	२	४	३८	१९ तुर्य	३	१	११२	त्रुटी	२	४	१२५
तिमिङ्गिलगिल	१	१०	२०	तुलाकोटी	२	६	१०९	"	३	१	६२
तिरस्कारिणी	२	६	१२०	तुलि	२	१०	३२	व्यब्दा	२	९	६८
तिरस्कारिणी	२	६	१२०	तुली	२	४	४२	व्युषण	२	९	१११
२२ तिलोत्तमा	१	१	५१	तूणी	२	४	९५	त्वक्पत्री	२	९	४०
३१ तिलौदन	२	९	४९	८१ तूलि	३	३	२०५	त्वच्	२	४	१३४
तुकाक्षीरी	२	९	१०९	तूली	२	४	४२	त्वच	२	६	६२
तुकाशुभा	२	९	१०९	तूर	१	५	९	त्वचा	२	६	६२
तुणि	२	४	१२८	"	३	३	१६५	त्वरि	२	२	२६
तुण्ड	२	५	३६	तुवरिका	२	४	१३१	स्वरितोदित	१	६	२०
तुण्डकैरी	२	४	१३७	तुण्डशूल्य	२	४	६९				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दंष्ट्रा	२	६	९०	दाडिम्ब	२	४	६४	४६ दुरेषणा	१	६	१६
दक	१	१०	४	दातयौह	२	५	२१	दुर्गसञ्चर	३	२	२५
९० दक्ष	३	३	२२५	२९ दाधिक	२	९	४४	दुर्नाम्नी	१	१०	२५
दक्षिणैय	३	१	५	दायित	३	१	४०	दुर्वाच्	३	१	३७
दग्धकाक	२	७	२१	३१ दारक	३	३	१७	दुलि	१	१०	२४
दण्डुम	१	८	५	दारा	२	६	६	दुष्प्रधर्षिणी	२	४	११४
ददुहर	२	४	१४७	दारु	२	४	१३	दुष्पुत्र	२	४	१२८
दद्रुम	२	४	१४७	९३ „	३	५	२३	दूरवृश्	२	७	६
दद्रुण	२	६	५९	१३ दारुक	१	१	२८	दूष्य	२	६	१२०
दध्युद	१	१०	२	दाविकाकाथोद्भव	९	१०१		दूषीका	२	६	६७
६ दन्तक	१	३	६	दालिम	२	४	६४	दूढमुष्टि	३	१	४८
दन्तिजा	२	४	१४४	दिधिषु	२	६	२३	देवखात	२	३	६
दमूनस्	१	१	५६	दिधिष्	२	६	२३	देवखातविल	२	३	६
दरित	३	१	२६	दिधीष्	२	६	२३	देवताल	२	४	६९
दरोदर	३	३	१७२	४० दिनमणि	१	१	३०	देवाजीविन्	२	१०	११
दद्रुण	२	६	५९	४ दिवस्पृषिवी	२	१	१८	देश	२	१०	३७
दद्रुगिन्	२	९	५९	१२ दिवान्य	२	५	१४	२७ देशिक	३	३	१७
दद्रुण	२	९	५९	११ दिवान्यिका	२	५	११	देशीय	२	१०	३७
५२ दर्प	१	७	२१	१२ दिवाभीत	२	५	१४	दोली	२	८	५३
दर्विका	२	४	११९	दिवोक्तस्	१	१	७	९० दोष	३	३	२२५
दर्वी	२	९	३४	दीपवृक्ष	२	६	१३८	३६ दोषश्च	३	३	३३
६४ „	३	३	१३३	दीप्यक	३	३	११	दोषा	२	६	८०
८० दल	३	३	२०५	दीर्घकोषिका	१	१०	२५	९० „	३	३	२२५
२५ दव	१	१	५७	दीर्घग्रीव	२	९	७५	दोषातिलक	२	६	१३८
दशपुर	२	४	१३१	दीर्घजङ्घ	२	९	७५	दौत्य	२	८	१६
दशपूर	२	४	१३१	११ दीर्घतुण्डी	२	५	११	दौवारिक	२	८	६
दशेन्धन	२	६	१३८	२७ दीर्घनिद्रा	२	८	११६	३ आवापृषिवी	२	१	१८
दाक्षक	३	२	३९	दीर्घसूत्रिन्	३	१	१७	३ आवाभूमी	२	१	१८
१९ दाक्षायगी	१	१	३७	दुन्दुक	२	४	५६	३१ शु	१	३	१
दाक्षिण्य	३	१	५	दुन्दुमि	१	७	६	५८ शुभ्र	३	३	१२८
				दुरालम्बा	२	४	९२	द्रप्प्य	२	९	५१



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दुषन	२	८	९१	धनु	२	८	८३	धूस्तूर	२	४	७७
द्रुणि	१	१०	११	धन्य	२	९	३८	धृष्णु	३	१	१२५
द्रोण	२	५	१४	धन्या	२	९	३८	धेनुक	३	३	१५
द्रोणि	१	१०	११	धन्याक	२	९	३८	धोरित	२	८	४८
द्वाःस्थ	२	८	६	धन्व	२	८	८३	धोरितक	२	८	४८
द्वाःस्थित	२	८	६	धमनी	२	६	६५	धौतकौशेय	२	६	११२
द्वादशाङ्गुल	२	६	८४	धरणी	२	१	२	धौय	२	८	४८
९४ द्वार	३	५	२३	धरणीसुत	१	३	२५	६६ ध्याम	३	३	१४५
द्वास्थितदर्शक	२	८	६	धर्मन्	१	४	२४	ध्वज	२	१०	१०
द्वास्थोपस्थित-				धर्षणी	२	६	१०	ध्वनित	१	३	८
दर्शक	२	८	६	धाटि	२	८	११०	९५ ध्वान्त	३	५	२३
द्विगुणाकृत	२	९	९	धाटी	२	८	११०				
द्विज	२	७	४	धातकौ	२	४	१२४	न			
५३ + द्विजिह्व	१	८	८	धातुपुष्पिका	२	४	१२४	नखी	२	४	१३०
द्विर्त्याकृत	२	९	९	धातुपुष्पी	२	४	१२४	नम्रहू	२	१०	४२
५३ द्विरसन	१	८	८	धान्यक	२	९	३८	नडमीन	१	१०	१८
द्विवर्षा	२	९	६८	धान्यत्वच्	२	९	२२	नडिनी	१	१०	३९
द्विशीत्य	२	९	९	धान्याम्बल	२	९	३८	नतनासिक	२	६	४५
द्विसीत्य	२	९	९	४१ धामनिधि	१	३	३०	१४ नतोन्नत	३	१	११२
द्विहृत्य	२	९	९	धारण	२	८	४८	ननन्द	२	६	२९
२१ द्वेष्य	३	१	११२	७५ धारा	३	३	१९२	२१ नन्दिक	१	१	४०
२३ द्वैपायन	२	७	३५	धार्त	२	१०	४३	२१ नन्दिकेश्वर	१	१	४०
ध				धार्मपत्तन	२	९	३६	नन्दिनी	२	६	२९
५६ धनिन्	३	३	१२८	धावनी	२	४	९३	नन्दीवर्त	१	१०	२०
धनीयक	२	९	३८	धिपाङ्ग	२	८	६३	४८ नप्तृ	३	३	८५
धनेयक	२	९	३८	७० धिष्ण्य	३	३	१६१	३ नरकान्तक	१	१	२१
धनु	२	८	८३	धुतूर	२	४	७७	नराधिप	२	८	१
धनुर्मध्य	२	८	८५	धुस्तूर	२	४	७७	नारायण	१	१	१८
धनुर्यास	२	४	९१	धूप	२	६	१२७	नरेश	२	८	१
धनुस्	२	४	३५	धूम्रक	२	९	७५	नर्तक	१	७	८
धनुष्यट	२	४	३५	धूली	२	८	९८	५ नवमलिका	१	१	२६
								॥	२	४	७२

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
नवसूति	२	९	७१	"	२	९	८४	२६ निशुम्भन	२	८	११५
नसा	२	६	८९	निग्राह	३	२	३९	निश्रेणी	२	२	१८
नस्तोत	२	९	६३	निघस	२	९	५६	निष्कली	२	६	२१
नस्या	२	९	८९	१६ निचित	३	१	११२	निष्कामित	३	१	३९
नागज	२	९	१०५	निचुल	२	६	११६	निष्कुट	२	४	१३
नागजिह्वा	२	९	१०८	निचोल	२	४	६१	निष्कुटी	२	४	१२५
नागसुगन्धा	२	४	११४	६३ नितम्ब	३	३	१३३	निष्ठूत	३	१	८७
नाडिका	२	९	३४	५६ निदान	३	३	१२८	निशदन	२	८	११३
नाडिकेर	२	४	१६८	निद्रित	३	१	३३	८६ निखिश	३	३	२१८
ननाविष	३	१	९३	१ निधन	१	१	१३	निचिकी	२	९	६७
नान्दीवृक्ष	२	४	१२८	निबन्धन	१	७	७	नीरोग	२	६	५७
नामि	२	६	१२९	१६ निभृत	३	१	११२	निरोध	३	२	१३
१ नामिजन्मन्	१	१	१७	नियमित	३	१	९५	३० नील	१	१	७१
नामी	२	८	१५६	नियातन	३	२	२७	नीलसार	२	४	३८
नाम	३	४	१४	निरङ्कुश	३	१	१५	नीलाङ्गु	२	५	१३
नायक	२	६	१०२	"	३	१	८३	नीलाम्बुज	१	१०	३७
२५ "	३	३	१७	१७ निरर्थक	३	१	११२	१० नीलीराम	३	१	११०
नार	१	१०	४	निरालस	२	१०	१९	६ नीलोत्पल	२	१	२६
नारक	१	९	२	निरीष	२	९	१३	नूद	२	४	४१
नारिकेर	२	४	१६८	निर्गन्धन	२	८	११३	नृत्त	१	७	१०
नारिकेल	२	४	१६८	निर्गुण्ठी	२	४	६८	नेदीयस्	३	१	६८
नारिकेलि	२	४	१६८	५८ निर्हारिणी	१	१०	३०	नेमि	१	१०	२७
नारीकैली	२	४	१६८	निर्धाय	३	१	१३	नेमिन्	२	४	२६
नाला	२	१०	४२	निर्बर्हण	२	८	११२	नेमी	२	८	५६
नाली	२	९	३४	निर्मर्याद	३	१	२३	१८ नैयायिक	२	७	६
"	२	१०	४२	निर्यन्त्रण	३	१	१५	१८ न्यञ्जित	३	१	११२
८६ नाश	३	३	२१८	निवन्ध	२	६	५५	न्युञ्ज	२	६	४८
नासामल	२	६	६६	निवृत	२	६	११३	१२ "	३	१	११०
निःकृत	३	१	४१	निश्	१	४	४	पक्ष	३	२	८
निकाय	२	२	५	निशाकर	१	३	१५	१२ पक्ष	३	१	११०
निकोटक	२	४	२९	१२ निशाटन	२	५	१४	पक्षती	१	४	१
निक्षेप	२	९	८१	निशात	३	१	९१	"	२	५	३६
निखर्व	२	६	४६	निशारण	२	८	११२	पक्ष्य	३	१	११०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पक्षी	२	४	४	पयोधर	१	३	७	परेत	१	९	२
पङ्क	१	३	२	"	२	६	२७	परेष्टि	२	७	३५
पचम्पचा	२	४	१०१	पयोमुच्	१	३	७	परोयुत	३	१	६४
पञ्ज	२	१०	१	परःसहस्र	३	१	६४	परोलक्ष	३	१	६४
पञ्चरव	२	८	११६	परस्परपराहत	१	६	१९	परोष्ठी	२	५	२६
८ पञ्चनरु	२	५	१	परस्वध	२	८	९२	पर्णशाल	२	२	६
पञ्चभद्र	३	१	२३	पराजित	२	१०	१८	२६ पर्यङ्क	३	३	१७
पञ्चालिका	२	१०	१९	परायण	३	२	१	पर्व	१	४	७
पट	२	४	२५	पराङ्	२	९	८४	पर्वसन्धि	१	४	७
पटकुटी	२	६	१२०	परिग्रह	२	८	७९	पर्शु	२	६	६९
पटकुब्ध	२	६	१२०	परिपाटी	२	७	३६	पर्थव	२	८	९२
पटगृह	२	६	१२०	परिभूत	२	८	११२	पर्वद	२	७	१५
पटवासस्	२	६	१२०	परिमाण	२	९	८५	पलाश	१	५	१४
पटु	३	१	३५	परिमेद	२	४	५०	पलिष	३	३	२७
पट्टन	२	२	१	परिवस्तर	१	४	२०	२ पल्लवक	३	१	२३
पट्टो	२	४	४१	परिवर्त	२	९	८०	२ पल्लविक	३	१	६
पणस	२	४	६	परिवाद	१	६	१३	पशुमेरण	३	२	३९
पणक्की	२	६	१९	परिबाह	१	१०	१०	पञ्चबाह	२	९	६३
पण्यवीथी	२	२	२	परिवेश	१	३	३२	पस्य	२	२	५
पण्यक्की	२	६	१९	परिवेष्टित	३	१	८८	पांशु	२	८	९८
पतद्गृह	२	८	७९	परिमाजक	२	७	४१	२५ पाक	३	३	१७
पत्रल	२	९	५१	परिष्कन्द	२	१०	१८	पाटला	२	९	६७
पत्र	२	४	१३४	परिष्काज	२	१०	१८	पाटकि	२	४	३९
पथ	२	१	१५	परिष्कृत	२	६	१००	"	२	९	१५
पद	२	६	७१	परिसार	३	२	२१	पाटकी	२	४	५४
पदवि	२	१	१५	परिसृता	२	१०	३९	पाणिग्रहण	२	७	५६
पदात	२	८	६६	परिस्कन्न	२	१०	१८	पाथःपति	१	१०	१
पङ्कती	१	१	५	परिस्कार	२	६	१०१	पादकृत	२	१०	७
२९ पञ्च	१	१	७१	परिस्पन्द	२	६	१३७	पादत्राण	२	१०	३०
पञ्चवर्ण	२	४	१४५	परिहास	१	७	३२	१४ पादवस्मीकर	६	५५	
३८ पञ्चाक्ष	१	३	३०	परीत	३	१	८८	पादात	२	८	६६
४१+पद्मिनीपति	१	३	३०	परीरम्भ	३	२	६०	पादाति	२	८	६६
पञ्च	२	१०	१	पक्	२	४	१६२	पादातिग	२	८	६६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पादाविक	२	८	६६	१५ पिङ्गूष	२	६	६६	१६ पूर्ण	३	१	११२
पादुकाकृत	२	१०	७	पिटक	२	९	२६	१ पूर्व	१	१	१७
पानगोष्ठी	२	१०	४२	पिटिका	२	६	५३	"	३	१	६४
पानवणिज	२	१०	१०	पिण्ड	२	९	२६	पूर्वा	३	१	१३४
पापडि	२	१०	२३	४० पिण्डी	३	३	४३	पृक्का	२	४	१३३
पामर	२	६	५८	८ पिण्डीशूर	३	१	११०	पृथगात्मता	२	७	३८
पारत	२	९	९९	पिण्डोल	२	९	५६	पृथग्रूप	३	१	९३
पारापत	२	४	१४	पिप्पलि	२	४	९७	पृथवी	२	१	३
पारावताङ्ग्री	२	४	१५०	पियाल	२	४	३५	पृथिन	१	३	३३
२३ पाराशर्य	२	७	३५	पिष्ट	२	९	१०४	पृथन्ति	१	१०	६
पाराशव	३	३	२११	पिष्टप	२	१	६	पृषातक	२	७	२४
पारिपन्थिक	२	१०	२५	पीतक	२	९	१०३	पृष्ठास्थि	२	६	६९
पारिभद्र	२	४	५३	पीतदुग्धा	२	९	७२	पृष्णि	२	६	४८
पारिभान्य	२	४	१२६	पीतशालक	२	४	४३	२७ पेटक	३	३	१७
पारियात्रिक	२	३	३	पीति	२	८	४३	पेडा	२	१०	२९
पारी	२	९	३२	पुक्कस	२	१०	२०	पेयूष	१	१	४८
माश्वभाग	२	४	४०	पुण्ड	२	४	१२७	"	२	९	५४
पार्थास्थि	२	६	६९	पुण्डरीक	२	५	१	पेशी	२	५	३७
पालिन्धी	२	४	१०८	पुत्री	२	६	८	पेशीकोश	२	५	३७
पाली	२	८	९३	पुनर्नव	२	६	८३	पेशीकोष	२	५	३७
"	३	३	१९८	१० पुन्ध्वज	२	५	११	पैत्र (तीर्थ)	२	७	५१
पाशक	२	१०	४५	पुरन्धि	२	६	६	पैत्र्य (तीर्थ)	२	७	५१
पाशयन्त्र	२	१०	२६	पुरह	३	२	६३	पोगण्ड	२	६	४६
पाषण्ड	२	७	४५	३ पुराणपुरुष	१	१	२१	३८ पोटा	३	३	३९
७ पिकवदलभ	२	४	३३	पुरुह	३	१	६३	५६ पोत	१	१०	१३
पिचिण्डल	२	६	४४	पुष्पदन्त	१	४	२०	पौण्ड्र	२	४	१६३
पिचिण्ड	२	६	७७	पुष्परथ	२	८	५१	पौतव	२	९	८५
पिचिण्डल	२	६	४४	पुष्पवन्त	१	४	१०	पौस्तिक	२	९	१०७
पिचुतुल	२	९	१०६	पुष्पाजन	२	९	१०३	४३ पौष	१	४	१३
पिचुमद	२	४	६२	पुष्पिता	२	६	२०	४२ पौषी	१	४	४३
पिचुल	२	९	१०६	पूतीकरज	२	४	४८	पौष्पक	२	९	१०३
पिच्छिला	२	४	६२	पूतीकरज	२	४	४८	२२ प्रकट	३	२	११२
पिञ्ज	२	५	४२	१६ पूरित	३	१	११२	४९ प्रकटोदित	१	६	२०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
२६ प्रकम्पन	१	१	६२	प्रपुनाल	२	४	१४७	३५ प्राचीन	१	३	१
२२ प्रकाश	३	१	११२	प्रपुनल	२	४	१४७	प्राचीर	२	२	३
प्रक्षेदन	२	८	८७	प्रपुनाल	२	४	१४७	२१ प्राचेतस	२	७	३५
९ प्रग्रह	२	८	८७	प्रकुल	२	४	७	प्राण	१	१	६२
प्रचर्चित	३	१	११२	२७ प्रमय	२	८	११६	प्रातिहारक	२	१०	११
प्रजविन्	२	८	४५	प्रमाण	२	९	८५	प्रातिहारिक	२	१०	११
प्रह	२	६	४७	प्रमातामह	२	६	३३	८३ प्राध्व	३	३	२१३
"	२	७	५	प्रमीलन	२	८	११६	८ प्राप्ति	१	१	३५१
४ प्रणाय	३	१	११०	प्रमृत	२	९	२	प्राबन्धिक	२	८	५८
४४ प्रणिधान	१	५	१	प्रमेह	२	६	५६	प्रावर	६	१२	१७
प्रतति	२	४	९	प्रमुत	२	९	८४	प्राश	२	८	९३
प्रतिकर्मन्	२	६	१२१	प्रमुद्यार्थ	३	२	२६	प्राशक	२	१०	४५
प्रतिग्रह	२	६	१३९	प्ररोह	२	४	४	४ प्रियदर्शन	३	१	११०
प्रतिदान	२	९	८०	प्रबयण	२	९	१२	प्रेष	३	३	२२०
प्रतिध्वनि	१	६	२६	प्रबलिका	१	६	६	प्रेष्य	३	१०	१७
प्रतिरोधक	२	१०	२५	प्रबलही	१	६	६	प्रेयङ्गवीण	२	९	८
प्रतिश्या	२	६	५१	२७ प्रविष्ट	३	१	११२	प्रोत	१	६	११५
१७ प्रतिभित	३	१	११२	प्रविख्याति	३	२	३८	प्रोथ	२	६	७५
प्रतिश्रुत	३	१	१०८	प्रविधात	२	८	११४	प्रोष	३	२	९
प्रतिहार	२	२	१६	प्रवेणि	२	६	९८	प्रोह	२	६	७५
"	२	८	६	"	२	८	४२	प्रौष्ठपदा	१	३	२२
३५ प्रतीचीन	१	३	१	प्रश्नदूती	१	६	६	प्लवङ्गम	२	५	३
प्रतीप	३	१	८४	प्रसर	३	२	२५	प्लीहा	२	६	६६
२१ प्रतीष्ट	३	१	११२	प्रसरणि	२	८	९६	प्ता	२	९	५४
प्रतीहास	२	४	७६	प्रसरणी	२	८	९६	फ			
प्रत्यबगुष्णी	२	४	८९	प्रसवबन्धन	२	४	१५	फटा	१	८	९
प्रत्यवसान	२	९	५६	प्रसृत	२	६	८५	५४ फणधर	१	८	८
प्रत्युत्कान्ति	३	२	२६	प्रस्कृत	३	१	८१	फल	२	४	१५
प्रदिश	१	३	५	१८ प्राकाम्य	१	१	३५	"	२	६	१३२
प्रदेशनी	२	६	८१	२० प्राघुणक	२	७	३३	"	२	९	८०
४० प्रद्योतन	१	३	३०	२० प्राघूर्णक	२	७	३३	फलस	२	४	६१
५० प्रपात	३	३	८५	प्राङ्गण	२	२	१३	फजिका	२	४	८९
प्रपुनाल	२	४	१४७	प्राङ्गन	२	२	१३	४३ फाल्गुन	१	४	१३
								४३ फाल्गुनी	१	४	१३

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
फेरण्ड	२	५	५	५४ बाषा	३	३	१०४	भ			
फेरी	२	९	५६	बाल	२	६	९६	४७ भक्ति	३	३	८५
ब				बालगर्मिणी	२	९	७०	भक्षण	२	९	५६
बधू	२	४	१३३	बालपत्र	२	४	४९	भक्षकार	२	९	२८
बन्धनालय	२	८	११९	बालपाद्या	२	६	१०३	भक्ष्यकार	२	९	२८
बन्धदी	२	९	७३	बाचमीक	२	१	१४	४१ भग	१	३	३०
बन्धुक	२	४	७३	बाहिक	२	६	१२४	भङ्ग	२	८	१११
बन्धुर	३	१	६९	बाहिक	२	८	४५	भङ्गीन	२	९	७
७६ ,,	३	३	१९२	"	३	३	९	भङ्गुर	३	१	७१
बरीवर्द	२	९	५९	बिडाल	२	५	६	भङ्ग्य	२	९	७
बर्वणा	२	५	२६	बिन्दुजालक	२	८	३९	भण्डिन्	२	४	६३
बर्वरा	२	४	१३९	बिभीतकाक्ष	२	४	५८	भण्डिर	२	४	६३
९४ बर्ह	३	५	२३	६४ बिम्ब	३	३	१३३	भण्डोल	२	४	६३
बर्हि	१	१	५४	बिल	२	३	६	भद्र	२	४	१५९
"	२	४	१३२	विश	१	१०	४२	भद्रा	२	४	११६
बर्हिशुष्मन्	१	१	५४	विसकण्टिका	२	५	२५	भन्द	१	४	२५
१३ बलाद्धृत	३	१	११२	बीजकोष	१	१०	४३	भम्मा	१	७	६
१२ बलाहक	१	१	२८	बुक	२	४	८१	भर्ग्य	१	१	३३
बलिमुख	२	५	३	बुकन्	२	६	६४	२४ भसित	१	१	५७
बलिर	२	६	४९	बुकस	२	१०	२०	२४ भस्मन्	१	१	५७
बलिवाद्यक	२	८	५२	बुकाप्रमांस	२	६	६४	भस्मगन्धा	२	४	१२०
बलिश	१	१०	१६	बुद्धिमती	२	६	१२	भस्मगर्भा	२	४	१२०
बलीमुख	२	५	३	३७ बुध	१	३	२	४३ + भाद्रपद	१	४	१३
बष्कयणी	२	९	७१	२५ ,,	३	३	१०४	४३ + भाद्रपदी	१	४	१३
बसिर	२	४	९७	बुध	२	९	२२	३६ भानुज	१	३	२
बस्स्य	२	२	५	बृहताम्पति	१	३	२४	भानुफला	२	४	११३
बहलिक	२	९	४०	३७ बृहस्पति	१	३	२	भारत	२	१०	१२
बहुपाद्	२	४	३२	बोधि	२	४	२०	भारतवर्ष	२	१	६
बहुरूप	३	१	९३	ब्रह्माक्ष	२	४	४१	भारिन्	२	१०	१५
बहुलीकृत	२	९	२३	१५ + ब्रह्माणी	१	१	३५	१० भार्गवी	१	१	२७
बहिक	२	६	१२४	३ ब्रह्मण्य	३	१	११०	साब	२	६	९२
बहोक	२	६	१२४	१६ ब्रह्मवादिन्	२	७	६	४५ साबना	१	५	२
बाणुची	२	४	९६	३ ब्रह्मणहित	३	१	११०	मिण्डिपाल	२	८	९१
बादर	२	६	१११	१५ ब्राह्मी	१	१	३५	भिदिर	१	१	४७
५७ बाधना	३	३	१२८								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मिया	१	७	२१	आतुव्य	२	६	३६	मधुल	२	४	२७
६६ मीम	३	३	१४५	आमर	२	९	१०७	मधूल	२	४	२७
मीरु	२	६	३	म				"	२	४	२८
मीलु	२	६	३	२९ मकर	१	१	७१	मध्वष्टील	२	४	२८
मील	२	६	३	मकुट	२	६	१०२	मनोजव	३	१	१३
२ भुजङ्ग	३	१	२३	मकुर	२	६	१४०	मनोजवस्	३	१	१३
भूत	२	१०	३७	मकुष्टक	२	९	१६	मनोहर	३	१	५२
२ भूतवात्री	०	१	३	मकुष्ठ	२	९	१६	४९ मनोहारिन्	१	६	२०
भूतनाशन	२	९	१८	मकुष्ठक	०	९	१६	"	३	१	५२
भूतवास	२	४	५८	मकुष्ठक	२	९	१६	मन्द	१	१	२६
२४ भूति	१	१	५७	मक्षीका	२	५	२६	मन्दर	२	३	३
भूतम	२	९	९५	मङ्कुर	२	६	१४०	५१ मन्द	१	७	२
भूपति	२	८	१	मज्जा	२	४	१२	मपष्ठ	२	९	१७
भूपाल	२	८	१	मञ्जरी	२	४	१३	मपष्ठक	२	९	१७
भूमृत्	२	३	१	मञ्जील	२	६	१०९	मपुष्ठ	२	९	१७
भूमिजम्बू	२	४	३८	२३ मञ्जुषा	१	१	५१	मपुष्ठक	२	९	१७
भूमिमुत	१	३	२५	४८ + मणित	१	६	२०	मयष्ठक	२	९	१७
भूमी	२	१	२	मणी	२	९	९३	मथुर	२	५	३०
भूर्	२	१	२	मण्डक	२	४	७२	मयुष्ठक	२	९	१७
भूषण	२	६	१०१	मण्डन	२	६	१००	मरिच	२	९	३६
भूषा	२	६	१०१	मण्डल	२	८	८५	मरुवक	२	४	५२
२० भूषित	३	१	११२	"	२	१०	२२	"	२	४	७२
भूषुर	२	७	४	मस्तकासिनी	२	६	४	मलपू	२	४	६१
भृकुंक्ष	१	७	११	मद्र	२	६	१२०	मलय	२	३	३
भृकुटि	१	७	३७	५२ "	२	७	२१	मलापू	२	४	६१
भृगुजा	२	४	८९	मदिष्टा	२	१०	४०	मल्लिका	२	९	३२
भृङ्गरज	२	४	१५१	मदगुरी	१	१०	२५	मल्लिकारुख्य	२	५	२४
भृङ्गरजस्	२	४	१५१	मद्र	१	७	२	मषि	२	४	१३४
२१ भृङ्गिन्	१	१	४०	मधु	२	४	१४२	मषी	२	४	१३४
१६ भृत	३	१	११२	मधुक	२	४	२७	मसि	२	४	१३४
भेरि	१	७	६	"	२	८	९३	मसी	१	४	१३४
५४ भोगधर	१	८	८	९ मधुदूत	२	४	३३	मसुर	२	९	१७
६५ भ्रम	३	३	१४५	मधुपणी	२	४	९४	मसुरा	२	९	१७
आतृमणिनी	२	६	३६	मधुरिका	२	४	१०५	मसूरा	२	९	१७
								मस्तिक	२	६	६५

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
मह	३	३	२३१	१४ मानस	३	५	२३	मुषी	२	१०	३३
महला	२	६	२	४३ + मार्ग	१	४	१३	१४ मुष्ट	३	१	११२
महाधन	२	६	११३	४३ + मार्गी	१	४	१३	मुष्टिक	२	१०	८
१४ महानट	१	१	३४	मार्ताण्ड	१	३	२९	मुस्तक	२	४	१५९
२९ महापद्म	१	१	७१	मार्षक	१	७	१४	मूच्छा	१	७	३३
"	२	९	८४	माष्य	२	९	७	मूर्ण	३	१	९५
३२ महाबिल	१	२	१	मासिक	२	७	३१	मूर्धावसिक्त	२	८	१
महाम्बुज	२	९	८४	माहा	२	९	६६	मूर्धज	२	६	९६
महायज्ञ	२	७	२४	माहाकुल	२	७	३	मूर्वी	२	४	८३
महिका	१	३	१८	माहिष	२	१०	३	मूषक	२	४	३९
१७ महिमा	१	१	३५	१५ माहेश्वरी	१	१	३५	मूषिकाह्वया	२	४	८८
महिर	१	३	२९	मिशि	२	४	१०५	मूषी	२	१०	३३
मही	२	१	३	मिशी	२	४	१०५	मृग	२	६	१२९
महीप	२	८	१	मिश्रेय	२	४	१०५	मृगदंश	२	१०	२१
महीपति	२	८	१	मिषि	२	४	१३४	८ मृगवृष्टि	२	५	१
महीपाल	२	८	१	मिषी	२	४	१३४	८ मृगद्विष	२	५	१
महोमुज्	२	८	१	मिसि	२	४	१३४	८ मृगरिपु	२	५	१
महीसुर	२	७	४	मिसी	२	४	१०५	मृगया	३	२	३०
३६ महीसूनु	१	३	२	"	२	४	१५२	मृगव्या	२	१०	२३
महेरणा	२	४	१२४	मिहर	१	३	२९	८ मृगाशन	२	५	१
महेला	२	६	२	१६ मीमांसक	२	७	६	मृणाल	२	४	१६४
९ मा	१	१	२७	४ मुकुन्द	१	१	२१	मृत्तालक	२	४	१३१
७ माकन्द	२	४	३३	३० "	१	१	७१	मृत्सा	२	४	१३१
४३ माघ	१	४	१३	मुकुष्ठ	२	१	१७	मृदङ्ग	२	९	१०६
४३ + माघी	१	४	१३	मुकूलक	२	४	१४४	मृदुच्छद	२	४	४६
माणव	२	६	४२	मुख	३	१	५९	९३ मृधा	३	५	२३
माणिवन्ध	२	९	४२	४१ + मुण्ड	३	३	४३	मृधार्थक	१	६	२१
मातुला	३	६	३०	४१ मुण्डक	३	३	४३	मेघज्योतिस्	१	३	१०
मातृमुख	३	१	४८	४ मुरमर्दन	१	१	२१	१२ मेघपुष्प	१	१	२८
मातृष्वसेव	२	६	२५	मूलकर्मन्	३	२	४	३२ मेघाध्वन्	१	२	१
मातृष्वस्त्रीय	२	६	२५	मुषक	२	५	१२	मेण्डक	२	९	७६
मातृशासित	३	१	४८	मुषा	२	१०	३३	मेथि	२	९	१५
माषवीलता	२	४	७२	मुषलिन्	१	१	२४	मेद	२	६	६४
मान	२	९	८५	१४ मुषित	३	१	११२	२२ मेनका	१	१	५१



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
१९मेनकात्मजा	१	१	३७	र				राला	२	६	१२७
मेल	३	२	२९	रक्त	२	९	९७	रिक्त	३	१	५६
मैला	२	४	९५	रक्तपुष्पक	२	४	४९	रिक्कण	१	७	३६
मैत्रावरुण	१	३	२०	रक्तमाल	२	४	४७	२१ रिटि	१	१	४०
२१ + „	२	७	३५	रक्ता	२	६	१२५	रिद्ध	२	९	२३
२१मैत्रावरुणि	२	७	३५	२५ रक्षा	१	१	५७	रिरि	२	९	९७
मैनाक	२	३	३	”	३	२	८	रिष्ट	२	४	३१
मोषा	२	४	१०६	रक्षोघ्न	२	९	१८	रीति	२	९	९७
मोच	२	४	३१	रज	१	४	२९	रीरी	२	९	९७
मोचनी	२	४	४६	”	३	३	२३२	रुक्मकार	२	१०	८
१३ मौकुलि	२	५	२०	रजनि	१	४	४	रुण्ड	२	८	११७
३१ ब्रक्षण	२	९	४९	रजनी	२	४	९५	रुबु	२	४	५१
म्लान	३	१	५५	२ रजोमूर्ति	१	१	१७	४ रुमा	२	१	१८
म्लेच्छजाति	२	१०	२०	रक्तिका	२	४	९८	रुशती	१	६	१७
य				२ रत्नगर्भा	२	१	३	रुबु	२	४	५१
३ यक्षपुरुष	१	१	२१	२ रत्नवती	२	१	३	रुषा	१	७	२६
यक्षसूत्र	२	७	४९	रथव्रज	२	८	५५	रूप	२	१०	३७
यथाकामिन्	३	१	१५	रथाश्रपुष्प	२	४	३०	रूपक	२	२	१०
यन्त्रित	३	१	९५	रथिन्	२	८	७६	रुबुक	२	४	५१
यमनिका	२	६	१२०	रमणा	२	६	४	रुबुक	२	४	५१
यमानिका	२	४	१४५	९ रमा	१	१	२७	रेखा	२	४	४
बदिष्ट	२	६	४३	२२ रम्भा	१	१	५१	रेचनी	२	४	१०८
यष्टीमधुक	२	४	१०९	रवण	२	९	७५	”	२	४	१४६
याम्य	३	१	५४	३६ रवि	१	३	२	रेप	३	१	५४
युवक	२	६	४२	रशना	२	६	९१	रोगिन्	२	६	५८
युवती	२	६	८	रश्मि	१	१	३३	३ रोदस्	२	१	१८
यूपकटक	२	७	१८	रस	२	९	१०४	३ रोदसी	२	१	१८
यूष	२	४	४१	रसगन्ध	२	९	१०४	रोष	१	१०	७
येन	३	४	३	रसना	२	६	१०४	५८ रोषोवक्रा	१	१०	३०
६८ योग्य	३	३	१६१	रसाल	२	४	१६३	रोध्र	२	४	३२
योजनपणी	२	४	९१	राजयक्ष्मन्	२	६	५१	रोमहर्षण	१	७	३५
योधसंराव	२	८	१०७	२५ राजवाह्य	२	८	३५	रोमोद्गम	१	७	३५
योषिता	२	६	२	राजौल	१	८	५	रोषण	३	१	३२
				रात्रिचर	२	१०	२५	रोहित	२	४	४९
				रात्री	१	४	४				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रोहिणी	२	४	८५	लुप्तवर्णपद	१	६	२०	वक्त	३	४	९
रोहिण	२	५	१०	२६ लुप्तवर्ण	३	३	१७	वत्	३	४	९
ल				कुलाय	२	५	४	वत	३	३	२४४
लुक्तक	२	६	११५	लेप	२	९	५६	वतोका	२	९	६९
लक्ष	१	७	३३	८३ लेलिहान	१	८	८	वदन्य	३	१	६
"	२	९	८४	१० लोकजननी	१	१	२७	वदरा	२	४	११६
८८,,	३	३	२२५	३९ लोकबन्धु	१	३	३०	२५ वनकुताशन	१	१	५७
लक्षणा	२	५	२५	४० लोकबान्धव	१	३	३०	वनायु	२	५	८
लक्ष्मण	१	३	१७	९ लोकमातृ	१	१	२७	वनी	२	४	१
लक्षिका	२	६	८	१९ लोकायतिक	२	७	६	नीपक	३	१	४९
१७ लविमा	१	१	३५	लोचमर्कट	२	४	१११	वन्दनी	२	४	५५
लघु	२	४	१६५	लोन	२	१०	२५	वन्दी	२	८	११९
लता	२	४	११	लोत्र	२	१०	२५	वन्ध्य	२	४	७
लय	२	४	१६५	लोहमर्षण	१	७	३५	वन्ध्या	२	२	६९
ललामन्	३	३	१४४	लोहकार	२	१०	७	वन्य	२	४	१३१
लशन	२	४	१४८	लोहमिहार	२	८	९४	वम	२	६	५५
९२ लाङ्गल	३	५	२३	लोहित	२	५	१०	वमी	२	६	५५
लाङ्गलदण्ड	२	९	१४	लोहिताश्व	१	१	५५	वयस्था	२	४	५९
लाङ्गलपद्धति	२	९	१४	लौह	२	९	९८	वरटी	२	५	२७
लाङ्गली	२	४	१६८	"	२	९	९९	वरण	१	१	६१
लाङ्गुल	२	८	४९	व				४२,,	३	३	५६
५८ लाङ्गलन	३	३	१२८	वंशक	०	६	१२६	वरला	२	५	२५
लाङ्गु	२	४	१५६	वंशजा	२	९	१०९	वरा	२	४	१००
लाङ्गुका	२	४	१५६	वंशलोचना	२	९	१०९	"	२	९	१११
लाङ्गु	२	४	१५६	वकुल	२	४	६४	वराङ्ग	२	६	९५
लासक	१	७	८	वक्र	१	१०	७	वर्तक	२	५	३५
लास्फोटनी	२	१०	३३	९२ वक्र	३	५	२३	वर्तनि	२	१	१५
लिखित	२	८	१६	वक्षोज	२	६	७७	वति	२	६	११४
लिखिताक्षर-				वज्रदु	२	४	१०५	वर्त्मनि	२	१	१५
संस्थान	२	८	१६	वज्रनिष्पेष	१	३	१०	वर्द्धमान	२	२	१०
लिपिकर	२	८	१५	वज्रक	२	५	५	वर्ध	२	९	१०५
लिपिकर	२	८	१५	वटाकर	२	१०	२७	वर्वरा	२	४	१३९
लिपी	२	८	१६	वटीगुण	२	१०	२७	वर्षा	३	३	२२४
लिप्त	३	१	११०	वडमी	२	२	१५	१५ वर्द्धित	३	१	११२
लिपिकर	२	८	१५	वणिग्भाव	२	९	३	बलमि	२	२	१५
लिपिकर	२	८	१५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वलयित	३	१	८८	वारिपर्ण	१	१०	३८	विख	२	६	४६
वलि	३	३	१९५	वारिवास	२	१०	१०	विखु	२	६	४६
दलीवर्द	२	९	५९	वारुणी	२	१०	३९	विख्य	२	६	४६
२० + वस्मिक	२	७	३५	वार्ता	२	४	११४	विख्यात	३	१	९
२० + वस्मीक	२	७	३५	वार्ताक	२	४	११४	विख	२	६	४६
वहुरी	२	४	१३	वार्ताक	२	४	११४	विखु	२	६	४६
वहिल	२	४	९	वाढक	२	६	४०	विग्रह	३	२	१३
वल्लुर	२	६	६३	वाढक्य	२	६	४०	विच्छेदक	२	२	११
वशिर	२	९	४०	"	२	६	४०	विजिपिल	२	९	४६
वष्कयणी	२	९	७१	वादि	२	९	८४	विजिविल	२	९	४६
वसिर	२	४	९७	वार्धधिन्	२	९	५	विज्जन	२	९	४६
वसूक	२	४	८०	वाल	३	३	२०६	विज्जल	२	९	४६
वस्त	२	९	७६	वालपक्ष	२	६	९८	विज्जिल	२	९	४६
वस्तक	२	९	४२	वालपाश	२	६	९८	३७ विश	३	३	३३
वस्ति	२	६	११४	वालहस्त	२	६	९८	विशानिक	३	१	४
वांशी	२	९	१०९	वालेय	२	९	७७	२ विट	३	१	२३
वाक्पति	१	३	२४	२२ वाहमील	२	७	३५	विटप	२	४	१४
वाचास्पति	१	३	२४	२२ + वाहमीकिर	७	३५		विटिका	२	६	५३
वाचोयुक्ति	३	१	३५	वाशिता	३	३	७५	विड	२	९	४२
वाटक	२	९	१०७	वाष्प	२	६	९३	वितंस	२	१०	२६
वाट्यालक	२	४	१०७	वाष्प	३	३	१३०	वितर्दी	३	२	१६
वाण	२	४	७४	वाष्पीका	२	९	४०	१ विदन्ध	३	१	२३
वाणि	१	६	१	वासगृह	२	२	९	विदारीगन्वा	२	४	११५
वाणिज्य	२	९	३	४५ वासना	१	५	२	विदेह	२	१०	३
वानि	१	१	६३	वासिका	२	४	१०३	विधा	३	२	१०
वातुल	३	३	१९६	वासित	१	६	२५	३६ विधु	१	३	२
वानान्यु	२	५	८	वास्तूक	२	४	१५८	विधुनन	३	२	४
वानान्युज	२	८	४५	वाहद्विष्	२	५	४	विनाशोन्मुख	३	१	९१
वान्त	२	६	५७	वाहिक	२	८	४५	विनासिक	२	६	४६
वापदण्ड	२	१०	२८	वाह्यीक	२	८	४५	विनाह	१	१०	२७
वापि	१	१०	२८	विकथर	३	१	३०	विन्दुजालक	२	८	३९
वार	१	४	२	विकषा	२	४	९०	विपणी	२	२	२
"	१	१०	३	विकाश	३	३	२१५	विपदा	२	८	८२
वारणवृसा	२	४	११३	विकाशिन्	३	१	३०	विपर्याय	३	२	३३
१६ वाराही	१	१	३५	विकिरण	२	४	८०	विपादिका	१	६	६
वारिधि	२	९	८४								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
१ वपुला	२	१	३	विस्त्राव	२	९	४९	वैणुक	२	८	४१
विप्रकृष्ट	३	१	६८	३३ विहायस्	१	२	१	वैदेह	२	१०	३
विप्रतिसार	१	७	२५	बीज	२	६	६२	६७ वैद्य	३	३	१६१
१ + विप्लुत	३	१	२३	बीजकोश	१	१०	४३	वैमात्र	२	६	२५
विप्लुष	१	१०	६	बीजकोष	१	१०	४३	वैमेय	२	९	८०
विभु	३	१	११	बीणादण्ड	१	७	७	५ वैरागिक	३	१	११०
विमय	२	९	८०	बीतदम्भ	३	१	११०	१७ वैशेषिक	२	७	६
४५ विमर्श	१	५	२	बीथि	२	४	४	१५ वैष्णवी	१	१	३५
विमलात्मक	३	१	५५	बीर	२	६	१२४	व्यक्त	३	१	८१
विमलार्थक	३	१	५५	बीरपाण	२	८	१०३	व्यङ्ग्य	२	४	५१
विरहन्	२	७	५२	वृक	२	५	११	व्यङ्ग्य	२	४	५१
५ विरागाह	३	३	११०	॥	२	६	१२८	व्यभिचारिणी	२	६	१२
विरिञ्चि	१	१	१७	वृक्षा	२	६	६४	७३ व्याय	३	३	१६१
विरोध	३	२	१३	वृक्षारोहा	२	४	८२	१ व्यसनिन्	३	१	२३
विल	१	८	१	वृक्षाम्बल	२	९	३५	व्याकोष	२	४	७
विलपन	१	६	१६	१५ वृद्ध	३	१	११०	व्याघ्रदल	२	४	५०
विलाल	२	५	६	वृत्ताध्ययनदि	२	७	३८	व्याघ्रपाद	२	४	३७
विलेशय	१	८	८	वृद्धकाक	२	५	२१	व्याघ्रपादप	२	४	३७
विलोचन	२	६	९३	वृद्धसङ्ग	२	६	४०	व्याघ्र	१	८	७
विलोम	३	१	८४	वृश्चन	२	१०	३२	२६ व्यापादन	२	८	११५
विवधिक	२	९	१५	वृषभ	२	४	११६	व्याप्य	२	४	१२६
विविक्तस्	३	१	३९	वृषोपगा	२	९	६९	व्यालगाह	१	८	११
विशरण	२	८	११	वृष्णि	१	३	३३	व्यावृत्त	३	१	९२
२६ विशमन	२	८	११५	वेणी	२	६	९८	२३ व्यास	२	७	३५
विशाख	२	८	८५	४२ ॥	३	३	५६	व्युत्ति	२	१०	२८
विश्रम्भ	२	८	२३	वेतन	२	९	१	९ व्युत्पन्न	३	१	११०
॥	३	३	१३५	१६ वेदान्तिन्	२	७	६	व्रतती	२	४	९
विश्वक्सेन	१	१	१९	वेधनी	२	१०	३३	व्रघ्न	२	४	१२
विश्वसूच	३	१	३४	वेष्टिल	२	४	९	व्रीड	१	७	२३
४ विश्वरूप	१	१	२१	वेश	२	६	९९	व्रीहि	२	९	२१
२२ विश्वामित्र	२	७	३५	वेश्यापति	३	१	२३	श			
विषुग	१	४	१४	वेश्याजनसमाश्रय	२	२	२	शंव	१	१	४७
विष	२	६	६८	वेषवार	२	९	३५	शंवर	२	५	१०
विस	१	१०	४२	वेण्या	२	६	१९	शकलिन्	१	१०	१७
विस्तार	२	४	१४	वैकल्य	२	४	३७				
४९ विस्पष्ट	१	६	२०	वैकृत	१	७	१९				
॥	३	१	८१								

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
शकुलिन्	१	१०	१७	शरीरास्थि	२	६	६९	शार्वरी	१	४	३
९२ शकुल	३	५	२३	शर्वला	२	८	९३	शाल	२	२	३
शक्त	३	१	३५	शल्लकी	२	४	१२५	"	२	४	५
शक्तुफली	२	४	५२	शव	२	६	८१	"	२	४	४४
शक	३	१	३५	शवर	२	१०	२०	शालपणी	२	४	११५
शकर	२	९	६०	शश	२	९	१०४	शाल्मल	२	४	४६
शङ्कु	२	९	८४	शशाङ्क	१	३	१४	शाल्मली	२	४	४६
शङ्कुकर्ण	२	९	७७	८२ शङ्कुली	३	३	२०५	शाल्मलीवेष्ट	२	४	४७
२९ शङ्क	१	१	७१	क्षसन	२	७	२६	शान्तिक	३	१	७२
शङ्कनक	१	१०	२३	क्ष्म	२	९	९८	शान्कल	३	१	१९
शठन	१	७	३०	शस्मिन्	२	८	६९	५५ शासन	३	३	१२८
शणसूत्र	१	१०	१६	शस्य	२	४	१५	शिशपा	२	४	६२
शण्ड	२	९	६२	"	२	४	१६७	शिक्षित	३	१	८९
शण्ड	२	६	३९	शस्यमञ्जरी	२	९	२१	शिखरिणी	२	९	४४
शतमीर	२	४	७०	शस्यशूक	२	९	२१	शिखरी	२	४	८८
शतयष्टिका	२	६	१०५	शस्यसम्बर	२	४	४४	शिखा	२	४	११
शनि	१	३	२६	२८शाकशाकट	२	९	७	शिखाण्डक	२	६	९६
६१ शफ	३	३	१३२	२८शाकशाकिन	२	९	७	शिखातर	२	६	१३८
शम	३	४	१०	शाकर	२	९	६०	शिक्षाण	२	९	९८
शम	२	६	८१	शाकर	२	९	६०	शिजा	१	६	२४
शमि	२	९	२३	शाङ्कर	२	९	६०	शित	३	१	९१
शमीधान्य	२	९	४	शाङ्कल	२	१	१०	शितद्रु	१	१०	३३
शम्पाक	२	४	२३	शात	२	६	४४	शितशूक	२	९	१५
शम्बरी	२	४	८७	शातकौम्म	२	९	९४	शिपविष्ट	३	३	३४
शम्बा	१	३	९	शातला	२	४	१४३	शिफा	१	१०	४३
शम्भुक	१	१०	२३	शान्त	१	७	१७	६० "	३	३	१३२
शम्बाक	२	४	२३	शाप	१	६	११	शिम्वि	२	९	२३
शयनखट्वा	२	८	५४	शाम्भुक	१	१०	२३	शिम्वी	२	९	२३
शरणि	२	१	१५	शारङ्ग	२	५	१७	शिर	२	६	९५
शराटि	२	५	२५	शारदी	२	४	२३	"	२	१	११०
शराडि	२	५	२५	शारिका	२	५	३५	शिरसिज	२	६	९५
शराति	२	५	२५	११ शार्ङ्ग	१	१	२८	५ शिरोगृह	२	२	८
शराळि	२	५	२५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शिरोमणि	२	६	१०२	शुभ्य	२	१०	२७	श्रीपर्णी	२	४	४०
शिरोऽस्थि	२	६	६९	२९ शुल्क	३	३	१७	श्रीपिष्ट	१	६	१२९
शिवशिष्ट	३	३	३४	शुल्का	२	१०	२७	११ श्रीवत्स	१	१	२८
शिवारि	२	१०	२२	शुषिर	१	७	४	श्रेणी	२	४	४
शिविका	२	८	५३	शुषिरा	२	४	१२९	श्रोणी	२	६	७४
शिविर	२	८	३३	शुकर	२	५	२	श्रोतस्	२	१०	११
शिवी	१	१	३७	१७ शून्यवादिन्	२	७	६	४७ श्लाघा	१	६	१६
शिल	२	९	२	शरण	२	४	१५७	२० श्लिष्टसम्युक्त	३	१	११२
शिला	२	९	१०८	शस्त्र	२	९	९७	१४ श्लोपद	२	६	५५
शिली	२	२	१३	९४ शृङ्ग	३	५	२३	श्लोल	३	१	१४
शिलासार	२	९	९८	शृङ्गारभूषण	२	९	१०५	श्लपाक	२	१०	२०
शिलोच्छ	२	९	२	शृङ्गि	२	९	९६	श्लान	२	१०	२२
शिल्पशाला	२	२	७	२१ शृङ्गिन्	१	१	४०	ष			
शीकर	१	३	११	शृङ्गी	२	९	९६	षण्ड	२	६	३९
शीतलवातक	२	४	१४९	शृणि	२	८	४१	षण्ड	२	६	३९
शीत्य	२	९	८	शेष	२	६	७६	॥	२	८	९
शीधु	२	१०	४१	शेषस्	२	३	७६	२ विज्ञ	३	१	२३
२२ शीन	३	१	११२	शेष	२	६	७६	स			
शिफालिका	२	४	७०	११ शैव्य	१	१	२८	संयोगित	३	१	९२
शीर	२	९	१४	७२ शैत्य	३	३	१६१	संवदन	३	२	४
शीघ्रण्ड	२	४	१०५	शोणभद्र	१	१०	३४	संवपन	३	२	४
शुकवर्ह	२	४	१३२	शोनक	२	४	५७	संवर	१	१०	४
३६ शुक्र	१	३	२	शोभाजन	२	४	३१	॥	२	५	१०
शुण्ठी	२	९	३८	शौरि	१	३	२६	संवहन	३	२	२२
शुण्डापान	३	१०	४०	२२ श्यान	३	१	११२	संविहित	३	१	१०९
शुन	२	१०	३२	श्यामक	२	४	१६५	५ संशित	३	१	११०
शुनाशीर	१	१	४१	श्याल	२	४	४४	संस्पर्शन	१	७	२३
शुनासीर	१	१	४१	श्यानाक	२	४	५७	संस्पर्शन	१	७	२३
शुनी	२	१०	२२	४४ + श्रावण	१	४	१३	संस्कारहीन	२	७	५३
शून्य	३	१	५६	४३ + श्रावणी	१	४	१३	८ संस्कृत	३	१	११०
शुभदन्ती	१	३	५	४९ आन्य	१	६	२०	१७ संस्था	२	८	११६
शुभ्य	२	१०	२७	श्री	२	६	१२९	५२ ॥	३	३	८७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
संस्केट	२	८	१०५	४५ समाहित	३	३	८५	सहोदर	२	६	३४
संहतल	२	६	८५	५१ समित	३	३	८५	सद्य	२	३	३
संहार	१	९	२	समुद्धरण	३	३	५५	साक्तुक	३	२	४०
सकलिन	१	१०	१७	५७ + समुद्रिका	१	१०	१३	२ सागराम्बरा	२	१	३
सङ्कार	२	२	१८	५६ समुद्रिय	१	१०	१३	सात	१	४	२५
सची	१	१	४५	सम्परायक	२	८	१०४	सातानीक	२	९	१५
सजुष	३	४	४	सम्प्रतापन	१	९	२	सादन	२	२	५
सजीवन	१	९	२	सम्फेड	२	८	१०५	साधुवाहिन्	२	८	४४
संश	२	६	७४	सम्ब	१	१	४७	साप्तदीन	२	८	१२
संज्ञा	१	६	८	सम्बरारि	१	१	२६	साबर	२	४	३२
२ सत्यक	१	१	१७	५१ सम्बाध	३	३	१०४	सामज	२	८	३४
२३ सत्यवतीसुत	२	७	३५	सम्भली	२	६	१९	सामवायिक	२	८	४
सत्थापना	२	९	८२	सर	१	८	८७	५७ सामुद्रिका	१	१०	१३
२ सदानन्द	१	१	१७	”	२	४	१६२	सायः	१	४	३
सधमिणी	२	६	५	सरङ्गा	२	४	१०८	सारव	२	९	१११
सनत्	३	४	१७	सरणा	२	४	१०८	सारिवा	२	४	११२
सनपणी	२	४	१४९	सरणी	२	४	१५२	सारोष्ट्रिक	१	८	१०
सनात्	३	४	१७	सरलि	२	६	८६	२९ सारिष्क	२	९	४४
सनात्कुमार	१	१	५१	५८ सरस्वती	१	१०	३०	३१ सालभञ्जिका	२	१०	२८
सनिष्टीव	१	६	२०	सराव	२	९	३२	३१ सालभञ्जी	२	१०	२८
सन्वा	१	४	३	सरिल	१	१०	३	सालावृक	३	३	१२
सन्धि	१	४	७	सरिषप	२	९	१७	सालूर	१	१०	२४
सन्न	२	४	३	सरोजिनी	१	१०	३९	सिंहताल	२	६	८५
२५ सन्नाय्य	२	८	३५	सर्व	१	१	३०	सिंहपुच्छक	२	४	९३
सप्तार्चि	१	१	५६	सर्वरसाग्र	१	९	४९	१५ सिङ्गाण	२	६	६६
समक्ष	३	१	७९	सलिर	१	१०	३	सिङ्गाणी	२	६	९८
समज्या	१	६	११	सन्व्येष्ट	२	८	६०	सिङ्गान	२	९	८९
समपाद	२	८	८५	ससन	२	७	२६	सिङ्गिनी	२	६	१०८
२५ समरोचित	२	८	३५	सह	२	८	१०२	सितशिव	२	९	४२
समर्थुक	३	१	७	सहचरी	२	६	५	सितशूक	२	९	१५
समाज्ञा	१	६	११	सहा	२	८	१०२	सिताभ	२	६	१३०
४४ समाधान	१	५	१	सहदय	१	१	३	सिध्मली	२	६	५३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सिन्धुक	२	४	६८	सुवासिनो	२	६	९	सेव	३	२	५
सिन्धुर	२	८	३४	सुशवी	२	४	१५५	सैरिन्ध्री	२	६	१८
सिम्बा	२	९	२३	सुशोम	१	३	१९	सैरीयक	२	४	७५
सिम्बि	२	९	२३	सुषि	१	८	२	सोत्कण्ठ	२	१	८
सिम्बी	२	९	२३	सुषिम	१	३	११	४८ सोत्प्राप्त	१	६	२०
सिरा	२	६	६५	सुषिर	१	८	१	सोदर	२	६	३४
सिद्धकी	२	४	१२४	„	१	८	२	सोभाजन	२	४	३१
सिद्ध	२	६	१२८	सुसर्वा	२	४	१५५	सामन्	१	३	१४
सिद्धण्ड	२	४	१०५	सुसर्वा	२	४	१२३	सोमप	२	७	९
सोस	१	९	१०५	सुतकागृह	२	२	८	सोमपोतिन्	२	७	९
सोसपत्र	२	९	१०५	सूत्रतन्तु	२	१०	२८	सोमवह्वरी	२	४	१३१
२३ सुकेशी	१	१	५१	सूत्रामन्	१	१	४१	सोमवह्वी	२	४	९५
सुखसन्धुखा	१	९	७१	सूनु	२	६	२८	४८ सोल्लुण्ठन	१	६	२०
१२ सुग्रीव	१	१	२८	सून्मद	३	१	२३	१७ सौगत	२	७	१६
सुता	२	६	२८	सूर	२	३	२६	सौदामिनी	१	३	९
सुतात्मजा	२	६	२९	सूरिन्	२	७	६	सौमिक	२	८	११०
५ सुनिश्चित	३	१	११०	सूर्प	२	९	२६	सौभाजन	२	४	३१
सुन्दरा	२	६	४	सूर्मि	२	१०	३५	सौरि	१	१	२१
सुपर्ण	२	४	२४	सुक्क	२	६	९१	सौवस्तिक	२	८	५
सुपर्णक	२	४	२४	सुक्कन्	२	६	९१	सौवीर्य	२	४	३७
सुप्त	३	१	३३	सुकि	२	६	९१	सौहार्द	२	८	१२
सुमना	२	४	७२	सुकिणी	२	६	९१	सौहृद	२	८	१२
सुम्ब	२	१०	२७	सुकिन्	२	६	९१	सौहृदीय	२	८	१२
सुम्ब	२	१०	२७	सुक्क	२	६	९१	स्तम्भ	२	९	७६
सुरत	३	१	१५	सुक्कन्	२	६	९१	स्त्रीपुंस	२	५	३८
सुरभि	२	४	१२३	सुकि	२	६	९१	स्थपति	२	१०	९
„	२	९	६६	सुकिणी	२	६	९१	१४ स्थपुट	३	१	११२
सुरभीरसा	२	४	१२३	सुकिन्	२	६	९१	स्थला	२	१	५
सुरामाण्ड	२	१०	४२	सुक्क	२	६	९१	स्थाली	२	४	५४
सुरि	१	९	१९	सुगाल	२	५	५	११ स्थित	३	१	११०
सुरोद	१	१०	२	सुणीका	२	६	६७	५१ स्थिति	३	३	८५
सुवर्ण	२	४	२४	सुष्टि	३	३	३९	१० स्थिरस्नेह	३	३	११०



शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्थूललक्ष	३	१	६	स्वप्न	१	८	२	हारहर	२	१०	४०
स्तुहा	२	४	१०५	स्वरस	१	४	४७	८० हाल	३	३	२०५
स्नेहपात्र	२	९	३३	स्वर्णवती	२	४	१३८	हालहल	१	८	१०
स्नेहाश	२	६	१३८	३६ स्वर्मानु	१	३	२	८० + हाल	३	३	२०५
स्पश	३	२	१४	स्वस्तिक	२	२	९	हालाहल	१	८	१०
स्पष्ट	३	२	१४	स्वस्त्रिय	२	६	३२	हासिका	१	७	१९
स्फरण	३	२	१०	स्वस्त्रेय	२	६	३२	१७ हिंसा	२	८	११६
स्फारग	३	२	१०	स्वादुरसा	२	१०	४०	हिण्डर	२	९	१०५
स्फिर	३	१	६४	स्वादूद	१	१०	२	हिण्डीर	२	९	१०५
२२ स्फुट	३	१	११२	स्वाधीन	३	१	१५	हिरण्यबाहु	१	१०	३४
स्फुलन	३	२	१०	स्वार	३	२	१४	७९ हिलि	३	३	२०५
स्फोटन	३	२	५	स्वीकार	१	५	५	हीर	१	१	३३
स्फोरण	३	२	१०					हुड	२	९	७६
५२ समय	१	७	२१	ह				हुडुक	१	७	८
समश्रु	२	६	९९	हंसपदी	२	४	११९	हुत	२	७	२८
स्यात्	३	४	१८	२ हंसवाहन	१	१	१७	६७ हृच्छय	३	३	१६१
१८ स्याद्वादिक	२	७	६	५४ हरि	१	८	८	९३ हृदय	३	५	२३
स्याल	२	६	३२	हरित	२	५	३४	हृदयिक	३	१	३
स्योन	२	९	२६	हरिताल	२	९	१०३	४९ हृष	१	६	२०
स्रवा	२	४	८३	१० हरिद्रागक	३	१	११०	हेमन्	१	४	१८
"	२	४	१४२	हरिप्रिय	२	४	४२	७९ हेला	३	३	२०५
स्रु	२	७	२५	हरिमन्य	२	९	१८	७९ हेलि	३	३	२०५
स्रोत	१	१०	११	हरिमन्यज	२	९	१८	हैरिक	२	८	७
स्रोतस्विनी	१	१०	३०	हविष्	३	७	२७	हादिनी	१	१०	३०
स्वःश्रेयस	१	४	२५	हविष्य	२	९	५२	हीवेर	२	४	१२२
स्वच्छ	१	१०	१४	हसन्तिका	२	९	२९	हादा	२	४	१२४
				हस्तधारण	३	२	५				

हृत्स्थमरकोषशेषक-मूलस्थशब्दानामकाराद्यनुक्रमणिका समाप्ता ।



आख्यातचन्द्रिकानाम-क्रियाकोशः । भट्टमल्लविरचितः ( चौ. सं. सी. २२ ) १५०-००

तिडन्तार्णवतरणिः । बृहत्तमधातुरूपकोशः । ण्यन्तप्रक्रियादि सहित ।

पण्डित धन्वाङ्गोपाल कृष्णाचार्य सोमयाजी प्रणीतः ।

सम्पादक—पण्डित रामचन्द्र झा ( कृ. सं. सी. ३१ ) २००-००

महाभारतकोशः । ( महाभारत के नाम और विषयों की अनुक्रमणिका ) ।

सम्पादक—डॉ० रामकुमार राय । प्रथम भाग ( अ-क ) १५०-००

द्वितीय भाग ( ख-द ) १५०-०० तृतीय भाग ( द-भ ) १५०-००

चतुर्थ भाग ( भ-व ) १५०-०० पञ्चम भाग ( वृक्ष-ह्लादकम् ) १५०-००

सम्पूर्ण एक जिल्द में ( चौ. सं. सी. ७८ ) ७५०-००

वाचस्पत्यम् । ( The most & stupendous Sanskrit Lexicon )

तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथ भट्टाचार्येण संकलितम् । १-६ भाग, सम्पूर्ण वृत्ति-उदाहरण-सहित पाणिनीय लिंगानुशासन, पाणिनीयप्रत्यय-उणादि-प्रत्यय-परिनिष्ठिति रूप, पूर्वोत्तरपदों में परिवृत्ति-सहत्वासहत्व आदि यथेष्ट सामग्री भूमिका रूप में देकर चार्वाक आदि समस्त दर्शन, समस्त श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-स्मृति-पुराण आदि, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, राजशास्त्र, शकुनशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, नीतिशास्त्र, पाकशास्त्र, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, छन्दोलंकारादि शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के लिंग, विग्रह, व्युत्पत्ति, विभिन्न अर्थों में पर्याय, उदाहरण तथा तत्तत् शब्द के सम्बन्ध में यथाशक्य अधिकतम ज्ञातव्य सामग्री प्रस्तुत की गई है । विश्व में इससे बड़ा कोई दूसरा संस्कृत कोश नहीं है ।

( चौ. सं. सी. ९४ ) ६०००-००

श्रीकोशः । ( हिन्दी-संस्कृत कोश ) । पण्डित केदारनाथ शर्मा

( ह. सं. सी. १२७ ) २०-००

सर्वलक्षणसंग्रहः ( पदार्थलक्षणकोशः ) । स्वामी गौरीशङ्करभिक्षु १५-००

अपरं च प्राप्तिस्थानम्

कृष्णादास अकादमी

पोस्ट बॉक्स नं० १११८,

के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-२२१ ००१ ( भारत )

e-mail : cssoffice@satyam.net.in